पं० पन्नालाल ज्योतिषी (पंचांगदिवाकर कर्ता) कृत

ज्योतिष तत्व

फलित खण्ड

द्वितीय भाग



मशहूरे आलम पं० देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)
जालन्धर-144008

पं० पन्नालाल ज्योतिषी (पंचांगकर्ता) कृत

ज्योतिष तत्व

फलित खण्ड

॥ श्री हरि: ॥

ज्योतिष तत्त्व

फलित खण्ड-द्वितीय भाग

(फलित-ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हेतु)

(अनेक प्रदेशों में ज्योतिष विद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित)

आधुनिक शैली में अनेक उदाहरण कुण्डलियों सहित एक प्रामाणिक ग्रन्थ

फलादेश सम्बन्धी विशेष सूत्र, तुला से मीन लग्न राशियों तक के सम्बन्ध में गुण, स्वभाव, शिक्षा, कैरियर, स्वास्थ्य-रोग, प्रेम-विवाह, व्यवसाय, उपायों आदि के सम्बन्ध में सूक्ष्म एवं विस्तृत जानकारी, कुण्डली में सभी ग्रहों का अनेक उदाहरण कुण्डलियों सहित भावगत फलादेश, दो-तीन एवं अधिक ग्रहों के योग फल, दशाऽन्तर्दशाओं द्वारा फलादेश, त्रिशांश, ज्योतिष और रोग, स्त्री जातिकाओं सम्बन्धी फल एवं मंगलीक दोष आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण एवं शोधपूर्ण व्याख्याओं सहित

पं० देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ पंचांग दिवाकर मुफीद आलम जन्त्री

लेखक एवं सम्पादक :

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए.

गणितकर्त्ता, पंचाँग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री

पण्डित देवी दयाल ज्योतिषी एण्ड संज़

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008

ज्योतिष तत्त्व (दो भागों में)

ज्योतिष सीखने के लिए सम्पूर्ण एवं प्रामाणिक ग्रन्थ

लेखक :

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी गणितकर्त्ता

सम्पादक : पंचाँग दिवाकर एवं मुफीद आलम जन्त्री जालन्धर।

सह-सम्पादकीय मण्डल :

पं. विवेक शर्मा M.A.LL.B.

पं. पंकज शर्मा M. Com.

अड्डा होशियारपुर,

जालन्धर, (पंजाब)

फोन : 2457959 (Off.)

2221325 (Resi.)

मशहूरे आलम

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

द्वारा प्रकाशित एक अनुपम ज्योतिष ग्रन्थ

मूल्य : 250 रु.

Laser Type Setting :

R.K. Computers

Shop No. 3 Ground Floor, Chawla Market, Mitha Bazar Jalandhar.

प्रमुख वितरक एवं प्रकाशक :

जनरल बुक डिपो (रजि.)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। फोन : (0181)-2457959

॥ श्री हरि ॥

॥ श्री गणेशाय नमः॥

सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यैं नमो नमः।

प्राक्कथन

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम्। प्रत्यक्षं ज्योतिषं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥

अनादिकाल से मानव अज्ञात एवं अगोचर को जानने के लिए सम्वेदनशील एवं जिज्ञासु रहा है। उसकी इसी जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण चिन्तन शील प्रबुद्ध मनुष्यों ने अपने परिवेश से सहस्त्रों मील दूर संचरणशील ग्रह, नक्षत्र एवं ताराओं के स्वरूप एवं उनके पारस्परिक प्रभावों का गहन निरीक्षण, अध्ययन एवं चिन्तन करना प्रारम्भ कर दिया था।

मानव कल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए एवं मानव जीवन को स्वस्थ, सुव्यवस्थित एवं नियमित रूप प्रदान करने के लिए ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने अध्यात्म एवं वैदिक ज्ञान, दर्शनशास्त्र, संगीत, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि शास्त्रों का प्रणयन किया। ज्योतिष शास्त्र का एक अन्य नाम ज्योतिः शास्त्र भी आता है, जिसका अर्थ प्रकाश देने वाला अथवा प्रकाश के सम्बन्ध में ज्ञान करवाने वाला शास्त्र होता है, अर्थात् जिस शास्त्र से संसार का मर्म, जीवन-मृत्यु का रहस्य और जीवन के सुख-दुख के सम्बन्ध में पूर्ण प्रकाश मिले, वह ज्योतिषशास्त्र है। छान्दोग्य उपनिषद् में ब्रह्म का वर्णन करते हुए बताया है कि, ''मनुष्य का वर्तमान जीवन उनके पूर्व संकल्पों और कामनाओं का परिणाम है तथा इस जीवन में वह जैसा संकल्प करता है, वैसा ही यहां से जाने पर बन जाता है। अतएव पूर्ण प्राणमय, मनोमय, प्रकाशरूप एवं समस्त कामनाओं और विषयों के अधिष्ठानभूत ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए।''

इससे स्पष्ट है कि ज्योतिष के तत्त्वों के आधार पर वर्तमान जीवन में सात्त्विक कर्मों, ज्ञान और भक्ति द्वारा शुद्ध चित्त होकर ज्योतिःस्वरूप त्रिगुणात्मक प्रकृति के द्वारा निर्मित समस्त जगत् सत्त्व, रज और तमोमय है। सभी ग्रहों में भी सत्त्व, रज एवं तमादि गुणों की न्यूनाधिकता रहती है। गुरु शुभ चन्द्रादि सत्त्व गुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक में दया, करुणा, उदारता एवं परोपकारिता की भावना अधिक होती है। सूर्य, शुक्र आदि ग्रहों के कारण रजोगुण तथा शनि, मंगल, राहु आदि ग्रहों के प्रभाव से तामसिक वृत्तियों का उद्रेक होता है। जन्म के समय जिन-जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक में वैसे ही स्वाभाविक गुणों एवं वृत्तियों की बहुलता होती है। अतएव स्पष्ट है कि संसार की प्रत्येक वस्तु एवं प्राणी आन्दोलित अवस्था में रहता है, तथा हर वस्तु एवं प्राणी अपनी प्रकृति एवं गुणों के अनुसार ग्रहों द्वारा प्रभावित होता रहता है।

धर्मशास्त्रानुसार भी जो मनुष्य श्रुति-स्मृति आदि धर्मशास्त्र की मर्यादा अनुसार कर्म करता है। दया और धर्म में प्रीति रखता है। सत्यवादी एवं सत्य का आचरण करने वाला, ब्रह्मज्ञ अर्थात् ईश्वर परायण है। उसको ग्रह पीड़ित नहीं करते, अर्थात् दुख नहीं देते।

ग्रहा न पीडयन्त्येव श्रुति स्मृत्युक्त सारिणम्।
दया धर्मरतं बालं ब्रह्म सत्य वादिनम्॥

इस प्रकार ज्योतिष विज्ञान हमें ग्रह-नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ शास्त्रीय सिद्धान्त प्रदान करता है, जिनके द्वारा हम पूर्व कर्मों के प्रतिफल को जानकर अपने जीवन को उच्चतर दिशा की ओर ले जाना है। ज्योतिष ज्ञान पर आधारित बनी एक जन्मपत्री अथवा जन्म कुण्डली अपने गर्भ में किसी व्यक्ति के जीवन सम्बन्धी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अनेक रहस्यों को संजोए रहती है। एक कुशल एवं अनुभवी ज्योतिषी की सहायता से मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी अज्ञात रहस्यों को जानकर निश्चय ही भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त कर सकता है। सम्भवतः इसी कारण पुरातन ग्रन्थों अनुसार धर्म परायण एवं ईश्वर में आस्थावान प्रत्येक व्यक्ति के पास एक शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्मपत्री का होना आवश्यक माना जाता है-

यस्य नास्ति किल जन्मपत्रिका या शुभाऽशुभ फलप्रदर्शिनी।
अन्धकं भवति तस्य जीवितं दीपहीनमिव मन्दिरं निशि॥ मा.सा.

अर्थात् जिस मनुष्य के पास शुभाशुभ को बतलाने वाली जन्मपत्री नहीं है, उसका जीवन वैसे ही अन्धकार मय होता है। जैसे रात्रिकाल में किसी मन्दिर में बिना दीपक के अन्धेरा होता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) का ही द्वितीय भाग है। फलित खण्ड के प्रथम भाग में ज्योतिष सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विषयों के साथ-साथ मेष लग्न से कन्या लग्न तक प्रत्येक लग्न सम्बन्धी विस्तृत व्याख्या विविध उदाहरणों, कुण्डलियों सहित पहले ही दी जा चुकी हैं। यह हर्ष का विषय है कि ज्योतिष तत्त्व के प्रथम फलित खण्ड को प्रबुद्ध पाठकों ने हृदय से सराहा है। सुविज्ञ पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि **'ज्योतिष तत्त्व'** गणित एवं फलित खण्ड (I) दिल्ली, हिमाचल व पंजाब के कुछ ज्योतिष कालेजों में पाठ्यक्रम के रूप में भी पढ़ाए जाते हैं।

इसकी लोकप्रियता का यह एक प्रत्यक्ष प्रमाण है कि फलित खण्ड का द्वितीय भाग छपने से पूर्व ही **फलित खण्ड के प्रथम** भाग का पहिला संस्करण समाप्त हो गया है। **ज्योतिष तत्त्व** की उच्चस्तरीय विषय सामग्री को पढ़कर हमें पाठकों के अनेक प्रंशसा-पत्र प्राप्त हुए हैं, उनका हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। अपने पाठकों के प्रेम एवं सहयोग से प्रोत्साहित होकर ही ज्योतिष तत्त्व (फलित) के द्वितीय खण्ड में लग्नों एवं ज्योतिष सम्बन्धी अन्य विषय सामग्री के विस्तार में वृद्धि की गई है।

ज्योतिष तत्त्व (फलित) के द्वितीय परिवर्धित भाग के आरम्भ में फलादेश सम्बन्धी कुछ विशेष उपयोगी नियमों का वर्णन किया गया है, जो कि प्रथम भाग में स्पष्ट एवं विस्तृत रूप से वर्णित नहीं किए गए थे। द्वादश लग्नों के क्रम को जारी रखते हुए द्वितीय भाग में **तुला से मीन लग्न तक,** प्रत्येक लग्न के अन्तर्गत आकाश में लग्न/राशि का विस्तार, नक्षत्रों का आधिपत्य, सत्त्वादि गुण, स्वभाव, तत्त्व, काल पुरुष में राशि का आधिपत्य, मुख्य गुण-विशेषताएं आदि। प्रत्येक लग्न में शुभाशुभ एवं योगकारक ग्रह, लग्न-जातक का शारीरिक गठनं, व्यक्तित्व, चारित्रिक विशेषताएं, शिक्षा एवं कैरियर, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, प्रेम सम्बन्ध और वैवाहिक एवं गृहस्थ सुख, स्वास्थ्य एवं रोग आदि के सम्बन्ध में शुभाशुभ दशा-अन्तर्दशा का विवेचन, प्रत्येक लग्न की स्त्री जातिका का फल तथा उनके सम्बन्ध में उपयोगी उपायों का वर्णन दिया गया है। साथ ही प्रथम भाग की भान्ति सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भाव/राशियों में स्थिति का विस्तृत फलादेश उदाहरण कुण्डलियों सहित दिया गया है।

इसके अतिरिक्त ज्योतिष सम्बन्धी यथा पूर्वत: उद्घोषित विषयों का भी विस्तारपूर्वक समावेश किया गया है। जैसे **⁎कुण्डली में दो, तीन चार, पांच, छः एवं सात ग्रहों का फलादेश, ⁎फलित ज्योतिष में प्रसिद्ध योगों का वर्णन, ⁎विंशोत्तरी दशा-अन्तर्दशाओं तथा योगिनी दशाओं का** विस्तृत फलादेश, **⁎सप्तवर्गों में द्वादशांश एवं त्रिशांश कुण्डलियों** का फल **⁎ज्योतिष शास्त्र एवं रोग विचार, ⁎मंगलीक योग सदैव अनिष्टकारी नहीं ⁎स्त्री जातिका सम्बन्धी विशेष फलादेश,** इत्यादि अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है। आशा है ज्योतिष विद्या में विशेष रूचि रखने वाले सुविज्ञ पाठकों एवं विद्वान ज्योतिषियों के लिए ज्योतिष तत्त्व, फलित खण्ड या द्वितीय भाग, ज्योतिष सम्बन्धी उपयोगिता की दृष्टि से प्रथम भाग से भी अधिक पसन्द आएगा।

पाठकगण ग्रन्थ रचना के मेरे प्रयासों से यदि लाभान्वित हो सकें तो मैं स्वयं को कृतकृत्य समझूंगा। मनुष्यकृत किसी भी रचना में कुछ भूल रह जाना सदा सम्भव होता है। सुविज्ञ पाठक वृन्द प्रस्तुत पुस्तक में कहीं त्रुटि अनुभव करें, तो कृपा करके उसके सम्बन्ध में मुझे संकेत करने का कष्ट करें, तो मैं आभारी रहूंगा, ताकि उस आगामी संस्करण में उस सम्भावित त्रुटि का निराकरण किया जा सके। परम पिता ईश्वर की कृपा से प्रकाशित किया गया वर्तमान ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड का द्वितीय भाग कहां तक सफल हो पाया है ? इसके निर्णय की कसौटि भी सुविज्ञ पाठक ही रहेंगे।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग् भवेत्॥

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, संवत् २०६० बि.
प्रविष्टे २८, श्रावण, मंगलवार
दिनांक 12 अगस्त, 2003 ईसवी

मंगल कामनाओं सहित
पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी
गणितकर्त्ता तथा संपादक मण्डल
पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जंत्री उर्दू-हिन्दी व तिथ पत्रिका पंजाबी

"ज्योतिष तत्त्व"

(फलित खण्ड-द्वितीय भाग)

विषय सूची

प्रथम खण्ड

फलादेश में कुछ विशेष उपयोगी नियम	7-8
तुला लग्न	
तुला/राशि लग्न-मूलभूत मुख्य विशेषताएं	9
तुला लग्न में शुभाशुभ योग	10
तुला लग्न जातक की प्रमुख विशेषताएं	10
शारीरिक संरचना, चारित्रिक विशेषताएं	10/11
स्वास्थ्य और रोग	11
शिक्षा-कैरियर, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति	12
तुला लग्न की स्त्रियां	13-14
दशाफल तथा उपयोगी उपाय	14-15
तुला लग्नः सूर्य का द्वादश भावफल	15-17
तुला लग्नः चन्द्र का द्वादश भावफल	18-20
तुला लग्नः मंगल का द्वादश भावफल	20-22
तुला लग्नः बुध का द्वादश भावफल	23-25
तुला लग्नः गुरु का द्वादश भावफल	25-27
तुला लग्नः शुक्र का द्वादश भावफल	27-29
तुला लग्नः शनि का द्वादश भावफल	29-31
तुला लग्नः राहु का द्वादश भावफल	32-34
तुला लग्नः केतु का द्वादश भावफल	34-36
तुला लग्न में ग्रहों का शुभाशुभ योग	36-37
तुला लग्न-में तीन ग्रहों का फल	37
तुला लग्न की उदाहरण कुण्डलियां	38-47
बृश्चिक लग्न	
मूलभूत मुख्य विशेषताएं, भचक्र में बृश्चिक राशि की स्थिति, शुभाशुभ योग	48-49
चारित्रिक विशेषताएं एवं स्वभाव, स्वास्थ्य	49-50
शिक्षा, कैरियर, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति	51-52
बृश्चिक लग्न की स्त्रियां	52-53
दशाफल तथा उपयोगी उपाय	54
बृश्चिक लग्नः सूर्य का द्वादश फल	55-57
बृश्चिक लग्नः चन्द्र का द्वादश भावफल	57-59
बृश्चिक लग्नः मंगल का द्वादश भावफल	59-61
बृश्चिक लग्नः बुध का द्वादश भावफल	62-64
बृश्चिक लग्नः गुरु का द्वादश भावफल	64-66
बृश्चिक लग्नः शुक्र का द्वादश भावफल	67-68
बृश्चिक लग्नः शनि का द्वादश भावफल	69-71
बृश्चिक लग्नः राहु का द्वादश भावफल	71-73
बृश्चिक लग्नः केतु का द्वादश भावफल	73-75
बृश्चिक लग्न में द्वि एवं त्रिग्रहों योगों का फल	75-76
बृश्चिक लग्न की उदाहरण कुण्डलियां	77-83
धनु लग्न	
मूलभूत विशेषताएं, भचक्र में धनु	84
राशि की स्थिति, शुभाशुभ योगकारक ग्रह	85
धनु लग्न-शारीरिक गठन	85
चारित्रिक, स्वभावगत विशेषताएं	86
स्वास्थ्य, रोग, शिक्षा एवं कैरियर, व्यवसाय	86-87
धनु लग्न की स्त्रियां	88-89
दशाफल एवं उपयोगी उपाय	89-90
धनु लग्नः सूर्य का द्वादश भावफल	90-92
धनु लग्नः चन्द्र का द्वादश भावफल	92-94
धनु लग्नः मंगल का द्वादश भावफल	95-97
धनु लग्नः बुध का द्वादश भावफल	97-99
धनु लग्नः गुरु का द्वादश भावफल	99-101
धनु लग्नः शुक्र का द्वादश भावफल	101-103
धनु लग्नः शनि का द्वादश भावफल	104-106
धनु लग्नः राहु का द्वादश भावफल	106-107
धनु लग्नः केतु का द्वादश भावफल	108-109
द्वि एवं त्रिग्रही योगों का फल	109-110
धनु लग्न की उदाहरण कुण्डलियां	111-116
मकर लग्न	
मूलभूत मुख्य विशेषताएं, भचक्र में	117
मकर राशि की स्थिति, शुभाशुभ ग्रह	118
गुण, स्वभाव, विवाह सुखादि	119-121
मकर लग्न की स्त्रियां	122-123
दशाफल, उपयोगी उपाय	123-124
मकर लग्नः सूर्य का द्वादश भावफल	124-126
मकर लग्नः चंद्र का द्वादश भावफल	126-128
मकर लग्नः मंगल का द्वादश भावफल	128-130
मकर लग्नः बुध का द्वादश भावफल	130-132

मकर लग्न: गुरु का द्वादश भावफल 132-134
मकर लग्न: शुक्र का द्वादश भावफल 134-136
मकर लग्न: शनि का द्वादश भावफल 136-138
मकर लग्न: राहु का द्वादश भावफल 139-140
मकर लग्न: केतु का द्वादश भावफल 141-142
मकर लग्न में द्वि एवं त्रि-ग्रही योगों का फल 142-144
मकर लग्न की उदाहरण कुण्डलियां 145-149

कुम्भ लग्न

मूलभूत मुख्य विशेषताएं, भचक्र में कुम्भ 150
राशि की स्थिति, शुभाशुभ व योगकारक ग्रह 151
कुम्भ लग्न- गुण, स्वभाव, व्यवसाय, विवाहादि 152-154
कुम्भ लग्न की स्त्रियां 155-156
दशाफल व उपयोगी उपाय 156-157
कुम्भ लग्न: सूर्य का द्वादश भावफल 158-159
कुम्भ लग्न: चन्द्र का द्वादश भावफल 160-161
कुम्भ लग्न: मंगल का द्वादश भावफल 161-163
कुम्भ लग्न: बुध का द्वादश भावफल 163-164
कुम्भ लग्न: गुरु का द्वादश भावफल 165-166
कुम्भ लग्न: शुक्र का द्वादश भावफल 166-168
कुम्भ लग्न: शनि का द्वादश भावफल 168-170
कुम्भ लग्न: राहु का द्वादश भावफल 170-171
कुम्भ लग्न: केतु का द्वादश भावफल 172-173
कुम्भ लग्न की उदाहरण कुण्डलियां 174-179

मीन लग्न

मूलभूत विशेषताएं, भचक्र में मीन राशि की स्थिति 180
शुभाशुभ एवं योगकारक ग्रह 181
मीन लग्न-गुण, स्वभाव, विशेषताएं, विवाह 182
सुख, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय
मीन लग्न की स्त्रियां 184-185
दशाफल व उपयोगी उपाय 185-186
मीन लग्न: सूर्य का द्वादश भावफल 186-187
मीन लग्न: चन्द्र का द्वादश भावफल 187-189
मीन लग्न: मंगल का द्वादश भावफल 189-191
मीन लग्न: बुध का द्वादश भावफल 191-193
मीन लग्न: गुरु का द्वादश भावफल 193-195
मीन लग्न: शुक्र का द्वादश भावफल 195-196
मीन लग्न: शनि का द्वादश भावफल 197-198
मीन लग्न: राहु का द्वादश भावफल 199-200
मीन लग्न: केतु का द्वादश भावफल 200-202
मीन लग्न में द्विग्रही, त्रिग्रही आदि योग 202-203
मीन लग्न की उदाहरण कुण्डलियां 204-208

द्वितीय खण्ड

द्विग्रही योगों का फल 209-216
तीन ग्रहों के योगों का फल 217-220
चार ग्रहों के योगों का फल 221-224
पंच, षड् एवं सप्तग्रही योगफल 225-228
फलित ज्योतिष में प्रसिद्ध योग 229-235

तृतीय-खण्ड
दशाफल खण्ड

ग्रहों की विश्येतरी दशाओं का वर्णन 236
चंद्रस्पष्ट से नक्षत्रों के भोग्यकाल 236-237
ग्रहों की अन्तर्दशा जानने की विधि 238
दशाऽन्तर्दशा फलादेश सम्बन्धी नियम 238-39
भावेश अनुसार विशोतरी दशाफल 240
दशाफल में लग्नगत ग्रहों का शुभाशुभ 240-241
सूर्य महादशा में अन्तर्दशाओं का फल 241-242
चन्द्रमहादशा मे अन्तर्दशाओं का फल 243-244
मंगल में अन्तर्दशाओं का फल 244-245
राहु में अन्तर्दशाओं का फल 245-247
गुरु में अन्तर्दशाओं का फल 247-248
शनि में अन्तर्दशाओं का फल 248-249
बुध में अन्तर्दशाओं का फल 249-251
केतु में अन्तर्दशाओं का फल 251-252
शुक्र में अन्तर्दशाओं का फल 252-253
योगिनी दशाओं का फल 254-255

चतुर्थ खण्ड

द्वादशांश फल विचार 256-257
माता पिता की आयु व स्वास्थ्य 257
त्रिशांश कुण्डली निर्माण व फल 257-260

पंचम खण्ड

ज्योतिष और रोग विचार 261-262
27 नक्षत्रों से सम्बन्धित रोग 262-265
द्वादश भावों एवं नवग्रहों से रोग विचार 266
भावों एवं राशियों द्वारा रोग 267-268
राशियों के तत्त्वानुसार रोग 268
जन्मकुण्डली से रोग विचार 269
मंगलीक दोष-सदैव अनिष्टकारी नहीं 270-273
स्त्री जातिका विचार 274-277
पुस्तक सूची 278-280

प्रमुख वितरक-जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। फोन नं. 2457959

जन्म कुण्डली में फलादेश कथन में कुछ उपयोगी नियम

जन्मपत्री से भविष्य कथन करते समय कुछ विशेष नियमों को ध्यान में रखना परमावश्यक होता है। इस सम्बन्ध में हमने **ज्योतिष तत्त्व** (फलित-प्रथम भाग) में पृष्ठ 47 से 51 तक के पृष्ठों पर फलादेश सम्बन्धी 26 विशेष नियम उल्लिखित किए हुए हैं। पाठक उनका अनुशीलन अवश्य करें। पाठकों के लाभार्थ कुछ विशेष उपयोगी नियम पुनः दिए जा रहे हैं। आशा है, जन्मपत्री एवं कुण्डली द्वारा फलादेश करते समय उपयोगी सिद्ध होंगे।

(1) जिस भाव का फल देखना हो, उस भाव/राशि पर शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि आदि। इसी भान्ति, भावेश ग्रह की शुभाशुभ स्थिति तथा उस पर अन्य ग्रहों की दृष्टि, योगादि का विचार अवश्य करना चाहिए।

(2) (i) यदि छठे गृह का स्वामी छठे भाव में हो, तो ऐसा जातक अत्यन्त साहसी और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

(ii) यदि ग्यारहवें भाव का स्वामी ग्यारहवें भाव में ही हो, तो वह जातक विपुल धन का स्वामी, भूमि-सवारी आदि सुखों से युक्त एवं सौभाग्यशाली होता है।

(3) वृहद् पाराशरी अनुसार त्रिकोण भाव (5,9) **लक्ष्मी के स्थान** हैं तथा केन्द्र (1, 4, 7, 10)-ये **भगवान् विष्णु के स्थान** हैं। यदि दोनों स्थानों के स्वामी विष्णु और लक्ष्मी **(लक्ष्मी-नारायण)** की कृपा का सम्बन्ध उपरोक्त भावों में से किसी एक भाव में हो जाए, तो यह योग श्रेष्ठ शुभ फलदायी व राज योगकारक माना जाता है। ऐसा जातक विशेष भाग्यशाली होता है-

लक्ष्मी स्थानं त्रिकोणं च विष्णुस्थानं च केन्द्रकम्।
तयोः सम्बन्ध-मात्रेण राजयोगादिकं भवेत्॥ पाराशर॥

(4) (क) लग्नेश (लग्न का स्वामी) तथा दशमेश-दोनों परस्पर एक दूसरे के भाव में बैठे हों अर्थात् लग्नेश दशम में हो, और दशमेश लग्न में हो, तो राज-योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति लोक प्रसिद्ध, धनवान् और सर्वत्र विजय (सफलता) प्राप्त करने वाला होता है।

(ख) इसी भान्ति नवमेश और दशमेश ग्रह दोनों परस्पर एक दूसरे के स्थानों में हों, तो भी राजयोग होता है।

(5) जो-जो भाव या ग्रह पंचमेश एवं नवमेश से युक्त या दृष्ट हों, वह सुख फलदायक होते हैं और जो-जो ग्रह षष्ठेश, अष्टमेश, द्वादशेश या मारकेश (2, 7) ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, वह रोग, शोक, कलह-क्लेश, अर्थ संकट एवं दुख प्रदायक होते हैं-

ये ये ग्रहा (भावाश्च) धर्मण-बुद्धिपाभ्यां युक्ताश्च दृष्टाश्चसुख प्रदास्ते।
रन्ध्रेश्वरारि व्ययपैर्युताः स्युः शोकप्रदा मारकनायकैश्च॥

(6) **भाव कारकत्व**-यदि कोई ग्रह अपने कारक भाव में अकेला बैठा हो, तो उस भाव/राशि के पूर्ण फल को नहीं प्रकट कर पाता, तथापि किसी अन्य ग्रह के योग, दृष्टि आदि के सम्बन्ध से शुभाशुभ फल देता है। जैसे कहा भी है **''कारको भाव नाशाय''** अर्थात् किसी भाव का कारक होकर कोई ग्रह स्थित हो, तो वह उस भाव के फल का नाश करता है। जैसे मान लो बृश्चिक लग्न में, चन्द्रमा भाग्येश होकर चतुर्थ भाव में अकेला पड़ा हो, तो वह चतुर्थ भाव सम्बन्धी फल जैसे माता, भूमि, मकान, सवारी आदि के सुखों में विघ्न कारक होगा ना कि भाग्य-वृद्धिकर। यदि चन्द्र के साथ कोई अन्य शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र आदि) होगा, तो चतुर्थ भाव सम्बन्धी अवश्य सुख प्रदान करेगा।

(7) किसी कुण्डली में किसी उच्च-नीचादि ग्रह देखकर फल कथन में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए, बल्कि उस ग्रह की स्थिति का अवलोकन भाव चलित कुण्डली तथा नवांश आदि वर्ग कुण्डली में भी अवश्य करना चाहिए। किसी जातक की कुण्डली में यदि कोई ग्रह उच्च राशि अंशों में हो, परन्तु यदि नवांश में नीच राशिस्थ हो, तो उस स्थिति में जातक को मिश्रित अर्थात् शुभाशुभ दोनों फल मिलते हैं, बल्कि नीच का फल शीघ्र मिलता है। इसी भान्ति जन्म कुं. में यदि कोई ग्रह नीच का पड़ा हो, परन्तु नवांश में उच्च का हो, तो जन्म कुण्डली वाले ग्रह का नीच फल क्षीण होकर ग्रह जातक को शुभ फल देने लगता है।

नीचांशगस्तुंग गृहोपयाता जातस्य नीच फलमाशु दद्युः।
नीचगतास्तुंग नवांशकस्थाः सौम्यं फलं व्योमचराः प्रकुर्युः॥ (जातक पारिजात)

यदि जन्म लग्न और नवांश कुण्डली का लग्न समान हो, तो वह वर्गोत्तम नवांश होता है। वर्गो. नवांश में उत्पन्न जातक अपने कुल, परिवार एवं विभाग का मुखिया एवं प्रभावशाली व्यक्तित्त्व तथा साधन सम्पन्न व्यक्ति होता है। इसी भान्ति, यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह स्वोच्च, स्वगृही या मित्र भावी हो तथा नवांश कुण्डली में भी वह स्वगृही, उच्च या मित्र भावी स्थिति में हो, तो वह ग्रह भी वर्गोत्तमी कहलाता है, तथा वर्गोत्तम स्थिति में गया ग्रह अपने भाव एवं कारकत्व अनुसार विशेष शुभ एवं उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

(8) कुण्डली में दो, तीन या अधिक ग्रहों के फल का निर्णय करते समय ध्यान दें कि जो ग्रह सर्वाधिक बली होगा, वह अन्य ग्रहों के फल को भी प्रभावित करता है। इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण दो-तीन आदि ग्रहों के फलकथन के अध्याय में अवलोकन करें।

(9) लग्न भाव पर जितने अधिक शुभ ग्रहों की दृष्टि होगी, उस जातक का व्यक्तित्व उतना अधिक बलान्वित, समृद्ध एवं भाग्यशाली होगा। ऐसा व्यक्ति जीवन में विशेष उन्नति करता है।

(10) क्रूर एवं पापी ग्रह तथा 6, 8 एवं 12वें भाव का स्वामी गोचरवश जिस भाव में भी जाता है, जातक को उस भाव सम्बन्धी हानि, कष्ट, रोग, शोक एवं परेशानियां देता है।

(11) सभी ग्रह अपनी महादशा में जब अपनी ही अन्तर्दशा आती है, तब शुभ फल नहीं करते, अपितु अपने मित्र ग्रह एवं अपनी उच्चराशि के स्वामी ग्रह की अन्तर्दशा आने पर ही शुभ फल प्रदान करते हैं। इस सम्बन्ध में और अधिक जानकारी हेतु **''विंशोतरी महादशा/अन्तर्दशा''** सम्बन्धी अध्याय का स्वाध्याय कीजिए।

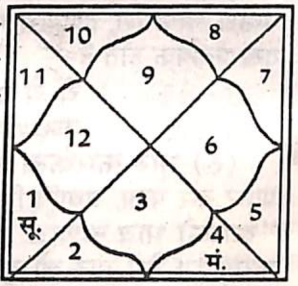
(12) शनि की महादशा में शुक्र का अन्तर हो, तो शुक्र अपने गुण छोड़कर शनि के प्रभाव ग्रहण कर लेता है। कुण्डली में शनि अशुभस्थ हो, तो शुक्र भी अशुभ फल देने वाला हो जाता है। शुक्र एवं शनि यद्यपि परस्पर नैसर्गिक मित्र हैं। अतएव शुक्र मध्ये शनि की अर्न्तदशा में शनि शुभ फल अर्थात् शुक्र के समान फल प्रदान करेगा।

(13) ज्योर्तिमतानुसार शीर्षोदय राशियों (मिथुन, सिंह, कन्या,तुला, बृश्चिक और कुम्भ राशियां) में स्थित शुभाशुभ ग्रह अपनी दशा एवं गोचर आदि वश शीघ्र फल प्रदान करते हैं तथा पृष्ठोदय राशियों (1, 2, 4, 9, 10) में पड़ें ग्रह विलम्ब से अपना शुभाशुभ फल देते हैं। जबकि मीन (उभयोदय) राशि में पड़े ग्रह राशि के मध्य में अपना शुभाशुभ फल प्रकट कते हैं। एक अन्य मतानुसार शीर्षोदय राशियों में पड़े शुभ ग्रह अत्यन्त शुभ फल करते हैं जबकि पृष्ठोदयी राशियों में क्रूर एवं पापग्रह और भी अधिक अशुभ एवं हानिकारक होते हैं।

(14) तीसरे, छठे एवं ग्यारहवें भावों में राहु, शनि एवं मंगल हों, तो अनेक अरिष्टों का नाश करके धन, सुख एवं ऐश्वर्य में वृद्धि करते हैं-

''त्रिषड् एकादशे राहु, त्रिषड् एकादशे शनिः, त्रिषड् एकादशे भौम सर्वारिष्ट निवारकाः ॥''

(15) किसी जन्म कुण्डली में पड़े उच्चादि ग्रह को देखकर एकदम यह निर्णय नहीं लेना चाहिए कि वह सदा अच्छा (उत्तम) फल ही करेगा। बल्कि ग्रह सम्बन्धी शुभाशुभ निर्णय करने से पूर्व यह भी देखें कि जिस राशि में वह ग्रह उच्चादि अवस्था में पड़ा है, उस राशि का स्वामी यदि दु:स्थान में नीच आदि अवस्था में होगा, तो वांछित शुभ फल नहीं करेगा। जैसे उदाहरण में भाग्येश सूर्य पंचम भाव में उच्च राशिस्थ होने पर भी, पंचमेश मंगल यदि अष्टम में नीच राशिस्थ है, तो जातक को उच्च विद्या, धन एवं सन्तानादि के सम्बन्ध में विघ्न एवं परेशानी कारक होगा। यही नियम नीच राशि पर भी होगा, अर्थात् यदि कुण्डली में कोई ग्रह नीच राशिगत पड़ा है, परन्तु उस नीच राशि का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशिगत हो तो नीच राशि का ग्रह विशेष अशुभ फल नहीं देगा।



फलादेश सम्बन्धी और अधिक विस्तृत नियमों की जानकारी के लिए हमारी पूर्व प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व फलित (प्रथम खण्ड) का अवलोकन करें।

विनीत : पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी, पंचांग दिवाकर कार्यालय, अड्डा होशियारपुर जालन्धर शहर।

भाग्योदय काल एवं दिशा जानना

सप्तमेश या शुक्र 3, 6, 7, 10, 11वें स्थान में हो, तो विवाह के पश्चात् भाग्योदय होता है। भाग्येश रवि हो, तो 22वें वर्ष में, चन्द्रमा हो, तो 24वें वर्ष में, मंगल हो तो 28वें वर्ष में, बुध हो, तो 32वें वर्ष में, गुरु हो तो 16वें वर्ष में, शुक्र हो, तो 25वें वर्ष में, शनि हो, तो 36वें वर्ष में और राहु हो तो 42वें वर्ष में भाग्योदय होता है। जिस राशि में भाग्येश, लग्नेश एवं दशमेश ग्रह बैठे हों, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी कुण्डली में लग्नेश, दशमेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में बैठे हों, तो जातक का भाग्योदय दक्षिण दिशा में होगा- ऐसा कहना चाहिए। क्योंकि वृष राशि दक्षिण दिशा की स्वामिनी है।

तुला राशि एवं तुला लग्न (Libra)



तुला लग्नोदये जातः सुधी : सत्कर्मजीविकः ।
विद्वान् सर्वकलाभिज्ञो धनाढयो जनपूजितः ॥
गुणाधिकत्वाद् द्रविणोपलब्धि वाणिज्य कर्म व्याति नै पुणत्वम्
पद्मालया तन्निलये न लोला लग्नं चेत्सकुलावतं सः ॥

अर्थात् तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, अच्छे कर्मों से आजीविका उपार्जन करने वाला विद्वान, अनेक कलाओं में निपुण धनी, व्यवहार कुशल तथा कुल में श्रेष्ठ होता है।

राशिचक्र में तुला राशि **सातवीं राशि** है। भचक्र में इस राशि का विस्तार 180° अंश से 210° अंश तक है। इस राशि का अधिपति (स्वामी) ग्रह शुक्र (Venus) है, जो सौर मण्डल में सर्वाधिक चमकने वाला आकाशीय पिण्ड है। आकाश मण्डल में तुला राशि कन्या राशि से दक्षिणपूर्व भाग में है तथा राशि का निवास (सम्बन्ध) वस्ति भाग नाभि के नीचे आस-पास गुर्दों एवं मूत्राशय है। इस राशि के अन्तर्गत चित्रा नक्षत्र के अन्तिम दो पाद, स्वाती के चारों पाद तथा विशाखा के प्रथम तीन पाद आते हैं। चित्रा का स्वामी मंगल, स्वाती का राहु तथा विशाखा का स्वामी गुरु माना जाता है।

इन नक्षत्र चरणों के नामाक्षर इस प्रकार हैं- रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते।

लग्न एवं लग्नेश के अतिरिक्त जन्म एवं नाम राशि व उसके नक्षत्र स्वामी का भी जातक के जीवन पर विशेष प्रभाव रहता है।

इसके अतिरिक्त किसी जातक के जन्म समय का लग्न स्पष्ट जिस नक्षत्र के अंश या पाद (चरण) पर होता है, उस नक्षत्र भाग के स्वामी के अनुरुप भी जातक के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। यद्यपि राशि स्वामी या लग्नेश शुक्र का प्रभाव (गृह की स्थिति के अनुसार) रहता ही है। इसके अतिरिक्त जातक के लग्न सम्बन्धी होरा, द्रेष्काण, नवांश, त्रिशांश आदि षड्वर्ग कुण्डलियों का विश्लेषण कर लेने से जातक के व्यक्तित्व, माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री, संतान आदि सुखों के सम्बन्ध में और अधिक सूक्षमता एवं स्पष्टता आ जाती है। **उदाहरणतः** यदि किसी जातक का तुला लग्न 3 अंश पर हो उसका प्रथम द्रेष्काण तुला का ही होगा तथा द्रे. कु. में यदि शुक्र चन्द्र-शनि आदि स्त्रीकारक ग्रहों में परस्पर सम्बन्ध हो तो जातक को प्रथम बहिन का सुख अवश्य होगा। इसी भान्ति नवांश में भी प्रथम तुला का ही नवांश होने से नवांश लग्न वर्गोत्तम राशि का माना जाएगा जो कि विवाहोपरान्त सुन्दर स्त्री, धन लाभ व भागयोन्नति आदि सुखों में वृद्धि कारक होगा। अस्तु इसी भान्ति अन्य वर्ग कुण्डलियों का विश्लेषण करना चाहिए।

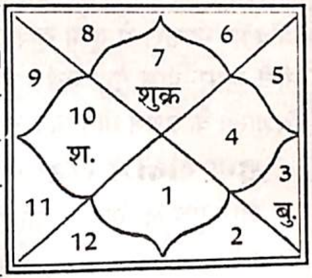
तुला राशि के अन्यपर्यायवाची नाम-तौली, वणिक, तुलाधर, पण्याजीव यूक इत्यादि। उर्दू में मेजान तथा अंग्रेज़ी में लिब्रा (Libra) कहते हैं।

तुला राशि सौन्दर्य एवं सन्तुलन की राशि है। आकाश मण्डल में इसका स्वरूप श्वेत वस्त्रधारी पुरुष के हाथ में तराजू धारण किए हुए एक श्वेत वस्त्रधारी पुरुष की भान्ति है। इसकी स्थिति कन्या राशि के दक्षिण-पूर्व भाग में है। तुला न्याय प्रिय राशि मानी जाती है, क्योंकि इसका चिन्ह (निशान) तराजू है जो कि न्याय का प्रतीक है। यह बृहत्काय राशि पुलिंग (पुरुष जाति), चरसंज्ञक, वायुतत्त्व प्रधान, युवावस्था वाली, नील वर्ण, क्रूर किन्तु विचारशील-स्वभाव, दिवा-बली, रजोगुणी, त्रिधातु प्रकृति, विषम संख्यक, शूद्र जाति (मतान्तरे वैश्य-जाति) अल्प सीमित सन्तान, शीर्षोदयी एवं पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। शनि तुला राशि में 20 अंश पर **परमोच्च** तथा सूर्य इस राशि पर **परमनीच** अवस्था में माना जाता है। शुक्र इस राशि पर 1 से 10 अंश तक मूलत्रिकोण तथा 10 अंश से 30 तक **स्वराशिगत** माना जाता है।

निरयण सूर्य गोचरवश प्रतिवर्ष प्राय: 17 अक्तूबर से 15 नवंबर के मध्य इस राशि में संचार करता है। फलित ज्योतिष अनुसार तुला राशि सूर्य की नीच राशि मानी जाती है अर्थात् इस समयावधि में तुला राशि पर शुभ विकिरणीय प्रभाव नहीं पड़ते।

गुण एवं सामान्य विशेषताएं- तुला न्याय एवं अनुशासन प्रिय राशि है, क्योंकि इसका चिन्ह सम भाग में रखा हुआ तराजू है, जो कि न्याय का प्रतीक है। यह सौन्दर्य, न्याय एवं संतुलन की राशि मानी जाती है। जातक सौम्य एवं हंसमुख, मिलनसार, शान्तिप्रिय, वैश्य जाति होने से व्यवहार कुशल, लेन-देन में स्पष्ट एवं ईमानदार, सतर्क (सावधान) एवं मध्यस्थता के कार्यों में निपुण होगा। चर एवं **वायुतत्त्व** राशि होने से संवेदनशील, भावुक परन्तु दयालु, परिस्थिति अनुसार स्वयं को ढाल लेने वाला, स्त्री वर्ग, सिनेमा संगीत, अभिनय आदि कलाओं में विशेष रुचि होगी। यह राशि न्याय, नीति, धर्म एवं स्मृति आदि शास्त्रों का भी प्रतिनिधित्व करती है।

तुला लग्न में शुभाशुभ एवं योगकारक ग्रह



तुला लग्न में लग्नेश शुक्र, केन्द्र-त्रिकोणेश शनि तथा **चन्द्र** शुभ एवं योग कारक ग्रह माने जाते हैं। जबकि भाग्येश एवं व्ययेश **बुध** मिश्रित फलप्रदायक होता है। **मंगल** सप्तमेश एवं द्वितीयेश होने से मिश्रित फल प्रदान करेगा अर्थात् कुण्डली में स्थिति के अनुसार फल करेगा। कुण्डली में अशुभ भावस्थ अथवा नीच या शत्रु राशिगत होने से अशुभफल तथा मित्र, उच्चादि शुभ राशिस्थ या शुभ भावस्थ होने से अकस्मात् धन प्रदायक भी हो सकता है। सूर्य भी कुं. में स्थिति के अनुसार शुभाशुभ मिश्रित फल प्रदान करेगा।

गुरु तुला लग्न में त्रिषडायपति होने से अपनी दशाऽन्तरदशा में प्राय: अशुभ फल ही देता है। परन्तु अन्य ग्रह के सहचर्य से शुभ फल भी देता है।

तुला लग्न- प्रमुख विशेषताएं (Libra Ascendant)

शारीरिक संरचना एवं व्यक्तित्व (Physical Appearance):

तुला लग्न में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर एवं श्वेत वर्ण, मध्यम या ऊंचा कद (शुक्र की स्थित्यनुसार), कुछ लम्बा एवं कुछ लम्बाई लिए सुन्दर आयताकार (Oval Shaped) चेहरा, संतुलित शरीर रचना, भूरी या नीली आंखे, तीखे नयन-नक्श तथा आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होगा। अधिक आयु में भी युवा दिखलाई देने वाला चेहरा होगा। बाल्यकाल में प्राय: दुबला किन्तु दृढ़ अस्थि एवं पुष्ट होगा तथा आयु वृद्धि के साथ-साथ संतुलित एवं स्वस्थ शरीर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। तुला जातक प्राय: हंसमुख तथा दूसरों के मनोभावों को समझने तथा अपने विचार भी समझाने में कुशल होते हैं।

स्वभावगत चारित्रिक विशेषताएं- तुला लग्न में उत्पन्न जातक सौन्दर्यप्रिय, न्यायशील, शान्तिप्रिय, ईमानदार, विचारशील, तीव्र बुद्धिमान, धर्म-परायण, विनम्र-प्रियभाषी, **स्पष्टवादी** एवं बातचीत करने में कुशल होगा। कुण्डली में शुक्र के साथ चन्द्र, बुध एवं शनि ग्रह भी शुभस्थ हों, तो जातक कल्पनाशील, आदर्श एवं आशावादी दृष्टिकोण, उच्च अभिलाषी, अपने पहरावे एवं रहन सहन के प्रति विशेष सावधान, दयालु, उदारहृदय, परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढाल लेने वाला, कुछ खर्चीले स्वभाव का, भ्रमणप्रिय, संगीत, कला, काव्य एवं साहित्यिक रूचियों के बावजूद क्रय-विक्रय एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल होते हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे मनुष्य के मनोभावों को जान लेने में भी कुशल होते हैं। किसी अन्य व्यक्ति (विशेषकर महिला वर्ग) के साथ व्यवहार करते समय शिष्टता एवं शालीनता को नहीं भूलते। नए-नए सम्पर्क एवं मित्र बनाने में भी कुशल होते हैं। मानसिक एवं काल्पनिक शक्ति प्रबल होती है। परन्तु मन की

केन्द्रिय शक्ति अधिक देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे, पूरे मनोयोग के साथ लगा रहेगा, परन्तु अपने विचार या कार्य-योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। तुला प्रधान व्यक्ति किसी प्रकार का अनुचित दबाव को सहन नहीं कर सकता है। स्वच्छन्द प्रकृति होती है। कुछ विषयों में लापरवाह होने पर भी अपने उद्देश्य एवं स्वार्थ के प्रति सतर्क एवं सावधान रहेगा। चंद्र, गुरु व शुक्र यदि चर राशि में हों तो जातक को देश-विदेशों अनेक स्थानों में भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

सामान्यत: तुला राशिस्थ लग्न के जातक न्याय एवं मध्यस्थता के कार्य करने में निपुण, सच्चाई पसन्द, लोकप्रिय, उदार हृदय, परोपकारी व दान देने की प्रवृत्ति, पराक्रमी, वाहन व अन्य सुख साधनों के शौकीन, देवी-देवताओं और ब्राह्मणों में श्रद्धा रखने वाले, स्त्रियों से सम्बन्ध बनाने में कुशल तथा निजी पराक्रम व कुशल युक्तियों द्वारा धन-सम्पदा का अर्जन करने वाले होते हैं-

वृषतुरंग विक्रमः विक्रम द्विज सुरार्चनदान मनाः पुमान्।
शशिनि तौलि गते बहुदार भाग्विभव सम्भव संचित विक्रमः।

इनमें भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विशेष सन्तुलन रहता है। चन्द्र, बुध, शुक्र एवं गुरु के प्रभाव से जातक उच्चाभिलाषी, मिलनसार, भ्रमणप्रिय एवं नए-नए मैत्री सम्बन्ध बनाने में कुशल होता है। उसमें नेतृत्व करने की योग्यता तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध हों तथा प्रत्येक विषय पर गुणदोष के आधार पर शीघ्र निर्णय लेने में सक्षम, दूरदर्शी, विवेकशील, उच्चादर्श, दृढ़संकल्प तथा प्रत्येक स्थिति का पूर्वानुमान लगाने में कुशल होते हैं।

उदाहरणार्थ : देखें जन्म कुण्डली **महात्मा गांधी। मंगल-शुक्र तुला-शुक्र** अथवा चन्द्र-शुक्र का प्रभाव हो तो जातक को विशेष सौन्दर्यनुभूति रहती है। जातक को अभिनय, सिनेमा, संगीत, प्रकृति, साहित्य आदि कलाओं में विशेष अभिरुचि रहती है। शनि एवं शुक्र भी शुभस्थ हों तो जातक प्रसिद्ध अभिनेता, कलाकार, गायक या संगीतकार हो सकता है। इसके अतिरिक्त तुला जातक अवसर के अनुरूप नीति आयोजित करने में कुशल होते हैं। मंगल-शुक्र के प्रभाव से जातक को उत्तम कोटि के वस्त्रों (Dresses),फूलों, कॉस्मैटिक्स (सैंट, खुशबू आदि) अर्थात् सौन्दर्य प्रसाधनों, बढ़िया आवास एवं शानदार गाड़ियों (कारों आदि) का भी शौक रहता है। ऐसे योग वाले जातक को विपरीत योनि (Opposite Sex) के प्रति विशेष आकर्षण होता है। यदि मंगल-शुक्र ग्रहों का योग अशुभ भावों में बना हो, तो अत्यधिक कामुकता एवं विलासिता के कारण जातक शराब, अफीम आदि कई प्रकार के व्यसनों का शिकार हो जाता है जिसके फलस्वरूप स्वास्थ्य हानि एवं आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है। चन्द्र भी अशुभ हो तो, व्यवसाय में अस्थिरता, अनैतिक सम्बन्ध तथा घरेलू उलझनें होती हैं। यदि मंगल, शुक्र एवं बुध का शुभ सम्बन्ध हो तथा गुरु की उन पर शुभ दृष्टि पड़ती हो, तो वहीं कामुक ऊर्जा उच्चतम आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्ति हो जाती है। ऐसा जातक व्यक्तिगत स्वार्थों का परित्याग कर लोक कल्याण की भावना से सत्यपथ का आश्रय ग्रहण करते हुए जीवन के उच्चतम मूल्यों को प्राप्त कर लेता है। **उदाहरण स्वरूप देखें** महात्मा गांधी की जन्म कुण्डली नं. 64, इनकी जन्म कुण्डली में लग्न भाव में मं., शु., बु. ग्रहों की गुरु की विशेष दृष्टि पड़ रही है।

स्वास्थ्य और रोग- लग्नेश शुक्र यदि बली होकर शुभस्थ हो तो तुला लग्न जातकों का स्वास्थ्य प्राय: अच्छा रहता है। जीवन में क्रियाशील, चुस्त, व्यस्त, सक्रिय एवं युवा बने रहने की चेष्टा करते रहते हैं। तुला जातक संयमित (Balanced) भोजन एवं नियमित व्यायाम करते रहें तो बहुत कम रूग्ण होते हैं तथा दीर्घायु होते हैं। परन्तु यदि कुण्डली में शुक्र, गुरु, शनि, मंगल ग्रह पापाक्रान्त या अशुभस्थ हों, तो इनके शरीर में असंतुलन तथा स्वास्थ्य बिगड़ जाने की सम्भावना होती है। इस स्थिति में तुला लग्न जातक को पेट विकार, स्नायु रोग, प्रमेह, अपैंडिक्स, मानसिक थकान, मधुमेह, गुर्दे के रोग, पथरी आदि पेट गैस, वीर्य विकार एवं पेशाब जन्य गुप्त रोगों का भय रहता है।

तुला लग्न में सूर्य एवं मंगल अशुभ हों, तो शिर वेदना, मस्तिष्क एवं नेत्र रोग, नाक, कान व गले के रोग या उच्च

निम्नादि अव्यवस्थित रक्तचाप सम्बन्धी रोगों की आशंका होती है।

सावधानी- तुला लग्न के जातकों को अत्यधिक भोग और विलासिता से बचना चाहिए। इन्हें अत्यधिक कामुकता, शराब, मांस आदि तामसिक वस्तुओं के प्रयोग से भी परहेज़ करना चाहिए। सुखी जीवन के लिए प्रत्येक क्षेत्र में संयम एवं सन्तुलन अत्यन्त लाभदायक होंगे। ध्यान (Meditation) और ईश्वर भक्ति विशेष सहायक होगी।

शिक्षा और कैरियर (Education & Career) - तुला लग्न जातक की कुण्डली में पंचम भाव बली हो तथा पंचमेश शनि, भाग्येश बुध एवं लग्नेश शुक्र आदि ग्रहों का (स्थान, दृष्टि आदि से) शुभ सम्बन्ध बना हो तो जातक उच्च व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने में सफल हो जाता है। पंचम भाव में शनि को छोड़कर कोई अन्य पाप ग्रह (जैसे राहु, केतु, भौमादि) हो, तो उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न-बाधाएं होती हैं। परन्तु यदि जातक को ग्रहदशा एवं अन्तर्दशा किसी शुभ एवं योगकारक ग्रह की लगी हो, तो वह अड़चनों के बावजूद जातक उच्च व्यवसायिक (Professional) विद्या प्राप्त करने में सफल होता है।

व्यवसाय और आर्थिक स्थिति- स्वतन्त्रता प्रिय, सृजनात्मक एवं कलात्मक अभिरुचि होने के कारण तुला लग्न जातक चिरकाल तक किसी की अधीनता स्वीकार नहीं कर पाते। नौकरी (सर्विस) की अपेक्षा अपने निजी व्यवसाय में अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जन्म कुण्डली में शुक्र, शनि, बुध एवं चन्द्रादि ग्रह शुभ भावस्थ हों अथवा शुभ या योग कारक ग्रहों द्वारा वीक्षित हों, तो जातक निम्नलिखित व्यवसायों में विशेष कामयाब एवं लाभान्वित होते हैं। यथा प्राध्यापक, वकील, न्यायाधीश, क्रय-विक्रय (Trading) व्यापार, कवि, संगीतकार, गायक, अभिनय, कलाकार, डाक्टर, राज-नीतिज्ञ, बैंकिंग, भवन-निर्माण, लौह कल पुर्जे, टैलीविज़न, लेडीज़ गारमैण्ट, फैशन-डिज़ाइनिंग, वस्त्र-विक्रेता, बेकरी मिठाई, होटल, फर्नीचर डीलर, आर्किटैक (Architect), आन्तरिक साज-सज्जा, औषधि विक्रेता (Chemist), नौसेना कर्मचारी, आईसक्रीम आदि फास्ट फूट, स्टेशनरी औषधि विक्रेता (Chemist), मोटरादि के स्पेअर पार्टस, कम्पयूटर या कम्पयूटर से सम्बन्धित काम, फोटोग्राफी, प्लास्टिक उद्योग, खिलौने इत्यादि से सम्बन्धित व्यवसाय से विशेष धन लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। किसी जातक की कुण्डली में दशम या दशमेश ग्रह अथवा उनसे सम्बन्धित जो ग्रह बलान्वित, उसके अनुसार ही जातक को व्यवसाय में लाभ होता है। जैसे सूर्य बली हो, तो जातक को सरकारी क्षेत्रों से विशेष लाभ होता है।

आर्थिक स्थिति (Financial Position)- तुला लग्न के जातक की आर्थिक स्थिति मुख्यतः चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि व बुधादि ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति पर निर्भर करती है। यदि तुला जातक की कुण्डली में शनि, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध एवं शुक्र शुभस्थ या योगकारक स्थिति में हों, तो व्यवसाय द्वारा अच्छा धन अर्जन करते हैं। दो या अधिक ग्रहों में दृष्टि, योग आदि का सम्बन्ध बना हो, तो जातक निजी पुरुषार्थ के अतिरिक्त भाग्यवश एक से अधिक धन प्राप्ति के साधन प्राप्त करता है। विशेषकर सूर्य, मंगल एवं बुध ग्रहों से सम्बन्ध हो तो धनागमन में पारम्परिक पैतृक योगदान विशेषकर प्रमुख होता है। उदाहरण देखें कुण्डली नं. 60। बुध-शुक्र के योग में जातक क्रय-विक्रय (व्यापार) द्वारा विशेष तौर पर लाभान्वित होते देखे गए हैं।

शनि शुभस्थ (स्वक्षेत्री, उच्चस्थ) हो तो जातक अपने बुद्धि कौशल एवं गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने में कुशल होता है। भूमि, मकान, वाहन आदि के सुख भी प्राप्त होता है। देखें कुण्डली संख्या 61।

तुला लग्न में मंगल भी स्वक्षेत्री या उच्चस्थ हो तो विवाह उपरान्त धन एवं सम्पदा में विशेष लाभ व उन्नति होती है।

सामान्यतः अनुभव में यही आया है कि तुला लग्न में जातक कठिन परिस्थितियों में भी अपने परिश्रम, निष्ठा एवं समायोजित योजना से निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त कर ही लेते हैं तथा जल्द ही अपने परिवार के लिए सुन्दर एवं अन्य वस्तुएं खरीदने के लिए उदारतापूर्वक खर्च भी कर देते हैं। तुला जातक सीमित साधनों में भी रईसी ढंग से खर्च करने में नहीं हिचकिचाते।

प्रेम सम्बन्ध एवं परिवारिक जीवन:-

तुला लग्न के जातक के जीवन में प्रेम और सैन्दर्य का विशेष महत्त्व होता है। अपने स्वच्छन्द व्यवहार, सहज मुस्कान एवं वाक् पटुता के कारण पुरुष मित्रों के साथ-साथ महिला मित्रों में भी आकर्षण का केन्द्र बने रहते हैं। चाहे किसी आयु में हों, अपने मित्रों से सम्बन्ध बनाए रखते हैं। यदि शुक्र, मंगल की राशि में हो अथवा मंगल के साथ हो तो उस स्थिति में समाजिक मर्यादाओं को तोड़ कर भी, अपनी इच्छा के अनुसार जीवन साथी का चयन करते हैं। कहीं अनैतिक सम्बन्ध भी हो सकते हैं। परन्तु प्रेम सम्बन्ध चिरस्थायी नहीं रह पाते। अशुभ योगों के कारण कई बार तम्बाकू, शराब आदि व्यसनों के भी शिकार हो जाते हैं।

शुभ राशि जातक एवं उपयुक्त जीवन साथी

इसके लिए मैत्री चक्र के अतिरिक्त तत्त्व दृष्टि से भी विचार करना चाहिए। तुला राशि या लग्न को मेष, मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि वालों के साथ वैवाहिक या व्यवसायिक सम्बन्ध शुभ एवं लाभदायक रहते हैं। वृष, कर्क, कन्या, बृश्चिक, धनु एवं मकर राशि के साथ मिश्रित अर्थात् मध्यमफली जबकि **सिंह** व **मीन** राशि वालों के साथ षडाष्टक दोष होने से लाभदायक एवं शुभ नहीं होता।

इसके अतिरिक्त मेलापक सम्बन्धी गुण आदि अन्य नियमों पर भी विचार कर लेना चाहिए।

गृहस्थ जीवन-तुला जातक प्रेम सम्बन्धों में प्रायः चंचल, स्वच्छन्द प्रकृति एवं उन्मुक्त व्यवहार में विश्वास करते हैं, परन्तु विवाहोपरान्त (यदि उपयुक्त जीवन साथी हो) उनके जीवन में विशेष परिवर्तन देखे गए हैं, विशेषकर बच्चों की पैदायश के पश्चात् उनकी प्रकृति में विशेष सुधारात्मक परिवर्तन होते हैं। अपने परिवार एवं गृहस्थ जीवन के प्रति पूरे ईमानदार एवं समर्पित होते हैं। अपने परिवार को जीवनोपयोगी सभी प्रकार की सुख/सुविधाएं देने के लिए जीवन पर्यन्त कठोर परिश्रम करते हैं। पंचमेश शनि के कारण सन्तान अल्प अथवा सीमित संख्या में होती है।

तुला लग्न की स्त्रियां (Libra Born Females)

तुला लग्न राशि में उत्पन्न होने वाली लड़की का ऊंचा कद, सुन्दर मुख और आयताकार आकृति, कुछ लम्बाई लिए हुए, सन्तुलित (Balanced), खूबसूरत एवं आकर्षक शरीर रचना वाली होती है। नयन-नक्श तीखे तथा अधिक आयु में भी प्रायः युवा दिखाई देने वाली होगी। बाल्यकाल में कुछ दुबली, किंतु आयु वृद्धि के साथ-साथ स्वास्थ्य में सुधार होगा। राशि स्वामी शुक्र शुभस्थ हो तो तुला राशि जातिका विनम्र स्वभाव, सहज मुस्कान लिए हुए-हंसमुख, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बुद्धिमान,न्यायप्रिय, व्यवहार-कुशल, स्पष्टवादी (Bold), स्वाभिमानी (Self Assertive) एवं उत्साहशील (Impulsive) प्रकृति की होगी। इसके अतिरिक्त वह सौन्दर्य एवं कलात्मक अभिरुचियों से युक्त अपने रहन-सहन के तरीके, उचित पहरावे एवं खान-पान के प्रति विशेष सतर्क होगी। सौन्दर्य एवं



सजावट के प्रसाधनों, श्रृंगारिक एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह करने का शौक रखती हैं। **तुला जातिका** स्वभावतः प्रियभाषिणी, दयालु, उदार, परोपकारी, सामाजिक कार्य-कलापों में सक्रिय होती है, किसी भी विषय पर गम्भीर सोच विचार के उपरान्त ही अन्तिम निर्णय लेती है। कुण्डली में यदि चन्द्र-शुक्र अथवा मंगल/शुक्र का योग हो तथा उन पर गुरु की भी दृष्टि हो, तो जातिका उच्चशिक्षित होती है, उसे साहित्य, लेखन, संगीत, नृत्य, नाट्य आदि ललित कलाओं की ओर भी विशेष अभिरुचि होती है। व्यवसायिक तौर पर इनके द्वारा लाभ भी प्राप्त होता है। देखें कुण्डली नं. 67।

शुक्र के कारण तुला जातिका की कल्पना शक्ति प्रबल होती है, परन्तु मन की केन्द्रिय शक्ति अधिक देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य विशेष में लगी रहे, तब तक पूरे मनोयोग से और मजबूत दिल से करेगी, परन्तु अपने विचार और योजना में भी परिस्थिति अनुसार परिवर्तन करने को तैयार हो जाएगी। वैसे स्वभाववश प्रत्येक प्रकार की

परिस्थितियों में स्वयं को ढाल लेने की क्षमता रखेगी। तुला जातिका सामान्यतः वर्तमान में जीने को विश्वास रखती हैं। बाधाओं के बावजूद उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सफल हो जाती हैं। मंगल यदि शुभस्थ हो अथवा चन्द्र-शुक्र का योग हो तथा उस पर गुरु की दृष्टि हो तो उच्च शिक्षा के पश्चात् प्राध्यापन या अर्धसरकारी क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त कर लेती है।

गृहस्थ जीवन- तुला जातिका प्रेम सम्बन्धों एवं विवाह आदि के सम्बन्ध में स्वतन्त्र विचार रखती हैं। यद्यपि माता-पिता की आशा के विरुद्ध आचरण भी कम ही करती देखी गई हैं। विवाह के पश्चात् अपने पति को गृहस्थ एवं व्यवसाय में अच्छा सहयोग प्रदान करती हैं। गृह की सजावट, सुन्दर वस्त्र, उच्चस्तरीय सवारी, बड़ा सुन्दर मकान आदि की विशेष अभिलाषी होती है, परन्तु अपने पति के प्रति वफादार एवं निष्ठावान रहती हैं। तुला जातिका के बच्चे सीमित संख्या में होते हैं। सप्तम भाव में यदि राहु केतु, शनि, सूर्यादि आदि अशुभ ग्रह हों या उनकी अशुभ दृष्टि हो तो वैवाहिक जीवन के सुख में कमी रहती है। देखें उदाहरण कुण्डली नं: 68।

उपयुक्त जीवन साथी (Suitable Match)

तुला जातिका (राशि या लग्न) को मेष, मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशि वालों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध शुभ एवं उत्तम, वृष, कर्क, कन्या, बृश्चिक, धनु व मकर राशि/लग्न वालों के साथ मध्यमफली तथा सिंह व मीन राशि वालों के साथ शुभफली नहीं होंगे। यद्यपि इस सम्बन्ध में मिलान सम्बन्धी अन्य नियमों का भी अनुसरण करना चाहिए।

उपयुक्त व्यवसाय- तुला जातिका अपनी रुचि के अनुसार ही व्यवसाय में भी कलात्मक (Artistic) परिवर्तन लाने के प्रयास करती रहती है। तुला जातिका को फैशन डिज़ाईनिंग, कम्प्यूटरर्ज़, ब्यूटी-पार्लर, सिलाई-कटाई (Stitching), शिल्पकारी, माडलिंग (Modeling), गृहसाज सज्जा (Interior Decoration), रैडीमेड वस्त्र विक्रय (Ready Made Garments), नृत्य, गायन, अभिनय (Acting), प्राध्यापन (Teaching), वकालत, न्यायाधीश, बैंकिंग, सिनेमा, टैलीविज़न, होटल-रैस्टोरैण्ट, फोटोग्राफी, खिलौनों (Toys) आदि से सम्बन्धित कार्यों में विशेष सफलता प्राप्ति के अवसर होंगे।

तुला लग्न में ग्रहों की दशान्तरदशा का संक्षिप्त विवरण

तुला लग्न में उत्पन्न जातक/जातिका को **शुक्र, शनि, चन्द्र** से (यदि कुण्डली में शुभ पड़े हों), तो अपनी दशाऽन्तरशाओं में शुभ फल प्रदान करेंगे। शनि अपनी दशा या भुक्ति में भूमि, सवारी का सुख, विद्या या कम्पीटीशन में सफलता, सन्तान सुख, तकनीकि विद्या में कामयाबी दिलाएगा। चन्द्रमा व शुक्र अपनी दशाओं में कार्य-व्यवसाय या सर्विस में लाभ व उन्नति, माता एवं स्त्री का सुख, सौन्दर्य प्रसाधन या सवारी आदि अन्य सुख साधनों की प्राप्ति के साथ-साथ उन पर खर्च भी कराएंगे। कुण्डली में यदि शनि, चन्द्र या शुक्र अशुभ हों, तो उपरोक्त सुखों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

मंगल की दशा में कुछ परेशानियों व विघ्नों के पश्चात् धन लाभ तथा परिवारिक सुख प्राप्त होगा। तुला लग्न में मंगल धनेश एवं मारकेश भी होने से इस दशा में दुर्घटना से चोट अथवा रक्तविकार आदि से शरीर कष्ट का भय होता है। बुध की दशा में भाग्य में कुछ सुखद परिवर्तन होने की सम्भावना होती है परन्तु इस दशा में विभिन्न स्थानों पर यात्राएं एवं फिजूल खर्ची भी अधिक होती हैं।

गुरु की दशा- चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भावों में स्थित गुरु अशुभ फल तथा अन्य भावों में प्रायः शुभ फल प्रदान करता है।

राहु केतु- तुला लग्न कुण्डली में अपनी स्थिति एवं ग्रहयोग अनुसार फल प्रदान करेंगे।

तुला लग्न सम्बन्धी कुछ उपयोगी उपाय

शुभ रंग (Favourable Colours)- श्वेत, हल्का नीला, काला, गुलाबी रंग अनुकूल रहेंगे। हरे और पीले रंग के प्रयोग से बचें।

शुभ नग (Lucky Stone) - सवा रत्ति का हीरा (Diamond) प्लाटिनम या सोने की अंगूठी में शुक्रवार को अथवा किसी सुयोग्य पण्डित जी के परामर्श अनुसार शुभ मुहूर्त पर निम्नलिखित मंत्र का कम से कम 16 बार पाठ

करके धारण करना। मंत्र- ओं. द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

उस दिन श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करके ब्राह्मण दम्पत्ति का तथा पांच कन्याओं का पूजन करके उन्हें चान्दी, श्वेत वस्त्र, फल, बरफी, दूध, दही, चावल आदि का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी होगा।

यदि तुला लग्न में किसी जातिका की जन्म राशि या नाम राशि धनु हो या वैवाहिक सुख में वृद्धि के लिए श्वेत पुखराज भी धारण करवाया जा सकता है।

धन लाभ एवं सुखी वैवाहिक सुख के लिए मंगलवार का व्रत रखना तथा उस दिन गौओं को मीठी चपातियां डालना शुभ होगा।

कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो रविवार का व्रत रखना तथा सूर्य भगवान् को प्रतिदिन (विशेषकर रविवार) ''ओं घृणिः सूर्याय नमः'' मन्त्र द्वारा ताम्र बर्तन में तीन बार अर्घ्य देना शुभ होगा।

शुभ दिन (Favourable days)- रविवार, सोमवार, मंगलवार, शुक्रवार तथा शनिवार शुभ होंगे। बुधवार मिश्रा प्रभाव करेगा। जबकि गुरुवार अशुभफलप्रद होगा।

शुभ अंक- 3, 4, 5, 7, मध्यमफली 8, अशुभ अंक-2, 6, 9 **मध्यमफली**- 8 **अशुभ अंक**- 2, 6, 9
भाग्यशाली वर्ष- 16, 27, 28, 32 34, 35, 39, 40, 41, 42वें वर्ष

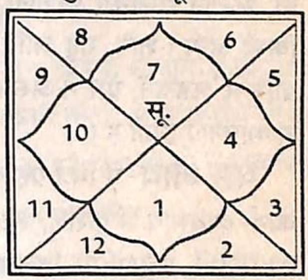
सावधानी- तुला लग्न/राशि के जातक/जातिकाओं को अत्यधिक भावुकता, भोग-विलासिता और उतावलेपन की प्रवृत्ति का यथासम्भव त्याग करना चाहिए

बाह्यमुखी प्रवृत्तियों के कारण आप विशेष परेशान एवं अशान्त रह सकते हैं। बनावट, श्रृंगार, कीमती वस्त्र, सवारी आदि सुख-साधनों तथा मादक व्यसनों पर वृथा खर्चों से बचें। सात्विक एवं संतुलित भोजन करना आपके मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा।

तुला लग्न-द्वादशभावों में सूर्यादि ग्रहों का फल

सूर्य, पराक्रम, नेतृत्व, पिता, अग्नि, तेज, आत्मबल, प्रभुत्व, प्रशासन एवं आरोग्यता का कारक माना जाता है। इसके अतिरिक्त 1, 9, 10वें भावों का भी कारक है। तुला लग्न में यह लाभेश होने से और भी महत्व हो जाता है।

तुला लग्ने सूर्य फल



नोट- सूर्यादि ग्रहों का प्रत्येक भाव पर किसी ग्रह के फल का निर्णय करते समय, कुण्डली में अन्य सभी ग्रहों की स्थिति, योग एवं उनकी पारस्परिक दृष्टियों का भी विश्लेषण कर लेंगे तो ग्रहों के फल अधिक सटीक घटित होंगे।

प्रथम भाव-में शत्रु एवं नीच राशि (तुला) का सूर्य होने से जातक न्यायशील, साहसी परन्तु शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला, प्रारम्भिक अवस्था में दुर्बल शरीर, नेत्र विकार, भ्रमणशील, ईर्ष्यालु, झगड़ालू, कभी अनैतिक कार्यों से धनार्जन करने वाला तथा कभी-कभी मद्य (मदिरा) पीने वाला, कामुक प्रवृत्ति, अस्थिर विचार, अशान्त मन, सिर पर चोट आदि का भय हो, कला एवं संगीत प्रेमी और शास्त्रीय विषयों में रुचि रखने वाला, कभी स्त्री के कारण परेशान एवं संतान की ओर से चिन्तित हो। ज्ञातव्य रहे, कि तुला राशि में सूर्य हो, तो जातक की कार्तिक-शान्ति भी करवा लेनी चाहिए, अन्यथा परिवार एवं विवाह सम्बन्धी परेशानियां या विलम्ब होता है। देखें उदा. कुं. नं. 67

यहां सूर्य की सप्तम भाव पर उच्च दृष्टि होने से स्त्री पक्ष से लाभ की भी सम्भावना होती है।

यदि लग्न पर गुरु आदि शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो तो उपरोक्त अशुभ फल में कमी होगी तथा जातक भूमि, जायदाद, वाहन, संतान आदि सुखों से युक्त होगा। देखें उदाहरण कुं. नं. (71)

द्वितीय भाव-बृश्चिक राशि में सूर्य होने से जातक भाग्यशाली, निर्वाह योग्य धनादि साधनों से युक्त, भ्रातृ-सुख में कमी, प्रशासनिक कार्यों, सरकारी क्षेत्र अथवा विभिन्न स्रोतों से आजीविका प्राप्त करने वाला, कलहयुक्त, असुखद घरेलू परिस्थितियों वाला, कुछ कटु वाणी एवं विकार युक्त, सूर्य बुध युक्त हो तो जातक अटक-अटक कर बोलता है।

सूर्य गुरु युक्त हो तो ऐश्वर्यशाली, धनवान तथा जातक मैडिकल, चिकित्सा, वकालत आदि के क्षेत्र में सफलता के योग होते हैं।

धने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्यात् चतुष्पाद सुखं सद्व्यये एवं च याति।
कुटुम्बे कलिः जायया जायतेऽपि, क्रिया निष्फला यातिला भस्य हेतोः॥

तृतीय भाव-मित्र ग्रह की धनु राशि में सूर्य होने से जातक कुशाग्र बुद्धि, पराक्रमी, धनवान, अपने पुरुषार्थ के बल पर धन लाभ एवं वाहन आदि सुख के साधनों से युक्त, भाई-बन्धुओं के सुख में कमी परन्तु जातक अपने प्रियजनों व अन्यों को सुख देने का प्रयत्न करता है। जातक लेखन, चिकित्सा, प्रकाशन, अध्यापन, ज्योतिष एवं वकालत आदि व्यवसायों में सफल होता है। जातक परोपराकरी, धार्मिक एवं तीर्थ यात्राएं करने वाला होता है। तृतीय भाव में सू. बु. व शनि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक अपने कार्यक्षेत्र में उच्चप्रतिष्ठित, विख्यात होता है तथा उसे देश-विदेशों में भ्रमण के अवसर प्राप्त होते हैं। देखें कुण्डली नं. 63 तथा 65, (प्रसिद्ध नेता अटल बिहारी व खिलाड़ी कपिल देव)

चतुर्थ भाव-में शत्रु राशि मकर पर सूर्य के प्रभाव से जातक को माता एवं भूमि आदि के सुखों में कमी होती है। उच्च विद्या, मकान एवं वाहन आदि के सुखों की प्राप्ति भी विघ्न/बाधाओं के पश्चात् होती है। परिवारिक सुख में भी कुछ अल्पता रहती है। वृथा विवाद में पड़ने की प्रकृति, अशान्त मन, ऐसा व्यक्ति जीवन में धन लाभ व उन्नति धीरे-धीरे करता है। यहां सूर्य यदि गुरु, मंगल, बुध, शुक्र आदि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को भूमि, मकान, अच्छी शिक्षा, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। यदि राहु आदि अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को निकट बन्धुओं से वैमनस्य और सुख में कमी होती है।

पंचम भाव-शत्रु ग्रह की राशि कुम्भ पर सूर्य के प्रभाव से जातक कुशाग्र बुद्धिमान, किन्तु अस्थिर एवं शीघ्र उत्तेजित होने वाला, अत्यधिक संघर्ष के बाद भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनें, अनायास धन लाभ की भी संभावना, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, मंत्र, ज्योतिष एवं धर्मादि गूढ़ विषयों में रुचि हो। उच्च विद्या में भी संघर्ष के पश्चात् सफलता हो, सन्तान सम्बन्धी परेशानी, अल्प सन्तति सुख अथवा पुत्र कम व कन्याएं अधिक होने के योग, पंचमस्थ सूर्य पर किसी अन्य (शनि, राहु आदि) ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो गर्भपात की सम्भावना करता है। इसके अतिरिक्त उच्च विद्या प्राप्ति में अड़चनें, प्रेम में असफलता अथवा पिता को कष्टकारी या हृदय सम्बन्धी रोग एवं परिवारिक चिन्ताएं होने की भी सम्भावनाएं होती हैं।

षष्ठ भाव-में मित्र ग्रह की राशि (मीन) पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक परिश्रमी, उच्च शिक्षित, प्रतिष्ठित, अपने कार्य-व्यवसाय में कुशल, स्वाभिमानी, अपने उद्यम द्वारा एवं गुप्त युक्तियों द्वारा धन लाभ प्राप्त करने वाला, भाई-बन्धुओं का हितैषी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, बाहरी सम्बन्धों से आय के साधनों में वृद्धि पाने वाला होगा। परन्तु सूर्य की द्वादश भाव पर दृष्टि होने से व्यय भी अधिक रहेंगे। देखें उदा. कुं. नं. 68।

छठे भावस्थ सूर्य पर यदि गुरु की दृष्टि हो, तो जातक चिकित्सा क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकता है, यदि राहु, शनि, केतु आदि द्वारा दृष्ट हो तो धन हानि, उदर विकार आदि रोगों का भय हो।

सप्तम भाव-मित्र ग्रह मंगल की उच्च राशि मेष पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक उच्चाभिलाषी, स्वाभिमानी, उच्चविद्या प्राप्त, बुद्धिमान, धनी, ईमानदार, किसी प्रतिष्ठित संस्थान या सरकारी क्षेत्र से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। सप्तम भावस्थ सूर्य प्रायः विवाह में विलम्बकारी होता है। मतान्तर से ऐसा जातक पर स्त्री में भी आसक्त होता है। यदि सप्तमेश भौम उच्चस्थ या स्वगृही हो या उस पर गुरु, भौमादि की दृष्टि हो तो जातक की विवाहोपरान्त विशेष भाग्योन्नति होती है अथवा सर्विस में कार्यरत लड़की से विवाह होता है। उदाहरण स्वरूप देखें कु. नं. 60 तथा कुं. नं. 73

अष्टम भाव-में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक परिश्रमी तथा व्यवसाय में अत्यन्त संघर्षशील, नेत्र रोगी, माता-पिता व भाई बन्धुओं के सम्बन्ध में चिन्तित व असंतुष्ट व परेशान होता है। कठिन परिश्रम द्वारा ही निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बन पाते हैं। यदि सूर्य पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि या युति हो तो पैतृक सुख में कमी होती है। यदि चन्द्र, बुध या मंगल आदि ग्रहों का योग या दृष्टि हो, तो जातक व्यवसाय में 32 वर्ष के पश्चात् लाभ व उन्नति करता है। विदेशी सम्बन्धों द्वारा भी धनार्जन करता है, परन्तु ऐसा जातक विशेष संघर्ष व कठिनाइयों के पश्चात् ही सफलता प्राप्त करता है। देखें कु. नं. 59, 66

निधनगत दिनेशे चंचलः त्यागशीलः किल बुधगण सेवी सर्वदा रोगयुक्तः॥

नवम भाव-में मित्र ग्रह की मिथुन राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, परोपकारी, परिश्रमी व धार्मिक विचारों वाला एवं भाग्यवान होता है। यदि अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो पितृ सुख में कमी होती है। भाई बन्धुओं के सुख से युक्त तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर धन, सम्पदा, सवारी, कुटुम्ब एवं पुत्र आदि सुखों को प्राप्त कर लेता है। धर्म, मन्त्र, नीति एवं ज्योतिष आदि गूढ़ शास्त्रों का भी जानकार होता है। इस भाव पर बुध, शनि, चन्द्र, मंगल आदि ग्रहों में से किसी ग्रह का योग अथवा दृष्टि सम्बन्ध हो, तो जातक ज्योतिष, आध्यापन, लेखन, प्रकाशन, क्रय-विक्रय, विदेशी सम्बन्धों एवं सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित होता है। उदाहरणार्थ देखें कुं. नं. (72)

दशम भाव-में चन्द्रमा की कर्क राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, भाग्यवान, सुशिक्षित, पराक्रमी, विद्वान, उदारहृदय, लोकमान्य एवं अपने व्यवसाय में कुशल होता है। यदि सूर्य के साथ मं., बु., शुक्रादि ग्रहों का सम्बन्ध हो, तो जातक उच्चस्तरीय व्यवसाय से सम्बन्ध, भूमि, ट्रेडिंग आदि द्वारा समुचित धनार्जन करने वाला, कला-संगीत प्रिय, भूमि, जायदाद, सवारी, संतान आदि सुख साधनों से युक्त होगा। ऐसे जातक के उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध भी रहते हैं। देखें कुं. संख्या नं. (61)

यदि दशम में सूर्य के साथ चन्द्र, बुधादि का योग या मंगल की दृष्टि हो तो जातक/जातिका डाक्टर, उच्च राज्याधिकारी, अफसर, चार्टर्ड, अकाउंटैंट (C.A.) होगा। देखें उदा. कुं. नं. 70

अतिमति रति विभवबलः धन वाहन बन्धु पुत्रवान् सूर्ये।

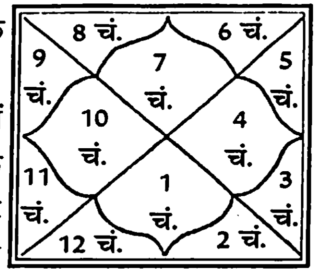
एकादश भाव-में स्वगृही सिंह राशि पर सूर्य होने से जातक, सूझवान, भूमि, मकान, वाहन, सन्तान आदि सुखों से युक्त, आकर्षक व्यक्तित्व, विचारशील, माता-पिता की सहायता से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, उच्च स्तरीय जीवन बिताने वाला, उच्चाकांक्षी, धनाढ्य व्यक्ति होगा। देखें कुं. नं. 69। सूर्य के साथ शुक्र, बुध का भी योग हो तो विशेष धनी एवं साधन सम्पन्न होता है। यदि सूर्य शनि द्वारा दृष्ट हो तो हृदय रोग या आघात का भी भय होता है।

लाभे सूर्ये समुत्पन्नों नाना लाभ समन्वितः।
सात्विको धार्मिको ज्ञानी रूपवानपि जायते॥

द्वादश भाव-में मित्र ग्रह बुध की कन्या राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, स्वाभिमानी, अन्वेषणशील प्रकृति, भ्रमणशील, नेत्र कष्टी, एकान्त प्रिय, कृश (पतला) शरीर, अपने जन्म स्थल से दूर (विदेशादि में) रहने वाला, वृथा अधिक व्यय करने वाला, व्यवसाय के क्षेत्र में विदेश आदि में संघर्षशील होता है। यदि चन्द्र, शुक्र, बुधादि का भी सम्बन्ध बना हो तो जातक महानात्मा, विख्यात, तीव्र बुद्धिमान, उच्चादर्श, सब संकट शान्ति से सहने वाला, सत् कर्म परायण, आध्यात्मिक प्रवृत्ति एवं सूक्ष्म विचारपूर्वक काम करने वाला होता है। उदाहरण स्वरूप देखें कुण्डली नं. 64 (महात्मा गांधी) ऐसा जातक धर्म शास्त्रादि गूढ़ विषयों को जानने वाला होता है।

तुला लग्नः चन्द्रमा का द्वादश भावों में फल

तुला लग्ने चन्द्र फल



चन्द्रमा मन, माता, कल्पनाशक्ति, स्त्री, धन, सम्पत्ति आदि का कारक माना जाता है। तुला लग्न में चन्द्र कार्येश होने से इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक भी माना जाता है।

आगे चन्द्रमा का प्रत्येक भाव पर फल का विचार करते समय उस के साथ अन्य ग्रहों के योगायोग स्थिति एवं शुभाशुभ दृष्टि का भी विचार कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त फलकथन से पूर्व निर्बली या सबल चन्द्र सम्बन्धी भी ध्यान करना चाहिए, तभी स्पष्ट फलादेश होगा। कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक क्षीण चन्द्र कहलाता है।

प्रथम भाव-में तुला राशि पर चन्द्रमा होने से जातक सुन्दर वर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, रूपवान, उद्यमी, चंचल एवं अस्थिर बुद्धि परन्तु ऐसे जातक को विभिन्न स्थलों (देश-विदेश) में भ्रमण के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। भावुक, अशान्त एवं कल्पनाशील प्रकृति, व्यवसाय में भी कुछ न कुछ परिवर्तन करता रहता है। शुक्र या मंगल से युक्त हो तो स्त्रियों से लाभ प्राप्त करने वाला, संगीत, गायन आदि का भी प्रेमी। कम्पयूटर, स्टेशनरी, दुग्ध पदार्थ, फैशन डिज़ाइनिंग, सिनेमा, संगीत, टैलीविज़न, दूरसंचार, फास्ट फूड, ज्योतिष आदि कार्यों में विशेष सफलता प्राप्ति के योग होंगे। स्त्री सुन्दर एवं कार्य क्षेत्र में विशेष सहायिका होगी। देखें कुं. 72

लग्ने चन्द्रे ज़ड: शुद्ध: प्रसन्न: धनपूरित:।
स्त्री वल्लभ: धार्मिकश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत्॥

द्वितीय भाव-में बृश्चिक राशि का चन्द्रमा होने से जातक अशान्त मन किन्तु मधुरभाषी, अधिक मित्रों से युक्त, आर्थिक परेशिानियां, धनार्जन के लिए विशेष संघर्ष रहे, आर्थिक एवं परिवारिक सुख में भी कमी रहती है। क्षीण चन्द्र हो, तो अपनी ही भूलों के कारण कई बार धन का नुकसान होता है। चन्द्र यदि शुक्र, मंगल या गुरु आदि से युक्त या दृष्ट हो तो जातक विभिन्न साधनों एवं गुप्त युक्तियों से निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक व्यवहार कुशल तथा सम्पत्ति, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। देखें कुं. नं. 61, 62, 63, 65, 70

परन्तु गृहस्थ सुखों में कमी रहती है, देखें कुं. नं 63 (श्री अटल बिहारी वाजपेयी)

तृतीय भाव-में धनु राशिगत चन्द्र हो तो जातक/जातिका पुरुषार्थी, धार्मिक विचारों वाला, अपने कर्त्तव्य के प्रति गम्भीर एवं ईमानदार, भाई-बहिनों के प्रति निष्ठावान, बहिनें भी भाई को चाहती हैं। ऐसे जातक की स्मरणशक्ति, कलात्मक एवं कल्पना शक्ति अच्छी होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्ष के साथ एक से अधिक स्रोतों द्वारा धन एवं आय के साधन बनते हैं। यदि बुध, शुक्र का योग हो अथवा गुरु की शुभ दृष्टि भी हो, तो जातक/जातिका को कार्य क्षेत्र में विशेष धन लाभ व प्रसिद्धि भी प्राप्त होती है। **चन्द्र-शुक्र** का योग हो तो अभिनय एवं कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त होती है। उदा. देखें कुं. नं. 67 (ऐश्वर्य राय), 71, 73 (सचिन तेंदुलकर)

चतुर्थ भाव-में मकर राशि पर चन्द्र हो तो जातक उच्च विद्या प्राप्त, बुद्धिमान, भक्ति भावना से युक्त, माता-पिता के प्रति निष्ठावान, परन्तु माता के स्वास्थ्य के प्रति चिन्तित रहे। भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त हो। यदि चतुर्थ भाव पर किसी अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि या योग न हो, तो जातक/जातिका का प्रारम्भिक जीवन परेशानियों व उलझनों से युक्त होगा। व्यय अधिक तथा आर्थिक एवं परिवारिक परेशानियां अधिक रहें।

पंचम भाव-में कुम्भ राशि पर चन्द्र हो, तो जातक तीव्र बुद्धिमान, मधुरभाषी, कल्पनाशील, विचारशील, उच्च विद्या, धर्म के प्रति आस्थावान, ऐसे जातक को श्री दुर्गा माता की भक्ति से मनोवांछित फल प्राप्ति, मिलनसार, व्यवहार-

कुशल, संगीत कला एवं साहित्य आदि में रुचि, गुप्त युक्तियों से संघर्ष के बाद धन लाभ प्राप्त करने वाला, आर्थिक उलझनों के कारण चिन्तित रहे, शेयर, सट्टा, लाटरी आदि से अनायास धन लाभ की सम्भावना हो, भौमादि की दृष्टि या योग हो, तो विवाहोपरान्त भाग्योन्नति हो, सन्तान उत्तम हो, परन्तु कन्या सन्तति अधिक होने की सम्भावना हो। यंत्र, मन्त्र, ज्योतिष, कम्पयूटर आदि विद्या के प्रति भी रुचि होगी। विदेशी सम्बन्धों से लाभान्वित हो।

षष्ठ भाव-में गुरु की राशि मीन पर चन्द्र होने से जातक व्ययशील अर्थात् खर्चीले स्वभाव का, शरीर कष्टी, अपव्यय तथापि जातक परोपकारी एवं उदार प्रवृत्ति वाला, अत्यन्त संघर्ष के बाद जीवन में धन-लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, गुप्त शत्रु, रोगादि से चिन्तित, स्त्री की कुण्डली में मानसिक एवं गुप्त रोग का संकेत, यहां मंगल या भाग्येश बुध का भी सम्बन्ध हो तो विदेश में लाभ प्राप्ति के योग भी बनते हैं। भौम की दृष्टि हो तो प्रेम विवाह के योग तथा अभिनय, कला में विशेष उन्नति प्राप्त हो। यदि राहु व शुक्रादि का योग हो तो शरीर के लिए अनिष्टकर, शराब आदि के व्यसन भी होते हैं।

सप्तम भाव-में मेष राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक/जातिका सुन्दराकृति एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, स्फूर्तिवान, तेज बुद्धि परन्तु अस्थिर मन वाला, कामुक, भ्रमणशील, स्वाभिमानी, उच्चशिक्षित, क्रय विक्रय में कुशल एवं परिश्रमी होता है। यदि यहां शुक्र का योग एवं शनि की दृष्टि हों तो ऐसा जातक अपने परिश्रम व लग्न से उच्च प्रतिष्ठित प्राध्यापक या प्रिंसीपल होता हैं। ऐसा जातक क्रय-विक्रय एवं सांझेदारी के व्यवसाय में अच्छा मुनाफा प्राप्त करता है। चन्द्र के साथ राहु का योग हों तो जातक/जातिका को वैवाहिक सुख में कमी रहती है। परन्तु उच्च पद, आवास एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती है। देखें कुण्डली संख्या 68

अष्टम भाव-में शुक्र की राशि पर वृष चन्द्र उच्च स्थिति में होने से जातक बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी, उच्च शिक्षा प्राप्त, परिश्रमी, परिवार के सुख सुविधाओं के लिए विशेष संघर्षरत, भावुक हृदय, उच्च कल्पनाशक्ति, परोपकारी, संगीत, कला, साहित्य के प्रति रुचि, कामुक प्रवृत्ति, किंतु **स्वाभिमानी** होगा। प्रारम्भिक अवस्था में अत्यन्त कठिनाईयों के पश्चात् सर्विस आदि कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। यदि राहु आदि क्रूर ग्रह युक्त हो तो माता के लिए अरिष्टकर एवं खर्च अधिक रहता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 60। विदेशी सम्बन्धों से भी भाग्योन्नति की सम्भावना।

नवम भाव-में मिथुन राशि पर चन्द्र हो तो जातक को विघ्नों के बाद उच्च विद्या प्राप्त, आकर्षक व्यक्तित्व, धार्मिक प्रवृत्ति, परिश्रमी, उदार हृदय, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्चाकांक्षी, भूमि, वाहन, स्त्री, धन आदि सुखों से युक्त होता है। शुक्र-बुध का भी योग हो तो ऐसा जातक धन, ज्योतिष, नीति, कम्पयूटर, कामर्स, कानून आदि विषयों का भी जानकार होता है। भ्रातृ सुख अल्प तथा बहिनों के सुख की सम्भावना। बुध-शुक्र के कारण जातक निजी व्यवसाय, इंटीरियर-फर्नीचर, क्रय-विक्रय, लेखन, प्रकाशन तथा विदेशी सम्बन्धों में भी सफल होता है।

उदा. हेतु देखें कुं. नं. 59, ऐसे जातक को दीर्घ यात्राएं भी अधिक रहती हैं।

कलत्रपुत्र द्रविणोपपन्नः पुराणवार्ता श्रवणानुरक्त:॥

दशम भाव-भाव में स्वराशि कर्क में चन्द्रमा होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, कठिन संघर्ष के बाद उच्च विद्या एवं व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, पिता का भी यथेष्ठ सहयोग प्राप्त होता है। स्त्री, भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होगी। दशम भाव पर शनि, बुध, शुक्रादि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक उच्च प्रतिष्ठित, कम्पीटीशन (C.A. या MBA आदि) में सफल होता है। मंगल सूर्य का भी योग हो तो विवाह उपरान्त विशेष उन्नति होती है। निजी कार्य व्यवसाय तथा सरकारी क्षेत्रों से भी लाभान्वित होता है। ऐसा जातक समाज में उच्चप्रतिष्ठित तथा स्वाभिमानी होता है। ऐसा जातक भूमि के क्रय-विक्रय से भी लाभ प्राप्त करता है। साधन होते हुए भी निजी आवास के बारे में परेशानियां रहती हैं।

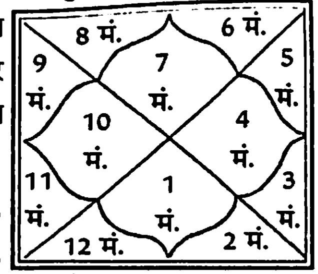
कर्मस्थाने सुधारश्मौ महाधनी। मनस्वी च मनोज्ञश्च राजमान्यश्च जायते॥

एकादश भाव-में सूर्य की राशि सिंह पर चन्द्रमा स्थित हो तो जातक/जातिका को विघ्न-बाधाओं के बावजूद उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्पर्क, विभिन्न संसाधनों के द्वारा धन लाभ, पितृ पक्ष एवं सरकारी क्षेत्रों से भी लाभ, कुण्डली में गुरु शुभस्थ हो, तो विदेश में भाग्योन्नति के योग होंगे। शेयरों व लाटरी आदि से भी लाभ की सम्भावना, शनि अशुभ हो तो उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न बाधाएं एवं विशेष परिवर्तन हो। दखें उदा. कुं. 66 (इस जातिका का विवाहोपरान्त विदेश में भाग्यलाभ हुआ) परन्तु सप्तमेश मंगल यदि अशुभ हो तो वैवाहिक जीवन में असंतोष व विशेष उलझनें होती हैं।

द्वादश भाव-में बुध की कन्या राशि पर चन्द्र हो तो जातक/जातिका चिन्तनशील प्रकृति वाला, सेवाभावी, उच्च-विद्या एवं व्यवसाय में विघ्न/बाधाओं के पश्चात् सफलता हो, प्रेम सम्बन्धों अथवा वैवाहिक सम्बन्धों में भी कठिनाईयों के पश्चात् सफलता हो। व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप, यात्राएं एवं धन खर्च अधिक रहेंगे। परिवारिक सम्बन्धों एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में अस्थिरता रहे। वायु विकार, सर्दी जुकाम, नेत्र कष्ट का भय व मन अशान्त व चिन्तनशील रहे। यदि यहां चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र ग्रहों का सम्बन्ध बना हो तो जातक/जातिका मैडीकल क्षेत्र में उल्लेखनीय उन्नति करता है तथा विदेश में भाग्योन्नति होती है। देखें कुण्डली नं. (69) चन्द्रेऽन्ये जाते विदेशवासी

तुला लग्न : द्वादश भावों में मंगल का फल

तुला लग्ने मंगल फल



मंगल यद्यपि पराक्रम, धैर्य, उत्साह, भूमि, पुत्र आदि का कारक है। परन्तु तुला लग्न में मारकेश होने पर तथा क्रूर ग्रह योग होने से अशुभ फली हो जाता है। यदि स्वगृही व उच्च दृष्टि में हो तो शुभ फल प्रद भी हो जाता है। मंगल का प्रत्येक भाव पर फल विचार करते समय उस पर अन्य ग्रहों के योग, स्थिति एवं दृष्टि आदि का भी विचार कर लेना चाहिए।

प्रथम भाव-में तुला राशि पर मंगल होने से जातक/जातिका परिश्रमी, सुन्दर, खूबसूरत एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उत्साहशील, स्वाभिमानी, विनम्र-शिष्टाचार युक्त, रक्त विकार, नेत्र कष्ट एवं शीघ्र उत्तेजित हो जाने की प्रकृति होगी। उच्च-शिक्षा एवं व्यवसाय में विघ्नों के पश्चात सफलता प्राप्त हो। ऐसा जातक/जातिका अपनी वास्तविक आयु से युवा दिखाई देता है। चतुर्थ भाव पर मंगल की उच्च दृष्टि तथा सप्तम स्वगृही दृष्टि होने से विवाह के बाद भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक अपनी प्रतिष्ठा के प्रति विशेष सजग होता है। लग्न भाव में मंगल, मंगलीक दोषकारक होता है, जिससे जातक/जातिका को स्त्री या पति द्वारा वैवाहिक सुख भी अड़चनों के पश्चात् मिलता है। अष्टम दृष्टि होने से उदर विकार होने की सम्भावना। गुरु द्वारा दृष्ट हो तो जातक आध्यात्मिक क्षेत्र में उच्च प्रतिष्ठित होता है। देखें उदा. कुं. नं. 64

द्वितीय भाव-में स्वगृही वृश्चिक राशि पर मंगल की स्थिति होने से जातक/जातिका उद्यमी, परिश्रमी, स्पष्टवादी (कभी-कभी कटु एवं कठोर वाणी का प्रयोग करने वाला), उच्च शिक्षित, दृढ़ निश्चयी, धर्म परायण, उदार हृदय, तर्क-वितर्क करने में कुशल, पैतृक सम्पदा, भ्रातृ एवं स्त्री, सन्तान आदि सुखों से युक्त, यदि राहु या केतु ग्रह साथ में हो, तो कार्य/व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाईयों के बाद ही निर्वाह योग्य आय के साधन बन पाते हैं। नेत्रों को कष्ट, कटु-तिक्त भोजनप्रिय, विवाह उपरान्त विशेष धन लाभ रहे।

मंगल दूसरे भाव निष्फली माना जाता है, अतएव दूसरे भाव सम्बन्धी फल में कई बार वांछित फल प्राप्त नहीं होते।

तृतीय भाव-में धनु राशि पर मंगल होने से जातक पराक्रमी, तीव्र बुद्धि, उद्यमी, भ्रमणशील, अपने पुरुषार्थ द्वारा धनार्जन करने वाला, भाई-बहिनों का सुख यथेष्ट होगा। थोड़ी सी विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र क्रोधित हो जाए। विदेशी

सम्बन्धों द्वारा भी धनार्जन के अवसर मिलें। विवाह उपरान्त व्यवसाय में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त हो। ऐसा जातक मन्त्र, ज्योतिष एवं धर्म शास्त्रों के प्रति भी आस्थावान होता है। यदि तीसरे भाव में चन्द्र-मंगल का योग हो, तो भाई के साथ मिलकर लोहे या तेल के कार्य व्यवसाय में उच्चस्तरीय लाभ व उन्नति के योग प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. (71) वैसे ३, ६ या ११वें भावों में मंगल, शनि व राहु सर्व अरिष्ट नाशक माने जाते हैं।

त्रिषड्एकांदशे राहु:, शनि-भौमश्च सर्वारिष्ट नाशका:।

चतुर्थ भाव-में मकर राशि पर उच्च स्थिति में मंगल होने से जातक भूमि, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, पिता को शरीर कष्ट, व्यवसाय में अस्थिरता एवं असंतोष रहता है। 40 वर्ष की आयु के पश्चात् कुछ स्थिरता आती है। मंगल की दशम नीच दृष्टि होने से पिता के लिए अरिष्टकर। मंगल के साथ गुरु का योग अथवा शुभ दृष्टि हो, तो विवाह के पश्चात जातक धन लाभ, उन्नति एवं खेल आदि विशिष्ट क्षेत्र में विशेष ख्याति प्राप्त करता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 73.

नोट:- चतुर्थ भाव में मंगल यद्यपि मंगलीक दोष कारक भी होता है, परन्तु तुला लग्न में यहां उच्चस्थ होकर सप्तम भाव पर स्वगृही दृष्टि होने से इतना अशुभ नहीं।

पंचम भाव-में कुम्भ राशि पर मंगल होने से जातक सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, परिश्रमी, तीव्र बुद्धि परन्तु तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला, अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ संकल्पी, संघर्ष एवं विघ्नों के पश्चात् उच्च विद्या एवं धन लाभ प्राप्त करता है। पाचन शक्ति अच्छी होती है, सांसारिक, कुछ हार्दिक प्रबल इच्छाएं अतृप्त रहती हैं। परिवारिक कलह अथवा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहे। अल्प सन्तति एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, स्त्री की कुण्डली में पंचम भौम गर्भपात होने की सम्भावना करता है। शनि चन्द्रादि ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो देश विदेश से सम्बन्धित लाभ तथा व्यय भी विशेष अधिक होते हैं। ऐसा जातक सफल सर्जन, वकील, डैंटिस्ट, कम्पयूटर इंजीनियर या वैज्ञानिक भी हो सकता है।

षष्ठ भाव-में मीन राशि पर मंगल होने से जातक व्यवहार कुशल, चतुर बुद्धि, परिश्रमी, शत्रुओं पर प्रभावी, इसकी जठराग्नि व कामाग्नि दोनों तेज़ होती हैं। परन्तु यदि मंगल अस्त या सन्धिगत हो तो मन्दाग्नि, उदर विकार व दुर्घटना का भय होता है तथा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। परिवारिक उलझनें अधिक। अत्यन्त परेशानियों व संघर्ष के बाद गुप्त युक्तियों द्वारा जातक निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने में सफल होता है। लेन-देन के बारे में विवाद आदि की भी सम्भावना। यदि षष्ठ मंगल पर शनि की दृष्टि पड़ती हो, जातक/जातिका उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त करने में सफल होता है। षष्ठ मंगल सप्तमेश होकर सप्तम भाव से द्वादशस्थ होने से वैवाहिक सुख में विलम्ब एवं विघ्नकारक अथवा विवाह सुख की हानि करता है। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली संख्या नं. 63 (श्री वाजपेयी जी), वैसे भी षष्ठ भाव में मंगल, शनि व राहु सर्व अरिष्ट नाशक माने जाते हैं।

सप्तम भाव-में मेष राशि पर मंगल स्वगृही स्थिति में होने से जातक/जातिका कर्मठ, स्फूर्तिवान, परिश्रमी, साहसी एवं कुछ तेज प्रकृत्ति का होता है। व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप एवं कठिन संघर्ष के बाद आय के साधन बनते हैं। वैवाहिक सुख में कमी या विलम्ब होता है। यदि सू.-बु. का योग हो तो शिक्षा क्षेत्र में सफलता मिलती है। देखें उदा. कुं. 60

यदि मंगल के साथ शनि, राहु या केतु आदि क्रूर ग्रह का योग हो, तो पत्नी या पति के मध्य कलह-क्लेश रहे, यदि गुरु युक्त हो तो मैडीकल क्षेत्र में सफलता (देखें उदा. कुं. 70), यदि चंद्र-मंगल का योग हो, तो विदेश गमन में लाभ, यदि कुं. में चंद्र-शुक्र का योग हो अथवा चंद्र-गुरु के योग पर मंगल की दृष्टि हो, तो फिल्म जगत में या खेल के क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय सफलता एवं प्रसिद्धि होती है। उदा. हेतु देखें कुं. नं. 67 (ऐश्वर्य राय), नं. 65 (कपिल देव)

नोट:- सप्तमस्थ मंगल होने से कुण्डली में मंगलीक दोष का भी विचार किया जाता है।

अष्टम भाव-में वृष राशि पर मंगल होने से जातक/जातिका परिश्रमी, उद्यमी एवं पुरुषार्थी होगा। ऐसा जातक देश-विदेश में गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है। अत्यन्त संघर्ष द्वारा परिवार के लिए निर्वाह योग्य आय के साधन बना ही लेता है। भाई-बन्धुओं का सुख मिलता है परन्तु उनसे अल्प लाभ प्राप्त होता है। 32 वर्ष की आयु के बाद ही व्यवसाय में स्थिरता हो। मंगल के साथ शनि, केतु, राहु आदि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक को रक्त विकार, पाचन प्रक्रिया, उच्च रक्तचाप आदि गुप्त रोग अथवा दुर्घटना से चोटादि का भय हो। अष्टम भाव में मंगल मंगलीक दोषकारक भी होता है, जोकि स्त्री/पति सुख में कमी करता है। उचित उपाय करने से लाभ हो।

नवम भाव-में मिथुन राशि पर मंगल स्थित होने पर जातक धर्म के प्रति आस्थावान होता है तथा पराक्रमी, बुद्धिमान, उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त, माता, भूमि, मकान, वाहनादि सुखों से युक्त, विवाह उपरान्त विशेष धन लाभ एवं भाग्योन्नति होती है। जातक स्वाभिमानी एवं स्वावलम्बी होता है, अर्थात् भाई बन्धु होने पर भी उनके सुख में कमी होती है। देखें कुं. नं. 62। यदि मंगल के साथ शनि, राहु आदि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय के सम्बन्ध में विशेष संघर्ष होगा। कुं. में चन्द्र-गुरु का योग हो, तो देश-विदेशों में यात्राओं के अवसर प्राप्त होते हैं। इस भाव में मंगल मिश्रित (शुभाशुभ) प्रभाव देता है।

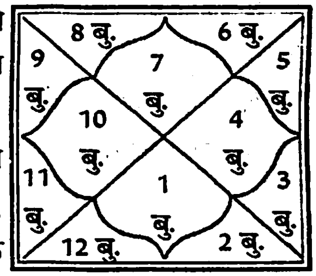
दशम भाव-में कर्क राशि पर नीच स्थिति में मंगल के प्रभाव से जातक/जातिका तीव्र बुद्धिमान, पराक्रमी, उद्यमी, स्वाभिमानी, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, उच्चशिक्षित, उच्चस्तरीय, व्यवसाय को अपने कठिन परिश्रम व पुरुषार्थ द्वारा आगे बढ़ाने वाला होगा तथा जातक को भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होगी। परन्तु मध्यावस्था तक कार्य/व्यवस्या में अस्थिरता एवं असंतुष्टि रहती है। यदि कुं. में दशम भाव में मंगल के साथ शुक्र का योग हो तो जातक आन्तरिक साज-सजावट (Interior Decoration) आदि के कामों में कामयाब होता है। देखें कुण्डली नं. (59) एवं (61)। यदि मंगल के साथ किसी क्रूर ग्रह राहु या शनि आदि का योग हो तो जातक को वैवाहिक सुख की हानि होती है। देखें कुं. नं. 68। (यहां शनि-मंगल के योग पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं पड़ रही)। यदि दशम मंगल के साथ सू. बु. शु. गु. आदि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक व्यवसाय में अपने उद्यम द्वारा लोहादि धातुओं के क्षेत्र में विशिष्ट लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है।

एकादश भाव-में मित्र सूर्य की राशि सिंह पर मंगल स्थित होने से जातक स्पष्टवादी, प्रभावशाली व्यक्तित्व, साहसी, पराक्रमी, कार्य-व्यवसाय में विघ्न एवं अड़चनों के बाद लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, धनी, भूमि, जायदाद, वाहनादि सुख सम्पदाओं से युक्त अपने परिवार की बेहतरी के लिए विशेष परश्रिम करने वाला, उच्च-शिक्षा एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता अथवा सन्तान सुख प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं एवं अड़चनों के बाद हो। **एकादश भावस्थ** मंगल इंजीनीयरों, डाक्टरों, वकीलों, ज्योतिषी, लोहार एवं सोनारों, कम्पयूटर्ज़ आदि के लिए अच्छा माना जाता है। ऐसा जातक जीवन में विघ्न/बाधाओं के बाद परिश्रम से लाभ व उन्नति प्राप्त कर ही लेता है। देखें उदा. कुण्डली नं. (72)

द्वादश भाव-में बुध की राशि कन्या पर मंगल होने से जातक/जातिका चंचल एवं अशांत मन वाला, आय अल्प व खर्च अधिक हो, भाई-बहिन होने पर भी उनके सुख में कमी, उच्चशिक्षा प्राप्ति में भी अड़चनें रहें। परिवारिक सुख में भी विघ्न एवं असन्तोष रहे। विवाहोपरान्त जन्मस्थान से दूरगामी अथवा विदेश में सर्विस आदि के योग। आर्थिक उलझनें भी रहें। आय सीमित तथा वृथा खर्च अधिक रहें। जीवन का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण रहे। पति/पत्नी की ओर से परेशानी एवं असंतोष रहे। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. (66), द्वादश भाव में मंगल होने से मंगलीक दोष भी **विचारणीय** होता है। मंगल के साथ चन्द्र, शुक्र, बुधादि ग्रहों का योग हो, तो वैवाहिक एवं व्यवसायिक (Professional) क्षेत्र में सफलता होती है देखें उदा. कुं. 69.

तुला लग्न द्वादश भावों में बुध का फल

तुला लग्ने,बुध फल



बुध तर्क-वितर्क, बुद्धि (बौद्धिक), कानून, ज्योतिष, सम्पादन आदि का तथा चतुर्थ एवं दशम भावों का कारक माना जाता है। बुध का प्रत्येक भाव पर फल का विवेचन करते समय उसका ग्रहों के साथ योग, दृष्टि आदि का भी विचार कर लेना उपयोगी होगा। तुला लग्न में बुध भाग्येश एवं व्ययेश होकर प्राय: शुभ प्रदायक हो जाता है।

प्रथम भाव-में तुला राशि पर बुध की स्थिति होने से जातक/जातिका दुर्बल (इकहरा) शरीर परन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व, विद्वान, तीव्र बुद्धि, अच्छी स्मरण शक्ति, मधुरभाषी एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल होता है। शुक्र का भी योग हो तो ऐसा जातक प्रसिद्ध, मिलनसार, विनोदी, किन्तु अनुशासनप्रिय, अधिकांश समय भ्रमण में व्यतीत करने वाला, नीति, गणित, कानून, साहित्य व अन्य शास्त्रों को जानने वाला, लेखन-भाषण आदि कला में कुशल, धर्मात्मा एवं भाग्यशाली होता है। जातक फुटकर अर्थात् विभिन्न साधनों के द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. 64 (म. गांधी)

लग्ने बुधेच नीतिज्ञो, निष्पापो नृपपूजित:। रूपा ज्ञान यशोयुक्त: प्रगल्भो सर्वशास्त्रबोध:॥ (मंत्रेश्वर)

द्वितीय भाव-में मंगल की राशि-बृश्चिक पर बुध होने से जातक/जातिका सुन्दर मुख, भाग्यशाली, तीव्र बुद्धिमान, गुणवान, विनम्र, उदारहृदय, काव्य-कला एवं संगीत प्रेमी, अध्ययनशील, पुरुषार्थी, धनी एवं अपने बुद्धि कौशल व पुरुषार्थ द्वारा धनार्जन करने वाला होता है-

''बुध्योपार्जित वित्तशील गुणवान् साधु: कुटुम्बे बुधे॥''

बुध-शुक्र का योग हो तो जातक को क्रय-विक्रय, पुस्तक व्यापार, स्टेशनरी, ज्योतिष आदि निजी व्यवसाय द्वारा समुचित धन प्राप्त होता है। परन्तु परिवारिक (गृहस्थ) सुख विलम्ब से प्राप्त होता है। खर्च भी बहुत अधिक होते हैं। देखें कुं. नं. (71)। यदि चन्द्र-बुध का योग हो तो कम्पयूटर, बैंकिंग, लेखाकार, काव्य रचना, ज्योतिष आदि द्वारा धन लाभ होता है। देखें कुं. संख्या नं. 62, 67। ऐसा जातक उच्च पदाधिकारी भी हो सकता है। 29 वें वर्ष की आयु में विशेष धन खर्च होता है।

अकेला बुध भी यहां विशिष्ट अभिनय कला के क्षेत्र में जातक को अच्छी प्रसिद्धि और धन-धान्य की सम्पन्नता प्रदान कराता है। **उदाहरणार्थ** देखें कुण्डली नं. 67 (ऐक्ट्रैस ऐश्वर्य राय) **स्त्री जातक** यही प्रमाण करता है-

धने धनवती सौम्ये सुन्दरी गुरु वत्सला।
सदोद्यमरता दक्षा सुख-सम्पत्ति संयुता॥

तृतीय भाव-में गुरु की राशि धनु पर बुध के प्रभाव से जातक/जातिका धार्मिक आस्थाओं से युक्त, परोपकारी, भाग्यवान, कार्य व्यवसाय के उपलक्ष्य में देश-विदेश भिन्न-भिन्न स्थलों पर घूमने वाला, प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त संघर्ष के साथ व्यतीत होता है। आय अल्प व खर्च की मात्रा अधिक होती है। यहां बुध के साथ चन्द्र-शुक्र का भी संयोग हो तो जातक उच्च विद्या प्राप्त, अध्यापन तथा लेखन, कला, संगीत एवं साहित्य द्वारा भी विशेष धन लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यदि सूर्य-बुध का योग हो, तो खेल आदि के विशेष क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति मिलती है। देखें कुं. नं. (65)

इसी भाव में यदि सूर्य-बुध के साथ स्वगृही गुरु का भी सम्बन्ध हो जाए तो जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं विश्व प्रसिद्ध राजनेता होता है। देखें कुं. नं. 63 (प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी)

चतुर्थ भाव-में मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, सुन्दर, भूमि, मकान, वाहन, धन-धान्य से युक्त, संगीत-कला का प्रेमी, ज्योतिष आदि विषयों में रुचि एवं सुख साधनों से युक्त होता है। ऐसा जातक उच्च प्रतिष्ठित विभिन्न मित्रों से युक्त होता है, परन्तु माता को कष्ट एवं गृहस्थ सम्बन्धी चिन्ताएं भी रहती हैं। शुभ फल तभी

प्राप्त होते हैं, यदि बुध पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट न हो। पाप ग्रह से सम्बन्ध हो तो विपरीत फल होता है।

''बहु मित्रो बहु धनो बन्धौ पापं विना बुधः।
नानारस विलासी च सपापे तु अन्यथा फलम्॥''

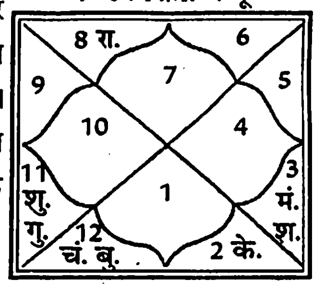
धन का वृथा खर्च भी बहुत होता है। ध्यान रहे, चतुर्थ भाव में अकेला बुध निष्फली भी माना जाता है। तदनुसार चतुर्थ भावस्थ बुध का फल मिश्रित कहा जा सकता है।

पंचम भाव-में कुम्भ राशि पर बुध के प्रभाव से जातक/जातिका तीव्र बुद्धिमान, वाक्पटु, विनम्र, व्यवहारशील एवं कार्यकुशल, उच्च विद्या, तर्क-वितर्क एवं विश्लेषण करने में कुशल बुद्धि, मन्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, चिकित्सा, धर्म आदि गूढ़ विषयों में रुचि, जातक विद्या, पुत्र सन्तति आदि से युक्त होता है-

मन्त्राभिचार कुशलो बहुतनयः पंचमे सौम्ये।
विद्या सुख प्रभावैः समन्वितो हर्षसंयुक्तः॥ कल्याणवर्मा

यदि बुध अथवा पंचमेश निर्बल हो या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो उपरोक्त सुखों में कमी होती है तथा उच्च विद्या एवं भाग्योन्नति में रुकावटें, पति/पत्नी सुख में कमी, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं। उदाहरणार्थ देखें कुं. संख्या नं. 68

जन्म 19-4-1947,
7-01 P.M. जम्मू



षष्ठ भाव-में मीन राशि पर नीच स्थिति में बुध होने से जातक के भाग्य पक्ष में कमी, कलहपूर्ण परिवारिक जीवन, शत्रु एवं गुप्त रोगों के कारण मन सन्तप्त एवं अधीर रहे, अड़चनों के साथ उच्च विद्या प्राप्ति हो। अनावश्यक खर्च अधिक रहे। मानसिक व शरीरिक विकार अधिक रहें, प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक क्वालीफाईड इंजीनियर की है। इस जातक ने बुध की महादशा में तथा केतु की अन्तर्दशा में मानसिक दबाव के कारण अच्छी भली सरकारी सर्विस छोड़ दी। मानसिक विकार से युक्त होकर अपने पिता के पास विक्षिप्तता की स्थिति में बेकार बैठा है। अपने माता-पिता की एकाकी संतान है।

यदि बुध के साथ सूर्य, शुक्रादि का शुभ योग हो तो जातक प्रसिद्ध व्यापारी, ज्योतिषी, वैद्य एवं मंत्रादि शास्त्रों को जानने वाला तथा भूमि, स्त्री, मकान, संतान, वाहनादि सुखों से युक्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 73

सप्तम भाव-में मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक भाग्यशाली, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, बुद्धिमान, व्यवहार कुशल तथा अपने बुद्धि चातुर्य से लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। जातक भ्रमणशील एवं खर्चीले स्वभाव का होता है। यदि बुध के साथ सूर्य, मंगल का भी सम्बन्ध हो तो जातक को ज्योतिषादि विषयों में रुचि, सुन्दर स्त्री, सन्तान, जायदाद एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। विवाहोपरान्त विशेष भाग्योन्नति व आय के साधनों में वृद्धि होती है। उदाहरण हेतु देखें कुण्डली नं. 60

अष्टम भाव-में मित्र वृष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के प्रारम्भिक जीवन में अत्यन्त संघर्ष व विघ्नों के पश्चात् विद्या प्राप्ति एवं अल्प घरेलू सुख होता है। भाग्य में अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होती है। गुप्त युक्तियों से धन की प्राप्ति होती है। धन का व्यय भी आशा के विपरीत अधिक होता है। ज्योतिष, मंत्रादि गुप्त विद्याओं की ओर भी अभिरुचि होती है। आजीविका के लिए अत्यधिक संघर्ष करना पड़ता है। यदि बुध अशुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो गृहस्थ जीवन भी कलहपूर्ण एवं असुखद रहता है। भाग्योन्नति में बार-बार अड़चनें पड़ती हैं। देखें उदा. कुं. नं. 59। स्नायु एवं गुप्त रोग के कारण शरीर कष्ट होता है। उदाहरण स्वरूप देखें कुं. नं. (66), इस जातिका की कुं. में अष्टम बुध होने से परिवारिक जीवन दो सन्तान हो जाने के बाद भी अत्यन्त क्लिष्ट एवं कलहपूर्ण है।

नवम भाव-में स्वगृही मिथुन राशि पर बुध होने से जातक/जातिका विद्वान, धार्मिक भावना से युक्त, भाग्यवान, व्यवहार कुशल, ज्योतिष, मन्त्रशास्त्र, धर्मादि शास्त्रों में रुचि रखने वाला, भाई बन्धु के सुख से युक्त, अपने जन्मस्थल से

दूर विभिन्न साधनों के द्वारा धनोपार्जन करने वाला, परन्तु खर्च भी अधिक करने वाला होता है। यदि सूर्य-बुध का योग हो तो बुधादित्य योग होता है। फलस्वरूप जातक आस्तिक, देश-विदेश में यात्राएं करने वाला एवं माता-पिता में पूरी आस्था रखने वाला, धन-सम्पदा आदि सुखों से युक्त होता है। देखें जन्म कुण्डली नं. 72, यदि यहां शनि-बुध का योग हो तो जातिक/जातिका उच्च विद्या प्राप्त, परन्तु भ्रातृ सुख में कमी रहती है। देखें कुं. नं. 70

दशम भाव-में कर्क राशि पर बुध होने से जातक गुणी, सृजनात्मक एवं तीव्र बुद्धि, स्वयं के बौद्धिक एवं व्यवसायिक पुरुषार्थ से अथवा पैतृक धन से धनी, विनोदप्रिय, विनम्र एवं साधन सम्पन्न होता है। अत्यधिक व्यय करके गुज़ारे योग्य धन लाभ प्राप्त करता है। यदि बुध के साथ सूर्य, मंगल, गुरु व शुक्रादि ग्रहों का भी सम्बन्ध हो तो जातक को व्यवसाय में संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद समुचित आय के साधन बनते हैं। जातक को मातृ सुख, भूमि, मकान, वाहन, धन आदि सुख सुविधाएं प्राप्त होती हैं। देखें उदाहरण कुं. नं. (61) बुध-शुक्र का योग हो तो जातक मशीनरी, वस्त्र उद्योग, कम्प्यूटर क्षेत्र, प्रकाशनादि क्षेत्र में विशेष उन्नति करता है।

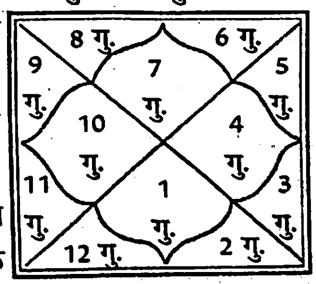
एकादश भाव-में सिंह राशि पर बुध के प्रभाव से जातक प्रभावशाली, उदार हृदय, स्वाभिमानी, वाणिज्य-व्यापार में निपुण, अपना कार्य निकलवाने में कुशल, कुछ तेज स्वभाव, विभिन्न संसाधनों द्वारा धनार्जन करने वाला होगा। सूर्य, शुक्र का भी योग हो तो कुशल व्यापारी और उच्चस्तरीय व्यापार करने वाला होगा। ज्योतिष, मंत्रादि विषयों में भी रुचि होगी। बुध यदि शनि या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो व्यवसायिक सहयोगियों के साथ विवाद की सम्भावनाओं का संकेत है।

द्वादश भाव-में कन्या राशि पर बुध की स्थिति होने से जातक विद्वान, अनेक भाषाओं का जानकार, नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल, धर्म-शास्त्र, ज्योतिष, मन्त्र, नीति आदि शास्त्रों को जानने वाला अथवा रुचि रखने वाला, अध्ययनशील तथा विदेशों में भाग्योदय होता है। यदि यहां बुध पाप दृष्ट या पाप ग्रह युक्त हो तो जातक कठोरभाषी, दुर्व्यसनी, गुप्त शत्रुओं से पीड़ित, अतिव्ययी तथा आर्थिक परेशानियों के कारण दुखी होगा। मानसिक रूप से विक्षिप्त एवं अशान्त होगा।

तुला लग्नः गुरु का द्वादश भावों में फल

गुरु विवेक, बुद्धि, विद्या, आध्यात्मिक ज्ञान, पति सुख, भाई, पितामह, पुत्र सन्तति एवं पारलौकिक ज्ञान का तथा २, ५, १० व ११वें भावों का भी कारक माना जाता है। तुला लग्न में त्रिषडायपति होने से शुभ नहीं माना जाता परन्तु इस कुण्डली में गुरु यदि चन्द्र, मंगल, सूर्य एवं शनि आदि ग्रहों के साथ शुभ भावस्थ हो तो यह योगकारक होकर चमत्कारिक प्रभाव करता है।

तुला लग्ने गुरु फल



प्रथम भाव-में तुला राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक/जातिका सुन्दर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, तीव्र बुद्धिमान, उदार हृदय, चिरायु, मिलनसार, प्रसन्नवदन, विद्वान, यशस्वी और कलादि क्षेत्र में विख्यात होता है। गम्भीर एवं अधिकारपूर्ण वाणी का प्रयोग करने वाला, पत्नी सुन्दर एवं पतिव्रता होती है। यदि मंगल भी शुभस्थ हो तो जातक धनाढ्य होता है। यदि लग्न में गुरु के साथ चन्द्र का योग हो तो भी जातक सुन्दर व्यक्तित्व वाला, ज्योतिष, वैद्यक आदि कार्यों में सफल होता है। गुरु से बुध, शुक्र के योग से जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल एवं सन्तान सुख आदि की दृष्टि से भाग्यशाली होता है।

द्वितीय भाव-में बृश्चिक राशि पर गुरु की स्थिति से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, परिश्रमी, बुद्धिमान, अत्यन्त संघर्ष एवं परिश्रम से कार्य क्षेत्र में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, उत्साहशील, स्पष्टवक्ता, भूमि, धन, आवास, सुन्दर स्त्री एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। यहां गुरु पर सूर्य, बुधादि की शुभ दृष्टि हो तो जातक को पैतृक व भ्रातृ सहायता की प्राप्ति भी होती हैं। देखें उदा. कुं. नं. 59। यहां गुरु के साथ चन्द्र का योग हो और उस पर मंगल की स्वगृही

दृष्टि भी हो तो जातक को खेल जगत अथवा अन्य कलात्मक क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय प्रसिद्धि प्राप्त होती है। देखें उदा. कुं. नं. 65 (प्रसिद्ध खिलाड़ी कपिल देव)

तृतीय भाव-में स्वगृही धनु राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक/जातिका आकर्षक व्यक्तित्व, बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, साहित्य, ज्योतिष, चिकित्सा, धर्मादि विषयों में रुचि, परोपकारी एवं धार्मिक आस्थाओं से युक्त होगा। जातक साहित्य प्रेमी और बौद्धिक कार्यों में सफल होता है। भ्रातृ सुख सामान्य, ऐसा जातक निज पुरुषार्थ एवं पराक्रम से धन, प्रतिष्ठा एवं सुख के साधन प्राप्त करने वाला, स्त्री सुख यथेष्ठ होता है। देखें उदा. कुं. नं. (60), यदि गुरु के साथ सूर्य, शनि, राहु आदि का सम्बन्ध हो तो भ्रातृ सुख से वंचित होता है। (देखें कुं. नं. 62), यदि मंगल अशुभस्थ हो तो जातक स्त्री एवं गृहस्थ से वंचित रहता है। देखें उदा. कुं. 63 (श्री वाजपेयी) तथा कुं. नं. 68

चतुर्थ भाव-में मकर राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक सुन्दराकृति, विघ्न-बाधाओं के बावजूद उच्चशिक्षा प्राप्ति, परन्तु यहां गुरु नीच राशिस्थ होने से जातक को आरंभिक अवस्था में कार्य-व्यवसाय व घरेलू परिस्थितियों में विशेष संघर्ष करना पड़ता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम व लगन द्वारा रुकावटों के बावजूद उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। देखें कुं. नं. 72, 73 तथा कार्य क्षेत्र में क्षण: क्षण: समुचित लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। यदि दशम भाव में बुध, शुक्र हों तो जातक उच्चपद अथवा कम्प्यूटर क्षेत्र में सफल होता है। यदि दशमेश चन्द्र का तृतीय भाव में शुक्र के साथ योग हो तो अभिनय क्षेत्र में विशेष सफलता होगी। देखें कु. नं. 67 (ऐश्वर्या)

पंचम भाव-में कुम्भ राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक आकर्षक व्यक्तित्व, उच्चाभिलाषी, बुद्धिमान, विघ्नों के बावजूद उच्च विद्या एवं उच्चपद प्रतिष्ठित होता है। पुत्र सन्तान के सम्बन्ध में चिन्तित परन्तु अच्छे मित्रों से युक्त, धर्म के प्रति आस्थावान, कन्या सन्तति अधिक व पुत्र सन्तान कम होती है। ऐसा जातक व्यवसाय एवं आमदन के क्षेत्र में गुजारे योग्य आय के साधन बना ही लेता है। ऐसा जातक राजकीय पक्ष से भी लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

पंचम भाव में गुरु अकेला स्थित होने से पुत्र संतति के सुख में कमी करता है। यदि यहां शनि की स्वगृही दृष्टि हो यह पुत्र कारक होती है। देखें कुं. नं. 59, 62

षष्ठ भाव-में स्वगृही मीन राशि पर गुरु होने से जातक उच्च स्तरीय शिक्षित, व्यवसायिक (Professional) शिक्षा में सफलता, परन्तु व्यवसाय अथवा उच्चपद में विघ्न-बाधाओं के बाद सफलता प्राप्ति हो, विभिन्न क्षेत्रों में व्यय अधिक होगा। शत्रु हानि पहुंचाने की चेष्टा में रहेंगे। षष्ठ भाव का गुरु डाकटरों, वकीलों एवं चार्टिड अकाउटैण्टों के लिए शुभ होता है।

सप्तम भाव-में मेष (मित्र) राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला तथा जातक विभिन्न युक्तियों के द्वारा कार्य क्षेत्र एवं व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होता है। मंगल की दृष्टि हो तो उच्च प्रतिष्ठित, आध्यात्मिक बल युक्त होता है। जातक भाई के साथ मिलकर धातु व कैमिकल सम्बन्धी व्यवसाय से अच्छा धन लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। यदि लग्नेश शुक्र के साथ षडाष्टक योग हो तो जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां रहती हैं। देखें उदाहरण कुं. नं. (71) यदि सप्तम में गुरु-मंगल का योग हो, तो जातक/जातिका मैडीकल लाईन में सफल होते हैं। देखें उदाहरण कुं. नं. (70)

अष्टम भाव-में वृष राशि पर गुरु स्थित हो तो जातक/जातिका सुशील, विचारशील, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, धर्म मंत्र, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में विशेष रुचि, अत्यन्त संघर्ष एवं अड़चनों के बाद उच्च विद्या प्राप्ति, धन का व्यय भी विशेष अधिक होता है। गृह सुख कठिनाईयों के बाद प्राप्त होता है। यदि द्वादश भाव में चन्द्र, मंगल, शुक्र व बुध ग्रहों का सम्बन्ध हो और उस पर गुरु की विशेष दृष्टि पड़ती हो तो जातक/जातिका को मैडीकल लाईन में विशेष उल्लेखनीय सफलता प्राप्त होती है। देखें कुण्डली नं. 69 (यह लड़की M.D करने के

बाद अमेरिका में सफल डाक्टर है)

नवम भाव-में मिथुन राशि पर गुरु स्थित होने से जातक धार्मिक प्रवृत्ति वाला, पराक्रमी, उद्यमी, भाग्यवान, परोपकारी, विचारशील, ज्योतिष, मन्त्र, धर्मादि गूढ़ शास्त्रों में रुचि रखने वाला, उच्च विद्या प्राप्त एवं भाई-बन्धुओं और स्त्री एवं सन्तानादि के सुखों से युक्त, बहु प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, यहां गुरु सूर्य व बुध से युक्त हो तो जातक पैतृक एवं सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित होता है। ऐसे जातक को अध्यापन, प्रकाशन, वकालत, नेता, धर्म-प्रचार आदि क्षेत्रों में विशेष लाभ होता है।

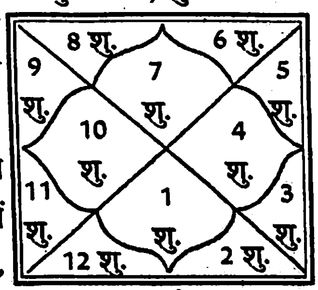
दशम भाव-में कर्क राशि पर गुरु उच्चस्थिति में हो तो जातक महत्त्वाकांक्षी, उद्यमी, उच्चाभिलाषी, बुद्धिमान, मातृभक्त, उच्च विद्या प्राप्त, भाई-बहनों के सुखों से युक्त, माता-पिता से सहायता एवं संरक्षण प्राप्त करने के बावजूद स्वतन्त्र रूप से कार्य/व्यवसाय करने में सक्षम, परन्तु प्रत्येक कार्य अड़चनों के बाद पूरा होने के संकेत मिलते हैं। यदि दशम में गुरु के साथ मंगल, सूर्य, बुध, चंद्र, शुक्रादि ग्रहों का भी योग या दृष्टि का सम्बन्ध हो तो जातक भूमि, लौहादि विभिन्न प्रकार के कार्य-व्यवसायों से सम्बन्धित क्षेत्रों में अच्छा लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. (61) विदेश में भी कार्योन्नति के योग देखें कुं. नं. (66)

एकादश भाव-में सिंह राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक/जातिका उद्यमी, उत्साहशील उच्चशिक्षित, गुणी, संगीत, साहित्य प्रेमी, विद्वान, मिलनसार एवं व्यवहार कुशल होता है। ऐसा जातक/जातिका अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान तथा सीमित साधन होने पर भी निर्वाह योग्य आय के साधन जुटा ही लेता है। भाइयों के सुख से प्रतिष्ठित, स्त्री/पति एवं सन्तान, आवास, सवारी आदि सुखों से युक्त होता है। आय के साधनों में पत्नी का भी सहयोग रहता है। ऐसा जातक मंत्र, ज्योतिष, धर्मादि शास्त्रों में भी रूचि रखता है।

द्वादश भाव-में कन्या राशि पर गुरु होने से जातक के पराक्रम एवं उद्यम तथा स्वास्थ्य में कमी, उच्च विद्या एवं कार्य व्यवसाय के क्षेत्र में भी अड़चनें पैदा हों। भाई बहिनों, आवास एवं आत्मीयजनों के सुख में भी कमी हो, माता को भी शरीर कष्ट, आय सीमित परन्तु विभिन्न खर्चों में अधिकता रहे। घरेलू व व्यवसायिक उलझनों के कारण मानसिक तनाव एवं अशान्ति रहे। मनोरंजन एवं स्त्रियों पर व्यय अधिक रहे।

तुला लग्न में शुक्र का द्वादश भावों में फल

तुला लग्ने, शुक्र फल



शुक्र को प्रेम, सौन्दर्य, काम, वीर्य, आकर्षण, स्त्री, धन सम्पत्ति व सांसारिक सुखों का कारक माना जाता है। कुण्डली में सप्तम भाव का भी यह कारक ग्रह है। तुला लग्न में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश (आयुकारक) होने से विशेष महत्त्वपूर्ण है। बुध, शनि आदि शुभ ग्रहों के योग में एवं शुभ भावस्थ होने से विपुल धन/धान्य एवं सांसारिक सुख प्रदान करता है।

प्रथम भाव-में स्वगृही राशि तुला में शुक्र के प्रभाव से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गौर वर्ण एवं सुन्दर मुख, चुस्त, बुद्धिमान, उदारहृदय, संगीत, कला एवं काव्यादि में रुचि, अधिक आयु होने पर भी युवा जैसा दिखने वाला, शिल्प कला में निपुण, वाक्पटु, शालीन, व्यवहार कुशल तथा अपनी एवं परिवार की भौतिक उन्नति के लिए सतत कठिन परिश्रम करने वाला, उच्च प्रतिष्ठित सर्विस या व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष के बाद सफलता मिलती है। कुं. में गुरु एवं पंचम भाव भी शुभस्थ हों, तो जातक उच्चशिक्षित, सुन्दर एवं सभ्य स्त्री युक्त तथा भूमि, वाहन, आवास आदि सुखों से युक्त होता है। गुरु द्वारा दृष्ट हो तो विख्यात् महापुरुष होता है, देखें कुं. नं. (64) (म. गांधी) यदि लग्न में शुक्र अस्त, या सूर्य, गुरु आदि ग्रहों से प्रभावित हो तो जातक के स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी होती है।

द्वितीय भाव-में बृश्चिक राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक प्रभावशाली, सुन्दर व्यक्तित्व, तीव्र बुद्धिमान, कर्त्तव्य

परायण, वाक्पटु एवं मधुरभाषी, ओजस्वी वाणी, परिवारिक सुख युक्त एवं दीर्घायु होता है। ऐसा जातक कवि, बहु-विद्याओं का जानकार, गुणी, साधन-सम्पन्न, लेखक, विद्वान एवं चतुरवक्ता होता है। जीवन में विशेष परिश्रम व संघर्ष के बाद उच्च प्रतिष्ठित स्थिति प्राप्त करता है। गृहस्थ एवं वैवाहिक सुख मंगल की स्थिति पर निर्भर करेगा। यदि दूसरे भाव बुध, शुक्र का योग हो तो जातक उच्चस्तरीय व्यापारी होता है। देखें उदा. कुं. नं. (71)

यदि दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो तो जातक विद्वान, कवि एवं साहित्यिक अभिरुचियों से युक्त, योग्य, प्रसिद्ध एवं सफल राजनेता होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 63 (श्री अटल बिहारी वाजपेयी)

तृतीय भाव-में धनु राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक/जातिका का दुबला शरीर परंतु पराक्रमी, उद्यमशील, भ्रमणप्रिय, धर्म परायण होता है। भाई-बहिनों से युक्त होता है। अकेला शुक्र यहां विशेष फलीभूत नहीं होता। शुक्र के साथ चन्द्र, बुधादि का योग हो, तो जातक/जातिका को नृत्य, संगीत, कला-अभिनय एवं साहित्य के प्रति विशेष रुचि होती है। चिकित्सा और अभिनय, नृत्य आदि द्वारा भी विशेष लाभान्वित होता है। उदाहरण हेतु देखें कुण्डली नं. (67)

चतुर्थ भाव-में मकर राशि पर शुक्र की स्थिति होने से जातक धार्मिक विचारों से युक्त, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, भूमि, मकान, वाहन आदि के सुखों से युक्त होता है। माता का स्वास्थ्य ठीक नहीं होता है। यहां से दशम भाव पर शुक्र की दृष्टि होने से जातक को व्यवसाय एवं सर्विस में मान/प्रतिष्ठा एवं लाभोन्नति प्राप्त होती है। कम्पयूटर क्षेत्र व गृह की सजावट आदि में विशेष अभिरूचि होती है। स्त्री सुख एवं परिवारिक सुख में वृद्धि होती है। जातक अपने क्षेत्र में कुशल एवं प्रसिद्ध होता है। उदा. कुं. नं. 62, 65।

पंचम भाव-में कुम्भ राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक विद्वान, परोपकारी स्वभाव, तीव्र बुद्धिमान, संगीत, कला एवं साहित्यिक रुचियों से युक्त, दयालु, उच्चशिक्षित, कम्प्यूटर, शिल्प-कला, कलपुर्जों, डिज़ाईनिंग, अभिनय, ज्योतिष, वकालत, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में विशेष सफलता की सम्भावनाएं होंगी। जातक को एक से अधिक स्त्रोतों से आय के साधन होते हैं। ऐसा जातक अपनी बुद्धि के चातुर्य से धन लाभ एवं उन्नति के साधन बना लेता है। शेयर, लाट्री आदि में रुचि होती है। शुक्र के साथ सूर्य या शनि आदि क्रूर ग्रह का सम्बन्ध हो, तो स्वास्थ्य एवं संतान सम्बन्धी सुखों में कमी रहती है।

षष्ठ भाव-में मीन राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक श्वेत वर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व, कलात्मक अभिरुचियों से युक्त, संवेदनशील, भावुक एवं विशिष्ट गुणों से युक्त होता है। द्वादश भाव पर शुक्र की दृष्टि होने से अनेक कठिनाईयों के बाद कैमिकल, ज्योतिष आदि कार्यों में सफलता प्राप्त करने वाला, देश-विदेश में भ्रमण एवं धनार्जन के अवसर प्राप्त करने वाला तथा रईसी ढंग से जीवन व्यतीत करने वाला होता है। उदाहरणार्थ देखें कुं. नं. 60। यदि शुक्र भौमादि पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो जातक को कामुक, व्यसनी, विषयासक्त, प्रमेह, शूगर आदि रोगों से ग्रस्त होने की संभावना होती है।

सप्तम भाव-में मेष राशि पर शुक्र की स्थिति से जातक आकर्षक व्यक्तित्व, चंचल, किन्तु सरल एवं उत्साहशील स्वभाव, उच्च प्रतिष्ठित, साहित्य एवं सौन्दर्य प्रेमी, खेलकूद में प्रवीण, पत्नी सुन्दर किन्तु कुछ तीखे स्वभाव की, परन्तु जातक के गृह एवं व्यवसाय में सहायिका होती है। जातक को सर्विस या अपने व्यवसाय में कठिन परिश्रम एवं संघर्ष के बाद सफलता मिलती है। विवाह के उपरान्त विशेष भाग्योन्नति अथवा प्रणय सम्बन्ध हों। देखें उदा. कुं. नं. 72 तथा (73)। यदि सप्तमभावस्थ शुक्र के साथ राहु, शनि का योग या दृष्टि सम्बन्ध हो तो वैवाहिक सुख में कमी अथवा विवाह-विच्छेद होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. (68) ऐसे जातक/जातिका का असफल प्रेम सम्बन्ध भी हो सकता है। शुक्र सप्तम भाव का कारक ग्रह है। इस भाव में अकेला होने से विशेष फली नहीं होता। अष्टमेश होने से मारकत्व दोष भी रहता है।

अष्टम भाव-में स्वगृही वृष राशि पर शुक्र होने से सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्ति का स्वामी, उच्चाकांक्षी, सुन्दर एवं

सुशील पत्नी, धन, वस्त्राभूषण, वाहन आदि सुखों से युक्त, गुप्त युक्ति द्वारा धनार्जन करने वाला, विवाहोपरान्त विशेष धन लाभ व उन्नति प्राप्त करने की सम्भावना, परन्तु व्यवसाय में उलझनों व विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त हो। यदि शुक्र मंगल, राहु, शनि, सूर्यादि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो स्त्री को कष्ट या वैवाहिक सुख में कमी को लक्षित करता है।

नवम भाव-में मिथुन राशि पर शुक्र के प्रभावस्वरूप जातक/जातिका उच्चशिक्षित, धार्मिक, परोपकारी एवं उदारहृदय, भाई, बहिनों से कुछ मतान्तर हो, भाग्यपक्ष में कुछ उलझनों/विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त हो। जातक को धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं में रुचि भी हो। यहां शुक्र दीर्घ यात्राओं, विदेश में भाग्योन्नति का भी द्योतक है। उदाहरणार्थ देखें कुं. नं. 66। पंजाब में उत्पन्न इस जातिका को विवाहोपरान्त विदेश में सर्विस एवं भाग्य में उन्नति के अवसर प्राप्त हुए।

दशम भाव-में कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का प्रभावशाली व्यक्तित्व, मिलनसार, स्वाभिमानी, प्रसन्नचित्त, बुद्धिमान, उदार एवं परिश्रमी होता है। जातक को संगीत, कला, साहित्य, गणित व ज्योतिष आदि विद्याओं में भी रुचि होती है। जातक अपने परिश्रम से कम्पयूटरर्ज़ व लौह पुर्जों से सम्बन्धित व्यवसाय से अच्छा लाभ उठा पाता है।

यदि कुण्डली में बुध-शुक्र का योग हो तो एक से अधिक स्रोतों से धन लाभ प्राप्त करता है। यदि शुक्र के साथ बु.-गु.-मं. सूर्यादि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो विशेष राजयोग होता है। जातक भूमि, आवास, वाहन एवं बृहदस्तरीय व्यापार को चलाने में समर्थ होता है। देखें उदा. कुं. नं. (59) (61)

यदि दशमस्थ शुक्र राहु सूर्यादि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो व्यवसाय में हानि एवं वृथा धन का अपव्यय एवं स्त्री व माता को कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

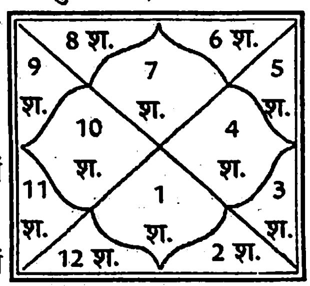
एकादश भाव-में सिंह राशि पर शुक्र होने से जातक सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, उदारहृदय, बुद्धिमान, अड़चनों के बावजूद उच्च विद्या प्राप्ति, संगीत, गायन, अभिनय, फैशन एवं सुन्दर वस्तुओं के संग्रह की ओर प्रवृत्ति, वस्त्र, वाहन, दूध, पनीर, मोती, कागज़, स्टेशनरी आदि श्वेत वस्तुओं के व्यापार एवं अकाऊंटस द्वारा समुचित धन लाभ की सम्भावना, पुत्र की अपेक्षा कन्या सन्तति की अधिक सम्भावना। देखें उदा. कुं. नं. (70)

एकादशस्थ शुक्र के साथ बुध, मंगल, चंद्रादि ग्रहों का योग हो, तो विदेश में भाग्योदय होता है।

द्वादश भाव-में कन्या राशि (नीचस्थ) पर शुक्र के प्रभाव से जातक/जातिका स्वाभिमानी, स्वतन्त्र विचारों वाला, स्वास्थ्य में कमी, प्रारम्भिक आयु में विशेष शरीर कष्ट, अत्यन्त कठिन परिश्रम के बाद जातक को गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते हैं परन्तु जातक मनोरंजन एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च भी अधिक करता है। जिसके कारण जीवन में आर्थिक उलझनें भी उठानी पड़ती हैं। यदि इसी भाव में बुध के साथ चन्द्र, मंगल, बुधादि ग्रहों का भी सम्बन्ध हो जाए तो जातक/जातिका मैडीकल लाईन में विशेष उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करती है तथा विवाहोपरान्त विदेश यात्रा के योग बनते हैं। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. (69)

तुला लग्नः द्वादश भावों में शनि का फल

तुला लग्ने, शनि फल



तुला लग्न में शनि का प्रत्येक भाव पर फल का निर्णय करते समय उसका अन्य ग्रहों के साथ योग, दृष्टि आदि का भी विचार करें तथा चन्द्र या सूर्य से शनि केन्द्रस्थ हो तो भी सांसारिक कष्ट बहुत होते हैं। शनि आयु, रोगों, दुखों, व्यापार एवं कर्मचारी वर्ग तथा ६, ८, व १२ भावों का भी कारक है।

प्रथम भाव-में तुला (उच्च) राशि पर शनि के प्रभाव से जातक प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, परिश्रमी, व्यवहार कुशल, दूरदर्शी, स्वतन्त्र विचारक, धनवान, उच्च प्रतिष्ठित, उच्च शिक्षित, गम्भीर एवं अधिकार पूर्ण वाणी युक्त होता है। तकनीकि एवं व्यवसायिक विद्या में विशेष सफलता, भाईयों के साथ मतान्तर रहे तथा स्त्री के साथ मन-मुटाव एवं वैमनस्य रहने के संकेत। यहां शनि चतुर्थेश होने के कारण मातृ पक्ष, सन्तान, मकान एवं वाहन आदि सुखों से युक्त परन्तु पिता के सुख में

कमी रहे तथा विघ्नों के बाद व्यवसाय में सफलता हो, देखें उदा. कुं. नं. 61, परन्तु यदि सप्तमेश मंगल छटे भाव में पड़े तो जातक पत्नी के सुख से वंचित होता है। देखें कुं. नं. 63 (श्री वाजपेयी)

द्वितीय भाव-में बृश्चिक राशि पर शनि के प्रभाव से जातक को परिवारिक एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्षपूर्ण व कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जातक स्वाभिमानी, शिक्षित, बुद्धिमान, कभी कटु एवं कर्कश वाणी का प्रयोग करने वाला, मुख एवं आंखों को कष्ट, अशान्त मन, उच्च शिक्षा होने पर भी विशेष लाभ न हो, व्यवसाय एवं आजीविका के लिए कठिन परिश्रम करने पर भी अधिक धन लाभ न हो पाए। कई बार अवसरों का उचित लाभ उठाने से चूक जाए। कुटुम्ब के सम्बन्ध में चिन्तित एवं असंतोष रहे।

यदि शनि चन्द्र से केन्द्रगत हो तो जातक श्रेष्ठ रूप से आध्यात्मिक होता है। देखें उदा. कुं. 64

तृतीय भाव-में धनु राशि पर शनि के प्रभाव से जातक पराक्रमी, बुद्धिमान, साहसी, परोपकारी, सुशिक्षित, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, कर्मठ, भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, भाग्यशाली, भ्रमणशील, अपने जन्म स्थल से अन्य प्रदेश में भाग्योदय, पुत्र, धन, सन्तानादि से युक्त, सुन्दर एवं सुशील पत्नी का सुख प्राप्त होता है। परन्तु संतान सम्बन्धी चिन्ता भी रहती है। यदि द्वितीय भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक वाहन, मकान आदि सुखों से युक्त एवं अपने व्यवसाय एवं कार्य क्षेत्र में विख्यात होता है। देखें उदा. कु. नं. 59, 62 एवं 65 (कपिल देव)

यदि शनि भौमादि से दृष्ट या सूर्य युक्त होकर अस्तं गत हो तो जातक को भ्रातृ सुख नहीं होता। देखें कुण्डली नं. 62 सामान्यतः ३, ६, ११ वे भावों में शनि, मंगल व राहु अरिष्ट नाशक माने जाते हैं।

चतुर्थ भाव-में मकर स्वगृही राशि पर शनि के प्रभाव से जातक गुणी, यशस्वी, प्रतिभाशाली, धर्मपरायण, स्वावलम्बी, कर्त्तव्यनिष्ठ, उदासीन, शिक्षित तथा अपने परिश्रम से गुजारे योग्य धन प्राप्त कर लेता है। चन्द्र भी शुभस्थ हो, तो माता का सुख अच्छा प्राप्त होता है। जातक को माता, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। कार्य-व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाईयों के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। देखें उदाहरण कुं. 72

पंचम भाव-में स्वगृही कुम्भ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक तीव्र बुद्धिमान, उच्च विद्या प्राप्त, पुत्रादि सन्तान पक्ष से सुखी परन्तु पत्नी के सुख में कमी अथवा पत्नी के साथ विचार वैमनस्य रहे, प्रारम्भिक जीवन में परिवारिक व आर्थिक उलझनें रहें, आजीविका एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के पश्चात् सफलता प्राप्त होगी। ज्यों-ज्यों सन्तान की आयु में वृद्धि होगी, त्यों-त्यों सर्विस या व्यवसाय में विशेषकर अध्यापन, वकालत आदि में विशेष धन लाभ व उन्नति प्राप्त होगी। उदाहरणार्थ देखें कुं. नं. (60)

षष्ठ भाव-में मीन राशि पर शनि के प्रभाव से जातक साहसी, पराक्रमी, शत्रुओं को जीतने वाला, यशस्वी, भैंसादि चौपायों, लोहादि के कार्यों से लाभान्वित, अत्यन्त कठिनाईयों के बाद उच्च विद्या एवं कार्य व्यवसाय में सफलता तथा संघर्ष के बाद मकान एवं वाहन आदि का सुख होता है। परन्तु धन का व्यय बहुत अधिक होता है। यदि शनि पर मंगल, राहु, सूर्य आदि ग्रहों का योग या दृष्टि हो, तो जातक या जातिका का गृहस्थ जीवन ठीक नहीं होता। चोट, दुर्घटनादि का भय, मातुल पक्ष में विशेषकर मामा/मौसियों के लिए अशुभ होता है। भ्रातृ सुख में भी कमी होती है। वायु विकार, पेट, छाती एवं पैरों में विकार तथा अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सहयोगियों द्वारा हानि की संभावना होती है। शनि पर भौमादि की शुभ दृष्टि हो तो विवाह सुख में कमी होती है। देखें उदा. कुं. (66)

सप्तम भाव-में मेष (नीच) राशिस्थ शनि होने से जातक उदासीन, चंचल एवं कामुक प्रवृत्ति वाला, अच्छे व्यक्तित्व वाला, विद्या एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त परेशानियों व कठिनाईयों के बाद सफलता प्राप्त करने वाला, व्यवसाय में धन के अर्जन में भी स्थिरता न रहने की स्थिति रहे। मन अशान्त व बुद्धि में अस्थिरता रहे, यदि शनि पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो जातक को वैवाहिक सुख में कमी अथवा स्त्री व सन्तान के स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता हो। भूमि,

मकान, वाहन आदि के सुखों की प्राप्ति भी अत्यन्त संघर्ष व अड़चनों के बाद हो। वाद-विवाद या सांझेदारी में हानि उठाने वाला, उदर व्याधि का भय, लग्नेश शुक्र एवं भाग्येश बुध का सम्बन्ध हो, तो विदेश में सफलता के चांस होंगे।

अष्टम भाव-में वृष राशि पर शनि होने से अत्यन्त कठिनाईयों एवं विघ्नों के बाद उच्च विद्या की प्राप्ति होती है। ऐसे जातक को परिवार में भाई बन्धुओं के साथ असामान्य एवं कटु सम्बन्ध होते हैं। व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में भी अत्यन्त कठिन परिस्थितियों का सामना होता है। पिता के सुख में कमी रहे। शनि के साथ अशुभ योग हो तो जातक को कुसंगति के कारण धन सम्बन्धी परेशानी उठानी पड़े। सन्तान सुख भी विघ्नों के बाद हो। स्वास्थ्य भी कुछ ठीक न रहे। उदर विकार, वायु एवं श्वास आदि गुप्त रोगों का भय रहे। यदि शनि पर गुरु की शुभ दृष्टि हो, तो जातक किसी विशिष्ट क्षेत्र (खेलादि) में विशेष ख्याति प्राप्त करता है। देखें उदा. कुं. नं. 73। यदि गुरु, सूर्य एवं भौम आदि की भी दृष्टि हो तो जातक प्रसिद्ध डाक्टर होता है। अष्टमस्थ शनि ज्योतिष, तन्त्रादि गूढ़ विषयों में भी रुचि देता है। परन्तु जीवन में संघर्षों के बाद सफलता प्राप्त करता है।

नवम भाव-में मिथुन (मित्र) राशि पर शनि होने के प्रभाव से जातक सुन्दर व्यक्तित्व वाला, मृदुभाषी, धनी, बुद्धिमान, स्वाभिमानी, धर्म, नीति, ज्योतिष, चिकित्सादि गूढ़ विद्याओं में अभिरुचि, भ्रमणशील, तर्क वितर्क करने में कुशल, उच्चभिलाषी, उच्चविद्या प्राप्त, भूमि, मकान, स्त्री, सन्तान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है। देखें उदा. कु. नं. 72 (एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद) तथा उदा. कुं. 70 (एक डाक्टर कन्या, जिसका विवाह भी एक डाक्टर से ही हुआ) नवम शनि विदेश भ्रमण से भी सफलता प्रदान करता है। सामान्यत: नवम शनि मिश्रित प्रभाव करता है, परन्तु तुला लग्न में मित्र राशि होने से शनि की शुक्र पर दृष्टि हो तो डाक्टरी के क्षेत्र में सफल देखें उदा. कुं. 70

यदि शनि राहु, मंगल, सूर्यादि ग्रहों से आक्रान्त हो,तो जातक को वैवाहिक सुख में कमी अथवा विलम्ब करवाता है। मानसिक तनाव एवं अशान्ति आदि अशुभ फल होते हैं। शुक्र व चन्द्र दृष्ट होने से अभिनय व कला के क्षेत्र में उच्च स्थिति प्राप्त होती है, देखें कुं. नं. 67।

दशम भाव-में कर्क राशि पर शनि हो तो जातक परिश्रमी, बुद्धिमान, कल्पनाशील, उच्चशिक्षित, भूमि, धन, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। स्त्री/पति सुख एवं सन्तान, परिवारिक सुख में भी कमी रहती है।

व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनता से स्थिरता आ पाती है। जातक जीवन में धीरे-धीरे विलम्ब से सफलता प्राप्त कर पाता है। ऐसा व्यक्ति धनी नेता या उच्च अधिकारी भी हो सकता है। उसे कृषि (खेती-बागबानी) में भी रुचि होती है-

मन्त्री व नृपतिः धनी कृषिपरः शूरः प्रसिद्धोऽम्बरे।

यदि दशमस्थ शनि के साथ भौम अशुभस्थ हो, तो वैवाहिक सुख में कमी रहती है। देखें उदा. कुं. नं. (68) परन्तु दशस्थ शनि उच्च-शिक्षा, प्राध्यापन, उच्चाधिकारी एवं ज्योतिष आदि गूढ़ शास्त्रों में सफलता प्रदान कराता है। विदेश में भाग्योन्नति भी देता है।

यद्यपि दशमस्थ शनि हो तो पिता, पुत्र दोनों को एक साथ एक स्थान पर कार्य करने से प्रगति नहीं कर पाते। ऐसी मान्यता है। यदि शनि की चन्द्र, मंगल पर दृष्टि सम्बन्ध हो, विदेश में भाग्योदय हो। देखें कुं. 69

एकादश भाव-पर शत्रु राशि (सिंह) पर शनि के प्रभाव से जातक दीर्घायु, दयालु, मधुरभाषी, आकर्षक व्यक्तित्व, धनवान्, नीरोग एवं अच्छे परिवार वाला (संस्कारित) होता है। तकनीकी कार्यों में दक्ष तथा कुशल बुद्धि वाला, धन-सम्पत्ति, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है।

अल्प सन्तति (दो या तीन सन्तान) सुख होता है, परन्तु सन्तान (पुत्र एवं पुत्री) श्रेष्ठ व सुयोग्य होती है। आय के क्षेत्र में कठिन परिस्थितियां एवं परेशानियां उत्पन्न होती हैं। व्यवसाय का विस्तार तो अच्छा होता है किन्तु धन लाभ उतना नहीं

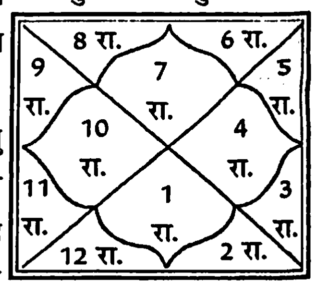
हो पाता। ऐसा जातक लापरवाह तथा कुछ स्वार्थी प्रकृति का भी होता है। यदि शनि अशुभ ग्रह युक्त हो तो किसी निकटस्थ द्वारा विश्वासघात की संभावना होती है।

द्वादश भाव-में कन्या राशि (मित्र राशि) पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक हर प्रकार के निम्न/उच्च स्तर के लोगों की संगति करने वाला, कई बार दुर्व्यसनों का शिकार, अतिव्ययी, चंचल एवं भ्रमित बुद्धि, शीघ्र क्रोधित होने वाला, नेत्र कष्टी विदेशादि बाहरी सम्बन्धों से लाभ उठाने वाला, उच्च विद्या-प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं होती हैं। यदि धन भाव या धनेश शुभस्थ हो तो जातक एक से अधिक स्रोतों एवं गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। धन के खर्च बहुत अधिक रहते हैं। यद्यपि माता, भूमि, मकान, स्त्री, सन्तान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है, परन्तु परिवारिक क्षेत्र में कुछ अशान्ति रहती है। भाग्य में उन्नति भी 42 वें वर्ष के बाद होती है।

ऐसे जातकों को ज्योतिष, धर्म, मंत्रादि गूढ़ विद्याओं में भी रुचि होती है तथा जातक तैलादि कैमिकलज़ के कार्य में विशेष सफल होता है। देखें उदा. कुं. 71

तुला लग्न : द्वादश भावों में राहु का फल

तुला लग्ने राहु फल



राहु प्रधान व्यक्ति स्नेहशील, विचारपूर्वक परीक्षा करने के बाद काम करने वाला, स्वतंत्र चिन्तक, स्वाभिमानी, प्राचीन संस्कृति का अभिमानी, स्वयं के काम में किसी अन्य का दखल पसन्द नहीं करता, व्यवहार कुशल, पहिले स्वार्थ तदनन्तर परोपकार की प्रवृत्ति होती है। बाह्य स्वरूप देख उसका चरित्र चित्रण करना कठिन होता है।

प्रथम भाव-में तुला राशि पर राहु के प्रभाव से जातक बाल्यकाल में दुर्बल परन्तु तीव्र बुद्धिमान, चुस्त, परिश्रमी व्यवसाय में अत्यन्त कठिनता एवं परिश्रम **व संघर्ष** के पश्चात् गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है। वैवाहिक सुख भी अड़चनों के पश्चात् प्राप्त होता है। कठिनाईयों के बाद उच्च विद्या प्राप्त करने में सफल तथा जिस कार्य को करना चाहे उसे पूरी लगन, योग्यता एवं दृढ़ता से पूरा करके सफलता प्राप्त कर लेता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 69 (विदेश में Settled एक कुशल डाक्टर), लग्न का राहु स्वतन्त्र विचारक, छिद्रान्वेषक, अनुसंधानात्मक, स्वाभिमानी प्रवृत्ति देता है। यदि राहु के साथ मंगल, सूर्य आदि ग्रह हो तो जातक को सिर पीड़ा, नेत्र रोग, ब्लड प्रेशर आदि रोगों की संभावना होती है।

द्वितीय भाव-में बृश्चिक राशि पर राहु के प्रभाव से जातक/जातिका परिश्रमी, स्पष्टवादी, कई बार कटुवाणी का प्रयोग करने वाला, परिवार में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी अधिक धन संचित नहीं हो पाता। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहते हैं। शनि यदि शुभस्थ हो तो उच्च विद्या प्राप्ति के योग बनते हैं। देखें उदा. कुं. नं. (70)

तृतीय भाव-में धनु राशि पर राहु के प्रभाव से जातक साहसी, परिश्रमी तो होता है, परन्तु समय पर कार्य न करने से कई बार हानि भी उठानी पड़ती है। यदि यहाँ राहु पर पंचमेश शनि की दृष्टि या योग भी हो, तो जातक अड़चनों के बावजूद उच्च विद्या प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक परिश्रम द्वारा गुजारे योग्य आय के साधन भी बना लेता है, परन्तु खर्च भी बहुत होते हैं। निकट भाई बन्धुओं से मतभेद भी होते हैं। प्रत्येक कार्य विघ्न/बाधाओं के पश्चात् होता है। भूमि, धनादि के सुख भी अड़चनों के बाद (लगभग 27 वर्ष के बाद) होते हैं। देखें उदा. कुं. 61, 67, 60। यदि चंद्र पर गुरु की शुभ दृष्टि हो तो जातक धनादि से सम्पन्न तथा विवाह उर्पयुक्त समय पर होता है। देखें कुं. 60। यदि यहां चंद्र-राहु का योग हो तो जातक को व्यवसाय सम्बन्धी बहुत यात्राएं रहती हैं। पिता के सुख में कमी हो। देखें कुं. नं. 73

चतुर्थ भाव-में मकर राशि पर राहु के प्रभाव से जातक का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं अस्थिर परिस्थितियों में गुज़रता है। मातृ कष्ट, भूमि, धन, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति भी परेशानियों के बाद हो। परन्तु जन्म स्थान से अतिरिक्त (विदेश आदि) में ऐसा जातक विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। चाहे कहीं भी चला जाए, ऐसे जातक को उलझनें अधिक व शान्ति कम प्राप्त होती है। उचित उपाय करने से लाभ रहता है।

पंचम भाव-में कुम्भ राशि पर राहु होने से जातक बुद्धिमान, चालाक एवं स्वार्थ सिद्धि के लिए उचित/अनुचित का भी विचार नहीं करता। अड़चनों के बावजूद उच्च विद्या प्राप्त कर लेता है। धन अर्जन में भी अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। जातक परिवार, सन्तान सम्बन्धी चिन्ताओं से भी चिन्तित रहता है। ऐसा जातक सट्टा, लाटरी, शेयरों आदि में तथा ज्योतिष, धर्मादि विषयों में भी रुचि रखता है। यदि पंचम राहु के कारण पुत्र सुख की कमी हो, तो भृगु जी के अनुसार नाग देव की पूजा करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

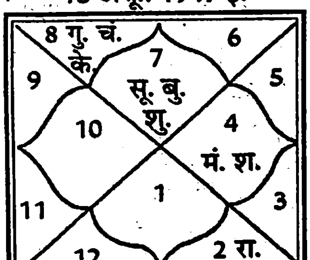
सुतेसिंही पुत्रे, पुत्राभावः, सर्पशापात् सुतक्षयः।
नागप्रतिष्ठया पुत्रप्राप्तिः पवनव्याधिः॥ भृगुसूत्र

षष्ठ भाव-में मीन राशि पर राहु के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, साहसी, उद्यमी, उदार एवं उच्च विद्या प्राप्ति में सफल होता है। ऐसा जातक दीर्घायु, भूमि, सम्पत्ति, धन, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। परन्तु मामा या मासी के सुख में कमी हो। कार्य/व्यवसाय में परिश्रम एवं संघर्ष अधिक, परन्तु लाभ कम होता है। अनावश्यक खर्च भी बहुत होते हैं। स्त्री एवं सन्तान के सम्बन्ध में सुखी होता है। ऐसा जातक जीवन में उत्तरोत्तर भाग में भौतिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

सप्तम भाव-में मेष राशि पर राहु के प्रभाव से जातक/जातिका स्वतन्त्र प्रकृति का, बुद्धिमान, कठिन परिश्रमी, पराक्रमी तथा अत्यन्त साहस द्वारा विघ्न बाधाओं का सामना करने वाला होता है। व्यवसाय एवं आर्थिक क्षेत्र में अस्थिरता एवं उतार-चढ़ाव अधिक होंगे। वैवाहिक सुख (स्त्री या पति सुख) में कमी होती है। यदि सप्तम भाव पर मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ती हो, तो अड़चनों एवं बाधाओं के बाद गृहस्थ की प्राप्ति होती है। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. 66। यदि सप्तमेश मंगल नीच राशिस्थ हो एवं सप्तम भाव पर शनि की भी नीच दृष्टि पड़ रही हो तो जातक/जातिका का वैवाहिक सम्बन्ध तलाक में समाप्त हो जाता है। यद्यपि ऐसे जातक/जातिका को व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त अच्छी स्थिति प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ देखें कुं. नं. 66, 68। सामान्यतः सप्तमस्थ राहु वाले जातक का गृहस्थी जीवन असंतोषपूर्ण रहता है। जातक को पत्थरी, प्रमेह, मधुमेह एवं उदर सम्बन्धी गुप्त रोगों का भय होता है।

अष्टम भाव-में वृष राशि पर राहु के प्रभाव से जातक/जातिका दृढ़निश्चयी, परिश्रमी, उत्साहशील, व्यवहारकुशल, अपनी धुन का पक्का, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, जिस काम को करने का संकल्प कर ले, उसे पूरे मनोयोग एवं ईमानदारी से पूरा करता है। परिवारिक जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण होता है तथा आर्थिक क्षेत्र में भी अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जीवन के उत्तरार्ध भाग में परिवारिक जीवन कुछ सुखी होता है। श्रेष्ठ सन्तान का सुख होता है। चन्द्र पर राहु की दृष्टि होने से घरेलू उलझनें एवं मानसिक तनाव के कारण स्वास्थ्य हानि एवं मानसिक रोग होते हैं। ऐसे जातक/जातिका को दाम्पत्य जीवन में कुछ न कुछ असंतोष बना रहता है। देखें प्रस्तुत संलग्न उदाहरण कुण्डली

उदाहरण कुंडली
18 अक्तू. 1947 ई.



नवम भाव-में मिथुन राशि पर राहु के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उद्यमी एवं परिश्रमी व्यक्ति होता है। इसके भाग्य में अनेक उतार-चढ़ाव, परिवर्तन एवं संघर्षपूर्ण हालात आते हैं, परन्तु जातक अपने पुरुषार्थ एवं युक्तियों से सफलता प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक उच्चशिक्षित, भ्रातृ सुख में कमी, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। जातक अपने बुद्धि कौशल से विभिन्न साधनों से धनार्जन करता है। रहन-सहन उच्च-स्तरीय एवं अच्छा होता है। ज्योतिष, वैद्यक, किसी बड़ी संस्था के प्रतिनिधित्व एवं लेखन आदि क्षेत्रों में विशेष प्रसिद्ध होता है। विघ्न/बाधाओं के बावजूद व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है।

दशम भाव-में कर्क राशि पर राहु के प्रभाव से जातक विद्वान, प्रतिष्ठित, साहित्यिक प्रवृत्ति वाला, महत्त्वाकांक्षी, परिश्रमी, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, विघ्नों के बावजूद उच्चशिक्षित, किन्तु कार्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में अस्थिरता एवं अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पिता के सुख में कमी रहती है। परन्तु ऐसा जातक अपने धैर्य, हिम्मत एवं गुप्त युक्तियों के बल पर विघ्नों को पार कर उच्च सफलता एवं ख्याति प्राप्त करता है। ऐसा जातक जीवन के उत्तरार्ध में राजनीति क्षेत्र में विशेष उच्च पद, प्रतिष्ठा एवं ख्याति प्राप्त करता है। विशेषकर 42वें वर्ष विशेष उन्नति होती है। परन्तु गृहस्थ (घरेलू) सुख में कमी रहती है। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. (63) (श्री अटल बिहारी वाज.) तथा कुं. नं (64)

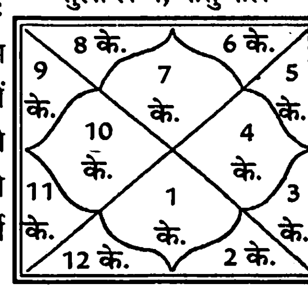
एकादश भाव-में सिंह राशि पर राहु के प्रभाव से जातक शालीन, परिश्रमी, बुद्धि चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों द्वारा धन लाभ एवं उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। यदि राहु पर गुरु-मंगल आदि शुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो जातक व्यवसाय या सर्विस आदि में नियमित आय प्राप्त करने वाला, कर्णरोग से पीड़ित, सामान्य धन, सम्पत्ति, स्त्री, वाहन एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त, प्रत्येक कार्य को बड़ी बारीकी, ईमानदारी एवं कुशलता से करने में निपुण होता है। कई बार लाटरी, सट्टा, शेयर आदि से अचानक धन लाभ भी प्राप्त करता है। सामान्यत: ऐसा जातक धीरे-धीरे विघ्नों के बाद उन्नति करता है। ऐसे जातक को ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धार्मिक अनुष्ठान आदि कृत्यों में विशेष रुचि होती है तथा वह उनके द्वारा लाभान्वित भी होता है। उदाहरण हेतु देखें कुण्डली नं. (62) तथा नं. (72)

३, ६, ११वें भावों में राहु अरिष्टनाशक भी माना जाता है-**त्रिषड् एकादशे राहु शनि, भौमश्च सर्वारिष्ट निवारका:॥**

द्वादश भाव-में कन्या राशि पर राहु होने से जातक बुद्धिमान, विवेकशील, परिश्रमी, धैर्यवान एवं देश-देशान्तर में भ्रमणशील होता है। यदि द्वादश राहु पर शनि की भी दृष्टि हो तो जातक को गूढ़ विद्याओं जैसे ज्योतिष, आध्यात्म, यौगिक एवं खेल आदि क्षेत्रों में भी विशेष रुचि होती है। मध्यम शिक्षा होने पर भी योग, खेलादि किसी विशिष्ट क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रसिद्धि प्राप्त करता है। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव एवं संकट आने पर भी ऐसा जातक धैर्य और हिम्मत से उनका सामना करता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 59 तथा (65) द्वादश राहु के कारण आकस्मिक खर्च भी बहुत अधिक होता है। जातक को विदेशी सम्बन्धों से भी विशेष लाभ प्राप्ति की सम्भावनाएं होती हैं।

तुला लग्न: द्वादश भावों में केतु का फल

तुला लग्ने, केतु फल



प्रथम भाव-में तुला राशि पर केतु होने से जातक उद्विग्न, चिन्तित एवं प्राय: अशान्त मन रहता है। शारीरिक सौन्दर्य में भी कुछ कमी रहती है। दुष्टजनों से भय होता है। भाई बन्धुओं के सहयोग में कमी तथा स्त्री (पति) से मतान्तर एवं वैवाहिक सुख में कमी रहती है। कठिन परिस्थितियों के बावजूद जातक अपने पराक्रम एवं हिम्मत से कठिनाईयों का सामना करता है। यदि लग्न पर कोई शुभ ग्रह का योग अथवा दृष्टि न हो तो जातक को शरीर कष्ट, मानसिक तनाव एवं उदर आदि विकार रहते हैं। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. 66 तथा (68)

द्वितीय भाव-में बृश्चिक राशि पर केतु होने पर जातक अत्यन्त कठिनता से धनोपार्जन करने वाला, स्पष्टवादी, निडर, मुख रोग का भय, निष्ठुर किन्तु सत्यवादी, कई बार कठोर वाणी के कारण निकट बन्धुओं से वैमनस्य पैदा हो, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न-बाधाएं तथा परिवारिक सुख में कमी होती है। यदि केतु के साथ स्वगृही मंगल, सूर्य या गुरु हो, तो धन सम्पदा एवं कौटुम्बीय सुख में वृद्धि होती है।

तृतीय भाव-में धनु राशि पर केतु की स्थिति होने से जातक बुद्धिमान, शिक्षित, परिश्रमी, भ्रमणप्रिय एवं उसे देश-विदेश में यात्रा के अवसर प्राप्त होते हैं। जातक को भाइयों का सुख एवं थोड़ा सहयोग प्राप्त होता रहता है। परन्तु यदि

राहु के साथ सूर्य या शनि आदि ग्रहों का अशुभ योग हो तो भ्रातृ सुख में कमी होती है। ऐसा जातक अपने पराक्रम एवं परिश्रम से धन एवं आय के साधन प्राप्त करता है। जातक को संगीत, कला, ज्योतिष, वैद्यक, मंत्र/तंत्रादि विद्याओं में भी रुचि रहती है। इनके द्वारा वह लाभान्वित भी होता रहता है।

चतुर्थ भाव-में मकर राशि पर केतु होने से जातक उच्चभिलाषी, उच्चशिक्षा में विघ्न/बाधाएं, कार्य/व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियां एवं विशेष उतार-चढ़ाव रहें। अपने जन्मस्थान से अतिरिक्त-विदेशादि में भाग्योन्नति की सम्भावनाएं होंगी। पैतृक सम्पत्ति का विशेष लाभ नहीं होता। माता, भूमि आदि से भी विशेष सुख नहीं होता है। व्यवसाय में धैर्य एवं कठिन परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त करता है। जातक आध्यात्मिक एवं राजनीति के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त करता है। देखें उदा. कुं. नं. 63 तथा 64 (महात्मा गांधी)

पंचम भाव-में कुम्भ राशि पर केतु की स्थिति होने से जातक सूक्ष्म किन्तु अस्थिर बुद्धि वाला, परिश्रमी, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहें। जातक की ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्म, आध्यात्म, योग, मन्त्र आदि गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष रुचि तथा जातक इन्हीं विद्याओं के द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। सन्तान एवं परिवार के पोषण के लिए विशेष संघर्षशील रहता है। केतु शुभ दृष्ट हो, तो दो पुत्रों का सुख होता है। देखें उदा. कुं. नं. 62, ऐसे जातक को सट्टा, लाटरी आदि में भी रुचि होती है। जातक का जीवन कठिन संघर्षों से घिरा रहता है। यदि पंचम भाव पर भौमादि अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उच्च विद्या में विघ्न एवं उदर विकार होते हैं। यदि भौम के साथ गुरु (शुभ) ग्रह की भी दृष्टि हो तो जातक विख्यात, ज्योतिषी, कलाकार एवं अभिनेता होता है। देखें उदा. कुं. नं. 72

षष्ठ भाव-में मीन राशि का केतु होने से जातक साहसी, स्वस्थ चित्त, पराक्रमी, धैर्यवान, बुद्धिमान, विशेष गुणी, उदार, यशस्वी एवं अपने गुणों के कारण प्रसिद्ध होता है-

बन्धुप्रियोदार गुण प्रसिद्धो विद्या यशस्वी रिपुगे च केतौ॥

ऐसा जातक धन-धान्य, भूमि, वाहन आदि साधनों से सम्पन्न तथा स्त्री, सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है। जातक को खेल, योग, ज्योतिष, अध्यात्म आदि गूढ़ विषयों की ओर भी विशेष अभिरुचि होती है। अपने विशिष्ट गुणों के कारण देश-विदेश में विपुल धन एवं प्रसिद्धि प्राप्त करता है। दमन करने में सफल, परन्तु मामा का सुख कम मिलता है। ३२ वर्ष के बाद खेलादि विशिष्ट क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करता है। देखें उदा. कुण्डली 65 (कपिल देव-खिलाड़ी) ऐसे जातक को निजी व्यवसाय में भी दौड़ धूप अधिक रहती है। देखें कं. नं. 59.

सप्तम भाव-में मेष राशि का केतु होने से जातक/जातिका अत्यधिक परिश्रमी, बुद्धिमान, अनुसन्धानात्मक रुचि, स्वतंत्र विचारक, कठिनाईयों के बाद उच्चविद्या प्राप्त करने वाला तथा व्यवसाय में भी संघर्षों एवं गुप्त युक्ति से सफलता प्राप्त करने वाला होता है। सांझेदारी के कामों में हानि उठाने वाला, कई बार व्यवसाय के सम्बन्ध में वृथा चिन्ता करने वाला होता है। स्त्री या परिवार के सम्बन्ध में असंतोष रहता है। उदर विकार एवं गुप्त रोग होने की सम्भावना होती है। वस्ति अर्थात् नाभि के नीचे तिल आदि का निशान हो तो विवाह के बाद विदेश में स्थानान्तरण होने की सम्भावनाएं होती हैं। देखें उदा. कुं. नं. 69।

अष्टम भाव-में वृष राशि पर केतु के प्रभाव से जातक/जातिका गुप्त रूप से परिश्रम करने वाला, कटु एवं स्पष्टवादी, शीघ्र उत्तेजित होने वाला, व्यवसाय में धनार्जन के लिए अत्यधिक संघर्ष एवं कठिन परिश्रम करने वाला होता है, परन्तु ऐसे जातक के पास अधिक धन संचित नहीं हो पाता। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहते हैं। तथापि परिवारिक परेशानियों के कारण मानसिक तनाव एवं अशान्ति बनी रहती है। यदि केतु पर चन्द्र की शुभ दृष्टि हो तथा भाग्य स्थान पर शनि-बुध का शुभ योग हो तो जातक/जातिका सफल डाक्टर बनती है। देखें उदा. कुं. नं. 70

नवम भाव-में मिथुन राशि पर केतु स्थित हो, तो जातक पराक्रमी, परिश्रमी, साहसी, स्वावलम्बी, भ्रमणप्रिय, उदार हृदय, स्वतंत्र विचार एवं स्वच्छन्द आचरण वाला, कार्य-व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाईयों के बाद सफलता, परन्तु भाग्योन्नति में नए-नए विघ्न/बाधाएं पड़ें, जातक को ज्योतिष, धर्म, तन्त्र आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि रहे। जांघ पर तिल या चोटादि का चिन्ह हो। व्यवसाय में शत्रुओं के कारण कई बार परेशानी उठानी पड़े। जातक स्त्री एवं बच्चों के लिए.विशेष चिन्तनशील रहता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 60, 61, 67 तथा 73

दशम भाव-में कर्क राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, स्वाभिमानी, विघ्नों के पश्चात् उच्च विद्या की प्राप्ति हो। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद सफलता प्राप्त हो अथवा निर्वाह योग्य आय के साधन बनें। पिता के सुख में कमी रहे तथा भूमि, मकान, जायदाद आदि के सम्बन्ध में भी उलझनें एवं परेशानियां अधिक रहें। केतु, राहु एवं चन्द्र की दशा अथवा अन्तर्दशाओं में कारोबार की स्थिति अस्थिर तथा आर्थिक परेशानियों का सामना अधिक रहे। जातक के घुटनों पर तिल या चोट का भी निशान हो। तैलादि कार्यों द्वारा लाभ हो, देखें उदा. कुं. नं. 71

एकादश भाव-में सिंह राशि पर केतु होने पर जातक बुद्धिमान, पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव का होता है। उच्च शिक्षा विघ्न/बाधाएं तथा लाभ व उन्नति के मार्ग में भी अड़चनें होती हैं। सन्तान सम्बन्धी विशेष चिन्ता होती है। परन्तु ऐसा जातक अपने बुद्धि कौशल द्वारा कठिनाईयों पर सफलता प्राप्त कर लेता है। ज्योतिष, आध्यात्म, योग, तन्त्र आदि विद्याओं में भी रुचि हो। शेयर, लाटरी या सट्टे आदि द्वारा आकस्मिक लाभ होने की भी सम्भावना होती है। विदेशी सम्बन्धों द्वारा भी लाभान्वित होने के चांस बनते हैं।

द्वादश भाव-पर कन्या राशि पर केतु होने से जातक अथक परिश्रमी तथा अनेक संसाधनों द्वारा अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों से धनार्जन करने वाला होता है। ऐसा जातक चंचल स्वभाव, अत्यधिक खर्च करने वाला, गुप्त रोग या शत्रु भय एवं आंखों व पावों में रोग के कारण कष्ट हो। मामा से सुख में कमी हो। जातक आर्थिक क्षेत्र में गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला एवं विदेशी सम्बन्धों से लाभान्वित होने वाला होता है। यदि द्वादशस्थ केतु भाग्येश बुध से युक्त हो, तो जातक धन, सम्पत्ति, वाहन एवं अच्छी पत्नी व सुयोग्य सन्तान से युक्त होता है तथा उच्चस्तरीय व्यापार में भी सफल होता है।

विशेष नोट :- ऊपर लिखित तुला लग्न में सूर्यादि ग्रहों की स्थितियों के सम्बन्ध में उल्लेखनीय उदाहरण कुण्डलियां आगामी पृष्ठों पर देखें

तुला लग्न में ग्रहों के शुभाशुभ योग

तुला लग्न में आगे लिखे योगों के फल का निर्णय करते समय सम्बन्ध दशाऽन्तर्दशा एवं गोचर स्थिति के अनुसार प्राप्त होता है।

✡**सूर्य-बुध**-लाभेश एवं भाग्येश का योग होने से शुभ ग्रहों में यह योग हो तो विशेष शुभ फल प्रदान करता है।

✡**शनि-शुक्र**- शुक्र लग्नेश होकर अष्टमेश भी है तथा शनि केन्द्रेश व त्रिकोणेश होने से दोनों का योग अत्यन्त शुभ होता है। यह योग २, ४, ५, ८, ९, १०, १२वें भावों में शुभ तथा शेष अन्य स्थानों में मध्यम होता है। इस योग के प्रभावस्वरूप जातक को भूमि, जायदाद, स्त्री, सन्तान सम्बन्धी यथेष्ठ सुख, विवाह तथा सन्तानोत्पत्ति के बाद विशेष भाग्योदय होता है।

✡**शनि- बुध**- शनि सुखेश व पंचमेश तथा बुध भाग्येश और द्वादशेश भी है। इसलिए बुध में किंचित दोष आ सकता है। इस योग के प्रभावस्वरूप जातक कुछ परिवर्तनों के बाद अपने कार्य व्यवसाय में सफल होगा, विदेश में भी सफलता की सम्भावनाए होंगी विशेषकर जब यह योग बारहवें भाव में बनें।

✡**बुध-शुक्र**- बुध-शुक्र का योग भी विशेष शुभ एवं सफल होता है। यह योग सफल राजयोग बनाता है। जातक

भूमि, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न तथा देश-विदेश की यात्राएं कराने वाला होगा। क्रय-विक्रय अथवा बौद्धिक (Intellectual) कार्यों से धन की प्राप्ति होती है।

✡**शनि चन्द्र-** तुला लग्न में चंद्रमा दशमेश है। शनि-चंद्र योग के प्रभावस्वरूप जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल, बुद्धिमान, मैडीकल, इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेता है परंतु यहाँ यदि चंद्रमा क्षीण, अल्पबली हो तो शुभफल में कमी आ जाती है। लग्न में शनि हो तथा दशम भाव में चंद्र हो, तो चंद्र की दशा अत्यन्त श्रेष्ठ रहती है एवं व्यक्ति राज्य में उच्च पदासीन होता है। लग्न में शनि, दशम में चंद्र हो तो राजयोग होता है।

✡**बुध-चंद्र-** का योग भी शुभ है। इस योग के प्रभावस्वरूप जातक पठन-पाठन में रुचि रखने वाला, गणित, कम्प्यूटर, कामर्स, ज्योतिष आदि तकनीकी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करेगा।

✡**बुध-गुरु-** का योग भी तुला लग्न में विशेष प्रशस्त होगा। जातक विद्वान, विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता तथा धार्मिक विचारों से युक्त होगा। यह योग यदि केन्द्र भावों में हो तो विशेष शुभ फल प्राप्त होते हैं तथा जातक अपने कार्यक्षेत्र में उच्च पद पर आसीन होता है।

✡**शुक्र निर्बल-** अस्त या पापाक्रांत हो तो अल्पायु योग होता है। इस सम्बन्ध में अष्टम भाव पर शुभाशुभ ग्रह की दृष्टि का भी विचार करना चाहिए।

✡**धनाढ्य योग-** लग्नेश त्रिकोण में हो एवं द्वितीयेश लाभ भाव में, द्वितीय भाव पर द्वितीयेश की दृष्टि हो या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक को अच्छी एवं विपुल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

✡**राजभंग योग-** लग्न भाव में चन्द्र हो तथा केन्द्रस्थ मंगल की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तथा बारहवें भाव में शनि हो तो जातक को सदैव आर्थिक एवं मानसिक परेशानियां रहती हैं।

तीन ग्रहों का फल

✡**मंगल-शनि-** (निकृष्ट और सदोष) कारण मंगल मारकेश होता है और दो मारक स्थानों का स्वामी है।

✡**सूर्य-बुध-शुक्र-** लग्न में हों तो जातक धनवान, भाग्यवान तथा प्रभावशाली व्यक्ति होगा। अपने पुरुषार्थ के बल पर जीवन में उच्च पद, धन, सम्पत्ति आदि प्राप्त करने में सफल होगा। तीन ग्रहों के फल में प्रायः सर्वाधिक बली ग्रह की दशा-अन्तर्दशा में शुभाशुभ फल प्रकट होता है।

✡**शनि-शुक्र-बुध-**तुला लग्न में इन तीन ग्रहों का योग भी अत्यन्त शुभ एवं राज-तुल्य सुखों को प्रदान करता है। जातक को सब प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। केन्द्र-त्रिकोण में यह योग विशेष शुभ-फलप्रद होता है। जातक कामर्स, लेखाकार तथा उच्च-शिक्षित भी होता है।

✡**शनि-बुध-चंद्र-** योग हो तो जातक मैडीकल, कम्प्यूटर, ईंजीनियरिंग आदि तकनीकी क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

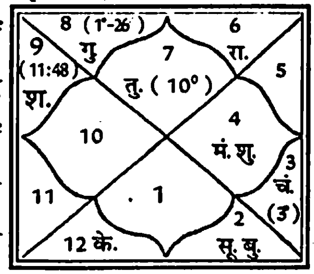
✡**सूर्य-बुध-शनि-**योग कुछ अशुभ होता है। जातक अपने गुणों एवं भावों को ठीक ढंग से एवं उचित प्रकार से अभिव्यक्त नहीं कर पाता। यद्यपि तार्किक तथा तकनीकी कार्यों में विशेष दक्ष होगा। गणित, साहित्य, कम्प्यूटर में विशेष रुचि होगी। यही योग यदि द्वादश भाव में हो या सूर्य-बुध हों और उन पर शनि की दृष्टि हो तो जातक का पिता प्रबल भाग्यशाली होता है। जातक को नेत्र कष्ट भी रहे।

✡**सूर्य-बुध-शनि-चंद्र-** की युति भी जातक को भाग्यशाली बनाती है।

तुला लग्न सम्बन्धी कुछ उल्लेखनीय उदाहरण कुण्डलियां

उच्च-शिक्षा एवं फर्नीचर क्षेत्र में सफल उद्योगपति

उदा. कुण्डली नं. 59
जन्म 7 जून, 1959 ई.
मृग. III, इष्ट २६/२५, पठानकोट



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक उच्च-शिक्षित (Commerce), तीव्र बुद्धिमान, परिश्रमी एवं फर्नीचर व आन्तरिक सज्जा (Interior-Decoration) के व्यवसाय से जुड़े एक सफल उद्योगपित की है। जन्म समय मृगशिर नक्षत्र, ३ चरण, **तुला लग्न** (10 अंश), नवांश में धनु लग्न उदित है तथा जन्म कालीन मंगल की दशा 1 वर्ष, 10 मास एवं 14 दिन भोग्य थी। जातक का जन्म एक उच्च प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न घराने में पठानकोट (पंजाब) में हुआ। जातक ऊंचे कद वाला, गौरवर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी है। इसके तीन बड़े भाई और दो बहिनें हैं। सुन्दर, सुशील पत्नी एवं सन्तान- दो लड़के हैं तथा जातक वर्तमान दिल्ली में बड़े भाई के साथ मिलकर फर्नीचर उद्योग एवं इंटीरियर डैकोरेट के उद्योग में लगा है।

ज्योतिष-समीक्षा- (1) तुला लग्न में **शनि** सर्वाधिक योगकारक ग्रह होता है। कुण्डली (59) में पंचम भाव पर शनि की तृतीय स्वगृही दृष्टि पड़ने से जातक उच्चशिक्षित, उद्यमी, कुशल शिल्प बुद्धि, मिलनसार एवं व्यवहार कुशल है।

(2) 15 सितं. 1983 तक जातक को गुरु मध्ये बुधान्तर उच्च विद्या प्राप्त करके दो/तीन प्राईवेट कम्पनियों में प्रतिनिधि के तौर पर सर्विस करते रहे। गुरु मध्य शुक्र की अन्तर दशा (मार्च, 1985) में विवाह हुआ तथा शुक्रान्तर में ही दिसंबर 85 में प्रथम पुत्र रत्न प्राप्त हुआ।

सन् 1987 ई. के पूर्वार्द्ध भाग में गुरु मध्य सूर्य की अन्तर दशा में जातक के द्वारा सर्विस छोड़कर दिल्ली में कार्यरत बड़े भाई के साथ फर्नीचर उद्योग में शामिल हो गया, जो सन् 2003 ई. तक उतार चढ़ाव के बावजूद सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है।

कारण-✡कुण्डली में बुध भाग्येश एवं राशि स्वामी होने पर भी अष्टम भाव में अस्तंगत होकर गुरु की शत्रु दृष्टि से प्रभावित है। जिससे बुध में अधिग्रहण सर्विस अधिक देर तक नहीं रही। सूर्य (जो कि आत्मीय सम्बन्धों का भी कारक है, गुरु की दृष्टि प्राप्त किए है, और लाभेश भी है) की अन्तरदशा में बड़े भाई के साथ सांझेदारी में कार्यारम्भ किया।

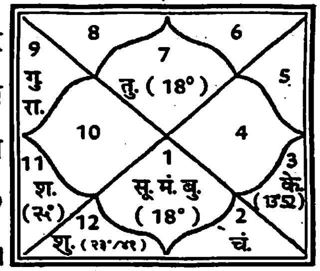
✡दशम भाव में **मंगल-शुक्र** के योग के कारण भी इण्टीरियर डैकोरेशन के कार्य में संलिप्त हुआ। शुक्र सौन्दर्य एवं आकर्षण का ग्रह है, और लग्नेश भी है। तथा मंगल धनेश एवं सप्तमेश होकर नीच राशिस्थ होने पर भी गुरु की उच्च दृष्टि को प्राप्त कर रहा है।

✡***नीच भंग योग-*** इसके अतिरिक्त मंगल को नीच भंग योग भी है। क्योंकि मंगल की उच्चराशि, मकर का स्वामी-चन्द्र से केन्द्र में होने से **नीचभंग** हो गया है।

✡अधिकांश ग्रह (लग्न एवं लग्नेश सहित) चर एवं द्विस्वभाव राशियों में होने से जातक को व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष एवं दौड़ धूप का सामना भी करना पड़ रहा है।

उच्च प्रतिष्ठित भूतपूर्व प्रिंसीपल एवं कालसर्पयोग

कुण्डली संख्या नं. 60
24 अप्रैल, 1936, जालंधर
रोहिणी ४, इष्ट ३४/०३



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक उच्च-प्रतिष्ठित एवं उच्चशिक्षित प्रभावशाली रिटायर्ड प्रिंसीपल साहिब की है, यह कुल चार भाई हैं। एक बड़े और दो छोटे। इन्होंने 1963 ई. में एम. ए. (Geography) एवं B.Ed. करके उसी वर्ष सरकारी शिक्षा संस्थान में लैक्चरार (Lecturar) के तौर पर सर्विस ग्रहण की तथा अप्रैल 1964 ई. में गुरु मध्ये गुरु की अन्तरदशा के शुरु में सुशिक्षित, सुंदर एवं सुशील कन्या से विवाह सम्बन्ध हुआ। पत्नी भी सरकारी क्षेत्र के स्कूल में प्राध्यपिका रही। कालन्तर में अगस्त 1965 ई. तथा सितं. 1969 ई. में दो लड़कों का जन्म गुरु मध्ये क्रमशः गुर्वन्तर एवं बुध की अन्तर दशाओं में हुआ। मार्च (1997 ई.) को शनि मध्य गुर्वन्तर में जातक बतौर प्रिंसीपल रिटायर्ड हुए। आपने ज्योग्रफी (भूगोल) के विषय में कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों का भी लेखन किया, जिनसे विशेष लोकप्रियता तो मिली परन्तु आर्थिक एवं सरकारी क्षेत्रों से बार-बार प्रयास करने पर भी अशानुरूप सरकारी स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई। इसका मुख्य कारण जातक की कुण्डली में **कालसर्पयोग** का प्रभाव कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त कुण्डली में अन्य ज्योतिषीय योग इस प्रकार से होंगे-

ज्योतिषीय समीक्षा - ✡प्रस्तुत जन्म कुण्डली में तीन ग्रह (सू., चं. एवं शुक्र) उच्चराशिगत हैं तथा तीन ग्रह (गुरु, शनि व मंगल) स्वराशिगत होने से राजयोग बना है। इसके अतिरिक्त केन्द्रेश (मंगल) व त्रिकोणेश (बुध) का सम्बन्ध केन्द्र में होने से भी राजयोग बना है।

✡इतने अधिक ग्रह उच्च एवं स्वराशिस्थ होने पर जातक को सरकारी क्षेत्र में बहुत अधिक (आशानुकूल) उपलब्धियां नहीं प्राप्त हो सकीं। इसका मुख्य कारण यही है कि नवांश कुण्डली में कोई भी ग्रह वर्गोत्तम स्थिति में नहीं है। केवल कर्मेश चंद्र नवांस में कर्कस्थ स्वराशिगत है। अतः सर्विस में नियमानुसार लाभ अवश्य प्राप्त होते रहे हैं। पत्नी एवं बच्चों का भी अनुकूल एवं सुखद सहयोग प्राप्त होता रहा है। ✡अधिकांश लाभ **गुरु एवं शनि** की दशाओं में ही प्राप्त हुए हैं।

(1) गुरु राहु युक्त होते हुए भी स्वराशिगत होकर सूर्य, मंगल आदि ग्रहों को शुभ पंचम दृष्टि से तथा नवम दृष्टि से लाभ भाव (जो कि अग्रज भाई का भी भाव है)को देख रहा है। फलस्वरूप जातक को उच्च विद्या एवं भाईयों का यथेष्ठ सुख प्राप्त हुआ।

✡ शनि योगकारक होकर स्वराशि में होने से उच्चविद्या, भूमि, मकान एवं वाहन, संतान आदि सुख भी प्रदान किए हैं।

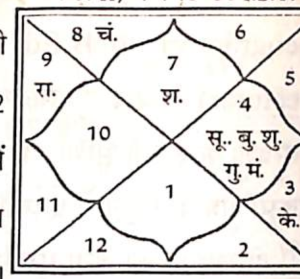
✡ सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि होनें से स्त्री को शरीर कष्ट एवं धन सम्बन्धी अनावश्यक खर्च भी रहे।

✡ इसके अतिरिक्त लग्नेश शुक्र उच्चस्थ होने पर भी षष्ठभाव में निष्फली माना जाता है तथा वह पापाक्रन्त है। **कार्येश** चन्द्रमा उच्चस्थ होते हुए भी कर्तृरी योग में है। इसके अतिरिक्त कालसर्पयोग का भी प्रभाव है। इन सभी से अभीष्ट प्राप्ति में विघ्न/बाधाओं एवं परेशानियों का भी सामना रहा।

✡ वर्तमान कालिक भाग्येश बुध की दशा व्ययशील होते हुए भी सामान्यतः शुभ फल प्रदा ही होगी।

उच्च प्रतिष्ठित उद्योगपति एवं कालसर्पयोग का उदाहरण

कुण्डली संख्या नं. 61
शनिवार 30-7-1955 अमृतसर
ज्येष्ठा II, जन्म 13-30 I.S.T.



प्रस्तुत जन्म कुण्डली लौह मशीनरी एवं कलपुर्जों से सम्बन्धित एक प्रसिद्ध उद्योगपति की है। कुल चार भाई और तीन बहिनें हैं। ऊंचा कद, उच्च शिक्षित एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी हैं। इनका विवाह 1981 ई. में शुक्र की **महादशा एवं चन्द्र** की अन्तर्दशा में एक सुन्दर सुशील एवं परिश्रमी कन्या से हुआ। चन्द्र की भुक्ति में ही 1982 ई. में एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ। (1985 ई.) में शुक्र मध्ये राहु की अन्तर्दशा में पिता जी का आकस्मिक निधन हुआ तथा आगे 1986 ई. में गुरु की भुक्ति में द्वितीय सन्तान (लड़का) और फिर केतु के अन्तर में 1995 ई. में दूसरे लड़के का जन्म हुआ। वर्तमान काल में चन्द्रमा की महादशा के अन्तर में मंगल की अन्तरदशा चल रही है जोकि 15 नवं. 2003 ई. तक रहेगी। जातक स्वावलम्बी होने के साथ-साथ पैतृक सम्पत्ति से भी लाभन्वित हुआ है।

ज्योतिषीय समीक्षा- ✡ जातक की कुण्डली में त्रिकोणपति एवं चतुर्थेश शनि लग्न, केन्द्र भाव में होने से **शशक योग** बना है, जिसके प्रभाव स्वरूप जातक धातु एवं शिल्पादि क्रियाओं में कुशल, परम बुद्धिमान, धनवान, भूमि, जायदाद, शिक्षा सन्तान एवं सवारी आदि सुख साधनों से युक्त, व्यवहार-कुशल, माता का भक्त, छिद्रान्वेशी तथा दूरगामी योजनाएं बनाने में कुशल होता है। शनि पंचमेश होकर उच्चस्थ होने से उच्च विद्या का लाभ भी देता है।

✡ **दशम** भाव पर सूर्य, मंगल, बुध, गुरु एवं शुक्र-पांच ग्रहों का योग होने से जातक अच्छी स्त्री, अच्छी सन्तान, गुणवान, धनवान, यशस्वी, कामुक, वाहनादि सुखों से युक्त एवं पैतृक सम्पत्ति का भी लाभ होता है।

शुक्रारभानु गुरु चन्द्रसुतै विशोकः।'
दारार्थवान-गुणयशो बलवानुदारः ।।''

✡ धनेश मंगल दशम भाव में नीच राशिस्थ होने पर भी उच्च गुरु के योग से तथा चन्द्र-मंगल में **स्थान परिवर्तन** योग बनाने से आर्थिक परेशानियों के बावजूद जातक को चन्द्रमा की दशा में 2002-2003 में धातु सम्बन्धी व्यवसाय में अच्छे लाभ (Profits) भी प्राप्त हुए हैं।

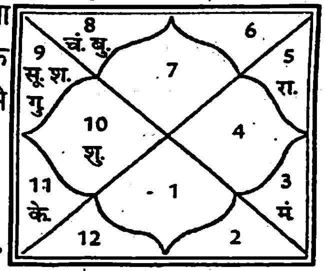
चन्द्रमा यद्यपि द्वितीय भाव में नीच राशिस्थ पड़ा हुआ है, परन्तु उस पर गुरु की शुभ एवं लाभकारी दृष्टि भी पड़ रही है, जिससे जातक को व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाईयों एवं विघ्न/बाधाओं के बाद धन लाभ हो पाते हैं।

मंगल को चतुर्थ भाव पर उच्च दृष्टि पड़ने से भूमि जायदाद सम्बन्धी कार्यों द्वारा विशेष लाभान्वित होने के संकेत हैं। वर्तमान काल में जातक एक मैरिज पैलिस का भी निर्माण कर रहा है। जोकि मंगल की उच्च दृष्टि के प्रभाव का द्योतक है।

कालसर्प योग- सभी ग्रह राहु केतु मध्य संचरित होने जातक को आशानुकूल लाभप्राप्त नहीं हो पाते तथा व्यवसाय में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है।

जन्म से कर्ण रोग से पीड़ित एक जातक

कुण्डली संख्या नं. 62
15/16-12-1960, अमृतसर
अनु. ३, जन्मेष्ट ५१/१७



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक ऐसे जातक की है, जो अपने माता-पिता का अकेला लड़का है। यह स्वयं ऊंचे कद वाला, गौर वर्ण, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, सरकारी बैंक में ऊंचे पद पर कार्यरत है। इसकी एक बड़ी बहिन भी है जो कि विवाहिता है। जातक जयपुर में निजी/पैतृक आवास में अपने माता-पिता के साथ रह रहा है। जातक सुन्दर स्त्री, दो लड़के एवं भूमि वाहन आदि सुखों से सम्पन्न है। यह जातक बाल्यकाल से ही कर्णरोग से पीड़ित होने से बहुत ऊंचा सुनता है।

ज्योतिषीय-समीक्षा

(1) कुण्डली में दूसरे भाव में **चन्द्र-बुध** का योग होने से जातक देखने में सुन्दर, कार्यकुशल, अत्यन्त बुद्धिमान, हंसमुख, धार्मिक विचारों वाला, मधुरभाषी एवं सत्यप्रिय होता है तथा बैंकिंग, एकाऊंटस आदि कार्यों में दक्ष होता है।

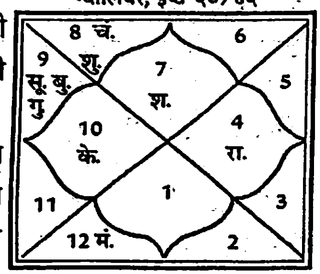
(2) द्वितीय एवं सप्तमेश मंगल भाग्य स्थान में होने से विवाह के बाद जातक की पदोन्नति एवं पुत्रादि सुखों की प्राप्ति हुई।

चतुर्थ भाव पर मंगल की उच्च दृष्टि होने से जातक भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न हुआ है।

(3) तृतीय भाव में सूर्य-शनि परस्पर विरोधी ग्रह पड़े हैं, उनपर मंगल की शत्रु दृष्टि पड़ने से जातक कर्ण सम्बन्धी रोग से ग्रस्त हुआ है तथा भ्रातृ सुख से भी वंचित हुआ है।

प्रधान-मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी

कुण्डली संख्या नं. 63
25 दिसं. 1924
ग्वालियर, इष्ट ५०/४५



वर्तमान विषम राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में **सफल प्रधानमन्त्री** श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की यथोपलब्ध जन्म तारीख एवं वर्ष और समय के अनुसार तुला लग्न उदित है। श्री वाजपेयी ने भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर अपनी सहयोगी पार्टियों सहित 13 अक्तू. 1999 ई० को दुबारा शपथ ग्रहण की, उस समय भारत वर्ष की राजनीतिक परिस्थितियां अत्यन्त असमंजसपूर्ण एवं विक्षुब्ध थीं।

ज्योतिषीय समीक्षा- (1) श्री वाजपेयी जी की लग्न कुण्डली तुला में शनि सर्वाधिक योग कारक ग्रह होकर लग्न भाव में उच्चस्थ होने से अत्यन्त शुभ फलप्रद हुआ है। इसके फलस्वरूप जातक उच्च प्रतिष्ठित, न्यायप्रिय, नेतृत्व, भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों से युक्त तथा राजा तुल्य सुख साधनों से सम्पन्न होता है।

स्वोच्चे स्वकीय भवने क्षितिपाल तुल्यो
लग्नेऽर्कजे भवति देशपुरधिनाथः॥ फलदीपिका

(2) इसके अतिरिक्त केन्द्र-त्रिकोणेश शनि उच्च राशिस्थ होकर केन्द्र में स्थित होने से **शशक** योग भी बनता है। जिसके प्रभावस्वरूप जातक उच्चप्रतिष्ठित, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उच्च पदाधिकारी (अधनीस्थ अनेक कर्मचारियों से युक्त), अन्य लोगों द्वारा प्रशंसित होता है-

शस्तः सर्वजनैः सुभृत्य बलवान-ग्रामाधिपो वा नृपो॥

ऐसा जातक तीव्र बुद्धिमान, भ्रमणशील, वाद-विवाद करने में कुशल और विनोद प्रिय, अनेक गुणों से समन्वित, उदार, श्रेष्ठ एवं दीर्घायु होता है-

भूपो व सचिवो वनाचलरतः सेनापति क्रूरधी-
धातो वादविनोद वंचनपरो दाता सरोषेक्षणः॥ (जातक पारि.)

(3) चन्द्र-शुक्र योग- श्री वाजपेयी जी की कुण्डली में द्वितीय भाव में लग्नेश एवं कर्मेश (राजनीतिक क्षेत्र) का योग होने से राजनैतिक सफलता के साथ-साथ जातक को ईमानदार, विद्वान, हंसमुख, विनोदप्रिय, सरल एवं संवेदनशील, वाक्पटु, कविहृदय, लोकप्रिय, कुशल भाषणशैली, लेखन एवं ललित-कलाओं के प्रति विशेष लगाव आदि गुण प्रदान करता है।

(4) तृतीय भाव पर सूर्य, गुरु एवं बुध ग्रहों का योग हो तो जातक स्वावलम्बी, विद्वान, पराक्रमी, अनेक विद्या को जानने वाला, भाषण एवं वाक कला में पटु, सम्पन्न, सुशील एवं तेजस्वी होता है। परन्तु आंखों में कष्ट रहता है।

(5) दशम भाव पर गुरु की उच्च दृष्टि पड़ने से जातक राजनीति के क्षेत्र में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त हुआ है।

(6) मंगल सप्तमेश होकर अपनी राशि से द्वादशस्थ अर्थात् घटे भाव में होने से जातक को वैवाहिक एवं गृहस्थ सुखों से वंचित होना पड़ा। इसके अतिरिक्त सप्तम भाव पर शनि की नीच दृष्टि भी विवाह सुख में हानिकारक हुई है।

(7) दशमस्थ राहु- गर्गाचार्य अनुसार दशमस्थ राहु जातक को उच्चाधिकारी, लोक समूहों में अग्रणी, बुद्धिमान, महा-मन्त्री, राजनीति में सफल एवं धन-सम्पदा आदि सुखों से समन्वित करता है।

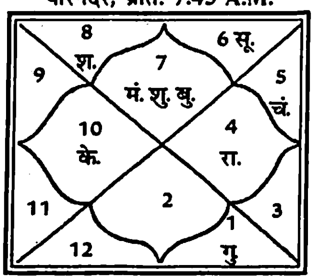
(8) वर्तमान काल में 20 फर. 2003 से 8-4-2005 तक गुरु मध्ये गुरु की अन्तर्दशा में मान/प्रतिष्ठा में और वृद्धि होने के संकेत हैं। परन्तु राजनैतिक तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से अशुभ होगा।

(9) इसके अतिरिक्त श्री वाजपेयी का जन्म पंचम नवांश (कुम्भ) में जन्म होने से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, गम्भीर, चिन्तनशील, परोपकारी एवं प्रतिष्ठित होता है।

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी

सत्य और अहिंसा के परम-पुजारी तथा भारतवर्ष के स्वतन्त्रता आंदोलन के अग्रणी सूत्रधार राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के तेजस्वी एवं ओजस्वी व्यक्तित्व से संसार के प्रायः सभी प्रबुद्ध लोग परिचित हैं। उन्होंने तात्कालीन शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लेने के लिए भारतीय जनमानस को एकता की रस्सी में पिरोकर सत्य और अहिंसा का दिव्य सन्देश प्रदान किया। उनकी यथोपलब्ध जन्म कुण्डली में कुछ विशेष महत्त्वपूर्ण ज्योतिषीय योग इस प्रकार से पाए जाते हैं-

कुण्डली संख्या नं. 64
2 अक्तू. 1869 ई०
पोरनंदर, प्रातः 7.45 A.M.



ज्योतिषीय योग-

(1) लग्न भाव में मंगल, बुध एवं शुक्र तीन ग्रहों का योग होने से जातक उत्साहशील, तेजस्वी, कुशलवक्ता, कृश शरीर एवं धनी होता है परन्तु इस योग पर गुरु की विशेष दृष्टि होने से यह योग और भी प्रशस्त हो गया है। इस योग का फल शास्त्रकारों ने इस प्रकार कहा है-

वित्तान्वितः क्षीण कलेवरश्च वाचालता चंचलतासमेतः।
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्र यातैः कविभौम सौम्यैः॥

(2) इस योग पर गुरु की दृष्टि के प्रभावस्वरूप गांधी जी सांसारिक सुखों से धनी न होकर बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से धनी एवं समृद्ध हुए।

(3) **चन्द्रमा** पर गुरु की शुभ/पांचवी दृष्टि पड़ने से भी जातक अनेक विषयों का ज्ञाता, सज्जनता एवं साधुता के कारण विख्यात् राजा (या प्रशासनिक क्षेत्रों में) प्रधान पुरुष होता है-

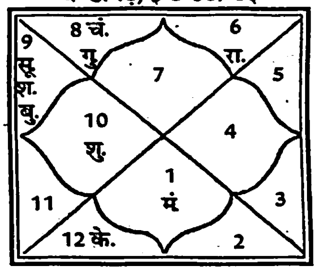
बहुश्रुत विस्तृत साधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेःप्रधानम्।
चन्द्रो मृगेन्द्रोपगतोऽमरेन्द्रोपाध्याय दृष्टिः परिसूतिकाले॥ जा.पा.

(4) राशि स्वामी सूर्य द्वादशभाव में होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, अन्वेषणशील, विख्यात, उच्चादर्श, आत्मबली तेजस्वी किन्तु आंखों में कष्ट रहने के संकेत हैं।

(5) **दशम राहु**-गर्गाचार्य के अनुसार ऐसा जातक लोक-समुदाय में अग्रणी, तीव्र बुद्धिमान, राजनीति क्षेत्र में सफल एवं अपने उद्देश्य में तथा शत्रुओं का दमन करने में सफल होता है।

भारतीय क्रिकेट जगत के श्रेष्ठ सितारे-कपिलदेव

कुण्डली संख्या नं. 65
जन्म 5 जन. 1959
चण्डीगढ़, इष्ट ४७/४३



संलग्न जन्म कुण्डली भारतीय क्रिकेट (खेल) जगत के सर्वश्रेष्ठ ऑल राउण्डरों (All Rounders) में गिने जाते हैं। वह तेज आक्रामक बॉलिंग (Bowling) के अतिरिक्त आक्रामक तेज बल्लेबाज के रूप में भी जाने जाते हैं।

व्यक्तिगत तौर पर भी वह पराक्रमी, अदम्य साहसी एवं दिलेर व्यक्ति माने जाते हैं। उनकी कुण्डली में निम्नलिखित ज्योतिषीय योग पाए जाते हैं-

ज्योतिष योग समीक्षा

(1) रुचक योग- श्री कपिल जी की कुण्डली में मंगल सर्वाधिक बली एवं योगकारक दिखता है। मंगल राशि-स्वामी होकर लग्न से केन्द्र स्थान में स्वराशिगत होने से **रुचक योग** बनता है। जिसके प्रभावस्वरूप जातक अत्यन्त साहसी, तेजस्वी, कुछ तेज स्वभाव, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, कीर्तिमान और धनादि से सम्पन्न होता है।

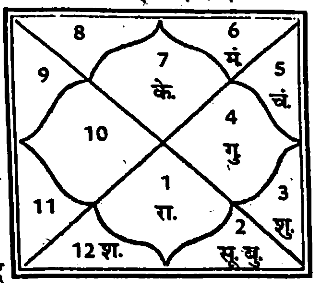
(2) गजकेसरी योग- दूसरे भाव में मंगल की राशि पर ही चन्द्र-गुरु का योग होने से गजकेसरी योग बनता है। **नवांश** कुण्डली में गुरु उच्च राशिस्थ एवं मंगल स्वराशि होने से इस योग के प्रभावस्वरूप जातक को वर्ल्ड-कप (World Cup) के सफल कप्तान तथा अन्य विभिन्न उपाधियों से अलंकृत हो चुके हैं।

(3) मालव्य योग- कपिल जी की कुं. में शुक्र चतुर्थ भाव में स्वक्षेत्री होने से मालव्य योग भी बनता है। जिससे जातक अपने खेल के क्षेत्र में कुशल, गुणवान, तेजस्वी, धनी, स्त्री, परिवार एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न हुआ है।

(4) तृतीय भाव में सूर्य, बुध एवं पंचमेश शनि सहित तीन ग्रही योग होने से जातक पराक्रमी, हिम्मती, स्वावलम्बी एवं भाग्यशाली बनाता है। इसके अतिरिक्त भाग्य स्थान पर बुध की स्वगृही दृष्टि जातक को अपनी कलात्मक शैली में विशिष्टता देती है। **ध्यान रहे,** सन् 1983 ई० में बुध की दशा में ही जातक ने अत्यन्त तीव्र प्रतिस्पर्धा में विजयी होकर भारत के लिए अद्वितीय गौरव एवं प्रतिष्ठा अर्जित की थी तथा इसी दशा में सर्वाधिक विकट (434) लेने का कीर्तिमान स्थापित किया। तदनन्तर भी विशेषकर 1997 ई० के बाद शुक्र की दशा में भी अनेक उल्लेखनीय उपाधियों से अलंकृत हुए।

विदेश गमन एवं कलहपूर्ण एवं दुखी वैवाहिक जीवन

कुण्डली संख्या नं. 66
18 मई, 1967 ई०
जालन्धर इष्ट २७/५०



संलग्न कुण्डली सांवले वर्ण की ऐसी जातिका की है, जिसका जन्म मई 1967 ई० को जालन्धर में हुआ। कालेज शिक्षा के दौरान ही वह अपने माता-पिता के साथ (1986 ई० के प्रारंभ में) चन्द्र मध्ये राहु के अन्तर में विदेश (कैनेडा) गई तथा नवं. 1986 में पुन: भारत लौटकर एक इंजीनियर लड़के से विवाह हुआ। परन्तु विवाह से एक सप्ताह के भीतर दोनों में गंभीर रूप से झगड़े प्रारंभ हो गए, लड़की तो 1987 के प्रारंभ (चन्द्र मध्ये गुर्वन्तर में) पुन: विदेश चली गई, परन्तु झगड़ों के कारण लगभग दो वर्ष तक लड़का नहीं जा सका। अन्तत: नवं. 1988 ई. को विदेश जा सका। 6.12.1989 ई. को (चन्द्र मध्ये बुधांतर में) कन्या का जन्म हुआ।

यद्यपि जातिका व उसका पति दोनों (Job) करते हैं। इकट्ठे रहने के बावजूद वैवाहिक सम्बन्धों में क्लेश एवं तनाव जारी है। प्रस्तुत कुण्डली में असुख वैवाहिक सम्बन्धों के निम्नलिखित ज्योतिषीय कारण होंगे-

ज्योतिषीय समीक्षा:

(1) लग्न भाव में केतु होने से जातिका का दुबला शरीर एवं सांवला वर्ण हुआ है। सप्तम भाव में राहु की स्थिति होना तथा सप्तमेश मंगल द्वादश भाव में होकर शनि द्वारा दृष्ट है, जिससे विवाह सुख में विघ्न/बाधाएं पड़ना सांकेतिक है।

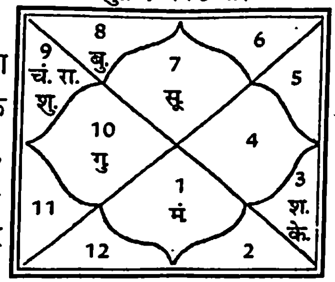
(2) सप्तम भाव पाप ग्रहों (शनि एवं सूर्य) से आक्रान्त होने से भी विवाह सुख में कमी रही।

(3) पतिकारक गुरु उच्चस्थ होकर केन्द्र में स्थित होने से **हंस योग** बन रहा है। जिसके फलस्वरूप जातिका

परिश्रमी, बहुगुणी, धार्मिक विचारों वाली, धैर्यशालिनी तथा कठिन परिस्थितियों में भी स्वयं को ढाल लेने वाली हुई है। इसके अतिरिक्त सप्तम भाव पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से विवाह सम्बन्ध टूटते-टूटते बच गया है।

विश्वसुन्दरी ऐश्वर्यराय: एक सफल ऐक्ट्रैस

कुण्डली संख्या नं. 67
1 नवं. 1973, जन्मसे भोग्य दशा
शुक्र 9 वर्ष 3 मास



संलग्न कुण्डली विश्व सुन्दरी ऐश्वर्य राय की है, जो अब सफलतम ऐक्ट्रेस (Heroeins) में गिनी जाती हैं। इसका जन्म तुला लग्न एवं तुला के ही नवांश में हुआ है। जिससे इसको ईश्वर कृपावश अत्यन्त सुन्दर रूप एवं लावण्य प्राप्त हुआ है।

(1) तुला का **वर्गोत्तम लग्न** होने से इनमें तुला लग्नोचित विशिष्ट गुणों का समावेश हुआ है। इस योग के प्रभावस्वरूप जातिका का सुन्दर गौर वर्ण, सुन्दर एवं आकर्षक नयन-नक्श, हंसमुख, सहज-मुस्कान लिए, कुशाग्र बुद्धि, व्यवहार कुशल, विशाल नेत्र, अधिकांश लोगों द्वारा प्रशंसित, लम्बा मुख, भूमि जायदाद, धनादि सम्पदा से सम्पन्न, नए-नए कार्य/व्यवसाय (अर्थात् अभिनय के क्षेत्र) में नए-नए रोल करने में कुशल और प्रसिद्ध होती हैं-

गौरो विशाल नेत्र: श्लाघी दीर्घाननोऽर्थगोप्ता स्यात-।
नवपण्यकर्म कुशलस्तुला धराद्यैशज: सुविख्यात:॥

(2) **चन्द्र-शुक्र योग**- तृतीय भाव में लग्नेश शुक्र एवं कार्येश चन्द्र का योग होने से जातिका को अभिनय, नृत्य, संगीत, मनोरंजन आदि कलाओं के क्षेत्र में विशेष निपुणता प्रदान करता है।

(3) तृतीय भाव पर योगकारक शनि की दृष्टि होने से जातिका उच्चशिक्षित, व्यवहार कुशल, भूमि, जायदाद वाहन तथा भाई/बन्धुओं के सुख से सम्पन्न होगी।

(4) सप्तम भाव (केन्द्र) में स्वगृही मंगल होने से **रुचक योग** भी बना है, जिसके फलस्वरूप जातिका अत्यन्त साहसी, तेजस्वी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली, धन-धान्य एवं सुख साधनों से सम्पन्न हुई है। तथा अनेक प्रतियोगिताएं जीतकर अपने क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर पहुंची है। ध्यान रहे, गत पृष्ठों पर दी गई श्री कपिलदेव की कुण्डली में भी यह योग प्रमुख है।

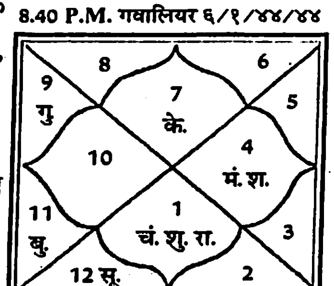
(5) ज्ञातव्य रहे, कि चन्द्र मध्ये बुध (भाग्येश) की अन्तरदशा (नवंबर 1994 ई.) में इन्होंने विश्व सुन्दरी का ताज ग्रहण किया तथा चन्द्र मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा (अप्रैल 1996 ई.) से इन्होंने फिल्मों में प्रवेश किया।

(6) वर्तमान काल मंगल की दशा (15 मार्च 1998 ई.) से चल रही है, जो कि मार्च 2005 ई. तक चलेगी। ग्रह योगानुसार यह ग्रहदशा सामान्यत: विशेष सफल एवं अभिनय के अतिरिक्त निर्देशन आदि क्षेत्रों में भी सफल होगी।

एक उच्च प्रतिष्ठित एवं सफल प्रिंसीपल

(उदाहरण-वर्गोत्तम नवांश)

कुण्डली संख्या नं. 68
14 मार्च, 1948 ई०
8.40 P.M. ग्वालियर ६/१/४४/४४



संलग्न जन्म कुण्डली एक उच्च-शिक्षित एवं उच्चप्रतिष्ठित प्रिंसीपल की है। इनका जन्म तुला लग्न कालीन, तुला के प्रथम नवांश में होने से वर्गोत्तम लग्न हुआ है। जिसके फलस्वरूप जातिका का प्रभावशाली व्यक्तित्व, गौर वर्ण, बड़ा चेहरा, गुप्त सुरक्षित धन, नए-नए प्रयोगात्मक कृत्य करने में कुशल एवं लोक प्रसिद्धि होती है-

नवपण्यकर्म कुशल स्तुला धराद्यैशज: सुविख्यात:॥

इसके अतिरिक्त ऐसी जातिका विनम्र स्वभाव, सत्यनिष्ठ, गुणी, धर्म व मर्यादा का पालन करने वाली, विद्याध्यन एवं गूढ़ विद्याओं में रुचि रखने वाली होती है-

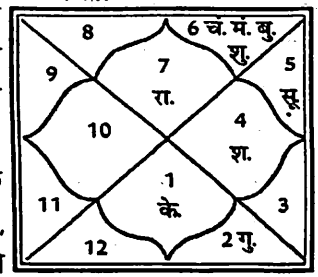
विनीत धर्मशीलश्च सत्यवादी दृढ़ व्रत:। विद्या व्यसनीशीलश्च जायते प्रथमांशके॥

कुछ अन्य ज्योतिषीय कारण :

ज्योतिषीय योग– इसके अतिरिक्त पंचम भाव में बुध की स्थिति तथा तृतीय भाव में स्वगृही गुरु एवं उसकी सप्तम भावस्थ चन्द्र पर शुभ दृष्टि होने से जातिका तीव्र बुद्धिमान, विश्लेषणात्मक प्रकृति, परिश्रमी, भ्रातृ सुख युक्त होगी। **चतुर्थ भाव** पर मंगल/शनि की दृष्टि जातिका को भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न करती है। सप्तम भाव में राहु-चन्द्र का अशुभ योग होना एवं सप्तमेश मंगल का नीच राशि में होकर शनि के प्रभाव में आना तथा शनि द्वारा सप्तम भाव पर नीच राशिस्थ दृष्टि पड़ने से जातिका का वैवाहिक जीवन सफल नहीं हो सका। 1973 ई० में सूर्य मध्ये शुक्र की उपदशा में जातिका प्राध्यापिका तौर पर नियुक्त हुई। जातिका का विवाह चन्द्र मध्ये मंगल की भुक्ति में सितं. 1974 में हुआ तथा चन्द्र मध्ये राहु की अन्तर्दशा में जुलाई 1975 में विवाह सम्बन्ध विच्छेद हो गया। राहु की अंतरदशा (14/6/1975 से 13/12/76 तक) अत्यन्त अशुभ रही। 1977 ई० में चन्द्र मध्ये गुरु की अन्तर्दशा में इन्होंने डाक्टरेट (पी. एच. डी.) की उपाधि प्राप्त की तथा उसी वर्ष एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय में प्रिंसीपल नियुक्त हुईं। वर्तमान काल में इसी पद पर सफलतापूर्वक कार्यरत हैं।

एक मेधावी उच्च प्रतिष्ठित डाक्टर

कुण्डली संख्या नं. 69
जन्म 28.8.1976
हस्त (३), 10.30 प्रातः जालन्धर



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक कुशाग्र बुद्धि, परिश्रमी एवं मेधावी डाक्टर लड़की की है। इनके पिता कैमीकल से सम्बन्धित व्यवसाय में संलग्न हैं। माता घरेलू एवं धार्मिक स्त्री है। यह कन्या मैडीकल क्षेत्र में उच्चत्तम विद्या (M.D.) प्राप्त करके विशेषज्ञ डाक्टर से विवाहित होकर विदेश (America) में Settled है। अपने शैक्षणिक काल में यह स्कूल काल से लेकर M.B.B.S. तक सारे राज्य में सर्वप्रथम (श्रेष्ठ) स्थान प्राप्त करती रही हैं। हालांकि इस लड़की के माता-पिता दोनों चिकित्सा के क्षेत्र में नहीं हैं।

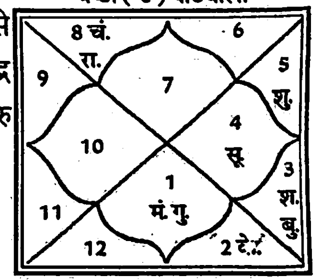
प्रमुख ज्योतिषीय योग– (1) इनकी जन्म कुण्डली में चंद्र, मंगल, बुध एवं शुक्र ग्रहों का चारग्रही योग बना हुआ है तथा उन पर गुरु की विशेष पंचम दृष्टि पड़ रही है, जो जातिका को विद्या के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। यद्यपि चन्द्र लग्न से यह कुं. विशेष सशक्त बनती है।

(2) अनुभव में यही आया है कि जब भी कुण्डली में गुरु-मंगल, मंगल-चन्द्र, सूर्य-गुरु, गुरु-शुक्र आदि ग्रहों का योग या दृष्टि सम्बन्ध बनता हो तो जातक को चिकित्सा के क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होती है। प्रस्तुत कुण्डली में मंगल व चन्द्र दोनों पर गुरु की विशेष शुभ दृष्टि पड़ रही है।

(3) कुण्डली में सप्तमेश मंगल कर्मेश चन्द्र एवं भागयेश बुध व लग्नेश शुक्र द्वादश भाव में सम्बन्ध होने से जातिका शादी के बाद विदेश (अमेरिका) में (Settled) एवं वहीं विशेष भाग्योदय हुआ। इसका विवाह बहुत विघ्नों के बाद राहु मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा (मार्च, 2001 ई०) को हुआ था।

एक अन्य उच्च शिक्षित डाक्टर

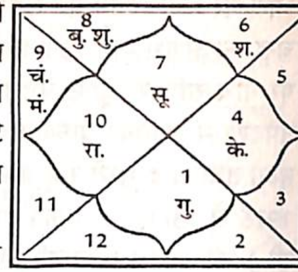
कुं. संख्या नं. 70
20-7-1975 ई. १८/३५
ज्येष्ठा (४) पटियाला



संलग्न कुण्डली एक उच्च प्रशिक्षित M.D. करती हुई डाक्टर की है। शुक्र मध्ये बुध की भुक्ति में इसका विवाह डाक्टर फैमिली में ही दिल्ली में हुआ है। इनकी कुण्डली में गुरु-मंगल का सम्बन्ध सप्तम भाव में होने से विवाह के पश्चात् डाक्टर फैमिली से सम्बन्ध होने के स्पष्ट संकेत हैं। इसके अतिरिक्त भाग्य स्थान में **शनि-बुध** का योग, चन्द्र पर मंगल की दृष्टि तथा तृतीय भाव पर गुरु की स्वगृही दृष्टि तथा नवांश में शनि व गुरु दोनों की वर्गोत्तम स्थिति होने से जातिका को मैडीकल क्षेत्र में सफल करता है।

उच्च प्रतिष्ठित तेल उद्योगपति

कुण्डली संख्या नं. 71
25 अक्तू. 1952, पूषा
जन्मेष्ट १/५८, जालंधर

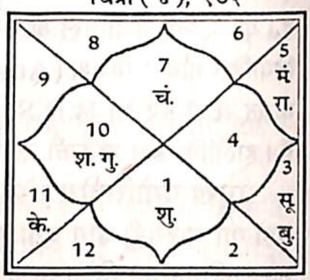


संलग्न कुण्डली तैल एवं पैट्रोलियम के उच्च स्तरीय क्रय-विक्रय से जुड़े उद्योगपति की है। दशम भाव पर मारकेश मंगल की नीच दृष्टि एवं केतु की स्थिति होना तथा लग्न में नीच राशिगत सूर्य होने से पिता के सुख में कमी रही तथा आंखों में कष्ट एवं नेत्रों को चश्में लगे हैं। तृतीय भाव में मंगल व चन्द्र होने से एक छोटा भाई व एक बहिन का सुख हुआ। इनकी प्रथम दो सन्तान कन्याएँ तथा तृतीय संतान पुत्र है। इस कुण्डली में द्वितीय भाव में बुध-शुक्र का योग तथा उस पर शनि की दृष्टि होने से जातक तथा उसके छोटे भाई, दोनों ने मिलकर पैट्रोलियम पदार्थ तथा तैलादि से सम्बन्धित वस्तुओं से अच्छा लाभ उठाया तथा एक से अधिक साधनों द्वारा धन लाभ होते हैं।

तृतीयस्थ चन्द्र-मंगल के योग पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से जातक कर्म, उद्योगी एवं पराक्रमशील है। शनि द्वादशस्थ होने से वस्त्रादि का निर्यात Export भी करते हैं।

एक कर्मकाण्डी सफल ज्योतिषी

कुण्डली संख्या नं. 72
जन्म 23-6-1961, ऊना
चित्रा (४), ९७२



संलग्न कुण्डली एक कर्मकाण्ड कुशल एवं सफल ज्योतिषी जी की है। जन्म लग्न एवं चन्द्र लग्न समान होने से तुला लग्न राशि बलान्वित हुआ है। इन्होंने 24वें वर्ष गुरु की महादशा एवं गुरु भुक्ति में जि. ऊना (हिमाचल) से शास्त्री की तथा गुरु मध्ये शन्यन्तर कालीन 26वें वर्ष विवाह हुआ। कुछ वर्ष प्राईवेट सर्विस की, परन्तु 27 अप्रै. 1997 से प्रा. (शनि की दशा में) स्वतन्त्र रूप व्यवसाय से अच्छा नाम व धन अर्जित किया। मई, 2000 ई. से निजी मकान, जायदाद तथा शनि की दशा में ही पुत्र/पुत्री आदि सन्तान सुख प्राप्त हुए। इनकी कुण्डली में निम्न ग्रह योग विशेष उल्लेखनीय हैं-

(1) सूर्य-बुध- भाग्य स्थान में होने से बुधादित्य योग एवं भाग्यशाली योग विशेष प्रशस्त हुआ है। बुध के अन्तर में इन्हें विशेष धन लाभ प्राप्त हुए हैं।

(2) शनि- गुरु- चतुर्थ (केन्द्र) भाव में होने से शशक योग भी बनता है जिसके फलस्वरूप जातक बुद्धिमान पहाड़ों में रहने वाला, मंत्र-तंत्र, ज्योतिष आदि में रुचि, क्रुद्ध होने वाला स्वभाव, भूमि, वाहन, सन्तान आदि सुखों से युक्त, मध्यम शरीर, दूसरों की सम्पत्ति का उपयोग करने वाला, माता का आदर करने वाला एवं स्त्रियों की संगति में प्रसन्न रहने वाला होता है।

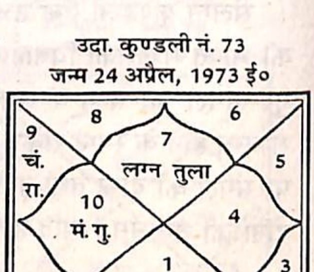
(3) लग्न भाव पर शनि की उच्च दृष्टि होने से जातक दूरंदेशी, उच्चभिलाषी, परिश्रमी तथा दूसरे को मनोभावों को शीघ्र जान लेने में कुशल ज्योतिषी होता है।

(4) धन भाव पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से जातक धन/धान्य एवं कौटुम्बिक सुखों से युक्त हुआ है।

क्रिकेट सम्राट-सचिन तेंदुलकर

क्रिकेट जगत में उभरता सितारा

उदा. कुण्डली नं. 73
जन्म 24 अप्रैल, 1973 ई०



लोकप्रिय क्रिकेट खेल के जगत में अल्पायु में ही नए-नए कीर्तिमान स्थापित करने वाले क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेन्दुलकर का जन्म 24 अप्रैल 1973 ई० को सायं लगभग 7 बजे उषा नक्षत्र एवं तुला लग्नकालीन बम्बई (महाराष्ट्र) में हुआ। इस होनहार खिलाड़ी द्वारा क्रिकेट के खेल जगत में अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किए जा चुके हैं। जिससे विश्व-क्रिकेट मंच पर उनका नाम भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनियां में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने खेल जगत में अपने अद्वितीय कीर्तिमानों से केवल अपना नाम ही नहीं, बल्कि समस्त भारत का नाम उज्जवल किया है। उनकी जन्म

कुण्डली में कुछ प्रमुख ज्योतिषीय योग इस प्रकार से उपलब्ध होते हैं–

(1) तुला लग्न में लग्नेश शुक्र सप्तम भाव में उच्चस्थ लाभेश सूर्य के साथ होकर लग्न को स्वराशि दृष्टि से देख रहा है। जिससे जातक आकर्षक व्यक्तित्व एवं सुन्दर वर्ण वाला परन्तु सूर्य की नीच दृष्टि होने से कुछ छोटे कद वाला हुआ है।

(2) तेन्दुलकर की कुण्डली में मंगल चतुर्थ स्थान उच्च राशि (मकर) का होने से **रूचक योग** बना है। जोकि पंच महापुरुष योगों में से एक है। ऐसा जातक अत्यन्त साहसी, शूरवीर, धनवान्, कीर्तिमान एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला अर्थात् परास्त करने वाला होता है। ऐसा जातक खेलादि कला के क्षेत्र में अत्यन्त कुशल एवं प्रसिद्ध होता है।

(3) चन्द्रमा से द्वितीय स्थान से मंगल–गुरु होने से **सुनफा योग** बनता है जिसके फलस्वरूप जातक अत्यन्त पराक्रमी तथा अपने पराक्रम से चमत्कृत काम करने वाला, उच्चप्रतिष्ठित, धन, धान्य, भूमि, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

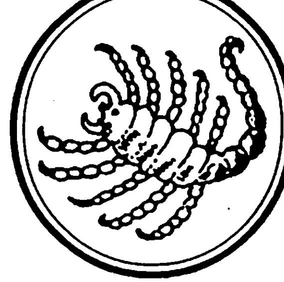
(4) **पारिजात योग-** जन्म कुण्डली में लग्नेश शुक्र की राशि (मेष) का स्वामी उच्च राशि में होकर केन्द्र/त्रिकोण में हो, तो पारिजात योग बनता है। जिसके प्रभावस्वरूप जातक अपने कार्य क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ, अग्रणी एवं विश्व विख्यात होता है। तेन्दुलकर की कुं. में मंगल उच्चस्थ होकर केन्द्रगत है।

(5) **नवांश** कुण्डली में कार्येश चन्द्र धनु राशिस्थ होने से वर्गोत्तम स्थिति में हुआ है, जिससे चन्द्र–मंगल की दशा अन्तर्दशाओं में ही जातक को खेल जगत में तथा भारत सरकार की श्रेष्ठ (अर्जुन पुरस्कारादि) उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है।

(6) कुण्डली में लाभेश सूर्य उच्चस्थ एवं भाव कुंडली में चन्द्र का चतुर्थ स्थान में मंगल–गुरु के साथ योग होने से जातक उल्लेखनीय उपाधियों विशेष प्रतिष्ठा एवं धन सम्पदा से समान्वित हुआ है।

बृश्चिक राशि एवं लग्न (Scorpio)

(ता, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू,)



(जिस व्यक्ति के पास अपने जन्म की तारीख, वार, समयादि का विवरण नही हैं- वह अपने नाम के प्रथमाक्षर के अनुसार अपनी राशि का निर्धारण कर सकते हैं।)

बृश्चिकोदय संज़ातः शौर्यवान् धनवान् सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च विवेकी सर्वपोषकः ॥
असन्तुष्टो नृपैः पूज्यो विघ्नकर्तान्य कर्माणि ।
शुभलक्षणसंयुक्तो गुप्तपापश्च विक्रमी ॥

अर्थात् बृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाला जातक शूरवीर, बुद्धिमान, धनवान, विवेकशील, कुल में श्रेष्ठ एवं परिवार का पालन करने वाला होता है। ऐसे जातक उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्मानित होते हुए भी अपने तथा अन्य लोगों के कामों में विघ्न उठाने वाले, प्रत्यक्षतः शुभ लक्षणों से युक्त और पराक्रमी होने पर भी गुप्त रूप में पाप आचरण वाले होते हैं।

बृश्चिक राशिचक्र की आठवीं राशि है। भचक्र में इसका विस्तार 210° से 240° अंश तक है। इसके बीच पड़ने वाले नक्षत्र/ताराओं का आकार बिच्छु जैसा दिखता है। इस राशि का स्वामी मंगल ग्रह है। कालपुरुष में इस राशि का सम्बन्ध मूत्रेन्द्रिय, गुदा, गुप्तांग, जननेन्द्रिय एवं पेट से नीचे का भाग है। इस राशि के अन्तर्गत **विशाखा** नक्षत्र का प्रथम चरण (तो), **अनुराधा** के चारों चरण (ना, नी, नू, ने) तथा **ज्येष्ठा** के चार चरण (नो, या, यी, यू,) पड़ते हैं। किसी जातक के जन्म कालीन चन्द्रमा जिस नक्षत्र/चरण पर होता है, भारतीय परम्परानुसार तदनुसार ही उसका **नामकरण** किया जाता है क्योंकि लग्न के अतिरिक्त नाम राशि, नक्षत्र एवं उसके स्वामी ग्रह का भी जातक के व्यक्तित्व एवं जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। जैसे विशाखा नक्षत्र का स्वामी गुरु, अनुराधा का शनि तथा ज्येष्टा नक्षत्र का स्वामी बुध होता है, तो किसी जातक का जन्म जिस नक्षत्र में होगा, तो उस जातक के जन्म लग्न एवं लग्नेश के अतिरिक्त नक्षत्र स्वामी ग्रह का प्रभाव भी लक्षित होगा। आगामी पृष्ठों पर यद्यपि जातक के जन्म लग्न में स्थित ग्रहों के अनुसार फलादेश का विवेचन किया गया है तथापि जातक के लग्न स्फुट (स्पष्ट) के आधार पर निर्मित द्रेष्काण, त्रिशांश, नवांश आदि कुण्डलियों का भी अध्ययन करने के बाद ही जातक के भविष्य के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय करना चाहिए। जैसे किसी जातक के व्यक्तित्व बारे में जानकारी प्राप्त करनी हो तो जन्म कुण्डली में लग्न, राशि, लग्नेश एवं केन्द्रादि में बलवान ग्रह के अनुसार शरीर संरचना होती है। इसके अतिरिक्त नवांश कुण्डली के स्वामी के सदृश शरीर रचना होती है। चन्द्र जिस नवांश में हो, उस नवांशपति के सदृश शरीर का गौर आदि वर्ण होता है। भट्टोत्पल अनुसार चन्द्र जिस राशि में हो, उस राशि के समान वर्ण (रंग) होता है।

चन्द्रमा बृश्चिक राशि में नीचस्थ माना जाता है। विशेषकर इस राशि के 3° अंश पर परमनीच तथा वृष के 3° अंश पर परमोच्च माना जाता है। यद्यपि केतु इस राशि में उच्चस्थ माना जाता है। ग्रह-मैत्री चक्रानुसार सूर्य, चन्द्र व गुरु के लिए यह **मित्र राशि** है। शुक्र और शनि के लिए यह सम राशि, तथा बुध व राहु के लिए शत्रुराशि मानी जाती है।

बृश्चिक राशि के अन्य पर्यायवाची नाम- द्विरेफ, मधुकर, अस्त्र, सरिसृत, कीट, अलि, सविष आदि। अंग्रेजी में इसे 'सकोर्पियो' (Scorpio) कहते हैं।

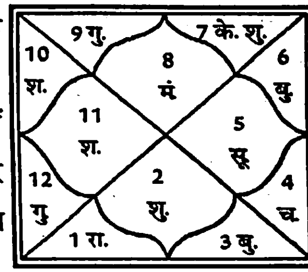
बृश्चिक राशि जल तत्त्व प्रधान, दीर्घ एवं शीर्षोदयी संज्ञक, स्थिर स्वभाव, दिवाबली, सम एवं स्त्री राशि, मूल संज्ञा, ब्राह्मण जाति किन्तु तमोगुणी प्रकृति, वश्य कीट संज्ञक, बिच्छु के समान आकृति वाली, सौम्य परन्तु कफ प्रकृति वाली

राशि है। जलीय राशि होने से बृश्चिक राशि वाले जातकों का वृष, कर्क, कन्या, मकर एवं मीन राशि के जातकों के साथ मैत्री सम्बन्ध अच्छे निभ जाते हैं।

स्वाभाविक गुण– निर्भीक, परिश्रमी, साहसी, मितव्ययी एवं दृढ़निश्चयी किन्तु स्वेच्छाचारी प्रकृति के होते हैं। ऐसा जातक स्पष्टवादी, स्वाभिमानी, व्यवहार कुशल, दृढ़ संकल्पशक्ति वाला और अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में उन्नति करने वाला होता है।

सूर्य बृश्चिक राशि पर मार्गशीर्ष मास (नवंबर–दिसम्बर) में लगभग 15 नवंबर से 15 दिसम्बर के मध्य प्रति वर्ष संचार करता है।

बृश्चिक लग्न में शुभाशुभ एवं योगकारक ग्रह



बृश्चिक लग्न कुण्डली में सूर्य व चन्द्र दोनों ग्रह **राजयोग कारक** होते हैं। इसके अतिरिक्त गुरु भी द्वितीयेश व पंचमेश होने से विशेष शुभ एवं योगकारक होता है।

मंगल लग्नेश व षष्ठेश होने से मिश्रित प्रभाव करेगा, जबकि **शनि व बुध** दोनों इस कुण्डली में प्रायः अशुभ फलप्रदायक माने जाते हैं। परन्तु हमारे अनुभवानुसार यह दोनों ग्रह स्थान व स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल करेंगे। राहु व केतु भी स्थान व अन्य ग्रहों के योग व दृष्टि अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं।

बृश्चिक लग्न-गुण/विशेषताएं, व्यवसाय/विवाहसुख आदि

शारीरिक गठन– बृश्चिक लग्न/राशि का स्वामी मंगल है। कुण्डली में यदि मंगल शुभ भावस्थ या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक देखने में सुन्दर आकृति, गेहुंआं रंग, पुष्ट एवं सुगठित शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होगा। आंखें चमकीली, बड़ी एवं कुछ लालिमा लिए हुए तथा कद सामान्य एवं लम्बा और जांघें व पिंडलियां गोल होती हैं। बृश्चिक जातक का चेहरा कुछ बड़ा एवं तेजस्वी, हाथ प्रायः सामान्य से अधिक लम्बे होंगे। जातक चलने में तेज गति, चुस्त एवं सतर्क होगा।

चारित्रिक विशेषताएं एवं स्वभाव– बृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक पराक्रमी, कुशाग्र बुद्धि, साहसी, परिश्रमी, स्पष्टवक्ता, उदारहृदय, उद्यमी एवं पुरुषार्थी होता है। ऐसा जातक सत्यप्रिय, ईमानदार परन्तु अपने उद्देश्य के प्रति सतर्क, संवेदनशील व आक्रामक प्रवृत्ति तथा अपने उद्यम एवं सामर्थ्य के बल पर ही जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। जातक कर्त्तव्यनिष्ठ, माता-पिता, भाई-बन्धुओं एवं अपने परिवार से विशेष प्रेम करने वाला होता है। बृश्चिक लग्न/राशि का स्वामी मंगल अग्नि राशि एवं स्थिर संज्ञक होने से जातक स्वाभिमानी, उच्चाभिलाषी, धैर्यवान, स्वेच्छाचारी, उच्च प्रतिष्ठित एवं निश्चयी प्रकृति का होता है। यदि कुण्डली में मंगल, गुरु एवं सूर्य शुभस्थ हों तो जातक की संकल्पशक्ति एवं आत्मिक शक्ति विशेष प्रबल होती है। जातक श्रेष्ठ एवं चतुर बुद्धि, न्यायप्रिय, आत्मविश्वासी, मन में जिस किसी कार्य-विशेष का संकल्प कर ले, उसे पूरा किए बिना चैन से नहीं बैठता। ऐसा जातक धर्मपरायण, परोपकारी, दयालु, निडर, स्वतन्त्र चिन्तन करने वाला परन्तु कई बार अपने क्रोध या स्वाभिमान के कारण जिद्द एवं हठ पर अडिग रहने से हानि उठाने वाला होता है। विलक्षण प्रतिभा के कारण सरलता से किसी अन्य व्यक्ति के प्रभाव के वश में नहीं आता। अपनी रूचियों एवं अरूचियों (पसन्द, नापसन्द) के सम्बन्ध में भी शीघ्रता से समझौता नहीं करते। यद्यपि बृश्चिक जातक जल तत्त्व की राशि होने से जातक कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी स्वयं को ढाल लेने में सक्षम होते हैं। सूक्ष्म बुद्धि होने के कारण बृश्चिक जातक रहस्यात्मक एवं गूढ़ विद्याओं जैसे धर्म, आध्यात्म, ज्योतिष, साहित्यिक, पौराणिक एवं काम शास्त्र में भी विशेष रूचि रखते हैं। जातक विलास प्रिय, कामुक प्रवृत्ति एवं विपरीत योनि के

(Opposite Sex) प्रति भी विशेष आकर्षण रखते हैं।

बृश्चिक जातक प्राय: सभी कार्य बड़े आत्म विश्वास के साथ करते हैं। इनका उत्साह एवं परिश्रम लक्ष्य प्राप्ति में सहायक बनते हैं। ये सब प्रकार की कठिनाइयों का सामना करने के लिए सदा तैयार बने रहते हैं तथा उन पर विजय भी प्राप्त कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य आदि ग्रहों के प्रभावस्वरूप बृश्चिक जातक में आत्म-विश्वास, आवेश से काम करने की प्रवृत्ति, साहस, संकल्प, उत्तेजना, स्वच्छन्द (स्वतंत्र) प्रकृति जैसे गुण प्रदान करते हैं। ऐसे जातक जिसे पसन्द करते हैं, पूरे हृदय से करते हैं तथा जिसे घृणा करते हैं, तो भी मन से करते हैं। वे अतिवादी होते हैं। बहुत शीघ्र आवेश में आ जाते हैं। जीवन के संग्राम में अपनी लड़ाई स्वयं लड़ना पसंद करते हैं। दूसरों का अनावश्यक हस्ताक्षेप कदापि पसन्द नहीं करते।

बृश्चिक जातकों में बिच्छू की भान्ति डंक मारने की प्रवृत्ति होती है। ब्राह्मण राशि होने के कारण किसी को अनावश्यक रूप से तंग नहीं करते हैं, परन्तु यदि कोई चोट या आघात पहुंचाए या विश्वासघात करे तो उसे आसानी से नहीं भूलते तथा पूरा प्रतिशोध लेने का प्रयास करते हैं। परन्तु शत्रु द्वारा हृदय से खेद प्रकट कर देने से क्षमाशील भी हो जाते हैं। बृश्चिक जातक विघ्न/बाधाओं से भी विचलित नहीं होते बल्कि विघ्न बाधाएं आ जाने पर अन्तिम समय तक संघर्ष करते रहते हैं।

यदि कुं. में चन्द्र-गुरु या चंद्र-मंगल-गुरु का शुभ योग हो तो जातक की बौद्धिक एवं अन्त: संवेदनशक्ति तथा अन्वेषण शक्ति अच्छी होती है। उनमें धर्म, यंत्र, ज्योतिष, मंत्र आदि शास्त्रों के प्रति विशेष रूचि होती है। तर्क-वितर्क करने एवं किसी भी समस्या के जड़ तक पहुंचने की क्षमता होती है। वह प्रत्येक कार्य को पूरी निष्ठा, जिम्मेदारी और कर्त्तव्य की भावना से करते हैं। सूर्य-गुरु का दृष्टि आदि सम्बन्ध हो, तो जातक विद्वान, अनेक भाषाओं का ज्ञाता तथा प्राध्यापन आदि के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 88

यदि कुण्डली में गुरु ,मंगल, शनि आदि ग्रह उच्चस्थ हों और लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि हो तो जातक स्वोपार्जित धन एवं भूमि, आवास, वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न तथा सुन्दर, सुशील स्त्री, संतान आदि सुखों से युक्त होगा।

बृश्चिक जातक को कुछ भय या रोब दिखाकर कोई काम करवा लेना अत्यन्त कठिन होता है। परन्तु प्यार के वशीभूत होकर उनसे कठिन काम भी करवाया जा सकता है। अपने दोस्त के प्रति पूरे ईमानदार एवं निष्ठावान रहते हैं। दोस्ती में अपना निजी स्वार्थ भी न्यौछावर करने को तैयार हो जाते हैं। बृश्चिक जातक या तो अति प्यार करते हैं या अति घृणा करते हैं। मध्य मार्गी कम देखे जाते हैं। बृश्चिक जातक अपने कार्य क्षेत्र में वैसे जीवन पर्यन्त कर्मठ एवं सक्रिय बने रहते हैं परन्तु जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में कठिन परिश्रम एवं संघर्ष अधिक रहता है।

यदि बृश्चिक लग्न में शनि, राहु आदि अशुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो, तो जातक असंयमी, झगड़ालू, कुविचारी, क्रोधी, गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला एवं कामुक एवं व्यसनी स्वभाव का होता है। ऐसे जातक को गम्भीर एवं क्लिष्ट रोगों का भी भय होता है।

स्वास्थ्य और रोग (Health and Diseases)- बाल्यावस्था को छोड़कर सामान्यत: बृश्चिक जातक बहुत कम बीमार या रोगग्रस्त होते हैं। यदि किसी कारणवश बीमार हो जाएं तो शीघ्र स्वस्थ हो जाते हैं। इनकी अस्वस्थता के प्रमुख कारणों में असंयमित खान-पान एवं अत्यधिक आवेश एवं विषय वासना व श्रम की अधिकता विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यदि बृश्चिक राशि अथवा लग्नेश मंगल राहु, शनि, शुक्र आदि शत्रु एवं पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को मूत्राशय एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी यौन रोग, पाचन प्रक्रिया में विकार, अण्डकोश की सूजन, मधुमेह, गुर्दे या पित्ताशय में पत्थरी, रक्त विकार, इसके अतिरिक्त बृश्चिक लग्न में छठी मेष राशि होने से बृश्चिक जातक को अनिद्रा, उत्तेजना, तनाव, मानसिक (Dipression) दबाव, नेत्र कष्ट, उच्च रक्तचाप व अन्य मस्तिष्क,पीठ एवं चर्मादि सम्बन्धी रोगों की भी सम्भावना होती है। उदाहरण हेतु देखें कुण्डली नं. 75- इस कुण्डली में लग्नेश एवं षष्ठेश मंगल पापाक्रान्त

होकर अष्टम भाव में शत्रु राशिगत होकर राहु द्वारा दृष्ट है। जिसका जातक को उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure) हुआ। राहु की दशा में ही जातक की मस्तिष्क आघात से आकाल मृत्यु हुई। चतुर्थ भाव अशुभ ग्रहों (बुध, राहु योग) एवं चतुर्थ राशि कर्क शनि द्वारा दृष्ट होने से जातक हृदय रोग तथा मधुमेह रोग से भी ग्रस्त रहा।

सावधान- बृश्चिक जातक को अत्यधिक मानसिक एवं शारीरिक श्रम, उद्विग्नता, उत्तेजना, अनियमितता एवं तामसिक भोजन आदि से परहेज करना चाहिए।

शिक्षा एवं कैरियर- जन्म कुण्डली में गुरु, मंगल, सूर्य, चन्द्रादि ग्रह शुभस्थ हों अथवा गुरु-सूर्य का या चन्द्र, गुरु-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध हों एवं च जातक को इन्हीं योग कारक ग्रहों में से किसी ग्रह की दशाऽन्तर्दशा भी चल रही हो, तो बृश्चिक लग्न का जातक/जातिका उच्च विद्या के क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त कर लेता है। यदि ग्रहों की स्थिति एवं परिस्थितिवश जातक को उच्च विद्या न भी प्राप्त हो सके तो भी बृश्चिक जातक को गुरु के कारण धार्मिक, पौराणिक, ज्योतिष आदि गुप्त विद्याओं तथा अन्य तकनीकी विद्याओं को जानने एवं सीखने की विशेष रूचि रहती है। पारम्परिक उच्च विद्या में किसी कारणवश विघ्न हों, तो भी सामान्य ज्ञान अच्छा होता है और भाषा पर अच्छा अधिकार होता है तथा जातक अपने कैरियर के प्रति विशेष सतर्क होते हैं।

यदि किसी कुं. में लग्न एवं कर्मेश सूर्य पर गुरु की शुभ दृष्टि हो तो जातक भाषा शास्त्री, अनेक भाषाओं का ज्ञान एवं उच्च प्रतिष्ठित प्राध्यापक (Professor) होता है। देखें उदा. कुं. नं. 88। यदि कुं. में सू.-बु.-गु. का योग हो तथा शनि भी शुभस्थ हो, तो जातक चार्टिड अकाऊंटैण्ट (C.A) होता है तथा सरकारी क्षेत्रों में भी अच्छा लाभ उठाता है, देखें उदा. कुं. नं. 77। यदि बृश्चिक कुं. में लग्नेश मंगल उच्चस्थ होकर तृतीय भाव में भाग्यस्थ गरु द्वारा दृष्ट हों, शनि भी स्वक्षेत्री या उच्चस्थ हो, तो जातक प्रिंटिंग उद्योग अथवा क्रय-विक्रय, निजी व्यवसाय द्वारा अच्छा धनार्जन करता है। देखें कुं. नं. 73

उच्चस्थ सूर्य पर गुरु की शुभ दृष्टि हो तो जातक/जातिका मैडीकल क्षेत्र (डाक्टर) में सफल होता है। देखें उदा. कुं. 81

*यदि कुं. में भाग्येश (चन्द्र) व लग्नेश (मंगल) का स्थान विपयर्य योग हो तथा तृतीयेश शनि द्वादशस्थ हो तो जातक का भाग्योदय विदेश में होता है, देखें उदाहरण कुं. नं. 76

*यदि लग्नेश मंगल दशम भाव में सूर्य से योग करता हो, तो जातक स्पोर्टस, सेना, पुलिस, योगादि में सफल होता है। देखें उदा. कं. नं. 86

व्यवसाय और आर्थिक स्थिति- बृश्चिक लग्न/राशि के जातक अत्यन्त पराक्रमी, परिश्रमी, बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी तथा अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क रहने के कारण व्यवसाय के किसी भी क्षेत्र में जहां परिश्रम, उत्साह एवं जोखिम के कार्य हों, वहां लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेते हैं।

जन्म कुण्डली में मंगल, सूर्य, गुरु, चन्द्र, शनि आदि ग्रह शुभस्थ हों अथवा उनमें परस्पर शुभ सम्बन्ध हों एवं इन्हीं ग्रहों में से किसी ग्रह की दशा-अन्तर्दशा चल रही हो तथा गोचर में भी इन्हीं में से शुभ ग्रहों का संचार चलता हो तो बृश्चिक जातक निम्नलिखित व्यवसायों में से (किसी एक में) अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। **जैसे-** चिकित्सा क्षेत्र में जैसे मैडीकल स्टोर (Chemist), डाक्टर, सर्जन, इंजीनियर, राजनीतिज्ञ, सेना, पुलिस अधिकारी, स्पोर्ट्स, प्रोफैसर (प्राध्यापक), ज्योतिषी, अनुसंधानकर्त्ता, प्रिंटिंग उद्योग(मुद्रक), राजनेता, कूटनीतिज्ञ, बाक्सिंग, जासूस, नेवी, लोहे, चमड़े या रबड़ उद्योग से सम्बन्धित व्यवसाय, वकालत, होटल एवं रैस्टोरैण्ट एवं खानपान सम्बन्धी (Fast Food), स्कूल आदि शिक्षा संस्थान, उच्चप्रतिष्ठित सरकारी अफसर, धार्मिक संस्था के अग्रणी, ऊनी वस्त्र, ठेकेदार, प्रबन्ध एवं सुरक्षात्मक प्रबन्धन से सम्बन्धित व्यवसाय, ईंट, पत्थर, रबड़, पेंट व रंग, पाईप फिटिंग, बिल्डिंग-निर्माण सम्बन्धी सामग्री, क्रय-विक्रय (Trading), विदेश गमन, बिजली, अकाऊंट्स, योग, कम्प्यूटर विशेषज्ञ एवं बौद्धिक कार्य सम्बन्धी व्यवसायों में विशेष सफल हो सकते हैं।

आध्यात्मिक पक्ष- बृश्चिक लग्न/राशि से काल-पुरुष के गुप्त अंगों की विवेचना की जाती है। यहीं पर मूलाधार चक्र भी है। इसी चक्र में अवस्थित कुण्डलिनी शक्ति का जागरण कर योग विद्या से मस्तिष्क में स्थित ब्रह्म चक्र से संयोजित किया जाता है, जिसे अध्यात्म की भाषा में आत्म साक्षात्कार कहा जाता है। मूलाधार चक्र में अमृत तत्त्व का निवास भी माना जाता है। इसी कारण बृश्चिक लग्न/राशि के जातकों में कामुक एवं वासनात्मक प्रवृत्तियों के साथ-साथ आध्यात्मिक एवं दैविक प्रवृत्तियों की प्रबलता भी पाई जाती है।

आर्थिक स्थिति- बृश्चिक जातक की जन्म कुण्डली में यदि गुरु, चन्द्र, सूर्य, शनि आदि ग्रहों की स्थिति अच्छी हो तथा इन्हीं शुभ एवं योगकारक ग्रहों में से किसी ग्रह की दशा या अन्तर्दशा चल रही हो, तो जातक की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। बृश्चिक जातक अपनी अदम्य ऊर्जा, परिश्रम और दृढ़ इच्छा शक्ति से निर्वाह योग्य आय के साधन बना ही लेता है। यदि शुक्र भी शुभस्थ हो, तो व्यवसाय एवं धनार्जन व संचय में पत्नी का भी सक्रिय सहयोग होता है। जातक भूमि, आवास, व्यवसाय, वाहन एवं सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होता है। बृश्चिक जातक बाधाओं का साहस पूर्वक सामना करते हैं तथा ऐसे जातक प्रायः किफायतसार एवं सोच समझ कर खर्च करने वाले होते हैं। जातक आडम्बर, दिखावा एवं प्रदर्शन व फिजूल खर्ची से यथासंभव परहेज करते हैं। परन्तु अपने परिवार के हित की दृष्टि से उदारता से व्यय करते हैं। यदि शुक्र छटे, अष्टम या एकादश भाव में भौम, राहु, सूर्यादि ग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो जातक असंयमी, वस्त्रों, सौन्दर्य प्रसाधनों एवं मदिरा आदि व्यसनों पर वृथा खर्च करने वाला होगा।

प्रेम एवं वैवाहिक सुख- बृश्चिक जातक/-जातिका प्रेम और रोमांस के सम्बन्ध में गम्भीर, स्पष्टवादी एवं ईमानदार होते हैं। प्रेमाकर्षण के बारे में भी जल्दबाजी नहीं करते, अपितु भावात्मक एवं बौद्धिक साम्यता को देखकर ही प्रेम प्रकट कर पाते हैं। परन्तु जब एक बार किसी से प्रेम हो जाए तो पूरी गहराई एवं निष्ठा से निभाते हैं। शुक्र शुभ होने की स्थिति में विवाह के उपरान्त अपनी पत्नी को जीवन की सब सुख-सुविधाएं प्रदान करते हैं। बृश्चिक जातक की कुंडली में मंगल एवं शुक्र आदि शुभस्थ हों तो जातक की पत्नी सुशील, ईमानदार, सन्तान आदि सुखों से युक्त तथा पति को प्रिय होगी। यदि भौम, शुक्र, द्वितीय, सप्तम, अष्टम या द्वादशस्थ हों तो दाम्पत्य जीवन में वैमनस्य होगा।

अनुकूल राशि मित्रता- बृश्चिक जातक को सामान्य जीवन में, व्यवसाय के क्षेत्र में एवं वैवाहिक क्षेत्र में निम्न राशि वालों के साथ सम्बन्ध बनाने शुभ एवं लाभप्रद रहेंगे। परन्तु विवाह सम्बन्धों में अपने भावी जीवन साथी की राशि मैत्री के अतिरिक्त नक्षत्रों के गुण मिलान तथा कुण्डली में मंगलीक दोष आदि का विचार भी कर लेना चाहिए।

बृश्चिक जातक को मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, धनु व मीन राशि वाले जातकों के साथ विवाह, व्यवसाय आदि सम्बन्ध लाभप्रद होगा। बृश्चिक व मकर राशि वालों के साथ मध्यम तथा मिथुन, तुला व कुम्भ राशि वालों के साथ सम्बन्ध विशेष लाभप्रद नहीं रहेंगे।

बृश्चिक लग्न की कन्या/जातिका (Scorpio born girl)



बृश्चिक लग्न (राशि) की कन्या सुन्दर एवं लम्बे मुखाकृति वाली, पुष्ट एवं संतुलित शरीर, लम्बे हाथ, बड़ी एवं चमकीली आंखें, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली होगी। चलने में तेज, चुस्त एवं शीघ्रता लिए होगी।

स्वभावगत विशेषताएं-

नारी भवेद् बृश्चिक लग्न जाता सुरुप गात्रा नयनाभिरामा।
सुपुण्यशीला च पतिव्रता च गुणाधिकासत्यपरा सदैव॥

अर्थात् बृश्चिक लग्न में उत्पन्न कन्या श्रेष्ठ स्वरूप वाली, सुन्दर व आकर्षक नेत्रों वाली, सत्यपरायणा, शुभ कर्म करने वाली, अत्यधिक गुणों से समन्वित एवं अपने पतिव्रत धर्म का पालन

करने वाली होती है।

इस लग्न/राशि का स्वामी मंगल होने से बृश्चिक जातिका परिश्रमी, साहसी, कुशाग्र बुद्धि, उद्यमी, स्पष्टवादी, कर्त्तव्य-परायणा, ईमानदार, उदारहृदया, परोपकारी, आत्मविश्वासी, निडर, गुणी एवं परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने में कुशला होती है। यदि जन्मकुण्डली में भाग्येश चन्द्र व पंचमेश गुरु व सूर्य भी शुभस्थ हों तो जातिका उच्चशिक्षित, स्वाभिमानिनी, दृढ़निश्चियी अर्थात् मन में जो एक बार संकल्प कर लेती है उसे हर स्थिति में पूरा करने का प्रयास करती हैं। जातिका माता-पिता के लिए भाग्यवान्, मिलनसार, परोपकारी, अधिकारपूर्ण वाणी, आतिथ्य सत्कार करने में कुशल, व्यवहार कुशला तथा अपने उद्यम पर भरोसा करने वाली होगी। अपनी प्रतिष्ठा (Prestige) का विशेष ध्यान रखेगी। स्वाभिमानी होते हुए भी अनुकूल आचरण करने वाली, चरित्रवान, नैतिक मूल्यों का पालन करने वाली, उच्च संस्कारों से युक्त, कुछ हठी प्रकृति तथा विशेष गुणी होगी। अपने गुणों के कारण परिवार एवं समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होगी। चंद्र-शुक्र के प्रभाव से जातिका भ्रमणप्रिया होगी। परन्तु इसमें अवगुण भी संभव हैं। अशुभ मंगल व शनि के प्रभावस्वरूप जातिका शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाली, क्रोधी, जिद्दी (हठी), स्वार्थी एवं कुछ आक्रामक एवं मूडी प्रकृति की होगी। अपने विरुद्ध किसी प्रकार की आलोचना एवं नुक्ताचीनी सहन न करने वाली तथा स्वार्थी प्रकृति की होगी। इसके अतिरिक्त अशुभ ग्रहों के प्रभाव से चिड़चिड़ापन, ईर्ष्या, शंका, दोष दर्शन आदि अवगुण भी आ सकते हैं।

शिक्षा एवं कैरियर (Career)- बृश्चिक जातिका कुशाग्र बुद्धि, परिश्रमी एवं क्रियात्मक प्रकृति की होने से अपनी शिक्षा एवं कैरियर के प्रति विशेष गम्भीर एवं सतर्क होगी। कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, गुरु आदि ग्रह शुभस्थ (केन्द्र-त्रिकोण) में हों तो जातिका चिकित्सा क्षेत्र, विज्ञान, अध्यापन (शिक्षा), वकालत, कानून, सरकारी विभाग, अकाऊंट्स, इंजीनियरिंग, रसायन, ड्रैस डिज़ाइनिंग, (Dress Designing), ब्यूटी पार्लर, पुलिस, कम्पयूटर डिज़ाईनिंग, घरेलू साज सज्जा (Interior Dec.), आफिस कलर्क एवं कम्पनी प्रबन्धक, टूरिज़म आदि कार्य जिसमें शारीरिक श्रम के साथ बौद्धिक योग्यता का भी उपयोग हो।

आर्थिक स्थिति- के लिए बृश्चिक पुरुष जातक के फल का अध्ययन करें।

स्वास्थ्य एवं रोग- बृश्चिक कन्या/जातिका का स्वास्थ्य बाह्य तौर पर प्रायः अच्छा ही रहता है। छोटी मोटी बिमारी को यह स्वीकार ही नहीं करतीं। परन्तु कुण्डली में मंगल, चन्द्र, गुरु, शनि आदि ग्रहों का अशुभ प्रभाव हो तो जातिका को रक्त विकार, जननेन्द्रिय सम्बन्धी गुप्त एवं यौन रोग, अनियमित मासिक धर्म, फ़ोड़े-फुंसी, पत्थरी, नज़ला-जुकाम, उदर विकार, शिर पीड़ा, नेत्र आदि रोगों की सम्भावना होती है।

सावधानी- बृश्चिक जातिका को अत्याधिक प्रतिक्रियावादी नहीं होना चाहिए। क्रोध और उतावलेपन से भी परहेज करना चाहिए तथा अत्याधिक हठ, जिद्द और कटु आलोचना के स्वभाव को त्याग कर जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित भोजन, व्यायाम तथा ईश्वर भक्ति की ओर ध्यान देना चाहिए।

प्रेम और वैवाहिक सुख- बृश्चिक पुरुष जातक की भान्ति बृश्चिक जातिका भी प्रेम और रोमांस के सम्बन्ध में अपने पार्टनर के प्रति अत्यन्त गम्भीर, निष्ठावान एवं ईमानदार होती हैं। अन्य कामों की भान्ति प्रेम में जल्दबाजी नहीं करतीं, बल्कि पार्टनर का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं बौद्धिक स्तर देख कर ही प्रेमाकर्षण में समर्पित होती हैं। इनकी कुण्डली में मंगल, गुरु, शुक्र एवं चन्द्र की स्थिति अच्छी हो तो जातिका को उच्चशिक्षित, सुन्दर व्यक्तित्व, सम्पन्न, श्रेष्ठ गुणों से युक्त पति की प्राप्ति होती है। विवाह के उपरान्त दाम्पत्य जीवन सन्तान आदि सुखों एवं सुख साधनों से सम्पन्न होगा। तथा जातिका स्वयं भी पति के परिवारिक जीवन में सब प्रकार से सहायिका होती है। यदि कुण्डली में सप्तम भाव एवं सप्तमेश ग्रह शनि, सूर्य, केतु आदि क्रूर एवं अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातिका वैवाहिक जीवन में दुखी, असंतुष्ट एवं परेशान रहती है।

बृश्चिक जातिका को अनुकूल साथी का चुनाव- बृश्चिक कन्या/जातिका को मेष, वृष, सिंह, कन्या, बृश्चिक, मकर व मीन लग्न/राशि वालों के साथ मैत्री एवं दाम्पत्य सम्बन्ध शुभ एवं लाभप्रद होंगे। तथापि सुखद

वैवाहिक सम्बन्ध करने से पूर्व जन्म पत्रियों में पारस्परिक गुण-मिलान अवश्य करवा लेना चाहिए।

दशा-अन्तर दशाओं के फल

सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर दशा आदि काल में शुभाशुभ फल देते हैं। जो ग्रह कुण्डली में उच्च राशिस्थ या मित्र राशिस्थ हों तथा महादशा व अन्तरदशा स्वामी ग्रह परस्पर छटे, सातवें, अष्टम या द्वादश स्थिति में न होकर परस्पर पंचम, नवम, दशम, तृतीय या एकादश स्थिति में हों, वह ग्रह अपनी अन्तर्दशा में धन लाभ, सोची हुई योजनाओं में सिद्धि एवं सौभाग्य में वृद्धि करते हैं। तथा जो ग्रह नीच, शत्रु राशि या अस्त आदि अवस्था में हों वह अपनी दशा में धन हानि, रोग एवं कार्यों में अड़चनें या असफलता प्रदान करते हैं।

बृश्चिक जातक की कुण्डली में (केन्द्र त्रिकोणस्थ शुभ हों तो) सूर्य, चन्द्र, गुरु अपनी दशाऽन्तर्दशा में प्राय: शुभ फल प्रदान करते हैं। सूर्य, चन्द्र की दशाऽन्तर्दशा में व्यवसाय में धन लाभ व उन्नति, भाग्य में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ते हैं। **शुभस्थ गुरु** की दशाऽन्तर्दशा चले तो जातक को परिवारिक सुख की प्राप्ति, उच्च विद्या में सफलता, धन लाभ, सन्तान सुख एवं धर्म-कर्म में अभिरुचि होती है। **मंगल** की दशा में अड़चनों एवं बाधाओं के बाद कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है। कुण्डली में **शनि** शुभस्थ या स्वक्षेत्री हो तो जातक को भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो, **चन्द्र-शुक्र** की दशाओं में स्त्री सुख, धन लाभ अल्प, परन्तु मनोरंजन एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होता है। राहु या **बुध** की दशा में बनते कार्यों में अड़चनें, मन में चंचलता, विद्या में रुकावटें, अपव्यय एवं रोग आदि का भय होता है। **राहु** ३, ४, ६, ८, ११ भावों में तथा केतु २, ५, ९, १०, १२वें भावों में हो जातक को अपनी दशऽन्तर्दशा में अचानक धन लाभ के अवसर तथा कार्यों में विघ्नों के बाद सफलता प्रदान करते हैं। जबकि राहु, केतु (बृश्चिक लग्न के) अन्य भावों में वृथा-दौड़धूप, निकट बन्धुओं से तकरार, व्यवसाय में विघ्न व अपव्यय (वृथा खर्च) आदि अशुभ फल देते हैं।

बृश्चिक लग्न सम्बन्धी कुछ उपयोगी उपाय

शुभ रंग (Favourable Colours)- लाल, गुलाबी, पीला, श्वेत, हल्का नीला, संगतरी, भूरा।

अशुभ रंग - गहरा नीला, हरा, काला

भाग्यशाली नग (रत्न)- सोने अथवा ताम्बे की अंगूठी में मूंगा सव आठ रति (या ग्राम) का मंगलवार को गंगाजल में शक्कर एवं शुद्ध जल मिश्रित डालकर निम्न मंत्र पढ़ते हुए कम से कम आठ बार डूबोएं (Dip) करें-

मंत्र-ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं, स: भौमाय नम: ॥

मूंगा नग स्वास्थ्य और मान-प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी शुभ रहेगा।

☆**उच्च विद्या** में सफलता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पीले वर्ण का तर्जनी अंगुली में वीरवार को धारण करें। धारण करने से पूर्व मूंगे की भान्ति ही गंगा जल मिश्रित जल में शुद्ध कर लें।

पुखराज धारण के लिए मंत्र-ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम: ॥ पुखराज को वीरवार वाले दिन प्रात: गुरु के नक्षत्रों (विशाखा, पुनर्वसु, पू. भा.) तथा पुष्य नक्षत्र एवं (रिक्ता तिथि रहित) शुभ तिथियों में धारण करना शुभ होता है। अधिक जानकारी के लिए पंचांग दिवाकर का अध्ययन करें।

☆**व्यवसाय**- में तरक्की और लाभ के लिए माणक (Ruby) सुवर्ण की अंगूठी में रविवार को धारण कर सकते हैं।

☆**अनुकूल दिन (Favourable Days)** - रविवार, सोमवार, मंगल, गुरुवार एवं शुक्रवार शुभ एवं लाभप्रद रहेंगे जबकि बुधवार एवं शनिवार इस राशि के लिए शुभ नहीं रहेंगे।

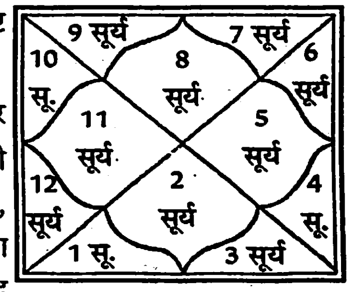
मंगलवार का व्रत (Fast) रखना तथा गौओं को मीठी-चपातियां डालना शुभ एवं कल्याणकारी होगा।

शुभ अंक- 3, 9, 4, 1, 2, एवं 7 क्रमानुसार भाग्यशाली अंक माने जाते हैं। जबकि 5, 6 और 8 अंक क्रमश: कष्टकारी माने जाते हैं।

भाग्योन्नतिकारक वर्ष- बृश्चिक जातक की आयु के 25, 33, 35, 37 एवं 42वां वर्ष विशेष भाग्योन्नतिकारक होंगे।

बृश्चिक लग्नः द्वादश भावों में सूर्य का फल

बृश्चिक लग्ने सूर्य फल



नोटः- प्रत्येक भाव पर सूर्यादि ग्रहों का फल निर्णय करते समय कुण्डली में अन्य ग्रहो की स्थिति, योग, दृष्टि आदि की भी समीक्षा कर लें, तो ग्रह फल अधिक स्पष्ट प्रकट होंगे। बृश्चिक कुंडली में सूर्य व्यवसाय एवं पिता का कारक होता है।

प्रथम भाव-में मित्र बृश्चिक राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, सुन्दर रूप किन्तु कछ लालिमा लिए गेहुंआ वर्ण होगा। ऐसा जातक पुष्ट शरीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व, अधिकार की भावना, साहसी, उच्चाभिलाषी, स्वतंत्र प्रकृति, स्वावलम्बी, स्वाभिमानी एवं अच्छे कुल में उत्पन्न होने वाला होगा। राहु आदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो प्रथमावस्था में ज्वरादि से शरीर कष्ट, आंखों में रोग, अग्नि, हथियार आदि से भय, शिर दर्द, कम केश, शीघ्र क्रोधित होने वाला स्वभाव होगा। यहां सूर्य सप्तम भावस्थ वृष राशि को शत्रु दृष्टि से देखने से स्त्री सुख में कुछ कमी या परिवारिक परेशानियों का सामना रहता है। सूर्य गुरु आदि शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो जातक बुद्धिमान, विद्वान, कार्य/व्यवसाय में पितृपक्ष या उच्च प्रतिष्ठित लोगों अथवा सरकार द्वारा विशेष लाभान्वित रहता है। गुरु शुभस्थ हो तो जातक चिकित्सा एवं कला के क्षेत्र से सम्बन्धित रहता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 85। सूर्य प्रथम भाव का कारक होने से अन्य शुभ ग्रहों (गुरु, मंगल आदि) के योग से ही विशेष शुभ फल देने में समर्थ होता है।

द्वितीय भाव-में मित्र धनु राशि पर सूर्य होने से जातक भाग्यशाली, उच्चप्रतिष्ठित, तर्क-वितर्क करने में कुशल, क्रय-विक्रय आदि अनेक साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला, धन सम्पत्ति, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त, पिता एवं सरकारी क्षेत्रों से लाभ प्राप्त करने वाला, दानी, परोपकारी, माता-पिता एवं बड़ों का आदर करने वाला, अध्ययनशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति, स्पष्टवादी एवं कभी-कभी कटु वाणी का प्रयोग करने वाला होता है। यदि राहु, शनि आदि अशुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो जातक नेत्र एवं मुख रोगी, धन का अपव्यय एवं परिवारिक परेशानियां अधिक होंगी। सूर्य गुरु से युक्त या दृष्ट होने से जातक उच्चशिक्षित, वाहन, स्त्री, सन्तान आदि सुखों से युक्त एवं धर्म परायण होगा। ऐसा जातक उच्चप्रतिष्ठित अधिकारी, धर्म गुरु, प्राध्यापक या जज आदि भी हो सकता है।

तृतीय भाव-में मकर राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, पुरुषार्थी, भ्रमणशील, **भाई**-बहनों के कारण कभी परेशानी उठाने वाला, किन्तु जातक धैर्यवान एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होता है। कार्य-व्यवसाय के क्षेत्र में पिता से अल्प लाभ परन्तु बहुत कठिन परिस्थितियों एवं संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त हो। ऐसा जातक अध्ययनशील, मन्त्र, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों की ओर रूचि रखने वाला होगा तथा निजी पुरुषार्थ एवं पराक्रम से भाग्य में उन्नति व प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। देखें उदा. कुं. नं. 78 तथा 84

चतुर्थ भाव-में कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विघ्न/बाधाओं के बावजूद व्यवसाय में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। पितृ पक्ष से भी कुछ सहायता की सम्भावना होती है। स्वयं पिता के लिए सहायक, मातृ कष्ट या माता के सुख में कमी रहती है। भाग्य में अनेक परिवर्तन व उतार चढ़ाव आते रहते हैं। निजी मकान, संतान, भूमि, वाहन आदि सुख भी अड़चनों के बाद प्राप्त होते हैं। गुरु शुभस्थ हो तो जातक को उच्च विद्या, स्त्री, सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। धर्म, ज्योतिष आदि विषयों में भी रूचि होती है। विदेश गमन की भी सम्भावनाएं होंगी। यदि गुरु अशुभ हो तो जातक को उपरोक्त सुखों में कमी होंगी। देखें उदा. कुण्डली नं. 82।

पंचम भाव-में मान राशि पर सूर्य होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, नेक दिल, उच्चाधिकारी या उच्च प्रतिष्ठित, धनी मित्रों से युक्त परन्तु शीघ्र उत्तेजित हो जाने का स्वभाव हो, स्पष्टवादी, उदार, विघ्न/बाधाओं के बाद उच्च विद्या प्राप्ति, अल्प संतान या सन्तान के सम्बन्ध में चिन्तनशील, जीवन के प्रारम्भिक अवस्था में कार्य/व्यवसाय में विशेष अड़चनें परन्तु

ऐसा जातक अपनी योग्यता से निर्वाह योग्य आय के साधन बना ही लेता है। ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी विशेष रूचि होती है। पिता एवं सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित, लाटरी आदि से अकस्मात् धन लाभ की भी संभावना। यदि सूर्य राहु, शनि आदि अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को हृदय पीड़ा की सम्भावना रहे। देखें कुं. नं. 75

षष्ठ भाव-में मेष (उच्च) राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक उद्यमी, पराक्रमी, परिश्रमी, बुद्धिमान, उच्चाकांक्षी होता है। अड़चनों के बावजूद उच्च विद्या प्राप्त, परन्तु कार्य/व्यवसाय में बार-बार विघ्नों के साथ धनार्जन (आय) के साधन बनते हैं। व्यवसाय में उच्च एवं पर्याप्त सम्भावनाओं के बावजूद जातक उनका विशेष लाभ नहीं उठा पाता। प्रबल शत्रु होने पर भी जातक उन पर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक विदेश में विशेष तौर पर सफल हो पाता है। सूर्य के साथ गुरु हो तो जातक चिकित्सा क्षेत्र में सफल होता है यदि बुध भी हो तो जातक वकालत, कामर्स, ज्योतिष, चार्टेड अकाऊंट्स आदि के क्षेत्र में विशेष सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 77

सप्तम भाव-में वृष राशि पर सूर्य होने से जातक का प्रभावशाली व्यक्तित्व, शिक्षित, अध्ययनशील, किन्तु कुछ उत्तेजित स्वभाव का होता है। घरेलू परिस्थितियों में भी परेशानियों का सामना अधिक रहता है। जातक उच्चाधिकारी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। व्यवसाय में संघर्ष अधिक तथा आशानूकूल लाभ नहीं हो पाता। विवाह में अड़चनें होती हैं अथवा वैवाहिक जीवन में वैमनस्य एवं तनाव के हालात होते हैं। स्त्री की कुण्डली में सप्तम सूर्य होना विशेषकर शुभ नहीं माना जाता (जातक चंद्रिका)

अष्टम भाव-में मिथुन राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी एवं परिश्रमी परन्तु अस्थिर स्वभाव का होता है। कार्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना रहता है। जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष संघर्षपूर्ण होता है। घरेलू परिस्थितियां भी कुछ तनावपूर्ण रहती हैं। यद्यपि जातक गुप्त युक्तियों से प्रयास करके निर्वाह योग्य आय के साधन बना ही लेता है। गुरु, शुक्र, बुधादि का योग या दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो, तो जातक का विदेश में भाग्योदय होता है। देखें उदा. कुं. नं. 76। यदि सूर्य शनि, राहु आदि ग्रहों से युक्त हो तो काम-काज में विघ्न-बाधाएं धन का अपव्यय तथा पैतृक सुखों में कमी आती है तथा शरीर कष्ट होता है।

नवम भाव-में मित्र राशि कर्क पर सूर्य के प्रभाव से जातक उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, पिता एवं सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित होने वाला, परन्तु सांसारिक कार्यों पर अत्यधिक खर्च करने वाला होता है। व्यवसाय आदि में विघ्न/बाधाओं के बाद ही सफलता प्राप्त होती है। भ्रातृ सुख में कमी। भाई-बहन होने पर भी उनसे विशेष सुख नहीं हो पाता। यहां सूर्य भाग्य स्थान पर जलराशि (कर्क) में होने से विदेश में भी भाग्योन्नति होने की विशेष सम्भावनाएं होती हैं। ध्यान रहे, सूर्य इस भाव का कारक होने से भौम, गुरु आदि शुभ ग्रहों के संयोग से ही शुभ फलप्रद होता है।

दशम भाव-में स्वगृही सिंह राशि में सूर्य होने से जातक उच्च प्रतिष्ठित, शिक्षित, विद्वान, पराक्रमी, उद्यमी, कुशल व्यवसायी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व होगा। अत्यन्त संघर्ष के बाद व्यवसाय में लाभ व सफलता मिलती है। पैतृक सम्पदा तथा धन, वाहन एवं सन्तान आदि सुख भी प्राप्त होते हैं। यदि मंगल, गुरु, चंद्र आदि ग्रह भी शुभस्थ हों, तो जातक को सेना, पुलिस, मैडीकल, आबकारी, वकालत, न्यायाधीश, राजनीति एवं प्रशासनिक आदि क्षेत्रों में विशोष सफल होने के योग होंगे। यद्यपि सिंह का सूर्य जातक को राजसी प्रवृत्ति प्रदान करता है परन्तु अपने कार्य क्षेत्र में अप्रत्याशित उन्नति के अवसर प्राप्त करने वाला एवं उच्चस्तरीय जीवन जीने वाला होता है। जातक भूमि, सन्तान, वाहन आदि सुखों से युक्त परन्तु मातृ सुख में कुछ कमी होती है। ऐसे जातक को पर्वतीय स्थलों पर जाने का विशेष शौक होता है।

नोटः सूर्य इस भाव का कारक होने से अकेला विशेष फल नहीं दे पाता, यदि यहां पर गुरु, मंगल आदि ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो ही विशेष धनलाभप्रद होता है। देखें उदा. कुं. नं. 83

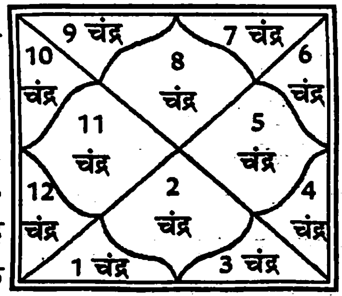
एकादश भाव-में मित्र ग्रह की कन्या राशि पर सूर्य की स्थिति होने से जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित,

विचारशील, महत्त्वाकांशी, निजी पुरुषार्थ एवं स्वप्रयासों से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, यद्यपि पैतृक पक्ष एवं उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से भी लाभान्वित होता है। गुरु व शुक्र शुभस्थ हों तो जातक विवाह विशेषकर सन्तान उत्पत्ति के बाद विशेष तरक्की करता है, परन्तु भाई का सुख कम मिलता है। जातक स्वयं गुणवान् तथा उसे गायन, संगीत, मंत्र, ज्योतिष, नीति-धर्मादि गूढ़ विषयों का शौक होता है। सामान्यत: जातक सुखी साधन सम्पन्न एवं दीर्घायु होता है। आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक होते हैं।

द्वादश भाव-में नीच राशि तुला में सूर्य होने से जातक को व्यवसाय के सम्बन्ध में आरम्भिक जीवन में संघर्ष अधिक रहता है। सामान्य जीवन में भी उतार-चढ़ाव अधिक रहता है। पिता को कष्ट अथवा पितृ सुख में कमी रहे। व्यवसाय के सम्बन्ध में भी अस्थिरता एवं परेशानियों का सामना रहता है, जातक जीवनयापन योग्य आय के साधन बना ही लेता है, तथापि आय की अपेक्षा धन के खर्च अधिक होते हैं। वृथा भ्रमण एवं आकस्मिक धन हानि की संभावना रहे। व्यवसाय में अनेक परिवर्तनों के पश्चात् ही ठहराव आ पाता है। ऐसे जातक को नेत्र कष्ट, शिरपीड़ा व भागदौड़ अधिक रहती है। कुण्डली में गुरु, मंगल एवं शनि, शुक्र आदि ग्रह शुभस्थ हों, तो जातक पराक्रमी हो तथा उसको भूमि, आवास, अच्छी स्त्री, संतान एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति भी होती है। देखें उदा० कुण्डली नं. 74 एवं 80

बृश्चिक लग्न-द्वादश भावों में चन्द्रमा का फल

बृश्चिक लग्ने चन्द्र फल



नोट- इस लग्न में चन्द्र भाग्येश होने से विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है। बारह भावों में चन्द्र के फल का निर्णय करते समय उस पर अन्य ग्रहों के योग, दृष्टि आदि का भी विवेचन करने से फलित में और अधिक स्पष्टता एवं सूक्ष्मता आ जाएगी। इसके अतिरिक्त क्षीण चन्द्रमा (कृष्णपक्ष की एका. से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक) भी पूर्णत: शुभ फल नहीं प्रदान करता।

प्रथम भाव- में बृश्चिक राशि (नीच) पर भाग्येश होकर चन्द्र का होना, प्रारम्भिक अवस्था में जातक का स्वास्थ्य कुछ नर्म रहता है। परन्तु यदि चन्द्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की आयु वृद्धि के साथ-साथ, स्वास्थ्य में सुधार होता है। जातक गुणी, बुद्धिमान परन्तु कठिनाइयों के साथ उच्च विद्या प्राप्त कर लेता है। व्यवसाय में विघ्न-बाधाओं के पश्चात् सफलता मिलती है। मानसिकता तनाव व आर्थिक उलझनें बनी रहती हैं। पत्नी सुन्दर, सुशील एवं गृह कार्यों में सर्व प्रकार से सहायिका होगी।

द्वितीय भाव- में धनु राशि में चन्द्र होने से जातक मधुरभाषी, सुन्दर मुख एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, संवेदनशील, भाग्यशाली, परिवारिक एवं भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त होगा। जातक शिक्षित, विद्वान, धनी, एवं पिता से धन प्राप्त करने के अतिरिक्त स्वयं भी अनेक युक्तियों से धनार्जन करने वाला होता है। चन्द्र की अष्टम भाव पर दृष्टि होने से विदेश यात्रा की भी सम्भावना होगी। जातक को संगीत, कला, ज्योतिष, धर्म आदि विषयों में भी रूचि होगी। 32वें वर्ष भाग्य में लाभ व उन्नति के विशेष चांस बनते हैं।

तृतीय भाव- में मकर राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक मृदुभाषी, मिलनसार, बुद्धिमान, धर्म के प्रति आस्था रखने वाला, भ्रमणशील होगा। जातक भाग्यशाली, स्वावलम्बी, संगीत, कला एवं साहित्य के प्रति रूचि रखने वाला होता है। अध्ययनशील प्रकृति, ऐसे जातक की मानसिक शक्ति एवं कल्पनाशक्ति अच्छी होती है। भाई बहिनों का सुख अच्छा होता है, विशेषकर बहिनों का। आरम्भिक जीवन में व्यवसाय के सम्बन्ध में भागदौड़ एवं यात्राएं अधिक होती हैं। 33 वर्ष की आयु के बाद भाग्य में विशेष उन्नति होती है। देखें उदा. कुं. नं. 83। जातक को पत्रकारिता, लेखन, सम्पादन,

प्रतिनिधित्व, वकालत, सेल्ज़मैन, क्रय-विक्रय आदि कार्यों में सफलता मिलने के विशेष योग हों।

चतुर्थ भाव-में कुम्भ राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का प्रारम्भिक जीवन कठिन एवं संघर्षपूर्ण रहता है। माता को कष्ट, परन्तु जातक माता-पिता के प्रति विशेष श्रद्धा भाव रखने वाला एवं लाभान्वित, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो परन्तु जातक को व्यवसाय में अति कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। सरकारी क्षेत्रों से लाभ, यदि चन्द्र अशुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो जीवन 32 वर्ष की आयु तक असंतुष्ट एवं तनावपूर्ण रहता है। यदि गुरु आदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो माता-पिता की विशेष सहायता प्राप्त रहती है। पत्नी या पति भी नेक, ज्योतिष आदि विद्या में कुशल एवं सर्व प्रकार से सहायक होता है। देखें उदा. कुं. नं. 79। चन्द्र इस भाव का कारक होने से अन्य शुभ ग्रह गुरु ,भौम के संयोग से ही अच्छा फल प्रदान करता है।

पंचम भाव-में मीन राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, विद्वान, भाग्यशाली, प्रियभाषी, ईश्वर व धर्म के प्रति श्रद्धा भाव रखने वाला, ज्योतिष, संगीत, कला, मंत्र आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, जातक कल्पनाशील एवं नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल तथा जातक अपने बुद्धिचातुर्य से धनोपार्जन करने वाला, धर्म, नीति, मन्त्र एवं ज्योतिष आदि विषयों में रूचि रखने वाला होगा। देखें उदा. कुं. नं. 84

षष्ठ भाव-में मेष राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक तीक्ष्ण बुद्धि वाला एवं चंचल स्वभाव परन्तु गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। परन्तु जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय के सम्बन्ध में विशेष उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष रहते हैं। शत्रुओं से विग्रह एवं स्पर्धा के कारण मानसिक तनाव एवं परेशानियों का भी सामना होता है। आकस्मिक धन के खर्च भी अधिक होते हैं। मातृ या स्त्री कष्ट, स्नायु दुर्बलता एवं उदर विकार एवं व्यवसायिक परेशानियां अधिक रहती हैं। यदि कुण्डली में चन्द्र-मंगल का स्थान विपर्यय योग हो एवं शनि उच्चस्थ हो तो जातक का भाग्योदय विदेश में होता है। देखें उदा. कुं. नं. 76 एवं 74

सप्तम भाव-में वृष राशि पर चन्द्रमा होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला सुन्दर मुख, भाग्यशाली, उच्चाभिलाषी, उच्च तकनीकि विद्या प्राप्त, बाल्यकाल में अस्वस्थ शरीर, परन्तु विवाह के पश्चात् भाग्य एवं व्यवसाय में अच्छा लाभ व उन्नति प्राप्त होगी। पत्नी सुन्दर, योग्य एवं पति के लिए हर प्रकार से सहायिका होगी। यदि शुक्र भी शुभस्थ हो तथा बुध के साथ योग करता हो तो जातक अनेक शिल्प कलाओं में कुशल तथा वह अनेक संसाधनों एवं युक्तियों से धन का अर्जन करने वाला होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. (75) यदि सप्तम में चन्द्र, शनि, मंगल आदि का सम्बन्ध हो तो जातक को विवाह या संतान सुख में बाधक एवं कमी करता है। देखें कुं. नं. 82

अष्टम भाव-में मिथुन राशि पर भाग्येश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक चंचल एवं अस्थिर स्वभाव वाला, गुप्त परेशानियों से चिन्तित, धन प्राप्ति एवं लाभ के अनेक अवसर आने पर भी उनका विशेष लाभ नहीं उठा पाता, व्यवसायिक एवं घरेलू उलझनों के कारण मानसिक तनाव व शारीरिक कष्टों का भी सामना रहता है। आकस्मिक धन के खर्च भी अधिक होंगे। माता को अरिष्ट कारक। यद्यपि ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन बना ही लेता है। यदि चन्द्र के साथ राहु, शुक्र, शनि आदि अशुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो जातक को नेत्र रोग, पत्थरी, मधुमेह, प्रमेह आदि गुप्त रोगों का भय एवं आर्थिक परेशानियां तथा कार्यों में बार-बार विघ्न उत्पन्न होते हैं।

नवम भाव-में स्वगृही कर्क राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक भाग्यशाली, सुन्दर मुख, चंचल किन्तु श्रेष्ठ बुद्धि, उच्च-शिक्षित, धार्मिक एवं लोक सेवा कार्यों मे रूचि लेने वाला व परोपकारी स्वभाव, संगीत, कला, साहित्य एवं ज्योतिष आदि में रूचि लेने वाला होगा। चन्द्र यदि गुरु, भौमादि ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक दीर्घायु, माता, पिता, भूमि, धन सम्पदा, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। विदेश आदि में भी भाग्योन्नति के योग बनते हैं। विवाह के बाद विशेष भाग्य वृद्धि होती है। स्त्री सुन्दर एवं गुणी एवं सहायक होती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 78

यदि चन्द्र क्षीण अथवा शनि, राहु आदि युक्त या दृष्ट हो तो उपरोक्त सुखों में कमी तथा भाग्योन्नति में बार-बार विघ्न तथा कौटुम्बिक सुख में बाधाएं होती हैं।

दशम भाव- में सिंह राशि पर भाग्येश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक कार्यकुशल, बुद्धिमान, दयालु एवं यशस्वी होता है। ऐसा जातक मिलनसार, उच्चाकांक्षी, प्रभावशाली मित्रों से सम्बन्ध रखने वाला तथा अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् व्यवसाय में धनार्जन करने वाला, विवाह के बाद माता-पिता एवं स्त्री का विशेष योगदान प्राप्त करने वाला होता है। सूर्य शुभस्थ हो, या चन्द्र पर गुरु का योग या दृष्टि हो तो जातक को भूमि, मकान, वाहन आदि के सुख भी यथेष्ठ होते हैं। यदि चन्द्रमा क्षीण हो अथवा शनि, राहु आदि पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो व्यवसाय एवं धन लाभ में विघ्न बाधाएं रहती हैं तथा व्यवसाय के प्रति जातक असंतुष्ट होता है। दन्त रोग, शिर पीड़ा, उदर रोगादि का भय होता है। देखे उदा. कुं. नं. 85

एकादश भाव- में कन्या राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बुद्धिमान किन्तु चंचल बुद्धि, गौरवर्ण, लोकप्रिय, पराक्रमी, सामान्य एवं उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, गुणी, कार्य-कुशल, ज्योतिष, मन्त्र, शास्त्र-पुराण आदि में रूचि रखने वाला, भ्रमणप्रिय, सरकारी क्षेत्रों से सम्पर्क, विभिन्न स्रोतों एवं उपायों से धनार्जन करने वाला एवं योजनाएं बनाने में कुशल होता है। प्रारंभिक जीवन संघर्षपूर्ण होता है। जातक सुशील एवं कार्यकुशल स्त्री से विशेष सहयोग एवं सुखी तथा भूमि, धन, आवास, सवारी, सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होता है। गुरु मंगल एवं शनि आदि ग्रह शुभस्थ हों तो जातक बहु-विद्याओं का जानकार, विस्तृत व्यवसाय, सन्तान एवं भ्रातृ आदि सुखों से युक्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 80 एवं 81

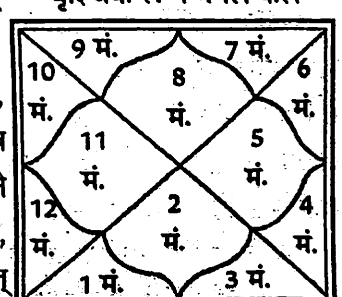
यहां चन्द्र पर शनि, राहु आदि ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो जातक को व्यवसाय में बहुत कठिनाइयों एवं अड़चनों के बाद सफलता मिलती है।

द्वादश भाव- में तुला राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य में कमी अथवा जीवन का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण होता है। धन लाभ अल्प व खर्च अधिक रहते हैं, यद्यपि शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होते हैं। नेत्रों में कष्ट व सर्दी, जुकाम आदि कफ विकार से पीड़ित, भ्रमणशील एवं व्यवसाय में दौड़-धूप अधिक एवं संघर्ष व कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त करता है। स्त्री के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण रहते हैं। जातक कल्पनाशील तथा विदेश में अधिक सफल होता है। यदि द्वादशस्थ चन्द्रमा पर मंगल, गुरु, बुधादि ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक चार्टिड अकाऊंटैंट (C.A), I.A.S., M.B.A.) इत्यादि उच्च प्रतिष्ठित व्यवसाय द्वारा अच्छा धनार्जन करता है। देखें उदा. कुण्डली नं. (77)

बृश्चिक लग्न : द्वादश भावों में मंगल का फल

नोट : बृश्चिक लग्न में मंगल लग्नेश एवं षष्ठेश होने से विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बारह भावों में उसके फल का निर्णय करते समय उसके साथ गुरु, सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों का योग व दृष्टि आदि का भी ध्यान रख लेना चाहिए।

बृश्चिक लग्ने मंगल फल



प्रथम भाव-में स्वगृही राशि बृश्चिक में मंगल के प्रभाव से जातक साहसी, चुस्त, परिश्रमी एवं आकर्षक व प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। मानसिक व शारीरिक शक्ति अच्छी होती है। ऐसा जातक उच्च-अभिलाषी, निर्भीक एवं अपने पराक्रम से जीवन में लाभ व उन्नति करने वाला, स्वाभिमानी प्रकृति का होगा। माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी रहती है। व्यवसाय में विघ्न बाधाओं के पश्चात् सफलता हो। पत्नी/पति में वैचारिक भिन्नता अथवा सुख में कमी हो। यहां पर मंगल होना मंगलीक दोष कारक भी माना जाता है। जोकि वैवाहिक सुख में बाधक होता है। यदि लग्न में मंगल व गुरु का योग

हो तो जातक मेधावी, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, गुणी एवं विद्वान होता है। यदि मं.-शुक्र का योग हो तो जातक कामुक, क्रय-विक्रय में कुशल, ऐश-परस्त तथा मनोरंजन आदि कार्यों पर खर्च करने वाला होता है। मंगल-शनि, मंगल-राहु आदि योग होने से जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक संघर्ष होते हैं। देखें उदा. कुं. 84

द्वितीय भाव-में मित्र धनु-राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक दृढ़-निश्चयी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं अपने परिश्रम व बुद्धि-चातुर्य से धन अर्जन करने वाला होता है। परन्तु मंगल यहां से भाग्य स्थान को नीच दृष्टि से देखने से भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयां पड़ती हैं। परन्तु विघ्न/बाधाओं के बावजूद जातक निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। द्वितीय भाव का मंगल जातक को स्पष्टवादी, सत्यप्रिय, दृढ़ निश्चयी, सोच समझ कर खर्च करने वाला, सद् व्यवहार करने वाला, उच्च विद्या, भूमि, सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है। व्यवसाय में भी अड़चनों के बाद सफलता मिलती है। यदि यहां मंगल पर गुरु, चन्द्र आदि शुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो शुभ फलों में वृद्धि होती है।

तृतीय भाव-में मकर (उच्च) राशि पर मंगल होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, अग्रज, साहसी, भ्रमणशील एवं भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। यहां से मंगल चतुर्थ दृष्टि से छटे स्वराशि को तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान की नीच राशि को देखने से जीवन में अनेक कठिनाइयों एवं भाग्य सम्बन्धी संघर्षों के बावजूद जातक अपने पराक्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा अपने कार्य-क्षेत्र में लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। जातक को चाचा आदि सम्बन्धियों की ओर से परेशानी परन्तु पिता की सहायता एवं सुख भी प्राप्त करता है। यदि मंगल के साथ गुरु का योग या दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो तो जातक तीव्र बुद्धि, सुशिक्षित, व्यवसाय में उन्नतशील, धार्मिक एवं ज्योतिष आदि विषयों में रूचि, परोपकारी, परिवार का सहायक, गुणी, सुशील स्त्री, सन्तान व वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. (80) तथा 85

चतुर्थ भाव-में शनि ग्रह की कुम्भ राशि पर मंगल होने से जातक स्वाभिमानी, भ्रमणशील, उच्चाभिलाषी, अशान्त मन, माता, भूमि, मकान, जायदाद आदि से परेशानी के बाद लाभ प्राप्त करने वाला, व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के पश्चात् आय के साधन बन पाते हैं। सप्तम भाव पर दृष्टि होने से स्त्री सुख में कमी एवं वैमनस्य की सम्भावना होती है। चतुर्थ भावस्थ मंगल **मंगलीक दोष** कारक भी होता है। विवाह सुख में यह योग विचारणीय होता है।

पंचम भाव-में गुरु की मीन राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक तीक्ष्ण बुद्धि, परिश्रमी परन्तु क्रोध अधिक आता है। विघ्नों के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। शत्रुओं एवं बाधाओं पर गुप्त युक्तियों द्वारा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। यदि सूर्य, गुरु, चन्द्र आदि का पारस्परिक योग व दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो तो जातक चार्टिड अकाऊंटस अथवा उच्च स्तरीय क्षेत्र में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। पिता द्वारा विशेष लाभान्वित होता है।

चन्द्र पर मंगल, गुरु आदि की दृष्टि होने से विघ्नों के बावजूद उच्च प्रतिष्ठित लाभ, स्त्री एवं पुत्र, सन्तान का सुख प्राप्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 77। ऐसा जातक चिकित्सा आदि क्षेत्र में विशेष सफल हो सकता है।

षष्ठ भाव-में स्वगृही मेष राशि पर मंगल होने से जातक कठिन परिश्रमी, स्वाभिमानी, उद्यमी, धैर्यशाली, अच्छी पाचनशक्ति, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, शत्रुओं एवं संकटों पर विजय प्राप्त करने वाला तथा कार्य-व्यवसाय में विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन जुटा लेने वाला, परन्तु वृथा खर्च भी बहुत अधिक रहता है। लेखन, कला, संगीत आदि का विशेष शौक रहे। यदि यहां मंगल, राहु आदि अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को उदर, रक्त विकार व मानसिक उद्वेग रहता है।

वैसे ३, ६ या ११वें मंगल, शनि, राहु अरिष्टों का नाश करके सुखों में वृद्धि करते हैं।

सप्तम भाव-में वृष राशि पर मंगल होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। परन्तु व्यवसाय के सम्बन्ध में विघ्नों एवं परेशानियों के बाद सफलता प्राप्त करने वाला, लेन-देन अथवा सांझेदारी के

कामों में नुकसान, धनार्जन एवं आजीविका के विषय में दूर स्थानों में भ्रमण करने वाला तथा धन का अपव्यय (वृथा खर्च) भी बहुत होता है। वैवाहिक सुख में विलम्ब एवं अड़चनें होने के संकेत। यहां पर मंगल की स्थिति मंगलीक दोषकारक होती है जो कि बाधाकारक होता है। मंगल यदि शनि, राहु आदि से युक्त या दृष्ट हो तो जातक गुप्त रोगी, निन्द्य कर्म करने वाला तथा स्त्री सुख अथवा स्त्री की कुण्डली में पति के सुख में कमी करता है।

अष्टम भाव-में मिथुन राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक शारीरिक कष्टों से युक्त, परिश्रमी एवं पराक्रमी होता है। कठिन परिस्थितियों एवं संघर्ष के बावजूद व्यवसाय में निर्वाह योग्य विभिन्न स्रोतों से आय के साधन बना लेता है। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि विद्याओं में रूचि, धनार्जन में विभिन्न साधनों एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। यद्यपि भाई-बहिन का सुख होता है परन्तु जातक स्वावलम्बी अर्थात् जातक निज उद्यम एवं पराक्रम से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। अष्टम भावस्थ मंगल, मंगलीक दोषकारक भी होता है, जो वैवाहिक सुख में कमी करता है। यदि मंगल शनि, राहु आदि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को नेत्र कष्ट, वात रोग, मधुमेह, बवासीर या पत्थरी आदि के कारण आप्रेशन की संभावना रहे। पुत्र सुख में कमी होती है। स्त्री की कुण्डली में भी सन्तानोत्पत्ति के समय आप्रेशन एवं गुप्त रोग की आशंका रहे। देखें उदा. कुण्डली नं. 75। इस भौम को कोई शुभ ग्रह न देखे तो पुत्र सुख में कमी तथा ब्लड प्रैशर, मधुमेह आदि गुप्त रोग की सम्भावना होती है। देखें उदा. कु. 82

नवम भाव-में कर्क (नीच) राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक चंचल मन एवं स्वच्छन्द प्रकृति का, पराक्रमी, तीव्र-बुद्धिमान, परिश्रमी, स्वाभिमानी, अनेक प्रकार के उच्च-नीच लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, कामुक प्रवृत्ति, भ्रमणप्रिय, ऐशो-आराम एवं मनोरंजन आदि कृत्यों पर अधिक खर्च करने पर भी वांछित धन-लाभ नहीं हो पाता, भाग्योन्नति में विशेष उतार चढ़ाव एवं विघ्नों के पश्चात् सफलता प्राप्त होती है। भाई-बहिनों के सुख की प्राप्ति भी परेशानियों के बाद होती है। विदेश में भाग्योदय के अधिक अवसर होंगे। देखें उदा. कुण्डली नं. 76।

दशम भाव-में मित्र, सिंह राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी, तीव्र बुद्धिमान, स्वाभिमानी, साहसी, स्वस्थ एवं संतुलित शरीर तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होगा। ऐसा जातक उच्च विद्या प्राप्त, स्वावलम्बी, भाग्यशाली, सेना, पुलिस अथना प्रशासनिक सर्विस में संलग्न होता है। देखें कुं. नं. 83

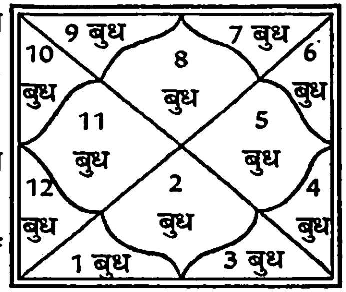
यहां मंगल यदि सूर्य, बुध आदि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक ज्योतिष, धर्म या योग आदि गूढ़ शास्त्र का जानकार होता है। ऐसा जातक स्वभुजबल से जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला अर्थात् Self Made होता है। माता-पिता का विशेष सत्कार करने वाला होता है। देखें उदा. कुं. नं. 81

एकादश भाव-में कन्या राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रमी, बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी एवं परिवारिक सुखों से युक्त होता है। अत्यन्त संघर्ष एवं बाधाओं के साथ उच्च विद्या की प्राप्ति होती है। ज्योतिष दर्शन एवं योग आदि बौद्धिक विषयों में भी विशेष रूचि होती है। जातक भूमि, मकान, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त, यदि मंगल सूर्य, बुध आदि ग्रहों से युक्त हो तो जातक अध्ययनशील, बौद्धिक कार्यों में कुशल एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। गुरु का भी योग या दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो तो जातक अध्यापन, चिकित्सा, वकालत एवं इंजीनीयरिंग आदि के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता प्राप्त कर सकता है।

द्वादश भाव-में शुक्र की तुला राशि पर मंगल होने से पराक्रमी, उद्यमी एवं भ्रमण करने वाला होता है। विदेश आदि बाहरी सम्बन्धों से विशेष लाभ प्राप्त करने वाला तथा जातक कामुक एवं मनोरंजन व ऐश-परस्ती के कामों में अधिक व्यय करने वाला होता है। भाइयों का सुख विशेष रुपेण प्राप्त करने वाला, तथा स्वयं भी भाइयों के लिए लाभकारक होता है। स्त्री के सुख में कमी होती है। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष के बाद आय के साधन बन पाते हैं। द्वादश भावस्थ मंगल मंगलीक दोषकारक भी होता है जो कि गृहस्थ सुख में बाधाकारक होता है। यहां मंगल यदि शनि या बुध के साथ हो तो जातक को विचित्र बीमारियों के कारण कष्ट होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 79

बृश्चिक लग्नगत द्वादश भावों में बुध का फल

बृश्चिक लग्ने बुध फल



बृश्चिक कुण्डली में बुध आठवें (आयु) और 11वें (लाभ) किन्तु त्रिषडाय स्वामी होने से अकेला शुभफली नहीं हो जाता। अन्य ग्रहों के सहचर्य से विशेष शुभाशुभ फल प्रदान करता है। बृश्चिक लग्न में यह ग्रह सूर्य, चन्द्र, शनि, ग्रहों के साथ शुभ एवं शुक्र, गुरु ग्रहों के साथ मिश्रित प्रभाव करता है।

प्रथम भाव-में बृश्चिक राशि पर बुध के प्रभाव से जातक विनोदप्रिय, निर्बल शरीर, चंचल बुद्धि, व्यवहार कुशल, बोलने में कुशल, शिक्षित, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, संगीत, गायन, कला आदि में रूचि, अच्छी स्मरणशक्ति वाला एवं तर्क-वितर्कमें कुशल होगा। अत्यधिक परिश्रम के बावजूद धन लाभ मध्यम होता है। कल्पनाशील, पठन-पाठन एवं लेखन आदि कर्मों में भी रूचि हो। यदि भौम, केतु आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो फोड़े, फुंसी, रक्त विकार, चर्मरोग आदि एवं उदर विकार आदि होते हैं। मन भी अशांत हो। लग्न भावस्थ बुध का जातक चतुर बुद्धि होने से सुगमता से किसी के काबू नहीं आता। यदि बुध और मंगल का योग हो तो जातक क्रोधी स्वभाव एवं दुर्घटना से चोटादि का भय होता है, जातक को जड़ी-बूटी, तैलादि वस्तुओं के व्यापार से लाभ होता है।

द्वितीय भाव-में धनु राशि पर बुध के होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, विद्वान, लेखन-कार्य एवं पठन-पाठन में विशेष रूचि रखने वाला, विभिन्न भाषाओं का ज्ञान रखने वाला, दीर्घायु में संतान सुख, खुशामद पसंद परन्तु लोगों के हित के लिए सद्वचन कहने वाला, व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करने वाला होता है। परन्तु ऐसा जातक गुप्त युक्तियों एवं बुद्धि-चातुर्य से धनार्जन करने वाला होगा। ऐसे जातक द्वारा उधार दिया हुआ अत्यन्त कठिनाई से वापिस मिलता है। यहां बुध अगर अस्तंगत अथवा पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो शुभ फल नहीं होते।

तृतीय भाव-में मकर राशि पर बुध के प्रभाव से जातक स्वतन्त्र विचारों वाला, विनम्र स्वभाव किन्तु कूटनीति का प्रयोग करने वाला, बाहरी तौर से धार्मिक विचारों वाला, व्यवहार-कुशल, धर्म, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, भ्रमणप्रिय एवं देश-विदेश में दीर्घ यात्राओं की सम्भावना हो। भाई-बहन के होते हुए भी उनके सुख में कमी रहे। हस्तशिल्प और तकनीकी कार्यों में कुशल हो। अत्यन्त दौड़धूप करने के पश्चात् अधिक धन संचय नहीं हो पाता। यदि गुरु या सूर्य युक्त हो तो भूमि, जायदाद एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी।

चतुर्थ भाव-में कुम्भ राशि पर बुध होने से जातक हुनरमंद, युवा-अवस्था के प्रारम्भ में अपनी शिक्षा एवं कलात्मक विद्या से विशेष लाभ न उठा पाए। देश-विदेश में यात्राएं करने के अवसर प्राप्त होंगे। डिजाईनिंग, कम्प्यूटरादि तकनीकी कार्यों में भी विशेष सफल, प्राकृतिक एवं पर्वतीय स्थानों पर घूमने का शौकीन हो। धर्म एवं योग शास्त्रादि में भी विशेष रूचि रखे। कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपने पुरुषार्थ से धनार्जन करने वाला एवं वाहनादि सुख-साधनों से सम्पन्न होगा। देखें उदा. कुं. नं. 75

ध्यान रहे, चतुर्थ भाव में बुध निष्फली माना गया है। अतएव इस भाव में क्रूर ग्रहों के साथ योग होने से रक्त विकार, चर्मरोग आदि अशुभफल घटित होने की भी सम्भावना रहती है।

पंचम भाव-में मीन (नीच) राशि पर बुध होने से अस्थिर एवं चंचल बुद्धि, हुनरमंद एवं तकनीकी विषयों का जानकार, बुद्धिमान परन्तु उच्चविद्या प्राप्ति में विघ्न-बाधाएं हों। संतान सुख कम हो अथवा अल्पसन्तति (कन्यादि) का सुख हो। यदि गुरुयुक्त या दृष्ट होने से उपाय स्वरूप पुत्र सन्तति का सुख प्राप्त होता है। आय के क्षेत्र में भी विघ्न-बाधाओं एवं संघर्ष के बाद धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। नीच बुध के कारण ऐसे जातक की आर्थिक स्थिति प्रायः अस्थिर रहती है। ऐसे जातक ज्योतिष, यंत्र-मंत्रादि गुप्त शास्त्रों में भी रूचि रहे। शुक्र से युक्त हो तो कन्या सन्तति होती

है। देखें उदा. कुं. 82

बुध यदि अशुभ ग्रह से युक्त हो तो जातक व्यसनी एवं जुआरी होता है। अथवा विकृत प्रकृति की संतान होती है।

षष्ठ भाव-में मेष राशि पर बुध होने से जातक संघर्षशील, तीक्ष्ण बुद्धि तथा अपनी बुद्धि द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु द्वादश भावस्थ तुला राशि पर विशेष दृष्टि होने से ऐशप्रस्ती तथा मनोरंजन आदि कार्यों पर धन का खर्च अधिक करने वाला होता है। देश-विदेशों में भी भ्रमण के अवसर प्राप्त होते हैं। यदि यहां बुध के साथ शनि, राहु आदि क्रूर ग्रह हों, तो, त्वचा रोग, रक्त विकार, उदर विकार एवं मामा को कष्ट आदि, यदि मंगल का योग अथवा दृष्टि होने से दुर्घटना में चोटादि का भय हो। यदि सूर्य-गुरु व बुध का योग हो, तो जातक उच्चशिक्षित एवं लेखाकार (C.A) इत्यादि उच्चप्रतिष्ठित व्यवसाय द्वारा लाभान्वित होता है। देखें उदा. कुं. नं. 77

सप्तम भाव-में वृष राशि पर बुध के प्रभाव से जातक चंचल एवं अस्थिर मन वाला, कामुक प्रवृत्ति, विलासप्रिय, दूसरों के कहने से शीघ्र उत्तेजित होने वाला, गणित, ज्योतिष, संगीत-कला एवं साहित्य की ओर अभिरूचि रखने वाला, मकान, वाहन आदि शानो-शौकत पर खर्च करने वाला होगा। शराबादि व्यसनों की तरफ भी रूचि होने के योग हैं। साधन सम्पन्न, दीर्घायु, सुशील एवं सुशिक्षित पत्नी मिलती है। ऐसा जातक अध्ययनशील एवं उसको पठन-पाठन एवं लेखनादि कार्यों का शौक रहता है। यदि यहां बुध निर्बल अथवा राहु आदि पापग्रहों से दृष्ट हो तो उपरोक्त सुखों में कमी होती है तथा जातक गुप्त रोगों से ग्रस्त रहता है।

अष्टम भाव-में बुध मिथुन (स्वराशि) गत होने से जातक कुशल बुद्धि वाला, अनेक विद्याओं और गुणों से युक्त, अध्ययनशील, आध्यात्म-ज्योतिष, मंत्र-तंत्रादि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, अतिथि सत्कार करने में तत्पर, देश विदेशों में व्यवसाय के सम्बन्ध में धन-लाभ एवं उन्नति प्राप्त करने वाला, उच्चाभिलाषी होता है। परन्तु जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिनाइयों एवं संघर्ष का सामना रहता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त-युक्तियों द्वारा विदेश आदि में धनार्जन करके अपना तथा परिवार का पोषण करने वाला होता है। देखें उदा. कुं नं. 76

यदि शनि-राहु आदि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक गुप्त रोग, वायु रोग एवं त्वचादि रोगों से पीड़ित होता है। उदर रोगी, शिर दर्द एवं मामा के सुख में कमी करता है।

नवम् भाव-में बुध कर्क में होने से जातक बुद्धिमान, विद्वान एवं उच्चशिक्षित परन्तु उच्चशिक्षा एवं भाग्य के सम्बन्ध में विघ्न-बाधाओं के बाद सफलता मिलती है। भाई-बहिनों का सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है। व्यवसाय में भी कठिनाईयों एवं संघर्ष के पश्चात् लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। धर्म-अध्यात्म, ज्योतिष, तन्त्रादि विषयों की जानकारी रखने वाला, कवि और धन-सम्पदा एवं वाहनादि सुखों से युक्त अथवा सम्पन्न होता है। ऐसा जातक धर्मपरायण एवं परोपकारी होता है। परन्तु यदि बुध अस्त या वक्री हो तो जातक नास्तिक एवं अनैतिक आचरण करने वाला होगा।

दशम् भाव-में सिंह राशि पर बुध होने से जातक बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी, उच्चशिक्षित (विशेषकर व्यवसायिक विद्या में), उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला, व्यवहार-कुशल, पिता से भी लाभान्वित होने वाला एवं उच्चस्तरीय व्यवसाय से सम्बन्धित होता है। यद्यपि व्यवसाय में कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त करता है। भूमि-आवास एवं सवारी आदि सुखों से सम्पन्न होता है। यदि बुध राहु-शनि आदि क्रूर ग्रहों से युक्त हो, तो पिता के सुख में कमी तथा व्यवसाय में संघर्ष अधिक एवं लाभ कम होता है। सूर्य के साथ हो, तो विघ्नों के बाद सफलता देता है। देखें कुण्डली नं. 83

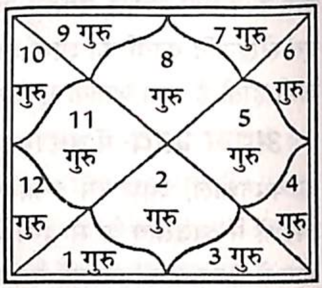
एकादश भाव-में स्वगृही कन्या राशि पर बुध के प्रभाव से जातक उदारहृदय, उच्चप्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, स्वाभिमानी, ज्योतिष, चिकित्सा, गणित एवं साहित्यादि कार्यों में रूचि रखने वाला हो। यद्यपि उच्चविद्या विघ्न-बाधाओं के पश्चात् ही प्राप्त होती है। ऐसा जातक प्राध्यापक, वकालत, क्रय-विक्रय, लेखन, प्रकाशन, डाक विभाग आदि कार्यों

में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकता है। विदेश आदि सम्बन्धों से अकस्मात् धन लाभ की सम्भावनाएं भी होती हैं। पुत्र संतान की अपेक्षा कन्या सन्तति अधिक होती है। ऐसा जातक संगीतप्रिय, विद्वान, सुन्दर एवं भाग्यशाली स्त्री का स्वामी, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है।

द्वादश भाव-में मित्र ग्रह शुक्र की राशि में बुध होने से जातक चंचल एवं अस्थिर बुद्धि वाला, देश-विदेश की यात्रा एवं विदेश यात्रा से लाभान्वित होने वाला, लेखन, प्रकाशन, नीति-युक्त वाणी का उच्चारण करने वाला तथा अनेक गुप्त-युक्तियों द्वारा कठिनाइयों के पश्चात् धन लाभ प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु शुक्र की राशि होने के कारण जातक कामुक प्रवृत्ति वाला, भावुक एवं सिनेमा, संगीत व कलात्मक विषयों में रूचि रखने वाला, भ्रमणप्रिय तथा अत्याधिक अपव्यय (फिजूलखर्च) के कारण चिन्तित एवं अशान्त रहने वाला होगा। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। देखें उदा. कुं. नं. 79, 80, 81

बृश्चिक लग्न गत द्वादश भावों में गुरु का फल

बृश्चिक लग्ने गुरु फल



विशेष- बृश्चिक कुण्डली में गुरु धनेश एवं पंचमेश होने से विशेष महत्त्वपूर्ण होता है। यह ग्रह श्रेष्ठ बुद्धि, शास्त्र ज्ञान, विद्या, पति, बड़ा भाई आदि सुखों का कारक है तथा कुं. में सू. चं. एवं मंगल आदि ग्रहों के साथ शुभ भावों में हो तो विशेष अच्छा फल देता है।

प्रथम भाव-में बृश्चिक राशि पर गुरु होने से जातक पुष्ट शरीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व, विवकेशील, गुणी, धैर्यशील, किन्तु कुछ तेज स्वभाव, परन्तु परोपकारी, दीर्घायु, धन-धान्य से युक्त एवं परिवारिक सुखों से सम्पन्न व प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। यहां से गुरु की पंचम एवं नवम भावों पर शुभ दृष्टियां पड़ने से जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, अध्ययनशील, धर्मपरायण, ज्योतिष, धर्मशास्त्रादि विषयों में रूचि, पुत्र आदि सन्तान का सुख, भाग्यशाली, व्यवसाय में रुकावटों के बाद सफलता प्राप्त करने वाला होता है। निजी गुणों एवं पुरुषार्थ के बल पर जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। यदि यहां गुरु के साथ मंगल या सूर्यादि का योग या दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो तो जातक पिता के लिए भाग्यकारक, डाक्टर, वैद्य, प्राध्यापक, वकील, न्यायाधीश, सम्पादक, लेखन आदि कार्यों से लाभ व उन्नति करने वाला होता है। लग्न में चन्द्र गुरु एवं केतु का सम्बन्ध हो,तो जातक का कद बहुत ऊंचा एवं वह धनाढय होता है। सूर्य, गुरु का योग होने से जातक धन, सम्पदा, सन्तान (पुत्र) के सम्बन्ध में भाग्यशाली हो। देखें कुं.-85

द्वितीय भाव-में स्वगृही धनु राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, साहसी, स्वाभिमानी, गम्भीर वाणी, धनी, सम्पन्न एवं परिवारिक सुखों से युक्त होता है। ऐसा जातक पिता के लिए लाभकारक, समाज में प्रतिष्ठित, श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, शत्रुओं को गुप्त युक्तियों से दबाने वाला, दीर्घायु वाला, पैतृक सम्पदा में वृद्धि करने वाला एवं गुणवान होता है। धार्मिक प्रवृत्ति, ज्योतिष, मंत्र, तन्त्र आदि विषयों में रूचि, उच्च स्तरीय व्यवसाय अथवा उच्चपद द्वारा लाभान्वित होने के योग। यदि सूर्य शुभस्थ हो तथा दूसरे गुरु पर मंगल का योग या दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो तो जातक/जातिका चिकित्सा के क्षेत्र में सफल होता है। ध्यान रहे, गुरु इस भाव का कारक होने से अकेला होने की स्थिति में बहुत अच्छे फल प्रकट नहीं कर पाता।

तृतीय भाव-में मकर (नीच) राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक भाग्यशाली, बुद्धिमान, उदार हृदय, दीर्घकालीन योजनाएं बनाने में कुशल, व्यवहार कुशल, धर्म-परायण अर्थात् धर्मशास्त्र एवं ज्योतिष आदि गूढ़ शास्त्रों में रूचि रखने वाला, भाई-बहिनों के सुख में कमी अथवा उनके व्यवहार से दुखी, उच्च-विद्या एवं आर्थिक क्षेत्र में भी अड़चनों एवं परेशानियों के पश्चात् सफलता मिलती है। ससुराल के लिए भाग्योन्नतिकारक, भ्रमणप्रिय, लेखन, पठन-पाठन का भी शौक हो, व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप अधिक तथा खर्च भी अधिक रहे। व्यवसाय के सम्बन्ध में विदेश गमन की

भी सम्भावना हो। ऐसा जातक परोपकारी और उदार हृदय भी होता है, देखें उदा. कुं. नं. 75.

चतुर्थ भाव-में कुम्भ राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रमी, व्यवहार कुशल, उद्योगी, दीर्घायु, भूमि, मकान, चौपाय, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, माता-पिता के प्रति विशेष लगाव एवं सत्कार करने वाला होगा, यदि चन्द्र-गुरु का योग हो तो जातक उच्च शिक्षित, भाग्यशाली, धार्मिक एवं परोपकारी प्रवृत्ति वाला, सन्तान सुख कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त होता है। जातक को उच्च-विद्या प्राप्ति का लाभ की पूर्ण रूप से नहीं मिल पाता।

यद्यपि पिता द्वारा लाभ एवं कार्य-व्यवसाय में विघ्नों के बाद अच्छी सफलता प्राप्त करने वाला तथा वाहन एवं ऐश्वर्य आदि सुखों पर खर्च भी विशेष होता है। देखें उदा. कुं. नं. 79, मंगल-सूर्य भी शुभस्थ हो तो ऐसा जातक उच्च प्रतिष्ठित होता है।

पंचम भाव-में स्वगृही मीन राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली, पराक्रमी, बुद्धिमान, तर्क-वितर्क करने में कुशल किंतु स्वाभिमानी, बड़ी आंखें, उच्चशिक्षित, सफल-वकील, जज, उच्चप्रतिष्ठित पद या व्यापारी हो सकता है। यदि चन्द्र, सूर्य या भौमादि का योग या दृष्टि हो तो धार्मिक प्रवृत्ति, भाग्यशाली, किसी धार्मिक संस्था से भी सम्बन्धित, धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि शास्त्रों में रूचि, प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित, प्रभावशाली, गम्भीर वाणी, भूमि, आवास, वाहन एवं स्त्री-सन्तान आदि सुखों से युक्त होगा। ऐसा जातक अध्यापन, प्रबन्धन, राजनीति, चिकित्सा, वकालत, कैमिस्ट आदि क्षेत्रों में भी सफल होता है। देखें उदा. कुं. 74 (Sh. L. K. Advani)

जातक नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल, दूरंदेशी, शेयर, लाटरी आदि द्वारा अचानक धन लाभ भी संभव हो सकता है। पुत्र सन्तति के बाद विशेष भाग्योदय होता है। ध्यान दें, इस भाव में अकेला गुरु किसी अन्य ग्रह द्वारा भी दृष्ट न हो तो वांछित शुभ फल देने में विफल होता है। पुत्र सन्तति के सुख में भी बाधक देखा गया है। विशेषकर मीन या धनु राशियों में शास्त्र विहित उपायों द्वारा पुत्र सुख संभव है।

षष्ठ भाव-में मेष राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक कुशल बुद्धि वाला, विघ्न/बाधाओं के पश्चात् उच्च विद्या प्राप्त करने वाला, उच्चपद प्रतिष्ठित अथवा उच्च स्तरीय व्यवसाय करने वाला, शत्रुओं एवं विरोधियों को परास्त करने में सक्षम, जातक भूमि, जायदाद एवं सवारी आदि सुखों से सम्पन्न। ऐसा जातक विभिन्न स्रोतों एवं गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने में कुशल होता है, परन्तु परिवारिक उलझनों के कारण कई बार चिन्तनशील, माता एवं मामा को कष्ट अथवा उनके सुख में कमी होती है। यदि यहां गुरु के साथ बुध एवं सूर्य का योग हो तो जातक उच्चपद प्राप्त एकाऊंट्स (C.A), प्रशासनिक आदि क्षेत्र में उच्चशिक्षित, पिता द्वारा विशेष सहायता प्राप्त एवं सुप्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 77

सप्तम भाव-सप्तम भाव में वृष राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक का पुष्ट शरीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व, बुद्धिमान, स्वाभिमानी, उच्च-विद्या, भाइयों के सुख में कमी, कठिनाइयों के बाद व्यवसाय में गुजारे योग्य आय के साधन बनें। ज्योतिष, मंत्र, तंत्र एवं धार्मिक कार्यों में रूचि लेने वाला, पत्नी सुन्दर, चुस्त परन्तु पत्नी से वैचारिक विषमता रहे। जातक को पुत्र-सन्तान सम्बन्धी विशेष चिन्ता हो। यदि यहां गुरु के साथ चन्द्र या मंगल का योग या दृष्टि हो तो जातक उच्च प्रतिष्ठित तथा विदेश-यात्रा की सम्भावना होती है। 34वें वर्ष से में विशेष भाग्योदय होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 78

नोट- कुछ विद्वानों के अनुसार इस भाव में अकेला गुरु वैवाहिक सुख एवं व्यवसाय की दृष्टि से हानिकारक होता है।

अष्टम भाव-में मिथुन राशि पर गुरु होने से जातक परिश्रमी, ईमानदार, चिन्तनशील, दीर्घायु, धन-धान्य, वाहन एवं परिवारिक सुखों से युक्त होने पर भी घरेलू उलझनों एवं सन्तान के सम्बन्ध में चिन्तित, उच्च-शिक्षा प्राप्ति में भी विघ्न/बाधाएं हों, ज्योतिष, यन्त्र, तन्त्र आदि गूढ़ विद्याओं में रूचि रहे, माता, भूमि एवं मकान आदि सुखों की प्राप्ति में कुछ परेशानियां रहें। धन का अपव्यय (फिजूल खर्ची) अधिक रहे। व्यवसाय में विघ्नों एवं उलझनों के पश्चात् गुजारे योग्य आय के साधन बनें, यदि गुरु पाप ग्रह युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक अधिक समय तक अपने पिता के गृह में नहीं रहता, जातक को पाचन क्रिया सम्बन्धी रोग जैसे प्रमेह, डायबिटीज़, लीवर एवं पेट विकार आदि गुर्दे के रोगों की सम्भावना होती है। गुरु शुभ दृष्ट हो, तो जातक की मृत्यु किसी तीर्थ आदि शुभ स्थान पर सुखपूर्वक होती है।

नवम भाव-में कर्क (उच्च) राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, स्वाभिमानी, भाग्यशाली,

बुद्धिमान, विद्वान, ईश्वर में आस्था रखने वाला, उच्च स्तरीय व्यवसायी या उच्च पद प्राप्त प्रतिष्ठित, भूमि, वाहन, आवास एवं पुत्रादि सुखों से युक्त, निज पराक्रम एवं भाग्यवश पुत्र संतति के बाद विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। जातक को धर्म, ज्योतिष, अध्यात्म, मंत्र, नीति, योगशास्त्र की ओर भी विशेष अभिरुचि रहती है। भाई-बहिनों से स्नेह रखने वाला, किन्तु उनसे सुख या सहायता की कमी रहती है। यदि शुक्र शुभस्थ हो तो स्त्री नेक, सुशील एवं सर्व प्रकार से सहायिका होगी। जीवन का 35वां वर्ष विशेष लाभप्रद एवं भाग्योन्नति कारक होगा। यदि गुरु के साथ मंगल, सूर्य, शनि आदि का योग, दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो तो जातक प्रिंटिंग, प्रकाशन, लेखन, नेता, अभिनय, प्राध्यापन आदि से सम्बन्धित उद्योग से उच्चकोटि के लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। ऐसा जातक सरकारी क्षेत्रों से तथा देश विदेश की यात्राओं द्वारा भी लाभ प्राप्त करने वाला होता है। देखें उदा. कुं. नं. 80। यदि नवम गुरु के साथ मंगल का योग एवं भाग्येश चन्द्र व मंगल का परिवर्तन योग बन रहा हो तो जातक विदेशों में व्यवसाय द्वारा विपुल धन-सम्पदा का अर्जन करता है। देखें उदा. कुं. नं. 76

दशम भाव-में सिंह राशि पर गुरु होने से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, यशस्वी, उच्च विद्या प्राप्त, उच्चाधिकारी अथवा उच्च स्तरीय कार्य/व्यवसाय करने वाला, स्वतन्त्र विचारों वाला, स्वाभिमानी, अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सावधान, माता-पिता का सत्कार करने वाला, उच्चस्तरीय रहन-सहन, माता-पिता एवं सरकारी क्षेत्रों से भी लाभ प्राप्त करने वाला तथा परिवारिक सुखों एवं भौतिक सुख-साधनों जैसे भूमि-जायदाद, सवारी आदि सुखों से समन्वित होता है। जातक अपने कर्त्तव्य के प्रति दृढ़ निश्चयी एवं निष्ठावान होता है। वह जो भी कार्य करता है, उसे अधूरा कभी नहीं छोड़ता, धर्म-कर्म, परोपकार एवं पारम्परिक मान्यताओं के प्रति आस्थावान। यदि गुरु के साथ मंगल व सूर्य का योग हो या सम्बन्ध हो, तो जातक उच्च सरकारी अफसर, बड़ा व्यापारी अथवा सूर्य-मंगल में **स्थान विपर्यय** सम्बन्ध हो तो जातक दन्त चिकित्सा, संगीत, पुस्तक लेखन, ज्योतिष, न्याय, कैमिकल आदि के शोध एवं अनुसन्धानात्मक कार्यों में सफल होता है। किन्तु यदि राहु का भी योग हो, तो अनेक अड़चनों के बाद कार्य व्यवसाय में सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 81 तथा 84

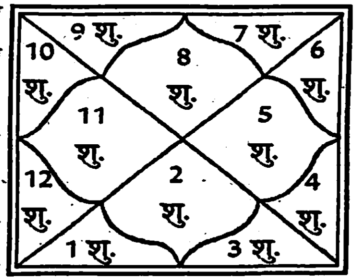
एकादश भाव-में कन्या राशि पर गुरु होने से पंचम भाव पर उसकी स्वगृही दृष्टि पड़ती है, जिसके फलस्वरूप जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, उच्चशिक्षित, दीर्घायु, श्रेष्ठ मित्रों वाला, भाग्यवान, भाई-बहन, भूमि, मकान, स्त्री, सन्तान आदि सुखों से युक्त। पिता के धन को बढ़ाने वाला, परन्तु धन का उपयोग विलासिता एवं वैभव प्रदर्शन में नहीं, अपितु परहित में होता है। सन्तानोत्पत्ति के बाद विशेष भाग्योदय होता है। इसके अतिरिक्त जातक का 32वां वर्ष विशेष घटनाप्रद होता है। कुण्डली में यहां चन्द्र-गुरु का योग हो तो भाग्यवश अकस्मात् धन लाभ करवाता है। विदेश गमन से भी विशेष धन/सम्पदा की सम्भावना रहे। गुरु यदि केतु युक्त होकर शनि, राहु, चन्द्र आदि ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को भाई/बहन एवं परिवारिक चिन्ताएं एवं उलझनें अधिक रहें। स्त्री कुण्डली में एकादश गुरु समृद्ध एवं उन्नतशील व्यक्ति से विवाह का सूचक होता है। फिर भी जातक अपने पुरुषार्थ व परिश्रम से व्यवसाय में निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। किसी शुभ ग्रह से अदृष्ट अकेला गुरु भी यहां गृहस्थ जीवन के लिए शुभ नहीं माना जाता है।

द्वादश भाव-में तुला राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक उद्यमी, साहसी, स्वाभिमानी, भ्रमणप्रिय होता है, प्रायः अपने जन्मस्थान से बाहर-विदेश आदि में प्रवास करता है। परिवारिक सुखों में कमी, उच्च विद्या प्राप्ति में भी अड़चनें रहती हैं। प्रत्येक कार्य में आत्म प्रदर्शन की भावना अधिक होती है। यद्यपि भूमि, आवास एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है परन्तु वृथा खर्च भी बहुत रहते हैं। सन्तान सुख भी बाधाओं के साथ प्राप्त होता है। पंचम भाव में शुक्र शुभस्थ हो, तो स्त्री का सहयोग विशेष तौर पर अच्छा एवं लाभदायक होता है। ज्योतिषी, वकील, डाकटर, वैद्य, कैमिस्ट, ट्रांसपोर्ट उद्योग आदि के लिए यह योग शुभ होता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 82, 83

ऐसे जातक को अध्यात्म, योग, शास्त्र, तन्त्र आदि गूढ़ विद्याओं में भी रूचि रहती है। वृथा यात्राएं एवं खर्च अधिक होते हैं। फिर भी जातक गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में सफल रहता है।

बृश्चिक लग्नगत द्वादश भावों में शुक्र का फल

बृश्चिक लग्ने शुक्र फल



विशेष- शुक्र ग्रह सामान्यत: स्त्री, कामेच्छा, प्रेम, वासना, रूप-सौन्दर्य, आकर्षण, धन-सम्पत्ति, वाहन आदि संसारिक सुखों का कारक माना जाता है। बृश्चिक कुण्डली में यह स्त्री/पति एवं विवाह सुख, विदेश यात्रा, व्यय, शयन सुख आदि विषयों का विचार किया जाता है।

प्रथम भाव-में बृश्चिक राशि पर शुक्र होने से जातक मृदुभाषी, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, शिल्प-कला में निपुण एवं गायन, संगीत, साहित्य की ओर रूचि, रसिक, राजसी स्वभाव, विलासप्रिय एवं कामुक प्रवृत्ति होती है। खान-पान, सुन्दर वेष-भूषा का शौकीन, व्यवहार कुशल होते हुए भी कई बार स्वभाव में उतावलापन आ जाए एवं पेट में कोई बात न छिपा पाए। मध्यमशिक्षा, स्त्री सुन्दर, सुशील एवं सहयोग करने वाली होगी। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त विघ्न/बाधाओं के बाद सफलता प्राप्त होगी। देखें उदा. कुं. नं. (79) तथा (80)

द्वितीय भाव-में धनु राशि पर शुक्र होने से जातक व्यवहार कुशल, श्रृंगार प्रिय, कामुक प्रवृत्ति, सुन्दर वस्त्र, स्त्रियों एवं विलास आदि वस्तुओं पर अधिक खर्च करने वाला, शुक्र यदि बुध या चंद्र से युक्त या दृष्ट हो तो जातक चान्दी, मोती, हीरा आदि जेवरात सम्बन्धी सौन्दर्य प्रधान वस्तुओं के क्रय-विक्रय से धन अर्जन करने वाला, प्रिय वाणी का प्रयोग करने वाला, स्त्रियों की संगति में रहने को उत्सुक, परन्तु निजी परिवार के सुख में कमी, अपनी पत्नी के साथ भी विचारों में मतभेद एवं कटुता होने के योग। ऐसा जातक अभिनय, संगीत, नाट्य कला आदि के द्वारा फिल्मों, दूरदर्शन, ब्यूटी पार्लर या दन्त विशेषज्ञ आदि द्वारा भी अच्छी ख्याति एवं धनार्जन कर लेता है। देखें उदा. कुं. नं. 81

तृतीय भाव-में मित्र ग्रह की राशि मकर पर शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई कम तथा बहनें अधिक होती हैं। जातक मधुरभाषी, विलासप्रिय, कामुक एवं हमेशा सज-धज कर रहने की प्रवृत्ति, सन्तान सुख विलम्ब से होता। भाग्य में अनेक परेशानियां एवं उतार-चढ़ाव के बाद सफलता मिलती है। जातक गुप्त युक्तियों का प्रयोग करते हुए निज पुरुषार्थ द्वारा निर्वाह योग्य धनार्जन कर लेता है। पत्नी सुन्दर, सुशील एवं परिवार से सहयोग करने वाली होगी। देखें उदा. कुं. नं. 78

चतुर्थ भाव-में कुम्भ राशि पर शुक्र होने से जातक दीर्घायु, पराक्रमी, यशस्वी, विद्वान, सभा में बोलने में चतुर, जातक को बन्धु सुख, मित्र सुख, भूमि, मकान, वाहन, चौपाय आदि सुखों की प्राप्ति, जातक में भोग विलास की प्रवृत्ति और कामुकता अधिक होती है। पिता को कष्ट अथवा पैतृक सुख में कमी होती है। व्यवसाय में दौड़ धूप अधिक रहती है। देखें उदा. कुं. नं. 84। किसी स्त्री की कुण्डली में चतुर्थ भावस्थ शुक्र होने से उसको घर की सज्जा सजावट में विशेष अभिरुचि रहती है।

पंचम भाव-में मीन (उच्च) राशि में शुक्र होने से जातक किसी विशिष्ठ हस्त शिल्प-कला में कुशल, उच्च विद्या एवं पुत्र/संतान सम्बन्धी सुखों में कुछ कमी रहती है। ऐसा जातक व्यवहार-कुशल, पुत्र कम एवं प्रथम कन्या सन्तति की सम्भावना, अच्छा मित्र, प्रेम-प्रणय में सफल, अच्छा परामर्शदाता, जातक हंसमुख, मिलनसार, वाक्‌चातुर्य से काम निकालने वाला, परन्तु पत्नी से सुख व सहयोग प्राप्त करने वाला, व्यसवाय में भी अड़चनों के साथ धनार्जन करने वाला होता है। यदि यहां बुध (नीच) का भी योग हो, तो की जातक पुस्तक निर्माण एवं ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि में भी रूचि रखता है, परन्तु व्यवसाय में अस्थिरता भी रहती है। देखें उदा. कुं. नं. 75 तथा 82

छठे भाव-में मेष राशि पर शुक्र होने से जातक का अस्वस्थ शरीर परंतु बुद्धिमान पत्नी का सुख कम मिलता है अथवा पत्नी भी रोगिणी रहे। प्रत्येक कार्य में बाधाएं आती हैं। बाहरी तौर पर मित्र दिखने वाले भी परोक्ष रूप से हानि पहुंचाते हैं। पति-पत्नी के विचारों में मतान्तर हो, सन्तान सुख में भी बाधा सम्भव है। अनावश्यक खर्च अधिक हों। यदि

यहां शुक्र के साथ राहु, मंगल, शनि आदि अशुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो, तो नेत्र रोग अथवा अधिक विषय भोग करने से मूत्र विकार, मधुमेह, प्रमेह, गले के रोग अथवा गुप्त रोग आदि का सम्भावना होती है। जातक सुरा-सुन्दरी (शराब), विलासादि कार्यों पर अधिक खर्च करने वाला होता है।

सप्तम भाव-में स्वगृही वृष राशि पर शुक्र होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिभाशाली, कार्य कुशल, उच्चस्तरीय, रहन-सहन, गायन, संगीत, कला एवं साहित्य के प्रति अभिरुचि होती है। ऐसा जातक विलास प्रिय, कामुक एवं आराम पसंद होता है। विपरीत सैक्स के प्रति विशेष आकर्षण रखे। पत्नी सुन्दर एवं सुशील हो। विवाह के बाद मकान, वस्त्र, आभूषण एवं वाहन आदि सुख साधनों में विशेष वृद्धि हों, परन्तु प्रदर्शनकार्यों, खान-पान, भोग विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक रहे। व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष के बाद सफलता हो। देखें उदा. कुं. नं. 77

यहां चन्द्र, बुधादि ग्रहों का योग हो तो जातक का भाग्य विदेश में सफल होता है। शुक्र यदि शनि, राहु या भौमादि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो प्रमेह, कमर पीड़ा, मधुमेह आदि गुप्त रोग होने का भय हो।

अष्टम भाव-में मित्र मिथुन राशि पर शुक्र होने से जातक के स्वास्थ्य की हानि, परिवारिक उलझनों एवं परेशानियों के कारण चिन्तित, व्यवसाय में गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन बन जाते हैं। ज्योतिष, मंत्र आदि विषयों में रूचि, पत्नी का सुख भी विशेष नहीं हो पाता, परस्पर वाद-विवाद के कारण असंतोष एवं वैमनस्य हो, अनावश्यक खर्च अधिक रहें, प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाओं का सामना हो। 37 वर्ष की आयु के बाद सुख साधन प्राप्त हों। शनि, भौम, राहु आदि ग्रहों की दृष्टि, योग से गुप्त रोग भय एवं स्त्री सुख में कमी हो। देखें उदा. कुं. 76

नवम भाव-में कर्क राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक धार्मिक एवं लोक हितकारी कार्यों में भी धन का खर्च करता है। जातक भूमि, वाहन, वस्त्र-आभूषणों आदि सुख साधनों पर अधिक खर्च करने वाला, स्त्री एवं गृहस्थ के सम्बन्ध में परेशानियों का सामना रहे। भाई-बहनों का सुख साधारण रहता है। ट्रांस्पोर्ट, फिल्म, टैलीविजन, कास्मैटिक्स क्षेत्रों में सफल, विवाह के पश्चात् भाग्य में विशेष परिवर्तन हों। ऐसा जातक निज उद्योग एवं पुरुषार्थ से धन लाभ एवं उन्नति करने वाला, दीर्घ यात्राएं करने के भी अवसर प्राप्त होते हैं। विदेश गमन से भाग्योन्नति के योग।

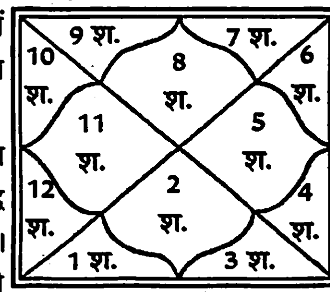
दशम भाव-में सिंह राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, किन्तु चतुर बुद्धि, स्वाभिमानी, प्रियभाषी, प्रदर्शन प्रिय, स्त्री सुख से समन्वित, आभूषण, वस्त्र, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त अत्यधिक व्यय करने वाला, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिले, विवाह के बाद व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त हो, ट्रांसपोर्ट, तैल, फिल्म, टैलीविजन, संगीत, कला आदि क्षेत्रों में भी संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त हो, यदि शुक्र राहु, शनि, गुरु आदि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो गृहस्थ सुख में कटुता पैदा हो।

एकादश भाव-में कन्या राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक तीव्र बुद्धिमान, प्रभावशाली व्यक्तित्व, यशस्वी, उच्च विद्या, धर्म-परायण एवं परोपकारी स्वभाव परन्तु कामुक प्रवृत्ति वाला होता है। विपरीत योनि के प्रति विशेष आकर्षण होता है तथा जातक स्त्रियों के साथ मेल-जोल अधिक रखता है। स्त्री सुन्दर, सुशील एवं गुणवान होती है। कार्य व्यवसाय में स्त्री का सहयोग भी रहता है। परन्तु व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष एवं परिश्रम के बावजूद बहुत अधिक लाभ नहीं हो पाता। ऐसा जातक अनेक मित्रों से युक्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 74

द्वादश भाव-में तुला राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक स्वेच्छाचारी, कामुक प्रवृत्ति, कल्पनाशील, चंचल एवं अस्थिर मन वाला होता है। धन-धान्य एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है। विभिन्न प्रकार की गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है परन्तु भोग-विलास एवं पर स्त्रियों पर अत्यधिक खर्च करने वाला होता है। अपनी पत्नी की भावनाओं के प्रति लापरवाह होता है। शराब आदि मादक वस्तुओं के सेवन की ओर प्रवृत्ति, कार्य क्षेत्र में परेशानियों के साथ सफलता मिले। आय के साथ-साथ खर्च विशेष अधिक रहते हैं। देखें उदा. कुं. 85। यदि यहां शुक्र के साथ सूर्य, गुरु, शनि आदि ग्रह हों तो अशुभ प्रभाव कम होते हैं। देखें उदा. कुं. नं. 83

बृश्चिक लग्न गत द्वादश भावों में शनि का फल

बृश्चिक लग्ने शनि फल



नोटः बृश्चिक कुण्डली में शनि पराक्रम और सुख भाव का स्वामी होने से जातक को बहन-भाइयों एवं भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों को प्रदान करता है। इस लग्न में शनि ३, ४, ८ एवं १२वें भावों में शुभ फल करता है। शनि के साथ अन्य ग्रहों का योग एवं दृष्टि आदि का विचार भी कर लेना उचित होगा।

प्रथम भाव-में बृश्चिक राशि पर शनि के प्रभाव से जातक परेशान एवं अशान्त चित्त, उतावला, कठोर हृदय, साहसी, बाल्यकाल में अस्वस्थ शरीर, परन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ सुधार हो। ऐसे जातक का अधिकांश समय भ्रमण में व्यतीत होता है। जातक स्वावलम्बी, भाई-बहन होने पर भी उनके सुख में कमी, पिता के भी सुख में भी कमी अथवा शरीर कष्ट हो, व्यवसाय के क्षेत्र में भी विघ्न-बाधाएं अधिक हों। जातक रबड़, तैल, लौहादि धातु आदि कार्यों में अधिक सफल रहे। यदि अशुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो जातक को चर्म रोग, चक्षु पीड़ा, गुप्त रोग, व्यसैन भय, संकीर्ण विचारों वाला, द्वेषी, आजीविका के क्षेत्र में अत्यधिक संघर्ष रहें, खर्च बहुत हों, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें। यदि शनि गुरु आदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठत व्यक्ति, राजनेता, भूमि, वाहन, उच्च पदवी, स्त्री-संतान, वाहन आदि सुख-सुविधाओं से समन्वित होगा। देखें उदा. कुण्डली नं. 74 तथा 84

द्वितीय भाव-में धनु राशि पर शनि होने से जातक परिश्रमी, बुद्धिमान, स्वाभिमानी, स्पष्टवक्ता, निज पुरुषार्थ के बल पर जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, भ्रातृ सुख में कमी, परिवारिक सुख भी अड़चनों के बाद प्राप्त होता है। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना होता है। कई बार उचित अवसरों का लाभ न उठाने वाला होगा। गुप्त युक्तियों से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहते हैं। जीवन में उतार चढ़ाव एवं संघर्ष अधिक रहता है। यद्यपि जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होता है। यदि शनि यहां अन्य क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक कटु-भाषी, मुखरोगी, आर्थिक एवं गृहस्थ जीवन में दुखी एवं असंतुष्ट होता है। ऐसा जातक विदेश में अधिक सफल होता है। चमड़ा, मशीनरी, तैल आदि के व्यापार से लाभ होता है।

तृतीय भाव-में स्वगृही मकर राशि पर शनि होने से जातक कुशाग्र बुद्धिवाला, भाई बहनों के सुख से युक्त, परन्तु स्वावलम्बी, साहसी एवं अपने पुरुषार्थ से निर्वाह योग्य धनार्जन करने वाला परन्तु व्यवसाय में दौड़ धूप अधिक रहे। वृथा अपव्यय भी बहुत हों। यात्राएं (भ्रमण) अधिक रहें, भाग्य में कठिनाइयों के बाद सफलता मिले, सन्तान-सुख में भी परेशानियां रहें, विदेश आदि सम्बनधों से विशेष लाभ होने की सम्भावनाएं होंगी। ऐसे जातक को तंत्र-मंत्र, ज्योतिष आदि विद्याओं में भी रूचि होती है।

चतुर्थ भाव-में स्वगृही कुम्भ राशि में शनि होने से जातक परिश्रमी, गम्भीर, बुद्धिमान, परन्तु शारीरिक सुख में कुछ कमी हो, भाई-बहन के सुख से युक्त तथा भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, परन्तु परिवारिक सुख में कुछ कमी रहे, पैतृक सम्पत्ति का सुख भी कम मिले, व्यवसाय में भी कठिन परिस्थितियों के बाद जीवन के उत्तरार्ध भाग में जातक को सुख के साधन के मिलते हैं, परन्तु जातक स्वयं कुछ दयालु एवं परोपकारी प्रवृत्ति का हो जाता है। जातक विदेश गमन करता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 77 तथा 85 परन्तु वक्री होकर अस्तंगत हो या अन्य पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को उदर रोग, पाचन प्रक्रिया सम्बन्धी कष्ट एवं हृदय रोग की आशंका होती है।

पंचम भाव-में मीन राशि पर शनि होने से जातक गम्भीर प्रकृति वाला, परोपकारी एवं बुद्धिमान किंतु अस्थिर विचार हों, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहें, परन्तु ऐसा जातक स्वाभिमानी, अनुसन्धान आदि कार्यों में कुशल, यात्राओं आदि से लाभ, व्यवसाय में कठिनाइयों के बाद सफलता, अल्प सन्तति सुख अथवा सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहे, सट्टा, शेयर, लाटरी, ज्योतिष, मंत्र-तंत्र आदि विषयों में भी रूचि हो, स्त्री को कष्ट अथवा स्त्री सुख में कुछ कमी रहे।

यदि शनि के साथ गुरु का योग या दृष्टि हो तो शुभ फल अधिक होते हैं। यदि शनि पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक कामुक, अस्थिर बुद्धि, गुप्त रोगी, उदर-रोगी या हृदय आदि रोग का भय होता है।

षष्ठ भाव-में मेष (नीच) राशि में शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बन्धुओं का सुख सामान्य मिलता है। माता को कष्ट अथवा मातृ पक्ष (मामा आदि) के सुख में भी कमी होती है। भूमि, मकान आदि के सम्बन्ध में झगड़े या मुकद्दमा आदि का भय हो, आकस्मिक चोट या दुर्घटना आदि के कारण शरीर कष्ट एवं गुप्त रोग का भय हो। जातक अत्यधिक संघर्ष एवं गुप्त युक्तियों से धनार्जन करता है। ऐसे जातक को निजी व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना अधिक लाभप्रद रहता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 78 तथा 83

सप्तम भाव-में वृष राशि में शनि के प्रभाव से जातक को विवाह में विलम्ब या दाम्पत्य जीवन में सुख की कमी हो, शनि की लग्न व भाग्य स्थान पर दृष्टि पड़ने जातक का स्वास्थ्य अस्थिर एवं खराब रहता है, तथा जातक छोटी-छोटी बातों के कारण चिन्तित रहता है। स्त्री सम्बन्धी कष्ट, भाग्य में अस्थिरता एवं व्यवसाय में भी संघर्ष अधिक रहता है। वृथा खर्च भी अधिक होते हैं। यदि शनि के साथ चन्द्र का योग हो और गुरु की दृष्टि हो तो प्रथम पत्नी की मृत्यु होकर जातक का दूसरा विवाह होता है। 36वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति होती है। देखें उदा. कुं. नं. 75

मतान्तर से सप्तम भावस्थ शनि निष्फल प्रभाव वाला माना गया है।

अष्टम भाव-में मिथुन राशि पर शनि होने से जातक/जातिका सूक्ष्म बुद्धि, अधूरी शिक्षा अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त होने पर भी उसका विशेष लाभ नहीं मिल पाता, जातक भ्रमणप्रिय, शंकालु एवं अस्थिर बुद्धि एवं अशांत मन वाला होगा। भाई, बहिनों एवं पितृ पक्ष के सुख में कमी, अल्प सन्तति अथवा सन्तान सुख में कमी हो, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं एवं अड़चनें अधिक होंगी, खर्च भी अधिक होंगे। यदि पंचमेश गुरु की स्थिति शुभ हो, तो उच्च शिक्षा एवं संतान सुख अच्छा होता है। ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि गूढ़ विषयों की ओर रूचि हो। यदि मंगल, राहु आदि ग्रहों का योग या दृष्टि हो, तो जातक को विवाह उपरांत कठिनाईयां अधिक हों तथा गुप्त रोग, आप्रेशन एवं दुर्घटना आदि का भय हो। देखें उदा. कुं. नं. 79 एवं 82

नवम भाव-में कर्क राशि पर शनि के प्रभाव से जातक उद्यमी, परिश्रमी, उदार हृदय, धर्मात्मा, परोपकारी, भ्रमणकारी तथा निज उद्यम एवं पुरुषार्थ से व्यवसाय में धन लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, भाई-बहिन एवं माता, भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होता है, व्यय भी विशेष अधिक होता है। कुण्डली में यदि चन्द्र व गुरु भी शुभस्थ हों, तो जातक भाग्यशाली, उच्च विद्या, सुन्दर व सुशील स्त्री व सन्तान, धन, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। इसके भाग्योदय में प्रायः स्त्रियां सहायक सिद्ध होती हैं। विदेश में भाग्योदय होने की अधिक सम्भावना होती है। जातक को कम्पयूटर, ज्योतिष, धर्म, मंत्र आदि विषयों में भी रुझान होता है।

दशम भाव-में सिंह राशि पर शनि के प्रभाव से जातक को मकान, भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति संघर्ष के बाद होती है। व्यवसाय में भी आय कम तथा खर्च अधिक होते हैं। विघ्न/बाधाएं अधिक होती हैं। पैतृक सुख विशेष नहीं होता। जातक परिश्रमी एवं संघर्षशील होता है। भाई/बहिन होने पर भी उनके सुख में कमी होती है। यदि गुरु, चन्द्रादि का योग या दृष्टि हो, तो गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहते हैं किन्तु यदि शनि वक्री, अस्त या पापग्रह दृष्ट हो, तो शनि की दशा में व्यवसाय में धन हानि, माता/पिता को कष्ट आदि दुख होते हैं।

एकादश भाव-में कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक पराक्रमी, साहसी, मेहनती तथा अपने परिश्रम के बल पर उच्च विद्या, कैरियर एवं व्यवसाय में धीरे-धीरे धन लाभ एवं उन्नति प्राप्त करता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से लग्न भाव (बृश्चिक) को देखता है, जिससे जातक के स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कुछ कमी होती है। परन्तु उसे भाई-बहिन, माता एवं भूमि-मकान, वाहन व दीर्घायु आदि सुखों की प्राप्ति होती है तथा उच्च विद्या एवं सन्तान आदि का सुख कुछ कठिनाईयों के बाद प्राप्त होता है। यदि कुण्डली में गुरु की स्थिति शुभ हो, तो उच्च शिक्षा एवं सन्तान सुख अच्छा मिलता है। ऐसा जातक तकनीकि व्यवसाय एवं विदेश आदि क्षेत्रों भी सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 81

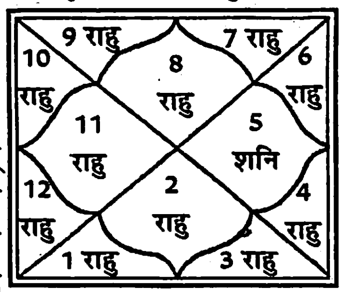
द्वादश भाव- में तुला राशिगत (उच्च राशि) में शनि होने से जातक सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, चतुर एवं कुशाग्र बुद्धि, उद्यमी, भ्रमणशील, परिवारिक सुख में कुछ कमी परन्तु भाई-बहिनों एवं माता का सुख यथेष्ठ होता है। भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति कुछ कठिनाईयों के बाद होती है। लघु एवं दीर्घ लाभाकारी यात्राएं होती हैं। परिवारिक एवं व्यवसाय सम्बन्धी खर्च भी बहुत अधिक होंगे। यदि धनेश गुरु भी शुभस्थ हो, तो विभिन्न योजनाओं एवं युक्तियों द्वारा धनार्जन भी अच्छा होता है। ऐसे जातक को ज्योतिष, धर्म, मंत्र, तंत्र आदि गूढ़ विद्याओं की ओर भी विशेष रूचि होगी। देखें उदाहरण कुं. नं. 80

यदि शनि के साथ चन्द्र, भौम का भी योग/दृष्टि का सम्बन्ध हो जातक का विदेश में भाग्योदय होता है। देखें उदा. कुं. नं. 76

बृश्चिक लग्न-द्वादश भावों में राहु का फल

नोटः बृश्चिक लग्न में अकेले राहु के फल का निर्णय करते समय राहु के साथ अन्य ग्रहों के योग व उस पर दृष्टि आदि का भी विवेचन करना युक्ति संगत होगा-

बृश्चिक लग्ने राहु फल



प्रथम भाव-में बृश्चिक राशि पर राहु होने से जातक/जातिका परिश्रमी, साहसी, स्वाभिमानी, कुछ तेज स्वभाव, लम्बा कद, किन्तु स्वास्थ्य और सौन्दर्य में कमी होती है, जातक स्वार्थ पूर्ति कराने में चतुर होता है। ऐसा जातक अपनी धुन का पक्का, अर्थात् अपने वचन का पालन करने वाला, स्वतंत्र विचारक, भौतिक उन्नति के लिए अत्यधिक कठिन परिश्रम करने वाला, शरीर में क्लिष्ट रोगों के कारण चिन्तित, मस्तिष्क रोग का भय, कभी-कभी उसे मृत्यु तुल्य कष्ट का भी सामना करना पड़ता है। परिवारिक जीवन भी परेशानी युक्त होता है। व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष एवं गुप्त-युक्तियों से धनार्जन करने वाला होता है। आकस्मिक खर्च अधिक होते हैं। शरीर कष्ट भी अधिक होता है। देखें उदा. कुं. 79 तथा 84

द्वितीय भाव-में धनु राशि पर राहु होने से जातक को राहु की दशा/अन्तर्दशा में अपने कुटुम्ब के सम्बन्ध में चिन्ता एवं आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। व्यवसाय में धनार्जन के लिए भी कठिन परिश्रम एवं संघर्ष करने वाला तथा अनेक प्रकार की गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। नाक, मुख, गला एवं श्वास एवं घुटनों आदि में कष्ट की सम्भावना होती है। राहु की दशा अवधि में अत्यधिक दौड़धूप एवं परिश्रम के बावजूद अधिक लाभ एवं धन संचय नहीं हो पाए। यदि गुरु शुभस्थ हो, तो उसकी दशा में समुचित धन लाभ तथा भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। अपने जन्म से अतिरिक्त विदेश में भाग्योन्नति होती है। ऐसे जातक को धर्म, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि विषयों में भी रूचि होती है। देखें उदा. कुं. नं. 76 तथा कुं. नं. 80

तृतीय भाव-में मकर राशि पर राहु होने से जातक पराक्रमी, उद्यमशील, परिश्रमी, भ्रमणशील तथा जातक अपने निज उद्यम द्वारा कठिन परिस्थितियों में भी धनोपार्जन करने वाला, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, लघु भ्रातृ सुख में कमी होती है अथवा भाई/बहिनों के सहयोग में कमी होती है। ऐसे जातक को भ्रमण करने के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। विदेश भ्रमण से भी लाभान्वित होने की सम्भावना हो। सप्तम भाव पर दृष्टि होने से तथा शुक्र भी अशुभस्थ हो, तो स्त्री सुख में कमी एवं दाम्पत्य जीवन असुखद होता है। देखें उदा. कुं. नं. 84। ऐसे जातक को पत्रकारिता, ज्योतिष, मंत्र-तंत्र आदि विषयों का ज्ञान भी होता है। सामान्यतः 3, 6 एवं 11वें भावों में राहु, शनि एवं भौम अनेक अरिष्टों का नाश करके सुखों में वृद्धिकारक माने जाते हैं।

चतुर्थ भाव-में कुम्भ राशि पर राहु होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, धर्मपरायण एवं परोपकारी स्वभाव का होता है। अपने धैर्य एवं पराक्रम द्वारा व्यवसाय में निर्वाह योग्य धनार्जन कर लेता है। परन्तु ऐसे जातक को माता/पिता, भूमि, मकान आदि के सुखों में कुछ कमी रहती है। परिवारिक एवं घरेलू वातावरण भी परेशानियों से युक्त रहता है। देखें उदा. कुं. 75। विवाह आदि घरेलू सुखों में विलम्ब होता है। देखें उदा. कुं. 83। यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र या शनि

अशुभस्थ हों, तो माता/पिता में से एक की अकाल मृत्यु (या मृत्यु तुल्य कष्ट) बचपन में होती है।

पंचम भाव-में मीन राशि पर राहु होने से जातक तीव्र बुद्धि, उच्च विद्या में विघ्नों एवं कठिनाईयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। जातक व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहती है। प्रथम सन्तान प्रायः कन्या सन्तति होती है। गुरु, सूर्य आदि ग्रह शुभ हों, तो पुत्र सन्तति होती है। ऐसे जातक को धर्म, ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, शेयरों आदि में भी विशेष रूचि होती है।

षष्ठ भाव-में मेष राशि पर राहु होने से जातक पराक्रमी, साहसी, अस्थिर बुद्धि और चतुर प्रकृति का होता है। ऐसा जातक शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। विलास, ऐश्वर्य आदि कार्यों पर अधिक खर्च करने वाला होता है। यदि राहु के साथ शनि आदि अशुभ ग्रह का योग हो, तो जातक व्यसनों आदि से ग्रस्त, शिर पीड़ा, दांत एवं नेत्रादि रोग से पीड़ित होता है।

सामान्यतः छटे राहु अरिष्ट नाशक माना जाता है।

सप्तम भाव-में वृष राशि पर राहु के प्रभाव से जातक साहसी, धैर्यवान तथा कुशल बुद्धि वाला होता है। व्यवसाय में अत्यन्त विषम परिस्थितियों एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु जातक अपने गुणों एवं चातुर्य से सफलता प्राप्त करता है। स्त्री सुख में अड़चनें या विलम्ब होता है। देखें उदाहरण कुं.नं. 74

यदि सप्तमेश शुक्र 2, 6, 8 या 12वें भावों में हो, तो जातक को प्रमेह, मधुमेह एवं गुप्त रोगों का भय होता है।

अष्टम भाव-में मिथुन राशि पर राहु होने से जातक बुद्धिमान, स्वाभिमानी, साहसी, दीर्घायु तथा विभिन्न स्रोतों एवं गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, स्पष्टवादी परन्तु अपनी कार्य प्रणाली को गुप्त रखने में कुशल, प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों से युक्त होगा। गुरु युक्त या दृष्ट हों, तो ऐसा जातक जीवन में धीरे-धीरे लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। उत्तरार्ध भाग में भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त होगा। यदि राहु के साथ शनि, मंगल ग्रहों का भी योग हो, तो जातक को गले, छाती एवं पेट सम्बन्धी रोग भय हो। जातक को मंत्र, धर्म, ज्योतिष आदि विषयों में भी विशेष रूचि होती है। देखें उदा. कुं. नं. 77 तथा 82

नवम भाव-में कर्क राशि पर राहु होने से जातक की भाग्योन्नति में बार-बार विघ्न/बाधाएं उत्पन्न होती रहती हैं, फिर भी ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं साहस से निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। जातक उदार ह्रदय, परोपकारी एवं भ्रमण आदि पर अधिक खर्च करने वाला होता है। यदि यहां कर्क राशि पर गुरु, चन्द्र आदि का योग हो तो जातक विदेश गमन से विशेष लाभान्वित होता है।

दशम भाव-में सिंह राशि पर राहु होने से जातक उच्च शिक्षित, अत्यन्त बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी एवं परिश्रमी होता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं उद्यम द्वारा उच्च प्रतिष्ठा एवं उच्च पद प्राप्त कर लेता है। प्रारम्भिक अवस्था में व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु ऐसा जातक अपने बुद्धि चातुर्य एवं मेहनत से लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक राजनीति में भी विशेष रूचि रखने वाला एवं 42वें वर्ष भाग्योदय होता है। जातक उच्च शिक्षक, प्राध्यापक, उच्च-प्रतिष्ठित सरकारी अफसर आदि हो सकता है। पिता को कष्ट अथवा पिता के सुख में कमी रहती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 78

इसके साथ गुरु-मंगल का योग हो, तो दन्त चिकित्सा, मैडीकल विभाग आदि में सफल होता है। देखें उदा. कुं.नं. 81

एकादश भाव-में कन्या राशि पर राहु होने से जातक बुद्धिमान, उच्चाकांक्षी, परिश्रमी तथा बाधाओं के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। ऐसा जातक स्वावलम्बी तथा गुप्त युक्तियों एवं बौद्धिक कार्यों द्वारा धनार्जन करने में सफल होता है। अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए कई बार उचित/अनुचित ढंगों का भी प्रयोग कर लेता है। ऐसे जातक को शेयर, सट्टा, लाटरी, ज्योतिष, योग, मंत्र, तंत्र आदि विद्याओं की ओर भी रूचि रहती है। मकान, वाहन एवं सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। गुरु शुभस्थ हो तो पुत्र सन्तति भी होती है। सामान्यतः एकादश भाव में राहु लाटरी आदि से

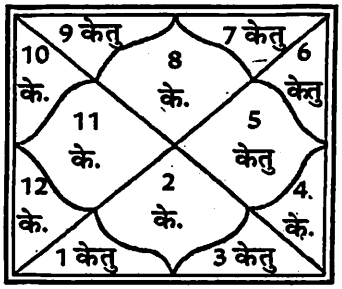
आकस्मिक धन लाभ भी करवा देता है तथा यहां राहु सर्वारिष्ट नाशक माना जाता है।

द्वादश भाव-में तुला राशि में राहु के प्रभाव से जातक स्वछन्द प्रकृति का, भावुक, विलास प्रिय एवं स्वतंत्र विचारों वाला होगा। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, परन्तु वृथा खर्च भी अधिक करने वाला होता है। अत्यधिक खर्च के कारण कई बार आर्थिक संकटों का भी सामना करना पड़ता है। ज्योतिष, मंत्र-तंत्र एवं योगादि विद्याओं की ओर भी विशेष रूचि रहे। गुप्त रोग एवं वायु प्रकोप तथा शत्रुओं के कारण मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ताएं बनी रहती हैं। यदि कुण्डली में गुरु, चन्द्र, सूर्यादि ग्रह शुभस्थ हों, तो जातक को देशान्तर (विदेश) सम्बन्धी कार्यों से भी लाभ होने के योग होते हैं।

बृश्चिक लग्न : द्वादश भावों में केतु का फल

नोट : अकेले केतु ग्रह के फल का निर्णय करते समय, अन्य सभी ग्रहों के तुलनात्मक प्रभाव का भी विवेचन कर लिया जाए, तो फल कथन में स्पष्टता प्राप्त होगी।

बृश्चिक लग्ने, केतु फल



प्रथम भाव-में बृश्चिक राशि पर केतु होने से जातक शीघ्र उत्तेजित होने वाला, क्रोधी, बातचीत करने में चतुर, कृश शरीर, व्यवहार कुशल, मेहनती तथा जातक व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करता है। सांझेदारी के कामों में हानि, वैवाहिक सुख में कमी अथवा विलम्ब हो। चेहरे पर कोई चोटादि का चिन्ह हो। कमर में दर्द या पेट में विकार एवं हाथों में पसीना आने के संकेत, यदि भौम, गुरु आदि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक भूमि, मकान, स्त्री, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 74

द्वितीय भाव-में धनु राशि पर केतु होने में जातक तीव्र बुद्धिमान, परिश्रमी, परन्तु कटु वक्ता, अनेक गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, विघ्नों के बाद उच्च विद्या प्राप्ति, परिवारिक सुख में कुछ कमी रहे। धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं में रूचि रहे। ऐसा जातक व्यवसाय में कई बार धोखा एवं अनीतिपूर्वक आचरण भी करता है। देखें उदा. कुं.नं. 82। यदि यहां केतु गुरु द्वारा दृष्ट हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित, शिक्षित एवं व्यवसायिक विद्या द्वारा समुचित धनार्जन करता है। आवास, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 77। ऐसा जातक बैंकिंग, फाईनैंस आदि कार्यों से भी सम्बन्धित होता है।

तृतीय भाव-में मकर राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, साहसी एवं भ्रमणशील होता है। भाई-बन्धुओं के सुख में कमी रहे, नेत्र पीड़ा एवं कर्ण रोग का भय हो। बाजूओं पर या हाथ पर तिल या चोटादि का निशान हो। कार्य-व्यवसाय में अत्यधिक परिश्रमी एवं दौड़-धूप अधिक रहे तथा परिश्रम के अनुसार विशेष धन लाभ न हो पाए, ज्योतिष, योग आदि गूढ़ विषयों में रूचि रहे, खर्च अधिक रहे तथा भाग्योन्नति में बार-बार विघ्न रहे। यदि यहां भौम या गुरु आदि शुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो, तो जातक को भूमि, आवास, वाहन एवं स्त्री सुख आदि प्राप्त होते हैं।

चतुर्थ भाव-में कुम्भ राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, उच्चाभिलाषी तथा कार्य/व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष करने वाला उद्यमशील होता है, परन्तु जातक को मनोवांछित सफलता नहीं मिलती। मन अशांत रहता है। मातृ एवं पैतृक सम्पत्ति व सुखों में कमी रहे। ऐसा जातक अपनी पैतृक भूमि से अन्यत्र स्थान (विदेश आदि) में भाग्योन्नति एवं लाभ प्राप्त करता है। मंगल, गुरु भी शुभस्थ हों, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। देखें उदा. कुं. 78, तथा 81।

पंचम भाव-में मीन राशि पर केतु होने से जातक तीव्र बुद्धि, दृढ़ निश्चयी, अपनी धुन का पक्का, परिश्रमी एवं साहसी प्रकृति का होता है। उच्च विद्या में विघ्न/बाधाओं के बाद सफलता प्राप्त करने वाला तथा गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। शेयर्ज़, लाटरी, सट्टा आदि द्वारा आकस्मिक धन लाभ की भी सम्भावना, स्त्री एवं सन्तान

सम्बन्धी विशेष चिन्ता हो, ज्योतिष, योग, धर्म, मंत्र, तंत्रादि गूढ़ विषयों की ओर भी रूचि रखे।

षष्ठ भाव-में मेष राशि पर केतु होने से जातक तेज बुद्धि, परिश्रमी, परन्तु अस्थिर स्वभाव वाला, भावुक, कामुक एवं विलास आदि वस्तुओं पर अधिक खर्च करने वाला, मातुल पक्ष (नानके, मामे आदि) के सुख में कमी, शत्रुनाशक, मुकदमे, झगड़े आदि में विरोधी/शत्रु पर विजय पाने वाला, व्यवसाय में कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। केतु यदि शनि युक्त हो, तो जातक मिथ्याभिमानी, वृथा दौड़ धूप एवं अकारण भटकने वाला, व्यसनों से ग्रस्त निन्द्य कर्म करने वाला होता है। यदि मंगल युक्त हो, तो जातक साहसी, पराक्रमी और दूसरों को तुच्छ एवं स्वयं को महान् समझने वाला होता है।

सप्तम भाव-में वृष राशि पर केतु होने से जातक अत्यन्त परिश्रमी, स्वास्थ्य एवं शारीरिक सौन्दर्य में कमी हो, जातक कुछ चिड़चिड़े स्वभाव, अशान्त मन, कामुक एवं विलासप्रिय प्रकृति का होता है। दाम्पत्य सुख में कमी अथवा विवाह आदि सुख में विलम्ब एवं विघ्न होते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यन्त कठिन परिस्थितियों एवं परेशानियों का सामना रहता है। ऐसा जातक अपने निश्चय का पक्का और स्वार्थ पूरा करवाने में कुशल होता है। देखें. उदा. कुं. नं. 84। केतु के साथ सूर्य, भौमादि ग्रह योग या दृष्टि हो, तो जातक को स्वयं विचित्र एवं गुप्त रोग, पेट विकार तथा स्त्री को कष्ट आदि का भय होता है। देखें. उदा. कुं. नं. 79

अष्टम भाव-में मिथुन पर केतु होने से जातक उच्चाभिलाषी, अस्वस्थ, परिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण चिन्ताओं का सामना रहे। जीवन का प्रथम भाग विशेषकर संघर्षपूर्ण रहे। जीवन निर्वाह के लिए अत्यन्त कठिन परिश्रम एवं संघर्ष का सामना रहता है। जातक अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है। देखें. कुण्डली 76, 80। यदि केतु शनि, मंगल आदि ग्रहों से पीड़ित हो तो दुर्घटना से चोट आदि का भय हो। जातक को दन्त पीड़ा, रक्त विकार एवं किसी गुप्त रोग का भय हो। स्त्री कुण्डली में मासिक धर्म में गड़बड़ी या खराबी के संकेत हैं।

नवम भाव-में कर्क राशि पर केतु होने से जातक को अपने व्यवसाय एवं भाग्योन्नति के लिए अत्यन्त कठिन परेशिानियों का सामना करना पड़ता है। धनार्जन के लिए दौड़-धूप अधिक करनी पड़ती है। देश-विदेश में दूर-दूर तक भ्रमण के अवसर प्राप्त होते हैं। बाह्य तौर पर जातक धार्मिक होता है। भाई/बन्धुओं के सुख में कमी होती है। भाग्य में अनेक बार उतार-चढ़ाव पैदा होते हैं। परन्तु जातक अपनी हिम्मत एवं उत्साह नहीं छोड़ता। शुक्र अशुभ भावस्थ या अस्तगत हो तो पत्नी (स्त्री) के कारण परेशानियों का सामना होता है। ऐसा जातक कभी-कभी गम्भीर संकटों में भी फंस जाता है।

दशम भाव-में सिंह राशि पर केतु होने से जातक गुणी, धार्मिक आस्थावान्, तेजस्वी, परोपकारी एवं सरल हृदय होता है। आरम्भिक अवस्था अत्यन्त संघर्षपूर्ण होती है। आय के साधनों में अस्थिरता रहती है। पिता को अरिष्टकर अथवा पिता द्वारा सुख में कमी होती है। व्यवसाय में भी विघ्न/बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जातक का भाग्योदय अपने जन्म स्थान से अतिरिक्त स्थान पर होता है। व्यवसायिक एवं घरेलू जीवन में भी परेशानियां एवं अशान्ति अधिक रहती है। सूर्य व चन्द्र भी अशुभस्थ हो, तो जातक के माता/पिता में से, किसी एक की अपमृत्यु बचपन में होती है। ऐसे जातक को धर्म, ज्योतिष, तन्त्र आदि विद्याओं का भी ज्ञान होता है। देखें उदा. कुं. नं. 75 तथा 83

एकादश भाव-में कन्या राशि पर केतु के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, परोपकारी एवं परिश्रमी होने पर व्यवसाय में विशेष लाभ एवं उन्नति नहीं प्राप्त कर सकता। जातक साधारण शिक्षित, उच्च शिक्षा प्राप्ति और धनार्जन में अनेक विघ्न/बाधाएं आती हैं। गुरु, चन्द्र शुभ हों, तो ऐसा जातक अपने गुणों एवं बुद्धि-चातुर्य द्वारा निर्वाह-योग्य कुछ आय के साधन बना लेता है। धन, भूमि, मकान, वाहन, शिक्षा, पुत्र सन्तति आदि सुखों का लाभ प्राप्त कर लेता है। जातक बौद्धिक कामों से विशेष लाभान्वित होता है। यदि चन्द्र, गुरु आदि ग्रह अशुभस्थ हों, तो आर्थिक एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता हो तथा जातक नासमझी के कारण अपनी ही हानि कर बैठता है। 35 वर्ष की आयु के बाद आर्थिक

स्थिति में सुधार आता है।

द्वादश भाव-में तुला राशि पर केतु के प्रभाव से जातक चंचल बुद्धि एवं अस्थिर प्रकृति, कामुक एवं शीघ्र क्रोध करने वाला होता है। परिवारिक एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में खर्च अधिक होते हैं। देश-प्रदेश की यात्राएं करने के अवसर भी प्राप्त होते हैं। जातक चुस्त, चालाक, व्यवहार कुशल एवं समयानुसार आचरण करने वाला होता है। यहां केतु, मंगल, शुक्र आदि ग्रहों से युक्त हो, तो जातक मनोरंजन, शराब-तम्बाकू आदि व्यसनों एवं सौन्दर्य, विलासादि कार्यों पर अधिक व्यय करता है। जातक को नेत्र, दन्त, शिरादि एवं उदर आदि रोगों का भी भय होता है। यदि केतु, गुरु युक्त या दृष्ट हो एवं धर्म कार्यों पर खर्च अधिक होते हैं।

नोट :-बृश्चिक लग्न में ग्रहों की स्थिति व विविध योगों के सम्बन्ध में उदाहरण कुण्डलियां आगामी पृष्ठों में देखें

बृश्चिक लग्न में द्वि एवं त्रिग्रहों के योगों का फल

बृश्चिक लग्न में शुभाशुभ योगों के फल का निर्णय करते समय योगकारक ग्रह की दशाऽन्तर दशा तथा उस ग्रह की तत्कालीन गोचर स्थिति को भी ध्यान में रखना चाहिए। बृश्चिक लग्न में कुछ विशेष ग्रह योग इस प्रकार से होंगे। अन्य सभी योगों के बारे में पुस्तक के अंत में अवलोकन करें :-

सूर्य-चन्द्र - भाग्येश व कर्मेश ग्रहों का यह योग अत्यन्त शुभ होता है। विशेषकर यह योग द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, नवम व दशम भावों में शुभ तथा शेष स्थानों में भाग्य की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता। शुभ भावस्थ इस योग के प्रभाव स्वरूप जातक उच्च प्रतिष्ठित, पराक्रमी, भाग्यवान, कुशल शिल्प व्यवसायी, भाग्यवश पैतृक धन सम्पदा एवं वाहनादि सुखों से युक्त होगा। ऐसा जातक लोहा, पत्थर आदि धातुओं से सम्बन्धित व्यवसाय से अच्छा लाभ उठा सकता है। जातक कार्य-कुशल, स्त्री के वशीभूत भी हो सकता है।

सूर्य-मंगल- लग्नेश व दशमेश का योग होने से जातक तेजस्वी, परिश्रमी एवं राजसिक प्रवृत्ति, साहसी तथा पिता से एवं सरकारी क्षेत्रों से सहायता व लाभ प्राप्त, अधिकार की भावना से युक्त परन्तु अपने भाई-बन्धुओं से प्रेम करने वाला होता है।

सूर्य-बुध- बृश्चिक लग्न में यह योग कर्मेश एवं लाभेश का सम्बन्ध होने से जातक विद्वान, धनी, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त एवं प्रतिष्ठित होता है। जातक निज पुरुषार्थ द्वारा धन लाभ व उन्नति करता है, परन्तु बुध अष्टमेश भी होने से सामान्यतः यह योग उच्च विद्या, कुशाग्र बुद्धि, उच्च व्यवसाय आदि प्रदान करता है। अत्यधिक संघर्ष के बाद लाभ देता है। पैतृक सुख में भी कमी करता है। देखें कुण्डली नं. 74, 76, 77 व 78।

सूर्य-गुरु- जातक उच्च शिक्षित, श्रेष्ठ परिवार वाला, अच्छे मित्रों से युक्त, धर्म परायण, परोपकारी, धर्म-ज्योतिष आदि शास्त्रों में रूचि रखने वाला, उच्च प्रतिष्ठित धन सम्पदा, वाहन आदि सुखों से युक्त होगा। देखें उदाहरण कुण्डली संख्या नं. 77

सूर्य-शुक्र- यदि यह योग 2, 3, 4, 7, 8, 11 या 12वें भावों में हो, तो जातक विलास प्रिय, कामुक एवं ऐश्वर्य युक्त वस्तुओं पर अधिक एवं वृथा खर्च करने वाला होता है। स्त्री को कष्ट अथवा स्त्री के कारण परेशानियों का सामना रहे। 1, 5, 9 या 10 भावों में यह योग हो, तो जातक को संगीत, कला, साहित्य एवं ज्योतिष आदि विषयों का ज्ञान हो, वह उच्च प्रतिष्ठित, धनी एवं मान्य व्यक्ति होता है। ऐसा योग द्वि-विवाह की संभावना भी करता है। देखें उदा. कुं. नं. 87

सूर्य-शनि- के योग से जातक कार्य-कुशल, तकनीकि बुद्धि, सोना, चान्दी, लोहा आदि धातुओं के कार्यों से लाभ प्राप्त करने वाला, परन्तु पैतृक सम्बन्धों के कारण सुखी होता है। योगों में अधिक विस्तार के लिए पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों का अवलोकन करें।

चन्द्र-मंगल- का योग होने से जातक परिश्रम एवं भाग्य से कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, पराक्रमी, धर्म-कर्म में रूचि रखने वाला तथा भूमि, वाहन आदि भौतिक सुखों से युक्त होगा।

चन्द्र-बुध- का योग जातक को बुद्धि, तेजस्वी, तीक्ष्ण निर्णय शक्ति, परन्तु कार्य क्षेत्र में विघ्न/बाधाएं पड़ने के संकेत हैं। इस योग सम्बन्धी अधिक विस्तार हेतु पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

चन्द्र-गुरु- का योग होने से जातक धर्म परायण बुद्धि, परोपकारी स्वभाव, भाग्यवान्, उच्चशिक्षित, सुशील स्त्री एवं पुत्र आदि संतान से युक्त होता है। धर्म, ज्योतिष, मन्त्र आदि शास्त्र को जानने वाला, ब्राह्मण आदि विद्वानों की सेवा करने वाला, आन्तरिक शक्ति प्रबल होगी, विनयशील होता है। बृश्चिक कुण्डली में यह योग 1, 2, 3, 5, 7, 9, 10 एवं 11वें भावों में विशेष प्रशस्त होता है।

चन्द्र-शुक्र- सुन्दराकृति, वस्त्राभूषण, धन-धान्य सम्पदा, वाहन, सुन्दर व सुशील पत्नी आदि सुखों से युक्त परन्तु जातक कामुक प्रवृत्ति का होता है। विलास आदि कार्यों पर खर्च करता है। अधिक विस्तार हेतु अंतिम पृष्ठों में देखें।

चन्द्र-शनि- योग होने से जातक परिश्रमी एवं तीक्ष्ण बुद्धि होते हुए भी आन्तरिक सुख में कमी रहती है। यदि यह योग सप्तम भाव में हो, तो प्रथम स्त्री को कष्टकारी अथवा द्वि-विवाह योग होता है। अनेक सुख/साधन होते हुए भी जातक के भाग्य में सुख शान्ति नहीं रहती। जातक प्रायः तनाव ग्रस्त एवं चिन्तनशील रहता है। मधुमेह आदि गुप्त रोगों का भय। देखें उदा. कुं. 87

मंगल-बुध- का योग होने से जातक कुशाग्र बुद्धि, शिल्प कला एवं तकनीकि कार्यों में कुशल, बोलने में चतुर, अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद कार्य व्यवसाय में आय के साधन बन पाते हैं। यह योग 1, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 11वें भावों में कुछ शुभ फल करता है, परन्तु 2, 7, 8 एवं 12वें भावों में अशुभ होता है। देखें उदा. कुं. नं. 75

मंगल-गुरु- का योग होने से जातक उच्चशिक्षित, पराक्रमी, परिश्रमी, स्वावलम्बी अर्थात् अपने पुरुषार्थ द्वारा स्वयं अपना भाग्य बनाने वाला, परन्तु जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेषकर 34 वर्ष तक कार्य व्यवसाय में विशेष संघर्ष व कठिनाईयां रहती हैं। परन्तु तदुपरान्त व्यक्ति अपने बुद्धि कौशल से व्यवसाय में अच्छा लाभ व उन्नति करता है। यह योग 1, 2, 3, 5, 9, 10 एवं 12 वें भावों में विशेष प्रशस्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 76. ऐसा जातक ज्योतिष, मन्त्र, अध्यात्म आदि गूढ़ विषयों में भी रूचि रखता है।

मंगल-शुक्र- यदि 1, 3, 5, 7, 10 आदि शुभ गृह में यह योग हो तो जातक व्यवहार कुशल, विभिन्न साधनों द्वारा धर्नाजन करने वाला, कामुक वृत्ति, संगीत कला, स्त्री एवं मादक वस्तुओं पर अधिक खर्च करने वाला होता है।

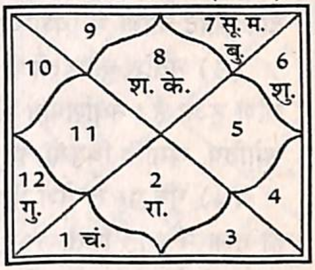
मंगल-शनि- बृश्चिक कुण्डली में अच्छा फल नहीं करता, जीवन का आरम्भिक भाग संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों में गुज़रता है। आय कम व खर्च अधिक होते हैं।

मंगल-राहु, मंगल-केतु, बुध-गुरु, बुध-शुक्र, बुध-शनि, गुरु-शुक्र आदि ग्रहों के योग फल हेतु पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों का अवलोकन करें-

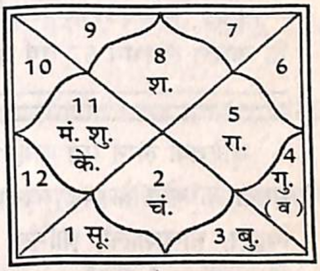
बृश्चिक लग्न-कुछ उल्लेखनीय उदाहरण कुण्डलियां

उप-प्रधानमंत्री, श्री लाल कृष्ण अडवानी

उदा. कुण्डली नं. 74
जन्म 8 नवं. 1927 ई.
9.00 A.M. कराची (पाक)



नवांश कुण्डली



भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता तथा भारत सरकार के वर्तमान उप-प्रधानमन्त्री एवं केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री लाल कृष्ण अडवानी का जन्म 8 नवम्बर 1927 को कराची (पाक) में बृश्चिक लग्न में हुआ था। जन्मकालीन अश्विनी (गण्डमूल) नक्षत्र एवं केतु की दशा (3 वर्ष, 11 महीने) भोग्य थी, तदुपरान्त 18 अक्तू. 1951 ई. तक शुक्र की दशा रही। जन्म कुण्डली में शुक्र अशुभ भावेश होकर नीच राशिस्थ होने से शुक्र महादशा का अन्तिम भाग-विशेषकर शनि, बुध व केतु की अन्तर्दशाएं (1947 ई. से 18 अक्तू. 1951 के मध्य) विशेष संघर्षपूर्ण रहीं। जैसा कि सर्वविदित है कि 1947 ई. भारत विभाजन एवं उसके बाद के कुछ वर्ष अडवानी जी तथा उनके परिवार वालों के लिए अत्यन्त संघर्षशील, कठिन एवं कष्टमय व्यतीत हुए। 18 अक्तू. 1957 से चन्द्रमा की दशा में ही उन्हें विवाह, सन्तान आदि सुख प्राप्त हुए। इसी दशा में उन्हें राजनीति में भी प्रवेश किया। मंगल की दशा (18 अक्तू. 74) से सक्रिय राजनीति में आए तथा राहु मध्ये गुरु के अन्तर (1977 ई.) में प्रथम बार सूचना व प्रसारण मन्त्री बने। परन्तु शनि की अन्तर्दशा तक (30 सितं. 1982 ई. तक) कार्यकाल पूरा न कर सके।

गुरु मध्ये बुध की अन्तर्दशा (सन् 1999 ई.) कालीन वह भारत के केन्द्रीय मन्त्री मण्डल में गृह-मन्त्री बने तथा 2002 ई. में उप-प्रधान मन्त्रित्व के पद पर भी सुशोभित हुए। 2004 ई. में केन्द्रीय भाजपा सरकार के कार्यकाल तक इसी पद पर बने रहने के योग हैं। श्री अडवनी की जन्म कुं. में ज्योतिष सम्बन्धी कुछ प्रमुख योग इस प्रकार से हैं-

1. श्री अडवानी की जन्म कुण्डली में बृश्चिक तथा नवांश कुण्डली में भी बृश्चिक लग्न होने से वर्गोत्तम लग्न हुआ है। जिसके फलस्वरूप जातक अपने कार्य क्षेत्र (राजनीति) में अग्रणी, कुल में मुखिया, सुप्रतिष्ठित, पराक्रमी, प्रसिद्ध तथा स्त्री, सन्तान, आवास, वाहन आदि सुखों से युक्त हुआ है।

2. लग्न कुण्डली में द्वितीयेश व पंचमेश गुरु पंचम में स्वराशिगत होकर लग्न भाव को देख रहा है, जिससे जातक उच्च शिक्षित, अत्यन्त बुद्धिमान, विद्वान, वाक् शक्ति एवं भाषण कला में कुशल हुआ है। नवांश कुण्डली में भी गुरु स्वोच्च राशि में होने से उत्तम फल देने वाला हुआ है। इसी कारण गुरु की दशा अन्तर्दशाओं में विशेष शुभ फल प्राप्त हुए।

(3) नवांश कुण्डली में गुरु के अलावा सूर्य व चन्द्र भी उच्च राशिस्थ हैं तथा बुध स्वराशिगत है। जिनके प्रभावस्वरूप जातक को इनकी दशा एवं उपदशा में शुभ फल प्राप्त हुए।

उच्च प्रतिष्ठित विद्वान/प्रकाशक

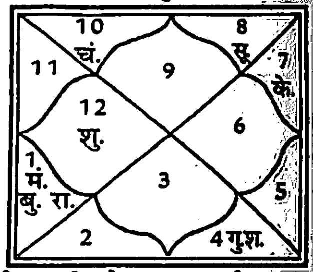
उदा. कुण्डली नं. 75
30 मार्च, 1914 ई.
कृतिका II, 11.45 रात्रि



संलग्न जन्म कुण्डली एक प्रसिद्ध ज्योतिषी एवं गणितकर्ता की है। इन्होंने अपने जीवन काल में अनेक धार्मिक एवं ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकों का लेखन (उर्दू-हिन्दी भाषाओं में) तथा प्रकाशन किया। बृश्चिक लग्न में जन्में यह जातक तीन भाईयों में अग्रज, प्रतिष्ठित लेखक, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू आदि भाषाओं के विद्वान तथा धर्म परायण महापुरुष थे। विभिन्न पुस्तक लेखन के अतिरिक्त पंचांग दिवाकर व मुफीद आलम जंत्री के कुशल गणितकर्ता एवं सफल सम्पादक भी रहे। अपने कार्यकाल में उन्होंने अनेक सटीक एवं सत्य-भविष्यवाणियां भी कीं। उनकी जन्म एवं नवांश कुण्डलियों में ज्योतिषीय योग इस प्रकार से पाए जाते हैं-

ज्योतिषीय समीक्षा :

नवांश कुण्डली



(1) जन्म कुण्डली में राशि स्वामी शुक्र उच्च राशिस्थ (मीन) है। नवांश में भी उच्चस्थ होने से वर्गोत्तम स्थिति में हुआ है। जिससे स्त्री सुख यथेष्ट हुआ है। पत्नी सुशील व भाग्यशालिनी हुई। विवाह के पश्चात् विशेष भाग्योन्नति हुई।

(2) भाग्येश चन्द्र उच्च राशि का होकर केन्द्र में शनि युक्त है तथा उन पर गुरु की विशेष पंचम दृष्टि पड़ रही है, जिससे जातक अत्यंत बुद्धिमान, धर्मपरायण, पूजा-पाठ, दान आदि कार्यों में विशेष रूचि रखता था।

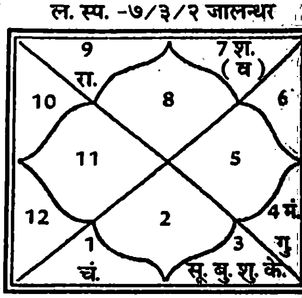
(3) नवांश कुण्डली में नवांश पति गुरु उच्च राशिस्थ हो जाने से जन्म कुण्डली में नीच राशि के गुरु का नीच फल क्षीण हुआ है। नवांशपति भी गुरु उच्चस्थ होने से जातक शिक्षित, विद्वान, लेखक, बुद्धिमान, उदार हृदय, परोपकारी, ज्योतिष, धर्मादि विषयों का ज्ञाता हुआ है।

(4) गुरु पर लग्नेश मंगल की दृष्टि भी जातक को उच्च प्रतिष्ठित विद्वान व धार्मिक वृत्ति वाला बनाती है। गुरु की ही दशा में (13 सितं. 1953 से 13 सितं. 1969 ई.) तक जातक को लेखन आदि कार्यों में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हुई। 1969 ई. के प्रारंभ में शनि मध्ये शनि की अन्तर्दशा में हृदय रोग एवं उच्च रक्तचाप रोगाक्रान्त हुए।

(5) नवंबर 1970 में शनि मध्ये शनि की उपदशा काल में तथा जन्म राशि पर शनि साढ़ेसति कालीन मस्तिष्क आघात के कारण लगभग 57 वर्ष की आयु में जातक की आकस्मिक अकाल मृत्यु हुई।

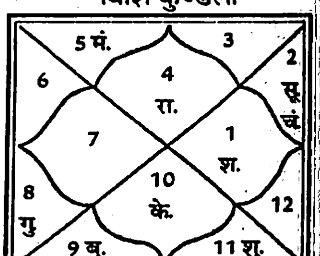
द्वि-विवाह एवं विदेश में सुप्रतिष्ठित योग

कुण्डली संख्या नं. 76
13 जुला. 1955 ई.
अश्वि II, इष्ट २४/०८
ल. स्प. -७/३/२ जालन्धर



बृश्चिक लग्न एवं कर्क के नवांश में उत्पन्न यह जातक भाग्य स्थान पर उच्चस्थ गुरु-मंगल के योग के फलस्वरूप प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, तीव्र बुद्धिमान, विद्वान, भाग्यशाली, धार्मिक विचारों से युक्त, पराक्रमी, उच्चाकांक्षी एवं स्वावलम्बी तथा जीवन में अपने निजी पुरुषार्थ द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। इस जातक का एक बड़ा भाई तथा एक छोटा भाई है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद यह पच्चीस (25) वर्ष की आयु जून 1980 को सूर्य की दशा के आरंभ विदेश (अमेरिका) में गया। 1985 में वापिस आकर सितं. 1987 को (चन्द्र की दशा में) विवाह करवाकर पुन: अमेरिका जाकर स्थापित (Setlled) हुआ है। वहां पर यह जातक निजी आवास, निजी वस्त्र उद्योग, दो पुत्र सन्तति एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न है। सन् 2001 ई. में इसकी प्रथम पत्नी का देहान्त हो गया। सन् 2002 के प्रारंभ में (भौम मध्ये चन्द्रान्तर) जातक का पुर्नविवाह हुआ है।

नवांश कुण्डली



ज्योतिष-समीक्षा :

(1) जातक की जन्म कुण्डली में राशि-स्वामी व लग्नेश (मंगल) तथा भाग्येश (चन्द्र) दोनें का स्थान विपर्यय योग भाग्यस्थान एवं चर राशि में ही हुआ है, जिससे जातक के भाग्य की उन्नति विदेश में ही हुई है।

*केन्द्रेश व त्रिकोणेश ग्रहों का सम्बन्ध योग भाग्य स्थान में होने से राजयोग का निर्माण करता है।

(2) चंद्र, मंगल, गुरु, शनि ये प्रमुख ग्रह जन्म कुण्डली में चर राशिगत है तथा नवांश कुण्डली में भी कर्क (चर) राशि उदित होने से जातक के भाग्य का उदय विदेश में हुआ है।

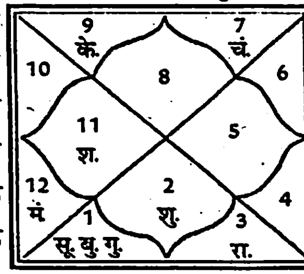
(3) पंचमेश गुरु भाग्य स्थान में उच्च राशिस्थ होकर लग्न भाव को मैत्री दृष्टि से देख रहा है, जिससे जातक कुशाग्र बुद्धि, धर्मपरायण, धनवान, मकान, सन्तान एवं वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न हुआ है।

(4) जन्म कुण्डलीमें सप्तमेश शुक्र अष्टम भाव में केतु-युक्त होकर पड़ा है। स्त्री कारक चन्द्रमा पर भी शनि की शत्रु

दृष्टि है तथा मंगल नीच राशिगत है। इसी कारण मंगल मध्ये चन्द्र की अन्तर्दशा सन् 2001 में जातक की प्रथम स्त्री का स्वर्गवास हुआ तथा उसी की दशा में पुनर्विवाह हुआ।

उच्च प्रतिष्ठित चार्टेड एकाउंटेंट एवं धनी जातक

कुण्डली संख्या नं. 77
जन्म 26 अप्रै. 1964 ई.
स्वा. (2) 10 P.M. लुधियाना



संलग्न कुण्डली का जातक एक प्रसिद्ध एवं सफल चार्टेड-एकाउंटेंट है। इसके पिता रिटा. बैंक मैनेजर हैं, तथा जातक की दो बहिनें व कोई भाई नहीं। जातक का गेहुआं वर्ण एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, अत्यन्त बुद्धिमान, व्यवहार कुशल, स्वाभिमानी, कुछ जिद्दी एवं कठोर प्रकृति का है। 25वें वर्ष गुरु की दशा में विवाह हुआ, तदुपरान्त शनि की दशा में दो लड़कियां व एक लड़के का जन्म हुआ। पत्नी सुशील, सुन्दर एवं पति के साथ सहयोग करने वाली हुई। आरम्भिक अवस्था में जातक का अपनी पत्नी के साथ दाम्पत्य सम्बन्ध कटु एवं तनावपूर्ण रहे। जातक भूमि, जायदाद, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त चार्टिड एकाउंटेंट के व्यवसाय के अतिरिक्त आयात निर्यात तथा प्रापर्टी के लेन देन के कार्यों से लाभान्वित होता रहता है।

ज्योतिषीय समीक्षाः-

(1) पंचमेश व धनेश गुरु तथा षष्ठेश व लग्नेश मंगल के मध्य स्थान विपर्यय योग बना है जिससे जातक उच्च शिक्षित (चार्टिड एकाउंटस), गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला हुआ।

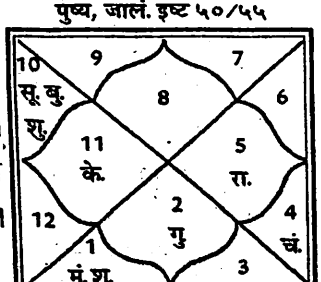
(2) नवांश कुण्डली में भी गुरु उच्चस्थ (कर्क का) होने से व्यवसायिक विद्या में उच्च प्रतिष्ठित एवं धनवान् व्यक्ति हुआ है।

(3) चन्द्र से केन्द्र, सप्तम भाव में सूर्य, बुध, गुरु का योग होने से जातक धन, सम्पदा, पुत्र सन्तति एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न हुआ है।

(4) सप्तम भाव में शुक्र पापाक्रान्त हुआ है तथा नवांश में शुक्र नीच राशिगत है। अतएव स्त्री के साथ वैमनस्यपूर्ण सम्बन्ध रहे हैं।

उच्च प्रतिष्ठित संस्कृत स्कालर (गोल्ड मैडलिस्ट)

कुण्डली संख्या नं. 78
दिनाक 31 जन. 1942 ई.
पुष्य, जालं. इष्ट ५०/५५



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक उत्कृष्ट संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा के विद्वान की है, जिन्होंने युवा काल में ही संस्कृत एवं अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर (M.A.) की डिग्रियां प्राप्त की तथा दोनों भाषाओं की अन्तिम परीक्षा में सर्वप्रथम श्रेष्ठ स्थान ग्रहण कर स्वर्ण पदक ग्रहण किए। बाद में P.H.D. भी क्वालिफाई करके जालन्धर के एक प्रतिष्ठित कालेज में प्रोफैसर का पद ग्रहण किया। तत्पश्चात् संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर सुशोभित हुए। इनका विवाह भी 1971 ई. में सुशील, सुन्दर एवं सुपठित कन्या से शुक्र मध्ये शुक्र की अन्तरदशा में हुआ तथा शुक्र की अन्तर्दशाओं में ही क्रमशः दो कन्याओं का जन्म हुआ। तथा पुत्र सन्तति के सुख का अभाव रहा।

जातक ने अपने जीवन काल में संस्कृत एवं अंग्रेज़ी साहित्य सम्बन्धी अनेक पुस्तकों का सफलपूर्वक लेखन एवं प्रकाशन किया तथा अन्तर्देशीय ख्याति प्राप्त की।

ज्योतिषीय योग-

(1) नवम (भाग्य) स्थान में स्वराशिगत चन्द्र पर सूर्य, बुध व शुक्र ग्रहों की शुभ दृष्टि होने से जातक स्त्री, सन्तान, धन-धान्य आदि सुखों से सम्पन्न, नीतिज्ञ एवं उच्च प्रतिष्ठित होता है।

(2) तृतीय भावस्थ सूर्य, बुधादि ग्रहों पर पंचमेश गुरु की शुभ नवम दृष्टि पड़ने से जातक अत्यन्त समृद्ध विद्वान,

परिवार की पालना करने वाला, यशस्वी, प्रसिद्ध, बुद्धिमान तथा धर्मादि श्रेष्ठ कर्म करने वाला होता है–

सत्कर्मकर्त्ता मतिमान्बहूनां समाश्र यश्चारुयशा मनस्वी।
स्यान्मानवो भानुसुतालयस्थे भानौ च वाचस्पतिना प्रदृष्टे॥

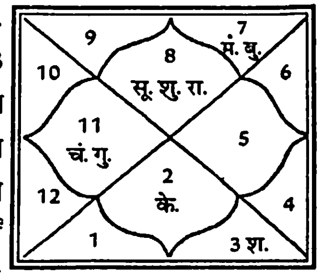
(3) त्रिकोणेश (पंचमेश) गुरु द्वारा सप्तम भाव में पड़ना तथा लग्न को गुरु तथा मंगल ग्रहों का (मैत्री व स्वराशि) दृष्टि से देखना उच्च विद्या तथा देव–विद्या संस्कृत में विशेष रूचि व कुशलता प्रदान कराता है–

शास्त्राभ्यासासक्त चित्तो विनीतः कांतावितात्यन्तसंजात सौख्यः।
मंत्री मर्त्यः काव्यकर्त्ता प्रसूतौ जायाभावे देवदेवाधिदेवे॥

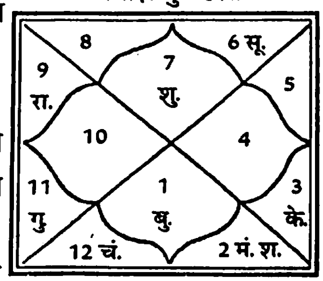
(4) **द्वि–कन्या योग**–जन्म कुण्डली अनुसार जातक का विवाह शुक्र की दशा एवं शुक्र की अन्तर्दशा में होने से तथा इन्हीं दशाओं में कन्या सन्तति उत्पन्न हुई। शुक्र जन्म व नवांश दोनों में प्रबल है।

गम्भीर रूप से शरीर कष्टी एवं अरिष्टकर योग

कुण्डली संख्या नं. 79
जन्म 23 नवं. 1974 ई.
शतभिषा, जन्मेष्ठ १/०७



नवांश कुण्डली



प्रस्तुत जातिका अत्यन्त बुद्धिमान, उच्चशिक्षित (M.S.C.), स्वाभिमानी एवं देखने में आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी है। यह अपने माता–पिता की एकाकी सन्तान है। जन्म काल से राहु की दशा 11 महीने भोग्य थी, तदुपरान्त 17 वर्ष की आयु तक (26 अक्तू. 1975 ई.) तक अवधि गुरु दशा स्वास्थ्य एवं शिक्षा की दृष्टि से उत्तम रही। तत्पश्चात् 23 वर्ष की आयु पर्यन्त (10 दिस. 1997 ई. शनि मध्ये बुधान्तर तक), तो जातिका का स्वास्थ्य सामान्य एवं उच्च शिक्षा प्राप्ति में सफल रहीं। परन्तु 24 वर्ष की आयु के प्रारम्भ से अर्थात् 11 दिसं. 1997 ई. को शनि की महादशा एवं केतु की अन्तर्दशा के आरम्भ से जातिका के शरीर में तीव्र ज्वर का प्रकोप प्रारम्भ हुआ, जिसके प्रभाव का क्रम 5/6 वर्षों से नियमित रूप से आज भी जारी है। दिल्ली के शीर्षस्थ डाक्टरों द्वारा लगातार दी जाने वाली दवाई से अस्थायी तौर पर बीमारी कण्ट्रोल होती है, परन्तु दवाई छोड़ देने से रोग पुनः प्रकट होने लगता है। ग्रहों के परिपेक्ष्य में इसका विवेचन इस प्रकार होगा–

ज्योतिषीय समीक्षा–

(1) जिस वर्ष काल से जातिका को रोग का आक्रमण हुआ, उस समय शनि मध्ये केतु की अन्तर्दशा प्रारंभ हो चुकी थी। जन्म कुण्डली में शनि व केतु मध्ये द्वि–द्वादश स्थिति है, तथा केतु भी शत्रु राशिगत है। जिसके प्रभावस्वरूप जातिका के शरीर में वात–पित्तादि के कारण तीव्र ज्वर आदि क्लिष्ट रोग एवं मानसिक व्याकुलता होती है। शनि की दृष्टि मीन राशि पर होने से सर्वप्रथम पांव में कंपन शुरु हुआ।

(2) जातिका के जन्म नक्षत्र शतभिषा का स्वामी राहु भी जन्म कुण्डली में लग्न भाव में क्लिष्ट रोगकारक हुआ है। यहां लग्नस्थ राहु मानसिक अशांति एवं विकलता प्रदान करता है।

(3) लग्नेश मंगल द्वादश भाव में तथा द्वादशेश शुक्र लग्न भाव में होने से, दोनों ग्रहों (मंगल–शुक्र) का अशुभ स्थान–विपर्यय योग बना है, जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से अशुभ है।

*द्वादश भाव में मंगल–बुध का योग भी शरीर कष्टी हो रहा है।

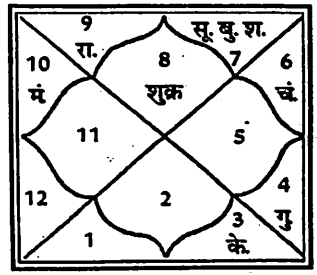
(4) चतुर्थ भाव में भाग्येश चन्द्र व पंचमेश गुरु का सम्बन्ध होने से गजकेसरी योग बना है जिससे जातिका को भूमि, आवास, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हुई है।

(5) गुरु नवांश कुण्डली में भी कुम्भ राशिगत होने से वर्गोत्तम स्थिति में है जिससे जातिका को उच्च शिक्षित तथा होनहार एवं उच्च प्रतिष्ठित जीवन साथी **(Partner)** की प्राप्ति हुई है।

(6) चन्द्र से दशम भाव में सूर्य व सप्तमेश शुक्र होने से जातिका को सुप्रतिष्ठित माता-पिता एवं सुयोग्य पति का सुख प्राप्त हुआ। इस जातिका का वर्षकुंडली के अनुसार ज्योतिषी विश्लेषण मैंने अपनी पुस्तक वर्षकाल चंद्रिका में भी किया है।

प्रिंटिंग एवं प्रकाशन उद्योग में उच्च प्रतिष्ठित

उदा. कुण्डली नं. 80
25 अक्तू. 1954 ई.
हस्त IV, 9.30 A:M, जम्मू



प्रस्तुत जन्म कुण्डली प्रिंटिंग एवं प्रकाशन उद्योग से सम्बन्धित उच्च प्रतिष्ठित उद्योगपति की है। यह जातक अत्यन्त बुद्धिमान, परिश्रमी, पराक्रमी, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, धर्मपरायण और अपने परिवारिक दायित्वों के प्रति ईमानदार पूर्ण रहा है। पिता जी संस्कृत पाठशाला में कार्यरत रहे हैं। जातक स्वयं तीन भाइयों और दो बहिनों में सबसे बड़ा होने से परिवारिक कर्त्तव्यों के प्रति गम्भीर, निष्ठावान एवं संघर्षशील रहा तथा धीरे-धीरे अपने परिश्रम तथा भाइयों के सहयोग से शिक्षा एवं प्रिंटिंग के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर लाभ व उन्नति को प्राप्त हुआ है। 1978 ई. में सुशील, सुघड़ स्त्री के साथ विवाह हुआ तथा 1981 व 1983 में क्रमशः दो पुत्रों का जन्म हुआ। वर्तमान काल में जातक भूमि, मकान, सन्तान, वाहन एवं व्यवसाय में उत्तम कोटि की कम्प्यूटर मशीनरी आदि सुख-सुविधाओं से सम्पन्न है।

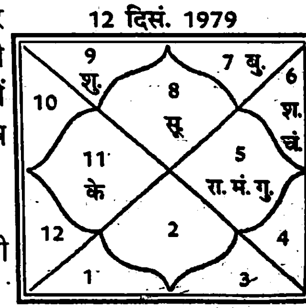
ज्योतिषीय समीक्षा- (1) बृश्चिक लग्न में शुक्र लग्नस्थ होने से जातक श्वेत वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, मृदुभाषी, शिल्पकला एवं सहित्य की ओर विशेष प्रवृत्ति और व्यवहार कुशल हुआ है। (2) लग्नेश मंगल तृतीय भाव में उच्चराशिस्थ होने से जातक पराक्रमी, उद्यमशील, परिश्रमी, लघु एवं दीर्घ यात्राएं तथा परिवार में अग्रज (बड़ा) एवं परिवार का पोषक हुआ है। इस पर भाग्यस्थान में पंड़े उच्चराशिस्थ गुरु की विशेष शुभ दृष्टि पड़ने से (4) जातक भाग्यशाली, धर्मपरायण, शिक्षित स्त्री, सन्तान, भूमि आदि सुखों से युक्त तथा जातक के सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ होंगे।

*जातक ने गुरु की महादशा में 5 अक्तू. 1981 से 5 अक्त. 1997 के मध्य विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त की। इसी दशा में क्रमशः 2 पुत्रों का जन्म हुआ। * राहु की दशा 5 अक्तू. 1963 से 5 अक्तू. 1981 तक विशेष संघर्षपूर्ण रही।

*आगामी 5 अक्तू. 1997 से अक्तू. 2000 तक शनि मध्येशन्यन्तर तथा तदुपरान्त शनि मध्ये बुधान्तर (7 अक्त. 200 से जून 2003 तक) अवधि में भी उल्लेखनीय लाभ व उन्नति प्राप्त की। **ध्यान रहे,** कि जातक की जन्म कुण्डली में द्वादश भाव में तुलाराशि शनि भी उच्चस्थ होकर सूर्य, बुध के साथ योग कारक है।

एक कुशल दन्त विशेषज्ञ डाक्टर

उदा. कुण्डली नं. 81
12 दिसं. 1979



प्रस्तुत जन्म कुण्डली दन्त सम्बन्धी तकनीकि एवं व्यवसायिक क्षेत्र में उच्च शिक्षित जातक की है। इस जातक ने अपने परिश्रम, पराक्रम एवं बौद्धिक योग्यता के बल पर दन्त निर्माण एवं चिकित्सा सम्बन्धी निजी लैबोरिट्री लगाई है, जिससे दन्त रोग सम्बन्धी अनेक डाक्टरों एवं रोगियों को लाभ पहुंचता है। जातक का एक भाई और दो बड़ी बहनें हैं। जातक के कार्य क्षेत्र की सफलता में उसके माता-पिता एवं मातुल पक्ष का विशेष सहयोग रहा है। जातक का ऊंचा कद एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी है।

ज्योतिषीय समीक्षा :

(1) जातक ने मंगल मध्य सूर्य के अन्तर अर्थात् जन. 2001 में अल्पायु में ही अपनी लैबोरटरी का शुभारम्भ किया।

(2) जन्म कुण्डली में सूर्य व मंगल का केन्द्र भावों में परस्पर स्थान परिवर्तन होने से विशेष योग बना है।

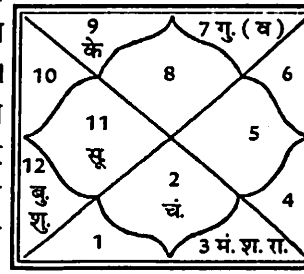
(3) मंगल का दशम स्थान में धनेश व पंचमेश गुरु व राहु के साथ योग होना भविष्य में विशेष लाभप्रद रहने की सम्भावना है।

(4) लाभस्थान शनि का भाग्येश चन्द्र के साथ योग होना भी जातक को तकनीकि (दन्त विशेषज्ञ) क्षेत्र में लाभ व उन्नति कारक है।

पुत्र संतति अभाव एवं एक कन्या योग

प्रस्तुत जन्म कुण्डली पैकिंग मैटीरियल एवं बुक-बाईंडिंग के उद्योग से जुड़े एक कुशल जातक की है। पिता का निधन जातक की अल्पायु में ही हो गया। माता, एक छोटा भाई व बहन का सुख प्राप्त हुआ। बाल्यकाल से ही जातक स्वावलम्बी, परिश्रमी एवं हस्त कलाओं में कुशल था परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में भाग्यशाली नहीं रहा परन्तु सामान्य ज्ञान में विशेष कुशल है। सवार्जित धन से भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हुई। सन् 1979 में राहु मध्ये शुक्रान्तर में सुन्दर, सुशील कन्या से विवाह हुआ जो कि अपने पति के कार्यों में विशेष तौर पर सहायिका रही है। जुलाई 1981 ई. में राहु मध्ये शुक्रान्तर कालीन ही सुन्दर कन्या सन्तति का जन्म हुआ। जातक को ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विद्याओं में रूचि है। कन्या का कोई बहिन, भाई नहीं हुआ। इस सम्बन्ध में कुछ मुख्य ज्योतिषीय कारण इस प्रकार से बनते हैं।

उदा. कुण्डली नं. 82
8 मार्च, 1946 ई. जाल.
कृतिका (2), I.S.T. 24-50



(1) पंचमेश गुरु वक्री होकर शुक्र की राशि में तथा व्ययेश शुक्र पंचम भाव में होने से जातक कन्या सन्तति का जन्म हुआ है।

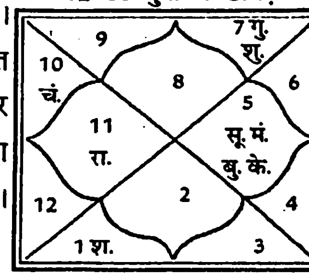
(2) जन्म कुण्डली में शुक्र की अन्तरर्दशा का होना, पंचम में शुक्र स्त्री राशि (मीन) में होना एवं नवांश में भी शुक्र स्त्री राशि (कर्क) में होने से शुक्र का प्रभाव अधिक हुआ है जिस कारण कन्या सन्तति का जन्म हुआ।

(3) पंचम भाव में अष्टमेश बुध का होना तथा नवांश कुं. में मंगल-केतु का योग पुत्र सन्तति सुख में बाधक हुआ है।

विदेश में भाग्योदय योग

जातक उच्चशिक्षित, तीव्र बुद्धिमान, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी है। भारतीय प्राच्य विद्याओं एवं योग आदि विद्याओं में उच्चप्रशिक्षित है। सितं. 2000 ई. तक निजी कार्य क्षेत्र से जुड़े रहे तथा विभिन्न संस्थाओं में योग सम्बन्धी प्रशिक्षण देते रहे हैं। अक्तू. 2000 ई. में पुलिस विभाग में योगा और व्यायाम के प्रशिक्षक के तौर पर कार्यरत हुए परन्तु जुलाई. 2002 ई. में राहु मध्ये चन्द्र की दशा में विदेश (आस्ट्रेलिया) में उच्चतर शैक्षणिक आधार पर चुने गए तथा अगस्त 2002 ई. में स्थायी विजा के आधार पर विदेश रवाना हुए। इस कुण्डली में दशम भाव पर **सूर्य-मंगल** का अति उत्तम योग बना हुआ है। भाग्येश, पंचमेश व सप्तमेश सभी चर राशि एवं द्वादश भाव में है।

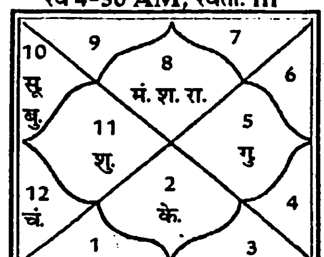
उदा. कुण्डली नं. 83
12 सितं. 1970 ई.
12-05 दुपै. चण्डीगढ़



रबड़ उद्योग में सफल उद्योगपति

प्रस्तुत कुण्डली का जातक अत्यन्त बुद्धिमान, परिश्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी है। शिक्षा मध्यम स्तरीय हुई है। जुला. 1981 में शुक्र की दशा में विवाह हुआ तथा इसी दशा में 1 लड़की व 1 लड़के का जन्म हुआ। 1989 में सूर्य की दशा में ही भाइयों के साथ रबड़ इण्डस्ट्री में कार्यरत हुए। इस सम्बन्ध में देश-विदेश जाते रहते हैं। भूमि-जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त हैं। 6 अप्रै. 2003 ई. में मंगल की दशा में भाइयों से सांझेदारी के व्यवसाय से अलग होकर स्वतन्त्र रूप से व्यवसाय करने लगे हैं।

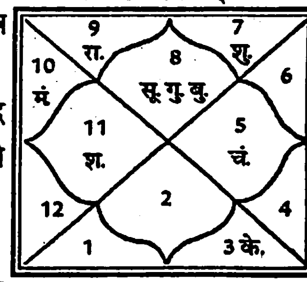
उदाहरण कुं. 84
20 जन., 1956 ई.
रेवा 4-50 AM, रेवती. III



धर्मेन्द्र - हिन्दी फिल्मों का सफल हीरो

1960 तथा 1970 के दशाकों में सफलतम हीरो श्री धर्मेन्द्र की बृश्चिक कुण्डली में अपने व्यवसायिक जीवन में सफलता के अनेक योग पाए जाते हैं, जैसे-

उदा. कुं. नं. 85
8-12-1935 ई.



1. लग्नेश मंगल का तृतीय भाव में उच्च राशि का होकर दशम भावस्थ चन्द्र को मित्र दृष्टि से देखना।

2. **शशक योग :-** शनि का चतुर्थ (केन्द्र) स्थान में स्वराशि का होकर, लग्न व चंद्र दोनों से केन्द्र में होना शुभ है, जो जातक को भूमि, वाहन, धन, सम्पदा आदि सुखों को देता है।

3. **गज केसरी योग :-** चन्द्र से गुरु केन्द्र में आना।

4. द्वादश भाव में स्वराशि का शुक्र जातक को सुरा व सुन्दरी आदि सुखों की और प्रवृत्त करता है।

5. गुरु दशमेश सूर्य युक्त पंचम व भाग्य भाव को अत्यंत शुभ दृष्टि से देखने से संतान, धन एवं भाग्यादि के बारे सुखी हुआ है।

6. **द्वादश भाव में शुक्र :-** धमेन्द्र की कुण्डली में द्वादश भाव में स्वगृही शुक्र होने से जातक को शुक्र की दशा (24वें वर्ष) में युवावस्था में ही सिनेमा एवं अभिनय की और आकर्षित किया तथा धन, धान्य, स्त्री सुख एवं अन्य सांसारिक सुखों की उपलब्धि हुई। उत्तरकालामृत में स्वराशिगत 12वें शुक्र को प्रशस्त माना गया है।

स्वोच्चे, स्वर्क्ष शुक्रो द्वादश संस्थितोऽपि शुभदो॥

धनु राशि एवं लग्न (Sagittarius)



(यदि किसी व्यक्ति के पास अपने जन्म की तारीख, वार, समय आदि का विवरण नहीं है, तो वह अपने नाम के प्रथमाक्षर के आधार पर अपनी राशि का निर्धारण कर सकता है।)

धनुर्लग्न समुत्पन्नो नीतिमान् धनवान् सुधीः।
लोके मान्यःकुले श्रेष्ठः पुत्र पौत्रादि संयुतः॥१॥
बहुकलाकुशलः, सत्यप्रतिज्ञः सुतरां मनोज्ञः।
धनुर्विधिज्ञश्च धर्नुधरगे नरो धनकरोऽपि न करोति बहुव्ययम्।

अर्थात् धनु लग्न में उत्पन्न मनुष्य नीतिकुशल, धनी, बुद्धिमान, लोगों में सम्मानित, कुल में श्रेष्ठ, धन, वाहन, पुत्र-पौत्र आदि सुखों से युक्त होता है। ऐसा जातक शिल्पादि अनेक कलाओं में कुशल, निर्मल बुद्धि, सत्यनिष्ठ, सुन्दर रूप, विद्वान, धनु विद्या (अर्थात् शस्त्रादि चालन में कुशल), धनवान होने पर भी कृपणता से धन का व्यय करता है।

राशिचक्र में धनु नौवीं राशि है। भचक्र में इस राशि का विस्तार 240° से 270° तक है। इस राशि का अधिपति (स्वामी) ग्रह गुरु (Jupiter) है, जो सौरमण्डल में सर्वाधिक बड़ा ग्रह है। गुरु की यह त्रिकोण राशि है। लग्न के रूप में यह प्रथम एवं चतुर्थ भाव का स्वामी हो जाता है। कालपुरुष में इस राशि का निवास (सम्बन्ध) जंघाओं, नसों तथा नितम्ब स्थान है। यह राशि मूला नक्षत्र के 4 चरण-(ये, यो, भा, भी,) पूर्वाषाढ़ा के 4 चरण (भ, धा, फ, ढ)एवं उत्तराषाढ़ा का एक चरण (भे) से मिलकर बनी है। मूला का स्वामी केतु, पूर्वाषाढ़ा का शुक्र तथा उत्तराषाढ़ा का स्वामी सूर्य है।

किसी जातक के जन्म समय का लग्न स्पष्ट जिस नक्षत्र के अंश या पाद चरण पर होता है, उस नक्षत्र भाग के स्वामी के अनुरूप भी जातक के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। इस सम्बन्ध में तुला लग्न का प्रारम्भिक भाग भी अवश्य पढ़ें। वहां उदाहरण सहित इस सम्बन्ध में लिखा गया है। धनु लग्न में नवम भाग (26°-40′ से 30°-00′ तक) का नवांश लग्न धनु ही होगा जोकि वर्गोत्तम होगा।

धनु राशि इन्द्रधनुषीय कामनाओं और आशाओं की प्रतीक है। यह विषम राशि मध्यमाकार पुरुष राशि, धनुष धारण किए कटि से ऊपर मनुष्य और नीचे अश्व (घोड़े) के सामान आकार की, अल्प प्रसवी, उग्र प्रकृति, सतोगुणी राशि है। यह अग्नि तत्त्व,द्विस्वभावा, बाल्यावस्था, रात्रि बली, पित्त प्रकृति, क्षत्रिय जाति, पृष्ठोदयी, पूर्वदिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव मर्यादा पालन करना, आदर्श एवं अधिकार प्रियता है। वाहनों के प्रति विशेष लगाव रहता है। कोई भी ग्रह इस राशि में नीच या उच्च का नहीं होता। परन्तु कुछ विद्वान राहु को इस राशि में नीच एवं केतु को उच्च मानते हैं। गुरु इस राशि पर 5 से 10 अंश तक मूल त्रिकोणस्थ माना जाता है।

निरयण सूर्य गोचरवश प्रतिवर्ष प्राय:15 दिसम्बर से 13 जनवरी तक इस राशि पर संचार करता है।

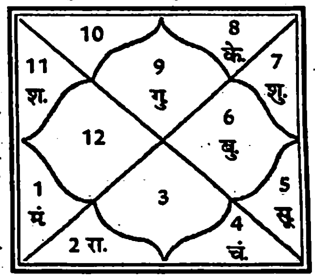
धनु राशि के अन्य पर्याय (नाम)-अश्व, अस्त्री, चाप, धनुष्क, धनुष्मान, अश्वकाय, शरासन आदि। अंग्रेजी में इसे 'सैजिटेरियस' (Saggitarius) कहते हैं।

गुण एवं सामान्य विशेषताएं-धुन राशि का स्वामी गुरु है। धनु जातक का स्वभाव इस राशि के प्रतीक धनुर्धारी से अभिव्यक्त किया जा सकता है। जिस प्रकार धनुर्धारी सीधा लक्ष्य-बेध करता है, उसी प्रकार धनु लग्न जातक का लक्ष्य की तरफ ध्यान केन्द्रित रहता है। जातक सोच-विचार कर कार्य करता है। गुरु-बुध की स्थिति शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, सौम्य, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा, दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस राशि के व्यक्ति में वैद्धिक एवं

मानसिक शक्ति प्रबल होती है।

धनु लग्न में शुभाशुभ एवं योगकारक ग्रह

धनु लग्न में शुभस्थ ग्रह



सूर्य-धनु लग्न में सूर्य शुभकारक होता है। भाग्येश एवं धर्मेश होने के कारण शुभ भावों में हो तो जातक धार्मिक, आस्थावान एवं भाग्यशाली होगा। सूर्य की दशा में शुभ फल घटित होंगे।

चन्द्रमा-अष्टमेश होने से यद्यपि स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं किन्तु कल्पनाशक्ति एवं विद्वता की दृष्टि से जातक विद्वान, प्रतिष्ठित एवं अध्ययनशील होगा। अड़चनों के बाद सफलता होगी।

मंगल-पंचमेश होने से जातक को बौद्धिक क्षमता, सन्तान (पुत्र संतति) एवं शिक्षा के सम्बन्ध में शुभ फलदायक परन्तु व्ययेश भी होने से आकस्मिक विघ्न बाधाएं, धन का अपव्यय तथा तनाव देता है। अपनी दशा में मिश्रित फल देता है।

बुध-सप्तमेश व कर्मेश होने से विवाह एवं व्यवसाय आदि की दृष्टि से प्रायः शुभ फल देता है परन्तु केन्द्रेश दोष होने से उसके शुभकारकत्व गुणों एवं फल में कमी आ जाती है। अपनी दशाऽन्तर्दशा में शुभाशुभ फल बुध की स्थिति पर निर्भर करेगा।

गुरु-लग्न एवं चतुर्थ (सुख) भावों का स्वामी होने से शुभफली होता है। केन्द्राधिपत्य दोष युक्त भी होता है परन्तु लग्नेश होने के कारण मारकत्व आदि दोष नहीं होंगे तथा अशुभ फल कम ही देगा। गुरु यदि कुण्डली में अशुभस्थ हो, तो अपनी दशा में कष्टों के बाद सफलता देगा।

शुक्र-त्रिषडायपति अर्थात् छटे व 11वें भाव का स्वामी होने से प्रायः इस लग्न में अशुभ फल देता है। किन्तु 2, 3, 4,7, 8, 11वें भावों में अपनी दशा में किंचित शुभफल प्रदान करेगा।

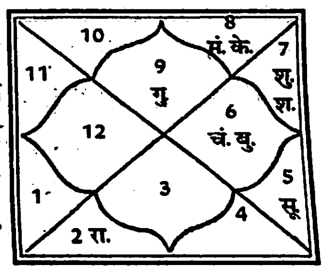
शनि-धनेश एवं तृतीयेश होने से अपनी दशा में मिश्रित प्रभाव करता है। 1, 3, 5, 7, 8, 9, 10, 12वें भावों में शुभ तथा शेष भावों में अशुभफली होता है। फलदीपिका के अनुसार शनि पंचम भाव में नीच का होने पर भी लाभ स्थान व धन स्थान को उच्च एवं स्वराशि से देखने से अपनी दशा में शुभ फल करता है। देखें कुं. नं. 87-92

राहु-2, 3, 5, 6, 8, 9, 10, 11, 12वें भाव में शुभ, शेष अन्य भावों में अशुभ फल करता है। दृष्टि योग्य आदि से फल में परिवर्तन भी संभव।

केतु-2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 11 एवं 12वें भावों में शुभ तथा अन्य स्थानों में अशुभ फल करता है।

नोट : दो, तीन या अधिक ग्रहों स्थिति में अथवा ग्रहों की शुभाशुभ अवस्थाओं एवं पारस्परिक दृष्टियों के कारण उपरोक्त ग्रहों के शुभाशुभ फलों के सम्बन्धमें न्यूनाधिकता की सम्भवना भी होती है।

धनु लग्न–गुण स्वभाव, व्यवसाय/विवाह सुख आदि



शारीरिक गठन एवं व्यक्तित्व-धनु लग्न कुण्डली में गुरु एवं सूर्य शुभस्थ हों, तो जातक का ऊंचा (लम्बा) कद, संतुलित (Balanced) एवं सुगठित शरीर, सुन्दर गेंहुआ रंग, किंचित-चौड़ी एवं अण्डाकार (Oval shaped) मुखाकृति, चौड़ा एवं ऊंचा माथा, प्रायः लम्बी नाक एवं लम्बी पुष्ट गर्दन, बादाम जैसी आकृति की चमकदार आंखें, बड़े किन्तु सुन्दर मजबूत दान्त, बौद्धिकता के प्रतीक बड़े कान, श्वेत-पीत वर्ण, (यदि लग्न में मंगल की दृष्टि आदि का योग हो,तो श्वेत लालिमा मिश्रित वर्ण), तथा सौम्य, हंसमुख, आकर्षक, सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा।

चारित्रिक एवं स्वभावगत विशेषताएं-(Characteristic Temperaments)

धनु लग्न अग्नि तत्त्व राशि तथा लग्न स्वामी गुरु शुभ होने से जातक अत्यन्त बुद्धिमान, परिश्रमी, स्वाभिमानी (Self-assertive), पराक्रमी, सहासी, धर्म-परायण, अच्छे बुरे एवं दूसरों के भावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी। जातक स्पष्टवक्ता (Bold), ईमानदार, न्यायप्रिय, व्यवहार-कुशल, उदार-हृदय, मिलनसार, नर्म दिल, सिद्धान्तवादी एवं अध्ययनशील प्रकृति का होता है। यदि सूर्य भी शुभस्थ हो, तो जातक कुल में श्रेष्ठ, भाग्यशाली तथा बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति प्रबल होगी, जिस कार्य को करने का संकल्प कर लेता है उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ता। ऐसा जातक धन, सम्पदा एवं वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त तथा निज पराक्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होगा। धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव तथा लोगों की भलाई का ख्याल बहुत रखे। जातक उच्च एवं श्रेष्ठ विचारों से युक्त, शिक्षित तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेल-जोल अधिक रखे। परन्तु शनि यदि अशुभ हो, तो जातक को भाई बन्धुओं के सुख में कमी रहे तथा कार्य/व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यधिक संघर्ष व कठिनाईयों का सामना रहता है। 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योदय होता है।

धनु लग्न काल पुरुष के राशिचक्र में नवमी राशि होने से जातक को योग, दर्शन, आध्यात्म, चिकित्सा आदि बौद्धिक विषयों में विशेष अभिरुचि होती है। आध्यात्म एवं जीवन सम्बन्धी रहस्यों को जानने में प्रयत्नशील रहते हैं। मंगल-गुरु के प्रभाव से जातक अध्ययनशील, आत्मविश्वास की भावना से युक्त, चुस्त, आशावादी दृष्टिकोण रखने वाला, दूसरों से सहानुभूति पूर्वक व्यवहार रखने वाला, महत्त्वकांक्षी, कठिन से कठिन समस्याओं को अपने धैर्य और साहस से ठीक कर लेने वाला होता है। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

धनु राशि-द्वि-स्वभाव की राशि है। इसलिए ऐसे जातक शीघ्र कोई निर्णय नहीं कर पाते हैं, परन्तु जब खूब सोच समझ के बाद निर्णय लेते हैं, तो अपने कार्य को पूरा उत्साह एवं जोश के साथ प्रारम्भ कर देते हैं। वैसे तो धनु जातकों को जल्दी क्रोध नहीं आता, परन्तु यदि किसी कारण विशेष से आ जाए, तो देर तक क्रोधावेश में रहते हैं। केवल प्रेम व शान्ति से वशीभूत होते हैं। सूक्ष्म बुद्धि होने के कारण किसी भी विषय की गहराई तक जाने में कुशल होते हैं। कुण्डली में मंगल-शुक्र का योग हो, तो विपरीत योनि (Opposite Sex) के प्रति विशेष आकर्षण होता है। यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा पाप ग्रहों की दृष्टि हो, तो जातक ईर्षालु, हठी, जिद्दी, शीघ्र क्रोधित होने वाला, कठोर-स्वभाव, स्वार्थ-परक, कामुक एवं स्वचेछाचारी स्वभाव का होता है। ऐसा जातक दूसरे लोगों की आलोचना एवं व्यंग्यात्मक वाणी का प्रयोग करने वाला भी होता है।

स्वास्थ्य एवं रोग (Health & Diseases)-धनु लग्न जातक की कुण्डली में गुरु, सूर्य, मंगल आदि ग्रह शुभस्थ हों, तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा एवं श्रेष्ठ होता है। परन्तु यदि लग्न व लग्नेश (गुरु) अशुभ हो तथा शनि, मंगल, शुक्र एवं राहु आदि ग्रहों का लग्न या लग्नेश के साथ अशुभ सम्बन्ध हो, तो जातक को कमर में या जोड़ों में दर्द, रक्त-विकार, लीवर एवं उदर-विकार, नेत्र, स्नायु रोग, प्रमेह, उच्च-रक्तचाप, जिगर, ज्वर, यौन रोग, गुप्त एवं पेचीदा रोगों की सम्भावना रहती है। स्वास्थ्य में सावधानीवश धनु जातक को बहुत अधिक ऊष्ण एवं गरिष्ठ एवं तला हुआ भोजन नहीं लेना चाहिए। मादक वस्तुओं एवं मांस, मछली आदि तामसिक भोजन के सेवन से भी परहेज़ करना चाहिए। अत्यधिक क्रोध तथा उत्तेजना व आवेशपूर्ण व्यवहार भी आपके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं। पौष्टिक एवं संतुलित भोजन एवं नियमित व्यायाम आपके स्वास्थ्य जीवन के लिए सुखप्रद होंगे।

शिक्षा एवं कैरिअर-धनु लग्न में गुरु पंचम भाव से एवं पंचमेश मंगल के साथ शुभ सम्बन्ध बनाता हो, अथवा गुरु-मंगल की दशा अन्तर्दशा हो, तो जातक उच्च-शिक्षित, विख्यात् एवं उच्च-पद प्रतिष्ठित होता है। देखें उदा. कुं. नं. 86 (श्री लाल बहादुर शास्त्री)

धनु जातक गुरु व बुध के प्रभाव से प्रायः अध्ययनशील प्रकृति के होते हैं। **जीवन में किसी भी व्यवसाय से सम्बन्धित**

हों, वह धर्म, ज्योतिष गूढ़ विषयों के अध्ययन से जुड़े रहते हैं। मंगल, बुध, सूर्यादि ग्रह स्वराशिस्थ या शुभस्थ **हों तो** जातक डाक्टर अथवा चिकित्सा क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदा. कुं. (87)

यदि चन्द्र, मंगल, बुधादि ग्रहों का योग केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक इलैक्ट्रिक इंजीनियर होता है। **देखें उदा. कु.** नं.(92)

पंचम में गुरु एवं केन्द्र/त्रिकोण में सूर्य-बुध का योग होने से जातक वकालत के क्षेत्र में विशेष सफल रहता है। देखें उदा. कुं. नं. (89)

चन्द्र-शुक्र एवं शनि ग्रहों के योग जातक या जातिका को अभिनय/कला एवं फिल्म क्षेत्र में सफलता दिलाता है। देखें उदा. कुं. नं. (93) (माधुरी दीक्षित)

सामान्य: धनु जातक अपनी बौद्धिक योग्यता के बल पर उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। धनु जातक की कुण्डली में सूर्य-बुध, सूर्य-मंगल, सूर्य-गुरु तथा गुरु-मंगल, गुरु-बुध एवं बुध-शुक्र के योग कैरिअर की दृष्टि से विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

आध्यात्मिक पक्ष-धनु लग्न राशि से कालपुरुष की नवमी राशि, उच्च लक्ष्य साधे धनुर्धारी पुरुष तथा कटिभाग से नीचे अर्ध अश्व की आकृति ग्रहण की हुई राशि मानी जाती है। इस प्रकार धनु जातक वाले यदि योग साधना के बल पर पाशविक वृत्तियों पर विजय प्राप्त कर लें, तो वह ध्यान और योग की उच्च स्थितियों को प्राप्त कर सकते हैं।

आर्थिक स्थिति-धनु लग्न के जातक उच्चाभिलाषी, परिश्रमी एवं बौद्धिक क्षेत्र में विशेष योग्यता होने से अपने कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। चाहे निजी व्यवसाय में हों, अथवा सर्विस में हों, दोनों स्थितियों में वह किफायतसार एवं समझकर खर्च करने वाले होते हैं। धनु जातक की कुण्डली में यदि सूर्य, गुरु, शनि, एवं बुध ग्रह शुभ हों तथा ग्रहदशा भी इन्हीं ग्रहों में से हो, तो जातक की आर्थिक स्थिति (विशेषकर 40 वर्ष की आयु के बाद) अच्छी होती है तथा अपने परिवार के लिए उदारपूर्वक व्यय करते हैं।

प्रारम्भिक जीवन में आपके साधन चाहे अल्प रहें हों, किन्तु धनु जातक अपने पुरुषार्थ एवं शुभ ग्रहों के प्रभावस्वरूप भूमि, जायदाद, मकान, वाहन आदि सुख के साधन बना लेता है। यदि कुण्डली में केन्द्र गत चंद्र-गुरु एवं बुध हो, तो जातक की धनार्जन में स्त्री का भी विशेष सहयोग होता है। देखें उदा. कुं. नं. 93, 94, यदि शनि स्वक्षेत्री हो तो जातक धीरे-धीरे विलुप्त धन का स्वामी होता है। देखें उदा. कुं. 94, धनु कुण्डली में (केन्द्र-त्रिकोण में) सूर्य-बुध का योग जातक को बौद्धिक कार्यों से विशेष धन लाभ करवाता है।

अनुकूल व्यवसाय (Professional Career)-धनु जातक की कुंडली में यदि सूर्य, बुध एवं गुरु **शुभस्थ** हों, तो जातक बौद्धिक कार्यों में विशेष सफल होता है जैसे प्रोफैसर, अध्यापक, वकील, जज, ज्योतिषी, **दार्शनिक**, चिकित्सक, धर्म गुरु (उपदेशक) कर्मकाण्ड, पण्डित, कलाकार, अभिनेता/अभिनेत्री, व्यापारी, खिलाड़ी, **करियाना** या जनरल स्टोर, समाज सेवक, राजनीतिज्ञ, बैंकिंग, गुप्तचर, एकाऊंटैंट, मैनेजर, सम्पादक, प्रकाशक होता है। यदि **कुंडली** में चन्द्र-शुक्रादि भी शुभस्थ हों, तो जातक/जातिका अभिनय, नृत्य, गायन, फैशन-डिज़ाईनिंग, सौन्दर्य प्रसाधन **आदि के** क्षेत्र में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करती है। (देखें उदा. कुं. माधुरी दीक्षित)। धनु जातक की कुंडली में शनि **दूसरे भाव** में स्वक्षेत्री हो, तो जातक उच्चस्तरीय उद्योग अथवा उच्चस्तरीय व्यवसाय में सफल होता है, देखें उदा. कुं. **94, इसके** जातक शिल्प, क्रय-विक्रय, कम्प्यूटर विशेषज्ञ, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में भी विशेष उन्नत एवं लाभान्वित होते **देखे** गए हैं।

प्रेम और वैवाहिक सुख (Love and Married Life)-प्रेम और विवाह के सम्बन्ध में धनु जातक **अत्यन्त** संवेदनशील, मैत्रीपूर्ण एवं उदार होते हैं। अपने उत्साहशील, आशावादी एवं विवेकपूर्ण व खुले व्यवहार तथा **सहज मधुर** मुस्कान लिए धनु जातक विपरीत सैक्स के युवक/युवतियों के लिए शीघ्र आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। **धनु जातक**

जीवन में आदर्श प्रेम और बलिदान को विशेष महत्त्व देते हैं। प्रेम के वशीभूत होकर वह निजी स्वार्थ का भी बलिदान कर देते हैं। परन्तु धनु द्विस्वभाव राशि होने के कारण धनु जातक प्रेम के प्रसंगों में भी जल्दबाजी नहीं करते, अपितु खूब सोच-विचार एवं ऊहा-पूह के उपरांत किसी के प्रेम में समर्पित हो पाते हैं। परन्तु जब प्रेम एवं मैत्री में तब वह पूरी ईमानदारी, उत्साह एवं गहराई से न्यौछावर होते हैं। विवाह सम्बन्धों के बारे में भी धनु जातक शीघ्रता एवं अत्यन्त भावुकता से काम नहीं लेते, बल्कि गम्भीर चिन्तन एवं सोच विचार के बाद ही जीवन साथी का चुनाव कर पाते हैं। इसी असमंजसपूर्ण प्रकृति के कारण कई बार जातक के विवाह की उपयुक्त आयु भी निकल जाती है। यदि धनु जातक की कुंडली में गुरु, सूर्य, बुध एवं शुक्र शुभस्थ हों, तो जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। पत्नी सुशील, बुद्धिमान तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सहयोगिनी होती है। देखें उदा. कुं. 87, 88

यदि कुण्डली में सप्तम भाव में राहु, भौमादि क्रूर ग्रह हो तथा बुध, शुक्र आदि अशुभ हों तो दाम्पत्य जीवन असुखद तथा पत्नी रोगिनी अथवा विरुद्ध स्वभाव की होती है।

सावधानी-गृहस्थ एवं सामाजिक जीवन में सफलता के लिए अधिक क्रोध, जिद्द एवं आलोचनात्मक (नुक्ता-चीनी) के स्वभाव पर यथासम्भव नियन्त्रण रखने का प्रयास करें। धनु लग्न जातक की पत्नी को भी पति के क्षणिक क्रोध की उपेक्षा करके धैर्य एवं शांति का परिचय देना चाहिए।

अनुकूल राशि मैत्री-धनु राशि-लग्न जातक को प्रायः मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ व मीन लग्न राशि के जातकों के साथ विवाह, व्यापार आदि सम्बन्ध लाभप्रद होंगे। कर्क, धनु व मकर राशि वालों के साथ सामान्य तथा वृष व बृश्चिक, मकर राशि वालों के साथ सम्बन्ध लाभप्रद नहीं होंगे।

विवाह में तात्त्विक एवं राशि मैत्री के अतिरिक्त पारस्परिक कुण्डली मिलान (मंगलीक आदि विचार) तथा गुण मिलान का भी विचार कर लेना चाहिए।

धनु लग्न की कन्या/जातिका (Sagittarian Girl)



धनु लग्न (राशि) की कन्या कुछ लम्बे कद की, सुन्दर, सुगठित एवं संतुलित (Balanced) शरीर, अण्डाकार चौड़ाई लिए लम्बा चेहरा, कुछ गेहुँआ वर्ण, चमकदार बड़ी (बादामी) आंखें, गहन (घनी) भौंहें, सुन्दर मजबूत दांत, कुछ चौड़ा मस्तक, खूबसूरत, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है।

स्वाभावगत विशेषताएं-

चापोदये या वनिताभिजाता सा बुद्धिशूरा बहुकला कुशला।
पुण्यकर्मरता,धर्मशीला, धन, पुत्रवती जाता पति-सुखान्विता॥

अर्थात् धनु लग्न में उत्पन्न जातिका अत्यन्त बुद्धिमान, गायन, संगीत, साहित्य, नृत्य, अभिनय आदि कलाओं में कुशल, परोपकारी, दया-दान आदि पुण्य कर्मों में रूचि रखने वाली, धनवान्, श्रेष्ठ पति एवं सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त यदि गुरु, मंगल, सूर्य शुभ हों, तो धनु जातिका अध्ययनशील प्रकृति, हंसमुख, नर्म दिल, उदार हृदय, ईमानदार, सत्यप्रिया, धर्मपरायणा होते हुए भी दूसरों से सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करने वाली एवं स्वतन्त्र चिन्तन करने वाल, स्वाभिमानिनी, न्यायशील, साहसी, आत्मविश्वास की भावना से युक्त होती है। जिस काम को करने का निर्णय कर ले, उसे हर स्थिति में पूरा करके ही छोड़ेगी।

यद्यपि अपने लक्ष्य के लिए निर्णय करने में विलम्ब हो सकता है परन्तु जब किसी कार्य के लिए गम्भीरता से निश्चय कर ले, तो उसमें अवश्य सफलता प्राप्त कर लेती है। ऐसी जातिका प्रायः उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सफल होती है। धनु लग्न की जातिका की कुण्डली में मंगल, बुध आदि ग्रह शुभस्थ हों, तो जातिका उच्चाभिलाषी, परिश्रमी एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्साहशील एवं सक्रिय रहती है। जातिका अभिनय, नृत्य, कास्मैटिक्स, ड्रैस-डिज़ाईनिंग, कम्प्यूटर

डिज़ाईनिंग, आफिस-कलर्क, अध्यापन (शिक्षा) खेल-कूद, चिकित्सा आदि बौद्धिक क्षेत्रों में विशेष सफल होती है।

इसके अतिरिक्त शिक्षा, व्यवसाय एवं कैरियर के लिए गत पृष्ठों में लिखे गए पुरुष धनु जातक के व्यवसाय सम्बन्धी विवरण का भी अवलोकन कर सकते हैं।

मंगल, गुरु एवं बुध आदि ग्रहों के प्रभावस्वरूप धनु जातिका गुणवती, चरित्रवान्, उच्च-शिक्षा, पठन-पाठन, लेखन, सम्पादन आदि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाली, अपने गुणों द्वारा समाज एवं परिवार में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली, बौद्धिक, कलात्मक एवं रचनात्मक विषयों में विशेष रुचि रखने वाली होगी। कम पढ़ी-लिखी होने पर भी धर्म एवं लोक व्यवहार के सम्बन्ध में अच्छा ज्ञान रखेगी।

स्वास्थ्य एवं रोग-धनु जातिका का स्वास्थ्य बाह्य तौर पर देखने से अच्छा लगता है। परन्तु यदि जन्म कुंडली में चन्द्र, मंगल, शुक्र ग्रह अशुभ हों, अथवा षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम भावों में शनि, मंगल, चन्द्र, केतु, राहु आदि क्रूर ग्रह पड़े हों, तो जातिका को उदर या रक्त विकार, अनियमित मासिक धर्म, रक्तस्राव आदि गुप्त रोग, पत्थरी, गला, नज़ला, जुकाम, शिर या नेत्र पीड़ा रोगों का भय रहता है। अधिक विवरण के लिए धनु पुरुष जातक देखें।

प्रेम और दाम्पत्य सुख-प्रेम के सम्बन्ध में धनु जातिका व्यवहार कुशल, स्पष्टवादी, सहृदया एवं सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करने वाली, मधुर मुस्कान, स्वछन्द व्यवहार एवं आकर्षक व्यक्तित्व के कारण धनु जातिका अपना काम करवाने में कुशल होती है। प्रेम प्रसंगों में भी भावुकतावश बहुत जल्दबाजी नहीं करती बल्कि गहन सोच-विचार के बाद ही विपरीत योन (Opposite sex) के प्रति प्रेम भावना प्रकट करती है। परन्तु अपने स्वाभिमान और आदर्शों के विरुद्ध समझौता नहीं करती। यदि कुंडली में गुरु, बुध शुभस्थ हों, एवं सप्तम भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, और दशा भी शुभ ग्रह की हो तो जातिका का विवाह उच्चप्रतिष्ठित सुयोग्य लड़के के साथ होता है। पति धन, सम्पदा एवं सुख साधनों से सम्पन्न होगा तथा परस्पर दाम्पत्य जीवन भी सुखमय होगा। विवाह के बाद जातिका अपने पति के परिवार एवं आर्थिक क्षेत्र में भी विशेष सहयोगिनी होती है।

यदि सप्तम भाव में मंगल, राहु, केतु, शनि आदि क्रूर ग्रह हों एवं अशुभ नवांश हो, तो दाम्पत्य सुख में कमी होती है।

अनुकूल मैत्री राशियाँ-धनु लग्न (राशि) की जातिका बौद्धिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक क्षेत्र में अपने से श्रेष्ठकर जीवन साथी को अधिमान (Prefrence) देती है। जातिका का मैत्री एवं विवाह सम्बन्ध प्रायः मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ व मीन लग्न राशियों के साथ शुभ एवं लाभदायक होगा। कर्क, धनु और मकर लग्न राशि वालों के साथ मध्यमफली तथा वृष व बृश्चिक लग्न राशि वाले जातक के साथ अशुभफली रहने की सम्भावना होगी। फिर भी परस्पर जन्मपत्रियों मिलान करके विवाह सम्बन्ध करना शुभ एवं कल्याणकारी होगा।

सावधानी-धनु लग्न (राशि) की जातिका को जीवन साथी चुनाव करते समय बहुत अधिक तर्क-वितर्क, ऊहा-पोह एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए। कई बार वृथा हठधर्मी के कारण मांगलिक विवाह की उपयुक्त आयु निकल जाती है तथा स्वयं तथा माता-पिता एवं साथी को अनेक प्रकार की दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है।

दशाऽन्तर्दशाओं में ग्रहों का फल

किसी भाव सम्बन्धी फलादेश ज्ञात करने के लिए ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा तथा गोचर ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति को भी ध्यान में रखना होता है। सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा आदि के काल में (कुण्डली में स्थिति अनुसार) अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। ग्रहों की दशाअन्तर्दशा के फलादेश का निर्णय करने से पूर्व ग्रहों के कारकत्व, स्थान आदि बल, वक्री-मार्गी, उच्च-नीचादि अवस्थाओं को भी ध्यान में रखना उचित होगा। प्रत्येक लग्न में ग्रहदशा फल में भिन्नता आने की सम्भावना होती है। शुभ एवं उदित ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में धन, वाहन, भूमि, विवाह, सन्तान, विद्या आदि सुखों की प्राप्ति तथा सोची हुई योजनाओं में सफलता प्राप्त करवाता है।

जबकि अशुभ भावस्थ एवं नीच शत्रु राशिगत पापीग्रह अपनी दशा में धन हानि, शत्रु एवं रोग पीड़ा, प्रियजनों से

अनबन, क्लेश व बनते कार्यों में अड़चनें पैदा करता है।

धनु लग्न जातक की कुण्डलीमें सूर्य, बुध, गुरु, मंगल ग्रह शुभ फल, अन्यग्रह-चन्द्र, शुक्र व शनि ग्रह शुभाशुभ अर्थात् मिश्रित फल प्रदान करेंगे। राहु-केतु कुण्डली में स्थिति के अनुसार फल करेंगे। इस सम्बन्ध में इस लग्न के आरम्भ में "**धनु लग्न में शुभाशुभ एवं योगकारक ग्रह**" शीर्षक के अन्तर्गत लिखे विवरण का भी अध्ययन करना चाहिए।

धनु लग्न सम्बन्धी कुछ उपयोगी उपाय

शुभ रंग (Lucky Colours)-पीला, गुलाबी, हल्का हरा , संगतरी, हल्का नीला (Light Blue, Green)

अशुभ रंग-काला, लाल, गहरा हरा

शुभ वार (Favourable Days)-रविवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार तथा शनिवार

भाग्यशाली नग (Lucky Stone)-माणक (Ruby) तथा पुखराज दोनों में से कोई एक नग (ग्रहदशा एवं आवश्यकता अनुसार) सोने या ताम्र-सुवर्ण मिश्रित अंगूठी में क्रमशः रविवार अथवा गुरुवार को विधिपूर्वक धारण करें। नगर सहित अंगूठी पर 3 माला बीज मन्त्र का पाठ करके शुद्ध करके शुभ मुहूर्त्त में धारण करें। विस्तृत विधि एवं मुहूर्त्त हेतु हमारी प्रकाशित **पंचांग दिवाकर** कृत पंडित पन्ना लाल ज्यो. का अवलोकन करें।

सूर्य बीज मन्त्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

गुरु बीज मन्त्र-ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

वीरवार का व्रत विधिपूर्वक रखना तथा उस दिन एक बार मिष्ठान युक्त भोजन करना तथा गौओं को हरा चारा एवं गुड़ सहित चपातियां डालना शुभ होगा।

शुभ अंक-1, 3, 5, व 9 के अंक क्रमानुसार शुभ एवं भाग्यकारी होते हैं।

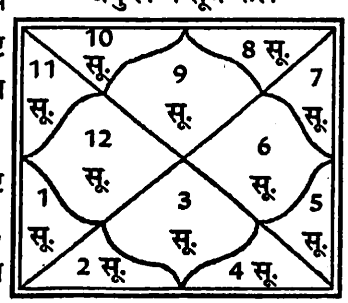
भाग्योन्नतिकारक वर्ष-32वां, 36, 37, 39, 41 एवं 45वां 47वां एवं 50वां वर्ष शुभ एवं भाग्योन्नतिकारक होगा.

नोट- अपने लग्न से सम्बन्धित तथा विस्तृत जानकारी के लिए हमारी शीघ्र प्रकाश्य "अनिष्ट ग्रहों के सुनहरी उपाय" नामक उपयोगी पुस्तक मंगवा कर लाभ उठाएं। **पं. पन्ना लाल ज्यो.**

धनु लग्न के द्वादश भावों में सूर्य का फल

नोट : प्रत्येक भाव पर सूर्यादि ग्रहों के फल का निर्णय करते समय कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थिति, योग, दृष्टि आदि की भी समीक्षा कर लें, तो ग्रहफल अधिक स्पष्ट प्रकट होंगे। धनु लग्न में सूर्य भाग्येश होने के कारण जातक के जीवन में सूर्य का विशेष महत्व होता है।

धनु लग्ने सूर्य फल



प्रथम भाव- में मित्र ग्रह की राशि (धनु) पर सूर्य के प्रभाव से जातक सम्पुष्ट शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व, भाग्यशाली, माता-पिता व अग्रजों का आदर करने वाला, अध्ययनशील, पढ़ने में रूचि, दृढ़-निश्चय वाला, ईमानदार, पराक्रमी, बुद्धिमान, उच्चस्तरीय रहन-सहन, व्यवहार कुशल, धन-धान्य, भूमि एवं वाहन आदि सुखों से युक्त, शीघ्र उत्तेजित होने वाली प्रकृति, परन्तु धार्मिक एवं परोपकारी मनोवृत्ति होगी। ऐसा जातक उच्चाभिलाषी, धनी एवं उच्च प्रतिष्ठित होता है। स्त्री सुन्दर, कार्यशील एवं परिवार में सहयोग करने वाली होगी। गुरु या बुध का शुभ योग या दृष्टि हो,

तो जातक उच्चाधिकारी, धर्म गुरू-प्राध्यापक या वकील, जज आदि हो सकता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 89, यदि सू.-च. योग हो, तो धनवान होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 94

द्वितीय भाव-में मकर राशि पर सूर्य के प्रभाव से या सूर्य की दशा में जातक को कार्य/व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के पश्चात निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। पारिवारिक क्षेत्र में भी अनेक परेशानियों एवं तनाव का सामना रहता है। यदि शनि अशुभ हो तो स्त्री को कष्ट एवं आर्थिक संकट सम्बन्धी समस्याओं के कारण मन विक्षुब्ध रहता है। ऐसा जातक कई बार कटुभाषी, मुख रोगी एवं नेत्र रोग आदि के कारण कष्ट उठाता है। यदि शनि शुभ हो, तो जातक व्यवहार कुशल, उच्चस्थ लोगों से सम्मान प्राप्त, तकनीकी एवं शिल्पकला विद्या जानने वाला तथा क्रय-विक्रय से धनार्जन करने वाला होगा। देखें उदाहरण कुंडली नं. 88

तृतीय भाव-में शत्रुग्रह की कुम्भ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक धैर्यवान, भाग्यवान्, साहसी, परोपकारी, परिश्रमी एवं प्रतिष्ठित होता है। भाई-बहनों के सुख में कमी अथवा इसका कोई भाई बहुत उच्च-प्रतिष्ठित होने पर भी उससे कोई विशेष लाभ न हो। जातक का स्वयं भी उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क होगा। धार्मिक एवं ज्योतिष आदि विषयों में भी विशेष रूचि होगी। ऐसा जातक धर्म और नियमों का पालन करने वाला तथा निजी प्रयासों के बल पर धनार्जन करने वाला, सुख-साधनों से युक्त होता है। वायु तत्त्व राशि होने से जातक को विदेश गमन आदि की संभावना होगी।

चतुर्थ भाव-में मित्र राशि मीन पर सूर्य के प्रभाव से जातक को भूमि, जायदाद एवं वाहन का सुख प्राप्त होता है। जातक को माता-पिता के प्रति विशेष आसक्ति एवं सत्कार रहे। शनि-गुरु यदि शुभस्थ हो, तो जातक आवास, भूमि, वाहनादि सुखों से सम्पन्न हो, कारोबार में विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधान बनते रहेंगे। यद्यपि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की परिस्थितियां आती रहेंगी। यदि सूर्य राहु-शनि आदि अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो धन-हानि, तनाव एवं उपरोक्त सुखों में कमी तथा माता-पिता को कष्ट होने की संभावना रहती है।

पंचम भाव-में उच्च राशि मेष पर सूर्य होने से जातक कुशाग्र बुद्धि, उच्चाभिलाषी, भाग्यवान, उच्च विद्या प्राप्ति एवं कम्पीटीशन इत्यादि में सफल, उच्च प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्ति, धार्मिक कार्यों में भी विशेष रूचि रखने वाला एवं स्वतन्त्र व स्वाभिमानी प्रकृति का होगा। अपनी प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखे। किसी भी प्रकार की अधीनता पसन्द नहीं होती। गुरु, बुधादि ग्रहों का योग या सम्बन्ध हो, तो जातक भूमि, उच्च-विद्या, संतान, अच्छा व्यवसाय, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होगा। यदि राहु-शनि आदि अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि होगी, तो जातक को भाग्योन्नति में अड़चनें व चित्त में अशांति होगी।

षष्ठ भाव-में शत्रु राशि वृष पर सूर्य के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति एवं व्यवसाय में बार-बार विघ्न-बाधाएं हों तथा कठिन परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनें। परन्तु धन का व्यय भी अधिक रहे। मातुल पक्ष (नानके) के सुख में कमी, शत्रुओं के कारण मन में परेशानी अधिक रहे। गुरु, शनि स्वराशिस्थ या उच्चस्थ हों तो जातक को विदेश आदि कार्यों में विशेष सफलता हो।

सप्तम भाव-में मित्र मिथुन राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, शिक्षित, प्रभावशाली, विवाह के बाद भाग्य में विशेष परिवर्तन परन्तु व्यवसाय में उन्नति करने वाला, यदि सूर्य-बुध हो तो उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क तथा उनके द्वारा विशेष सहायता प्राप्त करने वाला, व्यवसायिक क्षेत्र में तथा पारिवारिक सुख में कुछ अड़चनों के बाद कामयाबी प्राप्त हो। विवाह सुख में भी विलम्ब एवं विघ्न होने के संकेत तथा भाग्य में 34 वें वर्ष के बाद सफलता के योग। ऐसा जातक न्यायपालिका से सम्बन्धित या कानून आदि का जानकार भी होता है।

अष्टम भाव-में कर्क राशि पर सूर्य होने से जातक के जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष संघर्षपूर्ण रहता है।

भाग्योन्नति में बहुत सी रूकावटें आती हैं। पारिवारिक सुख में कमी तथा व्यवसाय एवं आर्थिक क्षेत्र में भी विशेष परेशानियां बनी रहती हैं। संघर्ष अधिक व आय सीमित रहती है। भाग्य के सम्बन्ध में विशेष परिवर्तन होते रहते हैं। यदि सूर्य, शनि, राहु आदि से युक्त या दृष्ट हो,तो जातक को शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, पिता को कष्ट, वृथा खर्च तथा दौड़-धूप अधिक रहती है।

नवम भाव-में स्वराशि सिंह राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, उच्चाभिलाषी, भाग्यशाली, स्वाभिमानी प्रकृति एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। ऐसा जातक परोपकारी, उदार हृदय एवं मंत्र-ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रुचि, धर्म-कर्म में श्रद्धावान तथा श्रेष्ठ बुद्धि वाला, अच्छा आवास, धन, वाहन एवं पुत्रादि सुखों से युक्त तथा ख्यातिवान होता है। गुरु, बुध, भौमादि ग्रह शुभस्थ हों तो जातक उच्चप्रतिष्ठित, डाक्टर, इंजीनियर आदि उच्च पद प्राप्त व्यक्ति होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 87 तथा 90. सूर्य, चन्द्र, मंगल इक्ट्ठे हो, तो जातक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफल होता है। यदि सूर्य, शनि आदि शत्रु राशि युक्त हों तो उक्त सुखों में कमी होती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 95

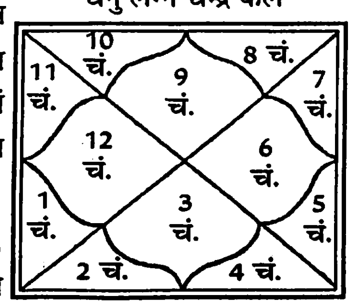
दशम भाव-में मित्र राशि कन्या पर भाग्येश सूर्य होने से जातक उद्यमी, उच्चशिक्षित, भाग्यशाली, उच्च-प्रतिष्ठित पदाधिकारी अथवा सरकारी क्षेत्रों से लाभ उठाने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति एवं कानून-नियमों का जानकार एवं अनुशान प्रिय होगा, उच्च-निम्नादि अनेक मित्रों से युक्त, पिता के द्वारा सुख एवं सहयोग प्राप्त करने वाला, उच्चस्तरीय जीवन यापन करने वाला, स्त्री, भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों से युक्त, उच्च प्रतिष्ठित तथा साधन सम्पन्न होता है। यदि भौमादि क्रूर ग्रहों का योग भी हो तो पैतृक सुख में कमी होती है। ऐसे जातक को चिकित्सा सम्बन्धी भी विशेष ज्ञान होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 86, 91, 92

एकादश भाव-में नीच राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक उच्चशिक्षित, परिश्रमी, बुद्धिमान, गुणी, स्वाभिमानी, विद्वान व्यक्ति होता है। परन्तु जीवन के प्रारम्भिक भाग में व्यवसाय एवं धनार्जन करने के सम्बन्ध में विशेष कठिनाइयों व संघर्ष का सामना करना पड़ता है। आर्थिक क्षेत्र में एवं भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएं अधिक होती है। यद्यपि सन्तानोत्पत्ति के बाद कुछ सुधार शुरु होता है। विदेशों में भाग्योन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होते हैं। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से भी धनार्जन करता है।

द्वादश भाव-में मित्र ग्रह की राशि बृश्चिक पर सूर्य होने से जातक धार्मिक एवं परोपकारी स्वभाव का तथा विभिन्न साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला, परिश्रमी तथा कठिन से कठिन काम करने में कुशल होता है। परन्तु निकट बन्धुओं के कारण जातक चिन्तित एवं परेशान होता है। सूर्य यदि राहु, शनि आदि अशुभ ग्रह युक्त हो तो धन का खर्च विशेष अधिक होता है। आंखों में कष्ट एवं उदर विकार का भय, मामा को कष्ट अथवा सुख में कमी। यदि बुध, शनि, गुरु आदि ग्रहों का भी सम्बन्ध हो, तो जातक का भाग्योदय विदेश में होता है। यद्यपि भाग्योदय विलम्ब से या 37 वर्ष की आयु के बाद होता है।

धनु लग्न में चन्द्रमा का द्वादश भावगत फल

धनु लग्ने चन्द्र फल



नोट : धनु लग्न कुंडली में चन्द्र अष्टमेश अर्थात आयु का कारक होने से विशेष महत्व का है। यदि निर्बल होकर किसी अशुभ ग्रह (शनि, भौम, राउ आदि) के साथ योग करता हो, तो जातक के स्वास्थ्य, आयु आदि के लिए ठीक नहीं होता, किन्तु बुद्धि एवं विद्वता की दृष्टि से जातक को अच्छा होता है। ध्यान रहे, सूर्य से 12 से कम अंशों का अन्तर रहने से चन्द्र क्षीण माना जाता है, जो वांछित शुभ फल नहीं दे पाता।

प्रथम भाव- में धनु राशि पर चन्द्र होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, चंचल परन्तु सात्विक प्रकृति, बुद्धिमान, धार्मिक विचार, परिश्रमी, शिल्प एवं दस्तकारी

के कामों में कुशल, लेखन एवं अध्ययन आदि कार्यों में रूचि, शीघ्र क्रुद्ध परन्तु प्रेम से वश में होने वाला, यदि चन्द्र बलान्वित हो, तो दीर्घायु। संगीत, कला, धार्मिक, ज्योतिष आदि विद्याओं में रुचि हो। यदि किसी अशुभ ग्रह का योग एवं दृष्टि होने से जातक के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में कमी, मानसिक तनाव, माता या स्त्री को कष्ट अथवा उनके सुख में कमी रहे। कार्य-व्यवसाय में भी कठिनाइयों एवं परेशानियों के बाद सफलता हो। जातक का आध्यात्मिक विषय की ओर भी विशेष रुझान होता है। यदि भाग्येश सूर्य का योग हो, तो जातक अत्यन्त धनी व प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। देखें कुंडली नं. 94

द्वितीय भाव-में मकर राशि पर चन्द्र हो, तो अष्टम भाव पर चन्द्र की स्वगृही दृष्टि होने से जातक दीर्घायु, हंसमुख, मृदुभाषी, सुन्दर आवास, वाहन आदि सुखों से युक्त, व्यवहार कुशल, गुप्त युक्तियों द्वारा धन लाभ, धार्मिक एवं परोपकार भावना से युक्त होता है, परन्तु धन का संचय कम होता है तथा रहन-सहन आदि पर व्यय अधिक होता है। पारिवारिक सुखों में कमी रहती है। यदि चन्द्र, शनि, राहु या भौमादि ग्रह से दृष्ट हो, तो जातक के धन का अपव्यय, नेत्र, दंत आदि रोग एवं जातक उलझनों के कारण चिन्तित रहता है। देखें कुंडली नं. 91

तृतीय भाव-में कुम्भ राशि पर चन्द्र होने से जातक परिश्रमी, उच्चाभिलाषी, निज परिश्रम एवं उद्यम से जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, पराक्रमी, अध्ययनशील, संगीत-कला एवं बौद्धिक कार्यों में विशेष रूचि रखने वाला, जीवन का प्रारम्भिंक भाग विशेष संघर्षपूर्ण रहता है। यात्राएं अर्थात भ्रमण अधिक होते है। भाई-बहन के सुखों में भी कुछ कमी रहे। जातक लोक कल्याण, आतिथ्य सत्कार एवं परोपकार की भावना विशेष रखे। कार्य/व्यवसाय में भी संघर्षों एवं कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त हो। जातक को वकालत, प्रतिनिधि, सेल्समैन, क्रय-विक्रय, पत्रकारिता आदि के कार्यों में विशेष सफलता की संभावना हो। 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योदय हो।

चतुर्थ भाव-में मीन राशि पर चन्द्रमा होने से जातक/जातिका सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, तीव्र बुद्धिमान, प्रसन्न-वदन (हंसमुख), परिश्रमी, उच्चविद्या, विनयशील, मधुरभाषी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। प्रारम्भिक जीवन में कार्य-व्यवसाय में कुछ संघर्ष व कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। यदि चन्द्र के साथ यहां शुक्र, शनि आदि ग्रहों का भी संयोग हो, तो जातक/जातिका धनी, अत्यन्त सुन्दर, अभिनय, नृत्य, संगीत-कला, फिल्म आदि क्षेत्र में सफल, माता-पिता, भूमि, जायदाद, धन, सवारी, स्त्री आदि सुख प्राप्ति में सफल होता है। विवाह के उपरांत अपने जन्म स्थान से दूर भाग्योन्नति होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 93 (माधुरी दीक्षित)

पंचम भाव-में मेष राशि पर चन्द्रमा होने से जातक बुद्धिमान होते हुए भी चिन्तित रहने वाला, अस्थिर मन। यदि गुरु आदि शुभ योग हो, तो परिवर्तनशील, शीघ्र प्रसन्न होने वाला, भ्रमणशील अर्थात यात्राएं करने का शौकीन, उच्च विद्या में विघ्न/बाधाओं के बाद सफलता, जातक भावुक हृदय, कन्या सन्तति अथवा सन्तान के सम्बन्ध में चिन्तित, ज्योतिष, संगीत, कला, साहित्य की ओर रूचि, किसी विशेष दस्तकारी (हुनर) का जानकार हो। कार्य व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन तथा अन्य कार्य करने वाला। व्यवसाय में अपने स्वार्थ के प्रति सावधान, लाटरी से अचानक धन प्राप्ति के भी योग है। यदि यहां चन्द्र, शनि आदि ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो विघ्न/बाधाएं एवं आर्थिक परेशानियां अधिक होती हैं।

षष्ठ भाव-में वृष राशि पर चन्द्रमा होने से जातक कल्पनाशील प्रत्येक कार्य में गंभीर सोच विचार करने वाला, धनादि के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की योजनाएं बनाने में कुशल, परन्तु अधिकांश योजनाएं कार्यशील न होकर मन में ही रह जाएं। अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों से धनार्जन करने वाला हो, कामुक एवं विलासपूर्ण प्रवृत्ति, अनावश्यक खर्च बहुत रहें। यहां वृषस्थ चन्द्र मामा, मौसी, फूफी के लिए शुभकारक होता है। यदि चन्द्र मंगल-शनि आदि ग्र से युक्त या दृष्ट हो तो कृश शरीर,उदर विकार, मन्दाग्नि, गुर्दे का रोग, विवाह सुख में विलम्ब आदि अशुभ फल होते हैं।

सप्तम भाव-में मिथुन राशि पर चन्द्रमा होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, वाणी में चातुर्य एवं तर्क-वितर्क करने में

कुशल, कामुक, प्रभावशाली व्यक्तित्व, गेहुंआं वर्ण, भूमि, आवास, स्त्री एवं वाहन आदि सुखों से युक्त हो, परन्तु व्यवसाय एवं आजीविका में कठिनाइयों एवं संघर्ष के बाद सफलता हो। कुंडली में सूर्य, बुध आदि ग्रह शुभ हों, तो 32 वर्ष के बाद भाग्य में विशेष लाभ व उन्नति हो। यदि चन्द्र के साथ भौम का योग हो, तो जातक वकालत के पेशे में विशेष सफलता प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग, मैडिकल आदि में भी सफल होता है। यदि सूर्य, बुध केन्द्रगत शुभस्थ हों, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित राजनेता होता है। देखें उदाहरण कुंडली 86, 89

अष्टम भाव-में कर्क राशि पर चन्द्रमा हो, तो जातक दीर्घायु, परन्तु चन्द्र निर्बल या अशुभ ग्रह से युक्त हो, तो जातक का अस्वस्थ शरीर, व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों से गुजारे योग्य आय के साधन बनते हैं। पारिवारिक एवं आर्थिक परेशानियां अधिक होंगी। यदि चन्द्र के साथ यहां गुरु का योग या दृष्टि हो, तो जातक का भाग्य अपने जन्म स्थान से अतिरिक्त (विदेश आदि) स्थान में उदय होता है। ऐसा जातक कठिनाइयों के बावजूद रईसी ढंग से जीवन व्यतीत करता है।

नवम भाव-में सिंह राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक स्वरूपवान, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, भाग्यशाली, बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति, धार्मिक एवं परोपकारी स्वभाव, संगीत, कला एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का शौकीन, धर्म-ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि, भाइयों के सुख में कमी, बहन का सुख यथेष्ट होगा। देश-विदेश में दीर्घ यात्राओं के अवसर प्राप्त होने की संभावना, यदि यहां मंगल, बुध आदि ग्रहों का योग हो तो जातक हस्त कलाओं, विद्युत विशेषज्ञ या इलैक्ट्रीकल इंजीनियर होता है। यदि शुक्र शुभस्थ हो, तो स्त्री सुन्दर, सुशील एवं सुपठित होती है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 90

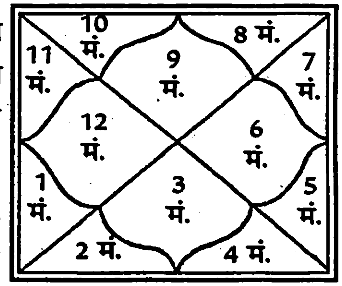
दशम भाव-में कन्या राशि पर चन्द्रमा के प्रभावस्वरूप जातक प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल, वाकपटु एवं हंसमुख व विनोदी-स्वभाव, लज्जाशील, तीव्र स्मरणशक्ति, अपने व्यवसाय के प्रति सावधान, छोटे-मोटे प्रत्येक विषय पर सूक्ष्म विवेचना करने वाला, वर्तमान परिस्थितियों से असंतुष्ट होने पर भी व्यवसाय में अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान होता है। ऐसा जातक सुन्दर आवास, वाहन आदि सुख साधनों को कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त करता है। यदि चन्द्र के साथ सप्तमेश बुध एवं गुरु का भी शुभ योग हो, तो जातक की स्त्री सुन्दर, सुशील तथा धनार्जन, व्यवसाय आदि प्रत्येक क्षेत्र में सहायिका होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 87

एकादश भाव-में तुला राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक तीव्र बुद्धिमान, लोकप्रिय, पराक्रमी, धनवान, अपने कार्य में कुशल, विभिन्न स्रोतों एवं साधनों के द्वारा धनार्जन करने वाला तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध रखने वाला होगा। जातक व्यवसाय के क्षेत्र में गुप्त युक्तियों के द्वारा विपुल धनार्जन करने वाला होता है। भूमि, धन, आवास, सवारी आदि सुखों से सम्पन्न होता है। संतान के सम्बन्ध में चिन्तित अथवा अल्प संतति सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्रमा, राहु, शनि आदि अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो संतान सुख में कमी होती है तथा गुप्त चिन्ताओं के कारण व्यथित रहता है।

द्वादश भाव-में वृश्चिक (नीच) राशि पर चन्द्रमा होने से जातक को आय कम तथा खर्च अधिक रहते हैं। शत्रुओं के कारण मानसिक परेशानियों का सामना रहता है। यदि द्वादश चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक इंजीनियरिंग, ठेकेदारी आदि के कामों से अच्छा लाभ कमाता है। परन्तु भाई-बहनों एवं सम्बन्धियों के सुख में कमी रहती है। दुर्घटना के कारण चोटादि लगने का भय भी होता है। शनि की दृष्टि हो तो आकस्मिक व्यय अधिक होते है। विदेश में भाग्योदय की संभावनाएं होती है। गुरु की दृष्टि से जातक उदार एवं दानशील होता है।

धनु लग्न में मंगल का द्वादश भावगत फल

धनु लग्ने, मंगल फल



धनु लग्न में मंगल पंचमेश व द्वादशेश होने में शुभ कारक माना जाता है। शुभ भावों में होने से जातक उच्चशिक्षा, संतान, भूमि, जायदाद एवं विदेश आदि सुखों को प्रदान करता है, अशुभ होने से स्वास्थ्य हानि, दुर्घटना, भाई एवं पुत्र संतति आदि से सम्बन्धी परेशानियां करता है। अकेला मंगल के फल का निर्णय करते समय अन्य ग्रहों के योगादि का भी विचार कर लेना युक्ति संगत होगा।

प्रथम भाव-में मित्र राशि धनु पर मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी, साहसी, परिश्रमी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता, निडर, विनोदप्रिय, भ्रमणप्रिय एवं शीघ्र उत्तेजित होने वाला, स्वाभिमानी, उच्चाभिलाषी तथा बुद्धिमान एवं निज पुरुषार्थ से जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। गुरु की राशि होने से जातक धार्मिक वृत्ति वाला एवं अच्छी-बुरी बात की पहचान रखने वाला होगा। जातक भूमि, मकान एवं वाहन तथा संतानदि सुखों से युक्त होगा। बुध यदि अशुभ हो तो स्त्री के सुख में कमी हो। ध्यान रहे, इस भाव में मंगल होने से मंगलीक दोष भी होता है। जोकि वैवाहिक सुख में विलम्ब अथवा बाधाकारक होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 87, 88

द्वितीय भाव-में मकर (उच्च) राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक कुशाग्र बुद्धि, परिश्रमी, महत्वाकांक्षी, अधिकारपूर्ण वाणी का प्रयोग करने वाला, धनार्जन एवं संचय करने में कुशल, परन्तु यदि शनि अशुभस्थ हो तो धन का अपव्यय भी अधिक रहे। पंचम भाव पर विशेष दृष्टि होने से जातक उच्चशिक्षित, स्वाभिमानी, उच्चाकांक्षी एवं कुछ तेज प्रकृत्ति का होगा। पारिवारिक जीवन में भी कुछ तनाव एवं उलझनों का सामना रहे। धन लाभ एवं भाग्योन्नति में भी अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त हो। अष्टम में कोई शनि, राहु आदि अशुभ ग्रह हो, तो दुर्घटना से चोटादि का भय हो।

तृतीय भाव-में कुम्भ राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी, साहसी, जल्दबाजी से कार्य करने वाला, पुरुषार्थी तथा अपने भुजबल द्वारा धनार्जन करने वाला, नए-नए मित्र बनाने से कुशल, परन्तु भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी रहे। उच्च विद्या एवं संतान आदि सुखों में भी अड़चनों के बाद सफलता हो। कार्य/व्यवसाय एवं भाग्य में भी उतार-चढ़ाव अधिक रहें। परन्तु ऐसा जातक अपने उद्यम द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। जातक को धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं की ओर भी रुचि रहे। जातक तकनीकी कार्यों में भी कुशल हो।

चतुर्थ भाव-में मीन राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक उच्चाभिलाषी, स्वाभिमानी, उच्च विद्या में अड़चनें, माता-पिता के शरीर के लिए कष्टकारी, व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना हो, मकान, वाहन एवं स्त्री आदि के सम्बन्ध में भी परेशानियों के बाद सफलता, गृहस्थ के प्रति अशांत मन, चतुर्थस्थ मंगल होने से मंगलीक दोषकारक भी होता है। यदि कुंडली मिलान ठीक न हुआ हो, तो दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण एवं असुखद रहता है।

पंचम भाव-में स्वराशि मेष में मंगल होने से जातक तीक्ष्ण बुद्धि, उत्साहशील एवं साहसी, परन्तु शीघ्र आवेश में आ जाने वाला होता है। उच्चशिक्षा, कला आदि क्षेत्र में कुछ संघर्षों के बाद सफलता, धनार्जन एवं व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष के बाद विशेष सफलता प्राप्त हो तथा खर्च अधिक रहें। मंगल पर अशुभ प्रभाव हो, तो जातक को संतान के कारण कष्ट हो। 34 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योदय। मंगल के साथ बुध भी हो, तो जातक का विवाह के पश्चात विदेश में भाग्योदय होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 93

षष्ठ भाव-में वृष राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक साहसी, शत्रुजित्, उच्च विद्या के सम्बन्ध में विघ्न बाधाओं का सामना रहे। मामा के सुख में कमी, सेना, पुलिस आदि के क्षेत्र में सफल, विवाह एवं संतान के पक्ष में विघ्नों के पश्चात्

सफलता हो। धन का आकस्मिक खर्च अधिक होते है। यदि अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो मन्दाग्नि, गुप्त रोगों की संभावना होती है। लग्न भाव पर मंगल की विशेष दृष्टि होने के कारण जातक शीघ्र क्रोधित होने वाला परन्तु शीघ्र ही शांत होने का स्वभाव भी रखता है।

सप्तम भाव-में मिथुन राशि पर मंगल के प्रभाव से यद्यपि मंगलीक दोष-कारक होता है जोकि वैवाहिक सुख में विघ्नकारक होता है। परन्तु सप्तम भाव में मित्र राशि (धनु) को देखने से जातक परिश्रमी, बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पारिवारिक सुख यथेष्ठ होता है तथा जातक धन, भूमि, आवास एवं वाहनादि सुखों से युक्त होता है। कार्य व्यवसाय में विघ्नों एवं कठिनाइयों के पश्चात सफलता प्राप्त होती है। लेन-देन अथवा सांझेदारी के कामों में हानि की संभावना होती है। दाम्पत्य-सुख में कमी, यदि बुध, गुरु आदि शुभ ग्रह का योग हो या भली प्रकार कुंडली मिलान किया गया हो तो वैवाहिक सुख अच्छा होता है तथा विवाह के बाद विशेष भाग्योन्नति होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 89

अष्टम भाव-में कर्क (नीच) राशि में होने से जातक चंचल बुद्धि, पराक्रमी, स्वाभिमानी एवं भ्रमणशील होता है। जीवन का प्रारम्भिक भाग संघर्षपूर्ण होता है। जातक को शरीर-कष्ट, पेट-विकार, गुप्त चिन्ताएं, घरेलू एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में अड़चनें तथा व्यवसाय में भी विघ्न एवं कठिनाइयों का सामना रहता है परन्तु जातक गुप्त युक्तियों द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन कर लेता है। अष्टम भावस्थ मंगल होने से मंगलीक योग भी बनता है जोकि वैवाहिक सुख में बाधाकारक हो सकता है। यदि यहां मंगल पर शनि-राहु का दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो, तो जातक को गुप्त रोग अथवा दुर्घटना से चोटादि का भय होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 95

नवम् भाव-में मित्र ग्रह की राशि सिंह पर मंगल के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, स्वाभिमानी, पराक्रमी, स्वतंत्र एवं हठी प्रकृति का, धार्मिक प्रवृत्ति का तथा धर्म, ज्योतिष-योग-मंत्रादि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, भाई-बहन होने पर भी उनके सुख में कमी, जीवन का आरम्भिक भाग विशेष कठिन एवं संघर्षपूर्ण एवं पुरुषार्थ के बल पर लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। यदि चन्द्र, केतु, बुधादि ग्रह युक्त हो तो जातक इंजीनियरिंग आदि तकनीकी क्षेत्र में सफल होता है। कुंडली नं. 92। यदि गुरु युक्त या दृष्ट हो, तो जातक उच्चप्रतिष्ठित, विख्यात राष्ट्र नेता होता है। देखें उदाहरण कुंडली (86), कुंडली में शनि स्वक्षेत्री हो तो जातक विपुल धनी होता है। देखें उदाहरण कुंडली सं. नं. (94)

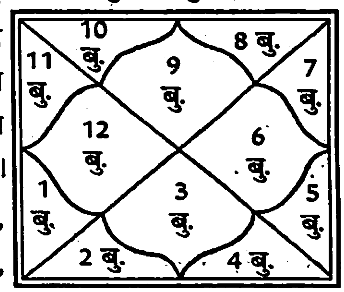
दशम भाव-में कन्या राशि होने से जातक कुशाग्र बुद्धि, स्वाभिमानी, साहसी, उद्यमी, सुगठित एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होगा। ऐसा जातक उच्चशिक्षित, सूक्ष्म बुद्धि, स्मरण शक्ति अच्छी, स्त्री, संतान आदि सुखों से युक्त, परिश्रमी, स्वावलम्बी, कार्य व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाइयों के बाद अपने पराक्रम से धनार्जन एवं सफलता पाने वाला, भूमि, जायदाद, मकान एवं वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, पैतृक सुख में कमी, प्रौढ़ावस्था में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी हो। यदि सूर्य, बुध का योग हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित, उच्च पद, सरकारी क्षेत्र में लाभान्वित, धन, संतान के सम्बन्ध में भाग्यशाली, बौद्धिक कार्यों में कुशल तथा ज्योतिष, वैद्यक, धर्मादि शास्त्रों में विशेष रूचि रखने वाला होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 91

एकादश भाव-में तुला राशि पर मंगल होने से जातक पराक्रमी, उच्चाभिलाषी, बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, चुस्त किन्तु भावुक, विलासप्रिय एवं कामुक प्रवृत्ति, प्रभावशाली वाणी, न्यायप्रिय, पारिवारिक सुखों से युक्त, आवास, वाहन एवं सन्तान आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है। कार्य/व्यवसाय में कठिनाइयों के बावजूद ऐसा जातक अपने पुरुषार्थ एवं परिश्रम से अच्छा धनार्जन कर लेता है। यद्यपि खर्च भी अधिक रहते हैं। मनोरंजन आदि कार्यों पर खर्चें अधिक हों। लाटरी, शेयर, सट्टा एवं जायदाद के कामों द्वारा भी लाभ की संभावना रहे, जातक योग, धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि विषयों में भी विशेष रुचि रखे।

द्वादश भाव-में स्वगृही बृश्चिक राशि पर मंगल होने से जातक स्वाभिमानी, चंचल एवं तेज अथवा उग्रस्वभाव, व्यवहार कुशल, कभी-कभी कूटनीति का प्रयोग करने वाला, उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएं, भाई-बहनों के सुख में कमी, परन्तु निज पुरुषार्थ के बल पर धन लाभ एवं उन्नति करने वाला, परन्तु व्यवसाय में भी कठिन परिस्थितियों एवं विघ्न/बाधाओं का सामना रहे। इस भाव में मंगल के कारण मंगलीक दोष भी होता है, जोकि दाम्पत्य सुख में कमी अथवा वैवाहिक सुख में विलम्बकारी होता है। यदि मंगल पर राहु या शनि की दृष्टि हो तो नेत्र रोग या रक्त विकार, गुप्त रोग आदि का भय होता है। मंगल-केतु का योग हो, तो विदेश में भाग्योन्नति करवाता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 90

धनु लग्न के द्वादश भावों में बुध का फल

धनु लग्ने बुध फल



धनु लग्न में बुध स्त्री कारक एवं व्यवसाय (कर्म) भावों का प्रतिनिधित्व करने से यह ग्रह विशेष महत्व का है। सूर्य के साथ हो, तो राजयोग होता है। इसके प्रभाव से जातक कार्य व्यवसाय में प्रतिष्ठित, विशेषकर बौद्धिक कार्यों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। बुध के साथ अन्य ग्रहों के योग एवं शुभाशुभ फलों का विचार करना चाहिए। यद्यपि सौम्य केन्द्रेश दोष होने से बुध इस लग्न में उत्कृष्ट फल नहीं दे पाता।

प्रथम भाव-में धनु राशि पर बुध होने से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, उच्चविचार, उदारहृदय, परोपकारी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, गुणवान, मधुरभाषी, न्यायशील, तीव्रबुद्धि एवं अच्छी स्मरणशक्ति वाला होता है। उसे राजनीति, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्षों के पश्चात् अच्छी सफलता प्राप्त होती है। स्त्री सुन्दर, सुशील एवं परिवार से सहयोग करने वाली तथा ससुराल पक्ष से भी लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता है। सूर्य, बुध का योग हो, तो जातक प्राध्यापन, अकाऊंट्स, बैंकिंग एवं वकालत आदि के कामों में विशेष सफल होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. (89) यदि मंगल-बुध का योग हो, तो जातक राजनीतिज्ञ एवं उच्चपद प्रतिष्ठित होता है। यदि बुध के साथ शुक्र का योग हो तो जातक धनी होता है।

द्वितीय भाव-में मित्र मकर राशि पर बुध होने से जातक बुद्धिमान, अध्ययनशील, लेखन, ज्योतिष, मंत्र, योगादि विषयों में रुचि रखने वाला, तर्क-वितर्क एवं वार्तालाप करने में चतुर, ऐसा जातक अपने बुद्धिबल एवं पुरुषार्थ से धनार्जन करने वाला, वकालत, अध्यापन, प्रतिनिधि, क्रय-विक्रय (व्यापार), इश्योरैंस एजैंट आदि के कार्यों में सफल, दाम्पत्य जीवन में एकरसता की कमी अथवा अड़चनों के बाद सुख प्राप्त होता है। व्यवसाय में भी विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त हो। दूसरे सूर्य-बुध का योग हो तो प्रमुख संस्थान में आर्थिक सलाहकार होता है। देखें कुंडली नं. 88

तृतीय भाव-में कुम्भ राशि पर बुध होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, धार्मिक आस्थाओं से युक्त, व्यवहार कुशल, क्रय-विक्रय से लाभ पाने वाला, ज्योतिष मंत्र योगादि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, भाई-बहनों से प्रीति रखने वाला, विवाह के बाद उन्नति करने वाला होता है। ऐसा जातक अपनी बौद्धिक योग्यता, परिश्रम एवं विवेक द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में कुछ संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त कर लेता है। यदि शुक्र का योग एवं भौम दृष्टि हो तो सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित होता है।

चतुर्थ भाव-में मीन (नीच) राशि पर बुध होने से जातक को भूमि अथवा अच्छे मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है। माता का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। व्यवसाय में कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है तथा जातक संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। जातक को स्त्री या गृहस्थ सम्बन्धी सुखों में कुछ कमी रहे। जातक के मन में घरेलू परिस्थितियों के प्रति असंतोष रहता है।

पंचम भाव-में मेष राशि पर बुध होने से जातक मिलनसार, बातचीत करने में कुशल, चतुर एवं बुद्धिमान होता

है। ऐसा जातक स्वाभिमानी, आवेशपूर्ण स्वभाव वाला, उच्चशिक्षा, सुशील, सुयोग्य एवं शिक्षित पत्नी एवं संतान आदि सुखों से युक्त होता है। ऐसा जातक समाज में अपने कार्य करवाने में कुशल, परन्तु संघर्ष के बाद गुजारे योग्य आय के साधन बनाता है। न्यायाधीश, वकालत, शिक्षक, लेखन, क्रय-विक्रय, प्रकाशन, अभिनय आदि कार्यों (जिनमें बौद्धिक विशेषता की आवश्यकता हो) में विशेष सफल रहते हैं। यदि मंगल-बुध का योग हो, तो जातक/जातिका को अभिनय, नृत्य, फिल्म, संगीत, कला आदि क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 93 (माधुरी दीक्षित)

षष्ठ भाव-में वृष राशि पर बुध होने पर जातक चंचल, कामुक, विलासी एवं धैर्यहीन होता है। जातक को संगीत, सौन्दर्य एवं कला की ओर विशेष रुचि रहे। सौन्दर्य, सजावट, प्रदर्शन एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक रहे। ऐसा जातक व्यवसाय में संघर्ष एवं गुप्त युक्तियों से धनार्जन करता है। परन्तु सरकारी क्षेत्रों से कुछ परेशानियां एवं हानि की संभावना होती है।

सप्तम भाव-में स्वराशि मिथुन पर बुध होने की स्थिति में जातक चंचल एवं अस्थिर स्वभाव, विनयशील, बातचीत करने में चतुर, सुन्दर एवं सुशील पत्नी का सुख, विवाह के बाद विशेष धन-लाभ एवं उन्नति के योग हैं। उच्च विद्या एवं बौद्धिक क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है। यदि शुक्र, बुध के साथ हो तो जातक विलासी एवं कामुक वृत्ति वाला तथा मनोरंजन एवं व्यसन आदि कार्यों पर खर्च करने वाला होता है। अध्ययनशील तथा ज्योतिष, योग, मंत्र-तंत्र आदि विद्याओं में भी रुचि रखने वाला होता है।

अष्टम भाव-में कर्क राशि पर बुध होने से जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में विघ्न-बाधाओं एवं परेशानियों का सामना रहता है। धनार्जन में भी अस्थिरता रहती है। ऐसे जातक को अपने परिवार में धर्नाजन के लिए विशेष कठिनाइयों का सामना रहता है। सांझेदारी के कामों में हानि, पत्नी के साथ विचारों में मतान्तर होने की सम्भावना। यदि इस भाव पर गुरु की शुभ दृष्टि हो, तो जातक गुप्त युक्तियों के द्वारा अकस्मात् धन लाभ के साधन प्राप्त कर लेता है। यदि राहु या मंगल आदि अशुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो तो अकस्मात् धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना होता है।

नवम भाव-में सिंह राशि पर बुध होने से जातक उच्चाभिलाषी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्चशिक्षित, धर्मपरायण, धार्मिक विचारों वाला, परोपकारी, संगीत-साहित्य, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला होता है। माता-पिता, उच्च विद्या, भूमि-मकान, वाहनादि सुख साधनों से युक्त होगा। कार्य-व्यवसाय में कुछ कठिनाइयों के पश्चात् सफलता प्राप्त करने वाला होगा। यदि यहां पर चन्द्र-मंगल एवं केतु का सम्बन्ध हो, तो जातक बिजली, कम्प्यूटर अकाऊंट्स, इंजीनियरिंग आदि तकनीकी विषयों में कुशलता प्राप्त करता है। देखें कुंडली नं. 90, 92। यदि बुध के साथ गु. मंगल, केतु आदि ग्रह हो, तो स्त्री रूग्न रहती है। देखें कुंडली नं. 95

दशम भाव-में कन्या स्वोच्च राशि पर बुध के प्रभाव से जातक सृजनात्मक एवं तीव्र बुद्धिमान, उच्च-शिक्षित, सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, ओजपूर्ण एवं गंभीर वाणी, पैतृक सहयोग, धन आदि से लाभान्वित, माता को शरीर कष्ट, धर्म, ज्योतिष, योगादि विषयों में विशेष रुचि, व्यवसाय में ब्रौद्धिक योग्यता द्वारा सफलता अथवा उच्च-पद प्रतिष्ठित, सरकारी क्षेत्र से लाभान्वित, ऐसा जातक प्राय: उच्चाभिलाषी एवं वैभवशाली तथा उच्चस्तरीय जीवन व्यतीत करता है। मकान, भूमि, जायदाद सम्बन्धी कुछ परेशानियां भी आती हैं। यदि चन्द्र, भौमादि ग्रह युक्त हो, तो जातक कुछ गर्वान्वित तथा बड़ी-बड़ी ऊंची (उच्चादर्श की) बातें करने वाला होता है। पत्नी सुशील, पतिव्रता एवं आर्थिक एवं पारिवारिक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 86, 87, 91। ऐसा जातक इंजीनियरिंग, मैडीकल, कामर्स आदि क्षेत्र में भी सफल हो सकता है।

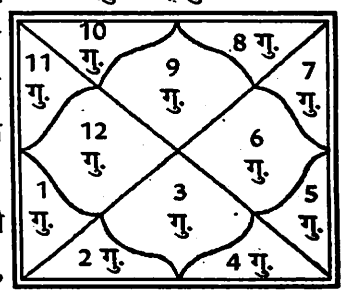
एकादश भाव-में तुला रशि पर बुध होने से जातक कुशल बुद्धि, व्यवहारशील, विद्वान, उच्चाकांक्षी, परिश्रमी, उच्चशिक्षा एवं बौद्धिक कार्यों में कुशल होता है। ऐसा जातक बौद्धिक योग्यता एवं युक्तियों द्वारा व्यवसाय में धनार्जन करता

है। जातक समाज में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित होता है। तर्क-वितर्क करने में कुशल, ज्योतिष, गणित, योग, धर्म, मंत्र आदि विद्याओं में कुशल, नौकरी की अपेक्षा निजी व्यवसाय में अधिक सफल होता है। जातक भूमि, जायदाद, स्त्री, संतान एवं वाहन, धन आदि सुखों से समन्वित होता है। देश-विदेश में यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

द्वादश भाव- में स्वराशि बृश्चिक पर बुध होने से जातक का भाग्य अपने जन्म स्थल से अन्यत्र सफल होता है। जातक परिश्रमी, तीव्र बुद्धिमान, नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल, विघ्न-बाधाओं के बावजूद जीवन के उत्तरार्ध भाग में विशेष धन लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, स्वावलम्बी अर्थात् अपने भाग्य का स्वयं निर्माता होता है। जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष कठिनाइयों से भरा एवं संघर्षपूर्ण होता है। यदि यहां पर मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ती हो, तो जातक स्वतन्त्र विचारक तथा जातक अपने बुद्धि, कौशल एवं परिश्रम से जीवन में विशेष उन्नति, समृद्धि एवं प्रसिद्धि प्राप्त कर लेता है। सूर्य का योग हो तो जातक भाग्यशाली एवं उच्च प्रतिष्ठित एवं अध्यात्मिक रूप से उन्नत, यदि शुक्र का योग हो, तो विपुल धन सम्पदा का योग होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 94 (अम्बानी)

धनु लग्न के द्वादश भावों में गुरु का शुभाशुभ फल

धनु लग्ने, गुरु फल



विशेष-धनु लग्न में गुरु लग्न एवं सुख भावों का स्वामी होने से महत्त्वपूर्ण है। पाराशर ऋषि अनुसार गुरु, शुक्र आदि शुभ ग्रहों को केन्द्राधिपात्य दोष होने से वह कई बार केन्द्रादि शुभ ग्रहों में भी पूर्ण वांछित फल नहीं दे पाते। परन्तु धनु में गुरु लग्नाधिपति होने से अच्छे फल, विद्वता, अध्यात्म, धर्म एवं बौद्धिक गुण, भूमि, वाहन आदि सुख भी अवश्य प्रदान करता है।

प्रथम भाव-में स्वगृही धनु राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, उदार हृदय, विनम्र, मधुरभाषी, गुणी, अपनी आयु की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान, विद्वान, स्वाभिमानी, ईमानदार, विद्वान, धैर्यशील, उच्चशिक्षित, माता, भूमि, मकान, वाहन,स्त्री एवं संतान आदि सुखों से युक्त तथा दीर्घायु, सात्विक, धार्मिक एवं गूढ़ विषयों में प्रवृत्ति रखने वाला होता है। ऐसा जातक निजी उद्यम एवं पुरुपार्थ द्वारा व्यवसाय एवं भाग्य में सफलता प्राप्त करता है। जातक धर्म, योग, चिकित्सा, ज्योतिष, मंत्र आदि विषयों में भी विशेष रुचि रखता है। यदि गुरु के साथ सूर्य हो तो जातक के भाग्य के लिए उन्नति कारक, मंगल साथ होने से जातक तीव्र बुद्धि तथा अत्याधिक खर्च होता है। शनि साथ हो, तो जातक महत्त्वाकांक्षी, आय के साधनों से युक्त, निश्चयात्मक बुद्धि होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 88, 90 एवं 91

द्वितीय भाव-में मकर (नीच) राशि पर गुरु होने से जातक को स्वास्थ्य,सौन्दर्य एवं शारीरिक सुख में कमी होती है। जातक परिश्रमी एवं चतुर बुद्धि होने से गुजारे योग्य आय के साधन बना लेता है, परन्तु आर्थिक परेशानियां बहुत आती है। घरेलू पारिवारिक जीवन में भी उलझनें तथा असंतोष, माता को कष्ट तथा भूमि-मकान सम्बन्धी कठिनाइयों का सामना रहता है। नर्म स्वास्थ्य के बावजूद आयु लम्बी होगी। सरकारी क्षेत्रों से भी लाभ, 34 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योन्नति हो परन्तु अधिक धन संचय नहीं हो पाए।

तृतीय भाव-में कुम्भ राशि पर गुरु होने से जातक परिश्रमी, पुरुषार्थी, उद्यमशील, उच्चशिक्षित, धार्मिक, ज्योतिष, योग, मंत्र आदि विद्याओं में अभिरूचि, व्यवसाय में संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद ही निर्वाह आय के साधन बनते हैं। जातक अध्ययनशील, लेखन, सम्पादन, प्रतिनिधित्व, वकालत, अध्यापन आदि कार्यों में विशेष सफल होने की सम्भावना हो। स्त्री सुख सामान्य रहे। यदि बुध शुभस्थ हो, तो स्त्री सुन्दर, सुशील एवं घरेलू व आर्थिक क्षेत्रों में सहयोग करने वाली होगी। यहां सूर्य, गुरु या गुरु-शनि का योग अच्छा फल देता है। देश-विदेश में यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं।

चतुर्थ भाव-में स्वगृही मीन राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक उच्चशिक्षित, परिश्रमी, पराक्रमी, स्वाभिमानी, कामुक वृत्ति, वैभव युक्त, भूमि या मकान, वाहन एवं माता-पिता के सुख एवं सहयोग से लाभान्वित एवं दीर्घायु होता है। ऐसा जातक व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा अच्छा धनार्जन करता है तथा माता-पिता का सत्कार करने वाला, आकस्मिक खर्च भी बहुत रहेंगे। यहां गुरु के साथ चन्द्र, भौम या सूर्य का योग हो, तो शुभ फल होते हैं। जातक भूमि, जायदाद से समृद्ध एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

पंचम भाव-में मेष राशि पर गुरु होने से जातक अत्यंत बुद्धिमान, स्वाभिमानी, उदार हृदय, धर्मपरायण, उच्चशिक्षित एवं न्यायप्रिय एवं योजनाएं बनाने में कुशल होगा। यहां से नवम भाव को मैत्री दृष्टि से तथा लग्न को स्वगृही दृष्टि से देखने से जातक भाग्यशाली, प्रभावशाली व्यक्तित्व, दीर्घायु, परोपकारी, व्यवहार कुशल, उच्च विद्या में सफलता एवं उच्च प्रतिष्ठित, न्याय, वकालत, राजनीति, अध्यापन, ज्योतिष, सम्पादन, प्रबन्धन, राजमंत्री एवं उच्चक्षेत्रीय व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष संघर्ष के बाद सफल होते हैं। ऐसा जातक सुशील स्त्री, संतान, जायदाद एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। गुरु के साथ सूर्य, चन्द्र या मंगल का दृष्टि, योगादि का सम्बन्ध हो अथवा सूर्य, मंगल, बुध या शनि स्वयं शुभ भावस्थ हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं विख्यात व्यक्ति होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 86 व 89।

षष्ठ भाव-में वृष राशि पर गुरु होने से जातक को आर्थिक क्षेत्र में तथा परिवार के सम्बन्ध में विविध परेशानियों का सामना रहता है। वृथा कलह-क्लेश, विवाद, रोग एवं शरीर कष्ट तथा वृथा खर्च के कारण तनाव एवं चिन्ताएं बनी रहती हैं। माता को कष्ट या सुख में कमी, भूमि-मकान आदि के सम्बन्ध में भी असंतोष रहता है। ज्योतिष, तंत्र, योग आदि विषयों में रुचि रखने वाला, कार्य-व्यवसाय में अत्यन्त विषम एवं कठिन परिस्थितियों का सामना रहे, परन्तु ऐसा जातक गुप्त युक्तियों व कठिनाइयों से निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है।

सप्तम भाव-में मिथुन राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक/जातिका का आकर्षक सुन्दर रूप एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, भाग्यवान, मधुर वाणी, अत्यन्त बुद्धिमान, परिश्रमी, स्वाभिमानी, परोपकारी स्वभाव, सुशिक्षित एवं व्यवहार कुशल होता है। जातक को माता का सुख, भूमि, मकान एवं वाहन आदि के सुख यथेष्ठ होते हैं। जातक कार्य-व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त परिश्रम एवं संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त करता है। धर्म, योग, ज्योतिष, तंत्र, मंत्र आदि विषयों में भी रुचि, संगीत, साहित्य एवं ललित कलाओं में भी विशेष रुचि, सौन्दर्यानुभूति विशेष होती है। यदि यहां गुरु के साथ मंगल, राहु, केतु, शनि, सूर्यादि ग्रहों में से कोई ग्रह हो, तो वैवाहिक सुख में कमी या विलम्ब होता है। यदि चतुर्थ भाव में चन्द्र-शुक्र का भी योग हो तो जातक-जातिका को अभिनय, संगीत, सिनेमा, कला आदि के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्धि मिलती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 93 (माधुरी दीक्षित)

अष्टम भाव-में (उच्च) कर्क राशि पर गुरु होने से जातक के स्वास्थ्य में कुछ कमी, माता, भूमि, मकान, वाहन आदि सुख के साधनों की कठिनाइयों के बाद प्राप्ति होती है। विवाह के बाद विशेष लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। जातक ज्योतिष, यंत्र, मंत्र, तंत्र आदि विषयों में विशेष रूचि रखे। कार्य व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, परन्तु धर्न का खर्च भी अत्याधिक हो। तीर्थ आदि शुभ कामों पर अधिक खर्च रहे तथा पारिवारिक सुखों में कुछ कमी रहे। यहां गुरु के साथ सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह हों तो शुभ फलों में वृद्धि होगी, जबकि बुध, शुक्र, शनि, राहु आदि ग्रह हो, तो जातक को शरीर कष्ट, उदर विकार या गुप्त रोगों का भय रहता है। मंगल लाभ में हो तथा चन्द्र-गुरु का योग होने से जातक विदेश में सफल होता है।

नवम भाव-में सिंह राशि पर गुरु होने से जातक का प्रभावशाली व्यक्तित्व, समाज में प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित, अत्यंत बुद्धिमान, भाग्यशाली, साहसी, धार्मिक प्रवृत्ति, उदारहृदय, परोपकारी, साहसी, आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी, उच्चशिक्षित, गम्भीर विचारक, भाई-बहन के सुख में कुछ कमी, माता, भूमि, मकान, वाहन, धन एवं संतान आदि सुखों से सम्पन्न हो, जातक को राजनीति, धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि रहे। ऐसा जातक प्राध्यापन, वकालत, चिकित्सा, डाक्टर, बैंकिंग, फाइनैंस, राजनीति एवं उच्च सरकारी पद आदि के सम्बन्धों में विशेष सफलता प्राप्त कर

सकता है। 32 वर्ष की आयु के बाद विदेशी सम्बन्धों से भी लाभ की संभावना, यदि नवम गुरु के साथ शुक्र, मंगल, चन्द्र ग्रह भी शुभस्थ हों तो जातक सर्वोच्च पद प्रतिष्ठित होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 95

दशम भाव- में कन्या राशि पर गुरु होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, आकर्षक व्यक्तित्व, विवेकशील, स्वतंत्र-विचारक, स्वाभिमानी, परिश्रमी, पराक्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। माता-पिता का सुख सामान्य, परन्तु ऐसा जातक व्यवसाय में अपने परिश्रम एवं बौद्धिक चातुर्य से उल्लेखनीय लाभ एवं उन्नति प्राप्त करता है। माता, भूमि, जायदाद एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति यथेष्ठ होती है। जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में कार्य/व्यवसाय के सम्बन्ध में विशेष संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना रहता है। परन्तु उत्तरार्ध भाग में विशेष सफलता प्राप्त करता है तथा जातक प्रसिद्ध तथा उच्च स्तरीय जीवन जीता है। ऐसा जातक अध्यापन, चिकित्सा, वकालत, व्यापार, लेखन, प्रकाशन आदि क्षेत्रों में विशेष सफल होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 87 व 94

एकादश भाव- में तुला राशि में गुरु होने से जातक बुद्धिमान, सुन्दर व्यक्तित्व, उच्च-शिक्षित, पराक्रमी, परिश्रमी होता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं बौद्धिक योग्यता के बल पर व्यवसाय में लाभ व उन्नति करता है तथा भूमि, मकान, धन-सम्पदा, वाहन, स्त्री एवं संतान आदि सुखों को प्राप्त करता है। व्यवसायिक (Professional) विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त अन्य शुभ योग हों, तो जातक वकालत, मैडीकल, इंजीनियरिंग या अध्यापन आदि क्षेत्र में भी सफल हो सकता है। यदि गुरु-शुक्र का योग हो, एवं चन्द्र-मंगल का योग हो, तो जातक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 92

एक सामान्य सिद्धान्तानुसार कहा जाता है कि गुरु जिस भाव में स्थित होता है, उस भाव सम्बन्धी फल की हानि और जिस भाव पर दृष्टि डालता है, उस भाव के फल की वृद्धि करता है तथा शनि जिस स्थान में बैठता है ,वहां की वृद्धि करता है और जिस भाव पर दृष्टि डालता है, उस भाव फल की हानि करता है-

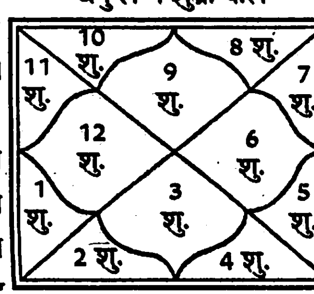
स्थान हानि करोति जीवः स्थान वृद्धि करो शनिः। गुरु विशेषकर अपने कारक भावों (2, 5, 7 एवं 11) में परन्तु यह नियम सभी शास्त्राकारों में मान्य नहीं।

द्वादश भाव- में बृश्चिक राशि पर गुरु होने से जातक परिश्रमी, धार्मिक, परोपकारी, विघ्न-बाधाओं के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला, शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ निर्बलता, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, माता का भक्त, भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों से युक्त, प्रायः शुभ कार्यों पर खर्च करने वाला, जीवन का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण रहता है। प्रायः 42 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योदय हो। गुरु यहां से अष्टम भाव को उच्च दृष्टि से देखने से जातक को अध्यात्म, ज्योतिष, मंत्र, यंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि रखे तथा जातक की दीर्घायु के योग बनते हैं। इस भाव में मंगल, बुध या शनि का साथ हो, तो व्यवसाय में अस्थिरता, धन हानि एवं पारिवारिक अशांति के संकेत हैं। केतु का योग हो, तो जातक को देश-विदेश में व्यापार से लाभ होता है।

धनु लग्न में शुक्र का द्वादश भावों में शुभाशुभ फल

धनु लग्न में शुक्र सामान्यतः त्रिषडाय (६,११) पति होने से अशुभ फल प्रदायक माना जाता है। परन्तु इस लग्न में शुक्र मित्र राशियों (३,१०,११) स्व एवं उच्च राशियों (१२, २,७) में तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि होने से अच्छे फल भी अनुभव किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त बुध-शुक्र, शनि-शुक्र के योग भी शुभफल प्रदायक होते हैं।

धनु लग्ने शुक्र फल



प्रथम भाव- में धनु राशि पर शुक्र होने से जातक आकर्षक एवं सुंदर व्यक्तित्व वाला, विनयशील, परिश्रमी, प्रियभाषी, हंसमुख एवं विनोदप्रिय व्यक्ति होता है। ऐसा जातक शिल्प कला में निपुण, कामुक, विलासी, ऐश्वर्यवान, मकान-वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ मित्रता हो, यदि सूर्य, मंगल या राहु आदि

किसी क्रूर ग्रह से सम्बन्ध हो, तो जातक का शरीर अस्वस्थ रहेगा। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष के बाद सफलता मिले। यदि बुध-शुक्र व सूर्य का भी योग हो तो विस्तृत उद्योग एवं व्यवसाय से विपुल धन सम्पदा के सुख हों। गुरु-शनि साथ हों तो धनार्जन में स्त्री का भी सहयोग प्राप्त हो, देखें उदाहरण कुंडली नं. 88

द्वितीय भाव-में मकर राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम एवं उद्यम द्वारा धन का अर्जन करता है। पारिवारिक सुख में कमी अथवा परिवार के सदस्यों से मनमुटाव की संभावना हो। स्त्री के सम्बन्ध में भी कुछ परेशानियों के बाद सम्बन्ध सामान्य हों। बहन-भाई होते हुए भी उनके सुख में कमी रहे। जातक प्रियभाषी, विलासी, संगीत-कला एवं साहित्य आदि में रुचि, चतुरवक्ता एवं गुप्त युक्तियों के द्वारा विशेष धनार्जन करने में कुशल होता है। ऐसा जातक वकालत, क्रय-विक्रय, मैडीकल, सौन्दर्य-प्रसाधन, Interior-Decoration,कम्प्यूटर आदि क्षेत्रों में विशेष सफल होने के योग होंगे। देखें उदाहरण कुंडली नं. 89

तृतीय भाव-में कुम्भ राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक पराक्रमी, पुरुषार्थी एवं उद्यमी होता है। ऐसा जातक अपने उद्यम द्वारा जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी तथा भाग्य के सम्बन्ध में भी कुछ कठिनाइयों का सामना रहे। जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष संघर्षपूर्ण व कठिनाइयों से भरा रहे। परन्तु मध्यमायु के पश्चात् मकान, वाहनादि सुख-साधनों की प्राप्ति हो। ऐसे जातक को लेखन, पठन-पाठन, प्राध्यापन, क्रय-विक्रय के प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में विशेष सफलता मिलती है। धर्म के बारे में स्वतंत्र विचार होते हैं। शुक्र-बुध का योग हो तो सरकारी क्षेत्रों से विशेष लाभ होने की सम्भावना होती है।

चतुर्थ भाव-में मीन (उच्च) राशि पर शुक्र होने से जातक/जातिका सुन्दर मुख, आकर्षक व्यक्तित्व, माता का सुख, भूमि-जायदाद, मकान, वाहनादि सुख साधनों से युक्त, ऐश्वर्य युक्त एवं उच्चस्तरीय शैली का जीवन व्यतीत करने वाला, व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाइयों और संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त करने वाला होगा। सुन्दर, सुशील एवं परिवार में सहयोग करने वाली स्त्री का सुख होगा। संगीत, सौन्दर्य, अभिनय एवं कला की ओर विशेष रुचि रहे। ऐसा जातक सिनेमा, टैलीविजन, चित्रकला, फोटोग्राफी, गायन, ब्यूटी-पार्लर, शृंगारिक-प्रसाधन, कम्प्यूटर, कोल्ड-ड्रिंक्स, मदिरा आदि का क्रय-विक्रय करने वाला, कला, बैंकिंग, शिल्पादि क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त करेगा। इसके साथ यदि चन्द्र-शनि का साथ में योग हो तो जातक/ जातिका प्रसिद्ध अभिनेता/अभिनेत्री होती है। कला क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 93

पंचम भाव-में मेष राशि पर शुक्र होने से जातक अस्थिर मन परन्तु बुद्धिमान होता है। उच्चशिक्षा में कुछ विघ्न-बाधाओं के पश्चात सफलता प्राप्त होती है। जातक संगीत, काव्य एवं कला आदि क्षेत्र में रूचि रखने वाला, भोगविलास आदि में आसक्ति, कम्प्यूटर डिजाइनिंग, पेंटिंग आदि में रूचि रहे। यदि मंगल व बुध भी शुभ हो, तो जातक को स्त्री एवं सन्तान सुख अच्छा होता है। संतानोपत्ति के पश्चात् भाग्योन्नति होगी। जातक को स्वयं भी सुरापान की ओर प्रवृत्ति की संभावना हो, ज्योतिष आदि में भी रुचि हो।

षष्ठ भाव-में स्वगृही वृष राशि पर शुक्र होने से जातक गुणवान, सवारी, भूमि-जायदाद आदि सुखों से युक्त, परिश्रमी, गुप्त युक्तियों से धनार्जन करना एवं अनेक मित्रों से युक्त होगा। जातक उलझनों में फंसा रहता है। तरल पदार्थ एवं सुरापान आदि में रूचि रहे। मंत्र-तंत्र और ज्योतिष में भी रूझान हो। जातक कामुक एवं विलासप्रिय प्रवृत्ति, संगीत-कला, सौन्दर्य प्रसाधन, इत्र-खुशबु, स्त्री प्रसंग आदि विषयों की ओर विशेष रुचि होगी तथा उन पर खर्च भी अधिक होंगे।

सप्तम भाव-में मिथुन राशि पर शुक्र होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व, कामुक, गायन, संगीत, कला एवं विपरीत सैक्स के प्रति विशेष आकर्षण रखने वाला तथा आजीविका एवं व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष एवं परेशानियों के पश्चात् सफलता मिलती है। स्त्री सुख एवं दाम्पत्य जीवन में भी विघ्न/बाधाओं का सामना होता है। यदि बुध

शुभ हो तो स्त्रियों के साथ शीघ्र मैत्री करने वाला, पत्नी सुन्दर, सुशील एवं हर प्रकार से सहायिका होगी। विवाह के बाद विशेष लाभ एवं भाग्योन्नति हो। यदि यहां पर सूर्य-मंगलादि क्रूर ग्रहों का योग हो, तो वैवाहिक जीवन में असंतोष एवं सुख की कमी होगी।

अष्टम भाव-में कर्क राशि पर शुक्र होने से जातक का कृश शरीर, कामुक एवं चंचल वृत्ति, मिलनसार, व्यवहार-कुशल, तामसिक भोजन का शौकीन, कठिन परिश्रम द्वारा धनार्जन करने वाला, स्वच्छन्द एवं विलासप्रिय प्रकृति वाला होगा। शत्रुओं से विघ्न-बाधाएं और धन का अधिक खर्च व्यर्थ के कार्यों पर करेगा। गुप्त शत्रु भी सरगर्म रहे। मंगल-शुक्र का योग (अष्टम) होने से जातक अनैतिक प्रणय में संलिप्त होता है। राहु-केतु आदि पापग्रह ग्रह हों, तो प्रमेह, स्त्री सम्बन्धी गुप्त रोगों की आशंका रहती है। बुध शुभस्थ हो, तो विवाह के बाद लाभ अथवा स्त्री भी आर्थिक क्षेत्र में विशेष सहयोग करती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 87

नवम् भाव-में सिंह राशि पर शुक्र होने से जातक को जीवन में कठिनाइयों एवं परिश्रम के पश्चात् भाग्योदय और उन्नति होगी। धार्मिक विचार होते हुए भी धर्म-कर्म में आस्था कम रहेगी। विवाह के पश्चात् पत्नी एवं ससुराल पक्ष से लाभ व सहायता मिले। अपनी बुद्धि और चातुर्य से शत्रु पक्ष से भी लाभ प्राप्त करने में सफल होगा। भाई-बन्धुओं से मतभेद व सुख में कमी रहेगी। जातक दीर्घायु, सन्तान एवं वाहनादि सुखों से युक्त होगा। यदि चन्द्र, बुध, मंगल आदि ग्रहों का भी सम्बन्ध हो, तो जातक तीर्थ यात्राएं, परोपकार, धार्मिक उत्सवों पर भी खर्च करता है।

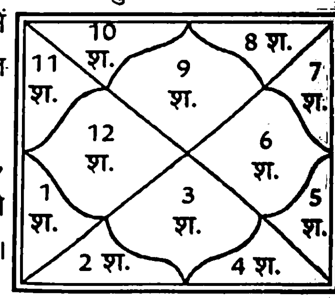
दशम भाव-में कन्या राशि पर शुक्र होने से जातक व्यवहार कुशल, मिलनसार, विभिन्न साधनों द्वारा धन प्राप्त करने वाला, परन्तु व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाइयों एवं संघर्ष के पश्चात् धन लाभ एवं उन्नति होगी। गुप्त-शत्रु हानि पहुंचाने की भी चेष्टा करेंगे। परन्तु ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा अपना कार्य निकालने में कुशल होता है। अत्याधिक दौड़-धूप एवं परिश्रम के बावजूद अधिक धन लाभ एवं संचय नहीं हो पाता। चतुर्थ भाव को उच्चदृष्टि से देखने पर जातक को माता, भूमि, आवास, वाहनादि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता रहेगा। चन्द्रादि का योग हो, तो जातक कामुक-वृत्ति, विलासी एवं मदिरा सेवन करने में उत्सुक होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 90

एकादश भाव-में स्वगृही तुला राशि पर शुक्र होने से जातक बुद्धिमान, परन्तु कामुक वृत्ति, उच्च विद्या, भूमि, धन, मकान, सवारी आदि सुविधाओं से युक्त, सुन्दर एवं सुशील स्त्री व संतान आदि सुखों से युक्त होगा। कन्या संतति का विशेष सुख होने के योग। ऐसे जातक को स्त्री, मित्र वर्ग अथवा श्वेत वस्तुओं व रत्नादि के व्यवसाय से लाभ हो। ऐसा जातक स्त्रियों के संग में विशेष प्रसन्न रहने वाला, संगीत, कला, ज्योतिष-मंत्रादि विद्याओं में रूचि रखने वाला होता है। मंगलादि का योग हो तो जातक विशेष रूप से कामुक, विलासप्रिय एवं आवेशपूर्ण व्यवहार करने वाला होगा। यदि गुरु का योग हो तो धर्मपरायण, उच्च प्रतिष्ठित एवं सिद्धान्तिक होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 86, 91, 92.

द्वादश भाव-में बृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र होने से जातक कल्पनाशील, योजनाएं बनाने में कुशल, परन्तु अधिकांश योजनाएं फलीभूत न हो पाएं। जातक शीघ्र क्रोधित होने वाला, प्रारम्भिक आयु में शरीर कष्ट, अत्याधिक परिश्रम के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने वाला परन्तु ऐसे जातक के वृथा खर्च भी बहुत अधिक होते हैं। विशेषकर रोगों एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च करने वाला, गुप्त प्रेम, विदेश यात्राओं की भी सम्भावना। शुक्र यदि पापग्रह से युक्त हो, तो स्त्री कष्ट अथवा विवाह सुख में कमी रहे। बुध-शुक्र का योग हो, तो व्यवसाय के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 94

धनु लग्न में शनि का द्वादश भावों में शुभाशुभ फल

धनु लग्ने शनि फल



विशेष : धनु लग्न में शनि द्वितीयेश (धनेश) एवं पराक्रमेश होने के कारण (यदि १, ३, ५, ७, ८, ९, १० व १२वें) भावों में शुभ 11वें भाव में मिश्रित तथा अन्य भावों में अशुभ फल प्रदान करता है। द्वितीयेश (मारकेश) होने से शनि कई बार स्थिति अनुसार अपनी दशा/अन्तर्दशा में मृत्यु तुल्य कष्ट भी देने लगता है।

प्रथम भाव-में धनु राशि पर शनि होने से जातक सुन्दर आंखों वाला, बुद्धिमान, विद्वान, पराक्रमी, दूरदर्शी, दीर्घ यात्राएं करने वाला तथा अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाला होता है। भाई-बहन का सुख हो, वैवाहिक सुख में कमी अथवा विघ्न रहें। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष के बाद लाभ एवं सफलता मिले, ऐसा जातक शिल्पकला, तकनीकी, कम्पयूटर, क्रय-विक्रय, भूमि, जायदाद, पत्थर, तेल, सीमैंट, शेयरों, रबड़ एवं लोहे से सम्बन्धित वस्तुओं के व्यापार में विशेष लाभान्वित हो सकता है। यदि यह गुरु, शुक्रादि ग्रह योग भी हो तो जातक प्रबन्धन (Managing) आदि कार्यों में कुशल होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 88

द्वितीय भाव-में स्वराशि मकर पर शनि के प्रभाव से जातक परिश्रमी, स्पष्टवक्ता, अति बुद्धिमान, पारिवारिक एवं आर्थिक उन्नति के लिए विशेष परिश्रम एवं संघर्ष करने वाला, स्वाभिमानी, भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों से युक्त, ऐसा जातक/जातिका दूरदर्शी, सूक्ष्म-बुद्धि एवं दूरगामी योजनाएँ बनाने में कुशल, अपने लक्ष्य एवं कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान एवं समर्पित होता है। ऐसा जातक गहन युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय में विशेष धन लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर लेता है। लेकिन प्रारम्भिक अवस्था में संघर्ष अधिक होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 94 (विपुल धनी अम्बानी) यदि लग्न भाव पर गुरु की स्वगृही शुभ दृष्टि भी हो, तो जातक उच्चप्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ एवं मंत्री होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 86 (प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री), चन्द्र अशुभ हो, तो आकस्मिक निधन होने के भी संकेत होते हैं।

तृतीय भाव-में स्वगृही कुम्भ राशि पर शनि होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, कुशाग्र बुद्धिमान तथा अपने पुरुषार्थ से जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, व्यवहार कुशल, बहु-मित्रों से युक्त, विघ्न-बाधाओं के बाद भाग्य में उन्नति, जातक अध्ययनशील, ज्योतिष, योग, तंत्र, चिकित्सा आदि विषयों में विशेष रूचि रखने वाला, संवेदनशील, उच्च-विद्या में अड़चनें तथा संतान के सम्बन्ध में परेशानी अथवा अल्प सुख होने की सम्भावना, जातक अत्यन्त परिश्रम एवं संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य धनार्जन करता है, परन्तु खर्च भी बहुत होते हैं।

चतुर्थ भाव-में मीन राशि पर शनि होने से जातक/जातिका परिश्रमी, बुद्धिमान, सत्यवादी, पारिवारिक चिन्ता, जातक का स्वास्थ्य बाल्यवस्था में अस्थिर रहता है। माता के सुख में कमी या शरीर कष्ट परन्तु भूमि, मकान, वाहन आदि का सामान्य सुख, आर्थिक स्थिति बारे भी असन्तोष रहे। व्यवसाय में विशेष संघर्ष के बाद सफलता हो। घरेलू सुख में अशांति हो। यदि यहां चतुर्थ भाव में शुक्र, चन्द्र का भी योग हो, तो जातक/जातिका को अभिनय, संगीत, सिनेमा, नृत्य आदि कला क्षेत्र में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 93 (माधुरी दीक्षित), यदि गुरु (मकर में) शनि के क्षेत्र में तथा शनि चतुर्थ गुरु के क्षेत्र में हो, तो जातक लौह उद्योग से अत्यन्त धनी होता है।

पंचम भाव-में मेष राशि पर शनि होने से जातक की सूक्ष्म बुद्धि, व्यवहार कुशल, स्वाभिमानी, दार्शनिक प्रवृत्ति, विघ्नों के पश्चात् उच्च व्यवसायिक विद्या में सफलता, भाई-बहन एवं पारिवारिक सुख की प्राप्ति, सुन्दर, सुशील एवं सुशिक्षित पत्नी, यदि बुध शुभस्थ हो, तो विवाह के पश्चात् यथेष्ठ धन लाभ एवं उन्नति हो। ऐसा जातक धनार्जन में गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर सफल होता है। संतान सम्बन्धी चिन्ता, मंगल, गुरु, सूर्यादि ग्रह शुभस्थ हो, तो पुत्र संतति सुख

होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 87, 92 । यदि पंचमेश मंगल नीचस्थ होकर अष्टम भाव में हो, तो उच्च शिक्षा तथा पुत्र संतति सुख में कमी होगी। देखें उदाहरण कुंडली नं. 95

षष्ठ भाव-में वृष राशि पर शनि होने से जातक परिश्रमी, साहसी, स्वाभिमानी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला अर्थात चुनाव, मुकद्दमा, विवाद आदि में जीत हासिल करने वाला, उच्च शिक्षा एवं पारिवारिक सुख प्राप्ति में भी बाधाएँ, व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता पाने वाला होता है। ऐसा जातक वकालत, राजनीति, चिकित्सा, प्रतिनिधित्व आदि क्षेत्रों में सफल होता है। जातक धनार्जन में गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। यदि शनि, राहु, शुक्र आदि ग्रहों के योग में हो, तो जातक को प्रमेह, मधुमेह अथवा गुप्त रोगों का भय रहता है। वैसे ३, ६ या ११वें भावों में शनि, मंगल या राहु.अरिष्टों का नाश करके सुख सम्पन्नता में वृद्धि करते हैं।

सप्तम भाव-में मिथुन राशि पर शनि होने से बाल्यकाल में शरीर कुछ अस्वस्थ रहे, माता को भी शरीर-कष्ट अथवा सुख में कमी हो। जातक को भूमि-मकान एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति कठिनाइयों के बाद हो। उच्च विद्या में विघ्न-बाधाओं के बावजूद जातक तेज बुद्धि, पराक्रमी एवं परिश्रमी होता है। सांझेदारी के कामों में हानि उठाने वाला, व्यवसाय के क्षेत्र में भी अस्थिरता रहे। जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल तथा राजनीति, वकालत, प्राध्यापन तथा क्रय-विक्रय आदि के कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त करने की योग्यता हो। भाग्योन्नति में रूकावटों के बाद सफलता हो। यदि कुंडली में गुरु नवम भाव में हो तो जातक उच्चपद-प्रतिष्ठित, विद्वान एवं विख्यात महापुरुष होता है।

अष्टम भाव-में कर्क राशि पर शनि के प्रभाव से जातक साहसी, पराक्रमी, अस्थिर बुद्धि, दीर्घायु एवं गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन कर लेता है। उच्च-शिक्षा प्राप्ति में अड़चने रहें। पुत्र-सन्तान प्राप्ति में विघ्न-बाधाओं के पश्चात् सुख मिले। जातक अध्यात्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, यंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला तथा जीवन संघर्षमय चुनौतियों में से गुजरता है। व्यवसाय में कठिनाइयों के पश्चात् सफलता मिलती है। मन में अशांति तथा गुप्त शत्रुओं का भय रहता है। यदि राहु-केतु या मंगल आदि ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो जातक को दुर्घटना आदि के कारण चोट भय रहता है।

नवम भाव-में सिंह राशि पर शनि के प्रभाव से जातक पराक्रमी, स्वाभिमानी, कर्मठ, शत्रुनाशक, निज बाहुबल एवं उद्यम द्वारा धर्नाजन करने वाला, भ्रमणशील अर्थात देश-विदेश में भ्रमण करने के अवसर प्राप्त करने वाला, तीव्र बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी, धर्म-नीति, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला होता है। भाई-बहन का सुख यथेष्ठ होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यंत संघर्ष के पश्चात् समुचित लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। यहां से शनि लाभ स्थान में उच्चराशि को देखने से जातक को शेयर-लाटरी अथवा व्यवसाय में अकस्मात् धन लाभ होने की भी संभावनाएं होती हैं। 37वें वर्ष के पश्चात् विशेष भाग्योन्नति होती है।

दशम भाव-में कन्या राशि पर शनि होने से जातक अत्याधिक परिश्रमी, राजनीतिज्ञ, बुद्धिमान, भूमि, धन, मकान, वाहनादि सुखों से युक्त होता है। परन्तु मकान के सम्बन्ध में कुछ परेशानियां बनी रहती हैं। व्यवसाय में भी कुछ संघर्ष के बाद लाभ व उन्नति के साधन बनते हैं। माता को कष्ट अथवा मातृ सुख में कमी हो। आय के साथ-साथ धन के खर्च भी अधिक होंगे। जातक एक से अधिक साधनों द्वारा धनार्जन करने का प्रयास करता है। कुछ विघ्नों के पश्चात स्त्री/पति के सुख की प्राप्ति होती है। विवाह के पश्चात् धन लाभ एवं उन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होते हैं। जातक को कम्पयूटर, दूरसंचार, इंजीनियरिंग एवं तकनीकी क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्ति के योग बने।

एकादश भाव-में शुक्र की तुला (उच्च राशि) पर शनि होने से जातक दीर्घायु, परिश्रमी, चिन्तनशील, दूर-अंदेशी, स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्तित, वाद-विवाद में कुशल, आस्तिक विचारों वाला एवं पुरुषार्थी होता है। ऐसा जातक निजी पुरुषार्थ एवं पराक्रम द्वारा जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। उच्च शिक्षा में विघ्न-बाधाएं रहें। यदि कुंडली में शनि के साथ शुक्र का योग हो, तथा गुरु भी केन्द्रगत हो तो जातक उच्च प्रतिष्ठित, धर्मपरायण, सुयोग्य सन्तान,

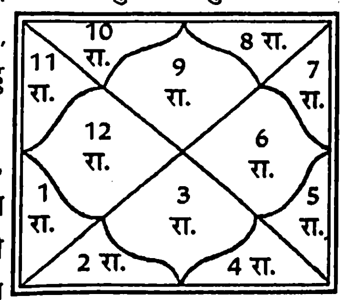
आवास, धन, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति तथा धर्म-ज्योतिष चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में विशेष रूचि रहती है। देखें कुंडली नं. 90

दीर्घायुः स्थिरविभवःशूरःशिल्पाश्रयो विगत रोगः।
आयस्थे भानुसुते धन जन सम्पदयुतो भवति।। सारावली

द्वादश भाव-में बृश्चिक राशि पर शनि के प्रभाव से जातक कठोर परिश्रमी, पारिवारिक उलझनों से युक्त, अनेक युक्तियों से निर्वाह योग्य धर्नाजन करने तथा अत्याधिक व्यय करने वाला होता है। ऐसे जातक का धन अधिक संचित नहीं हो पाता। कुटुम्ब एवं भाई-बहनों के सुख में कमी रहती है। यदि राहु या मंगल एवं शुक्र आदि ग्रहों का भी योग हो, तो जातक का व्यय विलासादि कार्यों पर अधिक होता है। धर्म के सम्बन्ध में स्वतंत्र विचारों वाला, नीतिज्ञ, गुप्त-विद्याओं की ओर अभिरुचि, यदि द्वादश में मंगल-शनि का योग हो तो दाम्पत्य सुख में कमी रहती है। यदि केतु का योग हो, तो जातक वकालत, चिकित्सा आदि क्षेत्र में विशेष लाभान्वित रहता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 89

धनु लग्न में राहु का द्वादश भावों में शुभाशुभ फल

धनु लग्ने राहु फल



विशेष : धनु लग्न में राहु शत्रु राशिगत होने के कारण शुभफली नहीं माना जाता। विशेषकर यह १, २, ४, ५, ७, ९ भावों में अशुभ तथा ३, ६, ८, १०, ११, १२वें भावों में शुभफल प्रदायक माना जाता है। सामान्यतः ३, ६ व ११वें भावों में राहु अनेक अरिष्टों का नाशक एवं सौभाग्य आदि में वृद्धिकारक माना जाता है।

प्रथम भाव-में गुरु की राशि धनु पर राहु होने से जातक चतुर बुद्धि, होशियार, संदेहशील स्वभाव, स्वास्थ्य में कमी तथा धर्नाजन के लिए अत्याधिक संघर्ष एवं परिश्रम करने वाला, व्यवसाय में भी गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, व्यर्थ की चिंता एवं परेशान रहने वाला होगा। ऐसा जातक बाहरी तौर पर यद्यपि सज्जन परन्तु भीतर से चालाक प्रवृत्ति का होगा। जीवन का पूर्वार्द्ध भाग शारीरिक कष्टों से भरा होता है।

द्वितीय भाव-में मकर राशि पर राहु होने से जातक गुप्त चिन्तन करने वाला, आर्थिक परेशानियां, कौटुम्बिक सुख में कमी, परिवार से अलग रहने वाला, धन सम्बन्धी चिन्ता एवं ऋण लेने की आवश्यकता, कभी-कभी अत्यधिक संघर्ष और अपने परिश्रम व गुप्त युक्तियों से धन कमाने में सफल होता है। भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहता है। कभी-कभी मुख सम्बन्धी रोग, गले व श्वास सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो।

तृतीय भाव-में कुम्भ राशि पर राहु होने से जातक पराक्रमी, साहसी, परिश्रमी, उद्यमी, देशविदेश की यात्राएं करने वाला तथा निजी उद्यम एवं परिश्रम द्वारा व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा जातक भाई-बन्धुओं के सुखों से युक्त तथा भूमि-आवास एवं वाहनादि सुखों से सम्पन्न होता है। इनका सम्पर्क एवं सम्बन्ध उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ भी रहता है। जिनसे जातक लाभान्वित भी होता है। ऐसा जातक कर्मशील, कर्मठ, धार्मिक एवं अध्यात्म, योग, ज्योतिष एवं तन्त्र आदि विद्याओं की ओर भी विशेष अभिरूचि रखता है। देखें उदा. कुं. नं. 87, 92, 94

सामान्यतः राहु 3, 6, 11 वें भावों में अनेक अरिष्टों का नाशक तथा सुख सम्पदा का वृद्धिकारक माना जाता है।

चतुर्थ भाव-में मीन राशि पर राहु के प्रभाव से जातक के माता-पिता को कष्ट अथवा माता के सुख में कमी, कार्य व्यवसाय के सम्बन्ध में कठिन-परिश्रम करने वाला, भूमि-मकान एवं वाहनादि सुख साधनों की प्राप्ति उलझनों एवं परेशानियों के बाद होती है। जातक घरेलू परिस्थितियों के प्रति असन्तुष्ट तथा अपने जन्म-स्थल से अतिरिक्त स्थान पर भाग्य लाभ एवं उन्नति होती है। व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव के पश्चात् सफलता मिलती है। प्रारंभिक जीवन में आर्थिक परेशानियां अधिक होती हैं। देखें उदा. कुं. नं. 95

पंचम भाव-में मेष राशि पर राहु के प्रभाव से जातक कुशाग्र-बुद्धि, परिश्रमी परन्तु उच्चविद्या में विघ्न-बाधाएँ

होती हैं अथवा अधूरी शिक्षा रहती है। संतान सुख में भी कमी अथवा संतान सम्बन्धी चिन्ताएं रहती हैं। ऐसा जातक अनेक परेशानियों से युक्त, चिन्तनशील होता है। जातक व्यवसाय में गुप्त युक्तियों एवं बुद्धि-चातुर्य द्वारा निर्वाह योग्य धनार्जन करने में सफल होता है। मंगल-राहु योग होने से कूटनीति का प्रयोग करने में कुशल होता है। देखें उदा. कुं. 86

षष्ठ भाव-में वृष राशि पर राहु होने से जातक बुद्धिमान, कुशाग्र बुद्धि, पराक्रमी, धैर्यवान एवं न्यायप्रिय, तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने बुद्धि चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करने वाला, मातुल एवं मामा के सुख में कुछ कमी रहे परन्तु भूमि, जायदाद, धन-सम्पत्ति, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, राहु यहां से दशम भाव पर शुभ दृष्टि डालने से जातक अपने व्यवसाय एवं कार्य क्षेत्र में अग्रणी होगा। ऐसा जातक अध्यापन, प्रकाशन, वकालत, अभिनय, शिल्प-कला, बौद्धिक कार्य आदि के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदा. नं. 89, 90, 93

सप्तम भाव-पर मिथुन राशि पर राहु होने से जातक चंचल मन, अस्थिर एवं कामुक प्रवृत्ति, भोग, विलासादि कार्यों पर अधिक खर्च करने वाला, भाई-बन्धुओं के सहयोग में कमी, सांझेदारी के कार्यों में हानि, गृहस्थी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना रहे। यद्यपि जातक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनाने में सफल हो जाता है। वैवाहिक सुख में कमी अथवा स्त्री कष्ट, यदि राहु के साथ मंगल, चन्द्र आदि अशुभ ग्रह योग हो तो जातक को प्रमेह, पत्थरी या मधुमेह आदि गुप्त रोगों का भय होता है।

अष्टम भाव-में कर्क राशि पर राहु होने से जातक परिश्रमी, स्वाभिमानी, सम्वेदनशील स्वभाव, धन एंव परिवार के सम्बन्ध में चिन्तित रहने वाला, जातक अपने उद्यम एवं परिश्रम से निर्वाह योग्य धन एवं आय के साधन बना लेता है। इसको पैतृक धन व सम्पत्ति का सुख कम मिलता है। प्रारम्भिक जीवन काल अत्यन्त संघर्षपूर्ण होता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा भी कार्य करता है। यदि द्वितीय भावस्थ चन्द्र की इस भाव पर स्वराशि दृष्टि हो, तो जातक दीर्घजीवी होता है तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में भूमि, मकान, वाहन एवं सुयोग्य सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 91

नवम् भाव-में सिंह राशि पर राहु होने से जातक स्वतन्त्र एवं उच्श्रृंखल प्रवृत्ति वाला, मनमाना आचरण करने में प्रवृत्त, भ्रमणशील, स्वाभिमानी, जादू, यंत्र-तंत्र, ज्योतिष, लाटरी-शेयर आदि विषयों में रुचि रखने वाला, भाग्योन्नति में विशेष-रूप से उतार-चढ़ाव एवं विघ्न रहे। कार्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में विशेष संघर्ष व परिश्रम करना पड़े। यदि राहु पर या राहु के साथ पंचमेश मंगल का योग एवं गुरु की शुभ दृष्टि पड़ती हो, तो जातक श्रेष्ठ चरित्र वाला, आदर्शवादी, परोपकारी एवं उच्च आदर्श के लिए निष्ठावान होता है।

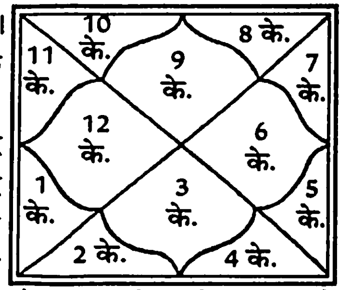
दशम भाव-में कन्या राशि पर राहु होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, बुद्धिमान एवं उद्यमशील होता है। प्रारम्भिक अवस्था में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पिता को कष्ट अथवा पैतृक सुख में कमी रहती है परन्तु ऐसा जातक अपने बुद्धि चातुर्य एवं परिश्रम के द्वारा जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। यदि कुण्डली में मंगल-गुरु केन्द्रादि भावों में शुभस्थ हों, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के बल भूमि, आवास, स्त्री-संतान आदि सुखों को प्राप्त करता है। देखें उदा. कुं. नं. 88

एकादश भाव-में तुला राशि पर राहु के प्रभाव से जातक भ्रमणप्रिय, बुद्धिमान, परिश्रमी एवं उच्चाकांक्षी होता है। कार्य व्यवसाय में उचित-अनुचित तरीकों से लाभ कमाने वाला और धैर्यशील व हिम्मत से कार्य करने वाला होता है। ऐसा जातक शेयर, सट्टा, लाटरी, ज्योतिष, यंत्र-मंत्र-तंत्र आदि गूढ़ विद्याओं में भी रुचि रखता है। जातक को अचानक धन लाभ की भी सम्भावनाएं होती हैं। ध्यान रहे, एकादश भाव में राहु (3, 6, 11 वें) अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृद्धिकारक होता है।

द्वादश भाव-में बृश्चिक राशि पर राहु के प्रभाव से जातक निर्बल स्वास्थ्य वाला, व्यवसाय एवं आय के साधनों में अस्थिरता, कामुक एवं विलासप्रिय प्रवृत्ति वाला, गुप्त चिन्ता एवं परेशानियां तथा जातक परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर धनार्जन करने वाला होता है। ऐसा जातक किसी अवांछित व्यक्ति द्वारा विश्वासघात अथवा धोखा भी प्राप्त करता है। धन का अपव्यय भी अधिक रहता है। जिसके कारण आर्थिक परेशानियां व गुप्त चिन्तायें होती हैं। जातक कुसंगती के कारण व्यसन आदि का भी शिकार हो सकता है।

धनु लग्न : द्वादश भावों में केतु का फल

धनु लग्ने केतु फल



विशेष:— अकेले केतु ग्रह के फल का निर्णय करते समय अन्य सभी ग्रहों के तुलनात्मक प्रभाव का भी विवेचन कर लिया जाए तो फल कथन में स्पष्टता होगी। सामान्यत: केतु पंचम, नवम एवं द्वादश भावों में अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृद्धिकारक माना जाता है।

प्रथम भाव-में धनु राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, चतुर, व्यवहार कुशल, दीर्घायु, यात्राएं करने वाला, पिता या पितामह से लाभ प्राप्त करने वाला, मुख पर तिल या चोट का निशान, स्वास्थ्य में कुछ कमी रहे। ऐसा जातक मन में चिन्तित होने पर भी अपनी चिन्ताओं को प्रकट नहीं करता। जातक अपने पराक्रम एवं परिश्रम से निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त कर लेता है। गुप्त युक्तियों का प्रयोग करने वाला होता है। जातक के माथे एवं जांघ के पास तिलादि का चिन्ह होगा। भूमि-मकान-वाहनादि सुखों से युक्त तथा धर्म-ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रूचि होती है।

द्वितीय भाव-में मकर राशि पर केतु के प्रभाव से जातक बुद्धिमान परन्तु कटुभाषी, शीघ्र उत्तेजित होने वाला, नेत्र अथवा मुख सम्बन्धी रोग, चित्त में व्याकुलता, अत्यन्त संघर्ष एवं परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएं, परन्तु मानसिक तनाव एवं चिन्ता रहेगी। जातक के ठोड़ी, माथे अथवा घुटनों पर तिल या चोटादि का निशान होगा। जातक तम्बाकु, मदिरा आदि व्यसनों में अपव्यय होने की सम्भावना भी होती है। देखें कुं. नं. 91

तृतीय भाव-में कुम्भ राशि पर केतु होने से जातक पुरुषार्थी, बुद्धिमान और पराक्रमी होता है। भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी होती है। जातक परोपकारी स्वभाव का और उदारहृदय होता है। जातक साहसी, भ्रमणशील और धार्मिक विचारों वाला होता है। जातक को धर्म, ज्योतिष, दर्शनशास्त्र आदि विषयों में भी रूचि रहे। जातक अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़-संकल्प रहता है। प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण होता है। परन्तु ऐसा जातक बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का बड़े धैर्य एवं साहस से सामना करता है। लग्न पर लग्नेश गुरु यदि शुभ त्रिकोण भाव में हो तो जातक संघर्ष एवं कठिनाइयों के पश्चात् उच्चप्रतिष्ठित देशभक्त व नेता होता है। देखें उदा. कुं. नं. 86

चतुर्थ भाव-में मीन राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, धैर्यवान, साहसी, मकान, भूमि, वाहनादि सुखों से युक्त, माता या पिता के सुख में कुछ कमी अथवा कष्ट होने की संभावना हो। ऐसे जातक का रहन-सहन अच्छा एवं उच्चस्तरीय होता है। जातक व्यवसायिक विद्या में उच्चशिक्षा प्राप्त, कुशाग्र-बुद्धि, योजनाबद्ध विधि से कार्य करने वाला, गणित, कामर्स, साईंस एवं शिल्पादि तकनीकी कार्यों में शीघ्र कुशलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि यहां चंद्र-गुरु आदि का योग हो, तो जातक भूमि-सम्पदा आदि सुखों से युक्त तथा माता की आयु दीर्घ होती है। अपने पैतृक जन्म स्थान से अन्यत्र स्थान पर विशेष भाग्योदय होता है। जातक की छाती के पास एवं पांव में तिल आदि का चिन्ह होता है। देखें कुं. नं. 88

पंचम भाव-में मेष राशि पर केतु के प्रभाव से जातक की चंचल एवं अस्थिर बुद्धि, उच्चाभिलाषी, मैस्मरेजम, ज्योतिष, योग, मंत्र, तंत्रादि गूढ़ विद्याओं की ओर अभिरूचि रखने वाला, उचित/अनुचित युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, शेयर, सट्टा, लाटरी आदि साधनों द्वारा आकस्मिक लाभ की संभावना हो। उच्चविद्या में अत्यन्त कठिनाइयों एवं विघ्नों के पश्चात् सफलता, संतान सुख में कमी अथवा संतान सुख भी कठिनाईयों के बाद मिले एवं गुप्त चिन्ताओं के कारण परेशानियां अधिक रहें।

षष्ठ भाव-में वृष राशि पर केतु होने से जातक का अस्थिर स्वास्थ्य, ज्वर प्रकोप अथवा दुर्घटना से चोटादि का भय, शत्रुओं पर प्रभावी तथा मुकद्दमे आदि विवादों में विजयी (सफल) होता है। गुप्त युक्तियों एवं योजनाओं द्वारा काम निकाल लेने में कुशल, अत्यन्त कठिन संकट आ जाने पर भी अपना साहस एवं हिम्मत नहीं छोड़ता। रक्त-विकार या प्रेत जनित प्रकोप से शरीर कष्ट एवं मानसिक कष्ट। यदि चंद्र-मंगल आदि ग्रहों का शुभ योग भी हो, तो जातक के विदेश

आदि भ्रमण की संभावना होती है। जातक को उदर, नाभि के पास या पीठ पर तिलदि का चिन्ह होता है।

सप्तम भाव-में मिथुन राशि पर केतु होने से जातक विशेष परिश्रमी, स्वास्थ्य में कमी रहे। जातक कामुक एवं विलासप्रिय एवं कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का होता है। विवाह आदि सुखों में विलम्ब, कमी अथवा विघ्न होते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त कठिनाइयों के पश्चात् सफलता प्राप्त करता है। यदि सप्तम् भावस्थ केतु पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक चिकित्सा क्षेत्र में विशेष लाभ व उन्नति करता है। सांझेदारी के कामों में हानि हो।

अष्टम भाव-में कर्क राशि पर केतु के प्रभाव से जातक गुप्त रूप से परिश्रम करने वाला, कटुभाषी, शीघ्र उत्तेजित होने वाला एवं क्रोधी स्वभाव का होता है। व्यवसाय में आर्थिक लाभ के लिए अत्यधिक संघर्ष एवं गुप्त-युक्तियों का प्रयोग करने वाला होगा। ऐसा जातक धन का संचय नहीं कर पाता। परन्तु गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहते हैं। तथापि परिवारिक परिस्थितियों के कारण मानसिक तनाव एवं अशान्ति रहती है। गुप्त रोगों का भी भय होता है। महिलाओं को क्लिष्ट रोग से गुप्त परेशानियों का सामना होता है।

नवम् भाव-में सिंह राशि पर केतु के प्रभाव से जातक संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त करता है। जातक गुणी, परिश्रमी तथा भ्रमणशील, समुचित धनार्जन करने वाला, व्यवसाय में अस्थिरता तथा भाई बन्धुओं के सुख में कुछ कमी रहती है। व्यवसाय में अत्यन्त परिश्रम के बाद सफलता मिलती है। जातक गुप्त चिन्ताओं से भी ग्रस्त रहता है। यदि यहां पर चंद्र-मंगल-बुध का योग हो तो जातक इंजीनियरिंग तथा सूर्य का योग हो तो चिकित्सा क्षेत्र में सफल होता है। देखें कुं. नं. 87 तथा 92 तथा नं. 94.

दशम भाव-में कन्या राशि पर केतु के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, संघर्षशील तथा अत्यन्त कठिनाइयों के बाद ही व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त कर पाता है। पैतृक पक्ष से भी विशेष लाभ नहीं मिल पाता। जातक का भाग्योदय अपने जन्मस्थान से अन्यत्र स्थान पर होता है। 37 वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय होता है। प्रारम्भिक घरेलू जीवन में भी परेशानियां एवं अशान्ति रहती है। ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं उद्योग द्वारा जीवन में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। देखें उदा. कुं. नं. 95

एकादश भाव-में तुला राशि पर केतु के प्रभाव से जातक परिश्रमी, बुद्धिमान, विघ्नों के बाद उच्च-व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त, यदि जातक की कुंडली में गुरु भी शुभ हो, तो वह इंजीनियरिंग आदि तकनीकी विद्या में विशेष सफलता प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक उचित/अनुचित तरीकों से समुचित धन लाभ प्राप्त कर लेता है। कभी-कभी स्वयं की भूल के कारण धन हानि भी होती है। यदि यहां गुरु-बुध-शुक्र का योग हो तो जातक सरकारी क्षेत्रों से अच्छा लाभ/मुनाफा प्राप्त कर लेता है।

द्वादश भाव-में बृश्चिक राशि पर केतु के प्रभाव से जातक का बाल्यकाल में स्वास्थ्य कुछ नर्म रहता है। परन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ स्वास्थ्य में सुधार होता है परन्तु व्यवसाय में अस्थिरता रहती है। जातक अत्यन्त बुद्धिमान तथा नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल होता है। तर्क-वितर्क करने वाला, अभिनय, वकालत, चिकित्सा, अध्यापन, राजनीतिज्ञ, सेना, विदेश गमन आदि क्षेत्रों में सफल होता है। देखें कुं. नं. 89, 90, 93

धनु लग्न में दो ग्रहों के कुछ प्रसिद्ध योग

(1) सूर्य-बुध- धनु लग्न में भाग्येश (सूर्य) तथा कर्मेश व सप्तमेश बुध का योग केन्द्र/त्रिकोण में होने से जातक प्रभावशाली एवं भाग्यशाली व्यक्ति, बुद्धिमान, विद्वान, दीर्घायु, तर्क-वितर्क करने में कुशल, पैतृक साख से लाभान्वित एवं सम्मानित, प्रियभाषी, अधिक (बहु) वार्तालाप करने वाला, बड़े प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क, भूमि, धन, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक चिकित्सा, वकालत आदि क्षेत्र में विशेष सफल होता है।

दशम भाव- में यह योग विशेष प्रशस्त होता है। ऐसा जातक राजतुल्य सुख-सांधनों से युक्त, मंत्री आदि उच्च प्रतिष्ठित एवं विख्यात होता है। **त्रिषुलोकेषु ख्यातो गजाश्वनाथो भहेन्महीपालः ॥**

(2) सूर्य-गुरु- का योग केन्द्र/त्रिकोण में होने से जातक उच्चशिक्षित, अत्यन्त बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी, विद्वान, स्वाभिमानी एवं भाग्यवान होता है। माता, भूमि, जायदाद एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव एवं समाज में उच्च प्रतिष्ठित व्यक्तित्व होता है। ऐसे जातक को चिकित्सा, धर्म, योग, ज्योतिष, मन्त्र आदि विषयों में भी रूचि होती है।

(3) सूर्य- मंगल- का योग केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक सूक्ष्म एवं तेज़ बुद्धि वाला, साहसी, दूसरों पर अधिकार की भावना रखने वाला, स्वाभिमानी, पित्त प्रकृति, क्रोधी, सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, बहुधा चिन्तित रहने वाला होता है। देखें उदा. कुं. 91

(4) सूर्य-चन्द्र का योग- केन्द्र/त्रिकोण में हो तो जातक परिश्रमी, कुशाग्र बुद्धि, पराक्रमी, उच्चाभिलाषी, क्रय-विक्रय एवं कार्य-व्यवसाय में कुशल, गुप्त युक्तियों द्वारा समुचित धनार्जन करने वाला, दूरदर्शी एवं योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने वाला, गुप्त संसाधनों से युक्त एवं भाग्यशाली होता है। देखें उदा. कुं. नं. 94। यदि यह योग अशुभ भावों में हो तो जातक को मानसिक विकार तथा वह माता-पिता के दुख से परेशान होता है।

(5) चन्द्र-मंगल- केन्द्र/त्रिकोण में योग हो तो जातक बौद्धिक कार्यों द्वारा धनार्जन करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, प्रभावशाली वाणी वाला, पराक्रमी, तीक्ष्ण बुद्धि, निज परिश्रम एवं उद्योग द्वारा आय के साधन बनाने में सक्षम होता है। सूर्य, बुधादि मित्र ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक प्रसिद्ध वकील, प्राध्यापक, मंत्री, चिकित्सक भी हो सकता है। देखें उदा. कुं. 89, 92

(6) चन्द्र-बुध- का योग हो तो जातक बुद्धिमान, सुन्दर-मुख, चतुर, वाचाल (बहु-भाषी), हंसमुख, गुणी, ज्योतिष, धर्म, संगीत एवं गूढ़ विषयों की ओर प्रवृत्ति, जमीन-जायदाद, धन सम्पदा एवं भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त होता है। पत्नी सुन्दर, सुशील तथा परिवारिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में सहयोग करने वाली होती है। ऐसा जातक अपने कार्य में कुशल तथा प्रायः स्त्री के अधीन रहने वाला होता है। देखें कुं. 87

(7) चन्द्र-गुरु- धनु लग्न में (केन्द्र-त्रिकोण) में इस योग का फल शुभ होता है। इसके प्रभावस्वरूप जातक सात्विक एवं धार्मिक विचारों वाला, जमीन-जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त, योग, दर्शन, ज्योतिष, मनोविज्ञान आदि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, गुप्त युक्तियों से धर्नाजन करने वाला, सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित होता है। श्रेष्ट मित्रों से युक्त एवं माता-पिता का आदर सत्कार करने वाला होता है। देखें कुं. नं. 87

(8) धनु लग्न में चंद्र-शुक्र, चन्द्र-शनि एवं चन्द्र-राहु या चन्द्र-केतु के योग शुभ फलदायक नहीं होते। जीवन संघर्षपूर्ण एवं चिन्तनशील रहता है।

(9) मंगल-बुध- केन्द्र-त्रिकोण का सम्बन्ध होने से इस योग का फल शुभ होता है। परन्तु मंगल द्वादशेश होने से जातक को विशेष संघर्ष के बाद कलादि कार्य क्षेत्र में सफलता मिलती है। आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, अत्यन्त बुद्धिमान, परोपकारी स्वभाव, धार्मिक प्रवृत्ति, ईमानदार, गुणी व परिश्रमी होता है। जातक अपने पराक्रम व निष्ठा से विशेष उत्कृष्ट स्थान प्राप्त कर लेता है। धन एवं सुख सम्पदाओं से सम्पन्न होता है। लग्न में यह योग विशेष प्रशस्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 93

(10) मंगल+गुरु- लग्नेश व पंचमेश का सम्बन्ध होने से यह योग भी अच्छा फल करेगा। इसके फलस्वरूप जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, बुद्धिमान, उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त, गुणवान, धार्मिक आस्थाओं से युक्त, भूमि-धन, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त तथा निजी उद्यम एवं पुरुषार्थ से जीवन में लाभ व उन्नति करने वाला होता है। देखें उदा. कुं. 88।

✡**शुक्र+शनि-** अत्यन्त परिश्रमी, स्पष्टवादी, कूटनीति का प्रयोग करने वाला, बुद्धिमान, अनेक युक्तियों से धन का अर्जन करने वाला होता है। विवाह के पश्चात् विशेषकर 34 वर्ष की आयु के बाद विशेष लाभ व उन्नति करने वाला होता है।

✡**सूर्य+मंगल+बुध-** धनु लग्न में यह तीनों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक भाग्यशाली, अत्यन्त बुद्धिमान, साहसी, परिश्रमी, कुछ निष्ठुर प्रकृति, सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित, जायदाद, धन, सुशील स्त्री एवं श्रेष्ठ सन्तान से युक्त होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 91

✡**सूर्य+बुध+गुरु-** केन्द्र में यह योग होने से विशेष प्रशस्त होता है। जातक उच्च व्यवसायिक विद्या के क्षेत्र में सफल, भाग्यशाली, मैडीकल क्षेत्र में सफल, भूमि, जायदाद आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

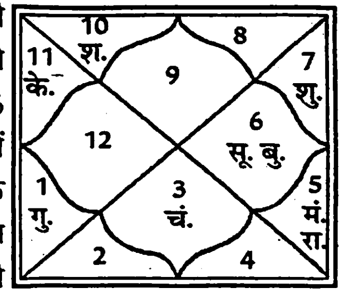
✡**सूर्य+चन्द्र+बुध-** तीनों ग्रहों का योग हो तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, कम्प्यूटर, गणित आदि कार्यों में कुशल, विदेश में भाग्योदय होता है। देखें उदा. कुं. नं. 90

✡**चंद्र+मंगल+बुध-** होने से जातक इलैक्ट्रीकल, तकनीकी आदि इंजीनियरिंग के **क्षेत्र में विशेष** कुशल होता है। निज पुरुषार्थ के बल पर जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। देखें उदा. कुं. नं. 92

धनु लग्न सम्बन्धी कुछ विशेष उदाहरण कुण्डलियां

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री

कुण्डली संख्या नं. 86
जन्म 2 अक्तू. 1904 ई.
इलाहाबाद



पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात् श्री लाल-बहादुर शास्त्री एक जून 1964 ई. को भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने। इससे पहले वह केन्द्रीय रेलवे मंत्री रह चुके थे। केन्द्रिय मन्त्रीमंडल में श्री शास्त्री जी ही एकमात्र ऐसे रेलमन्त्री रहे हैं जिन्होंने मात्र एक रेल दुर्घटना होने के कारण अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझते हुये मन्त्रीपद से त्यागपत्र दे दिया था। श्री शास्त्री जी 1 जनवरी 1964 ई. से 11 जन. 1966 ई. तक के अल्पकाल तक ही प्रधानमंत्री के पद पर सुशोभित रहे। इन्होंने अल्पकाल में ही देश की भलाई के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। इनके कार्यकाल में ही भारत-पाक युद्ध में शास्त्री जी ने अद्वितीय साहस का परिचय दिया। इसी युद्ध के दौरान भारत वासियों को ''जय जवान जय किसान'' का नारा दिया। श्री लाल-बहादुर शास्त्री जी अपने अभूतपूर्व आत्मबल के आधार पर ही साधारण परिवार से ऊपर उठकर प्रधानमंत्री जैसे उच्च-पद पर आसीन हुए तथा जन्मकुंडली में कुछ प्रमुख ज्योतिष सम्बन्धी योग इस प्रकार से मिलते हैं।

1. लग्नेश गुरु पंचम (त्रिकोण) भाव में बैठकर भाग्यस्थान एवं लग्न भाव को स्वक्षेत्री दृष्टि से देखता है। जिसके फलस्वरूप जातक अत्यन्त साहसी, पराक्रमी, सत्यप्रिय, ईमानदार तथा अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान होता है।

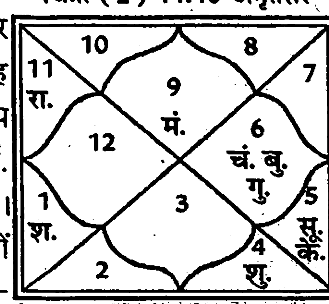
2. **बुधादित्य योग-** दशम् भाव में बुध उच्चराशिस्थ होकर भाग्येश सूर्य के साथ होने से केन्द्रत्रिकोण का सम्बन्ध बना है जोकि **राजयोगकारक** भी है। इस योग के प्रभाव से जातक उच्च-प्रतिष्ठित, भाग्यशाली तथा सरकारी क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त करता है।

3. इनकी कुंडली में **भद्र नामक पंचमहापुरुष योग** भी पाया जाता है। जोकि लग्न एवं चन्द्रमा से बुध केन्द्रगत होकर उच्चराशि में पड़ा है जिसके फलस्वरूप अत्यन्त बुद्धिमान, विद्वान, निडर, आत्मविश्वास से भरपूर, महानकार्य करने वाला और विख्यात महापुरुष होता है।

4. इसके अतिरिक्त इनकी कुंडली में श्रीनाथयोग भी पाया जाता है। जब सप्तमेश दशम में उच्चराशिस्थ होकर भाग्येश से युक्त हो, तो श्रीनाथ योग बनता है। इस योग से भी जातक समर्थवान एवं भाग्यशाली होता है।

एक उच्चप्रतिष्ठित डाक्टर

कुण्डली संख्या नं. 87
14 सितं., 1969 ई.
चित्रा (2) 14:10 अमृतसर



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक मेधावी डाक्टर की है। इनके माता-पिता दोनों ही सुशिक्षित परिवार से सम्बन्धित हैं। बड़ा भाई उच्च प्रतिष्ठित इंजीनियर है। जातक ने सन् 1995 में मैडीकल क्षेत्र में उच्च-क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करके मैडीकल क्षेत्र में मैडीकल आफिसर बने। लगभग 32 वर्ष की आयु के पश्चात् सुन्दर, सुशिक्षित एवं सुशील कन्या से विवाह हुआ। वह कन्या भी सुप्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान में कार्यरत है। शादी के समय गुरु मध्य शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी तथा सूर्य की अन्तर्दशा के आरम्भ में ही अक्तू. 2002 ई. को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। जातक को सूर्य की अन्तर्दशा 15 अग. 2003 ई. तक रहेगी। वर्तमान काल में जातक भूमि-जायदाद, सुन्दर आवास, वाहन तथा माता-पिता के सुखों से समन्वित है। उपरोक्त जन्म कुंडली के अनुसार ज्योतिषीय योग इस प्रकार मिलते हैं:-

1. जन्मकुंडली में भद्र नामक पंचमहापुरुष योग पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, अपने कैरियर के प्रति सतर्क एवं सावधान, अध्ययनशील, तर्क-वितर्क करने में कुशल होता है।

2. लग्नेश गुरु दशम भाव में चंद्र, बुध आदि ग्रहों से युक्त होकर चतुर्थ भाव को स्वगृही दृष्टि द्वारा देखने से जातक

मकान, वाहन एवं श्रेष्ठ माता-पिता के सुखों से सम्पन्न हुआ है। चंद्र-गुरु का सम्बन्ध होने से जातक परोपकारी, दयालु तथा धर्मपरायण हुआ।

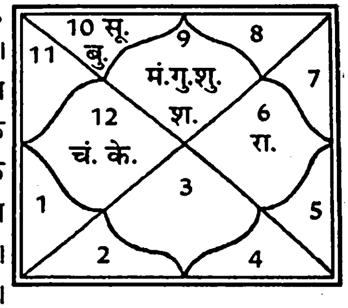
3. सप्तमेश बुध स्वोच्च राशि होने से जातक को परिवारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में सहयोग करने वाली पत्नी का सुख प्राप्त हुआ है।

4. भाग्येश सूर्य भाग्यस्थान में होने से जातक को धर्म, योग, ज्योतिष एवं पौराणिक साहित्य में विशेष रुचि रखने वाला, सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित होता है।

5. लग्नभाव में मंगल के प्रभाव से जातक यद्यपि पराक्रमी, साहसी, परिश्रमी एवं आकर्षक व्यक्तित्व, स्वाभिमानी, श्रमणप्रिय, अच्छी बुरी बात की शीघ्र पहचान करने वाला हुआ है। परन्तु अग्निराशि में होने से जातक कभी शीघ्र क्रोधित एवं उत्तेजित होने वाला तथा प्रेमवश ही नियंत्रित होने वाला स्वभाव होगा। यहां मंगल नेत्रों के लिए कष्टकारी होने की भी संभावना करता है।

उच्च संस्थान में चीफ मैनेजर

कुण्डली संख्या नं. 88
2 फरवरी, 1960 ई.
रेवती 4.19 A.M. जालन्धर



प्रस्तुत कुंडली का जातक उच्चस्तरीय एवं प्रतिष्ठित संस्थान के आर्थिक विभाग में कार्यरत प्रमुख (Chief) मैनेजर की है। इनका एक बड़ा भाई तथा 3 बहिनें हैं। पिता की मृत्यु के समय जातक अल्पायु का था। यह जातक अत्यन्त बुद्धिमान, कर्त्तव्यशील, मेधावी, परिश्रमी, व्यवहार कुशल, श्वेत वर्ण एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी है। इन्होंने अपने निजी परिश्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा उच्च व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त की तथा अपने आत्मविश्वास एवं बौद्धिक योग्यता के बल पर उच्च-प्रतिष्ठित संस्थान में एक उच्च-पद पर कार्य कर रहे हैं। सितं. 1984 ई. में शुक्र की महादशा के आरम्भ में एक सुशील एवं सुशिक्षित प्राध्यापिका से विवाह हुआ तथा शुक्र की दशा में ही प्रथम कन्या एवं तत्पश्चात लड़के का जन्म हुआ। शुक्र की महादशा मार्च 2002 ई. तक रही। वर्तमान काल में सूर्य की दशा में और भी अधिक पदोन्नति एवं धन लाभ हुए हैं। जातक धन, सम्पदा, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न है। प्रमुख ज्योतिषीय योग इस प्रकार से हैं-

1. धन स्थान में बुधादित्य योग अत्यन्त शुभ बना हुआ है।

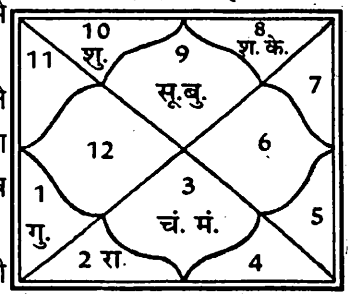
2. लग्न (केन्द्र) में मंगल, बुध, गुरु, शनि, ग्रहों का चतुर्ग्रही योग होने से जातक स्वावलम्बी, दृढ़ निश्चयी, धनी हुआ है।

3. गुरु की पंचम व नवम दृष्टि होने से जातक भाग्यशाली एवं तीक्ष्ण बुद्धि हुआ है।

4. शनि की दशम भाव पर क्रूर दृष्टि पिता के सुख में अरिष्टकारक हुई है।

एक प्रसिद्ध उच्चकोटि के वकील

कुण्डली संख्या नं. 89
27-12-1928
8 A.M. लाहौर



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक प्रसिद्ध एवं उच्चकोटि के वकील साहिब की है। यह अपने नगर के ही नहीं, बल्कि पंजाब भर में अपनी योग्यता के बल पर प्रसिद्ध हैं। इनके दो लड़के एवं एक लड़की है। इनकी कुण्डली में कुछ विशेष योग इस प्रकार से हैं:-

(1) राज योग- भाग्येश एवं कर्मेश (सूर्य-बुध) का योग लग्न-केन्द्र भाव में होने से जातक को अपने कार्य क्षेत्र में श्रेष्ठ पोजीशन प्राप्त हुई है। यहां बुधादित्य योग भी बना है। परंतु अग्नि राशि में सूर्य होने से शीघ्र उत्तेजित एंव क्रोधित होने का भी स्वभाव होगा।

(2) लग्नेश गुरु पंचम भाव में पड़कर भाग्य एवं लग्न भावों को शुभ एवं स्वक्षेत्री

दृष्टि से देखने से जातक तीव्र बुद्धिमान, विवेकशील, धर्मपरायण एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल हुआ है।

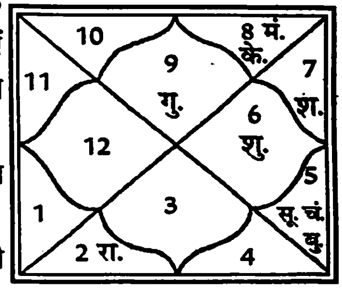
(3) धनेश एवं पराक्रमेश शनि द्वादश भाव में पड़कर द्वितीय भाव को स्वगृही दृष्टि से देखने से जातक भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त तथा शत्रु (विपक्षी) पर प्रभावी होने के संकेत हैं।

(4) **चंद्र-मंगल योग**- सप्तम भाव में चन्द्र-मंगल का योग भी जातक द्वारा शत्रु (विपक्ष) पर तर्क-वितर्क द्वारा प्रभाव एवं विजय दिलाने में सहायक हुआ।

(5) मंगल की द्वितीय भाव पर उच्च दृष्टि होने से जातक धन-धान्य सम्पदा आदि सुखों से सम्पन्न हुआ है। इत्यादि ॥

विदेश में भाग्योदय वाला जातक

कुण्डली संख्या नं. 90
27-8-1984, 15-45 P.M. जालन्धर



प्रस्तुत जन्म कुण्डली भारत में जन्में और विदेश (अमरीका) में स्थाई विद्या प्राप्त करके अध्ययन करने वाला जातक की है। इसका एक बड़ा भाई भी है। यह जातक ऊंचे पद का आकर्षक व्यक्तित्व वाला, तीव्र बुद्धिमान (Intelligent), गणित आदि में होशियार, तीव्र स्मरण शक्ति और सामान्य ज्ञान में भी कुशल है। इसकी कुण्डली में निम्न योग प्रमुख हैं-

(1) लग्नेश गुरु लग्न में होकर पंचम एवं भाग्य स्थान में पड़े चंद्र सूर्य को शुभ दृष्टि से देखने सो जातक बुद्धिमान , भाग्यशाली, उच्च विद्या प्राप्ति में सफल हुआ है।

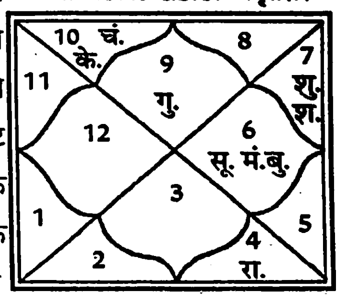
(2) **भाग्येश सूर्य का चंद्र बुध** के साथ विशेष योग बना है। माता-पिता की सहायता एवं उनके आर्शीवाद से विशेष रूप से लाभान्वित।

(3) तृतीयेश शनि उच्च राशि का होने से जातक उद्यमी, धन, धान्य सम्पदा, वाहन आदि सुखों से युक्त है।

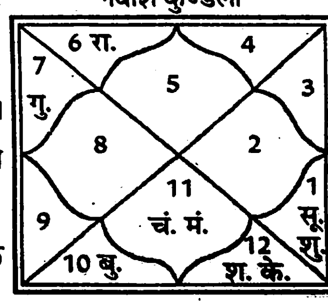
(4) पंचमेश मंगल द्वादश भाव में स्वगृही होकर मित्र केतु के साथ है। इसी से विदेश में सफल हुआ है। अमरीका का वीज़ा इसको अक्तूबर 2002 ई. (चन्द्र मध्य मंगल की अन्तर्दशा) में प्राप्त हुआ।

निष्काम सेवा में समर्पित उच्च प्रतिष्ठित चिकित्सक

कुण्डली संख्या नं. 91
27 सितं. 1925 ई.
उ.षा. 13.45 I.S.T. अमृतसर



नवांश कुण्डली



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक प्रतिभाशाली, धर्म-परायण एवं मेधावी आर्युवैदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सक, बुद्धिजीवी महापुरुष हैं। ज़ातक श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हैं तथा अपनी युवावस्था से ही सरकारी विभाग में कार्यरत रहते हुए भी निष्काम भाव से लोगों को धर्म एवं चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा करते रहे। सन् 1983 ई. में सरकारी सेवा से पदमुक्त होने के बाद सक्रिय रूप से लोगों की निष्काम सेवा कार्य प्रवृत्त हो रहे हैं। इनके दो सुयोग्य बेटे एवं कन्या तथा धर्मपरायण, सुशील व सुशिक्षित धर्मपत्नी भी विशेष रूप से इनके आध्यात्मिक एवं समाज सेवा के कार्यों में पूर्ण सहयोग करने वाली है। वर्तमान काल में भी जातक परिवार सहित योग एवं चिकित्सा के क्षेत्र में लोगों की निष्काम सेवा करते हुए परोपकारी कार्यों में संलग्न हैं। जातक धर्म, योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों का भी विशेष ज्ञान रखते हैं। उनकी कुण्डली में कुछ प्रमुख ज्योतिषीय योग इस प्रकार से पाए जाते हैं :-

(1) जातक की जन्म कुं. में दो ग्रह स्वोच्च राशि में तथा दो ग्रह स्वराशि मे हैं। जिससे जातक उच्चप्रतिष्ठित, धर्म-परायण तथा सुख साधनों तथा परिवारिक सुखों से युक्त हुआ है।

(2) **भद्रयोग**- कुण्डली में बुध केन्द्रगत होकर उच्च राशिस्थ होने से भद्र नामक

योग बना है जिससे जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, तीव्र बुद्धिमान, मधुरभाषी, सात्विक एवं परोपकारी स्वभाव, धर्म, ज्योतिष योग आदि शास्त्रों का जानकार तथा दीर्घ जीवी बनता है।

(3) लग्न भाव में स्वराशि का गुरु होने से जातक धर्मात्मा, गुणी, विद्वान, आत्मबली, शास्त्रज्ञ, सात्विक, दयालु, भाग्यशाली, श्रेष्ठ सन्तान व सुख-साधनों से सम्पन्न हुआ है। चिकित्सा शास्त्र में भी विशेष कुशल हुआ है:-

''विद्या समेतोऽभिमतो हि राज्ञां कृतज्ञो नितरामुदारः॥''

(4) पंचम नवांश (सिंह) में जन्म होने से जातक शुभ लक्षणों से युक्त, धर्म परायण स्त्री, पुत्रादि सन्तति, धन-सम्पदा आदि सुखों से युक्त व सुप्रतिष्ठित हुआ है।

(5) लाभ स्थान में शनि-शुक्र की युति जातक को धर्म, ज्योतिष, चिकित्सा व योगादि गूढ़ विषयों में विशेष रूचि देती है।

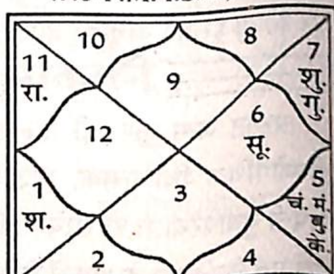
(6) परंतु लग्न पर शनि की दृष्टि तथा 1 एवं 5 भावों पर मंगल की दृष्टियां जातक को यदा-कदा क्रोधित या उत्तेजित अथवा उद्‌विग्नता के भाव करती हैं। शनि के कारण जातक अन्तर्मुखी, उदासीन एवं चिन्तनशील प्रवृत्ति भी देता है।

(7) जातक को अधिकांश सुख (सर्विस, विवाह, पुत्र आदि सन्तति) राहु मध्ये बुधान्तर 1952 से 14 मई 1955 तथा शनि की महादशा 1978 ई. से 1997 ई. के मध्य प्राप्त हुए।

(8) जन्म कुण्डली में कालसर्प योग के कारण सर्विस के दौरान (1952 से 1983 ई. तक) संघर्ष अधिक रहा।

एक उच्चप्रतिष्ठित मेधावी इंजीनियर

कुण्डली संख्या नं. 92
28 सितंबर 1970 ई.
1.15 P.M. I.S.T., भिलाई



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक उच्चशिक्षित एवं क्वालिफाईड ईंजीनियर की है। इनकी एक छोटी बहन के अतिरिक्त कोई भाई-बहिन नहीं। 1996 ई. में इन्होंने चन्द्रमा की महादशा एवं गुरु की अन्तर्दशा में (जुला. 1996 ई. को) ईंजीनियरिंग की उच्च उपाधि प्राप्त की तथा चन्द्र मध्ये शनि के अन्तर (1997ई.) में केन्द्र के सरकारी विभाग में निजी योग्यता के बल पर सर्विस प्राप्त की तथा 26 जन. 1999 ई. को सुन्दर, सुशील एवं सुशिक्षित कन्या से विवाह हुआ। विवाह के लगभग पांच महीनों के बाद पत्नी को गम्भीर शरीर कष्ट रहा। परन्तु अक्तू. 2001 ई. से चन्द्र मध्ये सूर्यान्तर तथा 14 अप्रै. 2002 ई. से (मंगल की दशा से) हालात में क्रमशः सुधार होना प्रारंभ हुआ है। वर्तमान काल में मंगल मध्ये राहु के अन्तर (अप्रै. 2003) में जातक को अपने विभाग में पदोन्नति एवं विशेष धन लाभ प्राप्त हुए हैं।

ज्योतिषीय समीक्षा- जातक की नवांश कुण्डली में चन्द्र सिंह राशि का तथा जन्म कुण्डली में भी सिंह राशि का होने से चन्द्रमा वर्गोत्तम स्थिति में हुआ है जिससे जातक को अधिकांश शुभ फल चन्द्र मध्ये गुरु की अन्तर्दशा में ही प्राप्त हुए अर्थात् 14 मार्च 95 से 14 जुला 1996 ई. के मध्यान्तर में उच्च शिक्षा एवं शनि के अन्तर में सरकारी सर्विस प्राप्त हुई।

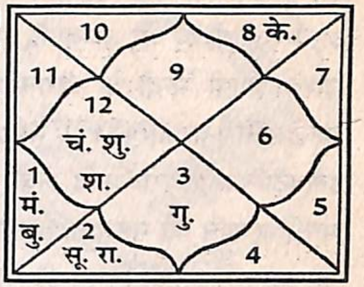
(2) शनि तृतीयेश होकर पंचम में नीचस्थ हो गया है, जिसके फलस्वरूप जातक कोजुलाई, 03 तक सन्तान सुख का अभाव तथा पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहा है। परन्तु पंचमेश मंगल नवम में शुभस्थ होने से शनि भी शुभफल प्रदायक होगा।

(3) सूर्य व बुध में परस्पर स्थान परिवर्तन योग हुआ है तथा भाग्यस्थान में चन्द्र, मंगल, बुध का योग भी भाग्य में वृद्धिकारक बना है। जिससे बुध की अन्तर्दशा में (जन. 1999) में विवाह हुआ है।

(4) मंगल मध्ये राहु के अन्तर में अप्रैल 2003 ई. को पदोन्नति व विशेष धन लाभ हुए हैं। चूंकि कुण्डली में राहु पर लग्नेश गुरु की शुभ दृष्टि पड़ रही है।

फिल्म जगत की ग्लैमर हिरोईन-माधुरी दीक्षित

कुण्डली संख्या नं. 93
जन्म 15 मई, 1966 ई.
उभा, 10.30 P.M. महाराष्ट्र



भारतीय फिल्म जगत की प्रख्यात एवं लोकप्रिय ग्लैमर गर्ल, हिरोईन–माधुरी दीक्षित का जन्म 15 मई, 1966, उ.भा नक्षत्र कालीन धनु लग्न में हुआ। जबकि नवांश कुण्डली में तुला लग्न उदित है। इसके जन्म कालीन 14 वर्ष, 9 मास शनि की दशा भोग्य थी। चन्द्र–शुक्र के योग के कारण इसको बचपन में ही नृत्य, अभिनय, संगीत आदि कलाओं का शौक था। 17 वर्ष की अल्पायु में ही इन्होंने फिल्मों में प्रवेश किया था, उस समय इन्हें बुध की महादशा प्रारम्भ हो चुकी थी। इनकी प्रारम्भिक फिल्में तेजाब, सैलाब, दिल, जवांई राजा विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। 1985 से 1989 ई. के मध्य (बुध मध्ये शुक्र एवं सूर्यन्तर) में विशेष सफलता प्राप्त हुई।

आगे बुध मध्ये गुर्वन्तर (1993 से जुला. 1996 के मध्य) में **''हम आपके हैं कौन''** के बाद तो माधुरी दीक्षित सफलता की उत्कृष्ट सोपान पर रही तथा सन् 2000 ई. तक भारतीय सिनेमा में प्रथम अग्रणी अभिनेत्रियों में रही हैं। सन् 2001 ई. में अमरीका में विवाह के पश्चात् अब पति व पुत्र संतान के साथ सफल गृहणी का जीवन व्यतीत कर रही हैं। इसकी कुण्डली में कुछ प्रमुख ज्योतिष योग–

(1) मालव्य योग- माधुरी दीक्षित की कुण्डली में केन्द्र (चतुर्थ भाव) में चन्द्र–शुक्र का योग होने से प्रशस्त मालव्य योग बना हुआ है जिसके फलस्वरूप जातक/जातिका नृत्य, अभिनय, संगीत आदि कला क्षेत्र में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करती है। ध्यान रहे, ऐश्वर्यराय की कुण्डली में भी चन्द्र–शुक्र का योग बना हुआ है।

(2) केदार योग- कुण्डली में चार राशियों में ही सभी ग्रह (राहु–केतु को छोड़कर) होने से केदार योग बना है, जिससे जातक/जातिका भूमि, जायदाद, धन–सम्पदा वाहन आदि सुखों से सम्पन्न हुई है।

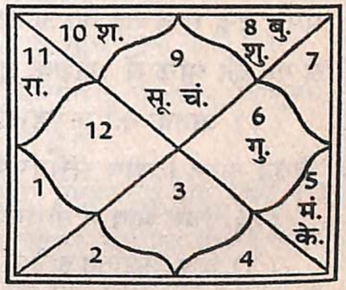
(3) मालिका योग- यदि कुण्डली में प्रथम भाव से सप्तम भाव तक राहु/केतु को छोड़कर सभी सातों ग्रह आ जाएं तो मालिका योग बनता है जिसके फलस्वरूप जातक/जातिका अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफल, धन–धान्य से सम्पन्न तथा लोकप्रिय व्यक्ति होता है। माधुरी दीक्षित की कुण्डली में यह योग मिलता है।

(4) गजकेशरी योग- गुरु चन्द्र से केन्द्रगत होने से यह योग बना है जिससे जातिका कलाक्षेत्र में अग्रणी एवं सफल अभिनेत्री बनी है।

(5) सुनफा योग- चन्द्र से दूसरे मंगल, बुध का योग होने से यह शुभ योग बना है, जिससे जातिका बुद्धिमान, धनी एवं ख्यातिवान् हुई है।

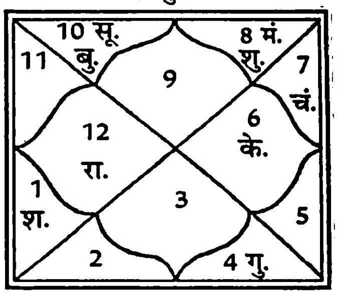
सफल उद्योगपति एवं अतुल धनी-धीरू भाई अम्बानी

कुण्डली संख्या नं. 94
28 दिसं., 1932 ई.
पू.षा. I.S.T. 8.10 A.M



रिलायंस उद्योग ग्रुप (Reliance group of Industries) के संस्थापक तथा भारत के इने गिने चुनीन्दा महा–धनवानों में से विशेष धनी माने जाने वाले श्री धीरू भाई अम्बानी का जन्म 28 दिसंबर 1932 ई. को धनु लग्न एवं धनु नवांश में प्रात: 8/10 पर महाराष्ट्र के एक साधारण परिवार में हुआ था। परन्तु इस जातक ने अपनी अथक मेहनत, दूरदर्शिता, भाग्य एवं बुद्धि चातुर्य के बल पर पैट्रोलियम व अन्य औद्योगिक क्षेत्र में अद्वितीय उन्नति तथा विस्तार करके भारत में ही नहीं विश्व भर अपने संस्थान तथा देश का नाम ऊंचा किया है। अम्बानी जी का जन्म यद्यपि पूषा नक्षत्र एवं शुक्र की दशा में हुआ था। (ध्यान रहे, जन्म कुण्डली तथा नवांश कुं दोनों में शुक्र द्वादश भावस्थ वर्गोत्तम स्थिति में होने से विशेष फलदायक माना जाता है।) परन्तु आपने तैल व लौह व टैक्सटाइल सम्बन्धी उद्योगों की विशिष्ट स्थापना तृतीयस्थ राहु की महादशा एवं गुरु की अन्तर्दशा (अक्टू., 1967 ई.) में शुभारम्भ हुआ,

नवांश कुण्डली



परन्तु गुरु की महादशा के काल में (अप्रैल 1982 ई. से अप्रै. 1998 ई. के मध्य) तो अम्बानी साहब भारत के ही नहीं, अपितु विश्व के श्रेष्ठ उद्योगपति तथा उत्कृष्ट महाधनी एवं पूंजीपतियों में इनका नाम गिना जाने लगा। पैट्रो कैमिकल, टैक्सटाईल तथा अनेक अन्य उद्योगों में भी अम्बानी तथा रिलायन्स ग्रुप आफ इण्डस्ट्रीज़ में 1998 के बाद विश्व व्यापी मन्दी के दौरान भी धीरू भाई अम्बानी तथा उनके दोनों लड़कों ने उल्लेखनीय तरक्की की। 25 मई 2001 ई. तक शनि मध्येशन्यन्तर में भी कैमीकल्ज़ तथा इलैक्ट्रानिक शेयरों आदि क्षेत्रों में विशेष उन्नति प्राप्त की। सन् 2002 के उत्तरार्ध में मारकेश शनि की महादशा तथा मारकेश बुध की अन्तरदशा कालीन सन् 2002 ई. के उत्तरार्ध में क्लिष्ट बीमारी से 70 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया। कुछ विशेष ग्रह योग इस प्रकार से हैं-

(1) धनेश शनि स्वक्षेत्री होकर लाभ स्थानस्थ तुला राशि को उच्चदृष्टि से देख रहा है। जिससे जातक को तैल, कैमीकल, इलैक्ट्रिकल्स आदि उद्योग क्षेत्रों में अभूतपूर्व लाभ एवं सफलता मिली।

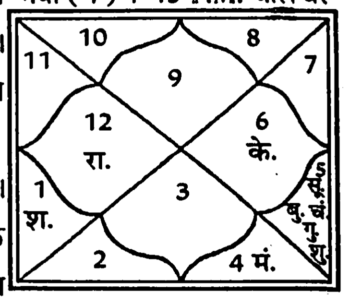
(2) धनु नवांश होने से लग्न वर्गोत्तम स्थिति में है। इसके अतिरिक्त शुक्र भी वर्गोत्तम है जिससे जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, गुणी, अत्यंत बुद्धिमान, विपुल धनी, परोपकारी एवं उदारहृदय एवं विख्यात हुआ है।

(3) पंचमेश मंगल भाग्य स्थान में होने से पुत्र संतति के बाद विशेष भाग्योन्नति हुई है।

(4) सूर्य-चन्द्र तथा बुध-शुक्र के योग तथा तृतीयस्थ राहु जातक को पैट्रो कैमिकल, रबड़ उद्योग एवं ट्रेडिंग में विशेष सफलता प्रदान कराते हैं। चन्द्र से भी गुरु केन्द्रगत होने से योगकारक है।

स्वावलम्बी एवं मेधावी चीफ अकाऊंटेंट

कुण्डली संख्या नं. 95
23 अग., 1968 ई.
मघा (1) 4-15 P.M. जालन्धर



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक बुद्धिमान एवं मेधावी चीफ एकाऊंटैंट साहब की है। इनके छः भाई और 2 बहिनें हैं। इनके जन्म कालीन मघा गण्डमूल नक्षत्र प्रथम चरण होने से जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में शरीर कष्ट, पिता जी के सुख में भी कमी रही। निज पराक्रम एवं पुरुषार्थ से मध्यम स्तरीय शिक्षा प्राप्त की। साथ-साथ प्राईवेट संस्थान में अकाऊंट्स द्वारा भी धनार्जन करते रहे।

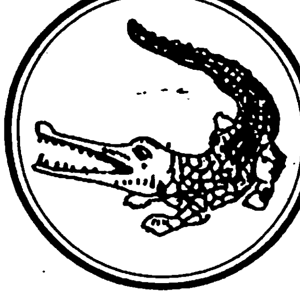
1999 ई. को 31वें वर्ष विवाह हुआ। उस समय सूर्य मध्ये शुक्रान्तर चल रहा था। तथा शुक्र के अन्तर में ही फर. 2000 में पुत्री का जन्म हुआ। 2001 में गृह कलह के कारण मन परेशान रहा तथा जुला. 2002 ई. में पैतृक गृह का त्याग करना पड़ा। उस समय चन्द्र मध्ये राहु का अन्तर चल रहा था। पत्नी की सेहत तथा स्वयं अपना भी स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा। मार्च 2003 से गुरु की भुक्ति में आंशिक सुधार हुआ है।

(1) जातक की कुण्डली में कालसर्प योग होने से तथा गण्डमूल नक्षत्र (मघा) में जन्म होने से प्रारम्भिक जीवन काल विशेष संघर्षपूर्ण एवं आर्थिक परेशानियों से युक्त रहा।

(2) पंचम भाव में नीचस्थ शनि तथा पंचमेश मंगल का भी नीच राशि में होने से पुत्र सुख में बाधक हो रहा है।

(3) चन्द्र अस्तंगत होने से उसकी दशा/अन्तर्दशा भी शरीर कष्टी, तनाव एवं परेशानी कारक हो रही है। आगामी गुरु की भुक्ति में परिस्थितियों में विशेष सुधार के योग हैं।

मकर राशि एवं मकर लग्न (Capricorn)



(भो, ज, जी, खी, खू, खे, ग, गी) .

यदि किसी व्यक्ति के पास अपने जन्म की तारीख, वार, समय आदि का विवरण नहीं है, तो वह अपने नाम के प्रथम अक्षर के अनुसार अपनी राशि निर्धारित कर सकते हैं।

मृग वदने लग्नस्थे कृशगामो भीरूरेण वक्राश्च।
वात व्याधिभिरार्तः प्रदीप्त चक्षु तुंगोग्र नासः स्यात्॥
धीरो विचक्षणः क्लेशी पुत्र वान्नृपति प्रियः।
कृपालु सत्य सम्पन्नो वदान्यो सुभगो लसः॥

अर्थात् मकर लग्न में उत्पन्न जातक दुर्बल एवं कृश शरीर, कुछ डरपोक प्रकृति, हिरण के समान मुख वाला, वायुजनित रोग की संभावना, चमकीली आंखें, ऊंची नाक वाला, अल्प सन्तति, धैर्यवान, विभिन्न कलाओं एवं विद्याओं का जानकार अर्थात् सुपठित व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति सुप्रतिष्ठित, परोपकारी एवं पुत्र आदि सन्तान से युक्त, सत्यप्रिय एवं दानशील स्वभाव का होता है। शनि क्षीण हो तो जातक में आलसी होने की प्रवृत्ति होती है।

आकाश मंडल में मकर-राशिचक्र की दसवीं राशि मानी जाती है। नक्षत्र मण्डल में मेष सम्पात बिन्दु से इसका विस्तार 270 अंश से 300 अंश तक माना जाता है। मकर राशि का प्रतीकात्मक चिन्ह मगर और हिरण का मिश्रित रूप है अर्थात् इस राशि के ऊपर का मुख हिरण के समान है तथा नीचे का आधा भाग मगरमच्छ के सदृश दिखाई देती है। यह राशि पृथ्वी तत्त्व वाली, चर राशि और स्त्री संज्ञक है। इस राशि का स्वामी शनि है। इस राशि के अन्तर्गत उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण (भो, जा, जी), श्रवण के चारों चरण (खी, खू, खे, खो) तथा धनिष्ठा के प्रथम दो चरण (गा, गी) आते हैं।

जातक की लग्न राशि के अतिरिक्त, जन्म नक्षत्र एवं उसके स्वामी तथा नाम राशि का भी जातक के व्यक्तित्व एवं जीवन पर विशेष प्रभाव होते हैं। जैसे उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का स्वामी मंगल होता है, तो किसी जातक का जन्म जिस नक्षत्र में होगा, उस जातक की जन्म कुण्डली गत ग्रहों एवं राशियों के अतिरिक्त जन्म नक्षत्र का भी जातक के जीवन पर प्रभाव होगा।

कालपुरुष में इस राशि का सम्बन्ध हड्डियों, अंगों के जोड़ तथा घुटनों से होता है। मंगल इस राशि (मकर) के 28^{0} अंशों पर परमोच्च स्थिति में होता है। ग्रह मैत्री चक्रानुसार मकर राशि शुक्र के लिए मित्र राशि, चन्द्र, मंगल, बुध एवं गुरु के लिए नीच राशि और सूर्य के लिए शत्रु राशि होती है। गुरु इस राशि के 5 अंश पर नीच माना जाता है।

मकर राशि के अन्य पर्यायवाची नाम-मृग, नक्र, कुरंग, मृगास्य, हरिण, कुरंगास्य, मृगवक्त्र, शिशुमार, अजिनयोनि इत्यादि॥ इंगलिश में इसे कैप्रिकोर्न (Capricorn) तथा उर्दू में जदी कहते हैं।

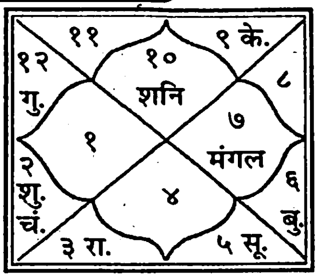
मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान, चर संज्ञक, चंचल, सौम्य, स्त्री, वैश्य जाति, वात प्रकृति, पिंगल एवं पीत, श्वेत वर्ण, रजो गुणी, रात्रिबली, वैश्य जाति, शीत-स्वभाव, पृष्ठोदयी, वृद्धावस्था वाली, रूक्षशरीर, सौम्य, सम एवं मध्यम शरीर, दक्षिण दिशा की स्वामिनी अर्थात् दक्षिण दिशा में बली होती है। इस राशि का पूर्वार्द्ध चतुष्पाद वश्य तथा उत्तरार्द्ध का वश्य जलचर है।

विशेष गुण/विशेषताएं–मकर राशि सेवा और त्याग, सहानुभूति एवं समर्पण की राशि मानी जाती है। इस राशि के जातक गम्भीर, परिश्रमी, रचनात्मक एवं मौलिक विचारों से युक्त तथा अनुसन्धानात्मक, धैर्यवान होते हुए भी प्रतिशोध एवं बदले की भावना से युक्त, कुछ रहस्यात्मक एवं आध्यात्मिक प्रकृति के होते हैं। कुछ परिस्थितियों में मकर लग्न के जातकों में स्वार्थ की भावना विशेष होती है।

सायन सूर्य 22 दिसंबर से 19 जनवरी तक मकर राशि में रहता है। सायन सूर्य प्रवेश के आधार पर ही उत्तरायण का प्रारम्भ भी आधुनिक काल में प्राय: 22 दिसम्बर से माना जाता है, जबकि निरयण सूर्य प्रतिवर्ष लगभग 14 जनवरी से 12 फरवरी के मध्य मकर राशि में संचार करता है। प्राचीन भारत में (लगभग पचास वर्ष पूर्व) उत्तरायण का प्रारम्भ निरयण मकर संक्रान्ति से ही माना जाता था।

इस राशि का प्रिय रत्न नीलम है तथा प्रिय धातुएं लोहा, सीसा, जिस्त, कांसा, पैट्रोल, स्टील आदि तथा कोयला, तेल, रबड़, कैमिकल्ज़, काली मिर्च, तिल, चमड़ा आदि होते हैं।

मकर लग्न में शुभाशुभ एवं योगकारक ग्रह



मकर लग्न में शुक्र केन्द्र-त्रिकोण का स्वामी होने से विशेष शुभ एवं राज योगकारक होता है। जातक नम्र स्वभाव का तथा सुन्दर स्त्री, भूमि, वाहन धनादि सुखों से युक्त होता है।

सूर्य-अष्टमेश होने पर भी विशेष दोषकारक नहीं। तृतीय, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश भावों में शुभ फल करेगा। अन्य भावों में अशुभ फल।

चन्द्र- २, ४, ५, १०, ११वें भावों में शुभ फल तथा अन्य भावों में अशुभ एवं मिश्रित फल।

मंगल- सुखेश एवं लाभेश होने से मिश्रित फली होगा। १, ३, ४, ६, ९, १०, ११वें भावों में शुभ तथा अन्य भावों में मिश्रित फली होगा।

बुध- षष्ठेश होने से अपनी दशा में रोग एवं विघ्नकारक होगा, किन्तु भाग्येश होने से (कुण्डली में शुभस्थ हो तो) जातक को बुद्धिमान व भाग्य में उन्नति भी कराता है। शुक्र के योग से विशेष योग कारक होता है।

गुरु- तृतीय एवं द्वादशेश होने से शुभफली नहीं दे पाता। यदि कुण्डली में गुरु शुभस्थ हो तो जातक के स्वभाव को चिड़चिड़ा, तुनुक मिज़ाज तथा परिवारिक जनों के साथ तनाव देता है। ३, ५, ७, ९, १०, ११वें भाव में कुछ शुभ फल होगा।

शुक्र- पंचमेश व कर्मेश होने से शुभफली, ६, ७, ८ एवं १२वें भावों में प्राय: अशुभफली, अन्य भावों में शुभ फल देगा।

शनि- लग्नेश व धनेश होने के कारण (शुभ भावस्थ हो, तो) जातक को धन, सम्पदा, वाहन आदि सुखों का लाभ होता है। ६, ८, १० एवं ११ वें भाव में अशुभ तथा अन्य भावों में शुभ फल देता है।

राहु- कुण्डली में अन्य ग्रहों के सहचर्य से शुभाशुभ फल करता है। मकर लग्न में राहु ३, ४, ७, ८, ११ एवं १२वें भावों में अशुभ फल का अन्य भावों में शुभ फल करता है।

केतु- ग्रह भी अन्य ग्रहों के सहचर्य से शुभाशुभ फल प्रदान करता है। मकर लग्न में केतु १, २, ५, ६, ९ या १०वें भाव में अपनी दशा कालीन अशुभ फल तथा अन्य भावों में शुभ फल प्रदान करेगा।

मकर लग्न–गुण/स्वभाव, व्यवसाय, विवाह सुख आदि
(Capricorn Ascendent)

शारीरिक गठन एवं व्यक्तित्व– मकर लग्न में उत्पन्न जातक बाल्यकाल में सुन्दर, पतला एवं इकहरा शरीर, सामान्य मध्यम कद, परंतु १६ वर्ष की आयु के बाद शारीरिक गठन में सुधार होकर आकर्षक व्यक्तित्व होता है। मकर जातक का सुन्दर, कमनीय एवं अण्डाकार चेहरा, लम्बी एवं ऊंची नाक, तीखे नयन नक्श, पतली कमर, सुन्दर बड़ी एवं चमकीली गहरी आंखें, आंखों के गिर्द कुछ कालिमा रहे। शरीर के नीचे का भाग अर्थात् (कमर से नीचे) प्राय: कृश होता है। राशि स्वामी शानि शुभ होने से घने, काले एवं कुछ रूखे बाल, बड़ा सिर, मुख कुछ चौड़ाई लिए, दांत भी कुछ बड़े दिखाई देंगे। सुन्दर एवं पुष्ट गर्दन तथा कन्धों में कुछ झुकाव की प्रकृति होगी। शरीर पर बाल अधिक होंगे। यदि शनि निर्बली हो, तो सिर पर बाल कम होंगे। घुटनों पर तिलादि अथवा चोट आदि का चिन्ह होने की सम्भावना है।

नोट-अधिक सूक्ष्म फलादेश के लिए जातक की चलित एवं नवांश कुंडली, ग्रहगोचर, ग्रहदशा को भी ध्यान में रखना चाहिए।

चारित्रिक विशेषताएं एवं गुण– मकर लग्न में उत्पन्न जातक तीव्र बुद्धिमान, संवेदनशील, परिश्रमी, स्वतंत्र विचारक, उच्चाकांक्षी, धार्मिक प्रवृत्ति, रचनात्मक एवं मौलिक विचारों से युक्त, गम्भीर, अध्ययनशील, सेवाभावी, अपने कार्य/व्यवसाय के प्रति दायित्व व निष्ठा रखने वाला, ईमानदार एवं कर्त्तव्य परायण होता है। शनि, शुक्र व बुध शुभस्थ हों, तो जातक विचारशील, मितव्ययी, दूरदर्शी, विवेकशील, भला-बुरा परखने में कुशल, जिस कार्य को करने का संकल्प कर ले उसे पूरी लगन एवं तन्मयता से करने वाला, व्यवहार कुशल, मिलनसार, प्रत्येक कार्य में व्यवसायिक बुद्धि एवं दृष्टिकोण रखने वाला तथा अपने उद्देश्य एवं स्वार्थ के प्रति सतर्क रहने वाला स्वभाव होता है। ऐसे जातक अपने दिल की बात जल्दी प्रकट नहीं करते, रहस्यों को छिपाने में कुशल होते हैं।

मकर लग्न पृथ्वी तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सहनशील, धैर्यवान, उर्वरक बुद्धि, किसी विषय पर गम्भीरता से विचार करने के बाद ही निर्णय लेने वाला तथा निश्चय के बाद शीघ्र ही कार्य पूर्ति के लिए संलग्न हो जाने की प्रवृत्ति, भौतिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील, सृजनात्मक क्षमता से युक्त, तीव्र स्मरण शक्ति वाला, दूसरों के द्वारा किए गए उपकार तथा अपकार जल्दी नहीं भुला पाए, प्रतिशोध की भावना प्रबल होती है। जातक की मानसिक व आत्मिक शक्ति भी तीव्र होती है। अनेक कठिनाईयों एवं विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी परिश्रमी एवं कार्यशील रहता है। उत्तरदायित्व की भावना के कारण मकर जातक में प्रदर्शन एवं दिखावे की प्रवृति नहीं होती। कुछ रहस्यात्मक प्रकृति होने के कारण मकर जातक को समझ पाना सरल नहीं होता। जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों में गुजरता है।

जन्म कुण्डली में **गुरु व शुक्र शुभस्थ** हों, तो जातक विनम्र स्वभाव वाला, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दया-भावना से युक्त, परोपकारी स्वभाव, न्यायप्रिय, स्वयं विश्वसनीय होते हुए भी किसी दूसरे पर जल्दी भरोसा न करने वाला होगा। **शुक्र के कारण** संगीत, गायन, कला एवं साहित्य की ओर विशेष रूचि होगी। सौन्दर्यनुभूति भी विशेष होती है। **चन्द्र-गुरु** शुभ हों, तो जातक को धार्मिक साहित्य, योग, ज्योतिष, तन्त्र आदि गूढ़ विषयों में भी अभिरूचि रहती है। शनि व गुरु के प्रभाव से मकर जातक को प्रदर्शन एवं आडम्बर करने की प्रकृति नहीं होती। शनि एक आध्यात्मिक ग्रह है, अत: जीवन में पहले कष्ट/दु:ख देकर बाद में अध्यात्म की ओर जाने को विवश कर देता है। जीवन में परिवर्तन करता है।

चन्द्र व शुक्र शुभस्थ हों तो जातक कल्पनाशील, किसी विषय को शीघ्र समझने की योग्यता, नवीनता एवं परिवर्तन प्रिय, देश-विदेश की यात्राएं करने का शौकीन, नई-नई युक्तियों की रचना में कुशल, प्रबन्धनात्मक योग्यता विशेष होती

है। धन-सम्पदा, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा आदि प्राप्ति की उत्कट इच्छा होती है। ऐसा जातक समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए अथक परिश्रम करता है। अपने सामर्थ्य से अधिक (मानसिक व शारीरिक) परिश्रम करने से कई बार रुग्ण भी होने की सम्भावना होती है। चन्द्र यदि क्षीण या निर्बली हो, तो जातक का मन अस्थिर, चंचल एवं उद्विग्न होता है तथा घरेलू जीवन भी असुखद एवं अशांत रहता है। लग्न में गुरु अशुभ हो, तो जातक स्वाभिमानी, वृथा अभिमान करने वाला, शिक्षा के पक्ष में कठिनाईयों एवं संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त करने वाला होता है। स्वास्थ्य में कमी, स्त्री सुन्दर, सुशील एवं भाग्यशाली होती है, बुध व शनि अशुभ हों, तो जातक मिथ्याभिमानी, ईर्ष्यालु, स्वार्थपरक, कठोर, केवल अपनी बात को सर्वोपरि रखने की प्रवृत्ति तथा दूसरों की आलोचना करने वाला एवं असंतोषी प्रकृति का होता है।

स्वास्थ्य और रोग (Health & Diseases)- मकर लग्न जातक की जन्म कुण्डली में एवं नवांश में यदि लग्नेश शनि, चन्द्र शुभस्थ (स्वक्षेत्री या उच्च) हो अथवा लग्न पर शुभ ग्रहों का प्रभाव (दृष्टि आदि से) हो तो जातक/जातिका का स्वास्थ्य अच्छा तथा सुन्दर व प्रभावी व्यक्तित्व होता है। इस सम्बन्ध में अभिनेत्री रेखा तथा क्रिकेट खिलाड़ी गवास्कर की कुण्डलियों के उदाहरण देखे जा सकते हैं। (देखें उदाहरण कुं. नं. 97, 98) शुक्र-शनि का शुभ सम्बन्ध हो तो त्वचा सुन्दर और कोमल होती है। यदि कुण्डली में शनि, चन्द्र, बुध, सूर्य अशुभस्थ हों तो या लग्न अथवा लग्नेश शनि पर राहु, मंगल, आदि अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक के स्वास्थ्य में कमी होती है। उसे उदर एवं त्वचा सम्बन्धी रोग, पित्ताशय में गड़बड़ी, मन्दाग्नी, पाचन, प्रक्रिया में खराबी, स्नायु दुर्बलता, त्वचा में रूखापन, मानसिक विकृति, खून की कमी, ज्वर, घुटनों, पसलियों एवं जोड़ों में दर्द, अनिद्रा, गला, खांसी, शीत, वातादि रोग तथा पत्थरी आदि रोगों का भय रहता है।

शनि उत्तराषाढ़ा में हो हृदय सम्बन्धी, शनि मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा में हो तो पत्थरी सम्बन्धी, मंगल अनुराधा या धनिष्ठा में हो तो ज्वर या लिवर सम्बन्धी दोषकारक होता है। मकर जातक की कुण्डली में यदि मंगल, सूर्य, बुध, शनि आदि अशुभ हों, तो जातक को नेत्र एवं मस्तिष्क रोग, अव्यवस्थित रक्तचाप, नाक, कान व गले के रोगों का भी भय होता है।

अशुभ शुक्र एवं शनि के कारण मकर जातक कभी नैराश्य एवं उदासीनता की भावना से पीड़ित होकर नशा आदि व्यसनों से भी ग्रस्त हो सकते हैं।

उपयोगी परामर्श- मकर लग्न के जातक को अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक गर्म एवं अत्यधिक ठंडी (शीत) वस्तुओं के सेवन से बचना चाहिए। नियमित व्यायाम, प्राणायाम तथा सन्तुलित भोजन से वह अनेक रोगों से बच सकते हैं। इसके अतिरिक्त आशावादी चिन्तन (Positive Thinking) और सक्रियता को अपनाना चाहिए।

शिक्षा एवं कैरियर (Education & Career)- मकर लग्न की कुण्डली में पंचम भाव एवं पंचमेश शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि आदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक उच्च व्यवसायिक (Professional) शिक्षा प्राप्त करने में सफल होता है। ऐसा जातक/जातिका वकालत, डिजाईनिंग, कम्पयूटर, अध्यापन, नृत्य, कला, संगीत आदि क्षेत्रों में विशेष सफल होता है। (देखें उदा. कु. नं. 96, 97, 98) शुक्र, बुध, शनि, मंगल आदि ग्रहों की दशा अन्तर्दशा भी लगी हो तो इंजीनियरिंग, इलैक्ट्रिकल व वस्त्र, हस्तकला क्षेत्र में विशेष अधिक सफलता मिलती है। यदि पंचम भाव में राहु, केतु, मंगल, सूर्य आदि अशुभ ग्रह हों अथवा इन ग्रहों की दशा अन्तर्दशा लगी हो तो जातक को उच्च विद्या प्राप्ति में अड़चनें अथवा विलम्ब होता है। (देखें उदा. कुं. नं. 98)

यदि गुरु धर्म स्थान में तथा शनि एकादश में हो तो जातक/जातिका उच्चादर्शवान्, दार्शनिक, सेवापरायण, त्यागी तथा अध्यात्मवादी होकर अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करने वाले बन जाते हैं। ऐसे जातक को विशेष प्रेरणा की आवश्यकता होती है। महत्वपूर्ण कार्य करने की झिझक में, कई बार इनसे अच्छे अवसर भी निकल जाते हैं।

व्यवसाय और आर्थिक स्थिति- मकर लग्न के जातक मानसिक एवं शारीरिक दोनों रूप में परिश्रमी एवं

उच्चाकांक्षी होने के कारण अपने तथा परिवार की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। गुप्त रूप से दूरगामी योजनाएं बनाने में कुशल, व्यापार, व्यवसाय एवं राजनीति में अपनी व्यवहार कुशलता एवं बुद्धि चातुर्य के कारण सफल होने का सामर्थ्य एवं योग्यता रखते हैं। जन्म कुण्डली में शनि, बुध, शुक्र, चन्द्र, गुरु आदि ग्रह शुभ भावस्थ हो एवं शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो मकर जातक निम्नलिखित व्यवसायों में विशेष लाभान्वित एवं सफल होते हैं। अनुसन्धान एवं शोध कार्य, वैज्ञानिक, गुप्तचर विभाग, सेना-अधिकारी, किसान अथवा कृषि उद्योग से सम्बन्धित व्यापारी, अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर, शिल्पकार, कम्पयूटर, कारखानों से सम्बन्धित कार्य, क्रय-विक्रय करने वाले व्यापारी, भूमि जायदाद एवं ठेकेदारी से संबंधित कार्य, ज्योतिषी, इन्शयौरैंस, कमीशन एजैंटस, खिलाड़ी, लेखन, प्रकाशन, प्रिंटिग-प्रैस सम्बंधी कार्य, पैट्रोलियम तेल, वकालत, अभिनय, नृत्य, संगीत, फोटोग्राफी, राजनीतिज्ञ, कर्मकाण्डी पंडित, लोहा, स्टील, ज्यूलर्ज़, पत्थर सम्बन्धी, कोयला, गाय-भैंस आदि पशुओं से सम्बन्धी, चमड़ा या रबड़ उद्योग आदि, वस्त्र उद्योग, सौन्दर्य प्रसाधन सम्बन्धी कार्य, किरयाना व्यापारी, स्टेशनरी, औषधि विक्रेता, हस्त शिल्प, तकनीकि व्यवसाय द्वारा विशेष लाभान्वित होने की सम्भावना होती है। परंतु ध्यान रहे जातक उसी उद्योग या व्यवसाय में सफल होता है, जिसकी कुण्डली में दशम भाव या दशमेश ग्रह अथवा उनसे सम्बन्धित जो ग्रह बली हो। जैसे किसी कुण्डली में **सूर्य बली** हो तो जातक बिजली उद्योग से सम्बन्धित सरकारी या अर्ध सरकारी, कृषि, मैडीकल आदि क्षेत्रों से विशेष लाभान्वित, **चन्द्र शुभ** एवं बली हो तो जातक सेल्जमैन, तेल, कोल्ड ड्रिंक्स, वस्त्र डिज़ाईनिंग, सिनेमा, टैलीविज़न, सौन्दर्य सम्बन्धी कार्य, मंगल से बिजली सम्बन्धी, बेकरी, पुलिस, सेना, भूमि-जायदाद, दन्त चिकित्सा, सुरक्षा आदि, **बुध से** अध्यापन, अकाऊंट्स, वकालत, शिल्प, ज्योतिष, डाक व तार विभाग, इंजीनियरिंग, सम्पादन, पत्राचार आदि, **गुरु से** वैद्यक, चिकित्सा, अध्यापन, व्यापार, उच्च पदाधिकारी, ज्योतिषी उपाध्याय, पुरोहित, **शुक्र से** सौन्दर्य प्रसाधन, मिठाई विक्रेता, कम्प्यूटर, टैलीविज़न, संगीत, अभिनय व कलात्मक वस्तुओं के व्यवसाय, राहु-शनि से पत्थर, सीमेंट, लोहा, कलपुर्जे, कोयला, तेल, पैट्रोल, जायदाद, रबड़, मशीनरी अनुसंधान आदि से सम्बन्धित कार्यों में सफलता होती है।

आर्थिक स्थिति- मकर जातक की कुण्डली में यदि शुक्र, शनि, चन्द्र, बुधादि ग्रह शुभ भावस्थ हों अथवा इनमें पारस्परिक दृष्टि या योग आदि का सम्बन्ध हो एवं इन्हीं ग्रहों में से किसी ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो जातक को व्यवसाय में समुचित धनार्जन करने के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। कुण्डली में गुरु चन्द्र शुक्र शुभस्थ हों, तो विवाह के पश्चात जातक को यथेष्ठ धन लाभ होते हैं। देखें कुं. नं. 101। यदि चन्द्र, शुक्र अशुभ भावों में अथवा अशुभ ग्रह युक्त हों तो जातक/जातिका को आर्थिक एवं पारिवारिक परेशानियां रहती हैं। यदि शनि, गुरु युक्त या दृष्ट होकर मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो जातक अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के साथ स्वोपार्जित धन का अर्जन करता है।

प्रेम सम्बन्ध एवं वैवाहिक सुख- मकर लग्न के जातक में प्रेम और सौंदर्यनुभूति की भावना प्रबल होती है। प्रेम सम्बन्ध बनाने में मकर जातक अत्यधिक सावधानी बरतते हैं। वृष, कन्या व कर्क लग्न जातकों की भांति मकर जातक/जातिका अपनी प्रेमाभिव्यक्ति शीघ्र प्रकट नहीं कर पाते तथा न ही प्रेम के प्रकटीकरण में आडम्बर या प्रदर्शन को अधिक महत्त्व देते हैं। मकर जातकों का प्रेम रहस्यमय किन्तु निर्मल तथा उच्च भावनाओं से प्रेरित होता है। अपने आदर्शों के अनुकूल यदि जीवन साथी न मिल पाए तो वह आजीवन अविवाहित रहना अधिक पसंद करते हैं। यदि शनि नीच राशिगत हो तथा मंगल-शुक्र का योग पंचम, सप्तम, नवम, द्वादश भावों में हो, तो जातक अत्यधिक कामुक, विलासप्रिय एवं विजातीय स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। देखें कुं. नं. 102। यदि कुण्डली में सप्तमेश चन्द्र उच्चस्थ हो तथा सप्तम भाव पर गुरु की शुभ दृष्टि हो, तो जातक अपने वैवाहिक जीवन के प्रति गम्भीर, उत्तरदायित्व पूर्ण एवं सुखी होता है। उसकी स्त्री सुन्दर, सुशील एवं परिवार में सहयोग करने वाली होती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 101। यदि चन्द्र एवं शुक्र अशुभस्थ हों, या सप्तम भाव में राहु, सूर्य, भौमादि, अशुभ ग्रह हों, तो जातक का दाम्पत्य जीवन परेशानियों से युक्त होता है।

उपयुक्त जीवन साथी (Suitable Match)- मकर लग्न के जातक को वृष, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, कुम्भ या मीन राशि वाली कन्या के साथ विवाह अथवा व्यवसायिक सम्बन्ध रखने प्रायः शुभ एवं लाभदायक रहते हैं।

मकर लग्न की स्त्रियां (Capricorn born Ladies)



मकर लग्न में उत्पन्न युवती का मध्यम कद, सुन्दर, पतला एवं इकहरा शरीर, बाल्यावस्था में कुछ मोटी परंतु 16 वर्ष की आयु के पश्चात शारीरिक संरचना में सुधार होकर आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी, सुन्दर, कमनीय, कुछ लम्बा एवं अण्डाकार चेहरा, लम्बी नाक, नीली व गहरी आंखें तथा तीखे नयन नक्श, पतली कमर, घने काले एवं कुछ रूखे बाल, शनि बलान्वित हो तो शरीर पर बाल अधिक होंगे! शनि यदि निर्बली हो, तो सिर पर बाल कम होंगे। लग्नस्थ शनि होने पर घुटनों पर तिल/मस्से या चोट आदि का निशान होगा व मकर जातिका नारी सुलभ सहज सौंदर्य आकर्षण से युक्त होती है।

स्वभावगत विशेषताएं- मकर लग्न की जातिका तीव्र स्मरण शक्ति रखने वाली, बुद्धिमान, महत्त्वाकांक्षी, मितव्ययी, विचारशील, स्वतंत्रता प्रिय, धार्मिक विचार वाली, भाग्यशालिनी, सत्यनिष्ठ, ईमानदार, तीर्थों आदि धार्मिक स्थलों पर जाने की इच्छुक, सब कामों में प्रमुख रहने वाली, अग्रणी, विनम्र स्वभाव, गुणवती, पुत्र आदि सन्तान सुख तथा नारी सुलभ सौन्दर्यादि आकर्षण से युक्त, आत्मविश्वास संयुक्ता एवं व्यवहार कुशल होती है।

मृगोदये स्त्री सुभगा सुसत्या, तीर्थानुरक्ता हतशत्रुपक्षा॥
प्रधान कृत्या प्रथिता च लोके गुणान्वित पुत्रवती सदैव॥

ऐसी जातिका कत्तर्व्य परायणा, अध्ययनशील प्रकृति, रचनात्मक (Creative) कार्यों में रूचि रखने वाली, स्वाभिमानी, सिद्धांतवादी किन्तु आलोचनात्मक प्रकृति, तर्क-वितर्क करने में कुशल, किसी के साथ मित्रता बहुत सोच विचार के बाद करती है,प्राय: अर्न्तमुखी (Introvert) प्रकृति होती है। अंतरंग मित्रों की संख्या भी कम होती है।।

पृथ्वी तत्त्व प्रधान राशि होने से मकर जातिका धैर्यशील, परिश्रमी, किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किए गए उपकार को न भुलाने वाली, परोपकारी प्रवृत्ति, भला-बुरा परखने में अपूर्व क्षमता रखने वाली, जिस काम को करने का संकल्प कर ले, उसे पूरी लगन एवं तन्मयता से करने वाली, अतिथि सेवा करने में तत्पर, अपने स्वार्थ व उद्देश्य के प्रति सावधान परंतु रहस्यात्मक प्रकृति होने से अपने अन्तर्मन के भावों को जल्दी प्रकट नहीं होने देती। छोटे से छोटे विषय पर भी गम्भीर विचार (चिन्तन) करने वाली, मितव्ययी, छोटी-छोटी बचतें करने में कुशल, व्यवहारिक एवं सुनियोजित ढंग से कार्य करने वाली तथा भौतिक सुख सुविधाओं एवं भौतिक उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करने वाली होती है।

शनि एकादश भाव में तथा गुरु धर्म भाव में हो तो जातिका अध्यात्मवादी, त्यागी, सेवापरायण तथा सादा जीवन व्यतीत करने वाली होती है। देखें उदा. कुं. नं. 103। मकर जातिका की कुंडली में शुक्र, चन्द्र शुभस्थ हों तो जातिका की मानसिक एवं कल्पनाशक्ति अच्छी होगी। जातिका को संगीत, गायन, नृत्य, अभिनय कला एवं साहित्य की ओर भी विशेष अभिरूचि होगी। व्यवसायिक तौर पर उनसे लाभान्वित भी होती है। देखें उदा. कुं. नं. 97 (रेखा)।

शिक्षा- शुक्र के अतिरिक्त कुण्डली में बुध व गुरु ग्रह भी शुभस्थ हों, तो जातिका उच्च शिक्षा ग्रहण करने में सफल होती है तथा उच्च शिक्षा के उपरांत सर्विस (Job) प्राप्त करने में सफल होती हैं।

दशम भाव में सूर्य, राहु अशुभस्थ हों तथा चन्द्र भी पाप ग्रह युक्त हो, तो अच्छी सर्विस एवं विवाह आदि के सम्बन्ध में अच्छे अवसर भी हाथ से निकल जाते हैं। उदाहरण स्वरूप देखें कुं. नं. 103।

परिवारिक एवं गृहस्थ जीवन- कुण्डली में चन्द्र, शुक्र, शनि, बुध आदि ग्रह शुभस्थ होने पर मकर जातिका प्रेम और सौन्दर्य के सम्बन्ध में हृदय की सहज, सुन्दर एवं उच्च-आदर्श भावनाओं से अनुप्रेरित होती है। वह प्रदर्शन को अधिक महत्त्व नहीं देती है। स्वभाववश वह शालीन, मिलनसार एवं विशिष्ट गुणों से युक्त होगी। पारिवारिक परिवेश के अनुसार स्वयं को ढाल लेने वाली तथा अपने गुणों से परिवार एवं समाज में आदर व प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली

होगी। स्वतंत्रप्रिया होने पर भी विवाह या प्रेम सम्बन्धों में अपने माता-पिता की आज्ञा के विरुद्ध आचरण करने से परहेज करती है। मकर जातिका द्वारा किए गए प्रेम विवाह कम ही सफल होते देखे गए हैं। उदाहरण स्वरूप देखें कुं. नं. 97। परम्परा से किए गए विवाह के पश्चात् मकर जातिका अपने पति को तथा गृहस्थ जीवन में विशेष सहयोग प्रदान करती है। अपने पति एवं दाम्पत्य जीवन के प्रति पूर्णतया समर्पित तथा निष्ठावान् होती है। चन्द्र एवं गुरु-शुक्र शुभस्थ हों, तथा भली प्रकार से जन्मपत्री मिलान करके विवाह किया गया हो, तो वैवाहिक जीवन, अनुकूल जीवन साथी, सुन्दर आवास तथा धन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होती है।

यदि सप्तम भाव में मंगल, राहु, सूर्य आदि अशुभ ग्रह हों अथवा शनि मंगल ग्रहों की दृष्टि हो तथा कुं. में चन्द्र, शुक्र की स्थिति भी अच्छी न हो तो वैवाहिक सुख में कमी होती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 97 (अभिनेत्री रेखा)

उपयुक्त जीवन साथी (Suitable Match)- मकर लग्न/राशि की जातिका के लिए वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ व मीन लग्न/राशि वाले जातक के साथ विवाह अथवा व्यवसायिक सम्बन्ध शुभ एवं लाभदायक रहते हैं।

स्वास्थ्य और रोग- यदि मकर जातिका की कुण्डली में चन्द्र, बुध, मंगल या शनि ग्रह अशुभस्थ हों तो जातिका को वायु, कफ जनित रोग, जुकाम, खांसी, खून की कमी, अनियमित मासिक धर्म, चर्म रोग, जोड़ों में दर्द, तनाव (Dipression), अनिद्रा आदि रोगों की सम्भावना होती है। स्वास्थ्य एवं रोग सम्बन्धी अधिक विवरण के लिए पिछले पृष्ठों में पुरुष (मकर लग्न) का स्वाध्याय करें।

सावधानी- मकर जातिका को अत्यधिक अन्तर्मुखी एवं स्वार्थ प्रकृति, एकान्तवास, नैराश्य की भावना से बचना चाहिए। दूसरों की निन्दा एवं आलोचना करने की प्रकृति को भी त्यागना तथा हमेशा प्रसन्न रहना, आप के सुखमय जीवन के लिए लाभदायक होगा।

उपयुक्त व्यवसाय- मकर जातिका की कुण्डली में बुध, शुक्र, शनि, चन्द्रादि ग्रह शुभस्थ हों तो जातिका अध्यापन, कम्पयूटरज़, लेखा-जोखा (अकाऊंट्स), फैशन डिज़ाईनिंग, ब्यूटी-पार्लर (Beauty Parlour), बुटीक, शिल्पकारी, ऐक्टिंग, डांस, मॉडलिंग (Modelling), गृह सज्जा (Interior Decoration), वकालत, बैंकिंग, टैलीविज़न, साईंस, डॉक्टर (चिकित्सा) आदि क्षेत्रों में विशेष सफल हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त गत पृष्ठों में पुरुष मकर जातक में उल्लिखित व्यवसायों में भी मकर जातिका द्वारा सफल रहने की सम्भावना होती है। अभिनय के क्षेत्र में कुण्डली नं. 97(रेखा), कम्प्यूटर के सम्बन्ध में कुण्डली नं. 100 तथा ज्योतिष के क्षेत्र में कुण्डली नं. 101 का अवलोकन कर सकते हैं।

मकर लग्न में ग्रहों की दशाऽन्तरदशाओं का संक्षिप्त फल

मकर लग्न के जातक/जातिका की जन्मपत्रिका में यदि शनि, शुक्र, बुध एवं चंद्र, गुरु ग्रह शुभस्थ हों तथा इनमें से किसी ग्रह की दशा एवं अन्तर्दशा चल रही हो, तो जातक/जातिका को अपनी दशा या अन्तर्दशा में कार्यों में सिद्धि व उन्नति, विद्या में सफलता, सर्विस में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में धन लाभ, स्त्री (या पति) का सुख, भूमि, जायदाद, मकान, वाहन तथा सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति अथवा गृह-परिवार में मंगल कार्य होते हैं।

यदि जन्म कुण्डली में चन्द्र, शुक्र, शनि, बुध, गुरु आदि ग्रह नीच राशिस्थ, शत्रु राशिगत अथवा किसी अशुभ या क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर छठे, आठवें, बाहरवें भावों में पड़े हों तो अड़चनों एवं विघ्नों के साथ विद्या प्राप्ति, आय के साधनों में विघ्न, पारिवारिक कलह, धन-हानि, भाई बंधुओं से वियोग अथवा मतान्तर आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

मंगल, चन्द्र, सूर्य व गुरु मकर लग्न कुण्डली में शुभस्थ होने पर भी अपनी दशाऽन्तर्दशा में शुभाशुभ अर्थात् मिश्रित प्रभाव करते हैं।

राहु-केतु-दोनों अपनी दशा में भाव राशि की स्थिति तथा उन पर अन्य ग्रहों के योग, दृष्टि आदि के अनुसार शुभाशुभ फल करते हैं।

मकर लग्न सम्बन्धी कुछ उपयोगी उपाय

शुभ रंग (Favourable Colours)- नीला, काला, श्वेत, हल्का नीला, क्रीम रंग शुभ एवं लाभदायक होंगे। पीला व लाल रंगों के प्रयोग से परहेज करें। हरा रंग मिश्रित प्रभावकारक होगा।

शुभ वार (Favourable Days)- शुक्रवार तथा शनिवार मकर जातकों के लिए विशेष शुभ रहते हैं। बुधवार, मंगलवार तथा गुरुवार विघ्न/बाधाओं के बाद कामयाबी प्रदान करेंगे। रविवार तथा सोमवार साधारण फल करेंगे।

शुभ नग (Lucky Stone)- कम से कम 5 रत्ति (ग्राम) का नीलम, पंचधातु या सोने की अंगूठी में जड़वा कर मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन धारण करें। यदि नग महंगा लगे तो, नाव की कील से अंगूठी या छल्ला बनवा कर शनि मन्त्र 21 बार पढ़ते हुए गंगा जल से शुद्ध करके शनिवार को ही धारण करना शुभ होगा।

शनि मंत्र- ओं प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः ॥

यदि 23000 की संख्या में पाठ करके विधिपूर्वक अभिमन्त्रित करके धारण करें तो और भी शीघ्र लाभ होगा।

कुण्डली में शनि ग्रह यदि अशुभ हो, तो शनिवार का व्रत रखना, विधिवत् निर्मित शनि का यन्त्र रखना, लोहे की कटोरी में तेल डालकर छाया-पात्र करना, औषधि स्नान तथा अन्ध विद्यालय या कुष्टाश्रम में असहाय लोगों की भोजन, धन, वस्त्र, फल अनाज आदि द्वारा सेवा करना शुभ एवं कल्याणकारी होगा। शनि के दानादि उपाय सायंकालीन करने प्रशस्त माने जाते हैं।

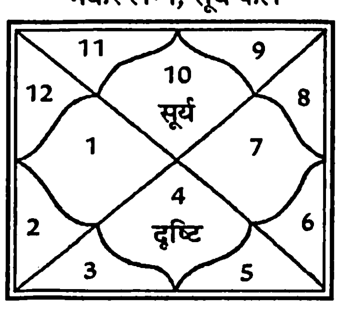
भाग्यशाली एवं अनुकूल वर्ष- 17, 26, 33, 35, 42, 44, 51, 53, 62 एवं 71

भाग्यशाली अंक- 2, 6, 7 एवं 8 अंक भाग्यवर्द्धक होते हैं तथा 1, 3 अंक अशुभ माने जाते हैं।

मकर लग्न में सूर्य का द्वादश भावगत फल

(आगे लिखे गए द्वादश भावों में फलादेश सम्बन्धी और अधिक सूक्ष्मता हेतु सूर्यादि ग्रह के साथ अन्य ग्रह के योग, दृष्टि आदि का विवेचन भी कर लेना चाहिए।

मकर लग्ने, सूर्य फल



प्रथम भाव-में मकर राशि पर सूर्य होने से जातक पराक्रमी, साहसी, स्वाभिमानी, उच्चाभिलाषी, शीघ्र उत्तेजित अथवा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला, अपने विरुद्ध बात को सहन न करने वाला, बाल्य काल में शरीर कष्ट, आत्मीय बन्धुओं आदि से असन्तुष्ट तथा इनसे कठिनाई रहती है। व्यवसाय में परेशानियां परंतु जातक सदैव उन्नतिशील रहता है। यदि राहु-शनि आदि क्रूर ग्रह साथ हों तो सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी, जातक की आंखों में कष्ट एवं ब्लड प्रैशरादि रक्त विकार का भय रहे। गुरु युक्त या दृष्ट हो तो जातक का सावधान चित्त वाला, विनोदप्रिय, विद्वान, ज्योतिष, धर्मादि गूढ़ विद्याओं का जानकार तथा दूर देश-विदेश को यात्रा करने के अवसर, यदि बुध व शुक्र युक्त हो, तो जातक कम्प्यूटर, डिज़ाईनिंग, वस्त्र उद्योग, फैंसी गुड्स, एवं कलात्मक क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 100

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का संचय करने में परेशानी रहती है। किसी को दिया गया धन वापिस नहीं मिलेगा परंतु जातक भाग्यशाली, ओजस्वी वक्ता, यात्राओं एवं विदेशी सम्बन्धों द्वारा धन अर्जन करने वाला होगा। जातक का अपने कुटुम्ब के लोगों से वैमनस्य और कलह रहता है। परंतु यदि धनेश शनि उच्चराशिगत या योगकारक स्थिति में हो तो अशुभ फल में कमी तथा धन प्राप्ति के साधन बनते रहते हैं। जातक का जीवन-यापन रईसी

ढंग से होता है तथा कई बार अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च कर डालता है। जातक को नेत्र एवं दन्त रोगों से भय रहेगा।

तृतीय भाव-में मित्र ग्रह की राशि मीन पर स्थित सूर्य होने से जातक परिश्रमी पुरुषार्थी, बुद्धिमान, लेखन, प्रकाशन, अध्यापन, प्रकाशक, प्रोफेसर और वकालत आदि व्यवसायों में सफल होता है। परंतु भाई-बहिन के सुख में कमी अथवा परेशानी बनी रहती है। जिसके तृतीय में सूर्य हो, तो दो भाईयों के भाग्योदय में विघ्न उपस्थित होते हैं। अतएव उन्हें अलग-अलग अथवा स्वतंत्र कार्य कर लेना चाहिए। जातक में आत्मविश्वास की कमी होती है। परंतु यदि तृतीयेश गुरु उच्चराशिगत् या केन्द्र में हो तो अशुभ फलों में कमी तथा जातक को कुटुम्ब व सगे-सम्बंधियों का सुख मिलता है।

चतुर्थ भाव-में मित्र ग्रह की उच्च राशि (मेष) में सूर्य होने से जातक को कुछ परेशानियों व विघ्न-बाधाओं के बाद माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। परंतु माता का स्वास्थ्य ख़राब रहता है। पैतृक पक्ष व पिता से भी कुछ रुकावटों के बाद सुख एवं सहायता प्राप्त होती है। चतुर्थेश मंगल शुभस्थ हो तो जातक अभिमानी, धनवान तथा उच्च अधिकारी होता है। परंतु जातक का चित्त शांत नहीं रहता, हृदय रोग से पीड़ित होने की सम्भावना रहती है।

पंचम भाव-में वृष राशि का सूर्य होने से जातक की तेज़ बुद्धि किन्तु अस्थिर एवं शीघ्र क्रुद्ध होने वाला, चिन्तातुर बना रहता है। जातक को सन्तान एवं शिक्षा के क्षेत्र में परेशानियां एवं बाधाएं रहती हैं। सन्तान सुख अल्प अथवा यदि अकेला सूर्य हो तो कन्या सन्तति अधिक, प्रत्येक कार्य में कठिन परिश्रम तथा विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़े। जातक एकान्तप्रेमी, धनी मित्रों से युक्त तथा उदारतापूर्वक व्यय करने वाला होगा। प्रथम संतान की ओर से दुखी रहेगा। दूसरों के सुख-दुख की परवाह न करने वाला होता है।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि पर सूर्य होने से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने वाला, जातक भिन्न प्रकार के भोजन-पकवानों का शौकीन, दुबला-पतला शरीर, सुन्दर, विलासी, वाहनादि सुखों से युक्त होगा। परंतु यदि शनि राहु आदि ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। वायु विकार सम्बन्धी रोग अधिक होते हैं। लीवर, उदर, अमाशय सम्बन्धी रोग रहते हैं। आकस्मिक लाभ व हानि होती है। कर्त्तव्यपरायण सुशील पत्नी वाला तथा सुख साधनों से सम्पन्न होता है। उद्योगी, विख्यात एवं चतुर होता है, देखें उद्रा. कुं. 101। विदेशी सम्बंधों व सरकार से लाभान्वित होता है। सूर्य, बुध का योग हो तो जातक आत्मविश्वास से युक्त, साहसी, स्पोर्टस के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 98।

सप्तम भाव-में कर्क राशि में सूर्य के प्रभावस्वरूप जातक के विवाह में विलम्ब (यदि किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो,) विवाह के पश्चात् भाग्योदय, स्त्री अभिमानी तथा जातक स्त्री के अधीन रहने वाला, स्त्री को मासिक धर्म में कष्ट, दाम्पत्य सुख में कमी, सांझेदारी के कार्यों में भारी हानि होती है, जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, हृदय रोग, ब्लड प्रैशर, दंत रोग आदि रोगों से भय रहे। लड़ाई-झगड़े में दूसरे पक्ष से समझौता होता है। सरकारी अधिकारियों से परेशानी एवं नुकसान होने की सम्भावना।

अष्टम भाव-में स्वगृही सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक दीर्घायु होता है। जातक निडर, बहादुर, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व परंतु कुछ हठी प्रकृति, धन संचय में एवं पारिवारिक सुख में विघ्न-बाधाएं तथा कठिनाईयां रहती है। मंगल राहु अथवा शनि से युक्त या दृष्ट हो तो चोट या दुर्घटना आदि से शरीर कष्ट, पैतृक सुख एवं भाईयों के सुख में कमी अथवा हानि होती है। नेत्र रोग व कष्ट भी रहे। जातक/जातिका विद्याओं का ज्ञाता, समाज में सम्मानित एवं उच्च प्रतिष्ठित एवं उच्च शिक्षित होता है।

नवम भाव-में कन्या राशि का सूर्य होने से जातक दीर्घायु, बुद्धिमान, देवताओं और ब्राह्मणों का आदर करने

वाला, आयात-निर्यात, प्रकाशन, डॉक्टर, लेखक, एकाउंटस में विशेष सफलता प्राप्त करने वाला होता है। भाग्योन्नति के क्षेत्र में बाधाएं तथा संघर्ष के बाद ही सफलता प्राप्त होती है। जातक रईसी ढंग से जीवन व्यतीत करता है, भाई-बहनों का सुख सामान्य अथवा कम होता है। नवम भाव का सूर्य कुछ-न-कुछ ख्याति देता है। बुध का योग साथ में हो तो जातक उच्च शिक्षित होता है। देखें उदा. कुं. नं. 97। यदि सूर्य गुरु द्वारा दृष्ट हो, तो जातक चिकित्सा के क्षेत्र में सफल होता है।

दशम भाव-में तुला राशि (नीच) पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक विनम्र स्वभाव, उद्यमी, परिश्रमी, अधिक मित्रों वाला, माता या पिता के सुख में कमी, स्वास्थ्य भी ठीक न रहे, कार्य-व्यवसाय की उन्नति में भी विघ्न बाधाएं उपस्थित होती रहती हैं। भूमि, जायदाद, वाहन, माता, भवनादि के सुख प्राप्त होते हैं। जातक को कानून एवं राजनीति में दिलचस्पी, संगीत का शौकीन तथा पिता को शरीर कष्ट एवं परेशानी कारक। ऐसा जातक अत्यंत संघर्ष के बाद धनार्जन करता है। चंद्र शुभस्थ हो तो विवाह के बाद विशेष लाभ एवं उन्नति प्राप्त करता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 102।

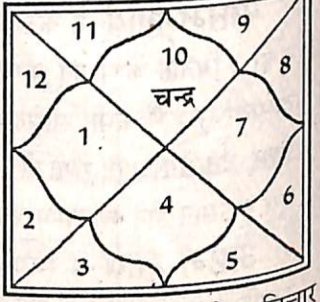
एकादश भाव-में बृश्चिक राशि पर सूर्य होने से जातक उच्चाकांक्षी, साहसी, दीर्घायु किन्तु कुछ हठी प्रकृति, मकान, वाहनादि, सुख-सुविधाओं से युक्त, भाईयों के लिए शुभ, सुखी, समृद्ध एवं धन संग्रहकर्ता होता है। उच्च शिक्षा एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानी होती है। यदि सूर्य पापग्रह युक्त या दृष्ट हो तो सन्तान सुख में कमी, पिता को कष्ट अथवा धन हानि, ताया, चाचा या बुआ को धन सम्बन्धी परेशानी, बड़े भाई के लिए अशुभ, माता के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होता है। स्त्री की कुण्डली में गर्भपात होने की सम्भावना होती है।

द्वादश भाव-में धनु राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक स्वाभिमानी, अन्वेषणशील, दूरंदेशी, बुद्धिमान, अत्यंत परिश्रमी परंतु खर्च अधिक करने के कारण परेशानी उठाने वाला होता है। विदेशादि में भ्रमणशील तथा व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष व दौड़धूप के बाद धनार्जन करने वाला, धर्मादि गूढ़ विद्याओं में रूचि हो। ज्योतिष, व्यवसायी (उद्योगी), डॉक्टर, प्राध्यापक तथा इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफल होता है। जातक को संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। पिता से वैमनस्य रहता है अथवा पैतृक सम्पत्ति से विशेष लाभ कम होता है। ऐसे जातक को नेत्र रोग, पेट विकार की सम्भावना होती है। जीवन के उत्तरार्ध में अध्यात्म की ओर विशेष प्रवृत्ति होती है।

मकर लग्न-द्वादश भावों में चन्द्र का फल

(ध्यान रहे, चन्द्रमा शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक पूर्ण कहलाता है जबकि कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक क्षीण होता है। क्षीण चन्द्रमा अशुभफली तथा पूर्ण चन्द्रमा शुभफलप्रद माना जाता है। केवल चन्द्र प्रभाव का विचार करते समय, उस पर अन्य ग्रहों के योग, दृष्टि आदि के फल का भी विवेचन कर लेना चाहिए।)

मकर लग्ने, चन्द्र फल



प्रथम भाव-में मकर राशि के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक प्रसन्नचित, सुन्दर, पतले शरीर वाला, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, सुन्दर नेत्र, एक ही बार कही बात को याद रखने वाला, भाग्यशाली, तीव्र बुद्धिमान (सौम्य ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो) जातक मधुरभाषी, सोच-विचार अधिक करता है। यदि क्रूर ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो जिद्दी, हठी एवं दुराग्रही होता है। आलसी, सर्दी को न सहन करने वाला एवं दन्त रोगी होता है। यदि लग्न में चन्द्र, गुरु का योग हो तो जातक धन-सम्पदा, वाहन, सुन्दर, सुशील स्त्री (अथवा पति) आदि सुखों से युक्त, संगीत, गायन आदि का शौक होता है। जातक उच्चशिक्षित (यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो), विद्वान तथा व्यवसाय में अत्यन्त परिश्रम के द्वारा धनोपर्जन करता है। स्त्री के वशीभूत, माता एवं स्त्री के लिए भाग्यकारक होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 101।

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर चन्द्र होने से जातक सुन्दर, मधुरभाषी, उदार हृदय, बहु मित्रों से युक्त,पारिवारिक सुख से युक्त, अत्यंत परिश्रम से धनार्जन करने वाला। पत्नी (या पति) द्वारा कुछ परेशानी उत्पन्न होती है, यदि चन्द्रमा अल्पबली या किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक को स्त्री/पति का सुख कम मिलता है। जातक/जातिका दीर्घायु तथा रहन-सहन का ढंग उच्च स्तर का होता है। जातक निजी उद्यम द्वारा समुचित धनार्जन करता है। ऐसे जातक/जातिका को संगीत, नृत्य, अभिनय, कला आदि में कुशलता तथा अकस्मात् धन प्राप्ति के भी योग होते हैं।

तृतीय भाव-में मीन राशि पर चन्द्रमा होने से जातक/जातिका धार्मिक भावना से युक्त, परिश्रमी एवं भाई-बहनों का अच्छा सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है तथा पराक्रमी होता है। बहनें अधिक होती हैं। यदि शुभ-ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो पारिवारिक एवं दाम्पत्य सुख यथेष्ठ होता है। विवाह के उपरांत विशेष भाग्योदय होता है तथा स्त्री का भी विशेष सहयोग रहता है। व्यवसाय में अस्थिरता एवं बार-बार परिवर्तन भी होते हैं। अनिश्चयी स्वभाव होता है। व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप, यात्राएं एवं व्यय अधिक होता है।

चतुर्थ भाव-में मेष राशि के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक भूमि-जायदाद, सवारी तथा पारिवारिक सुख से युक्त, सुन्दर व सुशील पत्नी से युक्त, विवाह के पश्चात् विशेष धन लाभ तथा वाहनादि का सुख प्राप्त हो, जातक को दवाइयों के व्यापार, सुगन्धित वस्तुओं, वस्त्रों, गाड़ियों के क्रय-विक्रय, तरल पदार्थों के क्रय-विक्रय से विशेष लाभ होगा। यदि चन्द्रमा, केतु, राहु आदि अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वाहन से दुर्घटना का भय तथा गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में चिन्तित रहता है। अथवा वैवाहिक सुख में कमी होती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 103;भूमि-जायदाद, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। जन्म स्थान से अन्य स्थान में लाभ एवं उन्नति होती है।

पंचम भाव-में वृष राशि का चन्द्रमा होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, कल्पनाशील, विद्वान तथा उच्च विद्या प्राप्त होती है। जातक हंसमुख, मिलनसार, न्यायप्रिय तथा कठिन परिश्रम के द्वारा धन प्राप्ति करने वाला, कन्या सन्तान अधिक, माता का भक्त, हंसमुख, सुन्दर, सुशील स्त्री, भूमि-वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। विवाह के बाद विशेष भाग्योदय, व्यापार में उद्यम करता हुआ लाभ प्राप्त करने वाला, लाटरी, सट्टे, शेयरों आदि से भी कभी अकस्मात लाभ प्राप्त करने वाला होता है। देखें उदा. कुं. नं. 99। चन्द्रमा यदि राहु आदि क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक अस्थिर मन वाला, उच्च विद्या में विघ्न व्यवसाय में हानि; सन्तान विलम्ब से अथवा सन्तान के सम्बन्ध में चिन्तित होता है। शनि से दृष्ट हो, तो स्त्री रूग्ण रहती है। देखें उदा. कुं. नं. 102।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि के चन्द्रमा होने से जातक गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, स्त्री के सुख में कमी, शरीर कष्ट अथवा स्त्री से विरोध एवं मतान्तर हो, व्यवसाय में भी अत्यंत संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद धन लाभ, शत्रुओं को भी विनम्रता एवं युक्तियों से शांत करने वाला होता है। यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को विदेशी सम्बन्धों द्वारा लाभ होते हैं। परंतु आकस्मिक खर्च भी बहुत होते हैं। अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होने से जातक को मन्दाग्नि, उदर विकार, शीत, कफ आदि रोगों का भय होता है। स्त्री की कुण्डली में षष्ठ चन्द्र गुप्त रोग, शरीर कष्ट तथा वैवाहिक सुख में विलम्ब या असंतोष होता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 96

सप्तम भाव-में कर्क राशि पर चन्द्रमा स्वगृही स्थिति में होने से जातक भावुक, कल्पनाशील, संवेदनशील, परिवर्तनशील एवं कलात्मक परंतु चंचल बुद्धि, कामुक प्रकृति का होता है। संगीत, साहित्य की ओर भी विशेष रूचि होगी। जातक को सुन्दर एवं सुशील स्त्री का सुख, अच्छे परिवार की प्राप्ति होती है। जातक को आजीविका एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में विशेष संघर्ष एवं कठिनाईयों एवं विविध यात्राओं का सामना करना पड़ता है। मानसिक तनाव एवं स्वयं जातक का स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। यदि कुण्डली में शुक्र स्वोच्च या श्रेष्ठ स्थिति में हो तो जातक विवाह के उपरान्त विशेष धन लाभ व उन्नति करता है। पत्नी को सर्विस मिलने के अवसर होते हैं।

अष्टम भाव-में सिंह राशि पर चन्द्रमा होने से जातक को पारिवारिक सुख में कमी होती है। विवाह के पश्चात् विशेष परिवर्तन एवं उलझनों का सामना होता है। माता को शरीर कष्ट, पत्नी के साथ विचार वैमनस्य अथवा स्त्री के कारण परेशान, व्यवसाय में भी अत्यन्त परिश्रम एवं संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। यदि शनि भी अशुभ हो, तो जातक को धन सम्बन्धी परेशानियां विशेष होती हैं। जातक को वात, कफ, एवं नेत्र आदि रोगों का भय रहता है।

नवम भाव-में कन्या राशि पर चन्द्रमा होने से जातक विनम्र एवं धार्मिक विचारों वाला, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, वार्तालाप करने में निपुण, सामाजिक कार्यों में रूचि लेने वाला, विदेश में सफलता प्राप्त करने वाला, धन, सम्पत्ति एवं वाहन आदि सुखों से युक्त, तीर्थ स्थलों पर यात्रा करने को उत्सुक, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रूचि, स्त्री के प्रति भी विशेष आसक्ति, भाई-बहिनों का सुख यथेष्ट होता है। विवाह के उपरान्त विशेषकर 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योदय होता है। यदि नवम चन्द्र को गुरु या शनि का योग या दृष्टि हो तो जातक अध्यात्म आदि गूढ़ विषयों में विशेष रूचि रखता है।

दशम भाव-में तुला राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक जीवन में किसी एक स्त्री के द्वारा सहायता एवं सफलता प्राप्त करने वाला, महत्त्वाकांक्षी, साहसी, व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाईयों एवं परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त होती है। माता-पिता से लाभान्वित, विवाह के पश्चात् व्यवसाय एवं भाग्य में विशेष परिवर्तन तथा आवास, धन-सम्पदा एवं वाहन आदि के सुख प्राप्त होते हैं। स्त्री सुन्दर, सुशील एवं पतिव्रता होती है। यदि यहां चन्द्र मंगल, शनि, राहु आदि ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वैवाहिक सुख में कमी अथवा विलम्ब होता है।

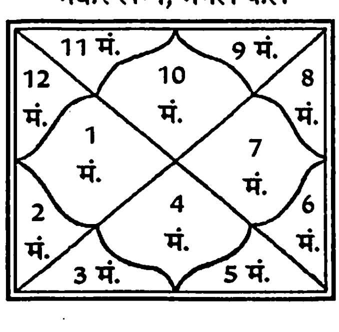
एकादश भाव-में बृश्चिक (नीच) राशि पर चन्द्रमा होने से जातक/जातिका की कल्पना शक्ति प्रबल होती है। उच्च विद्या प्राप्ति तथा जातक को संगीत, स्त्री सुख में कमी रहती है। गृहस्थ एवं दाम्पत्य जीवन में तनाव एवं परेशानियां होती हैं। यदि यहां चन्द्र पर गुरु या शुक्र का योग या दृष्टि का सम्बन्ध हो तो वैवाहिक जीवन सुखद होता है तथा स्त्री/पति सुन्दर एवं सुशील होती है। जातक भूमि, धन, सवारी आदि सम्पदा एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है। कन्या सन्तति अधिक होती है। चन्द्र के साथ कोई राहु केतु आदि अशुभ ग्रह हो तो उपरोक्त सुखों में कमी होती है।

द्वादश भाव-में धनु राशि पर चन्द्रमा होने से जातक कल्पनाशील, मृदुभाषी, धार्मिक प्रवृत्ति, किन्तु चिन्तित रहने वाला, विघ्नों के पश्चात् उच्च शिक्षा प्राप्ति, ज्योतिष, धर्म, मन्त्रादि शास्त्रों में रूचि रखने वाला, व्यवसाय के सम्बन्ध में अनेक कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करने वाला, गुप्त शत्रुओं का भय, कामुक प्रवृत्ति, स्त्री सुख में कमी एवं स्त्री सम्बन्ध परेशानियां, धन का व्यय अधिक होता है। यदि चन्द्र पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो, जातक को मानसिक अशान्ति, कान, नेत्र आदि रोगों का भय होता है।

मकर लग्न के द्वादश भावों में मंगल का फल

विशेष—मकर लग्न में मंगल सुखेश एवं लाभेश होने से विशेष महत्त्वपूर्ण होता है। द्वादश भावों में मंगल के फल का विचार करते समय उस पर अन्य ग्रहों के योग एवं दृष्टि आदि का भी विचार कर लेना चाहिए।

मकर लग्ने, मंगल फल



प्रथम भाव-में उच्च राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी, दीर्घायु, परिश्रमी, उत्साहशील तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। ऐसा जातक उच्चाभिलाषी एवं स्वाभिमानी, कुछ तेज प्रकृति का, अपने पुरुषार्थ द्वारा ही जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, माता से विशेष प्रेम तथा भूमि, मकान एवं

वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। मंगल सप्तम भाव को नीच दृष्टि से देखने से व्यवसाय के क्षेत्र में जातक को कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है। स्त्री को कष्ट अथवा विवाह सुख में कमी होती है। प्रथम भाव में मंगल होने से जातक मंगलीक दोष युक्त भी होता है, जो दाम्पत्य सुख में शुभ नहीं माना जाता।

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर मंगल होने से जातक दीर्घायु, धर्म के प्रति आस्थावान्, विघ्न/बाधाओं के पश्चात् उच्च विद्या प्राप्त होती है। परिवारिक सुख प्राप्ति में भी अड़चनें रहें। भूमि, जायदाद, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो। परन्तु व्यवसाय में धनार्जन एवं भाग्योन्नति में सफलता कठिनाइयों एवं अड़चनों के पश्चात् होती है।

तृतीय भाव-में मीन राशि पर मंगल होने से जातक धार्मिक विचारों वाला, परिश्रमी, तीव्र-बुद्धिमान, उद्यमी, निजी उद्यम द्वारा धन-सम्पदा अर्जन करने वाला, स्वावलम्बी, भाई बहिनों के सुख से युक्त, शत्रुओं को नीच दिखाने में कुशल होता है। जातक ज्योतिष, धर्म, अध्यात्म आदि में रूचि रखने वाला, निजी भूमि, जायदाद, मकान आदि के सुख अड़चनों के बाद प्राप्त होते हैं। देखें उदा. कुण्डली नं. 101

चतुर्थ भाव-में स्वराशि मेष में मंगल होने से जातक भूमि, धन-सम्पदा एवं सवारी आदि सुख-साधनों से सम्पन्न तथा जातक उनसे लाभान्वित होता है। चतुर्थ भाव में मंगल होने से कुण्डली में मंगलीक दोष होता है तथा मंगल की चतुर्थ एवं सप्तम दृष्टि के कारण जातक के व्यवसाय में अनिश्चितता तथा अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना रहता है। यदि चन्द्र भी अशुभ हो तो जातक को वैवाहिक सुख में कमी अथवा विलम्ब होता है।

पंचम भाव-में वृष राशि पर मंगल होने से जातक दीर्घायु हो, उसे धर्म, ज्योतिष, इतिहास, वास्तु, मंत्र, यंत्रादि गुप्त विद्याओं में रूचि रहे, उच्च विद्या में विघ्न/बाधाओं के बाद सफलता मिले। व्यवसाय के सम्बन्ध में भी संघर्ष के पश्चात् आय के साधन बनें। विदेश आदि के सम्बन्धों द्वारा लाभान्वित हो। यदि मंगल शुक्र साथ में हों, तो जातक को विदेश में विजातीय स्त्री के साथ प्रेम सम्बन्ध होते हैं। यदि यहां मंगल पर गुरु की दृष्टि पड़ती हो, तो जातक स्पोर्टस के क्षेत्र में कुशल तथा विशेष ख्याति प्राप्त करता है। पुत्र/सन्तान सुख यथेष्ठ रहता है। देखें. उदा. कुं. 98

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि में मंगल होने से जातक सुगठित एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी, परिश्रमी, स्वाभिमानी, धैर्यवान, परोपकारी प्रवृत्ति, धार्मिक कार्यों पर खर्च करने में तत्पर, व्यवसाय में विघ्न बाधाओं एवं कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने में सफल, शत्रुओं पर प्रभाव डालने में सफल होता है।

सप्तम भाव-में कर्क (नीच) राशि में मंगल होने से जातक स्वाभिमानी, परिश्रमी, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त कठिन परिश्रम करने पर विशेष अधिक धन लाभ नहीं हो पाता। यहां सप्तम भाव में मंगल से मंगलीक दोष होने से जातक को वैवाहिक सुख में कमी अथवा विलम्ब होने के योग बनते हैं। स्त्री की कुं. में सप्तम मंगल दाम्पत्य सुख में विघ्नकारक होता है। कुण्डली में सप्तमेश चन्द्र उच्च राशिस्थ आदि अवस्था में हो, तो कुछ प्रारम्भिक अड़चनों के बाद दाम्पत्य सुख में वृद्धि होती है। पंचम में चन्द्र आदि स्त्री ग्रह होने से जातक/जातिका को पुत्र की अपेक्षा कन्या सन्तति अधिक होती है। देखें उदा. कुं. 99

अष्टम भाव-में मित्र राशि सिंह पर मंगल होने से जातक उद्यमी, पराक्रमी, परिश्रमी, अपने कार्य-व्यवसाय में निपुण, दीर्घायु एवं भाई-बहिनों के सुख से युक्त होता है। ऐसा जातक कठिन परिस्थितियों के बावजूद निज पुरुषार्थ द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त कर लेता है। अष्टम भाव में मंगल-मंगलीक दोषकारक भी होने से स्त्री या पति एवं दाम्पत्य सुख में कमी होने के संकेत हैं। यदि सप्तमेश चन्द्र भी अशुभस्थ हो, तो पत्नी की आयु कम होती है। देखें उदा. कुं. नं. 96

यदि मंगल के साथ केतु, शनि आदि ग्रह हों, तो रक्त विकार आदि गुप्त रोगों की आशंका होती है। ऐसे जातक के निकट मित्र भी उससे द्वेषपूर्ण व्यवहार रखते हैं।

नवम भाव-में कन्या राशि पर मंगल होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, व्यवहार-कुशल, आस्तिक एवं धर्म-परायण, स्वाभिमानी, न्यायप्रिय एवं स्वावलम्बी होता है। अर्थात् निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, ऐसा जातक माता-पिता का भक्त, भूमि, मकान, वाहन आदि साधनों से युक्त तथा उनसे लाभ प्राप्त करने वाला होता है। 37 वर्ष की आयु तक कार्य व्यवसाय में अस्थिरता एवं संघर्ष अधिक रहते हैं। यदि मंगल पर गुरु की शुभ दृष्टि हो, तो जातक परोपकारी हो तथा धार्मिक कार्यों पर खर्च अधिक करता है। देखें उदाहरण कुं. 102

दशम भाव-में तुला राशिगत मंगल होने से जातक बुद्धिमान, विद्वान, तर्क-वितर्क करने में कुशल, परिश्रमी, उच्चाकांक्षी, स्वाभिमानी होता है। परन्तु उच्च विद्या की प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं होती हैं। जातक भूमि-जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। यदि मंगल के साथ सूर्य, राहु आदि क्रूर ग्रह हों तो जातक को कार्य व्यवसाय के सम्बन्ध में 39 वर्ष की आयु तक अस्थिरता एवं अनिश्चितता का सामना रहता है। परिवारिक जीवन में भी संघर्ष तनाव एवं असंतोष बना रहता है। परन्तु ऐसा जातक परोपकारी स्वभाव, ज्योतिष, योगादि का शौक तथा ब्राह्मणों एवं वृद्धों का भक्त एवं श्रद्धालु होता है। देखें उदा. कुं. नं. 103

एकादश भाव-में स्वगृही बृश्चिक राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक तेज बुद्धि, परन्तु उच्च विद्या प्राप्ति एवं सन्तान सुख विघ्नों के पश्चात् मिलता है। ऐसा जातक शत्रु पक्ष पर विशेष प्रभावी होता है। जातक उच्चाभिलाषी, बुद्धिमान, संगीत, कला एवं ज्योतिष साहित्य आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला, परिवारिक सुख भी साधारण ही प्राप्त होता है। जातक निज पराक्रम एवं पुरुषार्थ से भूमि/जायदाद, वाहन एवं धन आदि का अर्जन करने वाला होता है।

द्वादश भाव-में धनु राशि पर मंगल होने से जातक परिश्रमी, शीघ्र क्रोधित हो जाने का स्वभाव, शत्रुओं पर प्रभावी तथा आजीविका के लिए कठिन परिश्रम करने वाला होता है। धनार्जन के सम्बन्ध में अनेक लघु एवं दीर्घ यात्राएं करने वाला होता है। धन का अपव्यय भी अधिक रहता है। यहां से मंगल की सप्तम भाव पर नीच दृष्टि होने से स्त्री सुख में कमी अथवा वैवाहिक सुख में अड़चनें होती है। द्वादश भाव में मंगल की स्थिति मंगलीक दोषकारक भी मानी जाती है।

मकर लग्न के द्वादश भावों में बुध का फल

विशेष- मकर लग्न में बुध षष्ठेश रोग एवं विघ्नकारक होने के साथ-साथ भाग्येश भी है, भाग्य में विद्या, धन, लाभ व उन्नतिकारक भी होता है। शुक्र के साथ सम्बन्ध होने से विशेष योगकारक हो जाता है। यदि अशुभ हो तो भाग्योन्नति में बाधाएं तथा शरीर कष्ट, त्वचा आदि रोग होते हैं।

मकर लग्ने, बुध फल



प्रथम भाव-में मकर राशि पर बुध के प्रभाव से जातक तीव्र-बुद्धिमान, अच्छी स्मरणशक्ति, तर्क-वितर्क करने वाला, व्यवहार कुशल एवं मिलनसार प्रकृति का होता है। भाग्यशाली होते हुए भी व्यवसाय में उतार-चढ़ाव एवं अत्यन्त कठिनाइयों का सामना रहे। स्त्री के सुख में भी विघ्नों के पश्चात् सफलता मिले अथवा कभी पत्नी के साथ मतान्तर के कारण कलह भी हो। कुण्डली में चन्द्र एवं शुक्र की स्थिति अच्छी हो तो व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अच्छे अवसर मिलते हैं तथा स्त्री एवं दाम्पत्य सुख भी अच्छा मिलता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 96, 100

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर बुध होने से जातक उद्यमी, गुणवान, विद्वान, प्रतिष्ठित, प्रियभाषी, दीर्घायु, धार्मिक विचारों से युक्त, अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य धनार्जन करने वाला, जातक भाग्यशाली होता है। यदि बुध-शुक्र का योग हो तो जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, लेखन, प्रकाशन, मुद्रण, वकालत, स्टेशनरी एवं बौद्धिक कार्यों द्वारा धनार्जन करे

वाला होता है। परिवारिक सुख यथेष्ट होता है। ऐसा जातक मधुरभाषी, बोलने में चतुर, खाने-पीने का शौकीन, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है।

तृतीय भाव-में मीन (नीच) राशि पर बुध होने से जातक परिश्रमी, किन्तु अस्थिर मन एवं परिवर्तनशील, प्रकृति वाला, धार्मिक कार्यों एवं ज्योतिष, योग, मंत्र आदि विषयों में रूचि रखने वाला, निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ कटु सम्बन्ध अथवा उनके सुख में कमी रहे, विरोधियों या शत्रुओं द्वारा भाग्योन्नति में रुकावटें एवं परेशानियां पैदा करने की कुचेष्टाएं होती हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक दौड़-धूप करने पर भी अधिक धन लाभ नहीं हो पाता।

चतुर्थ भाव-में मेष राशि पर बुध होने से जातक को घरेलू सुख में कुछ कठिनाइयां आती रहती हैं परन्तु कठिनाइयों के बाद मकान, वाहन आदि के सुख प्राप्त होते हैं। जातक विद्वान, अच्छा वक्ता, यशस्वी, भाग्यशाली, धार्मिक विचारों से युक्त तथा शत्रुओं (विरोधियों) पर विजयी होता है। संघर्ष के बाद व्यवसाय में सफल होता है। सुख-सुविधाओं के बावजूद परिवार में कुछ अशान्ति रहती है।

पंचम भाव-में वृष राशि पर बुध होने से जातक कुशल बुद्धि, संघर्ष के बाद उच्च शिक्षा में सफलता, ऐसा जातक बुद्धिमान, धर्म में आस्था रखने वाला, ज्योतिष, योग, मंत्र, लाटरी आदि में रूचि रखने वाला प्रथम कन्या सन्तति के बाद विलम्ब से पुत्र सुख के योग होते हैं। धनोपार्जन मे चतुर बुद्धि होता है। जातक अपने परिश्रम एवं बौद्धिक योग्यता से धनार्जन करता है तथा व्यवहार में कुशल बुद्धि होता है।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि पर स्वगृही बुध होने से जातक वार्तालाप में कुशल, तर्क-वितर्क करने वाला तथा अपने कर्त्तव्य के प्रति गम्भीर, युक्ति पूर्वक व्यवहार करने वाला, गुणवान, संगीत, कला, साहित्य आदि में रूचि, विद्वान, ज्योतिष, मन्त्र, योग, तंत्र आदि विद्याओं में रूचि तथा विघ्नों के पश्चात् जातक के भाग्य में उन्नति होती है। यदि बुध अस्त, वक्री या क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक के स्वास्थ्य में कमी, स्नायु-दुर्बलता, गैस्ट्रिक, नाभिदोष होता है। ऐसा जातक शारीरिक श्रम से बचने वाला, आलसी, मामा या बड़े भाई के सुख में कमी होती है। देखें कुं. नं. 101

सप्तम भाव-में कर्क राशि पर बुध के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, सूक्ष्मदर्शी, कल्पनाशील, परोपकारी, विवाह के पश्चात् भाग्य में लाभ एवं उन्नति पाने वाला होता है। ऐसा जातक गणित, ज्योतिष एवं क्रय-विक्रय करने में कुशल होता है परन्तु कार्य क्षेत्र में शत्रुओं द्वारा बाधाएं उत्पन्न करने की चेष्टा रहेगी। फिर भी जातक अपने उद्यम से निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। यदि बुध अस्त, वक्री या पाप ग्रस्त हो तो जातक को स्त्री सुख में कमी, व्यवसाय में अड़चनें तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है।

अष्टम भाव-में सिंह राशि पर बुध होने से जातक को पारिवारिक सुख प्राप्ति में अड़चनें रहती हैं। विरोधी एवं शत्रु भी हानि पहुंचाने की चेष्टा करेंगे। जातक धर्म के प्रति भी विशेष सक्रिय नहीं हो पाता। व्यवसाय में भी अत्यधिक परिश्रम एवं कठिनाइयों के बाद निर्वाह योग्य आय होती है। जीवन में भाग्योन्नति के सम्बन्ध में उतार-चढ़ाव होते रहते हैं।

नवम भाव-में स्वगृही कन्या राशि पर बुध होने से जातक धार्मिक विचारों वाला, बुद्धिमान, गुणवान, परोपकारी स्वभाव, भाग्यशाली, संगीत, हस्त-कला, धार्मिक, ज्योतिष, योग, मन्त्र, शास्त्र आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला होता है। ऐसा जातक व्यवहार कुशल, देश-विदेश की लम्बी यात्राएं करने वाला होता है। भाई-बहिनों का सुख कम रहता है। जातक व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के बावजूद भूमि-जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

दशम भाव-में तुला राशि पर बुध होने से जातक कुशाग्र बुद्धिवाला, धैर्यवान, धार्मिक तथा जातक का जन्म प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न परिवार में होता है। ऐसा जातक सात्विक आचरण वाला, भाग्यशाली, आवास, भूमि, धन, वाहन आदि सुखों से युक्त तथा अपने ही पुरुषार्थ से व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। बुध यदि मार्गी, उदित हो तो जातक पैतृक पक्ष से भी लाभान्वित होता है। यदि बुध व शुक्र अस्त या वक्री अवस्था में हो तो व्यवसाय में विघ्न/

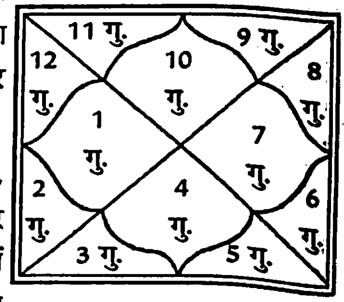
बाधाएं रहती हैं तथा लाभ भी अपेक्षाकृत कम होता है तथा पारिवारिक सुखों में भी कमी होती है।

एकादश भाव-में बृश्चिक राशि पर बुध होने से जातक स्वाभिमानी, कर्मठ, उदारहृदय, व्यवहार कुशल, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला, सवारी, धन-सम्पदा आदि सुखों से सम्पन्न, पुत्र सन्तान के साथ कन्या सन्तति का योग भी रहे। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में सक्षम होता है। चिकित्सा तथा संगीत, हस्तशिल्प, गायन एवं कलात्मक विषयों की ओर विशेष रूचि रखेगा। यदि यहां बुध पर चंद्र-शनि की दृष्टि भी हो तो जातक कैमीकल, लोहा, कोयला, तैलादि के क्रय-विक्रय से विशेष धनार्जन करता है तथा विवाह के उपरान्त विशेष भाग्योदय होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 102-

द्वादश भाव में-धनु राशि पर बुध के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला, भ्रमणप्रिय, गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने वाला, परन्तु आकस्मिक खर्च भी बहुत बढ़ चढ़ कर होते हैं। जिससे कई बार आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विशेषकर बुध की दशाऽन्तरदशा में भाग्य के क्षेत्र मे उतार-चढ़ाव रहते हैं। यदि बुध अस्तंगत हो या केतु, गुरु, चन्द्रादि का दृष्टि आदि से सम्बन्ध हो, तो जातक को स्त्री से दुख एवं धन हानि, गुप्त चिन्ताएं, रोग आदि होते हैं।

मकर लग्न के द्वादश भावों में गुरु का फल

मकर लग्ने, गुरु फल



विशेष– मकर लग्न में गुरु तीसरे एवं बारहवें भाव का स्वामी होने से जिस भाव में बैठेगा, उस भाव के फल को तथा कारकत्व के फल को क्षीण करेगा। यदि स्वराशि या उच्च दृष्टि आदि स्थिति में हो तो शुभ फल भी प्रकट करेगा। इसके अतिरिक्त मकर कुण्डली में यह मंगल या शनि के सहचर्य से शुभ फल प्रकट करने लगता है।

प्रथम भाव- में मकर राशि में गुरु के प्रभाव से जातक सात्विक प्रवृत्ति, दयालु, उदार हृदय, तर्क-वितर्क में कुशल, परोपकारी, स्वास्थ्य में कमी, कृश एवं दुर्बल शरीर का, संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद उच्चशिक्षा प्राप्ति होती है। धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि में रूचि रखने वाला, सन्तान सुख सामान्य होता है। यदि कुण्डली में मंगल पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ती हो तो जातक खेलों के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त करता है। देखें उदा. कुं. नं. 98। यदि चंद्र-गुरु का योग हो, तो जातक सौम्य प्रकृति, स्त्री सुन्दर, सुशील एवं भाग्यशाली होती है। विवाह के बाद विशेष लाभ व उन्नति होती है। देखें उदा कुं. नं. 101

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर गुरु होने से जातक दीर्घायु, उदारहृदय, धन-सम्पदा, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, स्पष्टवादी, जल्दी-जल्दी किन्तु ऊंचा बोलने वाला, परिवारिक सुख में कमी तथा अत्याधिक संघर्ष करने पर भी धन संचय कम होता है। भ्रातृ सुख में भी कमी होती है। यदि गुरु राहु-केतु अशुभ एवं क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अत्यन्त कठिनाइयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। अनावश्यक कार्यों पर खर्च भी अधिक होते हैं, जिसके कारण ऋण भी लेना पड़ सकता है।

तृतीय भाव-में स्वगृही राशि मीन पर गुरु होने से जातक पराक्रमी, बुद्धिमान, विनम्र, बौद्धिक कार्यों में सफल, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला, कार्य व्यवसाय में युक्तिपूर्ण स्रोतों द्वारा धनार्जन करने वाला, तथा बन्धुओं के उपकार हेतु धन का अर्जन करने वाला तथा ऐसा जातक जमीन-जायदाद, सवारी, धन आदि से सम्पन्न होते हुए भी व्यवहार में स्वार्थी एवं कुछ कृपण होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील एवं कार्य-व्यवसाय में सर्व प्रकार से सहायक होती है। गुरु पर मंगल, शुक्र, शनि आदि ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक को भूमि-जायदाद आदि के क्रय-विक्रय से लाभ भी होते हैं।

देखें उदा. कुण्डली नं. 96 एवं 102 ऐसे जातक जीवन में निज पराक्रम एवं पुरुषार्थ करते हैं तथा ज्योतिष, यौगिक एवं धार्मिक कार्यों में भी विशेष रूचि एवं सदव्यय करते हैं।

चतुर्थ भाव-में मेष राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, अड़चनों के बाद उच्च विद्या में सफल, व्यवसाय में भी विघ्न/बाधाओं, संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिले। आवास, सवारी आदि सुख/साधनों से युक्त, पिता भाई एवं आत्मीय बन्धुओं से सुख कम मिलते हैं। पैतृक सम्पदा का सुख भी अड़चनों के बाद प्राप्त होता है। यद्यपि बाह्य तौर पर ऐसा जातक प्रतिष्ठित भाग्यशाली, धार्मिक एवं सम्पन्न माना जाता है। ऐसा जातक आत्म प्रदर्शन हेतु शुभ कार्यों पर भी विशेष खर्च करता है। जातक के जीवन का उत्तरार्द्ध भाग अच्छा व्यतीत होता है।

पंचम भाव-में (शत्रु) वृष राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक तीक्ष्ण बुद्धि, दीर्घायु, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उदारहृदय, परोपकारी, निज पराक्रम एवं पुरुषार्थ से उन्नति करने वाला, शुक्र यदि अशुभस्थ या क्रूर दृष्ट हो तो, पत्नी (पति) कुछ क्रोधी मिलती है। सन्तान सुख में कमी अथवा पुत्र सन्तति के सम्बन्ध में चिन्तित, उच्चशिक्षा होने पर भी उसका विशेष लाभ नहीं मिलता तथा अत्याधिक परिश्रम एवं संघर्ष करने पर भी विशेष अधिक धन लाभ नहीं हो पाता, आकस्मिक खर्च भी अधिक होते हैं। कई बार अन्तिम समय में बनते-बनते काम बिगड़ जाने की सम्भावना होती है।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि पर गुरु होने से जातक शीघ्र आवेश में आ जाने वाला, शत्रुओं पर प्रभावी, कामुक प्रवृत्ति, तर्क-वितर्क एवं वाद-विवाद करने में कुशल, भाई-बहिनों से विशेष सुख नहीं होता, परिवारिक सुख में भी उलझनें व अशान्ति रहती है तथा अवांछित कार्यों पर धन का खर्च अधिक होता है। यदि गुरु के साथ केतु, शनि, चन्द्र आदि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार, कर्ण या नेत्र रोग, कामुकवृत्ति, मन्दाग्नि एवं लिवर सम्बन्धी रोगों का भय रहता है।

सप्तम भाव-में कर्क राशि पर गुरु (उच्चस्थ) होने से जातक बुद्धिमान, परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, भाई बन्धुओं के सुखों से युक्त, उच्चशिक्षित होता है। जातक को संगीत, नृत्य, अभिनय, कला, साहित्य, धर्म, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं मे रूचि रहती है। गुरु द्वारा यहां से लग्न भाव को नीच दृष्टि से देखने से बाल्यकाल में जातक का स्वास्थ्य कुछ नर्म रहता है। परन्तु जातक भूमि, मकान, वाहन तथा सुन्दर एवं सुशील पत्नी आदि सुखों से सम्पन्न होता है। व्यवसाय में सांझेदारी आदि के कार्यों से लाभान्वित रहता है। यदि गुरु पर मंगल की नीच दृष्टि पड़ती हो, चन्द्र भी अशुभस्थ हो तो जातक को वैवाहिक एवं गृहस्थ सुख में कमी रहती है। देखे उदा. कुं. नं. 97

अष्टम भाव-में सिंह राशि पर गुरु होने से जातक/जातिका दीर्घायु, स्पष्टवादी, स्वाभिमानी, परिश्रमी एवं उच्चाभिलाषी होता है। जातक अपने परिश्रम के बल पर उच्च विद्या एवं निर्वाह योग्य धनार्ज़न करने में सफल होता है। यदि शनि शुभस्थ हो तो आयु वृद्धि के साथ-साथ धीरे-धीरे धन संचय भी कर लेता है परन्तु ऐसा जातक निकट सम्बन्धियों से विरोध के कारण परेशानियों एवं चिन्ताओं से ग्रस्त भी रहता है। कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है। जातकगुप्त युक्तियों से धनार्जन करता है तथा मकान, वाहन आदि सुखों के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक होते हैं। देखें उदा. कुं. 99। यदि अशुभ ग्रह से सम्बन्ध हो तो जातक को लिवर एवं पाचन प्रक्रिया सम्बन्धी रोग जैसे डायबिटीज़, लीवर, प्रमेह,पथरी आदि रोगों का भय रहता है।

नवम भाव-में कन्या राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, बुद्धिमान एवं उद्यमी होता है। प्रारम्भिक अवस्था में जातक/जातिका के स्वास्थ्य में कमी रहती है, परन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ सुधार होता है। भाई/बहन का सुख यथेष्ठ होता है। संघर्ष के बावजूद व्यवसाय में गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहते हैं परन्तु खर्च भी बहुत होंगे, जातक सहोदरों के प्रति अपने दायित्वों का पालन करता है। जातक धार्मिक, उदारहृदय एवं परोपकारी

स्वभाव वाला तथा उसको धर्म, ज्योतिष, योग, मन्त्र आदि शास्त्रों के प्रति विशेष झुकाव रहता है। विद्या एवं सन्तान सुख सामान्य होता है। यदि गुरु पर शनि, केतु आदि क्रूर ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक को शरीर कष्ट, लिवर सम्बन्धी रोगों का भय होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 103

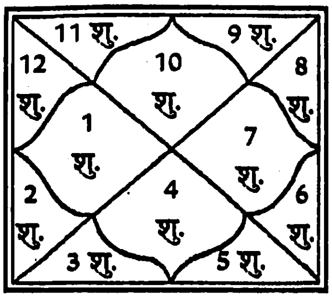
दशम भाव-में तुला राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक/जातिका बुद्धिमान, परिश्रमी, अपने कर्त्तव्य पालन में दृढ़, विद्वान, उच्चशिक्षित, व्यवहारकुशल, सुयोग्य, जिस कार्य को करना चाहे (या रूचि हो), उसे पूरी निष्ठा एवं लग्न के साथ करता है। भ्रातृ सुख अच्छा होता है। ऐसा जातक परोपकारी, दयावान एवं गुणी होता है। मिष्टान्न की अपेक्षा नमकीन भोजन अधिक प्रिय होता है। कार्य/व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। मंगल शुभ हो, तो भूमि/जायदाद का सुख अच्छा मिलता है। चन्द्र शुभस्थ हो तो विवाह के बाद विशेष भाग्योन्नति होती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 100

एकादश भाव-में बृश्चिक राशि का गुरु होने से जातक/जातिका अत्यन्त बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, धर्मनिष्ठ, परोपकारी स्वभाव, परन्तु स्वाभिमानी, दीर्घायु, भूमि-मकान, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, पत्नी सुन्दर, सुशील एवं भाग्य में वृद्धिकारक होती है। भाई-बहिन के सुख की प्राप्ति यथेष्ठ होती है। उच्चशिक्षा एवं सन्तान पक्ष में कठिनाइयों के बाद सफलता होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होती है। परन्तु खर्च भी विशेष अधिक होते हैं। विदेशी सम्बन्धों से विशेष लाभान्वित होने की सम्भावना, जातक को 32वां वर्ष विशेष लाभकारी एवं महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।

द्वादश भाव-में धनु राशि पर स्वगृही गुरु होने से जातक भ्रमणप्रिय, उद्यमी व पराक्रमी होता है। भ्रातृ सुख में कमी रहती है। अत्यधिक कठिनाइयों एवं संघर्ष के बाद भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। जातक शत्रुओं एवं विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में सफल होता है। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों के बाद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते हैं। आकस्मिक खर्च भी बहुत होते हैं। जातक दीर्घायु तथा धर्म आदि कार्यों पर भी खर्च करने वाला होगा। ज्योतिष, योग, धर्म आदि विषयों में भी रूचि रहती है।

मकर लग्न में द्वादश भावगत शुक्र फल

मकर लग्ने, शुक्र फल



विशेष– शुक्र पंचमेश व कर्मेश होने से मकर लग्न में बुद्धि, विद्या, सन्तान, धन आदि सुखों तथा स्त्री, वाहन एवं भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यदि कुण्डली में शुभस्थ हो तो उपरोक्त सुखों की वृद्धि तथा अशुभ हो तो हानि करता है।

प्रथम भाव-में मकर राशि पर शुक्र होने से जातक बुद्धिमान, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, संगीत, कला एवं गायन आदि में रूचि, जातक उच्चाभिलाषी, व्यवहार कुशल तथा समय के अनुसार अपने को बदल लेने में कुशल, उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त करने में सफल तथा व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। बाल्यकाल में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता परन्तु आगे चल कर स्वास्थ्य में सुधार होता है। पत्नी सुन्दर, सुशील एवं अनुकूल आचरण करने वाली तथा सन्तान सुख यथेष्ठ होता है।

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर शुक्र होने से जातक तीव्र बुद्धि, विनोदप्रिय मधुरभाषी, दीर्घायु, वाक्पटु, विद्वान, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परन्तु परिवारिक सुख कम मिलता है। संगीत, कला, काव्य एवं साहित्य में रूचि होती है। ऐसा जातक विलासप्रिय अथवा खान-पान, विलासी एवं श्रृंगारिक वस्तुओं के द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला, कर्त्तव्य-परायण सुन्दर पत्नी से युक्त, व्यापार आदि द्वारा एवं अपने कमाए हुए धन से उन्नति करने वाला, कभी शेयरों, लाटरी आदि से भी

आकस्मिक धन लाभ प्राप्त करने वाला होता है। मधुर, सुस्वाद पेय (खान-पान) का शौकीन एवं समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा ज्योतिष, मंत्र आदि शास्त्रों का जानकार होता है। यदि शुक्र भौमादि अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक किसी एक संतान के सम्बन्ध से चिन्तित होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 96

तृतीय भाव-में उच्चस्थ मीन राशि पर शुक्र होने से जातक सुन्दर, सुशिक्षित, मिलनसार, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, परिश्रमी, भ्रमणप्रिय, देश-विदेश की यात्राएं करने वाला, संगीत, गायन, ज्योतिष, मनोरंजन एवं कलात्मक अभिरूचियों से युक्त, श्रेष्ठ मित्रों, भूमि, आवास, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, पत्र-व्यवहार में कुशल, सुन्दर-सुशील पत्नी तथा सन्तान के सुख से युक्त, भाई-बहिन के सुख भी प्राप्त होते हैं, परन्तु बहिनों का सुख अपेक्षाकृत अधिक होता है। भाई बन्धुओं की सहायता करने वाला, स्त्रियों से मैत्री सम्बन्ध बनाने में कुशल, कार्यक्षेत्र में अत्यन्त संघर्ष एवं परिवर्तनों के बाद उन्नति करता है।

चतुर्थ भाव-में मेष राशि पर शुक्र होने से जातक कल्पनाशील, चंचल बुद्धि, भूमि, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, वस्त्र-डिज़ाइनिंग, सौंदर्य प्रसाधनों, कम्प्यूटर्ज़, क्रय-विक्रय आदि के व्यवसाय से लाभान्वित होने वाला, यदि मंगल अशुभ हो तो माता का स्वास्थ्य ठीक न रहे, अल्प-सन्तति सुख, भोग विलास की प्रवृत्ति अधिक तथा जातक का सम्पर्क अनेक मित्रों से रहता है। यदि शुक्र केतु आदि किसी क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को नेत्र विकार, मानसिक व शारीरिक कष्ट, कफज एवं फेफड़े सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है।

पंचम भाव-में स्वराशि वृष पर शुक्र होने से जातक सुन्दर, रूपवान, तीव्र बुद्धिमान, विद्वान, स्वाभिमानी, व्यवहार कुशल, कामुक, कम्प्यूटर आदि उच्च शिक्षा प्राप्त, संगीत, कला एवं साहित्य की ओर रुझान, जमीन, जायदाद, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, भाग्यवान, पुत्र कम तथा कन्या सन्तति का सुख अधिक होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील एवं आज्ञाकारिणी होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में सफल, एक से अधिक स्रोतों द्वारा धन लाभ, यदि शनि शुभस्थ हो तो जातक प्रणय प्रसंगों एवं राजनीति के क्षेत्र में विशेष सफल होता है।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक विनम्र, सेवाभावी, शरीर कष्टी एवं स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं रहता। चिन्तनशील प्रकृति, उच्चशिक्षा में भी विघ्न/बाधाएं होती हैं। जातक स्वाभिमानी, सर्विस या व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों के पश्चात् सफलता मिलती है। प्रत्येक कार्य में बाधाएं आती हैं। भाई-बहिन तथा मामा, मौसी आदि ननिहाल पक्ष से सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है। ऐसा जातक अनावश्यक रुपेण शंकालु होता है। यदि शुक्र सूर्य, केतु आदि अस्तंगत एवं अशुभ हो तो जातक का पेट विकार, लिवर दोष, मन्दाग्नि, नेत्र रोग, गले एवं छाती के रोगों का भय होता हैं। जातक के कार्य-व्यवसाय एवं स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भी अस्थिरता रहती है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 101

सप्तम भाव-में कर्क राशि पर शुक्र होने से जातक सुन्दर मुखाकृति एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी, जातक बुद्धिमान, अध्ययनशील, व्यवहार कुशल, भावुक, विलासप्रिय एवं कामुक प्रवृत्ति, सैन्दर्य प्रेमी, आवास, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, उच्च-स्तरीय रहन सहन, विभिन्न स्त्रियों के साथ सम्बन्ध बनाने में कुशल होगा। यदि कुण्डली में चन्द्र शुभस्थ हो तो जातक को विवाह में सुन्दर एवं सुशील स्त्री की प्राप्ति होगी। विवाहोपरान्त जातक को पत्नी के प्रति विशेष आसक्ति होगी तथा व्यवसाय में भी लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। देखें उदाहरण कुं. नं. 99। यदि चन्द्र अशुभस्थ हो तो जातक को पेट विकार, प्रमेह एवं गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है।

अष्टम भाव-में सिंह राशि पर शुक्र होने से जातक अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों से धन-सम्पदा एवं वाहन आदि सुख के साधन एकत्रित करता है। उच्च-विद्या प्राप्ति में भी विघ्न-बाधाएं रहती हैं। परिवारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में असंतोष रहता है। पुत्र सन्तति के सम्बन्ध में चिन्तित। यदि कुण्डली में चन्द्र, शनि आदि ग्रह अशुभस्थ हो तो जातक गुप्त

युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है। इस सम्बन्ध में वह उचित-अनुचित साधनों का भी ध्यान नहीं करता। यदि शुक्र अशुभ भौमादि से दृष्ट हो तो जातक को डायब्टीज़, ब्लडप्रैशर, लीवर एवं उदर आदि से सम्बन्धित गुप्त रोग होने की सम्भावनाएं रहती हैं।

नवम भाव-में अपनी नीच (कन्या) राशि में शुक्र होने से जातक धन-सम्पदा आदि सुख साधनों से सम्पन्न, परिश्रमी, यशस्वी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं होती हैं। सन्तति सुख किन्तु पुत्र सन्तति के बारे में विशेष चिन्तित। जातक धर्म, ज्योतिष, संगीत आदि शास्त्रों एवं साहित्य, कला, कम्प्यूटर आदि कलाओं में कुशल, धर्म के प्रति आस्थावान्, मित्रों तथा भाई-बहिनों के सुखों से युक्त, ऐसा जातक निज परिश्रम एवं पुरुषार्थ के बल पर सफलता प्राप्त करने वाला होता है। व्यवसाय में कठिनाइयों एवं अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है।

दशम भाव-में स्वगृही तुला राशि पर शुक्र होने से जातक उच्चशिक्षित, व्यवहारकुशल बुद्धि, न्यायप्रिय, धन-सम्पदा, वाहन एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से सम्पर्क रखने वाला, माता-पिता एवं पैतृक सम्पदा से लाभान्वित, संगीत, गायन, फिल्म, कास्मैटिक्स, फैशन डिज़ाईनिंग, कम्प्यूटर्ज़, पेय आदि के कामों द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 97। ऐसा जातक कार्य व्यवसाय में उच्च प्रतिष्ठित सफलता प्राप्त करता है। यदि कुण्डली में चन्द्र भी शुभस्थ हो तो जातक विवाह के पश्चात् विशेषकर 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष लाभ व उन्नति को प्राप्त होता है।

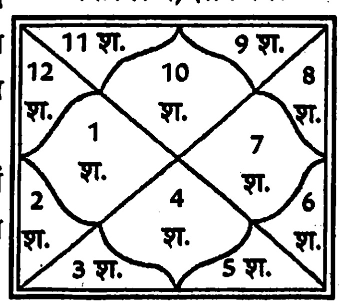
एकादश भाव-में बृश्चिक राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक अत्यन्त बुद्धिमान, उच्च कलात्मक अथवा व्यवसायिक विद्या प्राप्त, समाज में प्रसिद्ध, सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। धन सम्पदा, विवाह, वाहन आदि ऐश्वर्य एवं सुख-साधनों से युक्त होता है। यदि कुण्डली में बुध एवं शनि भी शुभस्थ हों तो जातक (जातिका) अभिनय, नृत्य, संगीत आदि ललित कलाओं में विशेष कुशल एवं लाभान्वित होता है। सप्तमेश चन्द्र यदि अशुभस्थ हो तो विवाह सुख में कमी रहती है।

द्वादश भाव-में धनु राशि पर शुक्र होने से जातक भ्रमणप्रिय, बुद्धिमान, कल्पनाशील, कामुक एवं भावुक प्रकृति, मानसिक चिन्ताओं से युक्त, परन्तु स्वतन्त्र विचारों वाला, उच्चशिक्षा प्राप्ति में भी विघ्न-बाधाओं का सामना, धन का खर्च अधिक होता है। जातक सौन्दर्य प्रेमी, संगीत, गायन आदि कलात्मक अभिरूचियां, ज्योतिष, योगादि में भी रूचि तथा विदेशी सम्बन्धों से लाभान्वित होने के योग। यदि शुक्र पर भौमादि ग्रह की अशुभ दृष्टि हो अथवा दशम में अशुभ ग्रह हों तो जातक को व्यवसाय में सम्बन्ध अस्थिरता एवं असन्तोष रहता है। फलस्वरूप तनाव एवं शरीर अस्वस्थ रहता है।

मकर लग्न में द्वादश भावगत शनि का फल

विशेष—मकर लग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश होने से विशेष महत्त्वपूर्ण है। कुण्डली में यदि शुभ भावस्थ एवं शुक्र, बुध आदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को स्वास्थ्य, आयु, धन-सम्पदा, सुशील स्त्री एवं सन्तान आदि सुख प्रदान करता है। यदि अशुभ हो तो जातक को धन/सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां एवं स्वास्थ्य हानि, त्वचा, हड्डियों, दान्तों, घुटनों आदि में पीड़ा व दुख देता है।

मकर लग्ने, शनि फल



प्रथम भाव-में स्वगृही मकर राशि पर शनि के प्रभाव से जातक सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, स्वाभिमानी, परिश्रमी, पराक्रमी, तीव्र बुद्धिमान, धन सम्पदा एवं वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त, दीर्घायु, पुरुषार्थी, उद्यमी, दूरदर्शी एवं व्यवहार-

कुशल होता है। यदि कुण्डली में शुक्र भी शुभस्थ हो तो जातक उच्च व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त, विद्वान, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रूचि तथा व्यवसाय में सुप्रतिष्ठित होता है। प्रतिष्ठित एवं गम्भीर व्यक्ति (अर्थात् थोड़ी आयु में ही वृद्धों जैसा गम्भीर, शान्त विचारक) होता है। भाई-बहिनों से सामान्य सुख होता है। वैवाहिक एवं गृहस्थ जीवन प्राय: अशान्त एवं असंतोषजनक रहता है। यदि चन्द्र व शुक्र शुभस्थ हो तो दाम्पत्य जीवन सुखी होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। विदेश आदि कार्यों में अच्छी सफलता मिलती है।

द्वितीय भाव-में स्वगृही कुम्भ राशि में शनि होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, परिश्रमी, निज पराक्रम एवं पुरुषार्थ से धनार्जन करने वाला, प्रारम्भिक जीवन में अत्यन्त संघर्ष एवं चुनौतियों का सामना, माता को कष्ट अथवा भ्रातृ सुख में कमी, मकान, जायदाद एवं वाहन आदि के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष रहे। परन्तु जातक 34 वर्ष की आयु के बाद धन, सम्पदा एवं अन्य सुख साधनों में वृद्धि होगी। जातक संघर्ष के बाद व्यवसाय में क्षण:क्षण लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है।

तृतीय भाव-में मीन राशि पर शनि के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, साहसी, उच्चाकांक्षी, अनेक विषयों का ज्ञान, उच्च-व्यवसायिक विद्या प्राप्ति, धर्म, राजनीति, ज्योतिष, मन्त्र आदि गूढ़ विषयों में रूचि, लेखन-प्रकाशन आदि के कामों में लाभ की सम्भावना मित्रों का क्षेत्र अधिक होता है परन्तु भाई-बहिन का सुख साधारण रहता है। भाइयों से हानि होने के भी योग। उच्च-विद्या एवं सन्तान सुख में भी बाधा होती है। परिवारिक परिस्थितियों के कारण ऐसे जातक के मन में कुछ असंतोष बना रहता है। इसके अतिरिक्त जातक के प्रत्येक कार्य विघ्न बाधाओं के साथ ही सफल हो पाते हैं। शनि द्वारा द्वादश भाव को दशम दृष्टि से देखने से जातक के आकस्मिक खर्च बहुत अधिक होते हैं तथा विदेश में भाग्योदय होता है। यदि शुक्र अशुभस्थ हो तो व्यवसाय की स्थिति अस्थिर रहती है। सप्तम में मंगल होने से स्त्री को कष्ट रहने के संकेत।

चतुर्थ भाव-में मेष राशि पर शनि होने से जातक सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी रहती है, तथा परिवारिक सुख में भी कमी होती है। बन्धु-बान्धवों एवं सम्बन्धियों का सुख भी कम मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम से धन-सम्पदा के साधन बना लेता है, परन्तु खर्च भी बहुत रहते हैं। शनि यदि वक्री हो तो जातक व्यवसाय के सम्बन्ध में जन्म स्थान से अतिरिक्त विदेश आदि में धनार्जन करने में सफल होता है। यदि स्वदेश में भी रहे, तो कार्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप एवं यात्राएं अधिक रहती हैं। यदि पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो शिर रोग, नेत्र पीड़ा एवं हृदय रोगों की सम्भावना होती है।

पंचम भाव-में वृष राशि पर शनि होने से जातक सूक्ष्म बुद्धि एवं उच्च विद्या प्राप्त करने वाला, यदि शुक्र भी शुभस्थ हो तो सन्तान सुख एवं परिवारिक सुख यथेष्ठ होता है। जातक परिश्रम एवं अत्यन्त संघर्ष द्वारा धन का अर्जन एवं संचय करता है। यदि पंचमस्थ शनि दुर्बल या पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक को पुत्र सुख में कमी या कन्या सन्तति होना, गले एवं उदर में पीड़ा आदि रोग होते हैं तथा जातक को ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, लाटरी, शेयरों आदि में भी रूचि रहती है।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि पर शनि होने से जातक के शारीरिक विकास एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। जातक अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में एवं परिश्रम से धन का अर्जन करता है। परन्तु धन का व्यय रईसी ढंग से करता है। मामा से सुख कम मिलता है। चिकित्सा या वाद-विवाद (मुकद्दमे आदि) में धन का व्यय अधिक होता है। यहां से शनि तृतीय भाव को मैत्री दृष्टि से देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य या मतान्तर भी रखे। यदि शनि अस्त/वक्री आदि होकर निर्बल हो तो जातक को मामा एवं ननिहाल का सुख कम मिलता है। जातक को आंव, अमाशय, पित्राशय, यकृत (लिवर), नेत्र एवं दन्त रोग, मन्दाग्नि आदि सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। शनि शुभस्थ हो तो जातक समाज में प्रतिष्ठित, संगीत, ज्योतिष, योगादि गूढ़ विषयों में रूचि तथा शत्रुनाशक होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 96, 101

सप्तम भाव-में कर्क राशि पर शनि के प्रभाव से जातक तीव्र बुद्धिमान, परिश्रमी, स्वाभिमानी, व्यवहार कुशल एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। ऐसा जातक अपने परिश्रम से जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, हस्त-कला विशेषज्ञ (अर्थात् तकनीकि क्षेत्र का जानकार होता है) परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त परिश्रम एवं कठिनाइयों का सामना रहता है। माता को शरीर कष्ट, मकान आदि के सम्बन्ध में असंतोष तथा वैवाहिक सुख में कमी या उसमें बाधाएं आती हैं। यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभस्थ हो तो विवाह-सुख अत्यन्त विलम्ब से होता है। सांसारिक सुख में कमी। व्यवसाय में सांझेदारी या विवाद आदि में परेशानियां पैदा होती हैं। स्त्री की कुण्डली में सप्तम शनि दाम्पत्य जीवन में बाधाएं अथवा अधिक आयु में विवाह की सम्भावना करता है।

अष्टम भाव-में सिंह राशि पर शनि हो तो जातक के स्वास्थ्य में कमी, परन्तु जातक परिश्रमी एवं उच्च विद्या में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। परिवारिक उलझनें तथा व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष के बाद धनार्जन हो पाता है। जातक की पूंजी व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों मे नियोजित होती है तथा आय के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं। शेयर, लाटरी, सट्टा आदि से आकस्मिक धन लाभ की भी सम्भावनाएं होती हैं। विवाह के बाद विशेष लाभ व उन्नति होती है। यदि चन्द्र, शुक्र आदि ग्रह शुभस्थ हों तो जातक को उच्च विद्या, सुन्दर, सुशील पत्नी एवं सन्तान आदि सुखों की विघ्नों के बाद प्राप्ति होती है।

नवम भाव-में कन्या राशि पर शनि होने से जातक सुन्दर व्यक्तित्व वाला, भाग्यशाली, बुद्धिमान, साहसी, स्वाभिमानी, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त परन्तु व्यवसाय में कठिनाइयों एवं संघर्ष के बाद आय के साधन बनते हैं। भाई-बहिन के सुख में कमी रहे किन्तु जातक पराक्रमी एवं उद्यमी होता है। तैल, कोयला, पत्थर, लोहा, रबड़ आदि के कार्यों से लाभान्वित होने वाला जातक को धर्म, योग, मंत्र, न्यायशास्त्र एवं ज्योतिष आदि विषयों में भी विशेष रूचि रहती है। जातक अत्यधिक संघर्ष एवं परिश्रम करने के बावजूद अधिक धन संचय नहीं कर पाता। चन्द्र व शुक्र दोनों शुभ हों तो जातक विवाह के पश्चात् विशेषकर 34 वर्ष के बाद लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। यदि शनि क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक के भाग्य में बार-बार विघ्न पड़ते हैं। देखें उदा कुं. 102

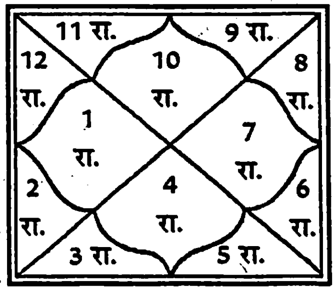
दशम भाव-में तुला राशि (उच्चस्थ) पर शनि होने से जातक बुद्धिमान, जमीन-जायदाद, सवारी आदि सुख साधनों से सम्पन्न, समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। ऐसा जातक निजी पुरुषार्थ से लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। दशम भाव में शनि उच्चस्थ होने से शश योग भी होता है जिसके प्रभावस्वरूप जातक उच्च शिक्षित, उच्चप्रतिष्ठित, भ्रमणप्रिय, देश-विदेश में यात्राएं करने वाला, सूक्ष्मदर्शी, भूमि, जायदाद एवं वाहनादि सुख साधनों तथा श्रेष्ठ मित्रों से युक्त होता है। जातक भाग्यवान्, परिवारिक सुख से युक्त, पिता से लाभान्वित, लोहा, सोना, चान्दी धातुओं से सम्बन्धित कार्यों से लाभ, योग, दर्शन, ज्योतिष आदि शास्त्रों में रूचि, माता को कष्ट, स्त्री सुख में कमी तथा व्यवसाय में भी विघ्नों के बाद लाभ होता है।

एकादश भाव-में बृश्चिक राशि पर शनि होने से जातक/जातिका तीव्र बुद्धि, अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क, शिल्पकला में प्रवीण, श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, व्यवहार-कुशल, धर्म-कर्म में आस्था रखने वाला, उच्चशिक्षित, धन सम्पदा से सम्पन्न तथा नई नई स्कीमें सोचने में कुशल होता है। कुण्डली में यदि चन्द्र व शुक्र शुभस्थ हों तो जातक सुन्दर एवं सुशील स्त्री तथा श्रेष्ठ सन्तान सुख से युक्त होता है। ऐसा जातक राजनीति के क्षेत्र में भी सफल रहता है। ज्योतिष, योग, मंत्र आदि विद्याओं में भी रूचि रखता है। यदि चन्द्र व शुक्र अशुभ हों तो जातक को वैवाहिक सुख में कमी तथा सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहती है। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता।

द्वादश भाव-में धनु राशि पर शनि होने से धन-सम्पदा आदि सुख साधनों के होते हुए भी जातक का प्रारम्भिक जीवन संघर्षपूर्ण रहता है। शरीरिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक सुख में कमी रहती है। धन का व्यय अधिक होता है। व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप तथा यात्राएं अधिक रहती हैं। परन्तु उत्तरार्ध भाग में जातक निज पुरुषार्थ एवं उद्यम से निर्वाह योग्य समुचित आय के साधन बना लेता है। यदि चन्द्र व शुक्र शुभ हों, तो जातक को विदेश में धनार्जन के समुचित अवसर प्राप्त होते हैं। यदि चन्द्र-शुक्र अशुभ हों तो वैवाहिक सुख में कमी रहती है।

मकर लग्न के द्वादश भावों में राहु का फल

मकर लग्ने, राहु फल



विशेष–मकर लग्न की कुण्डली में राहु–केतु अन्य ग्रहों के सहचर्य से ही अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते है। राहु को शनिवत्. तथा केतु को मंगलवत् फल प्रदायक माना जाता है। सामान्यत: राहु 3, 6 एवं 11वें भावों में अरिष्टनाशक तथा सौभाग्य में वृद्धि कारक माना जाता है।

प्रथम भाव-में मकर राशि पर राहु होने से जातक का स्वास्थ्य ठीक न रहे, परन्तु आयु वृद्धि के साथ सुधार हो। जातक साहसी, परिश्रमी, स्वतंत्र विचारक, तीव्र बुद्धिमान, स्वाभिमानी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, हठी प्रकृति, जातक निज परिश्रम एवं गुप्त युक्ति युक्तियों द्वारा व्यवसाय में धन लाभ व उन्नति करने वाला, धर्म, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला होता है।

यदि चन्द्र अशुभस्थ हो, तो स्त्री सुख एवं पारिवारिक सुख कम मिलता है। जातक को मानसिक तनाव, ब्लड-प्रैशर, नेत्र, दन्त रोगों का भय रहता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 96.

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर राहु होने से जातक चिन्तनशील एवं गम्भीर विचारक, परिवारिक सुख में कमी, अत्यधिक संघर्ष एवं निज परिश्रम से धन सम्पदा का अर्जन करने वाला, ऐसा जातक कई बार धन की कमी होने पर भी सामान्य लोगों द्वारा धनी समझा जाता है। अपनी स्पष्टवादिता के कारण कई बार लोग इसको गलत भी समझ लेते है। शेयरों या लाटरी आदि से तथा व्यवसाय में अकस्मात-लाभ या अचानक हानि होने की भी सम्भावना रहती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 102

तृतीय भाव-में मीन राशि पर राहु होने के कारण जातक पराक्रमी, साहसी, भ्रमणशील प्रकृति, उद्यमी होता है। ऐसा जातक अत्यन्त पुरुषार्थ एवं परिश्रम से अपना लक्ष्य तथा निर्वाह योग्य आय के साधन बना पाता है। भाई-बन्धुओं के सुख में कमी, भाग्योन्नति में बार-बार विघ्न होते हैं। व्यवसाय में दौड़-धूप अधिक तथा आय के साथ खर्च की मात्रा भी अधिक रहती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 98

चतुर्थ भाव-में मेष राशि पर राहु होने से जातक की माता को शरीर कष्ट अथवा मातृ सुख में कमी, भूमि, जायदाद, मकान आदि के सम्बन्ध में भी परेशानी एवं असंतोष रहे। जातक परिश्रमी एवं बुद्धिमान होता है। वह अपने उद्यम एवं कठिन परिश्रम तथा युक्तियों के बल पर सुख-साधन बना ही लेता है। अपने जन्म स्थान से अतिरिक्त अन्य स्थान पर भाग्योदय होता है। पैतृक सम्पदा के सुख में कमी रहे।

पंचम भाव-में वृष राशि पर राहु होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, परिश्रमी, पराक्रमी, संवेदनशील तथा अपने उद्देश्य के प्रति सावधान एवं पर्यत्नशील रहता है। विद्या एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संघर्ष के बाद सफलता मिलती है। सन्तान का सुख भी परेशानियों के बाद मिलता है। ऐसा जातक अपनी गुप्त युक्तियों एवं प्रभावशाली वाणी द्वारा विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। जातक ज्योतिष एवं संगीत प्रेमी, उद्यमी एवं तर्क-वितर्क में कुशल होता है। यदि शुक्र अशुभ हो तो जातक मानसिक दृष्टि से अशान्त, जिद्दी, उच्च विद्या में विघ्न तथा स्त्री व सन्तान के बारे में चिन्तित रहता है।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि का राहु होने से जातक/जातिका साहसी, परिश्रमी, बुद्धिमान, कम्प्यूटर आदि तकनीकि

कार्यों में कुशल, अपने कर्त्तव्य के प्रति गम्भीर, कई बार अनुकूल अवसर पर नहीं बोलने वाला, शत्रुओं (विरोधियों) पर प्रभावी, मातृपक्ष को अरिष्टकर होता है। यदि यहां राहु-चन्द्र आदि से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक की स्त्री को कष्ट तथा स्वयं नेत्र एवं दन्त रोगी एवं अशान्त चित्त रहता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 100

सप्तम भाव-में कर्क राशि पर राहु के प्रभाव से जातक अस्थिर, चंचल एवं कामुक प्रवृत्ति वाला, स्त्री को कष्ट एवं स्त्री पक्ष से परेशानी एवं हानि, वैवाहिक सुख में कमी, सांझेदारी के कामों में हानि होने की सम्भावना रहती है। व्यवसाय में भी अत्यन्त परिश्रम एवं कठिनाईयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बन पाते हैं। आय सीमित होने पर भी जातक के भोग विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होते हैं। जातक को मधुमेह, प्रमेह, उदर विकार आदि गुप्त रोगों की भी सम्भावना रहती है।

अष्टम भाव-में सिंह राशि पर राहु के प्रभाव से जातक के जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष कठिन एवं संघर्षपूर्ण रहता है। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता, कभी-कभी मृत्यु तुल्य कष्ट भी होने की सम्भावना रहती है। उत्तरार्ध भाग में येन केन प्रकारेण निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। परन्तु धन के अपव्यय बहुत होते हैं। परिवारिक सुख में कमी रहती है। विशेषकर ३२वां वर्ष कष्टकारी होता है।

नवम भाव-में स्वराशि कन्या राशि पर राहु के प्रभाव से जातक परिश्रमी, बुद्धिमान, परोपकारी, दयालु एवं उद्यमी होता है। जातक धार्मिक रूप से अस्थावान्, योग, शास्त्र, ज्योतिष, मन्त्र आदि विद्याओं में रूचि, व्यवसाय एवं भाग्य में संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद (विशेष कर 37वें वर्ष के बाद) सफलता प्राप्ति, विदेश आदि से सम्बन्धित कार्यों में भी सफलता प्राप्ति की सम्भावना, ऐसा जातक भाग्यवश उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क द्वारा लाभान्वित होता है। ऐसा जातक विद्वान, संगीत, कला, साहित्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में भी रूचि रखता है। जातक भाई-बहिनों को सुख देने वाला होता है।

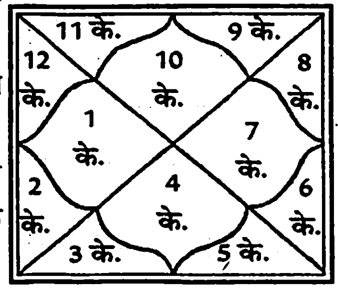
दशम भाव-में तुला राशि पर राहु के प्रभाव से जातक साहसी, बुद्धिमान, विद्वान, महत्त्वाकांक्षी, जीवन के प्रारम्भिक भाग में संघर्ष अधिक तथा विघ्न-बाधाएं रहती हैं। पिता को कष्ट, कार्य-व्यवसाय में कठिनाईयों के बावजूद धीरे-धीरे लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेता है। यहां पर मंगल, शुक्र का भी योग हो तो जातक विवाह के बाद भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों को प्राप्त करता है। यदि शनि का भी योग हो तो जातक उच्चप्रतिष्ठित, सुख साधन सम्पन्न तथा राजनीति के क्षेत्र में सफल रहता है। यदि सूर्य-राहु का योग हो तो गृहस्थ सुख में कमी होती है। देखें. कुं. नं. 103

एकादश भाव-में बृश्चिक राशि पर राहु होने से जातक परिश्रमी, चतुर बुद्धि, गुप्त युक्तियों एवं उचित-अनुचित साधनों से धनार्जन करने वाला, उच्च शिक्षा एवं सन्तान आदि के सुख में विघ्न-बाधाएं होती हैं। जातक को शेयर, सट्टा, लाटरी, ज्योतिष, योग आदि गूढ़ विद्याओं में भी रूचि रहती है। शुक्र शुभस्थ हो, तो जातक को उच्च विद्या, मकान, वाहन, सन्तान एवं धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

द्वादश भाव-में धनु राशि में राहु होने से जातक स्वच्छन्द प्रकृति का, कामुक एवं विलासप्रिय प्रकृति, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला तथा लोक व्यवहार में नीति-अनीति का भी विचार न करने वाला, कई बार आर्थिक संकट एवं परेशानियों का सामना रहे। परन्तु जातक परिश्रम एवं बुद्धि कौशल से समस्याओं का समाधान करने में सफल होता है। शेयरों, लाटरी आदि से अचानक धन लाभ की सम्भावना भी होती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 97, 101

मकर लग्न के द्वादश भाव में केतु का फल

मकर लग्ने, केतु फल



विशेष—केतु अपने भाव एवं भावेश के अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त केतु पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का भी विचार कर लेना चाहिए।

प्रथम भाव-में मकर राशि पर केतु होने से जातक अस्थिर बुद्धि, शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला एवं क्रोधी स्वभाव होता है। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। कार्य-व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों एवं संघर्षों का सामना रहता है। वैवाहिक सुख भी अड़चनों के बाद मिलता है। स्त्री को कष्ट अथवा विवाह में विलम्ब होता है। जातक का भोग आदि की वस्तुओं पर अधिक खर्च होता है।

द्वितीय भाव-में कुम्भ राशि पर केतु होने से जातक स्पष्टवादी अथवा कटु वक्ता, परिवारिक सुख में कमी होती है। आर्थिक क्षेत्र अत्यन्त कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना, मानसिक तनाव तथा घरेलू उलझनें अधिक रहें। अत्यधिक संघर्ष करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाए। अवांछित कार्यों पर भी धन के खर्च अधिक रहें।

तृतीय भाव-में मीन राशि पर केतु होने से जातक धैर्यवान, पराक्रमी, परोपकारी, उच्च-शिक्षित, भ्रमणप्रिय तथा देश-विदेशों में भ्रमण करने वाला होता है। भाई-बहिनों का सुख कुछ कम होता है। ऐसा जातक अपने परिश्रम एवं पराक्रम के बल पर भौतिक सुख के साधन तथा धन-सम्पदा प्राप्त कर लेता है। जातक को धर्म, योग, ज्योतिष, चिकित्सा आदि शास्त्रों में विशेष रूचि रहती है तथा इनके द्वारा लाभान्वित भी होता है।

चतुर्थ भाव-में मेष राशि पर केतु होने से जातक को मातृ सुख में कमी अथवा माता को कष्ट रहे। भूमि, मकान एवं जायदाद के सम्बन्ध में भी जातक को संघर्ष एवं परेशानियों का सामना रहता है। कार्य/व्यवसाय के क्षेत्र में भी अस्थिरता के हालात रहें। फिर भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहते हैं। व्यवसाय एवं कैरीयर की दृष्टि से कई बार जन्म स्थान का भी त्याग करना पड़ता है। सुख प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ता है। जातक को घरेलू सुख की कमी रहती है। देखें कुण्डली नं. 103

पंचम भाव-में वृष राशि पर केतु होने से जातक अस्थिर एवं चंचल बुद्धि वाला, उच्चशिक्षा प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहें, संतान सुख में कमी रहने के संकेत, ज्योतिष, रेकी, योग, मंत्र-तंत्र आदि गूढ़ विद्याओं में रूचि होती है। यदि शुक्र, चन्द्र शुभस्थ हों तो श्रेष्ठ स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति होती है।

षष्ठ भाव-में मिथुन राशि पर केतु स्थित हो, जातक को शत्रुओं के सम्बन्ध में हानि उठानी पड़ती है। धन का अपव्यय भी बहुत होता है। जातक गुप्त युक्तियों से शत्रु (विरोधियों) पर विजय प्राप्त कर लेता है। क्रूर ग्रह केतु के कारण जातक के स्वास्थ्य एवं धन की हानि, उदर-विकार, मानसिक अस्थिरता एवं वायु विकार, पित्ताशय में पथरी आदि की सम्भावना होती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 101

सप्तम भाव-में कर्क राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, स्वतन्त्र विचारक, कुछ हठी प्रकृति, परिश्रमी एवं साहसी होता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने वाला, धर्म, ज्योतिष, योग, मंत्र-यन्त्र आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला, गृहस्थ जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाईयों से युक्त, स्त्री/पति सुख में कमी रहती है। जातक व्यवसाय में बुद्धि-चातुर्य से धनार्जन करने वाला होता है। चन्द्र-शुक्र आदि ग्रह अशुभ हों, तो जातक की स्त्री को कष्ट, नेत्रों में पीड़ा, पेट में वायु विकार आदि रहते हैं। देखें उदा. कुं. नं. 96

अष्टम भाव-में सिंह राशि पर केतु होने से जातक गुप्त रूप से चिन्तित, परन्तु बाह्य तौर पर प्रसन्नचित,

मिलनसार एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। प्रारम्भिक अवस्था विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिनाईयों से भरी होती है तथा आर्थिक परेशानियां होती हैं। परन्तु अपने साहस से उनपर विजय प्राप्त कर लेता है। विशेषकर 35वें वर्ष के बाद विशेष भाग्योन्नति होती है। राहु या केतु की दशाऽन्तर दशा में जातक को पेट विकार, वायु प्रकोप, रुधिर विकार एवं दुर्घटना आदि का भय होता है। देखें. उदा. कुंडली नं. 102

नवम भाव-में कन्या राशि पर केतु होने से किंचित धार्मिक प्रवृत्ति वाला, परिश्रमी, बुद्धिमान, पराक्रमी होता है। जातक निज परिश्रम एवं पराक्रम से निर्वाह योग्य धनार्जन कर ही लेता है। ऐसे जातक को भाईयों के सुख में कमी रहती है। वृथा दौड़-धूप अधिक रहती है तथा खर्च भी अत्यधिक होते हैं। जीवन का प्रारम्भिक भाग आर्थिक दृष्टि से विशेष संघर्षपूर्ण रहता है। यदि केतु के साथ भाग्येश बुध का योग हो, तथा सप्तमेश चन्द्र शुभ हो, तो जातक को भाईयों से धोखा तथा स्त्री से अच्छा सहयोग मिलता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 98

दशम भाव-में तुला राशि पर केतु होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी एवं बुद्धिमान होता है। व्यवसाय में अत्यन्त परेशानियों एवं कठिनाईयों के पश्चात् सफलता प्राप्त हो। जातक को भूमि, जायदाद आदि के सम्बन्ध में परेशानियां एवं असन्तोष रहे। पैतृक सम्पदा के सुख में कमी रहे। कार्य/व्यवसाय में अनेक बार अस्थिरता एवं परिवर्तन की स्थिति बने। अपने जन्म स्थान से अन्यत्र (विदेश आदि) में भाग्योन्नति की सम्भावना बने।

एकादश भाव-में बृश्चिक राशि पर केतु होने से जातक अत्यन्त बुद्धिमान, परोपकारी, पराक्रमी, विनोदप्रिय, उच्चाकांक्षी तथा अपने लक्ष्य के प्रति सावधान रहता है। उच्च विद्या एवं व्यवसाय के क्षेत्र में जातक विघ्नों के पश्चात् सफलता प्राप्त करता है। जातक गुप्त युक्तियों द्वारा भी धनार्जन करने में सफल होता है। जातक को धर्म, ज्योतिष, योग, तन्त्र आदि गूढ़ विषयों में भी विशेष रूचि रहेगी।

द्वादश भाव-में धनु राशि पर केतु की स्थिति होने से जातक/जातिका बुद्धिमान, परिश्रमी, परोपकारी स्वभाव, धैर्यवान, कर्त्तव्यनिष्ठ, कई बार उपयुक्त अवसर का लाभ उठाने में असफल, संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद उच्च तकनीकि विद्या प्राप्त करने में सफल रहता है। यदि कुण्डली में शुक्र व चन्द्र शुभस्थ हों, तो जातक विवाह के बाद विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। 32वें वर्ष अपने जन्म स्थान से अन्यत्र विदेशादि में विशेष भाग्योदय होता है। देखें उदा. कुं. नं. 100

नोट-मकर लग्न में ग्रहों की स्थिति व ग्रह योगों के सम्बन्ध में उदाहरण कुण्डलियां आगामी पृष्ठों में देखें।

मकर लग्न में कुछ प्रसिद्ध द्वि-एवं त्रिग्रह योगों का फल

(1) सूर्य-चन्द्र- का योग हो तो जातक चंचल, कामुक, स्त्री के वशीभूत होकर आचरण करने वाला, भावुक एवं परिवर्तनशील स्वभाव का होता है। कार्य व्यवसाय में भी अस्थिरता रहती है। माता-पिता दोनों में से किसी एक के सुख में कमी होती है। प्रथम, 4, 5 एवं 11वें भावों में हो, तो अशुभ फल में कमी होती है।

(2) सूर्य-मंगल-का योग हो तो जातक तेजस्वी, पराक्रमी, राजसिक प्रकृति, साहसी, स्वाभिमानी, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, दूसरों पर अधिकार (प्रभाव) डालने की प्रवृत्ति, ज्योतिष आदि गूढ़ विद्याओं में रूचि रखता है। ऐसा जातक शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है। देखें. कुं. 103

(3) सूर्य-बुध-यह बुधादित्य योग भी कहलाता है। मकर लग्न में यह योग जातक को बुद्धिमान, भाग्यशाली, सेवा आदि कार्यों में रूचि रखने वाला, उच्चप्रतिष्ठित लोगों द्वारा सम्मानित, गुणवान, ज्योतिष, धर्म-योग, मंत्रादि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला होता है। यह योग प्रथम, तृतीय, चतुर्थ, नवम् एवं एकादश भावों में हो तो जातक को उच्चाधिकार

सम्पन्न, दीर्घायु, पैतृक धनादि सुख, प्रतिष्ठा आदि प्रदान करता है। अन्य भावों में हो तो सुख में कमी करता है। देखें कुण्डली नं. 96, 98, 100, 101

(4) **सूर्य-गुरु**-का योग हो तो जातक परिश्रमी, पराक्रमी, भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, परोपकारी एवं धार्मिक आस्था वाला, बुद्धिमान एवं उच्च विद्या प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा जातक अध्यापन, वकालत, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

(5) **सूर्य-शुक्र**-का योग हो तो जातक भाई-बन्धुओं एवं वाहनादि सुखों से युक्त, संगीत-कला-नृत्यादि में रूचि, व्यवहार कुशल, दस्तकारी एवं हस्तकलाओं में कुशल होता है। ऐसा जातक बिजली, टैलीविज़न, कम्पयूटर आदि के कार्यों में भी कुशल होता है। देखें कुं. नं. 100

(6) **सूर्य-शनि**-का योग होने से जातक के अपने कार्य में निपुण, अपने कार्यों को निष्ठापूर्वक करने वाला, तकनीकि कार्यों में कुशल, क्रयविक्रय तथा व्यापारिक क्षेत्र में निज उद्यम से सफल, सगे-सम्बन्धियों व भाईयों से हानि अथवा सुख में कमी होती है। पैतृक सुख भी कुछ कम मिलता है। देखें उदा. कुं. नं. 101

(7) **चन्द्र-मंगल**-का योग हो तो जातक परिश्रमी, स्वाभिमानी, साहसी, क्रयविक्रय एवं तकनीकी कार्यों में कुशल होता है। ऐसा जातक विदेशादि कार्यों में सफल होता है। स्त्री सुख में कमी की संभावना होती है। यह योग प्रथम, चतुर्थ, पंचम, दशम एवं एकादश भावों में विशेष प्रशस्त होता है।

(8) **चन्द्र-बुध**-का योग होने से जातक व्यवहार कुशल, मधुरभाषी, हंसमुख, धार्मिक विचारों वाला, भाग्यशाली किन्तु कार्य व्सवयाय में अत्यन्त संघर्ष से सफल होने वाला होता है। विवाह के पश्चात् विशेष परिवर्तन एवं लाभ होते हैं। स्वास्थ्य में कुछ कमी होती है। ऐसे जातक के भाग्य का उदय स्वदेश की अपेक्षा विदेश में अधिक होता है।

(9) **चन्द्र-गुरु**-का योग हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील एवं परोपकारी स्वभाव, धर्म परायण, भाई-बन्धु, भूमि-मकान आदि सुखों से युक्त, भ्रमणशील, सुन्दर एवं सुशील पत्नी का सुख होता है। यदि शुक्र भी शुभ हो तो जातक विवाह के पश्चात् व्यवसाय में विशेष लाभ एवं उन्नति प्राप्त करता हैं। यह योग तृतीय, पंचम, सप्तम, दशम एवं एकादश भावों में विशेष प्रशस्त होता है। अन्य भावों में शुभ फल अपेक्षाकृत कम होते हैं। देखें. उदा. कुं. नं. 101

(10) **चन्द्र-शुक्र**-मकर लग्न में केन्द्र-त्रिकोण (चन्द्र-शुक्र) का योग होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, सुन्दर वस्त्रों, पुष्पों एवं सुगन्धित इत्रादि का शौकीन, व्यवहार-कुशल, चतुर-बुद्धि, कामुक प्रवृत्ति, खान-पान का शौकीन, भूमि-वाहन सुन्दर एवं सुशील स्त्री आदि सुखों से सम्पन्न होता है। यदि इस योग पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि आदि या सम्बन्ध हो तो उपर्युक्त फल में कमी होती है।

(11) **चन्द्र-शनि**-का योग होने से जातक परिश्रमी, चिन्तनशील, स्त्री एवं पत्नी के साथ विशेष प्रीति रखने वाला होता है। परन्तु स्त्री रूग्ण, शरीर कष्टी अथवा स्वास्थ्य में कमी रहती है। ऐसा जातक गूढ़ विषयों का जानकार होता है। देखें कुण्डली नं. 96

(12) **मंगल-बुध**-का योग होने से जातक कुशलवक्ता, भूमि, मकान-वाहनादि सुखों से युक्त, औषधि, शिल्प एवं मिश्रित धातुओं के व्यापार से लाभान्वित होने वाला, भाग्यशाली तथा व्यवसाय में गुप्त युक्तियों के द्वारा धनार्जन करने वाला होता है।

(13) **मंगल-गुरु**-इस योग से जातक बुद्धिमान, विद्वान, पराक्रमी, भ्रमणशील एवं परोपकारी स्वभाव का होता है। ऐसा जातक जमीन-जायदाद एवं सवारी आदि सुखों से युक्त तथा निज उद्यम द्वारा धनार्जन करने वाला होता है।

(14) **मंगल-शुक्र**-केन्द्रेश एवं त्रिकोणेश का योग होने से जातक व्यवहार-कुशल, चतुर बुद्धि, क्रयविक्रय में

कुशल, स्त्री जाति से मित्रता करने में कुशल, भोगी एवं मनोरंजन आदि पर खर्च करने वाला, कामुक, अपनी पसंद अनुसार विवाह करने वाला, संगीत, सिनेमा, अभिनय, कलादि के क्षेत्र में सफल होता है। देखें कुं. नं. 99, 102

(15) **मंगल-शनि**-का योग होने से जातक/जातिका पराक्रमी, साहसी, परिश्रमी, स्वाभिमानी, हठी प्रकृत्ति का होता है। प्रत्येक कार्य में विशेष संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है। जातक धातुओं पत्थर, कोयला, कैमीकल, जायदाद , हस्त शिल्प एवं तकनीकि कार्यों में विशेष सफल होता है। भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होने पर भी जातक अपनी वर्तमान परिस्थितियों के प्रति असन्तुष्ट रहता है। भाईयों से सुख में कमी रहे।

बुध-गुरु, बुध-शुक्र, बुध-शनि, गुरु-शुक्र आदि शेष द्विग्रही योगों का फल मीन लग्न से आगामी पृष्ठों पर देखें-

मकर लग्न में तीन ग्रहों के योगों का फल

***सूर्य-मंगल-बुध**- एक ही राशि में हों, तो जातक स्वाभिमानी, स्पष्टवादी (Bold), परन्तु चतुराई से वार्ता करने वाला, परिश्रमी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, बौद्धिक कार्यों द्वारा धनार्जन करने वाला, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त, व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष एवं कठिनाईयों तथा अनेक उतार-चढ़ाव आने के बावजूद जातक निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। जातक की अध्ययनशील, धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं के प्रति विशेष रूचि रहती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 104

***सूर्य-मंगल-गुरु**- एक ही राशि में हों, तो जातक स्वाभिमानी, परिश्रमी, कुछ हठी, अधिकारपूर्ण वाणी का प्रयोग करने वाला, परोपकारी, धर्म परायण, भाई-बन्धुओं तथा भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, अध्ययनशील, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों की ओर विशेष रूचि, उच्च विद्या प्राप्त, ज्योतिष, धर्म आदि गूढ़ विद्याओं में रूचि होती है।

***सूर्य-बुध-गुरु**- तीनों ग्रहों का योग हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, विवेकशील, धर्मपरायण, दयालु, परोपकारी कार्यों में रूचि, धार्मिक, ज्योतिष, यौगिक आदि सत्संग में रूचि, बौद्धिक एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च करने वाला होता है।

***सूर्य-बुध-शुक्र**-तीनों एक ही राशि में हों, तो जातक उच्चशिक्षित, व्यवसायिक एवं कलात्मक शिक्षा में रूचि, कम्पयूटर, इंजीनियरिंग, क्रय-विक्रय, व्यापार आदि फैशन डिज़ाईनिंग, बुटीक, संगीत, कला, सौन्दर्य आदि के क्षेत्र में रूचि, जातक/जातिका बुद्धिमान, परिश्रमी, स्वाभिमानी, व्यवहार कुशल एवं दयालु तथा शीघ्र उत्तेजित व शीघ्र शान्त होने वाला स्वभाव होता है।

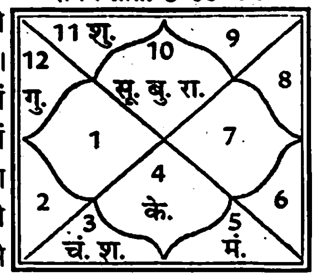
***मंगल-शुक्र-शनि**- तीनों ग्रह एक साथ हों, तो जातक स्वाभिमानी, परिश्रमी, साहसी, प्रकृति का होता है। ऐसा जातक स्वाबलम्बी अर्थात् निज उद्यम व पुरुषार्थ से लाभ व उन्नति करने वाला होता है। परन्तु कार्य/व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद सफल हो पाता है। ऐसा जातक लोहा, पत्थर, कोयला आदि धातुओं सम्बन्धी तथा रबड़, कैमीकल एवं भूमि, जायदाद सम्बन्धी कार्यों से विशेष लाभान्वित होते हैं। ऐसे जातक प्रपंच एवं गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में कुशल होते हैं। देखें उदा. कुण्डली नं. 102

***सूर्य, बुध, शुक्र व शनि**- चार ग्रहों का योग हो तो जातक परिश्रमी, गम्भीर प्रकृति का, उच्चशिक्षित, अनेक विद्याओं एवं कलाओं का जानकार, व्यवहार-कुशल, तर्क-वितर्क करने में प्रवीण, बौद्धिक एवं कलात्मक कार्यों में कुशल, एक ही समय में अधिक कार्य प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति, जिसके कारण कई बार हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसा जातक संवेदनशील, भावुक एवं गुप्त रूप से चिन्तित रहने वाला होता है। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाईयों के बाद सफल होता है। यदि यह योग 2, 6, 7, 8, 10 अथवा 12वें भाव में हो तो जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां रहती हैं। देखें उदाहरण कुं. नं. 101

मकर लग्न की कुछ उदाहरण कुण्डलियां

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के प्रकाण्ड पण्डित

उदा. कुण्डली नं. 96
जन्म 18-1-1916 ई.
समय प्रातः 8-00 बजे



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक अत्यन्त बुद्धिमान सुप्रतिष्ठित, प्रसिद्ध विद्वान एवं कर्मकाण्डी ज्योतिषी जी की है। यह ज्योतिष (फलित) विद्या में कुशाग्र विद्वान होने के साथ-साथ कर्मकाण्ड के क्षेत्र में भी प्रकाण्ड पण्डित माने जाते हैं। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने ननिहाल नाना जी से ग्रहण की। तदुपरान्त वाराणसी में संस्कृत विश्वविद्यालय से ग्रहण की। पैतृक सुख में कमी रही। 1937 ई. में 21 वर्ष की आयु में इनका विवाह एक सुशील एवं सुसंस्कारित कन्या के साथ हुआ। तदुपरान्त गृहस्थ जीवन में इनको तीन सुयोग्य पुत्रों एवं दो बेटियों का सुख प्राप्त हुआ। अपने दीर्घ जीवनकाल में आपने कर्मकाण्ड के तथा ज्योतिष क्षेत्र में भारतीय मानस समाज की **अभूतपूर्व सेवा** की है तथा लोगों को अपने शास्त्रीय ज्ञान द्वारा आलोकित किया है। आपकी **निष्काम सेवा** का क्षेत्र सर्वसाधारण से लेकर उच्च प्रतिष्ठित लोगों तक परिव्याप्त है। आप अत्यन्त कर्मशील, धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण, भारतीय संस्कृति को समर्पित उत्कृष्ट ब्राह्मण देव हैं। इनके शिष्यों की संख्या तथा सत्कीर्ति देश-विदेशों में फैल चुकी है। आपकी जन्म कुण्डली में ज्योतिष सम्बन्धी कुछ योग इस प्रकार से पाए जाते हैं-

(1) स्वगृही गुरु- प्रस्तुत कुण्डली में गुरु तृतीय भाव में स्वगृही होकर सप्तम भाव को उच्च दृष्टि से, भाग्यस्थान तथा लाभ स्थान को शुभ दृष्टि से देख रहा है। फलस्वरूप जातक उच्चकोटि का विद्वान, पण्डित, धर्म, योग, कर्मकाण्ड, ज्योतिष आदि विद्याओं में कुशल तथा उनसे लाभान्वित होता है।

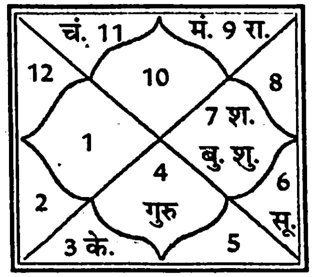
(2) गजकेसरी योग-जातक की कुण्डली में चन्द्र छटे भाव में है तथा चन्द्र-गुरु दशम (केन्द्र) भाव में होने से गजकेसरी योग बनता है जिसके फलस्वरूप जातक तेजस्वी, विद्वान, मेधावी, उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्धित, गुणी एवं धन-धान्यादि से युक्त होता है।

(3) सूर्य-बुध-का योग लग्न भाव में होने से जातक अत्यंत बुद्धिमान, विद्वान, पितृ सुख में कमी, राजमान्य (उच्च प्रतिष्ठित) लोगों द्वारा मान्य, ज्योतिष, मंत्रादि विद्याओं का जानकार हुआ है। सूर्य-बुध का योग बुधादित्य योग भी कहलाता है, जो जातक को उच्च प्रतिष्ठित, विद्वान एवं दीर्घायु प्रदान करता है। परन्तु राहु युक्त होने से स्वास्थ्य में हानि तथा स्त्री सुख में कमी करता है। जातक को कुछ मुंहफट, क्रोधी तथा स्पष्टवादी बनाता है।

(4) छटे चन्द्र-शनि का योग गूढ़ विद्याओं में रूचि परन्तु स्त्री सुख में कमी करता है।

भारतीय सिनेमा की सफल अभिनेत्री रेखा

उदा. कुण्डली नं. 97
10 अक्तूबर, 1954 ई., पू भा. II, मद्रास



प्रस्तुत जन्म कुण्डली भारतीय सिनेमा जगत की प्रसिद्ध एवं सफल अभिनेत्री रेखा की है। इसका जन्म 10 अक्तूबर 1954 ई. को मद्रास में हुआ। इसके पिता श्री जैमिनी गणेशन भी दक्षिण भारतीय सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता थे। इस प्रकार अभिनेत्री रेखा को अभिनय सम्बन्धी विशेष गुण अपने पिता से वंशानुगत परम्परा से प्राप्त हुए। सुश्री रेखा ने मात्र 16 वर्ष की अल्पायु में ही हिन्दी फिल्म जगत् में फिल्म 'सावन-भादों' द्वारा 1970 ई. में प्रवेश किया। प्रथम फिल्म से वह अत्यंत लोकप्रिय अभिनेत्री बन गई। उस समय इसको शनि की महादशा के अन्तर में शुक्र की अंतरदशा चल रही थी। इनकी जन्म कुण्डली में दोनों ग्रह अत्यंत योग कारक स्थिति में हैं। शनि की महादशा जुलाई 1981 ई. तक रही। इस अवधि में अभिनेत्री रेखा ने फिल्म जगत को खूबसूरत, उमराव जान, सुहाग, मुकद्दर का सिकन्दर, सिलसिला आदि उल्लेखनीय फिल्में प्रदान की। इनको बॉलिवुड की एलीज़ाबैथ टेलर कहा जाने लगा। शनि की दशा में इन्होंने धन-धान्य, प्रतिष्ठा, ख्याति आदि तो खूब अर्जित की, परंतु दाम्पत्य जीवन के क्षेत्र में सुखी नहीं हो सकी। रेखा के जीवन क्षेत्र के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख ज्योतिषीय कारण निम्न रुपेण दृष्टव्य हैं-

1. राज योगः-सुश्री रेखा की कुण्डली में केन्द्र-त्रिकोण (शुक्र-बुध) तथा लग्नेश व त्रिकोण (शनि-शुक्र) स्पष्टतः

दो राजयोग होने से जातिका अपने कार्यक्षेत्र (अभिनय आदि) में उच्चस्थ स्थान को प्राप्त हुई है तथा उसे फिल्मी दुनियां में विशेष मान प्रतिष्ठा एवं सफलताएं प्राप्त हुई हैं।

2. शश योगः-सुश्री रेखा की कुण्डली में शश योग पाया जाता है अर्थात्-लग्नेश शनि उच्चस्थ होकर केन्द्र (दशम) में है। जिसके प्रभावस्वरूप जातक/जातिका साधारण कुल में जन्म लेने पर भी धन-सम्पदा, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न होती हैं।

3. मालव्य योगः-लग्न से शुक्र स्वोच्च या स्वराशि होकर केंद्र में स्थित होने से यह योग बना है जिसके फलस्वरूप जातिका सुन्दर एवं आकर्षक शरीर, पतली कमर एवं अनुपातिक शरीर, सुन्दर आकर्षक नेत्र, अभिनय, नृत्य आदि के क्षेत्र में अत्यंत सफल तथा देश-विदेश में ख्याति प्राप्त हुई है।

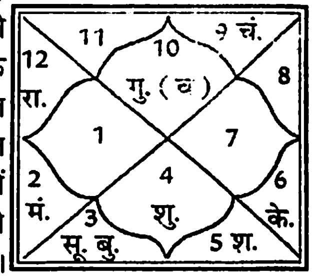
4. हँस योगः-गुरु लग्न से केन्द्र (7वें) होने से हँस योग बना है, जिससे जातिका का सुन्दर एवं रक्तिम (गंदमी) चेहरा, उन्नत ललाट, स्त्रियोचित सौन्दर्य, साहसी, आत्मविश्वास पूर्ण तथा अपने कार्यक्षेत्र में श्रेष्ठ मानी जाती है।

5. गृह सुख में कमीः-रेखा की कुण्डली में द्वादश भाव में मंगल होने से मंगलीक योग बना है। मंगल की सप्तम भाव पर नीच दृष्टि पड़ने से एवं शनि की भी सप्तम भाव पर शत्रु दृष्टि पड़ने से दो बार विवाह होने पर भी दाम्पत्य एवं सन्तान सुख से वंचित रहीं।

6. इसके अतिरिक्त सप्तमेश चन्द्र शत्रु राशि (कुम्भ) में (अपने भाव से अष्टम) दूसरे भाव में अशुभ है।

क्रिकेट जगत् के महान् खिलाड़ी-सुनील गावस्कर

उदा. कुण्डली नं. 98
10 जुलाई, 1949 ई.
उ. षा. 8:40 PM मुम्बई



प्रस्तुत जन्म कुण्डली भारतीय क्रिकेट जगत् के प्रसिद्ध एवं महान खिलाड़ी सुनील गावस्कर की है। इन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के क्षेत्र में सबसे अधिक रिकार्ड बनाएं। अपने छोटे कद के बावजूद सर्वाधिक रिकार्ड सैंचरीज़ बनाने के कारण इन्हें ''लिटिल मास्टर'' के नाम से भी जाना जाता था। इनका जन्म 10 जुलाई, 1949 ई. को बम्बई में मकर लग्न तथा वृष के नवांश में हुआ। नवांश कुण्डली में भी चन्द्रमा जन्म के चन्द्र समान धनु राशि का ही होने से ''चन्द्र'' वर्गोत्तम स्थिति में हुआ है। आपने केवल मात्र 16 वर्ष की अल्पायु में ही अपने स्कूल की टीम में विरोधी टीम के विरुद्ध तीन सौ रन बनाए, उस समय आपको मंगल की महादशा का प्रारम्भ चल रहा था। मंगल की दशा में ही इन्होंने सन् 1971 ई. में वैस्ट-इंडीज़ के विरुद्ध भारत की ओर से टैस्ट शृंखला में इन्होंने सात सौ से अधिक दौड़ें (रन) बनाकर भारत के लिए नया कीर्तिमान स्थापित किया। इसके पश्चात् इन्होंने पाकिस्तान व अन्य देशों के विरुद्ध शानदार प्रदर्शन किए तथा इन्होंने रन बनाने का ऐसा सिलसिला शुरू किया कि आपको रन बनाने की मशीन भी कहा जाने लगा। इसके पश्चात् 24 वर्ष की आयु के बाद राहु की महादशा एवं गुरु के अंतर में आपने सबसे अधिक टैस्ट शतक बनाने के कीर्तिमान स्थापित किए। राहु की महादशा के बाद (1989 ई. के पश्चात्) गुरु की महादशा में भी आपको खेल जगत् दूर संचार टी.वी. आदि मीडिया से विशिष्ट सम्मान प्राप्त हो चुका है। खेल जगत् में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने में उनकी कुण्डली में निम्नलिखित विशेष योग मिलते हैं।

1. गावस्कर की जन्म कुण्डली में पंचम भावस्थ पर मंगल पर गुरु की विशेष दृष्टि पड़ने से मंगल विशेष बली एवं शुभ हुआ है। नवांश कुण्डली में भी मंगल को गुरु की दृष्टि प्राप्त है। इसके अतिरिक्त मंगल पर लग्नेश शनि की दशम दृष्टि भी बल प्रदान करती है, जिससे मंगल की दशा में जातक ने खेल के क्षेत्र में विशेष कीर्तिमान स्थापित किए।

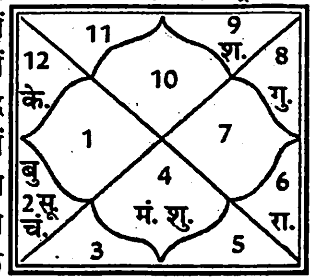
2. छटे भाव में सूर्य-बुध का योग (बुधादित्य योग) जातक को तेजस्वी, खेल जगत में विख्यात, प्रसिद्ध, धन-मान-प्रतिष्ठा आदि में वृद्धि की है।

3. चन्द्रमा लग्न तथा नवांश दोनों में गुरु की राशि (धनु) में होने से वर्गोत्तम स्थिति में है। जिससे जातक अपने कार्य क्षेत्र में कुशल, श्रेष्ठ, धन-सम्पदा, लेखन एवं लोकप्रियता आदि आर्जित करने में सफल हुए हैं। इसी भांति राहु-केतु भी वर्गोत्तम स्थिति में होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी हुआ है।

4. गुरु जन्म कुं. में नीचस्थ होने पर भी नवांश में स्वराशिस्थ होने से जातक को अपनी दशा में शुभ फल ही प्रदान कर रहा है।

प्रसिद्ध उद्योगपति-अनिल अम्बानी

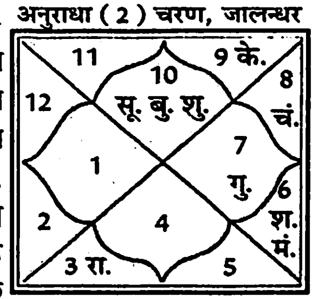
उदा. कुण्डली नं. 99
6 जून, 1959 ई.
रोहिणी, महाराष्ट्र



कुं. नं. 99 प्रसिद्ध उद्योगपति धीरू भाई अम्बानी के पुत्र अनिल अम्बानी की मकर लग्न में सशक्त कुंडली है। लग्नेश शनि द्वादश भाव में होने पर भी उसकी धन भाव में कुम्भ राशि पर स्वगृही दृष्टि पड़ रही है तथा गुरु की ही पंचम भावस्थ सूर्य एवं सप्तम भावस्थ मंगल-शुक्र तथा कर्क राशि पर स्वोच्च दृष्टि पड़ रही है। ध्यान रहे, इस लग्न में लग्नेश 3, 6, 8, 12वें हानिकारक नहीं होता है। फलस्वरूप जातक की कुण्डली में दोनों महत्त्वपूर्ण ग्रह जातक को पैतृक क्षेत्र में पिता एवं भाई द्वारा विपुल धन-सम्पदा में वृद्धि कराने में सहायक सिद्ध हुए हैं। गुरु की तृतीय भाव पर स्वगृही दृष्टि भ्रातृ सुख में वृद्धिकारक तथा सप्तम भाव पर उच्च दृष्टि विवाह के पश्चात् विशेष धन लाभ एवं भाग्योन्नति दर्शाती है। सप्तम भाव में मंगल-शुक्र का योग होने से जातक का प्रेम विवाह प्रसिद्ध सिने तारिका टीना मुनीम से हुआ था। इसके अतिरिक्त जातक की जन्म कुण्डली में मंगल-शुक्र का योग केन्द्रेश व त्रिकोणेश का सम्बन्ध होने से सफल राज योग बना है। दूसरा राजयोग त्रिकोण पंचम में भाग्येश बुध व केन्द्रेश चन्द्र एवं सूर्य का योग बना है, जिसके फलस्वरूप जातक बृहद् कैमीकल्ज़ व पैट्रोलियम सम्बन्धी उद्योगों में विशेष सफल हो पाया है तथा गृहस्थ व आर्थिक क्षेत्र में भी अत्यंत भाग्यशाली एवं सम्पन्न हो सका है। पंचम एवं सप्तम भाव के मध्य स्थान परिवर्तन योग होने से जातक अत्यंत समृद्धशाली हुआ है।

कम्प्यूटर क्षेत्र में उच्चशिक्षित मेधावी जातिका

उदा. कुण्डली नं. 100
2 जन., 1982 ई.
अनुराधा (2) चरण, जालन्धर



प्रस्तुत जन्म कुण्डली कम्प्यूटर क्षेत्र में उच्चशिक्षा प्राप्त एक जातिका की है। यह सुन्दर वर्ण, सुन्दर नेत्र एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाली, परिश्रमी, अत्यंत बुद्धिमान, पराक्रमी, मधुरभाषी, ईमानदार, व्यवहार कुशल, एवं कम्प्यूटर सम्बन्धी उच्च शिक्षित होने के साथ-साथ हिन्दी व अंग्रेजी साहित्य में भी विशेष कुशल है। सम्पन्न परिवार में उत्पन्न इस जातिका के माता-पिता एवं दो बड़े भाई निजी व्यवसाय में सुप्रतिष्ठित हैं। जन्म के समय मकर लग्न तथा शनि का ही नक्षत्र (अनुराधा) एवं बृश्चिक राशि होने से यह जातिका साहसी, दृढ़ निश्चयी, दयालु एवं परोपकारी स्वभाव, धार्मिक प्रवृत्ति, उदारहृदया, साहसी, स्पष्टवादी, सत्यनिष्ठ हुई है। केन्द्रगत गुरु होने से जातिका दृढ़ निश्चयी, जिस कार्य को करने का संकल्प कर लेती है, उसे प्रत्येक स्थिति में दृढ़तापूर्वक पूरा करती है। यह जातिका भूमि, आवास एवं वाहन आदि सुख के साधनों से सम्पन्न है। इस सम्बन्ध में कुछ ज्योतिषीय योग निम्नलिखित अनुसार होंगेः-

1. जातिका की जन्म कुण्डली में लग्नेश शनि तथा भाग्येश बुध के मध्य स्थान-परिवर्तन योग होने से यह जातिका भाग्यशाली, धार्मिक आस्था रखने वाली, धार्मिक ग्रंथ, पुराण, शास्त्र एवं कम्प्यूटर व विज्ञान आदि तकनीकि विषयों में रूचि रखने वाली हुई है।

2. **राज योगः**-केन्द्रेश-त्रिकोणेश शुक्र-बुध का योग केन्द्र (लग्न) भाव में होने से राज योग तुल्य फल मिलता है। अर्थात् जातक धनवान्, भूमि, वाहन आदि सुख सम्पदाओं से युक्त होता है।

3. **केदार योगः**-जातिका की जन्म कुण्डली में सभी ग्रह (राहु-केतु को छोड़कर) चार भावों में स्थित हो तो केदार नामक योग होता है, इस योग के फलस्वरूप जातक/जातिका बुद्धिमान कुछ आलसी परंतु सत्यवादी, परोपकारी, धैर्यशाली, कृतज्ञ, माता-पिता के सुख से समन्वित एवं दीर्घजीवी होता है। ऐसी जातिका नवीन उपयोगी कार्य योजना बनाने में कुशल होती है।

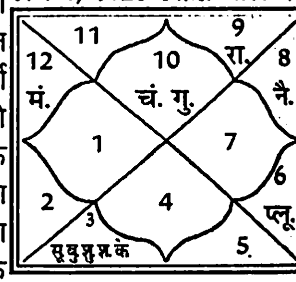
4. **अमल कीर्ति योगः**-लग्न या चन्द्र से दशम स्थान में शुभ ग्रह (गुरु) होने से "अमला योग" बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक सदाचरण, धार्मिक प्रवृत्ति, परोपकारी, गुणी, सौभाग्यवान्, प्रतिष्ठित लोगों द्वारा सम्मानित, मृदु स्वभाव, धनी और मुस्कराकर बोलने वाला होता है।

5. **अनफा योगः**-चन्द्र से द्वादश भाव में गुरु होने से बनता है। जातक बुद्धिमान, गम्भीर गुणी, मेधावी, शुभ व धार्मिक कार्यों में रूचि, भूमि-मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, अच्छी स्मरण शक्ति एवं सुप्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

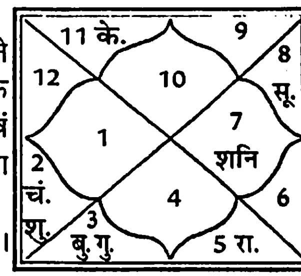
6. नवांश कुण्डली में शुक्र मीन में उच्च राशिस्थ होने से जातिका श्रेष्ठ बुद्धि, पैतृक एवं गृहस्थ सुख-सुविधाओं से सम्पन्न रहेगी।

उच्चकोटि के लेखक तथा प्रकाशक

उदा. कुण्डली नं. 101
19 जून, 1973 ई.
श्रवण, 9:25 P.M. जालन्धर



नवांश कुंडली



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक बुद्धिमान, गम्भीर, परिश्रमी, स्वाभिमानी, सतर्क, सुन्दर, श्वेत वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी तथा कानून की शिक्षा पारित एक मेधावी स्नातक की है। इन्होंने अप्रैल 1998 ई. में 25 वर्ष की अल्पायु में कानून (L.L.B.) की डिग्री प्राप्त की। परंतु कैरियर की दृष्टि से इन्होंने वकालत का व्यवसाय न अपना कर लेखन व प्रकाशन का व्यवसाय (Business) करना ही पसंद किया, तथा उसी क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण एवं उच्च स्थान प्राप्त किया। उस समय इन्हें राहु मध्य शुक्र की अन्तर्दशा लगी हुई थी जो कि अप्रैल 2000 तक रही। शुक्र की ही भुक्ति में (जन. 2000 ई.) को इनका विवाह एक सुन्दर एवं सुशील कन्या से हुआ तथा उसी वर्ष के अंत में इनके यहां एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ। यह जातक माता-पिता तथा भाई-बहन के सुख एवं सहयोग से युक्त तथा भूमि, मकान, वाहन आदि साधनों से सम्पन्न, पराक्रमी, उद्यमी, अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क एवं सावधान तथा निज पुरुषार्थ से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला है। इनकी जन्म कुण्डली में ज्योतिष सम्बन्धी कुछ मुख्य योग इस प्रकार से पाए जाते हैं:-

1. **गज केसरी योग**:-चन्द्रमा से केन्द्र स्थान (१, ४, ७, १०) में स्थान में गुरु होने से यह योग बनता है। जातक की कुण्डली में यह योग लग्न भाव में बनने से जातक मेधावी, गुण सम्पन्न, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क रखने वाला, विनम्र-धन-धान्य एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। परंतु उपरोक्त जातक की कुण्डली में गुरु नीच राशि का होने से उत्तम फलों में कुछ कमी होगी।

2. गुरु द्वादशेश व तृतीयेश होकर लग्न में नीचस्थ होने से स्वास्थ्य में कुछ कमी की है। छटे भाव में चतुर्ग्रही होने से जातक पेट सम्बन्धी रोगों से पीड़ित रहता है।

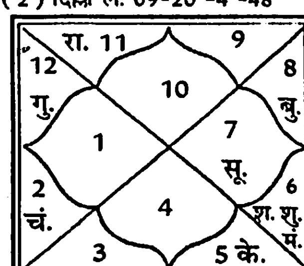
3. जातक की जन्म कुण्डली में नवमेश व दशमेश बुध व शुक्र का योग होने से राजयोग कारक हुआ है जिससे जातक यशस्वी, ऐश्वर्यमय जीवन करने वाला, धार्मिक विचारों से युक्त, लेखन, प्रकाशन आदि व्यवसाय से लाभान्वित एवं प्रतिष्ठित हुआ है। परंतु छटेभाव में योग होने से अत्युत्तम फल में कमी हुई है।

4. **शूल योग**:-जातक की जन्म कुण्डली में राहु-केतु को छोड़कर अन्य सभी ग्रह तीनों राशियों में होने से शूल नामक योग हुआ है। जिससे जातक कुछ तीक्ष्ण स्वभाव का परंतु साहसी, परोपकारी, स्वाभिमानी प्रकृति का होता है।

5. नवांश कुण्डली में भी बुध मिथुन राशि का होने से बुध वर्गोत्तम स्थिति में है जिससे जातक ज्योतिष, लेखन आदि बौद्धिक कार्यों तथा व्यापार में अधिक दक्ष हुआ है।

उच्च प्रतिष्ठित, स्वावलम्बी एवं प्रसिद्ध उद्योगपति

उदा. कुण्डली नं. 102
16 नवम्बर 1951 ई., 12:25 IST मृग (2) दिल्ली ल. 09-20°-4'-48''



मकर लग्न एवं कर्क के नवांश में उत्पन्न प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक प्रसिद्ध उद्योगपति की है। जो अत्यंत बुद्धिमान, परिश्रमी, हंसमुख, कर्म-निष्ठ एवं उच्च-प्रतिष्ठित, स्वावलम्बी, परोपकारी स्वभाव एवं धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। यह वर्तमान काल में फर्नेस आयल, कैमीकल्ज़ एवं कोयले के थोक व्यापार (Trading) में संलग्न हैं। इन्हें पैतृक सुख सम्पदा का अभाव रहा। जबकि मातुल पक्ष एवं बड़े भाई का सुख प्राप्त हुआ है। 1976 ई. में गुरु की दशा में लगभग 25 वर्ष की आयु में इनका विवाह सुन्दर एवं सुशील, लड़की से हुआ। विवाहोपरांत इनके भाग्य में विशेष लाभ व उन्नति हुई। विशेषकर 1977 ई. में प्रथम कन्या की पैदायश के पश्चात् भाग्य में विशेष परिवर्तन हुए, तदुपरांत 1979 तथा 1984 ई. में क्रमशः दो लड़कों का सुख प्राप्त हुआ। 1996 ई. में शनि की दशा व केतु के अंतर में पिता का निधन हुआ। जून 1996 तक शनि मध्य केतु की भुक्ति पर्यन्त व्यवसाय में सांझेदारी रहने से विशेष लाभ नहीं प्राप्त हुए, परंतु अगस्त 1996 के उपरांत प्रापर्टी के काम से भी समुचित

लाभ हुए। शनि मधये चन्द्रन्तर (2001-02 ई) तथा भौमान्तर का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिनाईयों से भरा निकला। जबकि भौमान्तर का अंतिम भाग मार्च 2003 ई. तथा राहुऽन्तर का प्रारम्भ विशेष तौर पर लाभ एवं उन्नति प्रदायक सिद्ध हुआ है। इनकी जन्म कुण्डली सम्बन्धी कुछ प्रसिद्ध योग इस प्रकार से बनते हैं:-

1. जातक की जन्म कुण्डली में सप्तम भाव पर गुरु स्वोच्च एवं शुभ दृष्टि पड़ना एवं सप्तमेश चन्द्र का पंचम भाव में उच्च राशि (वृष) में आना तथा भाग्येश बुध की चन्द्र पर शुभ दृष्टि पड़ने से जातक को व्यवसाय सम्बन्धी विशेष परिवर्तन एवं लाभ प्राप्त हुए। ध्यान रहे, शुभ-बुध से चन्द्र को विशेष बल प्राप्त होता है।

2. नवांश कुण्डली में सप्तम (कर्क) नवांश का उदय होने से भी जातक उच्चाकांक्षी, पराक्रमी, कुशल प्रबन्धक तथा विवाह एवं सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् विशेष भाग्योन्नति होती है।

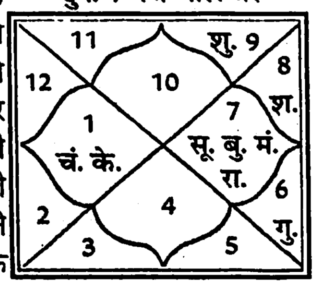
3. नवांश कुं. में भूमिकारक मंगल उच्च राशि का होने से जातक को प्रापर्टी सम्बन्धी क्रय-विक्रय से भी विशेष लाभ प्राप्त हुए।

4. **राजयोग**:-जातक के भाग्य स्थान में लग्नेश शनि व केन्द्र-त्रिकोणेश शुक्र का सम्बन्ध होने से विशेष राजयोग बना है। इस योग को लाभेश मंगल का सम्बन्ध तथा गुरु की शुभ दृष्टि होने से जातक को अपने कार्य व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता, सम्मान, प्रतिष्ठा तथा राजसी धन, भूमि, वाहन आदि के सुख प्राप्त होते हैं।

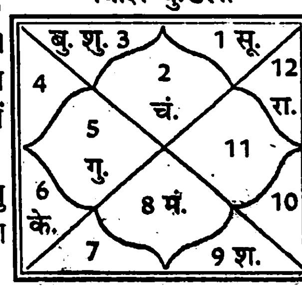
5. दशम में तुला का सूर्य पैतृक एवं बड़े भाई के सुख में कुछ कमी करता है।

एक कर्त्तव्य परायण महिला-आजीवन अविवाह के योग

उदा. कुण्डली नं. 103
6 नवम्बर 1957 ई., अश्वि.I
दुपै. 1 बजे जालन्धर



नवांश कुंडली



मकर लग्न एवं वृष के नवांश में उत्पन्न यह जातिका अत्यंत बुद्धिमान, परिश्रमी, विद्वान, चरित्रवान, गुणी, सरलहृदया, दयालु व परोपकारी स्वभाव एवं धार्मिक, कर्त्तव्य परायणा व अध्ययन शील प्रकृति, व्यवहार कुशल तथा उच्च शिक्षित होने पर भी इन्होंने पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आजीवन अविवाहित रहने का दृढ़ संकल्प लिया हुआ है। इनके दो बड़े भाई तथा एक बड़ी बहन है। जब जातिका की आयु लगभग 20/21 वर्ष की थी, तो इनकी माता का निधन हो गया था, जिसके कारण जातिका का बड़ा शादीशुदा भाई गंभीर रूप से रुग्ण एवं मानसिक तौर पर विक्षिप्त हो गया। (उस समय जातिका को शुक्र की महादशा के मध्य बुध का अन्तर तथा तदनन्तर केतु की अन्तर्दशा व्याप्त रही।) पिता जी भी बहुत बीमार रहने लगे। परिस्थितियों की चुनौतियों को स्वीकारते हुए तब इस जातिका ने स्वयं आजीवन अविवाहित रहकर परिवार की सेवा करने का दृढ़ व्रत धारण किया। एक उच्च संस्थान में बतौर सर्विस कार्यशील रहती हुई, अपने कर्त्तव्यों का सफलतापूर्वक पालन कर रही है। जून 1998 में मंगल की महादशा के मध्य राहु के अंतर में पिता के निधन के पश्चात् भी अपने उच्चादर्श, निष्काम सेवाकार्य सफलतापूर्वक निभाती रही है। धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त इन्हें ज्योतिष, मंत्र आदि विषयों में भी विशेष रूचि है। जातिका का अधिकांश समय व्रत-प्रतिपालन, भक्ति, दान तथा साधु-महात्माओं की सत्संगति में बीतता है। इनकी जन्मकुण्डली में कुछ मुख्य ज्योतिषीय योग इस प्रकार से मिलते हैं:-

1. **कल्पद्रुम योग**:-जातिका की जन्मकुण्डली में आंशिक केमद्रुम बन रहा है, किन्तु कुण्डली में लग्न से तथा चन्द्र दोनों से केन्द्र में ग्रह होने से केमद्रुम योग भंग होकर जातिका को पिता, बड़े भाईयों, खुला आवास, धन, बौद्धिक गुणों आदि के सुख दिए हैं। परंतु

2. सप्तमेश चन्द्र केतु युक्त होकर पाप ग्रहों की दृष्टि में होने से जातिका को वैवाहिक सुख में कमी तथा माता के सुख में भी कमी हुई है। (क्योंकि चतुर्थ भाव तथा चन्द्रमा माता का कारक होता है।)

3. लग्न भाव पर लग्नेश शनि की स्वगृही, मंगल की उच्च दृष्टि तथा गुरु भी शुभ किन्तु नीच दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप जातिका उच्चादर्श रखने वाली, स्वाभिमानी, एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाली हुई है।

4. एकादश में शनि जातिका को उदासीनता, सूक्ष्म विश्लेषण करने की शक्ति तथा नवम में गुरु परोपकारी स्वभाव तथा धर्म के प्रति गहरी आस्था देता है।

5. नवांश कुण्डली में चन्द्र, सूर्य स्वोच्च राशियों तथा बुध, मंगल स्वराशियों में होने से जातिका मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा पाने वाली तथा मानसिक व आत्मिक शक्ति प्रबल हुई है।

कुम्भ राशि एवं कुम्भ लग्न (Aquarius)



(गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द)

यदि जातक के पास अपने जन्म की तारीख, वार, समय, मासादि का विवरण नहीं है तो वह अपने नाम के प्रथमाक्षर के अनुसार अपनी राशि को चयन कर सकता है।

कुम्भ लग्ने नरो जातः स्थिर चित्तोऽतिसौहृद :।
परदाररतो नित्यं मृदुकायो महासुखी॥
प्रच्छन्न पापो घटतुल्यदेहो विघातदक्षोऽध्वसहोऽल्पवित्तो।
उपहृतबन्धु : क्षयवृद्धियुक्तो घटोद्भव- स्यात्प्रिय गन्ध पुष्प :॥

अर्थात् कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्थिर बुद्धि, मैत्री सम्बन्ध बनाने में कुशल, विशेषकर स्त्रियों से सम्बन्ध करने में प्रवीण, कामुक, कोमल एवं सुन्दर शरीर तथा सुखी होता है। ऐसा जातक कभी गुप्त रूप से कार्य करने में कुशल, अधिकाधिक धन प्राप्ति का इच्छुक, अत्यन्त परिश्रमी, दूसरों को चोट (आघात) पहुंचाने में दक्ष होता है। इनका शरीर भी घड़े के आकार का होता है। आत्मीय भाई-बन्धुओं के सुख में कमी, आर्थिक क्षेत्र में अस्थिरता अर्थात् उतार-चढ़ाव अधिक रहते हैं।

कुम्भ राशि राशिचक्र की ग्याहरवीं राशि है। मेष सम्पत् से इसका विस्तार क्षेत्र 300 अंश से 330 अंश देशान्तर तक माना जाता है। इस राशि का स्वामी ग्रह शनि है। कुम्भ राशि का प्रतीक कन्धे पर कलश धारण किए हुए पुरुष है। यह स्थिर संज्ञक, वायु तत्त्व प्रधान पुरुष राशि मानी जाती है। इस राशि के अन्तर्गत **धनिष्ठा** के अन्तिम दो चरण, **शतभिषा** के चारों चरण तथा **पूर्वाभाद्रपद के प्रथम** तीन चरण आते हैं। ऊपर लिखे नक्षत्र-चरण व नक्षत्राक्षरों के आधार पर ही बच्चे का नाम रखने की परम्परा है। जन्म राशि अथवा लग्न राशि के अतिरिक्त जातक के व्यक्तित्व पर प्रसिद्ध नाम राशि तथा जन्म नक्षत्र का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। क्योंकि प्रत्येक नक्षत्र का स्वामी ग्रह अलग-अलग होता है। नक्षत्र फल के सम्बन्ध में हम ज्योतिष तत्त्व प्रथम गणित खण्ड में विस्तार से विवरण लिख चुके हैं, पाठक अवलोकन कर सकते हैं। जन्म नक्षत्र के सम्बन्ध में इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि किसी जातक के जन्म समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र चरण में होगा। उसी के आधार पर मनुष्य को ग्रह दशा का प्रारम्भ होगा तथा गोचरवश भी जब कोई ग्रह उस नक्षत्र पर से संचार करता है, वह अपने गुण स्वभावानुसार शुभाशुभ फल प्रदान करता है।

कुम्भ लग्न/राशि के अन्तर्गत आने वाले नक्षत्रों में धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल, शतभिषा का राहु तथा पूर्वाभाद्रपद का स्वामी ग्रह गुरु होता है। कालपुरुष में कुम्भ राशि का सम्बन्ध दोनों पिण्डलियों पर तथा जोड़ों, नसों, श्वास एवं रक्त संचालन की प्रक्रिया से भी होता है।

शनि की यह मूलत्रिकोण राशि है। इसमें कोई ग्रह न उच्च का होता है और न नीच का। नैसर्गिक ग्रह मैत्री चक्रानुसार कुम्भ राशि शुक्र ग्रह के लिए मित्र राशि तथा चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु के लिए सम राशि तथा सूर्य के लिए शत्रु राशि मानी जाती है। यह राशि लग्न में बली होती है। निरयण सूर्य प्रतिवर्ष कुम्भ राशि पर लगभग 13 फरवरी से 13 मार्च के मध्य संचार करता है। जबकि सायन (पाश्चत्य मतानुसार) सूर्य प्रतिवर्ष प्राय: 20 जनवरी से 18 फरवरी के मध्य संचरित होता है। पाश्चात्य मतानुसार राशियों का प्रणयन सायन पद्धति के अनुसार ही किया जाता है। चैत्र मास में यह राशि दग्ध (शून्य) अर्थात् शक्तिहीन मानी जाती है।

कुम्भ राशि के अन्य पर्यायवाची- घट, तोपधर, पयोधर, कुट, चित्तामय, कुम्भघर, घट धर, कलश, घट रूप इत्यादि, ऊर्दू में दिलो तथा अंग्रेजी भाषी लोग इसको (Aquarius) अक्वेरियस नाम से बुलाते हैं।

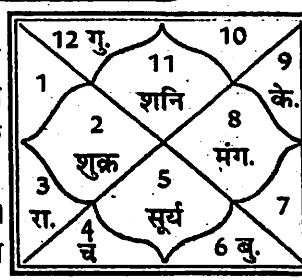
कुम्भ राशि द्वादश राशियों में सर्वाधिक मानवीय गुणों से भरपूर तथा अपने उद्देश्य के प्रति ईमानदार और प्रतिबद्ध राशि है। यह स्थिर राशि पुरुष संज्ञक, वायु तत्त्व प्रधान, दिवस बली, कृष्ण वर्णा, तमोगुणी, विषम, त्रिदोष एवं ऊष्ण प्रकृति, शीर्षोदयी, ऊष्ण एवं स्निग्ध प्रकृति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी होती है। इस राशि का जातक धर्म प्रिय, अनुसन्धानात्मक एवं नए-नए विषयों के सम्बन्ध में जानने की विशेष प्रवृत्ति होती है।

इस राशि का स्वामी ग्रह शनि, प्रियवार भी शनि तथा प्रिय रत्न नीलम है। इस राशि का प्रथम नवांश तुला से प्रारम्भ होता है तथा अंतिम नवांश मिथुन का है।

सम्बन्धित वस्तुएं- भूमि-जल भूमि से उत्पन्न होने वाले शंख, जवाहारात, नीलम, पुष्प, सीपी, कोयला, लोहा, लौहपूर्जे, पट्रोल व पैट्रोलियम पदार्थ, खनिज पदार्थ, बिजली से सम्बन्धित, कल पुर्जे, तिल, तैल, उड़द, पत्थर, ऊनी वस्त्र, रबड़, चमड़ा उद्योग, कैमिकल्ज़, बिल्डिंग मैटीरियल इत्यादि।

इसके अतिरिक्त सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास व उन्नति के कार्यक्रमों, वायुयान से विदेश आदि यात्राओं का विचार भी कुम्भ राशि से किया जाता है।

कुम्भ लग्न में शुभाशुभ एवं योग कारक ग्रह



सूर्य- कुम्भ लग्न में सप्तमेश होने पर कारक ग्रह माना जाता है। २, ३, ५, १० एवं ११ वें भावों में शुभफल १, ७, एवं ९ भावों में मिश्रित तथा शेष अन्य भावों में प्रायः अशुभ फल प्रदान करता है। इस कुण्डली में सूर्य मारकेश भी होने के कारण (लग्न या लग्नेश का योग या दृष्टि होने पर) जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित एवं खराब करता है। कुछ स्थितियों में सूर्य से शनि को बल भी मिलता है।

चन्द्र- षष्ठेश होने से जातक के मानसिक एवं शरीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। २,३, ४, ९, १०, ११वें भावों में मित्र ग्रहों के साथ हो तो भावानुसार शुभ करता है। अन्य भावों में प्रायः अशुभकारक होता है।

मंगल- मंगल कुम्भ लग्न में तृतीयेश एवं कर्मेश होने से तथा लग्नेश शनि से शत्रुक्षेत्री होने से इस कुण्डली में मिश्रित प्रभाव करेगा। लग्न ३, ५, ८, ९, १०, ११ एवं १२ वें भावों में भावानुसार अशुभ फल करेगा।

बुध- पंचमेश व अष्टमेश होने से मिश्रित प्रभाव करता है। अपनी दशा में विघ्न-बाधाओं एवं अड़चनों के बाद सफलता प्रदान करता है। प्रथम, तृतीय, पंचम, नवम, दशम व व्यय भावों में प्रायः शुभ फल करता है।

गुरु- धनेश व लाभेश होने से अपनी दशा में प्रायः शुभ फल देता है, परन्तु मारकत्व दोष युक्त होने से एवं अशुभ ग्रह के योग या दृष्टि के फलस्वरूप कभी अशुभ फल भी देता है। १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १० एवं ११वें भावों में प्रायः शुभ फल देता है।

शुक्र- कुम्भ लग्न में सुखेश एवं भाग्येश (केन्द्र-त्रिकोण) होने से योगकारक एवं शुभफल प्रदायक होता है। ३, ७, ८, १० एवं व्यय भावों में सामान्य फल अथवा भागयोन्नति में अड़चनों के बाद सफलता देता है। जबकि अन्य भावों में जातक को समाज में यश, प्रतिष्ठा, स्त्री सुख, धन, भूमि जायदाद एवं वाहन आदि सुख देता है।

शनि- लग्नेश एवं व्ययेश (द्वादश भाव का कारक) होने से कुम्भ लग्न में शुभ फलदायक होता है। शनि इस लग्न में ३, ६, ७, ८, १० एवं ११ वें भावों में सामान्य अथवा अशुभ फल परन्तु शेष अन्य भावों में शुभ फल प्रदान करता है।

राहु- अन्य ग्रहों के योग से प्रायः शुभाशुभ फल करता है। कुम्भ लग्न में २, ६, ७, ८, ९, १०वें भावों में प्रायः अशुभ या मिश्रित प्रभाव करता है।

केतु- यह भी अन्यग्रहों के योग से शुभाशुभ फल करता है। कुम्भ लग्न में १, २, ३, ४, ५, ८ व १२वें भावों में अशुभ या मिश्रित प्रभाव करता है।

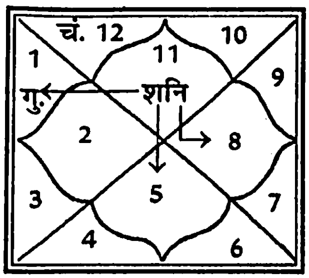
नोट- ध्यान रहे, उपरोक्त शुभ एवं योगकारक ग्रह का शुभाशुभ फल किसी अन्य ग्रह के योग या दृष्टि सम्बन्ध होने से ग्रह के फल में न्यूनाधिकता हो जाने की भी सम्भावना भी रहती है।

कुम्भ लग्न-गुण,स्वभाव, व्यवसाय/विवाह आदि (Aquarius)

शारीरिक गठन एवं व्यक्तित्व-कुम्भ लग्न कुण्डली में यदि लग्नेश शनि शुभ हो तो जातक लम्बे एवं ऊंचे कद का, सुगठित एवं संतुलित शरीर, पुष्ट कन्धे, कुछ बादामी आकृति लिए सुन्दर एवं आकर्षक नेत्र, मांसल एवं गोरा बदन, अण्डाकार सुन्दर तेजस्वी चेहरा, लग्न पर गुरु का भी प्रभाव हो, तो भूरे बाल, हंसमुख, सम्मोहक मुस्कान लिए चेहरा, बांहें लम्बी तथा आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होगा। पिण्डलियों या घुटनो पर तिल या चोट आदि का निशान होने की सम्भावना है।

नोट- अधिक सूक्ष्म फलादेश के लिए जातक की चलित एवं नवांश कुण्डली, ग्रहदशा-ग्रहगोचर आदि को भी ध्यान में रखना चाहिए।

चारित्रिक एवं स्वभावगत विशेषताएँ



*कुम्भ लग्न में शनि स्वक्षेत्री या उच्चादि अवस्था में हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान एवं तीव्र स्मरण शक्ति, दीर्घायु, परिश्रमी, पराक्रमी, उच्चाभिलाषी, स्वतन्त्र एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। कुंडली में शुक्र, गुरु भी शुभ भावस्थ हों तो जातक भरोसेवान, ईमानदार, स्वावलम्बी अर्थात् निज पराक्रम एवं उद्यम से जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, न्याय प्रिय, गम्भीर, तर्क-वितर्क करने में कुशल, धैर्यवान, व्यवहार कुशल, दृढ़ निश्चयी, विद्वान, वाक्पटु, संगीत, गायन, अभिनय, कला आदि साहित्य में कुशल एवं विख्यात होता है। जिस कार्य को करने का संकल्प कर ले उसे पूरे मनोयोग एवं निश्चय से करेगा। कुम्भ जातक में मानवीय गुणों की बहुलता होती है। वह विचारशील परन्तु हंसमुख, चतुर एवं अपने उद्देश्य के प्रति सतर्क एवं सावधान, धन, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सम्पदाओं से सम्पन्न, अन्य लोगों के मनोभावों को समझने में कुशल, संवेदनशील, उदार, दयालु एवं परोपकारी स्वभाव, अपने परिवार, सगे सम्बन्धियों एवं मित्रों के प्रति हर प्रकार से सहायक होता है।

स्थिर एवं वायु तत्त्व प्रधान राशि होने से कुम्भ लग्न जातक मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में उद्यत रहेगा। नए-नए मित्र बनाने एवं उनसे स्थाई सम्बन्ध बनाने में कुशल होता है। कृतज्ञ स्वभाव होने से किसी मित्र या सम्बन्धी द्वारा किए गए उपकार को नहीं भूलता तथा न ही किसी के कपटपूर्ण व्यवहार को भी जीवन भर भुला नहीं पाता। तथा फिर प्रतिशोध लेने से भी नहीं हिचकिचाता है। कुम्भ जातक में अनुसन्धानात्मक एवं प्रबन्धात्मक योग्यता (Managing Capacity) भी विशेष अच्छी होती है। वह दूसरों को उपदेश देने की अपेक्षा, स्वयं कार्य करके दिखाते हैं।

यदि कुम्भ जातक की कुण्डली में द्वितीय या तृतीय भाव किसी पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक/जातिका का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिनाइयों से भरा होता है। आर्थिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में विशेष परेशानियां होती हैं। भाई-बन्धुओं के सुख एवं सहयोग में भी कमी रहती है। कुम्भ लग्न के जातक मनुष्योचित गुणों से सम्पन्न और अपने उद्देश्य के प्रति ईमानदार तथा प्रतिबद्ध होते हैं। कुम्भ राशि के जातक में सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में विकास की अनेक सम्भावनाएं छिपी होती हैं। यदि कुण्डली में शनि, गुरु, बुध, शुक्र आदि ग्रह शुभ एवं योगकारक हों, तो जातक इन ग्रहों की दशाओं में अभिनय, कला, साहित्य तथा व्यवसाय आदि के क्षेत्र में अभूतपूर्व लाभ, उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है। देश-विदेशों में दीर्घ यात्राएं करने के अवसर प्राप्त होंते हैं। इस सम्बन्ध में अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन की कुण्डली विशेष दृष्टव्य है। देखें उदा. कुं० नं. (105)

कुम्भ लग्न के जातकों में रहस्यात्मक, रचनात्मक एवं अनुसन्धानात्मक प्रवृत्ति होने से ज्ञान प्राप्ति के लिए हमेशा

जिज्ञासु एवं प्रयत्नशील रहते हैं। सामान्य भौतिक ज्ञान के अतिरिक्त आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति विशेष जिज्ञासा रहती है। योग, दर्शन, ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र, संगीत, गायन, अभिनय, साहित्य-कला आदि के क्षेत्र में भी विशेष रूचि रहती है। (33) वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योन्नति होती है। भाग्य स्थान पर यदि सूर्य, मंगल, गुरु, बुध आदि ग्रहों की दृष्टि हो तथा भाग्येश शुक्र पंचम में राहु युक्त हो तो जातक का भाग्योदय स्वदेश की अपेक्षा विदेश में होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 107। राजनीति के क्षेत्र में भी विशेष सफल होते देखे गए हैं, देखें उदा. कुं. डा. मुरली मनोहर जोशी।

शिक्षा एवं कैरियर-कुम्भ लग्न कुण्डली में यदि बुध स्वगृही या स्वोच्च होकर पंचम भाव, अष्टम या नवम भावों में शनि या शुक्र के साथ योग या दृष्टि सम्बन्ध करता हो तो जातक/जातिका उच्चकोटि की विद्या ग्रहण करता है। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. 109, यह जातिका उच्चविद्या प्राप्त हैं तथा उच्च विद्या द्वारा अध्यापन के क्षेत्र में विशेष धन लाभ हुए हैं। इसके अतिरिक्त यदि पंचम में शुक्र तथा चतुर्थ में वृष राशि पर बुध अर्थात् शुक्र-बुध में स्थान परिवर्तन योग हो तो भी जातक को उच्च विद्या की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त गुरु, मंगल के योग से जातक चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष सफल होता है। गुरु, शनि, मंगल व बुध के योग दशा एवं दृष्टि आदि के सम्बन्ध से जातक क्रय विक्रय, रबड़, कैमिकल्ज़, निजी व्यवसाय द्वारा विशेष लाभान्वित होता है। शुक्र व बुध के कारण कम्प्यूटर के क्षेत्र में, बैंकिंग, कम्पनी, संस्थान, कामर्स, अभिनय, संगीत-कला, वकालत, अध्यापन आदि के क्षेत्र में सफल होता है। जातक चाहे व्यवसाय के किसी क्षेत्र से सम्बन्धित हो उसे धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, मन्त्र आदि गूढ़ विषयों के सम्बन्ध में अवश्य रुचि रहती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्राय: सूक्ष्म दृष्टि एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हैं। किसी भी महत्त्वपूर्ण विषय या समस्या पर तत्काल निर्णय नहीं करते, बल्कि गम्भीर चिन्तन एवं समस्या को भली भान्ति सोच समझ कर ही अन्तिम निर्णय करते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों एवं कठिन समस्याओं का समाधान गुप्त युक्तियों एवं धैर्यपूर्वक करते हैं। इनके सम्बन्ध बड़े-बड़े उच्च प्रतिष्ठित एवं श्रेष्ठ लोगों के साथ रहते हैं।

आर्थिक परिस्थितियां- कुम्भ लग्न की कुण्डली में यदि गुरु, शुक्र, शनि एवं मंगल ग्रह शुभस्थ हों तो जातक की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। विशेषकर 35 वर्ष की आयु के बाद अथवा उपरोक्त ग्रहों की दशाऽन्तरदशा काल में अच्छे फल प्राप्त होते हैं। यदि कुण्डली में शनि/गुरु ३, ५, ६, ७, ८ या १०वें भाव में हों तो जातक अच्छी सर्विस में रहकर समुचित धन लाभ एवं भाग्य में उन्नति के अवसर प्राप्त करता है।

जन्म कुण्डली में १, ४, ९, ११वें भावों में शनि व गुरु होने की स्थिति में जातक स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा धन, सम्पदा, भूमि, मकान, वाहन आदि सुख के साधन अर्जित करता है। परन्तु विशेष वांछित धन लाभ 38 वर्ष की आयु के बाद ही मिल पाते हैं।

द्वितीय भाव में राहु, बुध, चन्द्र, भौम आदि अशुभ ग्रह हों अथवा गुरु, मंगल आदि भी अशुभस्थ हों तो जातक को पारिवारिक एवं आर्थिक परेशानियां बनी रहती हैं तथा जीवन का पूर्वार्द्ध भाग आर्थिक दृष्टि से संघर्षपूर्ण एवं कठिनाइयों से युक्त रहता है। आर्थिक तंगी एवं व्यवसाय में उतार चढ़ाव बहुत होते हैं। यदि द्वितीय भाव में गुरु स्वगृही हो अथवा गुरु की शुभ स्वगृही दृष्टि हो, शनि भी शुभस्थ हो तो जातक को पारिवारिक एवं धन सम्पदा आदि विशेष सुखों की प्राप्ति होती है।

उपयुक्त व्यवसाय- कुम्भ लग्न के जातकों पर शनि व गुरु दोनों बृहद् ग्रहों का प्रभाव होने से सूक्ष्म एवं दूरदर्शी एवं व्यापक दृष्टिकोण रखते हुए व्यवसाय के सम्बन्ध में भी दूरगामी योजनाएं बनाने में कुशल होते हैं। कुम्भ जातकों के लिए निम्नलिखित व्यवसाय विशेष उपयुक्त एवं लाभप्रदायक पाए गए हैं-

प्राध्यापन, प्रोफैसर, न्यायालय (वकील, जल आदि), गुप्तचर सेवा, वैज्ञानिक, पुरातत्त्व, राजनीति, नेता, दार्शनिक, अभिनेता, इंजीनियर, जौहरी (Jewellers), पत्थर, लोहा, लकड़ी, ताम्बा, रबड़ आदि धातुओं से सम्बन्धित व्यवसाय, भूमि का क्रय-विक्रय, सेना, पुलिस, लेखन, प्रकाशन, प्रिंटिंग प्रैस, पैट्रोलियम पदार्थ, ठेकेदारी, खेल (Sports),

बिल्डिंग मैटीरियल, कोयला, पत्थर, भट्ठे, कृषि सम्बन्धी, चिकित्सा एवं दवाई विक्रेता, कम्प्यूटर, व्यापारी, वास्तुकला, ज्योतिषी, फोटोग्राफी, संगीत, गायन, बिजली (Electrical), किरयाना व्यापारी, ड्राइविंग, डेयरी फार्म, शिक्षा संस्थान, रिसर्च एवं अनुसन्धान कार्य, उच्च पद प्राप्त पदाधिकारी, वाहन चालक एवं विक्रेता, दन्त चिकित्सक, बेकरी, मिठाई विक्रेता, शेयर मार्कीट से सम्बन्धित कार्य, धर्माचार्य, समाज सेवक, सुधारक, सेल्ज़मैन, डिज़ाइनिंग, वस्त्र उद्योग इत्यादि लघु विस्तृत उद्योग, कमीशन एजैण्ट्स, (आढ़त), मशीनरी या स्पेयर पार्टस, सीमेण्ट उद्योग, तैल, तिल आदि पंसारी व मनियारी के कार्य, मदिरा (अल्कोहल) से सम्बन्धित कार्य क्षेत्रों में लाभान्वित होने की सम्भावनाएं होती हैं।

भाग्योन्नतिकारक वर्ष- 28, 33, 36, 38, 42 एवं 48 होते हैं।

स्वास्थ्य एवं रोग- कुम्भ लग्न के जातक की जन्म कुण्डली में यदि शनि, गुरु, मंगल, ग्रह शुभ हों, नवांश कुण्डली में भी यह ग्रह बली हों एवं लग्न पर स्वगृही या मित्र ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक का स्वास्थ्य उत्तम अथवा ठीक रहता है तथा जातक आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है। इस सम्बन्ध में कुण्डली नंबर 105 (अमिताभ बच्चन) में ग्रहों का स्पष्ट उदाहरण देखा जा सकता है। यदि कुण्डली में शनि, गुरु, सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु आदि ग्रह निर्बल एवं अशुभ स्थिति में हों तो जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। उसे वायु एवं कफ, जन्य रोग, स्नायु दुर्बलता, रक्तचाप (Blood-Pressure), हृदय दौर्बल्य, वातज रोग (सन्निपात, लकवा आदि) अधिक श्रम से मानसिक थकान, शीत प्रकोप, दान्त, गले, टांसिल, घुटनों एवं जोड़ों के दर्द, पिण्डलियों में सूजन, रक्ताल्पता या रक्त विकार, दाद-खुजली आदि चर्म रोग, नेत्रपीड़ा, गठिया, वातशूल, पत्थरी आदि रोगों का भय रहता है। यदि कुण्डली में चन्द्र या सूर्य अशुभ हों तो जातक को उन्माद, अनिद्रा, नेत्र विकार, मस्तिष्क विकार, मन्दाग्नि, मेरुदण्ड में पीड़ा, शिर पीड़ा, कोष्ठबद्धता, उदर विकार आदि रोगों की सम्भावना होती है। कभी-कभी निराशा के कारण शराब, तम्बाकू आदि व्यसनों का भी शिकार हो जाते हैं। शुक्र अशुभ हो तो पित्ताशय, मधुमेह आदि रोगों का भय होता है।

उपयोगी परामर्श- कुम्भ जातक को मदिरा आदि अत्यधिक मादक वस्तुओं अथवा अत्यधिक ठण्डी या अति गर्म वस्तुओं के सेवन से परहेज रखना चाहिए। संतुलित भोजन ग्रहण करना चाहिए। आशावादी दृष्टिकोण के साथ-साथ नियमित व्यायाम एवं प्राणायाम करना इनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए लाभदायक होगा।

प्रेम सम्बन्ध एवं वैवाहिक सुख

कुम्भ लग्न जातक कल्पनाशील एवं रहस्यमय प्रकृति के होते हुए भी प्रेम-सम्बन्धों का सूत्रपात प्रायः मैत्री भाव से करते हैं। इनका प्रेम हृदय की सूक्ष्म एवं गहन अनुभूतियों से प्रेरित होता है। प्रेम में प्रदर्शन व दिखावटीपन नहीं होता, फिर भी अपनी पत्नी को हर सम्भव सुख-सुविधाएं प्रदान कराने में प्रयत्नशील रहते हैं। कुम्भ लग्न के जातक अपनी प्रेमिका (या प्रेमी) अथवा जीवन साथी का चयन बौद्धिक योग्यता को ध्यान में रखते हुए करते हैं। यद्यपि उन्हें विपरीत योनि (Opposite Sex) के प्रति विशेष सौन्दर्यानुभूति एवं आकर्षण होता है। परन्तु वह ऐसा जीवन साथी पसन्द करते हैं जो इन्हें बाह्य प्रेमाकर्षण के साथ-साथ बौद्धिक क्षेत्र में भी साथ दें। कुम्भ जातक प्रेम के सम्बन्ध में सुनिश्चित धारणाएं रखते हैं। कुण्डली में यदि सप्तमेश सूर्य तथा शुक्र मित्र क्षेत्र एवं शुभ स्थिति में पड़े हुए हों तो कुम्भ जातक अपने मनोऽनुकूल जीवन साथी पाने में सफल रहता है तथा उसका दाम्पत्य जीवन प्रायः सुखी होता है।

यदि सप्तमेश सूर्य बली हो अथवा सप्तम भाव पर अशुभ ग्रहों का योग या दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो तथा गुरु व शुक्र की स्थिति भी ठीक न हो तो जातक/जातिका के वैवाहिक सुख में कमी रहती है। यदि कुम्भ लग्न के जातक की कुण्डली का पत्नी के साथ नक्षत्र एवं गुण मिलान ठीक से हुआ हो तो पति-पत्नी दोनों अपने पूर्वाग्रह विचारों से मुक्त नहीं हो पाते तथा दोनों में स्वाभिमानी प्रकृति एवं अहंभाव में टकराव के कारण दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रह पाता। सप्तम भाव में सूर्य-मंगल के योग में तथा कुछ अन्य अशुभ योगों के कारण कुम्भ जातक/जातिकाओं में विवाह के बाद सम्बन्ध विच्छेद अथवा अविवाहित रहने की प्रवृत्ति भी पाई गई है।

उपयुक्त जीवन साथी (Suitable Match)- कुम्भ लग्न के जातक/जातिका को वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं मीन लग्न की जातिका या जातक के साथ मैत्री, व्यवसायिक अथवा वैवाहिक सम्बन्ध शुभ एवं लाभदायक हो सकते हैं।

सावधानी- कुम्भ राशि वायु तत्त्व प्रधान एवं स्थिर राशि होने के कारण कुम्भ लग्न जातक कई बार पूर्वाग्रही विचारों से ग्रस्त होकर आवेश एवं अति भावुकतावश दूसरों को स्पष्ट एवं कटु वचन भी कह देते हैं जिससे कई बार लाभ की अपेक्षा हानि हो जाती है। अति आलोचनात्मक प्रवृत्ति से भी बचें। अपने सामर्थ्य से अधिक परिश्रम करने की अपेक्षा संयोजित एवं योजनाबद्ध तरीके से पुरुषार्थ करना आपके लिए लाभदायक होगा।

कुम्भ लग्न की स्त्रियां (Aquarian Born Ladies)



कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातिका का ऊंचा अथवा मध्यम कद, संतुलित एवं सुगठित शरीर रचना अण्डाकार मुखाकृति, गोरा एवं तेजस्वी वर्ण, सम्मोहक चुम्बकीय मुस्कान लिए आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होगी। बादामी आकार जैसी आकर्षक एवं सुन्दर आंखें होंगी।

स्वभावगत विशेषताएं- कुम्भ लग्न की जातिका तीव्र बुद्धिमति, अच्छी स्मरणशक्ति, परिश्रमी, गुणी, दयालु एवं परोपकारी स्वभाव, संवेदनशील, अपने कर्त्तव्य के प्रति ईमानदार, व्यवहार कुशल, हंसमुख, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल परन्तु अन्तरंग मित्रों की संख्या सीमित होगी।

कुम्भे च लग्ने वनिता सुजाता स्त्री जन्मदक्षा कुलाग्रजा।
नित्य गुरुणां सुविरुद्ध चेष्टा व्ययशीला पुष्यपरा कृतघ्ना॥

अर्थात् कुम्भ लग्न की जातिका अच्छे कुल में उत्पन्न, गुणी, कुल में श्रेष्ठ, अपने गुणों द्वारा परिवार एवं समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली, स्वतन्त्र प्रिया, स्वाभिमानिनी, उदार एवं धर्म-परायणा, शुभ कार्यों पर खर्च करने वाली तथा दूसरों का उपकार मानने वाली होगी। ऐसी जातिका दूसरों पर अधिकार पूर्ण वाणी का प्रयोग करने वाली, तर्क-वितर्क करने में कुशल, तथा किसी के साथ मैत्री स्थापित करने में कुशल होगी। किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर निर्णय लेने से पूर्व, यह उस विषय के सम्बन्ध में पर्याप्त गम्भीरता पूर्वक विचार करती हैं, कई बार निर्णय करने में विलम्ब भी हो जाता है। कुण्डली में यदि शनि शुक्र एवं गुरु शुभस्थ हों, तो जातिका वाक्पटु, विद्वान, वार्तालाप करने में कुशल, संगीत, गायन, अभिनय, नृत्य आदि कलाओं में विशेष रूचि रखने वाली, जिस कार्य को करने का निश्चय करे, उसे पूरे मनोयोग एवं हृदय से करेगी। आतिथ्य सत्कार एवं सेवा करने की भावना भी कुम्भ जातिका में विशेष रूप से प्रबल होती है। धर्म कार्यों एवं घर परिवार में माता-पिता तथा बहिन भाइयों की सेवा अपने उत्तरदायित्व की भावना से करेगी। स्वभाव से धैर्यवान, गम्भीर, मितव्ययी, स्वनियंत्रित एवं उदार प्रवृत्ति की होगी। प्रत्येक प्रकार के सामाजिक वातावरण में स्वयं को ढालने में सक्षम होगी।

शिक्षा व कैरियर- कुण्डली में गुरु, शुक्र, बुध एवं शनि आदि ग्रह शुभ हों तो जातिका उच्च विद्या प्राप्त करने में सफल होती है तथा उच्च विद्या का समुचित लाभ भी जातिका को प्राप्त होता है। जातिका को सरकारी या अर्द्ध-सरकारी क्षेत्रों में अच्छी सर्विस एवं प्राध्यापन आदि के क्षेत्र में उच्च सर्विस प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंते हैं। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 109, कुण्डली में सूर्य व मंगल भी प्रबल हों तो जातिका सरकारी या अर्द्ध-सरकारी शिक्षा संस्थानों में उच्च प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने में सफल होती है।

कुम्भ लग्न जातिका को गुरु व शनि ग्रहों के प्रभावस्वरूप उच्च शैक्षणिक विद्या के अतिरिक्त धर्म, अध्यात्म, योग दर्शन, ज्योतिष, यन्त्र, तन्त्र आदि विद्याओं के प्रति भी विशेष रूचि रहती है। किसी भी विषय के गुण या अवगुण परखने

के बाद ही सम्बन्ध या कार्य करती है। कुंभ जातिका केवल उपदेश ही नहीं देती, बल्कि कार्य को स्वयं क्रियान्वित करके दिखाती है। अध्ययनशील प्रकृति के अतिरिक्त खेल कूद, सैर सपाटा अर्थात् देश-विदेश की यात्राएं करने की भी आकांक्षाएं रखती हैं।

उपयुक्त व्यवसाय- कुम्भ जातिका की कुण्डली में बुध, शुक्र, गुरु व शनि आदि शुभस्थ हों, तो जातिका उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त करके विज्ञान, प्रशासन, अध्यापन, कम्प्यूटर, पत्रकारिता, भौतिक-शास्त्र, मनोविज्ञान, कामर्स, फैशन-डिज़ाईनिंग, ब्यूटी पार्लर, अभिनय, नृत्य, मॉडलिंग, बैंकिंग, वकालत, चिकित्सा, विदेश आदि के क्षेत्रों में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्ति गत पृष्ठों में दिए गए पुरुष व्यवसाय सम्बन्धी विवरण का भी अवलोकन कर सकते हैं।

प्रेम एवं वैवाहिक सम्बन्ध-कुम्भ जातिकाएं प्राय: प्रेम एवं विवाह सम्बन्धों में हृदय की सूक्ष्म एवं गहन सम्वेदनाओं से प्रेरित होती हैं, फिर भी वह अपने भावी जीवन साथी में बाह्य सुन्दर व्यक्तित्व के साथ-साथ शैक्षणिक बौद्धिक योग्यता एवं सामाजिक स्तर को भी अवश्य प्राथमिकता देती हैं। विवाह सम्बन्धों में माता-पिता की सहमति के अतिरिक्त स्वतन्त्र निर्णय को भी अधिमानता देती है। विवाह के पश्चात् वह अपने पति एवं परिवार के प्रति पूर्ण निष्ठावान एवं समर्पित होती है तथा गृहस्थ के प्रति अपने दायित्वों को पूरी ईमानदारी से निभाने के प्रयत्न करती है। आर्थिक क्षेत्र में भी सहायक होती है। कुण्डली के ग्रह नक्षत्र का मिलान अच्छी प्रकार से करके विवाह किया गया हो तो कुम्भ जातिका का भावी दाम्पत्य जीवन सुखी एवं खुशहाल रहता है। यदि कुण्डलियों का परस्पर मिलान भली भान्ति न हुआ तथा सप्तम भाव पर राहु, सूर्य, मंगल, केतु, चन्द्रादि ग्रहों का अशुभ योग या दृष्टि आदि हो तो जातिका को वैवाहिक सुख में कमी रहती है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 109

उपयुक्त जीवन साथी (Suitable Match) - कुम्भ लग्न की जातिका को वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं मीन लग्न के जातक के साथ विवाह अथवा व्यवसायिक सम्बन्ध अच्छे एवं शुभकारी होते हैं फिर भी जन्मपत्रियों का परास्परिक मिलान कराने के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना चाहिए।

भाग्योन्नति कारक वर्ष- कुंभ जातिका को 23, 25, 28, 32, 36, 38, 42 एवं 48वां वर्ष भाग्योन्नति कारक होते हैं।

स्वास्थ्य और रोग- सामान्यत: बाह्य तौर पर कुम्भ जातिका का स्वास्थ्य अच्छा दिखाई देता है। परन्तु जन्म कुण्डली में यदि शनि, सूर्य, मंगल, चन्द्र, राहु आदि ग्रह अशुभ भावों (सप्तम, अष्टम आदि) में पड़े हों अथवा लग्न/लग्नेश को प्रभावित करते हों अथवा शनि (लग्नेश) निर्बल हो, तो जातिका का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। उसे जुकाम, खांसी, वायु-कफ जनित रोग, स्नायु दौर्बल्य, दन्त विकार, गले, टांसिल, घुटनों एवं जोड़ों के दर्द, पिण्डलियों में सूजन, रक्त विकार अथवा रक्त की कमी, नेत्र विकार, मासिक धर्म की खराबी, मन्दाग्नि, शिर पीड़ा, उदर-विकार, अनिद्रा आदि रोगों का भय रहता है।

कुम्भ लग्न में ग्रहों की दशाऽन्तर दशाओं का संक्षिप्त फल

कुम्भ लग्न के जातक/जातिका की जन्म पत्री में यदि शनि, गुरु, शुक्र एवं बुध ग्रह शुभस्थ हों तथा इनमें से किसी ग्रह की महादशा एवं अन्तर्दशा चल रही हो, तो जातक/जातिका को अपनी दशा या अन्तर्दशा के मध्य मनोवांछित कार्यों में सिद्धि, धन लाभ-उन्नति, विद्या में सफलता, पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ, स्त्री (या पति) से विवाह आदि का सुख, भूमि, जायदाद, मकान, वाहन एवं सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति अथवा घर परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होता है।

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि, गुरु, शुक्र, राहु, केतु आदि ग्रह नीच राशिस्थ, शत्रु राशिगत अथवा किसी

अशुभ या क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर अशुभ भावों (६, ८ या १२वें) भावों में पड़े हों तो विघ्नों एवं अड़चनों के बाद कार्यों में सफलता, धन हानि, आय के साधनों में रुकावटें, परिवारिक कलह, भाई-बन्धुओं के साथ वैमनस्य तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होती हैं।

मंगल, राहु, चन्द्र, गुरु, बुध ग्रह कुम्भ लग्न कुण्डली में शुभ होने पर भी अपनी दशा-अन्तर दशा में शुभाशुभ दोनों अर्थात् मिश्रित प्रभाव करते हैं। राहु-केतु अपनी दशा अन्तरदशा में भाव राशि की स्थिति तथा उस पर अन्य ग्रहों के योग, दृष्टि आदि के अनुसार शुभाशुभ फल करते हैं।

कुम्भ लग्न सम्बन्धी कुछ उपयोगी उपाय

शुभ वार (Favourable Days)- कुम्भ लग्न राशि वाले जातक/जातिका के लिए बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार शुभ एवं भाग्य कारक दिन होते हैं। बुध मंगल तथा गुरुवार मिश्रित (शुभाशुभ) फल प्रदायक होते हैं। जबकि रविवार तथा सोमवार प्राय: साधारण किवां अशुभ फल प्रदान करते हैं।

शुभ रंग (Favourbale Colours)- नीला, काला, संगतरी, आसमानी, भूरा वर्ण (रंग) शुभ होंगे, पीला, हरा मिश्रित प्रभाव रखेंगे जबकि श्वेत व लाल रंग अशुभ रहेगा।

शुभ नग (Lucky Stone)- नीलम सवा पांच रत्ति (ग्राम) का सोने या पंचधातु की अंगूठी में जड़वा कर मध्यमा अंगुली में शनिवार को किसी शुभ मुहूर्त्त में गंगाजल में धोकर मंत्रपूर्वक धारण करना चाहिए।

शनि मंत्र- ॐ प्राम् प्रीम् प्रौम् सः शनये नमः। यदि 23000 की संख्या में जाप करके विधिपूर्वक अभिमन्त्रित करके धारण किया जावे तो और भी अधिक प्रभावी रहेगा।

यदि नग धारण करना मंहगा प्रतीत हो तो नाव की कील से लोहे का छल्ला बनवा कर शनिवार को नग की भान्ति ही विधिपूर्वक धारण करना लाभदायक होगा। यदि कुण्डली में शनि ग्रह अशुभ हो तो शनिवार का व्रत रखना, विधिपूर्वक निर्मित शनि का यन्त्र रखना लोहे की कटोरी में तैल सरसों का डालकर छाया-पात्र करना, औषधि-स्नान, तथा अन्ध विद्यालय या कुष्टाश्रम में नि:सहाय लोगों को भोजन, मिष्ठान, फल, वस्त्र, धन, अनाज आदि के दान द्वारा सेवा एवं सहायता करना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त शनि स्तोत्र का पाठ करना भी कल्याणकारी रहता है। ध्यान रहे, शनि देव के दान आदि के उपाय सायंकालीन किए जाने प्रशस्त माने जाते हैं।

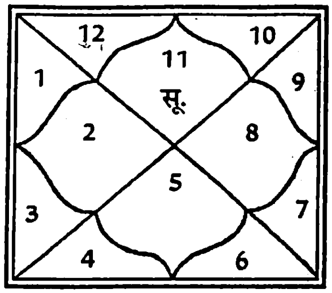
भाग्यशाली अनुकूल वर्ष- 20, 23, 25, 28, 33, 36, 38, 42, 48, 52, 56वां वर्ष

भाग्यशाली अंक- 2, 3 एवं 9 अंक भाग्योन्नतिकारक होते हैं।

नोट-उपायों के लिए हमारे कार्यालय से शीघ्र प्रकाश्य 'अनिष्ट ग्रहों के उपयोगी उपाय' नामक पुस्तक मंगवा कर पढ़ें।

कुम्भ लग्न में सूर्यादि ग्रहों का भावगत फल

कुम्भ लग्ने, सूर्य फल



विशेष– कुम्भ लग्न कुण्डली में सूर्य जायेश एवं व्यवसायेश होने के कारण विशेष महत्त्वपूर्ण होता है। लग्नेश शनि के साथ सूर्य यद्यपि शत्रुभाव रखता है किन्तु कुछ स्थितियों में सूर्य शनि के साथ योग होने से शनि को बल प्रदान करता है। २, ३, ५, ७, ९, १० एवं ११वें भाव में प्रायः शुभ फल होता है।

प्रथम भाव-में कुम्भ राशि पर सूर्य होने से जातक कुछ तीक्ष्ण व कठोर स्वभाव का तथा अपने आत्म सम्मान का विशेष ध्यान रखने वाला, व्यवसाय के क्षेत्र में दौड़धूप एवं संघर्ष अधिक रहता है। अड़चनों एवं विघ्न बाधाओं के बाद कार्य क्षेत्र में सफलता मिलती है। जातक को धर्म, योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में विशेष रूचि होती है।

ऐसा जातक स्वाभिमानी, साहसी, उच्चाभिलाषी एवं कुछ क्रोधी एवं असंतुष्ट स्वभाव का होता है। स्वास्थ्य कें कुछ कमी रहे। पत्नी सुशील, घर परिवार में सहयोग करने वाली किन्तु तेज़ स्वभाव की होगी। जातक को उदर रोग, शिर पीड़ा एवं नेत्र विकार होने की भी सम्भावना हो।

द्वितीय भाव-में मीन राशि पर सूर्य होने से जातक को पारिवारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में संघर्ष अधिक होता है। विवाह के बाद आय के साधनों में सुधार होता है। परन्तु स्त्री स्वतन्त्र व्यवहार वाली और भाग्यशाली होती है। पत्नी के नाम पर अथवा उसके साथ कार्य करने से विशेष लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है। स्वतन्त्र रूप से व्यवसाय करने से आर्थिक उलझनें एवं परेशानियां बनी रहती हैं। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ नहीं हो पाता। यहां से अष्टम भाव पर मित्र दृष्टि होने से जातक दीर्घायु तथा गुप्त युक्तियों द्वारा भी धनार्जन करने वाला होता है। जातक को दन्त एवं नेत्र रोग होने का भय होता है। देखें उदा. कुं. नं. 106

तृतीय भाव-में मेष (उच्च) राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक विद्वान, पराक्रमी, बुद्धिमान, गुणी, साहसी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। भाई/बहनों का सुख होता है। परन्तु साले के सुख में कमी होती है। ऐसा जातक परोपकारी, सहनशील, अध्ययनशील, ज्योतिष, धर्म में रूचि, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों वाला तथा कार्य व्यवसाय के सम्बन्ध में देश-विदेश की यात्राएं करने वाला होता है। भाग्योन्नति 35 वर्ष की आयु के बाद होती है। यदि सूर्य पर शनि की दृष्टि हो तो पिता एवं भाई-बहन के सुख में कमी होती है। देखें उदा. कु. नं. 107

चतुर्थ भाव-में वृष राशि पर सूर्य होने से जातक की माता या स्त्री के स्वास्थ्य में कमी, भूमि, मकान, चौपाय एवं वाहन आदि के सुख कुछ कठिनाइयों के बाद मिलते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में भी विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त होती है। स्त्री या पति का सुख भी विघ्नों के बाद मिलता है। जातक को व्यवसाय एवं गृहस्थ के क्षेत्र में भी लगभग 37 वर्ष की आयु के बाद सफलता प्राप्त होती है।

पंचम भाव-में मिथुन राशि पर सूर्य होने से जातक तीव्र बुद्धि, उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त करने में सफल, अकस्मात् (लाटरी, शेयर आदि) गुप्त युक्तियों द्वारा धन प्राप्त करने में कुशल, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित एवं भूमि, धन, वाहन, स्त्री आदि सुख साधनों से युक्त, धर्म, योग, संगीत, ज्योतिष, मंत्र आदि गुप्त विद्याओं में रूचि रखने वाला, अल्प सीमित सन्तान सुख होता है। परन्तु स्त्री सुख अच्छा होता है। स्त्री की कुण्डली में पंचम सूर्य गर्भपात होने की सम्भावना करता है।

षष्ठ भाव-में कर्क राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, स्वाभिमानी, साहसी, कल्पनाशील, कामुक एवं राजसिक प्रवृत्ति का होता है। जातक गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। (30) वर्ष की आयु तक व्यवसाय एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त संघर्षशील एवं कठिन रहता है तथा खर्च की मात्रा भी बहुत अधिक रहती है। जातक को संगीत, कला एवं साहित्य का भी शौक होता है। परन्तु दाम्पत्य जीवन कटु एवं स्त्री सुख में कमी होती है। मातुल (ननिहाल) पक्ष के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सप्तम भाव-में स्वगृही सिंह राशि पर सूर्य होने से जातक के स्वास्थ्य में कुछ कमी होती है। जातक उच्चाकांक्षी, पराक्रमी, निष्ठुर, कामुक एवं शीघ्र उत्तेजित हो जानें वाला स्वभाव, स्वाभिमानी एवं अनुशासन प्रिय प्रकृति का होता है। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। वैवाहिक सुख में कमी रहती है। यदि मंगल आदि क्रूर ग्रह का भी योग या दृष्टि आदि का सम्बन्ध भी हो पति व पत्नी दोनों स्वाभिमानी होने से विवाह सुख में विलम्ब अथवा दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होता, विवाह सम्बन्धों में विच्छेद होने की सम्भावनाएं भी होती हैं। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 108, 109

अष्टम भाव-में कन्या राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, पराक्रमी एवं कुछ तेज एवं कठोर स्वभाव का होता है। जातक व्यवसाय में अत्यन्त परिश्रम एवं कठिनाइयों से धन का अर्जन करता है। परिवारिक जीवन में उलझनें एवं परेशानियां अधिक होती हैं। वैवाहिक एवं दाम्पत्य जीवन भी परेशानियों से युक्त होता है। स्त्री एवं पत्नी भी कुछ निष्ठुर एवं कठोर स्वभाव की होती है। जातक को शिर पीड़ा एवं नेत्र रोग होने की सम्भावना हो। देखें उदा. कु. नं. 105

नवम भाव-में तुला राशि पर सूर्य होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, साहसी और न्यायप्रिय होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में प्रारम्भिक अवस्था में अत्यन्त उलझनों एवं कठिनाइयों का सामना रहता है। विवाह के पश्चात् भाग्य में विशेष परिवर्तन एवं उन्नति होती है। आय के साधनों में वृद्धि होती है। जातक कामुक एवं अस्थिर प्रकृति का, धनार्जन में कई बार उचित/अनुचित साधनों का प्रयोग करने वाला होता है। ऐसे जातक को देश-विदेश में भ्रमण के अवसर प्राप्त होते हैं।

दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, साहसी, उद्यमी, तेजस्वी, उच्चाभिलाषी, परिश्रमी एवं पिता के लिए भाग्यकारक होता है। माता को शरीर कष्ट, उच्च विद्या प्राप्त करता है। ऐसा जातक निज पराक्रम एवं उद्यम द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। विवाह के पश्चात् धनार्जन में स्त्री एवं ससुराल पक्ष से भी अच्छा सहयोग मिलता है। जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त करता है। राजनीति एवं विदेशी सम्बन्धों द्वारा भी लाभान्वित होता है। यदि सप्तम में केतु हो, तो विवाह सुख में कटुता रहती है, देखें कुं. नं. 110

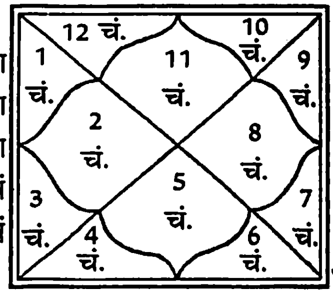
एकादश भाव-में धनु राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, विचारशील, उच्चाकांक्षी, उच्चशिक्षित, माता-पिता एवं उच्च प्रतिष्ठित लोगों से लाभान्वित, ऐसा जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क रखने वाला तथा विभिन्न साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। जातक का विवाह के पश्चात् विशेष भाग्योदय होता है। भूमि, वाहन, सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। देखें उदा. कुं. नं. 104. यदि सूर्य के साथ शनि या राहु आदि का योग हो, तो जातक या जातिका को दाम्पत्य सुख की कमी रहती है।

द्वादश भाव-में मकर राशि पर सूर्य होने से जातक भ्रमणशील, व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त संघर्ष में एवं कठिनाइयों का सामना रहता है। शत्रु पक्ष से हानि रहे, पैतृक सुख में कमी, दाम्पत्य सुख में भी कमी, अथवा स्त्री के साथ मतान्तर एवं मतभेद रहें। मानसिक तनाव एवं धन हानि भी हो। 35 वर्ष की आयु के बाद उदर विकार, नेत्र कष्ट तथा किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने की सम्भावना हो।

कुम्भ लग्न के द्वादश भावों में चन्द्र का फल

विशेष– कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश (भावेश) होने से जातक के मानसिक व शरीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। क्षीण चन्द्र (कृष्ण पक्ष की एकादशी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक चन्द्र क्षीण कहलाता है) धन, माता एवं स्त्री के सुख में कमी करता है।

कुम्भ लग्ने, चन्द्र फल



प्रथम भाव-में कुम्भ राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, तीक्ष्ण बुद्धि, कल्पनाशील एवं कामुक प्रवृत्ति होती है। (34)वर्ष की आयु के बाद जातक का शरीर अस्वस्थ, उसे जुकाम, कफ-कोल्ड, वायु-प्रकोप, शिर-पीड़ा, स्नायु-दुर्बलता होने की सम्भावना, गुप्त चिन्ताएं, शत्रुओं द्वारा कष्ट एवं परेशानियां, आजीविका एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां एवं बाधाएं हों। स्त्री (या पति) के साथ मन मुटाव एवं तनाव रहे।

द्वितीय भाव-में मीन राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक सुन्दर व्यक्तित्व एवं बुद्धिमान, उदार हृदय, परिश्रमी, स्वाभिमानी तथा निज उद्यम द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। वह व्यवसाय में अत्यन्त परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा निर्वाह योग्य धनार्जन करने में सफल होता है। धन के सम्बन्ध में किसी नौकर तथा कथित विश्वस्त बन्धु द्वारा धोखा भी मिलता है। यद्यपि जातक मधुरभाषी, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, धर्म परायण एवं व्यवहार कुशल होता है। जातक को संगीत, कला, ज्योतिष, धर्म आदि शास्त्रों में भी रूचि रहती है। जातक को 28, 32 एवं 36वें वर्ष कुछ कष्ट हो। देखें उदा. कुं. नं. 107

तृतीय भाव-में मेष राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक तीव्र बुद्धिमान, पराक्रमी, परिश्रमी एवं स्वाभिमानी प्रकृति वाला तथा अच्छी स्मरणशक्ति वाला होता है। भाई बन्धुओं के सुख में कुछ कमी होती है। जातक देश-विदेश की यात्राएं (भ्रमण) करने वाला, उद्यमी, परिवर्तनशील प्रकृति, परोपकारी स्वभाव, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने में कुशल तथा संगीत, गायन, आदि ललित कलाओं एवं धर्म, योग आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला तथा अध्ययनशील प्रकृति का होता है।

चतुर्थ भाव-में वृष (उच्च) राशि पर चन्द्रमा होने से जातक उच्चशिक्षित, कल्पनाशील, विद्वान, भावुक, भूमि, मकान, धन, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, माता-पिता का सुख होने पर भी पिता से वैचारिक मतभेद होता है। प्रारम्भिक अवस्था में मकान, जायदाद एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष व कठिनाइयां अधिक होती हैं। (35) वर्ष की आयु के बाद विशेष लाभ व उन्नति होती है।

पंचम भाव-में मिथुन राशि का चन्द्रमा होने से जातक बुद्धिमान, परोपकारी, दयालु , मधुरभाषी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्च विद्या की प्राप्ति संघर्ष एवं विघ्न/बाधाओं के बाद प्राप्त होती है। व्यवसाय में धन का अर्जन भी विशेष कठिनाइयों के बादं होता है। जातक व्यवहार कुशल एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग करने वाला होता है। स्त्री पक्ष से कुछ तनाव की परिस्थितियां हों। पुत्र की अपेक्षा कन्या सन्तति की सम्भावना अधिक होती है। देखें उदा. कुण्डली नं. 110

षष्ठ भाव-में स्वगृही कर्क राशि पर चन्द्र होने से जातक स्वाभिमानी, बुद्धिमान, पराक्रमी, भावुक एवं कल्पनाशील प्रकृति का होता है। जातक कामुक, संगीत, कला, गायन, मंत्र, ज्योतिष आदि विषयों में रूचि हो, वात-कफ आदि रोगों का भय हो, शत्रुओं के कारण चिन्तित, संघर्ष के साथ आय के साधन बनते हैं। धन के आकस्मिक अपव्ययों के कारण परेशान होने के संकेत। यदि गुरु आदि शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो तो अशुभ फल कम होते हैं।

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर चन्द्र होने से जातक को आजीविका के लिए अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जातक भ्रमणशील, तर्क-वितर्क करने में कुशल, सुन्दर एवं सुशील पत्नी, यदि चन्द्र पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि या योग हो, तो जातक को स्त्री का सुख भी कम मिलता है अथवा परेशानियों के बाद दाम्पत्य सुख होता है। देखें उदा. कुं. नं. 104, 106

अष्टम भाव-में कन्या राशि पर चन्द्र होने से जातक कामुक वृत्ति का, उसको गुप्त शत्रुओं द्वारा हानि होती है। मातुल (ननिहला) पक्ष के सुख में भी कमी रहती है। स्त्री के साथ मतभेद की सम्भावना, जातक बुद्धिमान, तर्कशील एवं परिश्रमी होने पर भी अधिक धनार्जन नहीं हो पाता, परिवारिक परेशानियों एवं आर्थिक उलझनों के कारण चिन्तित रहता है। माता के लिए अरिष्टकर तथा अपना स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता।

नवम भाव-पर तुला राशि पर चन्द्रमा होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी एवं धार्मिक वृत्ति वाला होता है। जातक साहसी, कर्त्तव्यपरायण एवं तीव्र बुद्धिमान होता है। नई-नई युक्तियों से धनार्जन करने में कुशल होता है। भाई/बहनों के सहयोग एवं सुख में कमी होती है। भाग्योन्नति के सम्बन्ध में 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष उन्नति होती है। ऐसे जातक को अभिनय, संगीत, कला, धर्म, योग दर्शन, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं की ओर भी विशेष रूचि एवं कुशलता होती है। देखें उदा. कु. नं. 105। चन्द्र क्षीण हो अथवा अशुभ ग्रह युक्त हो तो भाग्योन्नति में बार-बार विघ्न आते हैं।

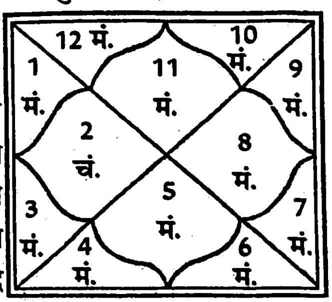
दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर चन्द्रमा होने से जातक पराक्रमी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का तथा भूमि, वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त होता है, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना होता है। माता-पिता के सुख में कमी रहती है अथवा पिता से मतान्तर होता है। विरोधी लोग व्यवसाय में अड़चनें डालने की चेष्टाएं करेंगे। चन्द्र यदि अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक के व्यवसाय में अस्थिरता रहे तथा कार्योन्नति में बार-बार अड़चनें पैदा होती हैं।

एकादश भाव-में धनु राशि पर चन्द्रमा होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, उच्चशिक्षित, तकनीकि कार्यों में रूचि एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल होता है। जातक धैर्यवान, स्वाभिमानी, सुप्रतिष्ठित एवं परोपकारी स्वभाव का होता है। जातक नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल होगा। जातक व्यवसाय में निज परिश्रम तथा श्रेष्ठ मित्रों की सहायता से लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। यदि चन्द्र के साथ गुरु का योग या दृष्टि आदि से सम्बन्ध हो, तो जातक को भाई/बहिनों का सहयोग भी प्राप्त होता है। यदि राहु या सूर्य आदि का योग हो तो धनार्जन में बहुत विघ्न/बाधाएं एवं अड़चनें होती हैं।

द्वादश भाव-में मकर राशि पर चन्द्रमा होने से जातक मधुरभाषी, विनयशील, कल्पनाशील व भावुक होता है। जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक संघर्ष एवं परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। आकस्मिक व्यय भी बहुत होते हैं, जिसके कारण जातक को अत्यधिक परिशानियों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यदि शुक्र भी अशुभ हो तो जातक को परिवारिक सुखों में कमी तथा माता को कष्ट होता है। चन्द्र-गुरु का योग हो, तो जातक पराक्रमी, भाग्यशाली अपने जन्म प्रदेश से अन्य स्थान पर भाग्योदय होता है, देखें उदा. कुण्डली नं. 108 देश विदेश में भ्रमण होता है, उदा. कुं. 109

कुम्भ लग्न के द्वादश भावों में मंगल का फल

कुम्भ लग्ने, मंगल फल



विशेष— कुम्भ लग्न में मंगल कर्मेश एवं तृतीयेश होने पर भी पूर्णतः शुभ फल नहीं प्रदान करता, क्योंकि मंगल लग्नेश शनि का शत्रुक्षेत्री होता है। इस कारण कुम्भ लग्न में मंगल शुभाशुभ (मिश्रित) दोनों प्रकार के फल देता है।

प्रथम भाव-में कुम्भ राशि का मंगल होने से जातक आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, तेज स्वभाव का, साहसी और महत्त्वकांक्षी होता है। भाई-बहिन का सुख होने पर भी जातक पराक्रमी, पुरुषार्थी एवं परिश्रमी होता है। माता, भूमि, वाहन एवं मकानादि सुख साधन भी प्राप्त होते हैं। जातक निज उद्यम एवं पुरुषार्थ द्वारा (व्यवसाय में) धनार्जन करने वाला, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त करने वाला होता है। जातक दृढ़ निश्चयी एवं अपनी धुन का पक्का होता है, परन्तु अपनी स्त्री के साथ प्रायः अनुकूल व्यवहार करने वाला होता है। ध्यान रहे, प्रथम भाव में मंगल होने से मंगलीक दोष भी माना जाता है। जो विवाह-सुख में बाधाकारक माना जाता है।

द्वितीय भाव-में मीन राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक को परिवारिक एवं आर्थिक सुख कुछ कठिनाइयों एवं परेशानियों के बाद प्राप्त होता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा निर्वाह योग्य धनार्जन करने में कुशल होता है। भाई/बहन एवं पिता के सुख में कुछ कमी रहती है। जातक स्वाभिमानी एवं स्पष्टवक्ता होता है। उच्च विद्या एवं संतान आदि के सुख भी कठिनाइयों के बाद मिलते हैं।

तृतीय भाव-में मेष (स्वगृही) राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी, साहसी, परिश्रमी, भाई-बहिनों का सुख होता है, तथा शत्रु पक्ष पर प्रभावी, परन्तु मातुल पक्ष (ननिहाल-मामे आदि) को हानि होती है। ऐसा जातक व्यवसाय के क्षेत्र में निज पराक्रम से लाभ एवं उन्नति प्राप्त करता है। जातक सेना में विशेष पद प्राप्त करता है। देखें उदा. कुं. 108। यदि मंगल के साथ सूर्य, गुरु आदि ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक तीव्र बुद्धिमान, स्वाभिमानी, धर्म, योग, ज्योतिष आदि शास्त्रों में रूचि रखने वाला तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। यदि यहां मंगल-सूर्य पर शनि की भी दृष्टि हो तो जातक को पिता तथा भाई/बहनों के सुख में कमी रहती है। देखें उदा. कुं. नं. 107.

चतुर्थ भाव-में वृष राशि पर मंगल होने से जातक को संघर्ष व कठिनाइयों के बाद भूमि, मकान, धन, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो, कार्य व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में भी परिश्रम से सफलता मिले। पिता के लिए भाग्यशाली। स्त्री सुख में कमी अथवा विलम्ब से स्त्री सुख मिलता है। क्योंकि चतुर्थ मंगल होने से जातक को मंगलीक दोष भी लगता है। लगभग 32 वर्ष की आयु के बाद भाग्योन्नति होती है। पिता से लाभान्वित।

पंचम भाव-में मिथुन राशि पर मंगल होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला, पराक्रमी, दृढ़निश्चयी, देश-विदेश में यात्राएं करने के अवसर प्राप्त हों। जातक उच्च विद्या प्राप्त करने में सफल हो, परन्तु उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं भी रहें। जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल तथा व्यवसाय में भी गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में कुशल होता है।

षष्ठ भाव-में कर्क (नीच) राशि पर मंगल होने से जातक को पैतृक सम्बन्धों (पिता, भाई इत्यादि) के सुख में कमी, व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष व कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। विवाद आदि में शत्रुओं के कारण परेशानियों का सामना रहे। देश-विदेश के सम्बन्धों से लाभान्वित तथा खर्च भी बहुत बढ़-चढ़ कर होंगे। जातक के सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ होंगे। अष्टम दृष्टि से लग्न भाव को देखने से कार्य व्यवसाय में संघर्ष व कठिनाईयां अधिक रहें।

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर मंगल होने से जातक/जातिका बुद्धिमान, साहसी, पराक्रमी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। व्यवसाय में धनार्जन के लिए अत्यन्त कठिन परिश्रम वाला, स्वावलम्बी अर्थात् जीवन निज पराक्रम (उद्यम) से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। सप्तम में मंगल होने से मंगलीक दोष कारक होता है जो कि दाम्पत्य सुख में कमी करता है। यदि सप्तम में मंगल के साथ सूर्य भी हो तो भी परिवारिक एवं वैवाहिक सुख में कमी व अड़चनें पैदा होती हैं। इस स्थिति में पति/पत्नी दोनों स्वाभिमानी प्रकृति होने से परस्पर टकराव होने की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं। देखें उदा. कुण्डली नं. 109

अष्टम भाव-में कन्या राशि पर मंगल होने से जातक परिश्रमी, पराक्रमी, तीव्र बुद्धिमान, हिम्मती तथा प्रारम्भिक अवस्था व्यवासय एवं आर्थिक दृष्टि से संघर्षशील होती है। यदि मंगल के साथ सूर्य, बुध एवं शुक्र का भी सम्बन्ध हो तो जातक के विवाह के पश्चात् विशेषकर 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष लाभ, उन्नति एवं भाग्योदय होता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 105, 106। यदि अष्टम में अकेला मंगल स्थित हो, तो मंगलीक दोष होने के कारण जातक के दाम्पत्य जीवन में सुख की कमी रहती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 110

नवम भाव-में तुला राशि पर मंगल होने से जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, स्वाभिमानी, परिश्रमी होता है। ऐसा जातक भाई/बन्धुओं का सहयोग व सुख प्राप्त करने वाला, भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है। श्रेष्ठ एवं उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त तथा जातक को देश-विदेश में भ्रमण करने के अवसर भी प्राप्त होते हैं। जातक निज उद्यम द्वारा व्यवसाय में समुचित धनार्जन करने में सफल होता है।

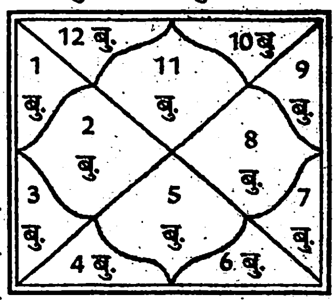
दशम भाव-में स्वगृही बृश्चिक राशि पर मंगल होने से जातक उच्चाभिलाषी, पराक्रमी, स्वाभिमानी तथा उच्च प्रतिष्ठित होता है। उसे व्यवसाय एवं पिता के पक्ष से लाभ, सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती है। निज उद्यम द्वारा भी भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुख साधनों को प्राप्त करता है। भाई-बन्धुओं का सुख भी होता है। राजनीतिक क्षेत्र भी सफल होने की सम्भावना होती है। जातक समाज में प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्ति होता है।

एकादश भाव-में धनु राशि पर मंगल होने से जातक पराक्रमी, साहसी, स्वाभिमानी एवं कुछ क्रोधी स्वभाव का होता है। ऐसा जातक उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, भूमि, धन, आवास एवं वाहन आदि सुखों से युक्त, व्यवसाय में संघर्ष के बाद सफलता, जातक शत्रुओं पर प्रभावी होता है। मातुल पक्ष (ननिहाल) कुछ कमज़ोर तथा उनसे सुख कम होता है।

द्वादश भाव-में मकर राशि पर मंगल होने से जातक उद्यमी, पराक्रमी, परिश्रमी एवं भ्रमणशील होता है। जातक को देश-विदेश के सम्बन्धों से लाभ होता है। नए-नए उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं। देखें उदाहरण कुंडली नं. 104 । भाई/बहिनों का सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है। जातक गुप्त युक्तियों से व्यवसाय में धनार्जन करने में सफल होता है। जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहता है। द्वादश भावस्थ मंगल मंगलीक दोषकारक होने से जातक को दाम्पत्य सुख में भी कमी रहती है।

कुम्भ लग्न के द्वादश भावों में बुध का फल

कुम्भ लग्ने, बुध फल



विशेष–कुम्भ लग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश होने से शुभाशुभ दोनों प्रकार के अर्थात् मिश्रित फल प्रदान करता है। बुध विद्या, बुद्धि, वाणी, सन्तति, व्यापार आदि का कारक होता है। यदि कुण्डली में शुक्र, शनि आदि ग्रहों के साथ शुभ भावस्थ हो, तो जातक को तीव्र बुद्धि, विद्या, सन्तान आदि सुख प्रदान करता है।

प्रथम भाव-में (मित्र) कुम्भ राशि में बुध के प्रभाव से जातक अत्यन्त बुद्धिमान, विचारशील, व्यवहार कुशल, अच्छी स्मरणशक्ति, अध्ययनशील, भ्रमण एवं तर्क-वितर्क करने में चुस्त, अपने बुद्धि-कौशल द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यदि बुध-शुक्र का योग हो, तो जातक गणित, ज्योतिष, संगीत, हस्त-शिल्प, कला एवं चिकित्सा क्षेत्र में रुचि रखने वाला, भूमि, वाहन, सन्तान आदि सुखों से युक्त एवं भाग्यवान् होता है। माता के प्रति विशेष आसक्ति होती है। गुरु भी शुभस्थ हो, तो जातक धन-सम्पदा से सम्पन्न एवं परिवारिक सुख यथेष्ठ होता है। यदि यहां बुध अस्तंगत हो, तो जातक के स्वास्थ्य में कमी रहती है।

द्वितीय भाव-में (नीच) मीन राशि में बुध होने से जातक को परिवारिक सुख में कमी एवं तनाव रहे, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहे। सन्तान सुख में भी अड़चनें रहें। अत्यधिक परिश्रम के बाद भी धन सम्बन्धी परेशानियां रहें। कुण्डली में यदि गुरु एवं शुक्र शुभस्थ हो, तो जातक को निर्वाह योग्य आय के साधन मिल जाते हैं। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में कुशल होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 106।

तृतीय भाव-में मेष राशि पर बुध होने से जातक बुद्धिमान, तीव्र स्मरण शक्ति, मधुरभाषी, भाग्यशाली तथा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील स्वभाव का होता है। जातक धर्म, संगीत, कला एवं ज्योतिष आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला तथा अध्ययनशील प्रकृत्ति का होता है। लेखन आदि में भी रुचि रखता है। उच्च विद्या एवं व्यवसाय में संघर्ष के बाद सफलता मिलती है। भाग्य में भी परिवर्तनों के बाद उन्नति होती है। अल्प सन्तति अथवा पुत्र-सन्तान सुख सम्बन्धी परेशानी होने की सम्भावना। देखें उदा. कुं. नं. 107

चतुर्थ भाव-में वृष राशि पर बुध होने से जातक को संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद शिक्षा, भूमि, भवन एवं माता

के सुख में कुछ कमी रहती है। जातक को ज्योतिष आदि गुप्त विषयों की जानकारी भी होती है। व्यवसाय के सम्बन्ध में भी अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होती है। पैतृक सम्पदा का भी विशेष सुख प्राप्त नहीं होता।

पंचम भाव-में स्वगृही मिथुन राशि पर बुध होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, विद्वान, मधुरभाषी, अच्छी स्मरण शक्ति, तर्क-वितर्क करने में निपुण, संगीत, हस्त कला, गायन आदि ललित कलाओं में रुचि, धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला, उच्चशिक्षित, बौद्धिक योग्यता द्वारा धनार्जन करने वाला, अध्यापन, वकालत, एकाऊंट्स, बैंकिंग, कम्पयूटरज़ आदि कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

षष्ठ भाव-में कर्क राशि पर बुध होने से जातक कल्पनाशील, भावुक तथा कार्यों में गुप्त युक्तियों का प्रयोग करने वाला होता है। उच्च-विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं होती हैं। परन्तु ऐसा जातक विदेशी सम्बन्धों से लाभान्वित रहता है। सन्तान सुख विघ्न बाधाओं के बाद प्राप्त होता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्य व्यवसाय में नुकसान पहुंचाने की कुचेष्टाएं करते हैं। वाद/विवाद एवं झगड़े आदि में भी जातक का खर्च अधिक होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 109

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर बुध होने से तीव्र बुद्धिमान परन्तु अस्थिर विचारों वाला, स्पष्टवक्ता, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्च विद्या प्राप्त होता है। रोग एवं शोक आदि के कारण स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, स्त्री सुख में कमी तथा परेशानी होती है। ऐसा जातक धर्म, ज्योतिष, गणित, योग, साईंस आदि विषयों में रुचि रखने वाला तथा व्यवसाय में कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है। यहां सूर्य-बुध का योग हो, तो जातक सेना, पुलिस, प्रबन्धन के क्षेत्र में सफल हो सकता है। देखें उदा. कुं. नं. 108

अष्टम भाव-में कन्या (उच्च) राशि में बुध होने से जातक दीर्घायु, विवेकशील, विद्वान तथा अच्छा वक्ता होता है। विघ्न बाधाओं एवं संघर्ष के बाद उच्च विद्या की प्राप्ति होती है। सन्तान सुख तथा परिवारिक सुख में कमी होती है। अत्यधिक संघर्ष एवं परिश्रम करने पर भी अधिक धन का संचय नहीं हो पाता। यहां बुध स्वगृही राशि में होने से जातक दीर्घजीवी होता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 105 (अमिताभ बच्चन) परन्तु इस कुंडली में चारग्रही योग होने से बुध शुभ फलप्रद हो गया है।

नवम भाव-में तुला राशि पर बुध होने से जातक भाग्यवान, धार्मिक आस्थाओं से युक्त, साहसी, बुद्धिमान, निज पराक्रम से ही जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, भूमि, आवास एवं वाहन आदि सुख-सुविधाओं से युक्त, व्यवहार कुशल, धर्म परायण, साधुओं से संगति करने वाला होता है। चर राशि होने से देश-विदेशों में भ्रमण के अवसर प्राप्त करने वाला होता है।

दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर बुध होने से जातक बुद्धिमान, प्रतिष्ठित, परिश्रमी एवं व्यवहार कुशल होता है। अत्यन्त कठिनाईयों के बाद उच्च विद्या प्राप्त करता है। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष व विघ्नों के बाद आय के साधन बनेंगे। जातक माता, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 110

पिता को कुछ मानसिक व शरीरिक कष्ट, परन्तु जातक माता-पिता का भक्त होता है। मंगल अशुभ हो, तो व्यवसाय में विघ्न/बाधाएं होती हैं।

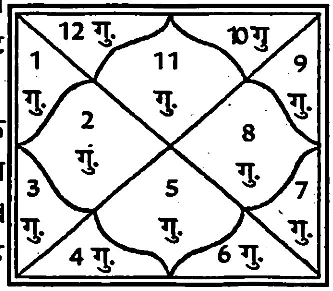
एकादश भाव-में धनु राशि पर बुध होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, परिश्रमी, स्वाभिमानी, किन्तु उदार-हृदय, परोपकारी स्वभाव का होता है। विघ्न/बाधाओं के बावजूद उच्च-विद्या की प्राप्ति, स्त्री-सन्तान आदि के सुख भी अड़चनों के बाद मिलते हैं। व्यवसाय में संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होती है। जातक गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में सफल होता है। साईंस, धर्म, ज्योतिष आदि विषयों में विशेष रुचि होती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 104

द्वादश भाव- में मकर राशि पर बुध होने से जातक विनयशील, विनम्र स्वभाव होता है। जातक की उच्च शिक्षा प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं होती हैं। स्त्री एवं सन्तान सुख भी परेशानियों के बाद मिलता है। व्यवसाय में भी संघर्ष व अड़चनों के

बाद सफलता प्राप्त होती है। स्वास्थ्य हानि तथा धन का खर्च विशेष अधिक रहता है। जातक देश/विदेश में भ्रमणशील होता है।

कुम्भ लग्न के द्वादश भावों में गुरु का फल

कुम्भ लग्ने, गुरु फल



विशेष–कुम्भ लग्न में गुरु धनेश एवं लाभेश होने से यह ग्रह अपनी दशा में जातक को धन लाभ, उन्नति, संतान आदि पारिवारिक सुख व प्रतिष्ठा आदि सुख प्रदान करता है। परन्तु मारकत्त्व दोष युक्त होने से (कुछ स्थितियों में शरीर कष्ट आदि अशुभफल भी करता है)।

प्रथम भाव-में कुम्भ राशि पर गुरु होने से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, धार्मिक प्रवृत्ति, विद्वान, भाग्यवान, उच्चशिक्षित, स्पष्टवक्ता एवं परिवारिक सुखों से युक्त होता है। जातक को धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी विशेष रुचि होती है। जातक बौद्धिक योग्यता के आधार पर अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में भी निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 106.

द्वितीय भाव-में स्वगृही राशि मीन पर गुरु के प्रभाव से जातक सुन्दर व्यक्तित्व, बुद्धिमान, मधुरभाषी, व्यवहार कुशल, अध्ययनशील, उदारहृदय, परोपकारी, दानी, धर्म-योग, ज्योतिष, साहित्य आदि क्षेत्रों में विशेष दिलचस्पी हो, उच्चशिक्षित तथा बुद्धि-कौशल द्वारा धनार्जन करने वाला, परिवारिक सुख श्रेष्ठ होता है। व्यवसाय में निज उद्यम से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त तथा पिता द्वारा लाभान्वित होता है।

तृतीय भाव-में मेष राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक अत्यन्त बुद्धिमान, विद्वान, दूरदर्शी, अध्ययनशील, विचारशील, धार्मिक प्रवृत्ति, ज्योतिष, योग, मंत्र आदि विषयों में रूचि; भ्रातृ सुख में कमी, जातक निज उद्यम एवं परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं उन्नति करने वाला, बौद्धिक कार्यों में सफल, स्त्री के प्रति विशेष आसक्त एवं लाभान्वित होता है। यदि गुरु के साथ सूर्य, मंगल आदि ग्रहों का योग हो, तो जातक स्वावलम्बी तथा स्त्री का सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है। देखें उदा. कुं. नं. 107, 109.

चतुर्थ भाव-में वृष राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान परन्तु संघर्षशील व परिश्रमी होता है। माता को कष्ट अथवा माता के सुख में कमी होती है। परन्तु मकान, वाहन एवं परिवारिक सुख प्राप्त होता है। पिता द्वारा लाभान्वित तथा व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष व कठिनाईयों के बाद अच्छा लाभ मिलता है। जातक दीर्घायु, द्वादश भाव को गुरु नीच राशि में देखने से आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत रहेंगे।

पंचम भाव-में मिथुन राशि पर गुरु होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, प्रभावशाली व्यक्तित्व, विवेकशील, तेजस्वी, गुणवान, योजनाबद्ध विधि से कार्य करने वाला, उच्चशिक्षित, व्यवहार-कुशल, तार्किक, गम्भीर प्रकृति, धन, सन्तान, सम्पदा, अच्छे परिवार एवं श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, अध्ययनशील, धार्मिक प्रवृत्ति, धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, मन्त्र, तन्त्र आदि विद्याओं में रुचि रहे, नवम भाव को पंचम दृष्टि से देखने से अध्यापन, वकालत, बैंकिंग आदि में सफल, अड़चनों एवं कठिनाईयों के बाद भाग्योन्नति में सफलता मिलती है। यदि गुरु राहु, शनि, भौम आदि अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो प्रेम विवाह एवं परिवारिक सुख में विघ्न बाधाएं होती हैं।

षष्ठ भाव-में कर्क (उच्च) राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, तीव्र बुद्धिमान, उच्चाभिलाषी, हंसमुख, परिश्रमी, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, स्वावलम्बी एवं गुप्त युक्तियों से धन लाभ करने वाला होता है। जातक संगीत, अभिनय, गायन, कला आदि के क्षेत्र में विशेष कुशल होता है। विघ्न-बाधाओं एवं विरोधियों के बावजूद जातक अपने कार्य-क्षेत्र में श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त करने में तथा धन, भूमि, वाहन, आवास, सुन्दर एवं सुशील पत्नी प्राप्त करने में सफल होता है। सन्तान सुख एवं परिवारिक सुख भी यथेष्ठ होता है। जातक धन सम्पदा आदि सुखों से सम्पन्न होता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 105

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक पराक्रमी, बुद्धिमान, धार्मिक प्रवृत्ति का, उदार हृदय, परोपकारी परन्तु स्वास्थ्य कुछ नर्म रहता है। भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, सदाचारी एवं स्वाभिमानी, पत्नी का सुख एवं सहयोग मिलता है। भ्रमणशील प्रकृति, जातक को देश-विदेश में भ्रमण के अवसर प्राप्त होते हैं। जातक भूमि, वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त तथा उसे धर्म, ज्योतिष, योग, मंत्र आदि विद्याओं में भी विशेष रुचि होती है।

अष्टम भाव-में कन्या राशि पर गुरु होने से जातक दीर्घायु परन्तु किसी गुप्त रोग से पीड़ित, धन-सम्पदा एवं परिवारिक सुखों से युक्त, मातृ कष्ट अथवा माता के सुख में कमी, परन्तु पैतृक धन एवं पिता से लाभान्वित होने वाला, जातक व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा अच्छा धनार्जन करता है। परन्तु धन के खर्च भी बहुत अधिक रहते हैं। जातक धर्म, ज्योतिष, योग, मंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी विशेष रुचि रखता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 104।

नवम भाव-में तुला राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, प्रतिष्ठित, स्वाभिमानी परन्तु धार्मिक प्रवृत्ति का, परोपकारी, भाग्यवान्, परिवार तथा आर्थिक पक्ष से सम्पन्न, उच्चशिक्षित, भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, भूमि, वाहन, धन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से संयुक्त, समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। ऐसा जातक चिकित्सा, अध्यापन, लेखन, एकाऊंटस, बैंकिंग आदि के क्षेत्रों में सफल रहता है। विदेशी सम्बन्धों से भी लाभान्वित होता है।

दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, विवेकशील, उच्च विद्या प्राप्त, माता-पिता के सुख से युक्त, उच्च पद प्रतिष्ठित, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। जातक धन-सम्पदा, वाहन, आवास आदि सुख-साधनों से सम्पन्न किन्तु, व्यवसाय में कुछ प्रारम्भिक अड़चनों के बाद अच्छी सफलताएं प्राप्त करने वाला, भाई-बन्धुओं एवं परिवारिक सुखों से युक्त तथा प्रत्येक क्षेत्र में रईसी ढंग से खर्च करने वाला होता है।

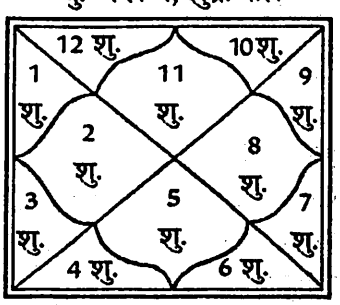
एकादश भाव-में स्वगृही धनु राशि में गुरु होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, युक्तिपूर्ण एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, माता-पिता से लाभान्वित, उच्चशिक्षित तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध रखने वाला, महत्त्वाकांक्षी, उच्चस्तरीय रहन-सहन, अल्प सीमित सन्तान सुख, जातक साहसी, पराक्रमी एवं परिश्रमी होता है तथा निज उद्यम द्वारा जीवन में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। जातक की आमदनी के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं। जातक का विवाह उच्चस्तरीय घराने में होता है। स्त्री की कुण्डली में 11वें गुरु होने से जातिका को श्रेष्ठ परिवार या उच्च स्तरीय पति प्राप्ति का सूचक है।

द्वादश भाव-में मकर (नीच) राशि में गुरु होने से जातक भ्रमणप्रिय, संघर्षशील व परिश्रमी प्रकृत्ति का होता है। आय के स्रोत अल्प होने पर भी खर्च अधिक होते हैं। धन का संचय विशेष नहीं हो पाता। परिवारिक एवं व्यवसायिक परेशानियों व उलझनों के कारण मन चिन्तित रहता है। ऐसे जातक को अपना धन ज़मीन-जायदाद के क्रय में नियोजन करना लाभदायक रहता है। जीवन के उत्तरार्ध भाग में व्यवसाय सम्बन्धी कुछ सफलताएं मिलती हैं। देखें उदाहरण कुं. 108

कुम्भ लग्न में द्वादश भावों में शुक्र का फल

विशेष-कुम्भ लग्न में शुक्र सुखेश एवं भाग्येश (केन्द्र-त्रिकोण) होने से योगकारक एवं शुभफल प्रदायक होता है। यदि शुभ स्थान में हो, तो शुक्र अपनी दशा में जातक के भाग्य में उन्नति, धन लाभ, भूमि-जायदाद, स्त्री एवं वाहनादि सुखों को प्रदान करता है। यदि नीच अवस्था में हो, तो मकान, स्त्री, भाग्य आदि सुखों में कमी करता है।

कुम्भ लग्ने, शुक्र फल



प्रथम भाव-में कुम्भ राशि पर शुक्र होने से जातक सुन्दर, तीखे नयन नक्श, हंसमुख एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होगा। ऐसा जातक अधिक आयु का होने पर भी युवा जैसा दिखता है। जातक बुद्धिमान, दीर्घायु, मधुरभाषी, वाहनादि सुख सुविधाओं से युक्त तथा संगीत, गायन, कला एवं मनोरंजन साहित्य का शौकीन, भाग्य एवं व्यवसाय में कुछ संघर्ष एवं विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त होती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 106

द्वितीय भाव-में मीन (उच्च) राशि पर शुक्र होने से जातक मधुरभाषी, विनयशील, विशेष सौन्दर्यानुभूति, उत्साहशील, कलात्मक प्रवृत्ति, शृंगार एवं खान-पीने की चटपटी वस्तुओं का प्रिय, धनी, यशस्वी एवं परिवारिक सुखों से युक्त, भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, माता पिता का विशेष सहयोग प्राप्त करने वाला होता है। जातक उच्चस्तरीय श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, धार्मिक प्रवृत्ति एवं अपने कुटुम्ब के लिए भाग्यशाली होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील एवं परिवार से सहयोग करने वाली होती है।

तृतीय भाव-में मेष राशि पर शुक्र के होने से जातक भाई-बन्धुओं एवं बहिनों के सुख से युक्त, स्वावलम्बी, उत्साहशील, भ्रमणप्रिय, धार्मिक वृत्ति एवं भाग्यशाली होता है। माता का सुख सामान्य अथवा मातृ कष्ट होता है। ऐसा जातक नए-नए स्थानों की यात्राएं करने तथा नए-नए मित्र बनाने में कुशल, ज्योतिष, मन्त्र, कम्पयूटर, टैलीविज़न, संगीत, नाटक, एवं गायन आदि कलात्मक वस्तुओं (विषयों) में भी विशेष रुचि रखता है।

चतुर्थ भाव-में वृष स्वगृही राशि पर शुक्र होने से जातक हंसमुख, विनोदी स्वभाव, नए-नए खान-पकवान खाने का शौकीन, मिलनसार, माता एवं स्त्री का सुख यथेष्ट होता है, इसके अतिरिक्त मकान, वाहन, भूमि आदि सुख सुविधाओं से सम्पन्न एवं भाग्यशाली होता है। जातक को व्यवसाय में संघर्ष व विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त होगी। जातक परदेश की अपेक्षा अपने जन्म स्थान के आस-पास स्थल (देश) में विशेष धन लाभ व उन्नति प्राप्त करता है।

पंचम भाव-में मिथुन राशि पर शुक्र होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, विद्वान, धर्म व नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, मधुरभाषी, भाग्यवान, व्यवहार कुशल, संगीत, कला, साहित्य एवं शेयरों आदि में रुचि रखने वाला, जातक अपनी बौद्धिक योग्यता के बल से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, सन्तान सुख अच्छा होता है, परन्तु कन्या सन्तानें अधिक होती हैं। ऐसा जातक कलात्मक प्रवृत्तियों वाला, कल्पनाशील एवं प्रतिष्ठित होता है। यदि शुक्र, शनि, मंगल या राहु द्वारा पीड़ित हो, तो जातक के विवाह या प्रणय सुख में विघ्न अथवा कमी होने के संकेत हैं। देखें उदाहरण कुंडली नं. 107

षष्ठ भाव-में कर्क राशि पर शुक्र होने से जातक की माता को कष्ट अथवा मातृ सुख में कमी होती है। भूमि या मकान एवं सवारी आदि के सम्बन्ध में भी परेशानियां होती हैं। पैतृक सम्पदा के सुख में भी कमी होती है। शुक्र की दशा में कार्य-व्यवसाय एवं भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएं रहती हैं। जातक कामुक प्रवृत्ति परन्तु स्त्री सुख में कमी तथा घरेलू वातावरण में भी असन्तोष व अशान्ति होती है।

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर शुक्र होने से जातक उच्चाकांक्षी, सौन्दर्य प्रेमी, कामुक प्रवृत्ति, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त परिश्रम एवं संघर्ष के बाद सफलता मिलती है। माता को शरीर कष्ट, जातक मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। यदि शुक्र के साथ सूर्य, राहु, शनि आदि क्रूर ग्रह का योग या दृष्टि हो, तो जातक को वैवाहिक सुख में कमी होती है।

अष्टम भाव-में कन्या (नीच) राशि पर शुक्र होने से जातक कार्य-व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष एवं गुप्त युक्तियों व परिश्रम के बाद धन लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। भाग्य में भी अनेक अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होती है। माता एवं स्त्री को कष्ट तथा मकान आदि के सम्बन्ध में भी परेशानियों का सामना रहता है। परिवारिक सुख के लिए भी जातक को विशेष परिश्रम करना पड़ता है। स्त्री के साथ मत-मतान्तर होने की संभावना। यदि शुक्र के साथ राहु, मंगल, सूर्य आदि क्रूर ग्रह का सम्बन्ध हो, तो जातक को आर्थिक परेशानियां तथा दाम्पत्य सुख में कमी रहती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 105। बुध के साथ होने से जातक कला के क्षेत्र में सफल होता है।

नवम भाव-में स्वगृही तुला राशि पर शुक्र होने से जातक बुद्धिमान, सुन्दराकृति, भाग्यवान्, पराक्रमी, भाई-बहिनों के सुख से युक्त, माता, भूमि, वाहन दि सुख-साधनों से सम्पन्न, जातक संगीत, साहित्य, कला, सुन्दर वस्त्रों एवं सुगन्धित वस्तुओं का शौकीन, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से सम्बन्ध रखने वाला, धर्म स्थलों एवं तीर्थ यात्राएं करने में रुचि रखने वाला, सौन्दर्यप्रिय, उच्चस्तरीय जीवन जीने का इच्छुक, अपनी स्त्री को विशेष प्रेम करने वाला, विवाह के बाद विशेष भाग्योन्नति, ऐसे जातक को देश-विदेश की यात्राएं करने के अवसर मिलते हैं। देखें उदाहरण कुंडली नं. 108। यदि

शुक्र अस्तंगत हो तो भाग्य में उतार-चढ़ाव रहते हैं। देखें उदा. कुं. नं. 110

दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर शुक्र होने से जातक सुप्रतिष्ठित, पराक्रमी, स्वाभिमानी प्रकृति का, माता-पिता का सुख एवं सहयोग प्राप्त करने वाला, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, व्यवसाय में विशेष संघर्ष व कठिनाईयों के बाद सफलता प्राप्त करने वाला, श्रेष्ठ एवं उच्चस्तरीय मित्रों से सम्पर्क रखने वाला परिश्रमी व्यक्ति होता है। (35) वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योन्नति होती है।

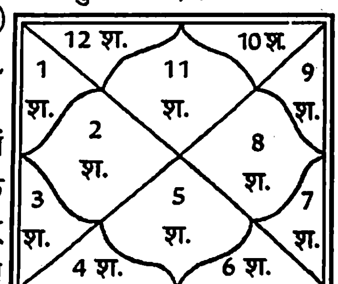
एकादश भाव-में धनु राशि पर शुक्र होने से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, बुद्धिमान, कल्पनाशील, उदारहृदय, परोपकारी स्वभाव का होता है। जातक माता, भूमि, वाहन एवं उच्च शिक्षा आदि के सुखों से सम्पन्न, पुत्र सन्तति कम तथा कन्या सन्तति का सुख अधिक होता है। जातक को संगीत, गायन, कला एवं ज्योतिष आदि साहित्य की ओर भी विशेष अभिरुचि होती है। जातक निज पराक्रम एवं पुरुषार्थ से विभिन्न स्त्रोतों द्वारा धनार्जन करने में सफल होता है।

द्वादश भाव-में मकर राशि पर शुक्र होने से जातक अस्थिर बुद्धि, भ्रमणप्रिय, अत्यधिक खर्च करने वाला तथा अपने जन्म स्थान से दूर रहकर व्यवसाय द्वारा धनार्जन करने वाला, परिवारिक जीवन में भी परेशानियां अधिक रहती हैं। संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद जातक निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। जातक को विदेश आदि सम्बन्धों से भी लाभान्वित होने की सम्भावना होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 104 (मुरली मनोहर जोशी)

कुम्भ लग्न में द्वादश भावगत शनि का फल

विशेष-कुम्भ लग्न में शनि लग्नेश तथा व्ययेश (कारक) होने से अपनी दशा-अन्तर्दशा के दौरान जातक को दीर्घायु, स्वास्थ्य, धन, सम्पत्ति, दीर्घ (विदेश आदि) यात्राएं, स्त्री/संतानादि सुख देता है। यदि कुण्डली में अशुभस्थ हो, तो स्वास्थ्य हानि, आर्थिक संकट, क्लिष्ट रोग आदि दुख प्रदायक होता है।

कुम्भ लग्ने, शनि फल



प्रथम भाव-में स्वगृही कुम्भ राशि पर शनि होने से जातक प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उच्चाभिलाषी, स्वाभिमानी, अत्यन्त बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति युक्त, परिश्रमी एवं न्यायप्रिय, परोपकारी स्वभाव, परिवार एवं सगे सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक, मिलनसार एवं स्पष्टवादी परन्तु गम्भीर प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दृढ़ निश्चयी, अपनी धुन का पक्का, अर्थात् जिस काम को करना चाहे उसे हर स्थिति में पूरे मनोयोग एवं निश्चय से करेगा। शनि यहां से तृतीय भाव को नीच दृष्टि से देखने से भाई-बहिनों के सुख में कमी तथा व्यवसाय में भी विघ्नों एवं कठिनाईयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। दाम्पत्य सुख में भी कमी एवं असंतोष की भावना रहे। माता-पिता में से किसी एक का सुख भी कम मिलता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 107

द्वितीय भाव-में मीन राशि पर शनि होने से जातक विवेकशील, बुद्धिमान, दीर्घायु, परिश्रमी, पराक्रमी, स्वाभिमानी, परोपकारी एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होता है। प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त कठिन एवं चुनौतियों से भरा होता है। परिवारिक सुख में कमी तथा आर्थिक परेशानियां अधिक होती हैं। अत्यधिक संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बन पाते हैं। 36 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योन्नति धन लाभ होता है तथा जातक धन-सम्पदा, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

तृतीय भाव-में मेष (नीच) राशि का शनि होने से अत्यन्त बुद्धिमान, परिश्रमी, साहसी, उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी अथवा उनके कारण परेशानी होती है। शनि की दशा-अन्तर्दशा में स्वास्थ्य में भी कमी होती है। यदि गुरु का योग हो, तो जातक साहित्य, राजनीति, ज्योतिष, फिलासिफी, दर्शन, तन्त्र आदि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, उच्चशिक्षित, विभिन्न स्त्रोतों द्वारा धन का अर्जन करने वाला, भ्रमणशील, देश-विदेश के सम्बन्धों से लाभान्वित अथवा विदेश में प्रवास कर जीविकोपार्जन करता है। शनि यहां एकाकी हो, तो वात-पित्त आदि के कारण जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, भाईयों से हानि होती है तथा प्रत्येक कार्य विघ्न बाधा के बाद ही सफल होता है।

यदि तृतीय शनि गुरु युक्त या दृष्ट हो तो जातक स्वार्जित धन से तथा भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

चतुर्थ भाव-में वृष राशि पर शनि होने से जातक आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, कुशाग्र बुद्धि, स्वाभिमानी, साहसी, पराक्रमी, उदार हृदय, परोपकारी, संगीत, गायन, अभिनय, कला, साहित्य आदि के क्षेत्र में सफल, धन-सम्पदा, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है। जीवन के प्रारम्भिक 33 वर्ष विशेष संघर्षपूर्ण रहते हैं। 35 वें वर्ष तथा उसके बाद की आयु में अभिनय, प्रतिष्ठा, धन एवं कला आदि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। गुरु व बुध ग्रह भी शुभ हों, तो जातक को साहित्यिक कला, स्त्री, सन्तान, अभिनय आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिलती है तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 105 (अभिनेता अमिताभ बच्चन)

पंचम भाव-में मिथुन राशि पर शनि होने से जातक व्यवहार कुशल, बुद्धिमान, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्चशिक्षित, ज्योतिष, योग, मन्त्र, तन्त्र आदि विद्याओं तथा शेयर, लाटरी आदि में रुचि रखने वाला, सन्तान सुख विघ्नों के बाद प्राप्त होता है। स्त्री एवं दाम्पत्य सुख में कमी, व्यवसाय के क्षेत्र में भी अड़चनों एवं संघर्ष के बाद सफलताएं प्राप्त होती हैं। ऐसा जातक दीर्घकालीन योजनाएं बनाने में कुशल होता है। जातक परिवार के सम्बन्ध में चिन्तित परन्तु अपने उद्देश्य के प्रति सतर्क एवं सफल होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 108

षष्ठ भाव-में कर्क राशि पर शनि होने से जातक/जातिका बाल्यावस्था में स्वास्थ्य एवं शरीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है। भाई/बहिनों से मतान्तर अथवा उनके सुख में भी कमी होती है। माता अथवा ननिहाल का सुख भी कम प्राप्त होता है। जातक निज पुरुषार्थ से जीवन में उच्च विद्या एवं सुप्रतिष्ठित होता है। दाम्पत्य सुख में विघ्न/बाधाएं एवं अड़चनें होती हैं। जातक को लीवर, पित्ताशय, उदर सम्बन्धी गुप्त रोगों का भय भी रहता है।

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर शनि स्थित होकर लग्न भाव को स्वगृही तथा भाग्य को उच्च दृष्टि से देखता है। फलस्वरूप जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, भाग्यशाली, धार्मिक विचारों एवं सदाचरण से युक्त, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, यशस्वी एवं सुप्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। चतुर्थ एवं भाग्यस्थान को देखने से जातक भूमि, जायदाद, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न तथा दूध, तेल एवं अन्य कैमीकल्ज़ द्वारा आय के विविध साधनों से लाभान्वित होता है। वैवाहिक सुख में कुछ कमी रहती है। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाईयों से सफलता मिलती है। देखें उदा. कुं. नं. 106

अष्टम भाव-में कन्या राशि पर शनि के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी तथा अत्यन्त संघर्ष के बाद उच्च विद्या में सफलता होती है। पैतृक पक्ष से लाभ में कमी अथवा पिता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है। परिवारिक सुख में कमी तथा जातक आध्यात्मिक क्षेत्र में उच्च प्रतिष्ठित तथा योग, धर्म, मंत्र, दर्शन आदि गूढ़ विद्याओं में रुचि, व्यवसाय के सम्बन्ध में अनिश्चितता, अस्थिरता एवं अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

नवम भाव-में तुला (उच्च) राशि का शनि होने से जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, भाग्यवान्, शत्रुओं का दमन करने वाला, नीतिज्ञ, राजनीति में रुचि रखने वाला, धर्म-परायण, भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक अपने पुरुषार्थ से लाभ व उन्नति करने वाला, विद्वान, उदार हृदय, परोपकारी, समाज में प्रतिष्ठित होता है। सहोदरों (भाईयों) का सुख कम मिलता है। देश-विदेश में भ्रमण या प्रवास के अवसर मिलते हैं। ऐसे जातक के भाग्योदय में अधिकांशत: महिलाएं विशेष सहायक होती हैं।

दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर शनि के प्रभाव से जातक तेज बुद्धि वाला, उत्तेजित होने की प्रकृति, महत्त्वाकांक्षी, जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय सम्बन्धी विशेष संघर्ष एवं कठिनाईयों का सामना, चतुर्थ भाव को मित्र दृष्टि से देखने से जातक भूमि, माता, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, पैतृक सुख-सम्पदा में कमी हो, दाम्पत्य एवं स्त्री सुख में कमी अथवा असन्तोष की भावना रहे।

एकादश भाव-में धनु राशि पर शनि के प्रभाव से जातक स्वाभिमानी, कुशाग्र बुद्धि, विद्वान, उच्च विद्या, उदार हृदय, उद्यमी, साहसी, धन-धान्य एवं सुख-सम्पदा से युक्त, धर्म, ज्योतिष, योग, तन्त्र आदि विद्याओं में रुचि, जातक अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क रहने वाला तथा निज उद्यम द्वारा समुचित धन का अर्जन करता है परन्तु धन के खर्च भी बहुत

अधिक होते हैं। यदि शनि यहां सूर्य के कारण अस्त आदि अवस्था में हो, तो जातक/जातिका को वैवाहिक सुख एवं सन्तान आदि दाम्पत्य सुखों की कमी होती है अथवा प्रणय सम्बन्धों में किसी मित्र के द्वारा विश्वासघात किए जाने की सम्भावना होती है। तथापि ऐसा व्यक्ति खर्चीले स्वभाव का तथा रईसी ठाठ-बाठ से रहने वाला होता है।

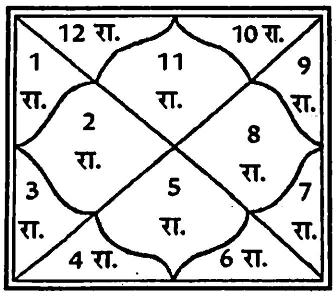
द्वादश भाव-में स्वगृही कुम्भ राशि का शनि होने से जातक कल्पनाशील, भावुक, भाग्यवान्, धार्मिक आस्था युक्त, उदार हृदय, परोपकारी स्वभाव, भ्रमणप्रिय तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप एवं संघर्ष अधिक करना पड़ता है। देश-विदेश की यात्राएं भी अधिक करनी पड़ती हैं। इस सम्बन्ध में धन के खर्च भी विशेष अधिक होते हैं। परिवारिक सुख में कमी रहती है। व्यवसाय में संघर्ष के बावजूद जातक निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने में सफल रहता है। यहां शनि गुरु या बुध युक्त या दृष्ट हो तो जातक को धर्म, अध्यात्म, योग, ज्योतिष, तंत्र आदि विद्याओं के प्रति विशेष रुचि होती है। देखें उदाहरण कुंडली 104

सूर्य या चन्द्र से युक्त हो तो आंखों में रोग, शिर पीड़ा एवं शरीर कष्ट होते हैं।

कुम्भ लग्न के द्वादश भावों में राहु का फल

विशेष—कुम्भ लग्न राशि में राहु बली एवं शुभ कारक माना जाता है। इसके अतिरिक्त कुम्भ लग्न में 3, 4, 5, 6, 8 तथा 12वें भाव में मिश्रित प्रभाव करता है। सामान्यतः 3, 6, 11वें भावों में राहु अरिष्टनाशक एवं सौभाग्यकारक माना जाता है।

बृश्चिक लग्ने, राहु फल



प्रथम भाव-में कुम्भ राशि में राहु होने से जातक बुद्धिमान, साहसी, हठी एवं कुछ तेज़ स्वभाव, अपनी मान्यताओं पर दृढ़, स्वतंत्र चिन्तन, नीतिज्ञ, तर्क-वितर्क एवं विश्लेषण करने में कुशल, अल्प सन्तति, परिश्रमी एवं गुप्त युक्तियों से धन लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, व्यवसाय में संघर्ष एवं परेशानियों के बाद लाभ प्राप्त करने वाला, ऐसा जातक स्वतन्त्र चिन्तक, अपने काम में मगन, किसी दूसरे का दखल (हस्ताक्षेप) पसन्द नहीं करता, स्वाभिमानी, अपनी पत्नी एवं गृहस्थ सम्बन्धों से असंतुष्ट होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त परिश्रम एवं संघर्ष करने पर भी अधिक धन का संचय नहीं कर पाता। भाई/बन्धुओं एवं सम्बन्धियों का सुख कम मिलता है। ज्योतिष, योग, दर्शन, मंत्र-तंत्र आदि विद्याओं में रुचि, अपना स्वास्थ्य एवं दाम्पत्य के सुख में कमी रहे। देखें उदा. कुण्डली नं. 110

द्वितीय भाव-में मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अस्थिर एवं चंचल प्रकृति, स्वास्थ्य एवं परिवारिक सुख में कमी रहे। जातक स्पष्टवादी, परिश्रमी, अत्यन्त संघर्ष से निर्वाह योग्य आय के साधन अर्जित करने वाला, अल्पायु होने पर भी बाह्य तौर पर रईसी ढंग से खर्च करने वाला होगा। जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में विशेष उतार-चढ़ाव होंगे, परन्तु उत्तरार्ध भाग में आय के साधनों में सुधार होंगे तथा जातक भूमि, धन-सम्पदा, व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सम्पन्न होता है। देखें उदा. कुं. नं. 106

तृतीय भाव-में मेष राशि पर राहु होने से जातक बुद्धिमान, साहसी, पराक्रमी, उत्साहशील, परिश्रमी एवं भ्रमणशील होता है। व्यवसाय में दौड़धूप एवं अड़चनें अधिक आती हैं तथा खर्च भी बहुत अधिक मात्रा में रहते हैं। जातक अपने परिश्रम एवं पुरुषार्थ के बल पर निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। जातक के प्रत्येक कार्य में विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त होती है।

चतुर्थ भाव-में वृष राशि पर राहु होने से विवेकशील, परिश्रमी, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त, संगीत, कला एवं साहित्य में रुचि, माता या पिता दोनों में से किसी एक के सुख में कमी, परन्तु उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से सम्पर्क हो, व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाईयों का सामना रहे। अपने जन्म स्थान से अतिरिक्त नगर में भाग्योन्नति व लाभ हो।

पंचम भाव-में मिथुन राशि पर राहु होने से जातक अति बुद्धिमान, तीव्र स्मरण शक्ति, परिश्रमी, व्यवहार कुशल,

तार्किक, अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क एवं प्रयासरत रहने वाला, न्यायप्रिय, विघ्न/बाधाओं के पश्चात् ही उच्च शिक्षा की प्राप्ति, प्रथम सन्तान प्राय: कन्या होती है। पुत्र सन्तति उचित उपायों के पश्चात् होती है। जातक को धर्म, योग, ज्योतिष, मन्त्र, तन्त्र आदि गूढ़ विद्याओं में भी विशेष रुचि रहती है। यदि राहु के साथ शुक्र का योग हो, तो दो कन्याओं का योग होता है। देखें उदा. कुण्डली नं. 107.

षष्ठ भाव-में कर्क राशि पर राहु होने से जातक धैर्यवान, विलक्ष्ण बुद्धि, साहसी, भ्रमणशील, देश-विदेशों में भ्रमण करने वाला, शत्रु नाशक, दीर्घजीवी होता है। ऐसा जातक उच्चादर्श वाला, मानसिक व आध्यात्मिक शक्ति प्रबल होती है। यदि शनि अष्टम में तथा शुक्र दूसरे उच्चस्थ हो, तो जातक या तो भौतिक सुखों में अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में उच्च प्रतिष्ठित होता है। गर्गाचार्य के अनुसार ऐसा जातक प्रज्ञावान्, ज्ञानी, राजा के तुल्य प्रतिष्ठित एवं विख्यात् होता है। छटे राहु कमर दर्द, दन्त एवं नेत्र रोग, पेट विकार आदि भी करता है।

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर राहु होने से जातक गर्वीला, बुद्धिमान, स्वाभिमानी, धैर्यवान्, परिश्रमी एवं उदार हृदय वाला, किन्तु जातक कुछ गर्वीला, कठोर परंतु कामुक प्रकृति का होता है। प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होने के कारण पत्नी से अतिरिक्त अन्य स्त्रियों के साथ सम्बन्ध रहने की सम्भावना होगी। पत्नी को कष्ट एवं दाम्पत्य सुख में कमी होगी। यदि सप्तमेश बुध स्वोच्च राशि में हो तथा लग्न भाव पर लग्नेश की स्वगृही दृष्टि हो, तो जातक का वैवाहिक (गृहस्थ) जीवन सुखमय और व्यवसायिक क्षेत्र में विशेष रूप से सफल होता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 105

अष्टम भाव-में कन्या राशिगत राहु होने से जातक/जातिका तीव्र बुद्धिमान, विवेकशील, तार्किक, अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति, योग, धर्म, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में दिलचस्पी, विद्वान, कला, संगीत, साहित्य एवं सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखने वाला, प्रारम्भिक जीवन में (पारिवारिक क्षेत्र में) अनेक परेशानियां एवं संकट आते हैं तथा वैवाहिक एवं पारिवारिक सुख में कमी रहती है। पेट सम्बन्धी तथा डायब्टीज़ आदि गुप्त रोगों की सम्भावना होती है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा अच्छा धनार्जन करता है। 36 वर्ष की आयु के बाद विशेष धन लाभ व उन्नति प्राप्त होती है। अष्टमस्थ राहु उच्चपदाध्यक्ष, अफसर, प्रिंसीपल एवं राजनीति के क्षेत्र में विशेष सफल पाए गए हैं। देखें उदा. कुण्डली नं. 109

नवम भाव-में तुला राशि पर राहु होने से जातक कुशल बुद्धि वाला, व्यवहारकुशल, परिश्रमी, सामान्य रूप से धर्म का पालन करने वाला, उद्यमी होता है। परन्तु भाई/बहिनों के सुख में कमी अथवा उनके साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्ध नहीं रहते। जातक को विदेश आदि से सम्बन्धित कार्यों में भी विशेष सफलता की सम्भावना होती है। ऐसा जातक समाज में प्रतिष्ठित, अपने भाई बन्धुओं की सहायता करने वाला, दयालु, धार्मिक प्रवृत्ति, तीर्थ यात्राएं करने में रुचि रखता है। धर्म, ज्योतिष, योग, मंत्र आदि विद्याओं में भी रुचि होगी। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् उन्नति करता है। (35) पैंतीस वर्ष की आयु के बाद जातक विशेष धन लाभ एवं भूमि, वाहन आदि सुख के साधन अर्जित करता है।

दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर राहु के प्रभाव से जातक के जीवन का पूर्वार्द्ध भाग विशेष कठिनाईयों एवं संघर्ष के साथ गुज़रता है। जातक परिश्रमी, स्वाभिमानी, साहसी एवं उच्चाकांक्षी होता है। पैतृक सम्पत्ति का विशेष सुख नहीं होता। माता-पिता दोनों में से किसी एक के सुख में कमी होती है। कुण्डली में यदि मंगल व शुक्र शुभस्थ हों, तो जातक को अत्यन्त संघर्ष के बाद ही मकान, वाहन आदि के सुख प्राप्त होते हैं। लगभग ब्यालीस (42) वर्ष की आयु के बाद सत्ता एवं सम्पत्ति के सुख प्राप्त होते हैं। यद्यपि घरेलू शान्ति की कमी रहती है।

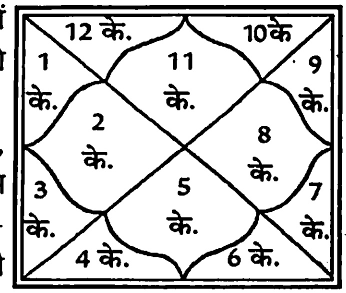
एकादश भाव-में धनु राशि पर राहु के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, कुशल बुद्धि, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न बाधाएं, सन्तान सम्बन्धी भी गुप्त परेशानियों एवं कष्ट का सामना रहे। ऐसा जातक अपने मन की बात जल्दी प्रकट नहीं होने देता। जातक को धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं के प्रति भी रुचि रहती है। व्यवसाय में धनार्जन के सम्बन्ध में जातक को अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कई बार उचित/अनुचित साधनों का भी प्रयोग करता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 108

द्वादश भाव-में मकर राशि पर राहु के प्रभाव से जातक अत्यन्त परिश्रमी, कामुक एवं स्वतन्त्र प्रकृत्ति का, शत्रुनाशक, भ्रमणशील, देश-विदेश में भ्रमण करने के अवसर प्राप्त करने वाला, कार्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यन्त

संघर्षपूर्ण परिस्थितियों एवं संकटों का सामना करने वाला होता है। ऐसे जातक को खर्च चलाने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। कुंडली में यदि कर्मेश मंगल एवं भाग्येश शुक्र की स्थिति शुभ हों, तो जातक को देश एवं विदेश आदि के सम्बन्धों में विशेष धन लाभ व उन्नति को प्राप्त करता है। सूर्य अशुभ हो तो वैवाहिक जीवन का सुख कम मिलता है। जातक को योग, शास्त्र, ज्योतिष, तन्त्र आदि में भी विशेष रुचि होती है। देखें उदा. कुंडली नं. 104

कुम्भ लग्न में द्वादश भावगत केतु का फल

कुम्भ लग्ने, केतु फल



विशेष–जिस भाव में केतु हो तथा उस भाव का जो भावेश होगा, उसके अनुसार ही फल प्राप्त होंगे। भावेश का जो अच्छा–बुरा फल होगा, वही फल इस स्थान में बैठे केतु का फल मिलेगा। इसके अतिरिक्त केतु पर गुरु व शनि के योग एवं उनकी दृष्टियों के फलस्वरूप भी फल में न्यूनाधिकता आयेगी।

प्रथम भाव-में कुम्भ राशि पर केतु की स्थिति होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, धैर्यवान, परिश्रमी, कामुक प्रवृत्ति, गर्विष्ठ एवं कठोर प्रकृति, गुप्त युक्तियों द्वारा काम निकालने में कुशल होता है। मुख पर तिल या चोटादि का चिन्ह, उद्विग्न चित्त, भाई–बन्धुओं के सहयोग में कमी तथा अड़चनों के पश्चात् वैवाहिक सुख की प्राप्ति होती है। परन्तु यदि कुंडली में लग्न पर शनि की स्वगृही दृष्टि हो तो जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व, स्वाभिमानी, जमीन–जायदाद, सवारी, स्त्री एवं संतानादि सुखों से सम्पन्न होता है। व्यवसाय में (अभिनय, संगीत, गायन, कला आदि के क्षेत्र) विशेष सफलता प्राप्त करने वाला होता है। उदाहरण देखें कुं. नं. 105, ऐसा जातक कार्यक्षेत्र में निज परिश्रम के बल पर ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

द्वितीय भाव-में मीन राशि पर केतु होने से जातक/जातिका धैर्यवान, कुशाग्र बुद्धि, परिश्रमी एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला होता है। जातक स्पष्टवादी, कई बार कटुभाषी एवं मुख रोग से पीड़ित होने की सम्भावना, परिवारिक सुख में कमी, विघ्नों के पश्चात् उच्च विद्या की प्राप्ति तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद सफलता की प्राप्ति होती है। यदि कुंडली के द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि हो तो वैवाहिक सम्बन्ध तलाकादि में समाप्त होते हैं अथवा वैवाहिक सुख में कमी होती है। जीवन का उत्तरार्ध भाग विशेषकर (42वें वर्ष के पश्चात्) धन–सम्पदा आदि सुख–साधनों से सम्पन्न होता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 109

तृतीय भाव-में मेष राशि पर केतु होने से जातक/जातिका पराक्रमी, साहसी, परिश्रमी होता है। परन्तु भाई–बहिनों के सुख में कमी रहती है। ऐसा जातक व्यवहार–कुशल तथा गुप्त युक्तियों द्वारा कार्य व्यवसाय में सफल होता है। जातक भ्रमणशील, परोपकारी होता है। तीर्थ आदि धार्मिक यात्राएं करने के भी अवसर मिलेंगे। जातक ज्योतिष, धर्म, योग, मंत्रादि विद्याओं में रुचि रखने वाला, पुरुषार्थी तथा देश–विदेश के कार्यों में सफल रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी लगभग 35 वर्ष के पश्चात् विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करता है।

चतुर्थ भाव-में वृष राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, साहसी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। माता के सुख में कमी तथा पैतृक सम्पत्ति का भी विशेष सुख नहीं होता। यदि जन्म कुंडली में मंगल एवं शुक्र शुभस्थ हो तो जातक कठिनाईयों के बाद जमीन–जायदाद एवं वाहनादि सुख प्राप्त करने में सफल होता है। यद्यपि घरेलू वातावरण में अशान्ति तथा मानसिक तनाव बना रहता है।

पंचम भाव-में मिथुन राशि पर केतु होने से जातक तीष्ण बुद्धि, तर्क वितर्क करने में कुशल, जातक शेयर, लाटरी, तंत्र–मंत्र आदि में रुचि रखने वाला, अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क होता है। यदि केतु के साथ शनि का योग हो तथा पंचमेश बुध सूर्य के साथ योगकारक हो एवं मंगल भी शुभस्थ हो, तो जातक सरकारी या मिलिट्री की सर्विस में अच्छी पोजीशन प्राप्त करता है। ऐसा जातक कठिनाईयों के बावजूद बुद्धि चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों द्वारा उच्च विद्या, सुंदर सुशील पत्नी एवं संतानादि सुखों को प्राप्त करने में सफल होता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 108

छटे भाव-में कर्क राशि पर केतु होने से जातक के जीवन का प्रारम्भिक भाग अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं परेशानियों से

युक्त होता है। स्वभावत: ऐसा जातक/जातिका बुद्धिमान, धैर्यवान, परिश्रमी, कर्मठ तथा कार्य/व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों से धन का अर्जन करता है। विवाद आदि के कारण धन का अपव्यय भी होता है। शत्रुओं द्वारा हानि एवं दुख उठाने पड़ते हैं। जातक को देश-विदेश में लघु-दीर्घादि यात्राओं के अवसर एवं लाभ भी प्राप्त होते हैं। जातक धर्म, ज्योतिष, योग, तंत्र आदि विषयों में भी विशेष रुचि रखता है। देखें उदा. कुं. 104

सप्तम भाव-में सिंह राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, स्वाभिमानी, अपनी जिद् एवं धुन का पक्का, साहसी एवं परिश्रमी प्रकृति का होता है। स्त्री या परिवार के साथ मतान्तर एवं वैमनस्य रहे। वैवाहिक एवं परिवारिक सुख में कमी एवं असंतोष रहता है। व्यवसाय में अस्थिरता होती है। जातक अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के पश्चात् निर्वाह योग्य धनार्जन एवं आय के साधन बना लेने में सफल होता है। सुख साधन उपलब्ध होने पर भी जातक को उदर विकार, मानसिक अशान्ति, उद्विग्नता, ब्लड प्रैशर, शिर पीड़ा, पित्त विकार आदि रोगों की सम्भावना रहती है। अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करने पर भी अधिक धन संचय नहीं कर पाता। देखें उदा. कुंडली नं. 110

अष्टम भाव-में कन्या राशि पर केतु होने से जातक उदार हृदय, परोपकारी, धर्म-परायण, संवेदनशील, परिश्रमी, तीव्र बुद्धिमान, स्वाभिमानी, स्पष्टवादी, गुप्त युक्तियों द्वारा धन अर्जन करने वाला होता है, परन्तु स्वास्थ्य में कमी रहती है। यदि द्वितीय भाव पर सूर्य-बुध का योग हो तथा मंगल-केतु का योग हो, तो जातक पैतृक सुख सम्पदा से लाभान्वित परन्तु भ्रातृ सुख में कमी होती है। गुरु केन्द्रगत हो, तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति, दयालु, प्रतिष्ठित एवं समाज में माननीय होता है। केतु भौम युक्त होने से जातक गुप्त रूप से चिन्तित, उदर विकार, उच्च रक्तचाप, दुर्घटना आदि से शरीर कष्ट होने की सम्भावना रहती है। देखें उदा. कुंडली नं. 106

नवम भाव-में तुला राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, धैर्यवान, धर्म परायण, भ्रमणशील, कार्य कुशल एवं मिलनसार प्रकृति का होता है। जातक को कार्य/व्यवसाय एवं भाग्योन्नति में विघ्नों के बाद सफलता प्राप्त होती है। व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़ धूप, संघर्ष एवं यात्रा अधिक होने के संयोग बनते हैं। जातक निजी उद्यम के बल पर जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। परन्तु जातक ज्योतिष, योग, एवं धार्मिक विषयों में विशेष रुचि रखता है।

दशम भाव-में बृश्चिक राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, स्वाभिमानी, परिश्रमी, संगीत, शिल्प-कला आदि विषयों में कुशल, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध हो। पैतृक सुख में कुछ कमी रहे। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं परेशानियों के बाद सफलता प्राप्ति हो। लगभग 35 वर्ष की आयु के बाद व्यवसाय में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त हो।

एकादश भाव-में धनु राशि पर केतु के प्रभाव से जातक विवेकशील बुद्धि, मधुरभाषी, तीव्र स्मरणशक्ति, धैर्यवान, विद्वान, तर्क-वितर्क करने में कुशल, न्यायप्रिय, उच्चशिक्षा में बाधाएं तथा विघ्नों के बाद सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। प्रथम सन्तान प्राय: कन्या होती है। जातक को ज्योतिष, योग, शेयरों, लाटरी आदि विषयों में भी विशेष रुचि होती है। ऐसा जातक पराक्रमी, अधिकार सम्पन्न होता है। सन्तान के विषय में चिन्तित रहता है। जातक विघ्न बाधाओं के बावजूद स्त्री, सन्तान, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है। अपने जन्म स्थान से अन्यत्र विदेशादि में भाग्योदय होता है। जातक का विशेष भाग्योदय लगभग 33 वर्ष की आयु के बाद से शुरु होता है। देखें उदा. कुंडली नं. 107

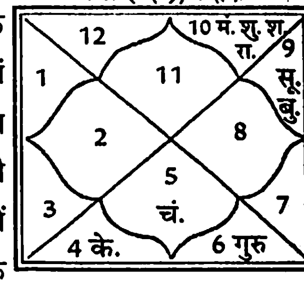
द्वादश भाव-में मकर राशि पर केतु होने से जातक चतुर बुद्धि वाला, पराक्रमी, परिवर्तनशील प्रकृति, दीर्घजीवी, शत्रुओं पर प्रभावशाली, देश विदेशों में भ्रमणशील, अत्यधिक संघर्ष एवं परिश्रम करने पर भी धन का संचय अधिक नहीं हो पाता, जीवन में आर्थिक परेशानियां बनी रहती हैं। जातक को धन का व्यय अधिक करना पड़ता है। लोगों के द्वारा धोखे अथवा बीमारी आदि पर धन का खर्च अधिक रहता है। जातक विदेश आदि के सम्बन्धों द्वारा भी लाभान्वित होता है।

द्विग्रही एवं त्रिग्रही योगों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी एवं फलादेश के लिए आगामी पृष्ठ पढ़ें। अलग आध्याय में सविस्तार से दे दिया गया है। कुम्भ लग्न में केन्द्र-त्रिकोण भावों में यदि बुध-शनि या शुक्र का योग हो, तो विशेष शुभफली होता है। जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

कुम्भ लग्न-कुछ विशेष उल्लेखनीय उदाहरण कुण्डलियां

केन्द्रिय शिक्षा मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी

उदा. कुंडली नं. 104
5 जनवरी, 1934 ई.
मघा (३), दिल्ली



भारत के भूतपूर्व गृह मंत्री, भाजपा के भूतपूर्व प्रधान तथा वर्तमान कालिक केन्द्रिय शिक्षा मन्त्री डा. मुरली मनोहर जोशी का जन्म 5 जनवरी, 1934 ई. को दिल्ली में हुआ था। इनका जन्म लग्न कुम्भ तथा नवांश मीन लग्न उदित है। डा.जोशी भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक एवं उच्च कोटि के विद्वान हैं। इसके अतिरिक्त तीव्र बुद्धिमान, तर्कशील एवं कुशल वक्ता हैं। आप इलाहाबाद विश्व विद्यालय में साईंस (फिज़िक्स) के सुयोग्य प्रोफैसर के पद पर कार्यरत रहे हैं। वर्तमान काल में केन्द्रिय मन्त्री मण्डल में शिक्षा मन्त्री के पद पर सुशोभित हैं तथा वह भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्षय में शिक्षा के सम्बन्ध में श्लाघनीय सुधारात्मक प्रयास कर रहे हैं। डा. मुरली मनोहर जोशी वर्तमान राजनीति के क्षेत्र में भी मौलिक चिन्तक, सच्चे देशभक्त, दृढ़निश्चयी, सत्यनिष्ठ एवं निडर भारतीय नेता माने जाते हैं। इनकी कुण्डली में निम्नलिखित प्रमुख योग पाए जाते हैं-

(1) जन्म कुण्डली में एकादश भाव में राशिस्वामी सूर्य पंचमेश बुध के साथ बुधादित्य योग बना रहा है तथा पंचम भाव पर स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। इस प्रबल योग के कारण डा. जोशी तीव्र बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, श्रेष्ठ प्रबन्धात्मक योग्यता तथा आत्मिक शक्ति एवं मानसिक शक्तिवान हुए हैं।

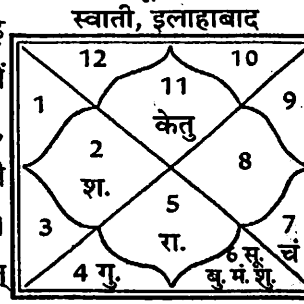
(2) राजयोग-कुंडली में राजनीति एवं कर्मक्षेत्र का भी स्वामी मंगल उच्च राशि का होकर द्वादश भाव में त्रिकोणेश शुक्र के साथ राजयोग कारक हुआ है। जिससे जातक पराक्रमी, तेजस्वी एवं सफल राजनीतिज्ञ तथा उच्च पद प्रतिष्ठित हुआ है।

(3) लग्नेश शनि एवं भाग्येश शुक्र का सम्बन्ध होने से एक अन्य राजयोग बना है जिससे जातक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में भी उच्च प्रतिष्ठित हुआ है।

(4) गुरु नवांश में भी कन्या राशिगत होने से वर्गोत्तम स्थिति में है जिससे जातक धर्म, ज्योतिष, आर्युविज्ञान आदि विद्याओं में विशेष कुशलता प्रदान करता है।

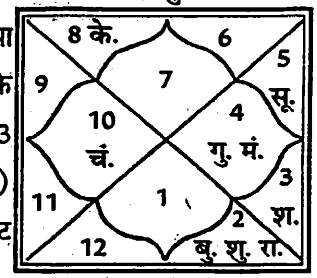
भारतीय सिनेमा जगत के प्रसिद्ध सुपर स्टार अमिताभ बच्चन

उदा. कुंडली नं. 105
11 अक्तू. 1942 ई.
स्वाती, इलाहाबाद



प्रस्तुत जन्म कुंडली भारतीय सिनेमा जगत के प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन की है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश इलाहाबाद में 11 अक्तूबर 1942 को कुम्भ लग्न एवं तुला के नवांश में हुआ था। यह प्रसिद्ध कवि श्री हरवंशराय बच्चन के सबसे बड़े लड़के थे। स्वाती नक्षत्र एवं तुला राशि में जन्म लेने के कारण अमिताभ बच्चन बचपन में स्कूल काल से ही बुद्धिमान, संवेदनशील, स्पष्टवादी, भावुक, मधुरभाषी, सौन्दर्यप्रिय, नाटय, अभिनय, संगीत, गायन आदि कलाओं में विशेष रूचि रखते थे। कालेज की उच्चस्तरीय शिक्षा में जाते-जाते इन्हें गुरु की दशा लग चुकी थी, जोकि 21 अगस्त 1971 ई. तक रही। कालेज में भी वह संगीत व नाट्य कला से विशेष रूप से जुड़े रहे। सन्

नवांश कुंडली



1970 ई. में प्रदर्शित 'सात हिन्दुस्तानी' नामक फिल्म से प्रथम बार फिल्म जगत में प्रवेश किया। यद्यपि प्रथम फिल्म विशेष सफल नहीं हुई, परन्तु सन् 1970-72 में निर्मित तथा 1973 में प्रदर्शित फिल्म 'जंजीर' के सफल होने से श्री अमिताभ बच्चन प्रथम श्रेणी के अभिनेताओं में गिने जाने लगे तथा उनके जीवन में एक नए युग का आरम्भ हुआ। 1973 ई. के बाद (विशेषकर शनि की महादशा एवं शनि, बुध व शुक्र की अन्तर्दशाओं में) इन्होंने फिल्म उद्योग को तथा भारतीय सिने-दर्शकों को एक के बाद एक सुपर हिट फिल्में दीं तथा फिल्म जगत में नम्बर एक स्थान में रहे-

इनकी प्रसिद्ध एवं उल्लेखनीय फिल्मों के नाम इस प्रकार से हैं- जंजीर, दीवार, सुहाग, शोले, कुली, अमर अक्बर एंथोनी, मुकदर का सिकन्दर, लावारिस, मेजर साब इत्यादि। इसके पश्चात् टैलीविज़न पर 'कौन बनेगा करोड़पति' सीरियल पर इन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है। इनकी लोकप्रियता और अद्वितीय प्रतिभा को देखते हुए इनको अनेक देशीय एवं विदेशी सस्थानों द्वारा विभिन्न उपाधियों से सम्मानित भी किया जा चुका है। इनकी जन्म कुण्डली में कुछ प्रसिद्ध उल्लेखनीय ज्योतिष योग इस प्रकार से मिलते हैं।

(1) गजकेसरी योग-श्री बच्चन की कुंडली में चन्द्रमा से गुरु दशम (केन्द्र) भाव में होने से जातक तेजस्वी, मेधावी, गुणी, धनवान्, विवेकशील, अपने कार्य क्षेत्र में उच्च स्थिति प्राप्त करता है-

गजकेसरि संजात-तेजस्वी धन धान्यवान्।
मेधावी गुण सम्पन्नो राजप्रिय करोभवेत्॥

चन्द्र से गुरु उच्च राशि (कर्क) होने से अभिनय, कला क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त किया।

(2) वर्गोत्तम स्थिति-श्री बच्चन की कुं. में गुरु उच्च का है तथा नवांश कुण्डली में भी उच्चस्थ होने से गुरु वर्गोत्तम स्थिति हुआ है जिससे इस योग ने उन्हें बौद्धिक एवं विशेष धन-सम्पदा के क्षेत्र में उच्च एवं विशिष्ट स्थान प्रदान किया है।

(3) अमला योग-चन्द्र से दशम स्थान में शुभ ग्रह होने से बनता है जिससे जातक प्रसिद्ध, गुणवान, लोकप्रिय, उत्साही एवं भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है।

(4) लग्नेश-शनि चतुर्थ भाव में मित्र क्षेत्री होकर लग्न भाव को स्वगृही दृष्टि से देखने से जातक प्रभावशाली, आकर्षक एवं सशक्त व्यक्तित्व का स्वामी हुआ है तथा चतुर्थ भाव से धन-सम्पदा आदि सुख साधनों से सम्पन्न हुआ है।

(5) द्वितीय भाव पर गुरु की स्वगृही दृष्टि से जातक सुखी परिवार, सन्तान, स्त्री एवं विपुल धन-सम्पदा से सुखी हुआ है।

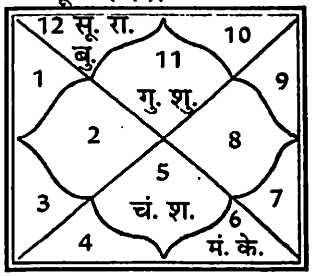
(6) पंचमेश बुध अष्टम भाव में उच्च राशि का होकर सूर्य, मंगल, शुक्र ग्रहों के साथ योगकारक हुआ है, जिससे जातक उच्चशिक्षित, उच्च स्तरीय साहित्यिक एवं बौद्धिक रुचियों से युक्त, विद्वान, सर्व लोकप्रिय एवं राज्य सम्मानित महानुभाव हुआ है।

(7) सप्तम भाव में राहु यद्यपि (आरम्भिक अवस्था में) परिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन में मतान्तर पैदा करता है, परन्तु उत्तरार्ध भाग में विशेष सफलता प्रदान की है।

(8) वर्गोत्तम गुरु के कारण जातक गम्भीर, धैर्यवान, उद्यमी, हाजिर जवाब, धनवान्, कार्य क्षेत्र में सफल तथा मानवीय भावनाओं से युक्त हुआ है।

पंजाब कांग्रेस पार्टी के उपाध्यक्ष श्री विजय खुल्लर

उदा. कुंडली नं. 106
1 अप्रैल, 1950 ई.
पूफा (३), जालन्धर



प्रस्तुत जन्म कुण्डली जातक श्री विजय खुल्लर की है। इनका जन्म कुम्भ लग्न, पूफा (शुक्र का नक्षत्र), एवं भाग्येश तुला के नवांश में 1 अप्रैल सन् 1950 ई. को हुआ था। श्री खुल्लर अत्यन्त बुद्धिमान, मृदुभाषी, धर्मनिष्ठ, सत्य परायण, ईमानदार, निष्काम, समाज सेवा में संलग्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व, किन्तु सरल हृदय के स्वामी हैं। श्री खुल्लर साहिब का परिवार गत अनेक वर्षों से सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में सामान्य लोगों की सेवा में सदैव से समर्पित रहा है। इनके दो बड़े भाई व भतीजा सामाजिक लोकप्रियता एवं राजनैतिक विद्वेष के कारण आंतकवादियों की हिंसा का शिकार हो चुके हैं। श्री विजय खुल्लर भाईयों के निधन के पश्चात् स्वयं भी अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से निष्काम भाव से जुड़े हुए हैं। अपने व्यापारिक क्षेत्रों में अत्यन्त व्यवस्तताओं के बावजूद श्री खुल्लर साहब सर्व साधारण की सेवा एवं दुख निवारण हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। वह म्यूनसिपल कमीशनर, सनातन धर्म श्री गीता मन्दिर के प्रधान तथा वर्तमान में उपाध्यक्ष पंजाब कांग्रेस कमेटी के पद पर शोभायमान है। वर्तमान काल में उन्हें गुरु मध्ये शनि की अन्तर्दशा चल रही है,जो कि 14 जून 2004 ई. तक रहेगी। इनकी जन्म कुण्डली में कुछ मुख्य उल्लेखनीय योग इस प्रकार से पाए जाते हैं–

(1) **गजकेसरी योग**–चन्द्र से गुरु केन्द्रगत (लग्न में) होने से यह योग बना है। इस योग के होने से जातक सेवाभावी, लोक प्रिय, श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, विवेकशील, सद्गुणी, मेधावी, मधुरभाषी, किसी संस्था या पार्टी का उच्चाध्यक्ष एवं सुख साधनों से युक्त होता है।

(2) **गुरु–शुक्र योग**–लग्न भाव में भाग्येश शुक्र व धनेश (गुरु) का योग राजयोगकारक है। इसके फल स्वरूप जातक भाग्यशाली, गम्भीर अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, धनवान, धार्मिक आस्थाओं से युक्त–आस्तिक, धर्म शास्त्र विद्याओं का जानकार तथा समाज में प्रतिष्ठित, दयालु एवं परोपकारी स्वभाव होता है।

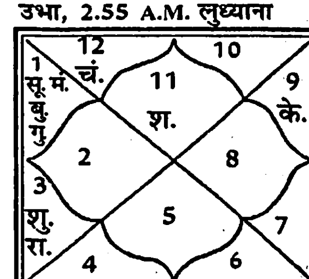
(3) कार्येश मंगल अष्टम भाव से तृतीय भाव को देखने से जातक पराक्रमी, पुरुषार्थी होता है तथा निज पराक्रम से लाभ व उन्नति करने वाला होता है।

(4) **द्वितीय भाव** में सूर्य-बुध का योग जातक को उन्नतशील बुद्धि, धर्म परायणता, आत्मनिष्ठ, सूक्षम बुद्धि, मधुर वाणी तथा विवाह उपरान्त विशेष उन्नति देता है।

(5) **चन्द्र–शनि** का योग सिंह राशि पर होने से जातक को मेरुदण्ड सम्बन्धी एवं हृदय दौर्बल्य सम्बन्धी रोगों की सम्भावना करता है। गुरु, चन्द्र व शनि सम्बन्धी उपाय वांछनीय एवं कल्याणकारी होंगे।

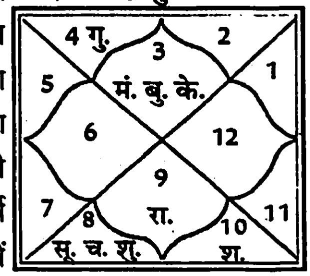
मार्शल-आर्ट में श्रेष्ठतम पद प्राप्त प्रसिद्ध जातक

उदा. कुंडली नं. 107
9 मई, 1964 ई.
उभा, 2.55 A.M. लुध्याना



प्रस्तुत लग्न कुण्डली कुम्भ लग्न का एक आदर्श एवं उत्तरा भाद्रपद (शनि के नक्षत्र) में उत्पन्न यह जातक मार्शल आर्ट (कराटे) के क्षेत्र में उच्चतम बैल्ट (पदक) प्राप्त सुन्दर वर्णाकृति, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी स्वर्ण पदक प्राप्त जातक दीपक भार्गव की है। जातक का प्रारम्भिक जीवन काल अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में गुज़रा। शैशवकाल में जब इनकी आयु लगभग मात्र एक महीना की थी, इनके पिता का आकस्मिक निधन हो गया। (उस समय शनि मध्ये राहु की अन्तर्दशा थी) इनकी प्राथमिक शिक्षा दादा/दादी एवं माता के पास हुई। इनकी माता जी अत्यन्त धार्मिक, सत्यनिष्ठ, कर्त्तव्य-परायण एवं सुशील महिला थीं। उन्होंने स्कूल में स्वयं पढ़ाते हुए

नवांश कुण्डली



बालक का सुनियोजित एवं सुष्ठु ढंग से पालन किया। स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के बाद जातक ने 1984 से 1988 ई. तक लुधियाना में मार्शल आर्ट (कराटे) की विशेष ट्रेनिंग हासिल की तथा उसके बाद श्री भार्गव ने 1988 ई. से स्वयं ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट का सफलतापूर्वक संचालन किया। 1990 ई. में इंगलैंड में रह रही सुपठित एवं सुशील कन्या से विवाह सम्पन्न हुआ। पत्नी विदेश में प्राध्यापन क्षेत्र में कार्यशील है। इंग्लैंड में भी श्री भार्गव ने मार्शल आर्ट के Institute का सफलता से संचालन किया। प्रथम तीन वर्ष (केतु दशा का उत्तरार्ध) व्यवसाय की दृष्टि से अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहे। दिसं. 1992 ई. में शुक्र मध्ये शुक्रान्तर के प्रारंभ में (वृष राशि पर भौमादि ग्रहों के गोचर प्रभाववश) जातक की माता का आकस्मिक निधन होने से वज्रपात हुआ। मातृ शोक के पश्चात् शुक्र के ही अन्तर में अक्तू. 1994 ई. में प्रथम कन्या तथा जन. 1997 को (चन्द्र की अन्तरदशा में) द्वितीय कन्या का जन्म हुआ। वर्तमान काल में शुक्र मध्ये गुरु के अन्तर में (जो कि 29 मार्च 2005 ई. तक रहेगा) शुभ एवं बेहतर फल प्रकट होने की सम्भावना है। मार्शल आर्ट के अतिरिक्त जातक हंसमुख, मानवीय गुणों से युक्त, धर्म और ज्योतिष शास्त्रों में रुचि, भूमि, वाहन, सन्तान सुखों से सम्पन्न, परोपकारी एवं दयालु स्वभाव, धैर्यवान, धर्मपरायण तथा अनेक कठिनाईयों के बावजूद अपने लक्ष्य के प्रति सतत् प्रयत्नशील रहने की योग्यता रखता है-

इसकी जन्म कुण्डली में कुछ प्रमुख ज्योतिषीय योग इस प्रकार से पाए जाते हैं-

(1) जन्म कुण्डली में दशमेश मंगल एवं पितृकारक सूर्य पर शनि की विशेष तीसरी दृष्टि पड़ने से पिता की अकाल मृत्यु का कारण बना। इसके अतिरिक्त जन्म समय शनि मध्ये राहु की अन्तर्दशा भी अशुभ फलकारक थी।

(2) कुण्डली में माता का कारक ग्रह चन्द्रमा पापाक्रान्त पड़ा है। नवांश में भी चन्द्र नीच राशिस्थ होकर छटे पड़ा है। इसके अतिरिक्त गोचरवश दिसं. 92 में जातक के चतुर्थ स्थान (वृष राशि) पर केतु का संचार होना तथा मंगल का वक्री होकर शनि को देखने से माता के लिए अरिष्टकारी हुआ।

(3) शशक योग-जन्म कुण्डली में शनि स्वगृही राशि का होकर लग्न (केन्द्र) में होने से शशक योग बना है। इस योग के होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, विनोदप्रिय, उच्चप्रतिष्ठित, भूमि, आवास एवं वाहन, सुन्दर स्त्री एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। ऐसा जातक अपने अग्रजनों के प्रति विशेष श्रद्धा रखता है।

(4) बुधादित्य योग-जातक की कुण्डली के तृतीय भाव में केन्द्रेश (उच्च) सूर्य एवं पंचमेश बुध का योग बना है। यह राजयोग भी बनता है। इस योग के होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, कुशलवक्ता, उच्च प्रतिष्ठित लोगों (मित्रों) से लाभान्वित, उच्चस्तरीय जीवन शैली जीने वाला होता है। भाई बन्धुओं (आत्मीयों) का सुख कम मिलता है, परन्तु ऐसा जातक दूसरों को सुख देने की विशेष कोशिश करता रहता है। विवाह के बाद विशेष परिवर्तन तथा निज उद्यम से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

(5) इसी भाव पर सूर्य, मंगल, बुध, गुरु चार ग्रही योग जातक को साहसी, आत्मविश्वास से पूर्ण, लोकप्रिय, विद्वान, ज्योतिष, धर्म, योग आदि विद्याओं में विशेष रुचि रखने वाला होता है।

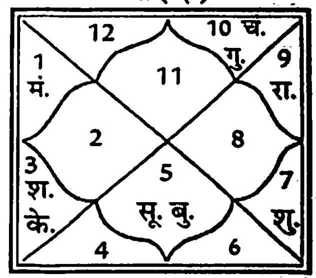
(6) जातक की जन्म कुण्डली में तथा नवांश कुं. दोनों में मंगल व बुध वर्गोत्तमी स्थिति में होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति, तार्किक तथा श्रेष्ठ बौद्धिक क्षमता रखने वाला हुआ है।

(7) नवांश कुं. में गुरु भी उच्च राशिस्थ होने से जातक सात्विक प्रवृत्ति, गुणी तथा एक से अधिक आय के स्रोत रखने वाला होगा।

(8) कालसर्प योग-सभी ग्रह राहु केतु के भीतर संचार करने से कालसर्प योग बना है जिससे कुण्डली में आपेक्षित (Expected) फल नहीं दे पाते।

स्थल सेना में एक सफल कैप्टन

उदा. कुंडली नं. 108
8 सितंबर, 1973
17-00 P.M. तेजपुर (आसाम)
उषा (३)



प्रस्तुत जन्म कुण्डली स्थल सेना में सफल एवं मेधावी एक कैप्टन की है। इनका जन्म तेजपुर (आसाम) में 8 सितंबर 1973 ई. को कुम्भ लग्न एवं मकर के नवांश में हुआ है। शुक्र दोनों कुण्डलियों में तुला में होने से वर्गोत्तम में है। इनके पिता भी मिलिट्री से रिटायर्ड ऑफीसर हैं। इनकी एक बड़ी बहिन है तथा कोई और भाई नहीं है। 1997 ई. में इन्होंने N.D.A. से परीक्षा उत्तीर्ण करके सेना को Join किया। दिसं.सन् 1999 को सुन्दर, सुशील एवं सुशिक्षित कन्या से अपनी पसन्द (प्रेम) विवाह किया। विवाह के एक वर्ष के पश्चात् इनकी पदोन्नति हुई तथा सन् 2001 ई. को पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। इनकी जन्म कुण्डली में कुछ प्रमुख ज्योतिषीय योग इस प्रकार से हैं-

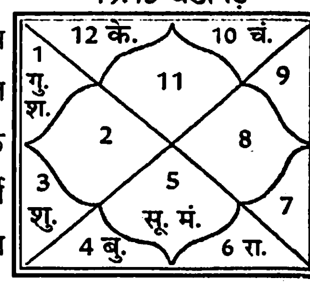
(1) कुण्डली में पराक्रम भाव में मंगल स्वगृही होकर दशम भाव को स्वगृही ही दृष्टि से देख रहा है, जिससे जातक मिलिट्री सर्विसिज़ में सुगमता से प्रवेश प्राप्त करने में सफल हो गया है। मंगल के कारण ही जातक पराक्रमी, उद्यमी, परिश्रमी एवं अपने कार्य क्षेत्र में कुशल हुआ है।

(2) **गजकेसरी योग**-द्वादश भाव में यह योग होने से जातक का भाग्य अपने जन्म एवं पैतृक स्थान से अन्य स्थान पर होता है। जातक तेजस्वी, मेधावी, गुणी एवं सरकारी क्षेत्र में लाभ एवं उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

(3) भाग्येश शुक्र जन्म कुण्डली तथा नवांश कुण्डली दोनों में तुला राशि का होने से वर्गोत्तम स्थिति में है जिससे जातक भाग्यशाली, सुन्दर, सुशील एवं मन पसन्द लड़की से विवाह करने में सफल तथा भूमि, वाहन, सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न हुआ है।

एक उच्च प्रतिष्ठित कालेज की सफल प्रिंसीपल

उदा. कुंडली नं. 109
17 अग., 1940 ई.
19.45 चंडीगढ़



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक उच्च प्रतिष्ठित पोस्टग्रैजुएट कालेज प्रिंसीपल की है, जो आकर्षक एवं भव्य व्यक्तित्व की तथा उच्चशिक्षित (P.H.D.) जातिका अत्यंत कार्य कुशला, हंसमुख, विशिष्ट प्रबन्धात्मक योग्यता रखती है। आपके दो छोटे भाई हैं तथा जब पांच वर्ष की थीं, तो पिता की मृत्यु हो गई। आरंभिक काल (23 वर्ष तक) अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में गुज़रा। युवा होने पर स्वयं पढ़ते हुए ट्यूशन वर्क करते हुए उच्च विद्या प्राप्त की तथा कालेज में लैक्चरार के पद पर कार्यरत रहीं। 25 वर्ष की आयु में इनकी शादी कम पढ़े-लिखे किन्तु अमीर घराने के लड़के के साथ हुई। उस समय (जुला. 1963 ई. से) गुरु की दशा प्रारंभ हो चुकी थी। (1967) तथा (1969 ई.) को इनके यहां क्रमशः दो लड़के हुए। जब छोटा लड़का 8 वर्ष का था, तो इनके पति का आकस्मिक निधन हो गया। उस समय इस जातिका को गुरु मध्ये राहु का अंतर चल रहा था। तदुपरांत इस जातिका ने पिता के अभाव में दोनों बच्चों का पालन किया। बाद में दोनों लड़के उच्च पद प्रतिष्ठित हुए। सन् 1987 ई. को शनि मध्ये शुक्र के अन्तर में इस जातिका की एक उच्च प्रतिष्ठित कालिज में बतौर प्रिंसीपल नियुक्ति हुई। वहां से वह बुध मध्ये केतु की अन्तर्दशा में सेवामुक्त हुईं। यह जातिका अनेक बार अपने लड़के के पास देश-विदेश (अमेरिका) की यात्राएं कर चुकी हैं। इस जातिका की कुण्डली

में ज्योतिष सम्बन्धी विशिष्ट योग इस प्रकार से हैं–

प्रस्तुत कुं. कुम्भ लग्न की आदर्श कुण्डली कही जा सकती है–

(1) प्रस्तुत जातिका की जन्म कुण्डली और नवांश कुण्डली दोनों में कुम्भ लग्न उदित हुआ है, जिससे कुम्भ लग्न वर्गोत्तम स्थिति में होने से जातिका दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी, अत्यन्त बुद्धिमान, गम्भीर, दूरंदेशी हुई है।

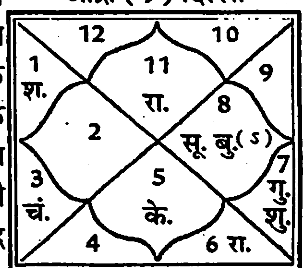
(2) नवांश कुण्डली में शनि उच्च राशिस्थ होकर धनेश गुरु युक्त होने से जातिका उच्चशिक्षित, धार्मिक एवं साहित्यिक रूचियों से युक्त, परोपकारी, मानवीय गुणों से युक्त एवं भाग्यशालिनी हुई है।

(3) जन्म कुण्डली में भाग्येश एवं सुखेश यद्यपि पंचम (सन्तान एवं विद्या क्षेत्र) में शुभस्थ है परन्तु नवांश में उच्चराशिस्थ होने से विद्या एवं सन्तान के सम्बन्ध में जातिका विशेष भाग्यशालिनी रही है।

(4) सप्तम भाव में दोनों क्रूर ग्रह सूर्य, मंगल चलित में दोनों सन्धिगत होने से दाम्पत्य जीवन में पूर्ण सुख की कमी होने के संकेत हैं।

सोना-चांदी की तेजी-मन्दी सम्बन्धी व्यवसाय में संलग्न जातक का उदाहरण

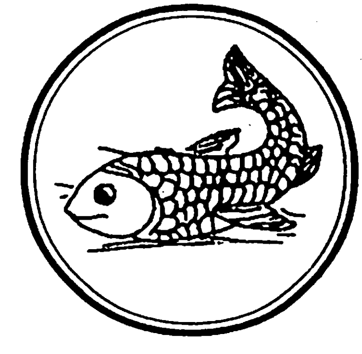
उदा. कुंडली नं. 110
16 नवंबर, 1970 ई.
आर्द्रा (9) दिल्ली



प्रस्तुत कुण्डली का जातक सोने चांदी के व्यापार में संलग्न है। इसकी पत्नी-भी इसके व्यापार में सक्रिय भूमिका निभाती है। राहु के नक्षत्र (आर्द्रा) एवं कुम्भ लग्न तथा बृश्चिक के नवांश में उत्पन्न जातक प्रदीप गोयल प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी है। राहु मध्ये सूर्य की अन्तर्दशा में इनके पिता तथा राहु मध्ये चन्द्र अन्तर में माता का निधन हुआ था। वर्तमान में दो बड़े भाई एवं बड़ी बहिन है। जातक ने सामान्य शिक्षा प्राप्त की तथा सुवर्ण/चांदी के आभूषण बनाने के पैतृक कार्य में लग गया। नवंबर 1998 ई. में जातक का विवाह एक सुन्दर, सुशील एवं कार्य व्यवसाय में सहयोग करने वाली कन्या के साथ हुआ। उस समय जातक को गुरु मध्ये चन्द्र की दशा आरंभ हो चुकी थी। तदुपरान्त चन्द्र की अन्तर्दशा में ही जनवरी 2000 ई. को एक कन्या की प्राप्ति हुई। सन् 1999 और सन् 2000 ई. में (चन्द्र एवं मंगल की युक्ति में सुवर्ण के क्रय-विक्रय से लाखों रुपये के लाभ अर्जित किए, परन्तु जनवरी 2001 के बाद राहु के अन्तर में लाखों रुपये की हानि भी उठानी पड़ी। 30 मई 2003 के बाद शनि महादशा प्रारम्भ हो चुकी है। इस दशा में विशेष परिवर्तन होने की सम्भावना है। जातक की कुण्डली में पंचम भाव पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टियां होने से जातक को कन्या सन्तति का सुख हुआ है। परन्तु पुत्र सन्ताति का अभाव है। भाग्येश शुक्र स्वराशि होने पर भी अस्तंगत होने से जातक पत्नी सहित असंतुष्ट व परेशानी में रहता है। तीसरे भावं में नीच राशि का शनि होने से जातक के भाईयों के साथ अच्छे सम्बन्ध नहीं रह पाए।

मीन राशि एवं मीन लग्न (Pisces)

(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)



यदि किसी जातक के पास अपने जन्म की तारीख, वार, समय आदि का विवरण नहीं है, तो वह अपने नाम के प्रथमाक्षर अनुसार अपनी राशि व उसके फल का अनुशीलन कर सकता है।

मीन लग्ने धनी मानी विनीतश्च भोगी बहुगुणः कुशलो सद्दष्टमानसः।
पितृ मातृ सुराचार्य गुरु भक्ति युतो उदार शास्त्र कलादरत्वो नरः॥
अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोय वित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञोऽभिभवत्यमित्रान् शुभेक्षणो भाग्य युतोऽन्त्यराशौ॥

अर्थात् मीन राशि या मीन लग्न में उत्पन्न जातक/जातिका मान प्रतिष्ठा एवं धन-सम्पदा आदि सुखों से युक्त विनम्र स्वभाव, विलासी प्रकृति किन्तु हंसमुख, गुणवान, धर्म, शास्त्र एवं संगीत, कला, अभिनय आदि में कुशल, माता-पिता, देवताओं एवं गुरुओं के प्रति श्रद्धाभाव रखने वाले, सुन्दर एवं सन्तुलित शरीर, आकर्षक नेत्र, विद्वान, कृतज्ञ, अपनी स्त्री एवं परिवार में संतुष्ट, भाग्यशाली होते हैं। जलीय वस्तुओं के शौकीन तथा जलोत्पन्न वस्तुओं से विशेष लाभ पाने वाले होते हैं।

मीन, राशि चक्र की बाहरवीं और अन्तिम राशि है। इसका विस्तार क्षेत्र मेष सम्पात् बिन्दु से 330 अंश से 360 अंश तक माना जाता है। इस राशि का स्वामी ग्रह गुरु (Jupiter) है। मीन राशि का प्रतीकात्मक चिन्ह जल में संचरणशील दो मछलियां हैं, जिनके मुख एक-दूसरे की विपरीत दिशा में, पूँछ के पास लगे गोलाकृति दिखाए गए हैं। इस राशि के अन्तर्गत पूर्वाभाद्रपद का अन्तिम चतुर्थ चरण, उत्तराभाद्रपद के चारों चरण तथा रेवती नक्षत्र के चारों चरण आते हैं। पूर्वाभाद्रपद का स्वामी गुरु, उत्तराभाद्रपद का शनि तथा रेवती का स्वामी बुध ग्रह को माना जाता है। इस राशि के प्रारम्भ में लिखे नक्षत्राक्षरों एवं नक्षत्र चरण के अनुसार ही जन्म समय बच्चे का नाम रखने की भारतीय परम्परा रही है।

कालपुरुष में मीन राशि का सम्बन्ध जातक के दोनों पांव, तलवे एवं पैरों की अंगुलियों से है। किसी जातक के जन्म समय जो राशि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होगी, जातक का वह अंग पुष्ट होगा तथा जो राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट होगी, उस अंग में पीड़ा या कष्ट जानें।

मीन राशि के अन्य पर्यायवाची नाम- अन्त्य, मत्स्य, तिमि, अंडज, पृथुरोम, अंतिम, अत्यभ, मीनालि, शफरी, अवसान, जलचर, पुष्करागार, तिमिद्धय इत्यादि, अंग्रेजी में पाईसिस (Pisces) तथा उर्दू/फारसी में इसे हूत कहते हैं।

मीन राशि करुणा, संवेदनशीलता एवं आध्यात्मिकता की राशि है। मीन राशि में प्रजनन शक्ति प्रबल होती है। यह द्विस्वभाव, जल तत्त्व, स्त्री लिंग एवं सम राशि, मध्यम शरीर, सौम्य प्रकृति, पिंगल वर्ण, ब्राह्मण जाति, दिवा बली, सत्त्व-गुणी, सम संज्ञक, बहु प्रसवा, स्निग्ध शरीर, उभयोदयी, उत्तर दिशा की स्वामिनी, कफ एवं शीत प्रकृति होती है। इस राशि का प्रिय वार गुरुवार तथा प्रिय रत्न पुखराज है। शुक्र मीन राशि के 27 अंश पर उच्च स्थिति में होता है, जबकि बुध इस राशि के 15 अंश पर नीच स्थिति में होता है। बुध के लिए यह अस्त राशि भी है। ग्रह मैत्री चक्रानुसार मीन राशि सूर्य व मंगल के लिए मित्र राशि, शनि के लिए सम तथा बुध व शुक्र के लिए शत्रु राशि होती है। मीन राशि का प्रथम नवांश कर्क से आरम्भ होता है, जबकि प्रथम द्रेष्काण मीन का ही होता है।

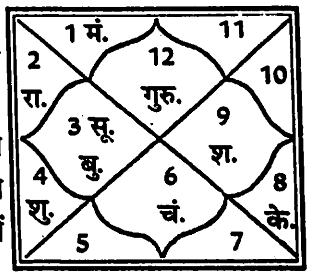
निरयण सूर्य इस राशि पर लगभग 14 मार्च से 12 अप्रैल तक इसी राशि पर संचरित रहता है, जबकि सायन सूर्य लगभग 19 फरवरी से 19 मार्च के मध्य मीन राशि पर संचरित रहता है। वर्तमान काल में बसंत ऋतु का प्रारम्भ भी

सायन मीन के सूर्य से माना जाता है।

शनि इस राशि में जातक का सुधार करता है। मंगल क्षणिक उत्तेजना, संघर्ष, चोट व दुर्घटना आदि का भय, सूर्य क्रोध, तेजी, ज्वर, आँत में सूजन, पैरों में पसीना, शनि राहु आदि वात रोग तथा गुरु उदर सम्बन्धी रोग व पैरों में सूजन, चन्द्र व शुक्र इस राशि में सिनेमा, संगीत, आमोद-प्रमोद, कविता आदि का शौक तथा मदिरा आदि पेय वस्तुओं के सेवन की प्रवृत्ति देता है।

मीन राशि से सम्बन्धित वस्तुएं-मठाधीश, शिक्षा संस्थान, न्यायालय, प्राध्यापन, वैद्यक, डाक्टर, बैंकिंग, वस्त्र (विशेषकर ऊनी), उच्चपदाधिकारी, धर्म एवं दर्शन शास्त्र, लेखन आदि साहित्य, क्रीड़ा क्षेत्र, लकड़ी, सोना, पीतल, ताम्बा आदि धातुएं, केले, पपीता, चने, हल्दी, बेसन आदि पीले वर्ण की वस्तुएं, मोम, गाय, घोड़ा, पुखराज, विदेश गमन, समुद्री यात्राएँ, मदिरा, मछली आदि जल से उत्पन्न वस्तुएँ।

मीन लग्न में शुभ एवं योग कारक ग्रह



सूर्य-षष्ठेश ग्रह होने से मीन लग्न में शुभाशुभ दोनों-अर्थात् मिश्रित प्रभाव करेगा। इन लग्न के २, ३, ४, ५, ६, ७, ९ एवं १०वें भावों में प्राय: शुभाशुभ (मिश्रित) फल तथा अन्य स्थानों में अशुभ फल करता है।

चन्द्र-पंचमेश होने से मीन लग्न में प्राय: शुभ फल प्रकट करता है। उच्च या बली होने की स्थिति में जातक मेधावी, उच्चशिक्षित, विद्वान, धनी, माता, स्त्री व पारिवारिक सुखों से युक्त होगा। कुण्डली में 1, 2, 3, 5, 7, 9, 10 एवं 11वें भावों में शुभ व अन्य भावों में सामान्य फल देता है।

मंगल-धनेश व भाग्येश मंगल मीन लग्न में प्राय: शुभ फल प्रदान करता है। द्वितीय मारकेश भी होने से मंगल जातक को संघर्ष, तनाव एवं उत्तेजना भी देता है। मीन लग्न के 1, 3, 4, 10, 11वें भावों में शुभ एवं 2, 5, 8 व 9 भावों में मिश्रित फल तथा 5, 6, 7 व 12वें भावों में प्राय: अशुभफल देता है।

बुध-सुखेश व सप्तमेश होने से प्राय: शुभफल प्रदायक होता है। परन्तु केन्द्र स्वामित्व का दोष भी रहता है। नीच राशिस्थ होने से उच्च विद्या में अड़चनें तथा स्वास्थ्य में कमी करता है। इसके अतिरिक्त 6, 8 व 12वें भावों में अशुभ फली होता है, जबकि अन्य भावों में प्राय: शुभफली रहता है। शुभ होने पर स्त्री, विद्या व सुख साधनों में वृद्धि करता है। संगीत, गायन, आर्ट आदि ललित कलाओं को भी देता है।

गुरु-मीन लग्न में लग्नेश व कर्मेश होने से गुरु अत्यन्त शुभ माना जाता है। लग्नेश होने से केन्द्र आधिपात्य दोष नहीं लगता। ३, ६, ८, ११ एवं १२वें भावों में अशुभ तथा शेष अन्य भावों में शुभफली होता है। शुभ होने की स्थिति में यह जातक को उच्च विद्या, पति एवं सन्तति सुख, धन-सम्पदा, धार्मिक प्रवृत्ति, बौद्धिक योग्यता व उच्च प्रतिष्ठा देता है।

शुक्र-मीन लग्न में शुक्र त्रिषडाय पति-अर्थात् तीसरे एवं आठवें भाव की स्वामी होने से शुभ फलदायक नहीं माना जाता। परन्तु लग्न, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम भावों में उच्च व शुभ राशिगत होने से स्त्री, धन-सम्पदा, वाहन आदि सुखों की उपलब्धि करवाता है, जबकि 2, 6 व 7वें भावों में अशुभ फल तथा 8, 9, 10, 11 व 12वें भावों में मिश्रित फल प्रदान करता है।

शनि-मीन लग्न में लाभेश एवं व्ययेश होने से प्राय: मिश्रित फल देता है। द्वितीय, सप्तम, अष्टम, दशम, एकादश एवं व्यय भावों में प्राय: अशुभ देता है, अन्य (१, ३, ४, ६ एवं ९) भावों में मिश्रित फल प्रदान करता है।

राहु-मीन लग्न में राहु ३, ४, ६, ७, ११ एवं १२ भावों में शुभाशुभ (मिश्रित) फल देता है, जबकि १, २, ५, ९ एवं १०वें स्थानों पर अशुभ फल प्रदान करता है।

केतु-१, २, ५, ६, ९, १० एवं १२वें भावों में मिश्रित फल जबकि ३, ४, ७, ८ एवं ११वें भावों में प्राय: अशुभ कारक

होता है।

नोट :- जन्मकुण्डली में किसी ग्रह के फल का निर्णय करते समय उस ग्रह के साथ अन्य ग्रह के योग एवं दृष्टि आदि को भी ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

मीन लग्न-गुण स्वभाव/विशेषताएं, विवाह सुख आदि

शारीरिक गठन एवं व्यक्तित्व-मीन लग्न के जातक का सुन्दर शरीर, भरा हुआ सन्तुलित शरीर रचना, मध्यम या ऊंचा कद, बड़ा मस्तिष्क एवं चौड़ा गोल चेहरा, श्वेत-पीत वर्ण, पुष्ट एवं सुगठित कन्धे, आकर्षक, चमकीली व कुछ बड़ी-बड़ी आंखें, नेत्र कुछ उभरे से दिखाई दें, नर्म-मुलायम बाल, तीखे नयन-नक्श, चुम्बकीय एवं आकर्षक तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी होता है।

चारित्रिक विशेषताएं-राशि स्वामी गुरु शुभ हो, तो मीन जातक तीव्र बुद्धिमान, ईमानदार, मानवीय गुणों से युक्त, परिश्रमी, सौम्य एवं विनम्र, मधुर स्वभाव, महत्त्वाकांक्षी, संवेदनशील, भावुक, सहृदय, संगीत-साहित्य एवं सौन्दर्य के प्रति स्वभाविक रूचि हो तथा मीन जल राशि होने से जातक जल की तरह प्रत्येक प्रकार की परिस्थितियों में स्वयं को ढाल लेने की क्षमता रखता है। स्मरणशक्ति तीव्र होती है। जातक विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को विचलित नहीं होने देता। उच्च कल्पनाशील होने पर भी जातक की प्रबन्धन शक्ति अच्छी होती है। वह अपने कार्यक्षेत्र में सक्रिय एवं विकासशील बना रहता है। राशिपति गुरु के कारण जातक हंसमुख, मिलनसार, परोपकारी, सरल एवं दयालु स्वभाव, धर्मपरायण, सत्यनिष्ठ, सेवाभावी, प्रेरणादायक, साधारण लोगों की भलाई एवं सहायता करने में उत्सुक, हस्तशिल्प साहित्य, लेखन, गायन, धार्मिक, ज्योतिष एवं योग, दर्शन आदि गूढ़ विषयों में विशेष रुचि रखने वाला, धैर्यवान, क्षमाशील, स्वाभिमानी, कई बार गम्भीर रहस्यमय एवं गोपनीय आचरण करने वाला होता है।

मीन लग्न द्वि-स्वभाव राशि होने से जातक शीघ्रता से अपने मन की बात प्रकट नहीं कर पाता। कई बार दूसरों के लिए उन्हें समझना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में जातक निष्कपट एवं सरल हृदय होते हुए भी सन्देह के दायरे में आ जाते हैं। यदि जन्मकुण्डली में चन्द्र-गुरु शुभस्थ हों अथवा उन दोनों का योग अथवा सम्बन्ध हो, तो जातक महत्त्वाकांक्षी, धार्मिक एवं पौराणिक आस्थाओं से युक्त, दूसरों पर अधिकार जताने की प्रवृत्ति, तर्क-वितर्क करने में कुशल, व्यवहार-कुशल होते हैं। अधिकांशतः मिलनसार प्रकृति के होते हैं। जातक नए-नए सृजनात्मक एवं मौलिक विचार सोचते रहते हैं। मीन जातक अपने परिवार एवं मित्रों के साथ विशेष प्यार और आसक्ति रखते हैं। अपने मित्रों का चुनाव भी बहुत ध्यानपूर्वक करते हैं। इनके मैत्री सम्बन्ध सामान्य जन से लेकर उच्च प्रतिष्ठित लोगों तक होते हैं।

द्विस्वभाव राशि होने से मीन जातक किसी कार्य विशेष में जल्दी में कोई निर्णय नहीं लेते परन्तु जब गम्भीर सोच विचार के बाद कोई फैसला करते हैं, तो उस कार्य को पूरे उत्साह एवं तन्मयता से अन्जाम देते हैं। यदि कुण्डली में मंगल-शुक्र का योग किसी अशुभ भाव में हो, तो जातक विषयासक्त, कामुक, मदिरा आदि मादक वस्तुओं का सेवन करने वाला, व्यंग्यपूर्ण एवं कठोर वाणी का प्रयोग करने वाला एवं अशान्त चित्त वाला होता है।

शिक्षा एवं कैरियर-मीन जातक गुरु एवं चन्द्र के प्रभाव के कारण प्रायः अध्ययनशील प्रकृति के होते हैं। शिक्षा चाहे साधारण ही हो, अथवा किसी भी व्यवसाय से सम्बन्धित हों, उन्हें धर्म, योग, ज्योतिष आदि विषयों में अवश्य रूचि रहती है।

मीन जातक की कुण्डली में यदि चन्द्र, गुरु, शुक्र आदि ग्रह स्वोच्च, स्वक्षेत्री स्थिति में हों, तो जातक उच्चशिक्षित एवं उच्च प्रतिष्ठित होता है। देखें उदा. कुण्डली प्रिंसीपल शर्मा (नं. 112)

मीन लग्न के जातक प्रायः अपनी बौद्धिक योग्यता, प्रभावशाली, आकर्षक व्यक्तित्व एवं परिश्रम व पराक्रम द्वारा समुचित धन लाभ व उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। प्रारम्भिक जीवन में संघर्ष अधिक होगा, परन्तु 35 वर्ष की आयु के बाद जातक भूमि, मकान, वाहन, स्त्री व सन्तान आदि के विशेष सुख प्राप्त करने में सफल होता है। मीन जातक प्रत्येक विषय

को गहराई से जानने की जिज्ञासा रखते हैं और इसी प्रयास में वह कुछ नया पा लेते हैं।

अनुकूल व्यवसाय (Suitable Profession)-मीन जातक की कुण्डली में यदि गुरु, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह शुभस्थ हों, तो जातक शिक्षण, आध्यापन, साहित्य, दार्शनिक, कानून, वकालत, वैद्यक, मैडीकल क्षेत्र, धर्म गुरु, उपदेशक, बैंकिंग, राजनीति, लेखन कार्य, पत्रकारिता, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पण्डित, अभिनय, कैमिकल, रसायन शास्त्र, औषधि निर्माण, चिकित्सा शास्त्र, प्रकाशन, न्यायाधीश (न्यायालय सम्बन्धी), दूतावास, दूरसंचार, अकाऊंटैण्ट, मदिरा विक्रय, मछुए, सैल्ज़मैन, कम्प्यूटर एवं टैलीविजन सम्बन्धी कार्य, दुग्ध एवं सुगन्धित पदार्थ, वस्त्र निर्माण, संगीत, साहित्य एवं नाट्य कला आदि कार्यों में मंगल-गुरु शुभस्थ हों, तो जातक चिकित्सा, सर्जरी, स्पोर्ट्स, दन्त चिकित्सा, बेकरी, सेना, पुलिस, बिजली एवं अन्य उद्योगों से सम्बन्धित कार्यों में सफल होता है।

मीन जातक महत्त्वाकांक्षी एवं उच्चाकांक्षी प्रकृति के होने से व्यवसाय में धन-सम्पदा के महत्त्व को स्वीकारते हुए भी नैतिक मूल्यों की अवहेलना नहीं करते हैं। करुणा, दया आदि मानवोचित गुणों को ध्यान में रखते हुए कई बार निजी स्वार्थ का भी बलिदान करने से नहीं चूकते।

प्रेम और वैवाहिक जीवन (Love and Married Life)-प्रेम और सौन्दर्य के सम्बन्ध में मीन जातक विपरीत योनि (Opposite Sex) के प्रति अत्यन्त मैत्रीपूर्ण, उदार एवं संवेदनशील होते हैं। भावनात्मक दृष्टिकोण होता है। करुणावश वह अपने मित्रों का दुख-दर्द बांटने के लिए तथा उन्हें लाभ पहुंचाने के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। अपनी सहज मुस्कान एवं उन्मुक्त व्यवहार के कारण वह युवक/युवतियों के लिए शीघ्र ही आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। द्विस्वभाव राशि होने के कारण मीन जातक प्रेम पात्र (या प्रेमिका) के चयन के सम्बन्ध में जल्दबाजी नहीं करते। अपितु विशेष सोच विचार के बाद ही भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित करते हैं। जब सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, तो वह अपने प्रेम पात्र (या प्रेमिका) के प्रति पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा से व्यवहार करते हैं।

सप्तमेश बुध के कारण मीन जातक जीवन साथी (Life Partner) के चुनाव में बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ शैक्षणिक एवं बौद्धिक योग्यता को भी अधिमान देते हैं। यदि कुण्डली में बुध/शुक्र ग्रहों की स्थिति अच्छी हो तथा दोनों की जन्मपत्रियों में पारस्पारिक राशि/नक्षत्र एवं गुण मिलान भी भली-भान्ति ठीक प्रकार से किया गया हो, तो जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय रहता है। विवाह के बाद उन्हें भूमि, मकान, वाहन, सुन्दर पत्नी, सन्तान आदि के सुख मिलते हैं।

अनुकूल राशि मैत्री (Suitable Match)-मीन लग्न/राशि वाले जातकों को मेष, कर्क, कन्या, बृश्चिक, धनु व मकर लग्न/राशि वाली जातिकाओं के साथ विवाह या व्यवहारिक सम्बन्ध शुभ एवं लाभप्रद होते हैं, जबकि अन्य लग्न/राशि वालों के साथ मधुर सम्बन्ध नहीं रह पाते।

स्वास्थ्य और रोग (Health and Diseases)- यदि कुण्डली में गुरु, मंगल, सूर्यादि ग्रह शुभ हों, तो मीन जातक का स्वास्थ्य प्राय: अच्छा रहता है। परन्तु यदि कुण्डली में गुरु, सूर्य, शुक्र भौमादि ग्रह नीचादि अशुभ हों अथवा शनि, सूर्यादि क्रूर ग्रहों से दृष्ट हों, तो जातक मदिरा, तम्बाकू आदि नशों का शिकार हो जाता है। उसे उदर विकार, पेट गैस, पांवों में पसीना, रक्त विकार, शिर पीड़ा, अल्सर, खुजली आदि चर्म रोग, कफ़ विकार, हिस्टीरिया, जोड़ों में दर्द, कर्ण आदि रोग होने का भय रहता है। **यदि सूर्य अशुभ हो,** तो शरीर में गर्मी, ज्वर, आंतों एवं पांव में सूजन हो, **चन्द्र अशुभ हो,** तो मानसिक विकार, माता को कष्ट अथवा सुख में कमी करता है। **मंगल या केतु अशुभ हो,** तो रक्त विकार, फोड़े-फुंसी, दुर्घटना आदि से चोट भय या रक्त विकार, **बुध अशुभ हो,** तो आंतों की कमजोरी, चर्म रोग, कर्ण शूल, टी.बी. आदि श्वास रोग, **अशुभ गुरु के कारण,** सोजश, पांव में सूजन, लीवर में दोष, आंतड़ियों में दोष, **शुक्र के कारण** शक्कर रोग (शूगर), राहु-शनि के दोष के कारण हिस्टीरिया, जोड़ों के दर्द, पत्थरी, कफ़ और शीत रोग होने का भय रहता है।

सावधानी के लिए मीन जातकों को अधिक तामसिक एवं गरिष्ठ भोजन से बचना चाहिए। भोजन में अनियमितता और अधिक मानसिक श्रम से, उत्साहशीलता, उतावलापन, क्रोधाधिक्य एवं नैराश्य की भावना से बचना चाहिए तथा ईश्वर भक्ति, प्रार्थना तथा ध्यान (Meditation) की प्रक्रिया भी नियमित रूप से करनी चाहिए।

मीन लग्न की कन्या/जातिका (Pisces Girl)



मीन लग्न की जातिका तीखे नयन, नाक व नक्श वाली, लघु और सुन्दर नेत्र, मछलियों की तरह अत्यन्त चंचला, धन-धान्य एवं सवारी आदि सुखों से युक्त, धर्म परायणा, सुशील तथा पति, सन्तति आदि सुखों से युक्त होती है।

मीनर्क्षे मीन लग्ने वा मीनदृक स्थूल नासिका।
धन-धर्म सुखै र्युक्ताः सुशीला च सुभर्त्रिता॥

ऐसी जातिका मध्यम कद, गोल-चौड़ा चेहरा, सुन्दर एवं सन्तुलित शरीर, मुलायम व नर्म बाल, पुष्ट कन्धे तथा आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। बाल्यकाल में दुर्बल किन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ पुष्ट शरीर होगा। नेत्र कुछ उभरे हुए एवं चमकीले होते हैं। अधिक विस्तार के लिए पुरुष जातक का विवरण पढ़ना चाहिए। इस लग्न राशि का स्वामी गुरु होने से मीन लग्न/राशि की लड़की अत्यन्त बुद्धिमान, तीव्र स्मरण शक्ति, हँसमुख, भावुक व संवेदनशील, परिश्रमी, स्वाभिमानिनी, मिलनसार परन्तु धार्मिक आस्था रखने वाली, सौम्य प्रकृति, दयालु एवं परोपकारी स्वभाव वाली, सेवा एवं आतिथ्य सत्कार करने में तत्पर होती है। द्विस्वभाव लग्न राशि होने से मीन जातिका शीघ्रता से अपने मन की बात प्रकट नहीं कर पाती। कई बार दूसरों के लिए उसे समझाना कठिन हो जाता है। कई बार महत्त्वपूर्ण निर्णय करने में भी गहन चिन्तन एवं विचार करने के कारण अत्यन्त विलम्ब भी हो जाता है। परन्तु जब किसी विषय पर सोच-विचार के बाद निर्णय ले लेती है, तो उस पर पूरी तन्मयता से अडिग रहती है। जलीय तत्त्व राशि होने से जातिका हर प्रकार की परिस्थितियों में स्वयं को ढाल लेने में सक्षम होती है। सरलहृदया, सेवाभावी, अध्ययनशील, दूसरों के मनोभावों को समझने में कुशल, धैर्यवान् एवं क्षमाशील स्वभाव की होती है। गुरु आकाशीय तत्त्व प्रधान होने से जातिका दूसरों के साथ सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करने वाली, गायन, संगीत, साहित्य, लेखन, पठन, योग-दर्शन, धर्म , ज्योतिष आदि विषयों में विशेष रुचि रखने वाली, गुणवान्, अपने गुणों द्वारा परिवार एवं समाज में सम्मान पाने वाली तथा अपनी प्रतिष्ठा के प्रति विशेष सावधान रहती है। परिस्थितियों एवं अवसर अनुसार आचरण करने में निपुण होती हैं। गुरु के कारण व्यवहार कुशला परन्तु दूसरों पर अधिकार जताने की प्रवृत्ति होती है। साथ ही अपने मित्रों के प्रति उदार एवं भावनात्मक दृष्टिकोण रखती है। इनमें पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करने की अद्भुत विशेषता होती है।

शिक्षा-मीन जातिका की कुण्डली में चन्द्र, मंगल, गुरु शुभस्थ हों, तो जातिका उच्च व्यवसायिक विद्या जैसे-कम्प्यूटर, कामर्स, साहित्य, कानून, अकाउंट्स आदि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त कर लेती है। वैसे भी मीन लग्न जातिका अध्ययनशील प्रकृति की होने के कारण उच्चशिक्षा प्राप्त करने में सफल रहती है।

कैरियर एवं व्यवसाय-मीन लग्न की जातिका को स्वाध्याय एवं पठन/पाठन के कार्यों के अतिरिक्त गायन, अभिनय, संगीत, साज-सज्जा, फैशन, श्रृंगार-सौन्दर्य आदि विषयों में भी विशेष रूचि रहती है। वह शिक्षण (अध्यापन), कामर्स, कम्प्यूटर्स, कढ़ाई-बुनाई, पत्रकारिता, समाचार-पठन, फैशन डिजाइनिंग, इंटीरियर डैकोरेशन, हस्तकला एवं शिल्पकारी, धर्म प्रचारक, लेखन कला, चिकित्सा, वकालत आदि जहां बौद्धिक योग्यता की विशेष आवश्यकता हो, इसके अतिरिक्त पुरुष मीन लग्न/राशि में लिखे गए अन्य व्यवसायों में भी विशेष सफल होने की संभावनाएँ होती हैं।

स्वास्थ्य एवं रोग-यदि मीन लग्न की जातिका की कुण्डली में गुरु, मंगल, चन्द्रादि ग्रह शुभस्थ हों, तो जातिका का स्वास्थ्य लगभग अच्छा रहता है तथा वह कम ही बीमार होती है। परन्तु यदि कुण्डली में गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, मंगल आदि ग्रह नीच आदि अशुभ अवस्था में हों, तो जातिका को रक्त विकार, सिर पीड़ा, नेत्र, दांत, गले, टांसिल में दर्द, कफ विकार, खुजली, एक्जीमा आदि चर्म रोग, हिस्टीरिया, कर्ण पीड़ा या जोड़ों में दर्द, वायु विकार, पांवों में सूजन, अफारा आदि रोगों का भय होता है। रोगों सम्बन्धी अधिक जानकारी हेतु गत पृष्ठों में लिखित पुरुष मीन जातक का भी अवलोकन कर सकते हैं।

प्रेम और वैवाहिक जीवन (Love and Married Life)-प्रेम के सम्बन्धों में मीन लग्न की जातिका अत्यन्त भावुक और संवेदनशील होती है। बन-संवर कर रहना उसे प्रिय होता है। पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करने की उनमें विशेष योग्यता होती है। करुणा एवं सहानुभूति की भावनाएं विशेष होती हैं। वह अपने मित्रों का दुख-दर्द बांटने के लिए अपने निजी स्वार्थ को भी न्यौछावर कर देती है। अपनी सहज मुस्कान एवं उन्मुक्त व्यवहार के कारण वह युवक/युवतियों के लिए शीघ्र आकर्षण का केन्द्र बन जाती है। द्विस्वभाव राशि होने के वह अपने प्रेमी या जीवन साथी के चयन के बारे जल्दबाजी नहीं करतीं, बल्कि विशेष सोच विचार के बाद ही भावनात्मक सम्बन्ध जोड़ती हैं। जब मीन जातिका किसी प्रेमी या (साथी) से सम्बन्ध जोड़ लेती हैं, तब पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं समर्पण की भावना से जोड़ती हैं। अत्यधिक भावुक होने के कारण कभी-कभी प्यार में धोखा भी खा सकती है।

लग्नेश गुरु एवं सप्तमाधिपति बुध के कारण जीवन साथी (Life Partner) के चुनाव में बाह्य व्यक्तित्व के साथ-साथ बौद्धिक एवं शैक्षणिक योग्यता को भी विशेष महत्त्व देती है। यदि जातिका की कुण्डली में बुध, गुरु आदि ग्रहों की स्थिति अच्छी हो तथा भावी पति की जन्म कुण्डली के साथ जातिका की कुण्डली के साथ परस्पर राशि, नक्षत्र एवं गुण मिलान भी ठीक प्रकार से किया गया हो, तो जातिका का वैवाहिक एवं दाम्पत्य जीवन मधुर एवं सुखमय रहता है। विवाह के बाद उसे मनचाहा पति, सुंदर आवास, वाहन व अन्य दाम्पत्य सुख प्राप्त होते हैं।

अनुकूल राशि-मैत्री-मीन लग्न/राशि की कन्या को मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, बृश्चिक, धनु व मकर लग्न/राशि के जातकों के साथ विवाह या व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने शुभ एवं लाभप्रद होते हैं, जबकि शेष अन्य लग्न/राशि वालों के साथ सम्बन्ध साधारण या असामान्य सम्बन्ध रहते हैं।

मीन लग्न के अन्तर्गत ग्रहों की दशान्तर्दशाओं का फल

प्रत्येक लग्न में किसी ग्रह विशेष की दशा-अन्तर्दशा के फल में भिन्नता आ जाती है। मीन लग्न के जातक/जातिका की जन्मकुण्डली में यदि गुरु, मंगल, चन्द्र ग्रह शुभस्थ हों तथा इनमें से किसी एक ग्रह की दशा या अन्तर्दशा चल रही हो, तो जातक/जातिका को अपनी दशा में सोची योजनाओं में कामयाबी, धन, लाभ व उन्नति, विद्या में सफलता, व्यवसाय में लाभ के अवसर पर पदोन्नति, विवाह, सन्तान, भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो अथवा गृह परिवार में किसी मांगलिक कार्य का आयोजन होता है। यदि उपरोक्त ग्रह नीच शुभ आदि राशि में हों अथवा अरिष्ट भावों में पड़ें हों, तो यह ग्रह वांछित फल प्रदान नहीं करते।

यदि जन्मकुण्डली में बुध, शनि या केतु आदि क्रूर ग्रह किसी अशुभ भाव में हों, तो वह ग्रह विघ्नों के बाद सफलताएं बनते कामों में विघ्न-अड़चनें, पारिवारिक कलह-क्लेश, आय के स्रोतों में रुकावटें, भाई-बन्धुओं के साथ मतान्तर तथा आय कम व खर्च अधिक बढ़ जाते हैं। शुक्र, शनि ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में धन हानि, मानसिक तनाव, घरेलू व व्यवसायिक परेशानियां बढ़ती हैं। राहु-केतु प्रायः अपने भाव एवं राश्यनुसार फल प्रदान करते हैं।

मीन लग्न सम्बन्धी कुछ उपयोगी उपाय

शुभ वार (Favourable days)-मीन लग्न के जातक/जातिका के लिए रविवार, सोमवार, मंगलवार, गुरुवार, शुभ एवं भाग्यकारक दिन होते हैं, जबकि बुधवार, शुक्रवार तथा शनिवार मिश्रित प्रभाव करते हैं।

शुभ रंग (Favourable Colours)-लाल, पीला, गुलाबी, नारंगी, संगतरी (Orange), क्रीम, सफेद इत्यादि रंग शुभ हैं। हरा, हल्का नीला, मिश्रित या सामान्य फलप्रदायक है, जबकि काला, भूरा, गहरा नीला अशुभफली होंगे।

शुभ नग (Lucky Stone)-पुखराज नग सवा पांच रत्ति का सोने की अंगूठी में जड़वाकर वीरवार को श्री गंगा जल में धोकर शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। धारण करते समय गुरु का बीज मंत्र कम से कम तीन माला या 31 बार पढ़ना चाहिए।

गुरु का बीज मंत्र–"ॐ ग्रां ग्रौं ग्रीं सः गुरवे नमः" उस दिन, विधि अनुसार वीरवार का व्रत रखना, गौओं को चने की भीगोई हुई दाल सहित चारा डालना तथा पीला वस्त्र, केले, आम्र आदि फल, अनाज, पीले चावल, गुड़ आदि का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी होगा। धार्मिक ग्रंथों का दान करना भी आपके लिए शुभ व कल्याणकारी होगा।

शुभ अंक–1, 3, 4 और 9 के अंक शुभ हैं, जबकि 8 का अंक अशुभ होगा।

भाग्योन्नतिकारक वर्ष–आयु का 28, 33, 37, 39, 42, 45, 48, 54 व 58वां वर्ष शुभ एवं भाग्योन्नतिकारक रहता है।

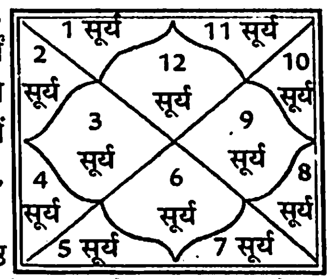
सावधानी–आपको संदेहशील प्रकृति से बचना चाहिए। दूसरों के प्रति आलोचनात्मक प्रवृत्ति, बहुत अधिक स्वच्छन्दता एवं भावुकता अथवा अधिक स्वार्थपरता का भी यथाशक्ति त्याग करना चाहिए। तामसिक भोजन का त्याग तथा सात्त्विक व संतुलित भोजन अपने मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शुभ एवं कल्याणकारी होगा। चापलूसी करने वाले तथाकथित मित्रों से भी बचना चाहिए। इसके अतिरिक्त स्वभाव में जल्दबाजी व उतावलापन भी आपके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं। प्रभु की भक्ति, ध्यान एवं स्वाध्याय (श्रेष्ठ पुस्तकों का पठन) आपके जीवन के लिए अत्यन्त कल्याणकारी होगा।

नोटः–अपने लग्न से सम्बन्धित अनिष्ट ग्रहों के प्रभाव के निवारण हेतु हमारे कार्यालय से शीघ्र प्रकाश्य 'अनिष्ट ग्रहों के सुनहरी उपाय' नामक उपयोगी पुस्तक मंगवा कर लाभ उठाएं। सम्पादक–पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषाचार्य।

मीन लग्न के द्वादश भावों में सूर्य का फल

सूर्य–मीन लग्न में षष्ठेश होने से रोग व शत्रुकारक होकर कुछ भावों (1, 4, 5, 7, 9, 11) में हानिकारक भी हो सकता है। यदि सूर्य के साथ शुभ ग्रहों का योग हो, तो अल्प हानि होती है।

मीन लग्न में सूर्य फल



प्रथम भाव–में मित्र ग्रह की राशि मीन पर सूर्य होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, उच्चाभिलाषी परन्तु कुछ तेज स्वभाव का तथा अत्यन्त संघर्ष व कठिनाईयों के बाद कार्यों में सफलता पाने वाला होता है। विवाह सुख भी अड़चनों के बाद प्राप्त होता है। जातक को धर्म, योग, ज्योतिष आदि विषयों के प्रति भी विशेष रुचि होती है। बाल्यकाल में सिर में चोट लगने की सम्भावना तथा उत्तरोत्तर में शिर पीड़ा, दन्त व नेत्र रोग एवं रक्त विकार, तनाव आदि रहने के योग। देखें उदाहरण कुं. नं. 112

द्वितीय भाव–में उच्च राशि का सूर्य होने से जातक उच्चाकांक्षी, स्वाभिमानी, श्रेष्ठ परिवार तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध, कुल में प्रतिष्ठित एवं अनुशासन प्रिय, अपने जन्म स्थान से दूर (विदेश आदि) में विशेष सफलता एवं उन्नति प्राप्त होने के योग। नेत्र में कष्ट एवं वात, पित्त आदि के प्रकोप से शरीर कष्ट होने की सम्भावना हो, जातक 28 वर्ष की आयु के बाद उच्च प्रतिष्ठित एवं आवास, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। वह रईसी ढंग से जीवनयापन करने वाला होता है।

तृतीय भाव–में वृष राशि पर सूर्य होने से जातक परिश्रमी, स्वाभिमानी, धार्मिक विचारों वाला, भोगी एवं कामुक प्रवृत्ति, अनुकूल अवसर का लाभ न उठा पा सकने वाला होता है। भाई-बहनों के सुख में कमी अथवा उनके साथ विचार-वैमनस्य रहे। ऐसा जातक परिश्रम एवं अति संघर्ष के साथ जीवन में धीरे-धीरे लाभ व उन्नति प्राप्त करता है।

चतुर्थ भाव–में मिथुन राशि पर सूर्य होने से जातक की माता को कष्ट अथवा पिता-माता के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्तित, शत्रुओं द्वारा भूमि, सम्पत्ति की हानि, मकान, चौपायों एवं वाहन आदि के सुख परेशानियों के बाद मिले। व्यवसाय के क्षेत्र में पिता के सहयोग द्वारा सफलता मिलती है। कार्य व्यवसाय में 34 वर्ष तक अस्थिरता रहे, तत्पश्चात् लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों। देखें उदाहरण कुं. नं. 113

पंचम भाव–में कर्क राशि पर सूर्य होने से उच्च शिक्षा प्राप्ति में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे तथा व्यवसाय में भी अड़चने एवं अस्थिरता हो तथा जातक को विवाह एवं सन्तान सुख के सम्बन्ध में विलम्ब व विघ्न रहें। जीवन के पूर्वार्द्ध

भाग में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाईयों का सामना रहता है। स्त्री की कुण्डली में पंचम सूर्य गर्भपात होने की सम्भावना करता है।

षष्ठ भाव-में स्वगृही सिंह राशि पर सूर्य होने से जातक पराक्रमी, परिश्रमी, धैर्यवान एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। ऐसा जातक साहसी, प्रभावशाली व्यक्तित्व, गुप्त साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। धन के खर्च भी रईसी ढंग से करता है। जातक उच्चाभिलाषी एवं राजसी प्रवृत्ति का होता है। यहां सूर्य पर यदि गुरु या मंगल की दृष्टि हो तो जातक को चिकित्सा क्षेत्र में सफलता मिलती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 115

सप्तम भाव-में कन्या राशि पर सूर्य होने से जातक चतुर बुद्धि, पराक्रमी, व्यवहारकुशल, स्वाभिमानी, कामुकवृत्ति, तर्क-वितर्क करने करने में कुशल, स्वास्थ्य में कमी, व्यवसाय एवं कार्य-क्षेत्र में संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद सफलता मिलती है। स्त्री के साथ वैमनस्य रहे, उसका स्वास्थ्य भी ठीक न रहे तथा जातक को पारिवारिक सुख में कमी रहे।

अष्टम भाव-में तुला राशि पर सूर्य होने से जातक वृथा कामों में अधिक समय व्यय करने वाला, गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, फिर भी गुजारे योग्य आय के साधन बनें, शरीर कष्ट एवं स्वास्थ्य में भी अस्थिरता रहे। अचानक दुर्घटना से चोट आदि का भय, गुप्त रोग का भय, ननिहाल (नानके पक्ष) के सुख में कमी, जातक अत्यन्त परिश्रम एवं संघर्ष के बाद पारिवारिक सुख प्राप्त कर पाता है। देखें उदाहरण कुं. नं. 111

नवम भाव-में बृश्चिक राशि पर सूर्य होने से जातक पराक्रमी, पुरुषार्थी परंतु भाई-बन्धुओं के सुख में कमी हो, कठिनाईयों एवं अड़चनों के बाद भाग्य में लाभ व उन्नति प्राप्त हो। पूर्व अवस्था में संघर्ष अधिक रहे। 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष लाभ व भाग्योन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु सुख साधन होने पर भी जातक के मन में असंतुष्टि रहे। ज्योतिष, धर्म आदि के विषयों में रूचि रहे। देखें उदाहरण कुं. नं. 114

दशम भाव-में धनु राशि पर सूर्य होने से जातक स्वतन्त्र विचारों वाला, राजनीति के क्षेत्रों में विशेष दिलचस्पी रखने वाला, माता-पिता के लिए भाग्यशाली होने के बावजूद पिता से वैचारिक वैमनस्य रहे। व्यवसाय में भी अत्यन्त कठिनाइयों के बाद सफलता हो। जातक अनेक युक्तियों द्वारा भूमि, मकान, वाहन आदि सुख साधन प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

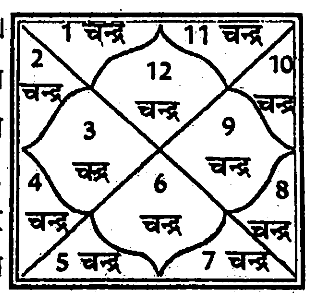
एकादश भाव-में मकर राशि पर सूर्य होने से जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, परिश्रमी एवं साहसी होता है। देश-विदेश में भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। निज उद्यम एवं परिश्रम से समुचित आय के साधन प्राप्त कर लेता है। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ मैत्री सम्बन्ध अधिक होते हैं। जातक नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल होता है। शत्रुओं पर प्रभावी होने पर भी स्वास्थ्य नर्म एवं अस्थिरता रहती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 116

द्वादश भाव-में कुम्भ राशि पर सूर्य होने से जातक स्वाभिमानी, संघर्षशील, कामुक एवं धन का अत्याधिक व्यय करने वाला होता है। व्यवसाय में भी अत्याधिक संघर्ष व कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं। दौड़-धूप अधिक होती है। जातक को क्रोध, तनाव एवं उत्तेजना अधिक रहती है। शिर पीड़ा एवं नेत्र रोग होने की आंशका होगी। गुप्त शत्रु बनते कामों में अड़चने डालने की चेष्टा करेंगे।

मीन लग्न के द्वादश भावों में चन्द्र का फल

विशेष : मीन लग्न में 'चन्द्र' पंचमेश होकर बलान्वित होने पर एवं शुभ भावस्थ व दृष्ट होने से जातक को उच्च शिक्षा, धन, स्त्री, वाहन आदि सुखों को प्रदान करता है।

मीन लग्न में चन्द्र फल



प्रथम भाव-में मीन राशि पर चन्द्र होने से जातक चंचल, तीव्र बुद्धिमान, प्रबल कल्पनाशक्ति, भावुक तथा कोमल शरीर का होता है। ऐसे जातक की स्मरण शक्ति अच्छी होती है, जातक मधुरभाषी, शुभग्रह की भी दृष्टि से युक्त हो तो उच्च विद्या प्राप्त, विद्या, बुद्धि का उत्तम लाभ प्राप्त होता है। स्त्री सुन्दर तथा स्त्री पक्ष से सुखी, जीविका और व्यवसाय के क्षेत्र में अपने बुद्धियोग से उत्तम लाभ प्राप्त करता है। संतान पक्ष से भी अच्छा

सुख प्राप्त होता है।

द्वितीय भाव-में मेष राशि पर चन्द्र होने से जातक सुन्दर आवास, वाहन आदि सुखों से युक्त तथा पारिवारिक सुख यथेष्ठ रहता है। जातक दीर्घायु (अष्टम भाव को देख रहा है), मृदुभाषी, विद्या के क्षेत्र में सफल, संतान पक्ष से सुखी होता है। स्त्री के साथ सांझेदारी से धन लाभ हो सकता है। परंतु धन का संचय कम होता है तथा रहन-सहन आदि पर व्यय अधिक होता है। अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक आर्थिक या पारिवारिक उलझनों के कारण सदैव चिन्तित रहता है। शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जीवन आनन्दमय व्यतीत होता है।

तृतीय भाव-में वृष राशि पर चन्द्र होने से जातक उच्चाभिलाषी, कल्पनाशील, बौद्धिक कार्यों में रूचि व परिश्रम करने वाला, जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष संघर्षपूर्ण रहता है। बहिनों का सुख अधिक होता है। सन्तान से सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है। जातक निज बौद्धिक योग्यता के बल पर लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक को अध्यापन, प्रकाशन, सम्पादन, आर्किटैक्ट, इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। देखें उदा. कु.नं. 112. चन्द्र-मंगल-शुक्र का योग हो तो जातक अध्यापन, प्रशासन आदि के क्षेत्र में उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करता है।

चतुर्थ भाव-में मिथुन राशि पर चन्द्र होने से जातक विनयशील, मधुरभाषी, ऐश्वर्यमान, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। बचपन में स्वयं तथा माता को कष्ट परन्तु जातक को माता, भूमि, आवास, रहन-सहन का उत्तम सुख प्राप्त होता है। जातक अपने बुद्धिबल से व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है परन्तु उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहती हैं। माता-पिता की ओर से सहयोग प्राप्त होता है। सरकारी एवं राजकीय क्षेत्र से लाभ व यश प्राप्त होता है। माता-पिता एवं संतान पक्ष से सुखी होता है। किसी क्रूर ग्रह की चन्द्र पर दृष्टि हो तो जमीन-जायदाद के सम्बन्ध में विवाद भी हो सकते हैं। राहु का योग हो तो मस्तिष्क रोग या अरिष्ट होता है।

पंचम भाव-में स्वगृही कर्क राशि पर चन्द्रमा होने से जातक बुद्धिमान, चंचल, संवेदनशील, भावुक हृदय तथा परिवर्तनशील स्वभाव का होगा। जातक को उत्तम शिक्षा लाभ, कन्या संतति अधिक, यदि यहां गुरु की दृष्टि हो या युक्त हो तो जातक मैडिकल, ज्योतिष, एकाऊंट्स, सी.ए. के क्षेत्र में सफल हो। यदि शुक्र, बुध आदि योग भी हो तो संतान सुख यथेष्ठ होता है। बुद्धि-बल से आय अच्छी होती है। गंभीर, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, सम्पत्तिवान होता है; परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढाल लेने वाला होगा। शेयर, लाटरी आदि से अचानक धन लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। देखें उदाहरण कुं. नं. 113

षष्ठ भाव-में सिंह राशि पर चन्द्रमा के होने से जातक क्रोधी, उच्चाभिलाषी, प्रत्येक कार्य पर दीर्घ एवं गंभीर सोच-विचार करने वाला, योजनाएं अधिक बनाएगा परन्तु उन्हें क्रियान्वित करने के लिए विशेष परिश्रम नहीं करेगा। शत्रुओं द्वारा हानि तथा परेशानी उत्पन्न होती है। उच्च शिक्षा प्राप्ति में विघ्न बाधाएं तथा सन्तान पक्ष से दुखी होता है। अत्याधिक धन व्यय के कारण चिन्तित एवं तनाव ग्रस्त होता है। माता एवं स्त्री का सुख साधारण अथवा कष्ट हो तथा नेत्र दोष के कारण भी कष्ट रहें। देखें उदाहरण कुं. नं. 116

सप्तम भाव-में कन्या राशि पर चन्द्रमा होने से जातक बुद्धिमान, सुन्दर व्यक्तित्व, सतर्क, धैर्यवान, विचारशील, तर्क-वितर्क करने में कुशल एवं स्वाभिमानी होता है। विघ्न/बाधाओं के बावजूद उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेता है। व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में अड़चनों के बाद सफलता मिलती है। पत्नी सुन्दर व सुशील मिलती है। संतान सुख से युक्त, ऐश्वर्यवान, भ्रमणशील, लोकप्रिय व मिलनसार प्रकृति का होता है। यदि चन्द्र, शनि, सूर्य या राहु आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को दाम्पत्य जीवन में सुख की कमी तथा पुत्र संतान के सम्बन्ध में परेशानी होती है।

अष्टम भाव-में तुला राशि पर चन्द्रमा होने से जातक चंचल बुद्धि, उच्च शिक्षा प्राप्ति में विघ्न एवं परेशानियां

उत्पन्न हो, माता को कष्ट अथवा सुख में कमी रहे, दाम्पत्य एवं संतान सुख की प्राप्ति भी अड़चनों के पश्चात् हो, कार्य-व्यवसाय में आर्थिक स्थिति भी संतोषजनक न हो, मन अशांत एवं विक्षिप्त रहे। यदि चन्द्र पर शनि की विशेष दृष्टि पड़ती हो, तो जातक उदासीन, वीतरागी एवं सन्यासी होता है। देखें उदारहण कुंडली नं. 111

नवम भाव-में बृश्चिक (नीच) राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख अच्छा होता है। धर्म-पालन में कुछ आलस्य एवं बाधाएं होती है। उच्च शिक्षा प्राप्ति में भी विघ्न पैदा होते हैं। भाग्योन्नति में बार-बार अड़चनें पैदा होती हैं। यदि चन्द्र के साथ सूर्य, बुध आदि ग्रहों का सम्बन्ध हो, तो जातक को भूमि, भवन, सवारी एवं सम्पत्ति आदि के सुख यथेष्ठतः प्राप्त होते हैं। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

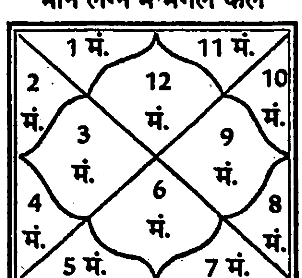
दशम भाव-में धनु राशि पर चन्द्रमा होने से जातक बुद्धिमान, प्रभावशाली व्यक्तित्व, विद्वान, तर्क-वितर्क करने में कुशल, महत्त्वाकांक्षी तथा उच्च विद्या प्राप्त करने में सफल होता है। माता-पिता का सुख एवं सहयोग प्राप्त करने वाला, भूमि-मकान-वाहन एवं स्त्री तथा संतान आदि सुखों से युक्त, विवाह के पश्चात स्त्री के सहयोग से विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में संघर्ष के बाद (चन्द्र या गुरु की दशा में) अपनी बौद्धिक योग्यता से धनार्जन करने वाला होता है।

एकादश भाव-में मकर राशि पर चन्द्रमा होने से जातक की चंचल बुद्धि, परन्तु गुणवान तथा उच्च शिक्षा में अत्यंत संघर्ष से सफलता, सन्तान सुख भी परेशानियों के बाद, कुछ स्वार्थी स्वभाव वाला, अपनी बौद्धिक योग्यता एवं गुप्त युक्तियों द्वारा भी व्यवसाय के क्षेत्र में धनार्जन करने वाला, ललित कलाओं में रूचि रखने वाला होता है। यदि चन्द्र के साथ गुरु या शनि आदि का दृष्टि आदि का सम्बन्ध हो, तो जातक को विदेश आदि के सम्बन्ध से लाभ होते हैं।

द्वादश भाव-में कुम्भ राशि पर चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बुद्धिमान परन्तु एकान्तप्रिय, छोटे-छोटे विषयों पर भी गंभीर एवं दीर्घकालीन चिन्तन करने वाला, उच्च-विद्या प्राप्ति में अड़चनें, अत्याधिक व्यय करने वाला, व्यवसाय में अस्थिरता अर्थात् व्यवसाय एवं आर्थिक क्षेत्र में भी विशेष उतार-चढ़ाव रहें। गुप्त शत्रु बहुत होते हैं। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा शत्रुओं का दमन करता है। जातक अत्यन्त संघर्ष के बाद लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। जीवन अधिकांशतः गुप्त चिन्ताओं एवं परेशानियों से युक्त रहता है। स्त्री एवं वैवाहिक सुख में भी कमी रहती है। देखें उदारहण कुंडली नं. 115

मीन लग्न के द्वादश भावों में मंगल का फल

मीन लग्न में मंगल फल



विशेष– मीन लग्न में मंगल धनेश एवं भाग्येश होने के कारण विशेष महत्वपूर्ण माना जाता है। शुभस्थ हो, तो जातक को धन-सम्पदा तथा भाग्य में लाभ व उन्नति प्रदान करता है। अशुभ एवं शनि आदि ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दुर्घटना से चोट आदि का भय भी होता है।

प्रथम भाव-में मीन राशि पर मंगल होने से जातक साहसी, पराक्रमी, महत्त्वाकांक्षी, कुछ तेज एवं क्रोधी स्वभाव का एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। माता-पिता से लाभान्वित रहने वाला, आत्मक्रेन्द्रित, अपने स्वार्थ के प्रति सावधान, भ्रमणप्रिय तथा निज उद्यम द्वारा धनार्जन करने वाला होता है। यहां पर मंगल की स्थिति से जातक मंगलीक दोषकारक भी होता है। यदि स्त्री की कुंडली में मंगलीक योग का अभाव हो तथा विवाह समय मिलान भी ठीक से न किया गया हो, तो जातक की स्त्री को कष्ट एवं वैवाहिक सुख में कमी रहती है।

द्वितीय भाव-में स्वराशि मेष में मंगल होने से जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, पारिवारिक सुखों से युक्त, धर्म-परायण, विविध स्रोतों से धनार्जन एवं धन संचय करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में

अड़चनों एवं परेशानियों के बाद सफलता मिलती है। जातक रईसी ढंग से जीवन व्यतीत करता है। कई बार जातक निष्ठुर, क्रोधी एवं कटुभाषी होकर झगड़ालू भी हो सकता है। यदि कुंडली में मंगल वक्री हो, तो दुर्घटना आदि से चोट आदि का भय है। स्त्री की कुंडली में संतान कष्ट या गर्भपात की संभावना होती है।

तृतीय भाव-में वृष राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, धार्मिक विचारों से युक्त, अपने उद्यम एवं पुरुषार्थ से धन लाभ प्राप्त करने वाला, शत्रुओं पर प्रभाव डालने वाला, विवाद या मुकद्दमा आदि में विजय प्राप्त करने वाला, व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में कुछ संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त करने वाला, पिता द्वारा सहयोग एवं लाभ प्राप्त करने वाला, भाई-बहन आदि सम्बन्धियों के कारण परेशानी रहे, ऐसा जातक अपने कार्य क्षेत्र में प्रतिष्ठित, सम्मानित होता है। राजनीतिक क्षेत्र में भी सफल रहने की संभावना होती है। यदि मंगल के साथ चन्द्र, शुक्र का भी योग हो, तो जातक अध्यापन, प्रबन्धन आदि के क्षेत्र में सफल होता है। देखे उदाहरण कुंडली नं. 112

चतुर्थ भाव-में मिथुन राशि पर मंगल होने से जातक भूमि, मकान, जायदाद एवं वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न, धनवान एवं भाग्यशाली होता है। माता को कष्ट, आजीविका के सम्बन्ध में अपने जन्म स्थान से दूर (विदेश आदि) जाना पड़ता है। व्यवसाय में भी संघर्ष के बाद सफलता मिलती है। यहां मंगल, मंगलीक दोषकारक भी होता है। यदि कुंडली मिलान ठीक न हुआ हो अथवा कन्या की कुंडली में मंगलीक दोष का अभाव हो, तो उस स्थिति में वैवाहिक सुख में कमी होती है।

पंचम भाव-में नीच राशि, कर्क पर मंगल होने से जातक चंचल मन, उच्चाभिलाषी एवं भावुक प्रकृति का होता है। उच्च शिक्षा प्राप्ति में विघ्न-बाधाएं तथा पारिवारिक स्त्री व संतान सुख में भी परेशानियाँ व कमी आती है। धन के व्यय आकस्मिक रूप से अधिक होते हैं। भाग्योन्नति में बार-बार विघ्न आते हैं। व्यवसाय में धनार्जन के लिए विशेष संघर्ष करना पड़ता है। धर्म के प्रति प्रवृत्ति कम रहती है।

षष्ठ भाव-में सिंह राशि पर मंगल होने से जातक तीव्र किन्तु चतुर, बुद्धिमान, पराक्रमी, अत्यन्त परिश्रमी, शत्रुओं पर विजय पाने में सफल, उत्साहशील तथा कुशल प्रबन्धक होता है। जातक भाग्यशाली, धार्मिक क्षेत्रों में धन का व्यय अधिक करने वाला होता है। पारिवारिक सदस्यों से कभी मन-मुटाव भी होता है। जातक की जठराग्नि प्रबल होती है किन्तु जातक अपने स्वास्थ्य के प्रति असावधान रहता है। मामा के सुख में कुछ कमी होती है। धन के अपव्यय अधिक होते हैं। देखें उदाहरण कुंडली नं. 113 एवं 114

सप्तम भाव-में कन्या राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक परिश्रमी, पराक्रमी किन्तु कटुभाषी और शीघ्र क्रोध करने वाला होता है। जातक भाग्यवान, धर्मात्मा, धन-सम्पदा एवं वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त होता है। व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में संघर्ष व कठिनाइयों के बाद सफलता होती है। सांझेदारी के कामों में हानि होने की संभावना। सप्तम भावस्थ मंगल का जातक मंगलीक दोषकारक भी होता है। यदि अन्य साथी (जातिका आदि) की कुंडली में यहीं पर मंगल या कोई अन्य क्रूर ग्रह न हो तो विवाह या दाम्पत्य सुख में कमी, विवाह में विलम्ब या पत्नी को कष्ट रहता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 115

अष्टम भाव-में तुला राशि पर मंगल होने से जातक साहसी, पराक्रमी किन्तु भाई-बहनों के सुख में कमी, जातक अत्यन्त कठिन परिश्रम द्वारा धनार्जन करने वाला तथा पारिवारिक सुखों से युक्त होता है। भूमि-जायदाद, मकान एवं वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है। भाई के सुख में कमी तथा धार्मिक विचार सामान्य रहते हैं। विघ्नों व अड़चनों के पश्चात भाग्य में उन्नति व लाभ प्राप्त होते हैं। देखे उदाहरण कुंडली नं. 116

नवम भाव-में बृश्चिक (स्वगृही) राशि पर मंगल होने से जातक धर्म के प्रति श्रद्धावान तथा आय के सम्बन्ध में भाग्यशाली होता है। जातक बुद्धिमान, चतुर बुद्धि, स्वाभिमानी, उत्साहशील, धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि विद्याओं

के प्रति विशेष रूचि हो, परन्तु भाई-बहनों के सुख में कमी होती है। माता-पिता के सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती है।

जातक भूमि-जायदाद, वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। आय के साथ खर्च भी अधिक होते हैं। पंचमेश चन्द्र यदि शुभस्थ हो, तो जातक उच्च शिक्षित तथा सुन्दर व सुशील स्त्री व संतान आदि के सुखों से युक्त होता है।

दशम भाव-में धनु राशि पर मंगल होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, पराक्रमी, उद्यमी, परिश्रमी, ऐश्वर्यवान, धैर्यवान, भाग्यशाली, उच्च प्रतिष्ठित, स्वाभिमानी, धार्मिक आस्थाओं से युक्त, परोपकारी स्वभाव, माता-पिता तथा भूमि, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, परन्तु उच्च-विद्या एवं संतान के सुख में कुछ कमी रहती है। परन्तु जातक आजीविका एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। राजनीति के क्षेत्र में भी विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। (32) वर्ष की आयु के बाद विशेष उन्नति होती है। देखे उदाहरण कुंडली नं. 111

एकादश भाव-में मकर (उच्च) राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक धैर्यवान, व्यवहार कुशल, भ्रमणशील, भाग्यवान, उच्च प्रतिष्ठित, कुशलवक्ता, धर्म-परायण, परोपकारी तथा पारिवारिक सुखों से युक्त, भूमि-जायदाद, मकान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, संगीत-गायन, धर्म, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, उच्च विद्या प्राप्ति में अड़चनें तथा संतान सुख में भी परेशानियां उत्पन्न होती हैं। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता तथा व्यवसाय में अपने परिश्रम से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, विवाद/मुकद्मे आदि की स्थिति में शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। यदि चन्द्र-गुरु शुभस्थ हो, तो विद्या एवं संतान सुख अच्छा प्राप्त होता है।

द्वादश भाव-में कुम्भ राशि पर मंगल होने से जातक चंचल बुद्धि, कामातुर, भ्रमणशील, परिश्रमी, कार्य-व्यवहार में नीति/अनीति का कम विचार रखने वाला, पारिवारिक सुख में बाधाएँ, उच्च विद्या प्राप्ति में भी अड़चनें हों। आर्थिक एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों का सामना रहे। धन का खर्च भी बहुत अधिक रहे। भाई-बहनों के सुख में कमी रहे। स्त्री एवं संतान सुख प्राप्ति में भी अड़चनें अथवा कमी रहे। द्वादश भावस्थ मंगल, मंगलीक दोषकारक होता है। यदि विपरीत योनि (स्त्री आदि जातिका) के साथ जन्म कुंडलियों का मिलान ठीक से न किया गया हो, तो भी वैवाहिक सुख प्राप्ति में बाधाएँ रहती हैं।

मीन लग्न के द्वादश भावों में बुध का फल

मीन लग्न में बुध फल



विशेष- बुध इस लग्न में सुखेश एवं सप्तमेश होने से प्रायः शुभफल प्रदायक होता है। शुभ होने पर स्त्री, विद्या, हस्तशिल्पादि कलाओं व सुख-साधनों में वृद्धि करता है। भूमि, मकान, वाहन आदि सुख प्रदान करता है। अस्तंगत, नीचादि अवस्था में अशुभफल देता है।

प्रथम भाव-में गुरु की राशि मीन (बुध की नीच राशि) में होने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी आती है। भूमि, भवन, वाहन, जमीन-जायदाद तथा माता के सुख में कमी रहती है। सप्तम भाव पर स्वराशि, उच्च दृष्टि होने से स्त्री सुन्दर, सुशील एवं परिवार से सहयोग करने वाली होती है। जातक व्यापार के क्षेत्र सफल, यदि शुक्र भी साथ हो तो धनी तथा सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। इस भाव में बुध जातक को मानसिक विक्षिप्तता तथा चिन्ताएँ भी देता है। जातक को सफलता-असफलता दोनों प्राप्त होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 112

द्वितीय भाव-में मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक विनम्र एवं मधुरभाषी, व्यवहार कुशल एवं अपनी बातचीत से दूसरों को शीघ्र प्रभावित कर लेगा, अपने बुद्धिबल से धनी एवं पारिवारिक सुख से युक्त होगा। जातक मकान, भूमि, वाहन का सुख प्राप्त करने वाला परन्तु स्त्री, माता के सुख में कुछ कमी रहती है। यद्यपि विवाह के पश्चात्

आय के साधनों में वृद्धि एवं स्थिरता आती है। अष्टम भाव पर दृष्टि के कारण दीर्घायु, दूर-दूर स्थलों की यात्राएं करने वाला, वस्त्र-उद्योग, क्रय-विक्रय, बैंकिंग के क्षेत्र से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

तृतीय भाव-में शुक्र की वृष राशि पर बुध होने से जातक धार्मिक, पराक्रमी, क्रय-विक्रय से लाभ प्राप्त करने वाला, भाई-बहन का सुख प्राप्त करने वाला होता है। जातक को माता, भूमि, मकान, वाहन, स्त्री, दाम्पत्यादि सुखों की प्राप्ति दशानुसार उत्तम मिलता है। व्यवसाय में सफल परन्तु विवाह उपरांत स्त्री के सहयोग के कारण विशेष उन्नति होती है। जातक को यश, सम्मान की प्राप्ति तथा धर्म, भाग्य की उन्नति धीरे-धीरे होती रहती है। सूर्य, शुक्र आदि का योग भी हो तो सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित होता है।

चतुर्थ भाव-में स्वगृही मिथुन राशि में बुध होने से जातक व्यापार में कुशल, माता-पिता की ओर से विशेष सहयोग, स्नेह एवं लाभ, सरकारी क्षेत्र से भी सम्मान प्राप्त, पैतृक सम्पत्ति से भी लाभ प्राप्त होता है। (विशेषकर बुध या गुरु की दशा में)। माता दीर्घायु, भूमि, मकान और वाहन सुख पूर्ण, स्त्री पक्ष का सुख भी उत्तम प्राप्त होता है। घरेलू जीवन सुखद, सच्चरित्र व शान्तिप्रिय होता है। ऐसा जातक धनी, भाग्यशाली, आरामदायक तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है। परन्तु यदि बुध अस्तगत हो तो पति/पत्नी, माता का स्वास्थ्य ढीला रहता है।

पंचम भाव-में चन्द्रमा की कर्क राशि पर बुध होने से जातक उच्च शिक्षित (यदि चन्द्रमा भी शुभस्थ हो), विद्याध्ययन, ज्योतिष, आयुर्वेद, योगादि की ओर विशेष रूचि होगी, जातक सन्तान पक्ष से सुखी, पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति, आय पक्ष भी श्रेष्ठ तथा पत्नी तथा माता का सुख पूर्ण होता है। जातक मकान, वाहनादि से युक्त, व्यवहारकुशल, कार्यकुशल तथा मधुरभाषी भी होगा। जातक प्रबन्धन, लेखन, ज्योतिष, अध्यापन के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 113

षष्ठ भाव-में सूर्य की सिंह राशि पर बुध होने से जातक अपने बुद्धिबल से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। शत्रु व विरोधियों पर अपनी बुद्धि व शांति से कार्य निकाल लेता है, माता, पत्नी से कुछ विरोध रहता है तथा इनका (माता/पत्नी) स्वास्थ्य भी खराब रहता है। जातक का अधिकतर समय व धन रोगों एवं शत्रुओं पर खर्च होता है। जातक पैतृक सम्पत्ति से वंचित, भूमि-वाहन का सुख भी कम ही प्राप्त होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 115

सप्तम भाव-में स्वगृही कन्या राशि पर बुध के प्रभाव से जातक बातचीत करने में चतुर, चालाकी एवं गुप्त-योजनाओं से अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, अस्थिर स्वभाव, सुन्दर एवं सुशील पत्नी का सुख, विवाह के बाद विशेष धन-लाभ एवं उन्नति के योग हैं। यदि शुक्र-बुध का योग हो तो जातक विलासी, कामुक तथा मनोरंजन, व्यसनों पर खर्च करने वाला होता है। जातक को मकान, वाहनादि का सुख रहता है। परन्तु पारिवारिक एवं गृहस्थ जीवन में कठिनाइयों का सामना रहता है। शारीरिक स्वास्थ्य में भी कमी रहती है।

अष्टम भाव-में शुक्र की तुला राशि में बुध होने से जातक दीर्घायु परन्तु शारीरिक सुख में कमी रहती है। पत्नी, पारिवारिक एवं दाम्पत्य सुख में कमी, भूमि, वाहन, माता के सुख में भी कमी होती है। परन्तु जातक का आय पक्ष सामान्य, धन भावस्थ शुभ ग्रह हो तो जातक धनवान परन्तु यदि राहु, शनि क्रूर ग्रह हो तो आर्थिक परेशानियां रहती हैं। जातक गुप्त युक्तियों में द्वारा अकस्मात् धन प्राप्ति के साधन बना ही लेता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 111

नवम भाव-में मंगल की बृश्चिक राशि में बुध होने से जातक धार्मिक प्रवृत्ति वाला, विद्वान, मकान, वाहन आदि भौतिक सुखों से युक्त होता है। विवाह के बाद भाग्योदय होता है। तृतीय भाव पर दृष्टि होने से जातक के पराक्रम में वृद्धि तथा भाई-बहन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक धनी, पराक्रमी, यशस्वी होता है तथा बिजली, इंजीनियरिंग, मैडीकल, कम्प्यूटर आदि तकनीकी क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त कर लेता है। जातक को ज्योतिष, योग, आयुर्वेदिक आदि गूढ़ विद्याओं में विशेष रूचि रहती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

दशम भाव-में गुरु की धनु राशि में होने से जातक को व्यवसाय तथा नौकरी में पिता के सहयोग से उन्नति एवं सफलता प्राप्त होती है। भूमि, मकान, वाहन तथा माता का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जातक की स्त्री धन अर्जित करने वाली अथवा स्त्री पक्ष से लाभ प्राप्त होता है। जातक प्रायः उच्चाभिलाषी, इंजीनियरिंग, प्रबन्धन (एम.बी.ए. आदि), अध्यापन, ज्योतिष के क्षेत्र में भी सफल हो सकता है। जातक वैभवशाली एवं उच्चस्तरीय जीवन व्यतीत करता है। देखें

उदाहरण कुंडली नं. 116

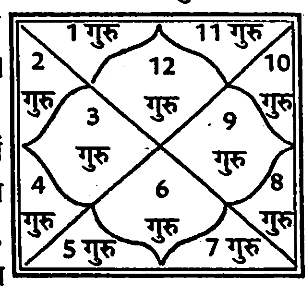
एकादश भाव-में शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के आय-पक्ष में यथेष्ट वृद्धि करता है। जातक धनी, प्रतिष्ठित, माता-पक्ष से लाभ, पत्नी द्वारा धन लाभ अथवा व्यवसाय में पत्नी सहायिका होती है अथवा विवाह के बाद सफलता प्राप्त होती है। संतान सुख श्रेष्ठ, मकान, वाहनादि सुखों से युक्त होता है। जातक बुद्धिमान, उच्च तकनीकी विद्या प्राप्त तथा बौद्धिक कार्य-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

द्वादश भाव-में शनि की कुम्भ राशि में बुध होने से जातक जन्म स्थान से दूर रहने वाला तथा पारिवारिक सुख में कमी रहती है। जातक धैर्यवान, हिम्मती, देश-विदेश की यात्राएं करने वाला, कुछ खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक शत्रु-पक्ष पर सफल, स्त्री तथा माता का स्वास्थ्य नर्म रहता है। सूर्य का योग हो तो जातक विदेश यात्रा करने वाला, नेत्र रोग के कारण कष्ट हो परन्तु जातक एक से अधिक स्रोतों द्वारा धनार्जन करता है।

मीन लग्न के द्वादश भावों में गुरु का फल

विशेष– मीन लग्न में गुरु लग्नेश व कर्मेश होने से (कुं. में शुभ स्थिति होने से) अत्यंत शुभ फल देता है। जातक को उच्च विद्या में सफलता, विद्वता, माता–पिता, पति एवं संतति सुख, धर्मवृत्ति, धन–सम्पदा व बौद्धिक योग्यता व उच्च पद व प्रतिष्ठा देता है। अशुभ होने पर इन गुणों की कमी करता है।

मीन लग्न में गुरु फल



प्रथम भाव-में स्वगृही मीन राशि पर गुरु के प्रभाव से जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, धैर्यवान, मधुरभाषी, बुद्धिमान, विद्वान, दयालु, परोपकारी स्वभाव एवं भाग्यशाली होता है। यदि पंचमेश चन्द्र भी शुभस्थ हो, तो जातक उच्चशिक्षित, कल्पनाशील तथा जातक निज उद्यम एवं पराक्रम द्वारा व्यवसाय एवं भाग्य में सफलता प्राप्त करता है। जातक भूमि, मकान, वाहन, स्त्री, संतान आदि सुखों से युक्त, व्यवहार कुशल, तर्कशील, माता-पिता का सुख एवं सहयोग व लाभ प्राप्त करने वाला, धर्म-कर्म, योग, ज्योतिष एवं चिकित्सा आदि विषयों में रूचि रखने वाला होता है। जातक अपनी आयु के अनुपात से अधिक बुद्धिमान एवं गुणी होता है परन्तु उसके दान्तों का क्षय (गिरना) जल्दी हो जाता है। बाल भी शीघ्र श्वेत होने की संभावना होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 112 एवं 116

द्वितीय भाव-में मेष राशि पर गुरु होने से जातक/जातिका बुद्धिमान, विद्वान, सुशील, स्वाभिमानी, दीर्घायु, आस्तिक एवं धार्मिक विचारों वाला, प्रारम्भिक अवस्था में अस्वस्थ एवं दुबला-पतला शरीर होता है, परन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ स्वास्थ्य में सुधार होता है। जातक मधुरभाषी, व्यवहार-कुशल, उदार-मन, सत्यवादी, संगीत,कला, सौन्दर्य एवं गायन आदि कलाओं में कुशल, धर्म, ज्योतिष, योग-दर्शन आदि विद्याओं में रूचि, परोपकारी स्वभाव, निज उद्यम द्वारा धनार्जन करने वाला, पिता के लिए लाभकारी व पिता से लाभान्वित, व्यवसाय के क्षेत्र में निज परिश्रम द्वारा विशेष धन, लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, धन, भूमि, आवास, सवारी आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

तृतीय भाव-में वृष राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, साहित्य एवं संगीत प्रेमी, धैर्यवान, उद्यमी, धार्मिक प्रवृत्ति, भाग्य पक्ष में धीरे-धीरे उन्नति, तर्क-वितर्क करने वाला, परन्तु विचारों में परिपक्वता न होकर अस्थिरता होती है। सगे-सम्बन्धियों से मन-मुटाव एवं उनके सुख में कमी रहे, जातक स्वयं उच्चशिक्षित, धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि गूढ़ विद्याओं में रूचि रखने वाला, व्यवसाय एवं जीविकोपार्जन में संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता, जातक निज उद्यम व परिश्रम के बल पर विशेष धन लाभ एवं उन्नति प्राप्त करता है। बुध भी शुभस्थ हो, तो धनार्जन में स्त्री का सहयोग विशेष तौर पर होता है।

चतुर्थ भाव-में मिथुन राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, प्रभावशाली, माता-पिता से लाभान्वित, भूमि, मकान, वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न, भाई-बन्धुओं और मित्रों की सहायता करने वाला, परोपकारी स्वभाव, कार्य/व्यवसाय में कठिनाइयों के बावजूद धन लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा जातक ज्योतिष, धर्म आदि शास्त्रों

का जानकार तथा परम्परागत भू-सम्पदा में वृद्धि करने वाला होता है।

पंचम भाव-में कर्क (उच्च) राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, धार्मिक आस्था वाला, धर्म, ज्योतिष, योग-दर्शन आदि शास्त्रों में रूचि रखने वाला, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, स्त्री, संतान, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न, धर्म-गुरु, प्राध्यापन, वकालत, न्यायाधीश, चार्टिड अकाऊंट्टैंट व क्रय-विक्रय के व्यवसाय से विशेष लाभान्वित रहने वाला, देश-विदेश के सम्बन्धों से भी लाभ प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा जातक धर्म-परायण, स्वाध्याय, परोपकार तथा भलाई के कामों में विशेष खर्च करता रहता है। व्यवसाय में कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है।

षष्ठ भाव-में सिंह राशि पर गुरु होने से जातक यद्यपि शत्रु पक्ष पर प्रभावी बना रहता है, परन्तु फिर भी जातक को शत्रुओं के कारण धन की हानि होती है। व्यवसाय में एकरूपता नहीं होती, कभी लाभ व कभी हानि होती है। ऐसा जातक पिता के व्यवयाय में गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा वृद्धि करके लाभ कमाता है। धन के व्यय भी विशेष अधिक होते हैं। कई बार लोगों द्वारा धोखा भी मिलता है। गुरु की द्वितीय भाव पर शुभ दृष्टि होने से जातक को भूमि, वाहन एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114. परन्तु गुरु शनि द्वारा दृष्ट हो, तो दाम्पत्य सुख में कमी रहती है। देखें कुंडली नं. 111 एवं 115

सप्तम भाव-में कन्या राशि पर गुरु होने से जातक सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, साहसी, स्वाभिमानी, पराक्रमी, परोपकारी स्वभाव, परिश्रमी, धनवान एवं भाग्यशाली होता है। जातक भाई-बहनों के सुख से युक्त तथा धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, तंत्र आदि विद्याओं एवं आध्यात्मिक विषयों की ओर विशेष रूचि होती है। पत्नी सुन्दर, सुशील, सौम्य, कलादक्ष, आज्ञाकारिणी एवं सास की सेवा करने वाली मिलती है। व्यवसाय एवं आय के क्षेत्र में कुछ परेशानियां उत्पन्न होती हैं, परन्तु ऐसा जातक परिश्रम एवं युक्तियों द्वारा कार्य क्षेत्र में लाभ व उन्नति प्राप्त करने में सफल होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 113

अष्टम भाव-में तुला राशि पर गुरु होने से जातक की अस्थिर बुद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य में कमी, उदर-पीड़ा या अन्य गुप्त रोग की संभावना, माता-पिता को कष्ट, व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष एवं कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं। आय के साधनों में भी अस्थिरता एवं रूकावटें होती हैं। खर्च भी बहुत अधिक होते हैं। बनते कामों में विघ्न/बाधाएं उत्पन्न होती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उतार-चढ़ाव बहुत आते हैं। यद्यपि जातक को भूमि, मकान, वाहन आदि के सुख प्राप्त होते हैं, परन्तु जातक के प्रत्येक कार्य/क्षेत्र में विलम्ब एवं अड़चनें आती हैं।

नवम भाव-में बृश्चिक राशि पर गुरु होने से जातक प्रभावशाली, भाग्यशाली, सम्मानित, तीव्र बुद्धिमान, स्वाभिमानी, उच्च शिक्षित, विद्वान एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। जातक धार्मिक विचारों से युक्त, परोपरकारी, दानी, धर्म, योग-दर्शन एवं ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, भाई-बहनों तथा भूमि, वाहन आदि के सुखों से युक्त, उच्चाभिलाषी, उच्चप्रतिष्ठित मित्रों से सम्पर्क रखने वाला, सुन्दर व सुशील पत्नी एवं अच्छी संतान से युक्त, सन्तानोत्पत्ति (विशेष कर 28 वर्ष की आयु) के बाद भाग्य में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। जातक अध्यापन, वकालत, राजनीति आदि कार्यों से विशेष लाभान्वित होता है।

दशम भाव-में स्वगृही धनु राशि पर गुरु होने से जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, विद्वान, कर्त्तव्यनिष्ठ, उद्यमी, चरित्रवान, मातृ-पितृ भक्त तथा माता-पिता का सुख एवं सहयोग पाने वाला, उच्चशिक्षित, वकालत, चार्टिड अकाऊंटैंट, न्यायाधीश, धर्म-गुरु, प्राध्यापन, बैंक आफिसर, डिजाइनर, आर्किटैक्ट आदि उच्च-स्तरीय व्यवसाय से सम्बन्धित कार्यों में सफल, भूमि, धन, मकान, वाहन आदि सुख के साधनों से सम्पन्न, पारिवारिक सुखों से युक्त, सरकारी एवं अर्द्ध-सरकारी क्षेत्रों में सफल, समाज में सम्मानित एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष आदि विद्याओं में रूचि होती है। यदि बुध का भी योग हो, तो विवाह के बाद विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करता है।

एकादश भाव-में मकर (नीच) राशि पर गुरु परन्तु पांचवे भाव पर उच्च दृष्टि होने से जातक अत्यंत बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, विद्वान, तर्क-वितर्क करने में कुशल एवं व्यवहार कुशल होता है, परन्तु जातक को उच्च विद्या का विशेष लाभ नहीं हो पाता है। व्यवसाय में भी परिश्रम एवं कठिनाइयों के बाद ही कुछ सफलता मिल पाती है। यद्यपि जातक

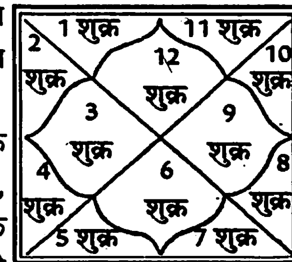
भूमि, आवास, वाहन आदि सुख-साधनों तथा सुन्दर व सुशील व पुत्र संतान आदि सुखों से युक्त होता है। जातक को संगीत, साहित्य, धर्म, ज्योतिष, योग आदि विषयों में भी रूचि रहती है। स्त्री की कुंडली में एका. गुरु उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति से विवाह का प्रतीक है।

द्वादश भाव-में कुम्भ राशि पर गुरु होने से जातक भ्रमणशील, परोपकारी, परन्तु राजसी प्रवृत्ति, कामुक, मिलनसार, बाल्यावस्था में अस्वस्थ, विविध कार्यों पर खर्च करने वाला, स्वच्छन्द प्रकृति, व्यवसाय के क्षेत्र में अस्थिरता एवं असन्तोष रहे परन्तु जातक को माता-पिता, भूमि, मकान, वाहन आदि के सुखों की प्राप्ति होती है। व्यवसाय एवं कार्य-पद्धति में परिवर्तनों के बाद सफलता मिलती है। बुध शुभस्थ हो, तो जातक को पत्नी सुन्दर, सुशील एवं परिवार में सहयोग करने वाली होती है।

मीन लग्न के द्वादश भावों में शुक्र का फल

विशेष– शुक्र धन, सम्पदा, स्त्री, शृंगार, संगीत, कला एवं सौन्दर्य आदि का प्रतीक माना जाता है। मीन लग्न में शुक्र तीसरे एवं अष्टम भावों का स्वामी होने से जातक को धनार्जन, वाहन, सौन्दर्य एवं स्त्री सम्बन्धी पूर्ण सुख प्रदान करने में विघ्न-बाधाओं का कारक भी बनता है।

मीन लग्न में शुक्र फल



प्रथम भाव-में मीन (उच्च) राशि में शुक्र होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, बुद्धिमान, कोमल स्वभाव, संगीत, कला, साहित्य, सुन्दर वस्त्रों का शौकीन, कामुक, विलास-प्रिय एवं हंसमुख प्रकृति, जातक दीर्घायु, भाई-बहन के सुख से युक्त तथा भूमि आवास एवं वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। शुक्र सप्तम भाव को नीच दृष्टि से देखने से स्त्री सुख में कमी एवं दाम्पत्य सुख में असंतोष रहता है। व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में भी विघ्न/बाधाएं होती हैं।

द्वितीय भाव-में मेष राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक को पारिवारिक सुख में कमी अथवा परिवार के सदस्यों के साथ कुछ मन-मुटाव रहे। जातक युक्तिपूर्ण वाणी बोलने वाला, भ्रमणप्रिय, कामातुर, विलासप्रिय, संगीत, कला एवं साहित्य आदि में रूचि हो, जातक परिश्रमी, संघर्षशील तथा अत्यन्त कठिनाईयों से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। ऐसा जातक आन्तरिक सज्जा, वकालत, क्रय-विक्रय, प्रतिनिधि, सौन्दर्य प्रसाधन, कम्पयूटर आदि क्षेत्रों में सफल होता है। जातक द्वारा दूसरों को दिया गया उधार बड़ी मुश्किल से मिलता है।

तृतीय भाव-में स्वगृही वृष राशि पर शुक्र होने से जातक को भाई-बहनों का सुख यथेष्ठ होता है। व्यवसाय एवं भाग्य पक्ष में कठिनाइयों के बाद सफलता मिले, जीवन का प्रारम्भिक भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिनाइयों से भरा रहे। मध्यमायु के पश्चात् भूमि, मकान, वाहन आदि सुख-साधनों की प्राप्ति हो। ऐसा जातक, अभिनय-कला, राजनीति, प्राध्यापन, संगीत, काव्य, लेखन, क्रय-विक्रय के क्षेत्र में विशेष सफल रहता है। परन्तु अड़चनों के बाद ही सफलता मिलती है। धर्म के सम्बन्ध में स्वतंत्र विचारधारा होती है। यदि चन्द्र-शुक्र का योग हो, तो जातक उच्च-शिक्षित एवं प्रतिष्ठित प्राध्यापक होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 112

चतुर्थ भाव-में मिथुन राशि का शुक्र होने से जातक का पारिवारिक जीवन सामान्य रहता है। जातक मातृ-पितृ का भक्त होता है तथा उनसे विशेष रूप से लाभान्वित रहता है। व्यवसाय में धनार्जन हेतु जातक को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। भूमि, धन, आवास एवं वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। यदि चन्द्र-शुक्र का योग हो तथा गुरु की भी दृष्टि हो, तो जातक को भू-सम्पत्ति का विशेष सुख मिलता है। स्त्री, सुन्दर व सुशील होती है तथा व्यवसाय में उसका सहयोग भी विशेष होता है। जातक/जातिका को अपने गृह को आन्तरिक सजावट में विशेष रूचि होती है।

पंचम भाव-में कर्क राशि पर शुक्र होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, मिलनसार, हंसमुख, स्नेही स्वभाव परन्तु जातक चंचल एवं कामुक प्रवृत्ति वाला, उच्च विद्या के क्षेत्र में संघर्ष के बाद सफलता, व्यवसाय में निज पुरुषार्थ द्वारा

धनार्जन करने वाला, जातक को संगीत, नाट्य, काव्य, कला एवं पौराणिक साहित्य में विशेष रूचि रहती है। यदि शुक्र के साथ शनि, बुध, चन्द्र आदि ग्रहों का भी योग हो, तो जातक अपने कार्यक्षेत्र में चतुर व नीतिज्ञ होता है। जातक बहुसन्ततिवान, प्राय: अधिक कन्या वाला होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 113

षष्ठ भाव-में सिंह राशि पर शुक्र होने से जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, शत्रुओं से हानि, मातुल पक्ष (मामा आदि) के सुख में कमी, भाई-बहनों से मतान्तर एवं उनके सुख में कमी, धन का वृथा खर्च अधिक होता है। जातक को ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि विद्याओं में भी विशेष रूचि रहे। ऐसा जातक विलासप्रिय, कामुक तथा मदिरा आदि विषयों में भी रूचि रखता है तथा व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है। गुप्त रोग होने की संभावना रहती है। स्त्री के साथ मतभेद एवं सुख में कमी होने की भी संभावना होती है।

सप्तम भाव-में कन्या (नीच) राशि पर शुक्र के प्रभाव से जातक आकर्षक व्यक्तित्व, स्वाभिमानी, परन्तु कामुक प्रवृत्ति वाला, संगीत, कला, साहित्य, मदिरा एवं विपरीत सैक्स के प्रति विशेष आकर्षण रखने वाला, परन्तु दाम्पत्य जीवन में कठिनाइयों का सामना एवं असन्तोष रहे। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यंत संघर्ष व कठिनाइयों का सामना रहे। भाई-बहनों के सुख में कमी रहे। मध्योत्तर आयु के बाद स्वास्थ्य में कमी तथा मानसिक तनाव अधिक रहे। यदि सप्तम शुक्र के साथ भौमादि का अशुभ योग हो, तो विवाह सुख में कमी होती है। देखें उदारहरण कुंडली नं. 115

अष्टम भाव-में तुला (स्वगृही) राशि पर शुक्र होने से जातक कृश शरीर, परन्तु दीर्घायु, चंचल वृत्ति, व्यवहार कुशल, व्यवसाय में कठिन परिश्रम एवं कठिनाइयों से धनोपार्जन करने वाला, भ्रमणशील, विलासप्रिय एवं स्वच्छन्द प्रकृति, संगीत-गायन एवं कलादि विषयों में विशेष रूचि, सुन्दर एवं सुशील स्त्री का सुख प्राप्त होता है। यदि अष्टमस्थ शुक्र के साथ मंगल का भी सम्बन्ध हो, तो जातक के विपरीत सैक्स की जातिका के साथ अनैतिक सम्बन्ध होने की संभावना होती है। पारिवारिक सुख में कुछ कमी रहती है।

नवम भाव-में बृश्चिक राशि पर शुक्र होने से जातक अपने धर्म के प्रति लापरवाह होता है। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग में विघ्न/बाधाएं होती हैं। भाई-बहन के सुख में कमी होती है। विवाह के पश्चात आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। जातक परिश्रमी, पराक्रमी एवं निज उद्यम द्वारा भी लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। यदि चन्द्र, बुध का योग हो तो जातक भूमि, आवास एवं वाहन आदि के सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

दशम भाव-में धनु राशि पर शुक्र होने से जातक बुद्धिमान, अनेक उच्च प्रतिष्ठित स्त्री/पुरूष मित्रों से युक्त, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, माता-पिता के प्रति भक्ति भाव रखने वाला, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों के बाद लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से अपने कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है। अत्याधिक दौड़-धूप के बावजूद जातक अधिक धन का संचय नहीं कर पाता। परन्तु गुजारे योग्य भूमि, मकान, वाहन तथा सुन्दर व सुशील पत्नी प्राप्त करने में सफल रहता है।

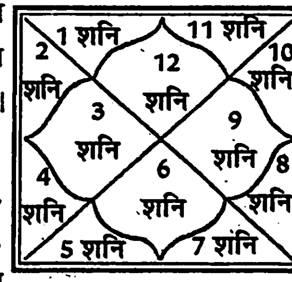
एकादश भाव-में मकर राशि पर शुक्र होने से जातक बुद्धिमान, विघ्न बाधाओं के पश्चात् उच्च तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त, भूमि-मकान-वाहन आदि सुख सुविधाओं से युक्त, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला, स्त्री मित्र वर्ग के संग में विशेष प्रसन्न रहने वाला, संगीत, सौंदर्य, ज्योतिष, मंत्र, लाटरी, शेयरों आदि में विशेष रूचि, व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष व युक्तियों से सफलता प्राप्त करने वाला, राजनीतिक क्षेत्र में भी लाभान्वित, देश-विदेश में यात्राओं के अवसर प्राप्त होते हैं। यदि मंगल का शुक्र के साथ योग हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, कामुक, विलासी एवं ऐश्वर्यप्रिय, आवेशपूर्ण व्यवहार करने वाला तथा रईसी ढंग से जीवन यापन करने वाला होता है।

द्वादश भाव-में कुम्भ राशि पर शुक्र होने से जातक उच्चाभिलाषी, स्वतंत्र विचार, कल्पनाशील, अस्वस्थ शरीर, कामुक प्रवृत्ति, मनोरंजन एवं विलास आदि कार्यों तथा बीमारी आदि पर अधिक खर्च करने वाला, अत्याधिक परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने वाला, भाई-बहन के सुख में कमी, गुप्त प्रेम या अनैतिक कार्यों में संलग्न हो। ऐसा जातक गुप्त चिन्ताओं से भी ग्रस्त रहता है। देश-विदेश में भ्रमण के अवसर भी प्राप्त होते हैं। व्यर्थ भ्रमण, परस्त्री गमन, शराब, आदि व्यसनों में संलग्न रह सकता है।

मीन लग्न के द्वादश भावों में शनि का फल

विशेष– शनि आयु, रोग, मृत्यु, दुख, धैर्य, परिश्रम, सेवा, व्यापार, भृत्यवर्ग, तिल, तैल एवं लौह आदि धातुओं का कारक माना जाता है। मीन लग्न की कुंडली में शनि लाभेश एवं द्वादशेश होने से मिश्रित फल प्रदान करता है। यदि कुंडली में शुभस्थ हो, तो जातक को व्यवसाय में अकस्मात् धन लाभ, दीर्घायु आदि शुभ फल प्रदान करता है। अशुभ होने पर उपरोक्त विषयों की हानि करता है।

मीन लग्न में शनि फल



प्रथम भाव-में मीन राशि पर शनि के प्रभाव से जातक दुर्बल एवं अस्वस्थ शरीर, परिश्रमी, स्वतन्त्र विचारक, दूरदर्शी, विद्वान, लघु व लम्बी यात्राएँ करने वाला, भूमि, आवास एवं वाहन आदि साधनों से युक्त, भाई-बहन के सुख में कमी, व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष के बाद लाभ एवं सफलता प्राप्त करने वाला, परन्तु आजीविका के क्षेत्र में उतार-चढ़ाव अधिक आते हैं। जातक को क्रय-विक्रय, हस्त शिल्प कला, तकनीकी कार्यों, कम्प्यूटरज़, भूमि-जायदाद, शेयर मार्कीट, पत्थर, तेल एवं लोहे से सम्बन्धित वस्तुओं के व्यापार से विशेष लाभान्वित होने की संभावना होती है।

द्वितीय भाव-में मेष (नीच) राशि पर शनि होने से लाभ स्थान पर शनि की स्वगृही दृष्टि होगी, जिससे जातक को व्यवसाय में निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त होते रहते हैं। जातक कटुभाषी, स्वाभिमानी, नेत्र कष्ट, पारिवारिक सुख में कमी होती है, परन्तु जातक दीर्घायु तथा उसे धर्म, योग-दर्शन आदि गूढ़ विषयों में विशेष रूचि रहती है। जातक की कुंडली में द्वितीयेश मंगल शुभस्थ हो, तो जातक को भूमि, मकान एवं वाहन आदि के सुख-सुविधाएं प्राप्त होते हैं। अधिक धन संचय नहीं हो पाता। स्वाभिमानी प्रकृति के कारण जातक कई बार उचित अवसरों का लाभ नहीं उठा पाता। देखें उदाहरण कुंडली नं. 112

तृतीय भाव-में वृष राशि पर शनि होने से जातक परिश्रमी, स्वाभिमानी, उच्चाभिलाषी, धर्म के सम्बन्ध में स्वतन्त्र विचार किंवा लापरवाह, परन्तु अपने उद्देश्य एवं स्वार्थ के प्रति सतर्क, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं तथा संतान सुख में परेशानी रहती है। धन का व्यय विशेष अधिक रहता है। जातक विदेश आदि के सम्बन्ध से लाभान्वित होता है। जातक को 36 वर्ष की आयु तक कार्य/व्यवसाय में विशेष संघर्ष व परेशानियों का सामना रहता है। तत्पश्चात भूमि, वाहन आदि के विशेष सुख प्राप्त होते हैं।

चतुर्थ भाव-में मिथुन राशि पर शनि होने से जातक के स्वास्थ्य में कमी, माता के सुख में भी कुछ कमी रहे, जातक को भूमि, मकान एवं वाहन आदि के सम्बन्ध में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। पारिवारिक क्षेत्र में भी उलझनें होती हैं। मातुल (मामा) पक्ष से सुख में कमी, व्यवसाय के क्षेत्र में भी संघर्ष व कठिनाईयां अधिक रहती है। यहां से शनि लग्न भाव को दशम दृष्टि द्वारा देखने से स्वभाव में उचाटता परन्तु जातक को बाहरी स्थानों (देश-विदेश) के सम्बन्धों से भी लाभ होता है। परन्तु भाई-बन्धुओं से मन/मुटाव एवं सुख में कमी रहती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 115

पंचम भाव-में कर्क राशि पर शनि होने से जातक चंचल एवं अस्थिर विचारों से युक्त, उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएं, सन्तान के सम्बन्ध में भी परेशानियां रहें। प्रथम संतति में कन्या का सुख, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनें। दाम्पत्य जीवन में भी असंतोष की भावना रहे। धनार्जन में अस्थिरता तथा पारिवारिक परेशानियों के कारण जातक परेशान व अशांत होता है। यदि चन्द्र-शुक्र का भी योग हो तो जातक को मधुमेह आदि रोग की संभावना रहती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 113

षष्ठ भाव-में सिंह राशि पर शनि होने से जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, रोग आदि पर धन का खर्च अधिक होता है। यद्यपि जातक दीर्घायु, पराक्रमी तथा अतिव्ययी होता है। भाई-बहनों के सुख में कमी, शत्रु पक्ष पर सफलता

प्राप्ति करने के लिए तथा क्लिष्ट समस्याएं सुलझाने के लिए विशेष धन खर्च करना पड़ता है। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। जातक को दुर्व्यसनों आदि के कारण चर्म, दन्त एवं नेत्र आदि रोगों की भी संभावना होती है। देखें उदाहरण कुं. नं. 114 एवं 116

सप्तम भाव-में कन्या राशि पर शनि होने से जातक के स्वभाव में अस्थिरता, उच्च विद्या प्राप्ति में भी विघ्न-बाधाएं, पत्नी के कारण परेशानी, व्यवसाय एवं आजीविका के क्षेत्र में भी कठिनाइयों एवं संघर्ष के बाद धन प्राप्ति, सांझेदारी के कामों से हानि, माता को शरीर कष्ट, दाम्पत्य सुख में कमी रहे, भाग्य के क्षेत्र में भी उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। यदि गुरु द्वारा दृष्ट हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित राज-नेता तथा राजनीति में सफल होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114 एवं 116

अष्टम भाव-में तुला (उच्च) राशि पर शनि के प्रभाव से जातक अत्यन्त बुद्धिमान, स्वाभिमानी, परिश्रमी, विघ्न/बाधाओं के बाद उच्च व्यवसायिक विद्या में सफलता, व्ययशील प्रकृति-अर्थात अत्याधिक खर्चीले स्वभाव का, दीर्घायु, भूमि, मकान, वाहन आदि सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, रईसी ढंग से जीवनयापन करने वाला, पिता के सम्बन्ध से चिन्तित, व्यवसाय में भी संघर्ष एवं कठिनाइयों से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, संतान सुख में भी विघ्न रहें। जीवन के उत्तरार्ध भाग में विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, शनि यदि मंगल-राहु आदि क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्टि हो तो जातक वायु रोग से पीड़ित या दुर्घटना से चोट आदि का भय रहे।

नवम भाव-में बृश्चिक राशि पर शनि होने से जातक भ्रमणशील, स्वाभिमानी, धर्म-कर्म के सम्बन्ध में स्वतन्त्र विचार रखने वाला, भाग्योन्नति में कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। व्यवसाय में संघर्ष एवं कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहते हैं, परन्तु खर्चाधिक्य के कारण धन का संचय अधिक नहीं हो पाता। जातक के भाग्य में भी अनेक बार उतार-चढ़ाव होते रहते हैं। ऐसा जातक ज्योतिष, मंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी रूचि रखता है।

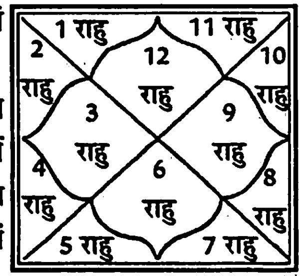
दशम भाव-में धनु राशि पर शनि होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, भूमि-मकान, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, परन्तु मकान एवं जायदाद सम्बन्धी परेशानियों का सामना भी होता है। माता को शरीर कष्ट तथा स्त्री के सम्बन्ध में भी परेशानियों उत्पन्न हो एवं वैवाहिक सुख में कमी हो। व्यवसाय में भी संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त हो, उतार-चढ़ाव अधिक हों। ऐसा जातक स्वदेश की बजाए विदेश में अधिक सफलता प्राप्त करता है। जातक को राजनीति के क्षेत्र में कम्प्यूटर, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, लौह उद्योग, तिल, तेल, गेहूं, चावल आदि अनाज तथा लकड़ी आदि के व्यवसाय (क्रय-विक्रय) से विशेष लाभ की संभावना रहे।

एकादश भाव-में स्वगृही मकर राशि में होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, किंतु उच्च शिक्षा में विघ्न-बाधाएं रहें, स्वास्थ्य में भी अस्थिरता एवं कमी हो परन्तु दीर्घायु हो, जातक अनेक युक्तिपूर्ण साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला, कुछ दिनों के बाद स्त्री व संतान सुख की प्राप्ति, जातक व्यवहार-कुशल एवं निज पराक्रम द्वारा जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। कुंडली में यदि चन्द्र भी शुभस्थ हो तो जातक उच्च व्यवसायिक विद्या, धन-सम्पदा, वाहन एवं स्त्री सुख आदि प्राप्त करने में सफल होता है। शनि पाप ग्रह से युक्त हो, तो जातक तेज स्वभाव तथा प्रेम सम्बन्धों में धोखा या विश्वासघात होने की भी संभावना होती है।

द्वादश भाव-में स्वगृही कुम्भ राशि पर शनि के प्रभाव से जातक/जातिका अत्यंत परिश्रमी, साहसी, दीर्घायु, गुप्त युक्तियों तथा अत्यंत संघर्ष व कठिनाई से निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने वाला, रहन-सहन उच्च स्तरीय होने के कारण धन के खर्च विशेष अधिक होते हैं तथा धन का संचय अधिक नहीं हो पाता। पारिवारिक सुख में कमी होती है तथा भाग्योन्नति में अड़चनें रहती हैं। यदि शनि की दृष्टि द्वितीय भाव में मेषस्थ गुरु पर हो, तो जातक को मस्तिष्क एवं नेत्र रोग की संभावना होती है। जातक को धर्म एवं आध्यात्म के प्रति भी विशेष रूचि रहती है।

मीन लग्न में द्वादश भावों में राहु का फल

मीन लग्न में राहु फल



विशेष– राहु सामान्यत: 3, 6, एवं 11वें भावों में अरिष्टों का नाशक तथा धन–सौभाग्य आदि में वृद्धिकारक माना जाता है। मीन लग्न में राहु 3, 4, 6, 7, 11 एवं 12वें भावों में कुछ शुभफल भी प्रदान करता है। सूर्य व मंगल के साथ हो, तो रोगकारक होता है।

प्रथम भाव-में मीन राशि पर राहु होने से जातक अस्वस्थ एवं दुर्बल शरीर, सुक्ष्म बुद्धि, संदेहशील एवं अस्थिर विचार होने पर भी जातक परिश्रम द्वारा कार्य/व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। जातक धार्मिक विचारों से युक्त, धनार्जन में गुप्त-युक्तियों का प्रयोग करने वाला, व्यर्थ की चिन्ताओं से परेशान रहने वाला होता है। जातक नेत्र एवं मस्तिष्क रोग से पीड़ित तथा दाम्पत्य जीवन में सुख की कमी एवं असंतोष होता है।

द्वितीय भाव-में मेष राशि का राहु होने से जातक स्पष्टवादी एवं कठोर वचन बोलने वाला, जातक को पारिवारिक सुख में कमी, आर्थिक क्षेत्र में भी विशेष संघर्ष करना पड़ता है तथा धन सम्बन्धी परेशानियां अधिक रहती हैं। अधिक धन संचय नहीं हो पाता। व्यवसाय में सफलता प्राप्ति के लिए विशेष संघर्ष एवं परिश्रम करना पड़ता है। कई बार ऐसे जातक के पास धन रहते हुए भी धन का सुख नहीं मिलता। देखें उदाहरण कुंडली नं. 111

तृतीय भाव-में वृष राशि पर राहु होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, पराक्रमी, साहसी, उच्चाभिलाषी एवं उद्यमशील प्रकृति का होता है। ऐसा जातक अपने उद्यम, साहस एवं परिश्रम द्वारा अपने कार्य व्यवसाय में लाभ व उन्नति करने वाला होता है। भाई–बहिन के सुख में कमी, जातक भ्रमणशील, भूमि, आवास एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न तथा देश–विदेश की यात्राएं करने के अवसर प्राप्त होते हैं। देखें कुण्डली नं. 113

चतुर्थ भाव-में मिथुन राशि पर राहु होने से जातक अत्यंत बुद्धिमान, परिश्रमी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, माता का विशेष सुख होता है। भूमि–मकान एवं वाहन का सुख कुछ परेशानियों के बाद होता है। उच्च विद्या एवं कार्य/व्यवसाय में जातक कुछ संघर्ष व अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त करता है। जातक तकनीकी कार्यों में विशेष कुशल होता है। अपने जन्म स्थान से अन्यत्र (विदेश आदि) में अधिक सफल होता है।

पंचम भाव-में कर्क राशि पर राहु के प्रभाव से जातक की तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, कटुवाणी का प्रयोग करने वाला, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहें अथवा शिक्षा अधूरी रहे। धन एवं संतान सुख व परिवार सम्बन्धी परेशानियां रहें। जातक व्यवसाय में गुप्त–युक्तियों एवं बुद्धि चातुर्य से निर्वाह योग्य धनोपार्जन करने में सफल होता है। ऐसा जातक अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उचित-अनुचित का विचार करने से भी नहीं चूकता। देखें उदाहरण कुंडली नं. 115

षष्ठ भाव-में सिंह राशि पर राहु होने से जातक साहसी, पराक्रमी, संघर्ष एवं गुप्त युक्तियों के आश्रय से धन लाभ प्राप्त करने में सफल होता है परन्तु वृथा खर्च भी बहुत होते हैं। रोग एवं शत्रुओं के कारण चिंतित होता है परन्तु ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से उन्हें परास्त करता है। उदर रोग तथा दन्त रोगों से भी पीड़ित रह सकता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

सप्तम भाव-में कन्या राशि पर राहु होने से जातक को जीवन के प्रारम्भिक भाग में व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है। परन्तु ऐसा जातक कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा कार्य/क्षेत्र में लाभ व उन्नति प्राप्त करने में सफल होता है। स्त्री को कष्ट अथवा वैवाहिक सुख में कमी होती है। यदि यहां राहु पर बुध, गुरु आदि ग्रहों की शुभ दृष्टि हो तथा शुक्र भी शुभस्थ हो, तो स्त्री एवं धन–सम्पदा आदि के सुख यथेष्ठ होते हैं। उत्तरार्ध में मधुमेह, प्रमेह आदि रोगों का भय तथा जातक उच्च पद प्रतिष्ठित होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 112

अष्टम भाव-में तुला राशि पर राहु होने से जातक चतुर बुद्धि, उच्चाभिलाषी, स्वाभिमानी, परिश्रमी होता है। प्रारम्भिक जीवन काल संघर्षपूर्ण एवं कठिनाइयों से युक्त रहता है। शरीर कष्ट एवं गुप्त रोगों का भय, पैतृक धन–सम्पत्ति का

सुख भी कम मिलता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। जीवन के उत्तरार्ध भाग में भूमि, मकान, वाहन आदि के सुख प्राप्त होते हैं परन्तु खर्च भी बहुत रहते हैं। धनार्जन हेतु विदेश यात्राएं भी सम्भव है।

नवम भाव-में बृश्चिक राशि पर राहु होने से जातक के जीवन के पूर्वार्द्ध में व्यवसाय एवं भाग्योन्नति में अनेक बाधाएं उत्पन्न होती हैं। जातक गुप्त युक्तियों एवं विशेष परिश्रम के बल पर निर्वाह योग्य आय के साधान बनाने में कुछ सफल होता है। यात्राएं अधिक रहती हैं तथा धन के खर्च भी बहुत अधिक रहते हैं। ऐसे जातक को भाई-बन्धुओं का सुख व सहयोग भी कम मिलता है। जातक को ज्योतिष, योग, यंत्र, मंत्र आदि विद्याओं में भी रूचि होती है।

दशम भाव-में धनु राशि पर राहु होने से जातक परिश्रमी, उद्यमशील होने पर भी जीवन के पूर्वार्द्ध में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पिता को शरीर कष्ट अथवा पैतृक सुख में कमी रहती है। अत्यन्त परिश्रम करने पर भी व्यवसाय में लाभ कम तथा अस्थिरता रहती है। जातक गुप्त युक्तियों द्वारा किंचित निर्वाह-योग्य धनार्जन करने में सफल होता है। मध्यमायु में व्यवसाय में विशेष उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। जातक को शिर पीड़ा, नेत्र एवं मानसिक विकार व दिमागी रोगों की सम्भावना होती है।

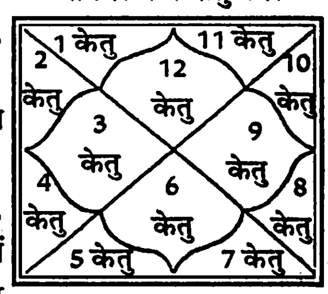
एकादश भाव-में मकर राशि पर राहु होने से जातक तीव्र बुद्धिमान, भ्रमणप्रिय एवं उच्चाकांक्षी होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न स्त्रोतों एवं कठिन परिश्रम द्वारा धनार्जन करने में सफल होता है। जातक धर्म-आध्यात्म, ज्योतिष, यंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी विशेष रूचि रखता है। यदि पंचमेश चन्द्र शुभस्थ हो तथा राहु पर शनि-मंगल आदि ग्रहों की स्वगृही या उच्च दृष्टि हो, तो जातक को शेयरों, लाटरी या सट्टा आदि से अकस्मात् अच्छा धन लाभ होने की संभावना होती है।

द्वादश भाव-में कुम्भ राशि पर राहु होने से जातक अत्याधिक परिश्रमी, धैर्यवान, भ्रमणशील, कामुक, विलासप्रिय एवं अस्थिर प्रकृति वाला, ऐसा जातक निज पराक्रम एवं गुप्त युक्तियों से धनोपार्जन करने वाला होता है। धन का खर्च भी विशेष अधिक रहता है। जातक को ज्योतिष, यंत्र, मंत्र, योग आदि गूढ़ विषयों की ओर भी विशेष रूचि रहती है। जातक को देश-विदेश में यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होते हैं। देखें उदाहरण कुंडली नं. 116

मीन लग्न के द्वादश भावों में केतु का फल

विशेष- केतु तमोगुणी ग्रह होने पर भी गुप्त विद्याओं, मंत्र सिद्धि, अत्यन्त कठिन कार्य, तीर्थाटन, तत्त्व ज्ञान, वैराग्य, चर्म-रोग, नाना-नानी, कलह-कलेश, शस्त्र-दुर्घटना, दुख-शोक व संघर्ष का कारक माना जाता है।

मीन लग्न में केतु फल



मीन लग्न में केतु प्रथम, पंचम, षष्ठ, नवम एवं दशम भावों में कुछ शुभ फल प्रदान करता है।

प्रथम भाव-में मीन लग्न/राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, व्यवहार कुशल तथा परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने तथा दूसरों के मनोंभावों को शीघ्र समझ लेने में सक्षम होता है। प्रारम्भिक अवस्था में अथवा केतु की दशा में शरीर कष्ट होने की संभावना। यदि गुरु आदि शुभ ग्रहों का सम्बन्ध हो, तो कष्ट के बाद स्वास्थ्य एवं सुख लाभ होता है। जातक उच्च प्रतिष्ठित तथा भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। देखें उदारहण कुंडली नं. 112। यदि केतु पर अशुभ दृष्टि हो तो जातक को मस्तिष्क रोग, वात-विकार, पांवों में सूजन आदि रोगों का भय रहता है।

द्वितीय भाव-में मेष राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, स्पष्टवक्ता, धैर्यवान, उच्चाभिलाषी होता है। ऐसा जातक व्यवसाय में गुप्त युक्तियों एवं कठोर परिश्रम से धनार्जन करने वाला, तथा पारिवारिक उलझनों के कारण परेशान होता है। अत्याधिक परिश्रम करने पर भी अधिक धन संचय नहीं कर पाता। गुप्त चिन्ताएं भी रहती हैं।

तृतीय भाव- में वृष राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, साहसी, पराक्रमी, चंचल, भ्रमणशील, उदार हृदय एवं परोपकारी स्वभाव का होता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रमों एवं युक्तियों के साथ निर्वाह योग्य धनार्जन करने में सफल

होता है। भाई के सुख में कमी होती है। जातक भ्रमणप्रिय, वृथा व्यय करने वाला, जातक ज्योतिष, योग, मंत्र, यंत्र आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला होता है। भाई-बन्धुओं का सुख व सहयोग कम मिलता है। जबकि माता/पिता का सुख यथेष्ठ मिलता है। जातक को गले, नाक, कान, शीत प्रकोप आदि रोगों का भय होता है।

चतुर्थ भाव-में मिथुन राशि पर केतु होने से जातक चंचल एवं अस्थिर स्वभाव का होता है। पिता या माता को शरीर कष्ट या मातृ सुख में कमी होती है। ज़मीन-जायदाद के सम्बन्ध में परेशानियां अथवा सुख में कमी, पारिवारिक एवं गृहस्थ सुख में भी कमी रहती है। जातक भूमि, मकान एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति भी अत्यन्त कठिनाइयों के बाद होती है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी अस्थिरता एवं संघर्ष अधिक होता है। मन अधिकांशत: अशान्त रहता है। जातक को गले, छाती एवं श्वास सम्बन्धी रोग होने का भय होता है। स्त्री की कुंडली में हो तो उसे छाती में कष्ट का भय।

पंचम भाव-में कर्क राशि पर केतु होने से जातक उसकी दशा में उच्चाभिलाषी, चंचल एवं अस्थिर बुद्धि, उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएं रहें। संतान सुख भी कठिनाइयों एवं परेशानियों के बाद मिलें। व्यवसाय में भी संघर्ष व कठिनाइयां अधिक तथा लाभ में कमी रहे। यद्यपि जातक परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों से निर्वाह योग्य आय के साधन बनाने में सफल होता है। जातक को गुप्त विद्याओं जैसे ज्योतिष, मंत्र, तंत्र, योग, दर्शन तथा लाटरी, शेयरों आदि के काम में भी विशेष रूचि होती है। पंचम केतु के प्रभाव से कन्या संतति अधिक होती है। स्त्री की कुंडली में पंचम केतु गर्भपात होने की सम्भावना करता है। इसके अतिरिक्त लिवर दोष, उदर विकार आदि भी करता है। जातक के उदर, पीठ या छाती पर तिल का चिन्ह होता है।

षष्ठ भाव-में सिंह राशि पर केतु के प्रभाव से जातक साहसी, पुरूषार्थी एवं भूमि, कृषि, पशु, आवास एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। मातुलपक्ष (मामा आदि) के सुख में कमी होती है। ऐसा जातक विवाद, मुकद्दमा आदि के सम्बन्ध में शत्रुओं पर सफलता प्राप्त करता है। जातक अत्यंत संकट उपस्थित हो जाने पर भी अपना धैर्य नहीं छोड़ता। जन्म स्थान से अतिरिक्त विदेश आदि में विशेष भाग्योदय होता है। अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक को उदर विकार, पाचन, दांत, नेत्रों आदि से सम्बन्धित रोगों की संभावना होती है। जातक को नाभि के पास, उदर या पीठ पर तिल आदि का चिन्ह होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 116

सप्तम भाव-में कन्या राशि पर केतु होने से जातक दुर्बल स्वास्थ्य होने पर परिश्रमी, महत्त्वाकांक्षी, कामुक एवं विलासप्रिय स्वभाव का होता है। वैवाहिक सुख में विघ्न/बाधाएं अथवा कुछ कमी रहती है। जातक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों के बाद धनार्जन में सफलता मिलती है। सांझेदारी के कामों में हानि की संभावना। लापरवाहीवश विविध कार्यों पर खर्च अधिक होते हैं। जातक वायु रोग, प्रमेह, पथरी, अपचन आदि रोगों का भय होता है। जातक की कमर, जांघ अथवा नाभि के पास तिल आदि का निशान हो।

अष्टम भाव-में तुला राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, साहसी, पराक्रमी एवं चालाक बुद्धि वाला होता है। पारिवारिक सुख में कमी रहती है। व्यवसाय में आर्थिक लाभ के लिए अत्यन्त संघर्ष, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर कठिनता से जातक निर्वाह योग्य आय के साधन बना लेता है। घरेलू उलझनों के कारण मानसिक तनाव एवं अशांति रहती है। केतु के साथ किसी अन्य अशुभ ग्रह का सम्बन्ध हो, तो जातक को गुप्त रोग, मुख व नेत्र रोग एवं दन्त आदि रोगों का भय होता है। जांघों, कमर या गुप्तांगों पर तिलादि का चिन्ह होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 111

नवम भाव-में बृश्चिक राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, भ्रमणशील, उच्चाभिलाषी, धर्मपरायण, परोपकारी, उच्चपद प्रतिष्ठित, भूमि, आवास एवं सवारी आदि सुखों से सम्पन्न होता है। भाई-बन्धुओं के सुख में कमी होती है। ऐसा जातक निज परिश्रम एवं उद्यम से जीवन में लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। जातक को धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि विद्याओं में भी विशेष रूचि होती है। ऐसे जातक को देश-विदेश में यात्राओं एवं लाभ प्राप्ति के भी अवसर प्राप्त होते हैं। केतु के कारण जातक की जांघों या कमर पर तिल आदि के चिन्ह होते है। जातक की 42 वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्योदय होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 113

दशम भाव-में धनु राशि पर केतु होने से जातक बुद्धिमान, उच्च विद्या प्राप्त, पराक्रमी, परिश्रमी, माता-पिता के सुख से युक्त एवं लाभान्वित, व्यवसाय में भी जातक कुछ कठिनाइयों एवं संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त करता है। व्यवसाय की दिशा में कई बार परिवर्तन भी करने पड़ते हैं। पिता को शरीर कष्ट एवं गुप्त चिन्ता, संघर्ष के बावजूद जातक भूमि-मकान एवं सवारी आदि सुख सुविधाओं से सम्पन्न होता है। उसे धर्म, योग, ज्योतिष, तंत्र, मंत्र आदि विषयों में भी रूचि रहती है। जातक चालीस वर्ष की आयु के बाद विशेष उन्नति करता है। ऐसे जातक को केतु की दशा भी लाभदायक रहती है। जातक को राजनीतिक एवं विदेश आदि के क्षेत्र में भी विशेष सफलता मिलती है। जातक के टांगों एवं घुटनों पर तिल आदि का चिन्ह होता है।

एकादश भाव-में मकर राशि पर केतु होने से जातक परिश्रमी, पराक्रमी, उच्चाभिलाषी परन्तु चंचल बुद्धि होने के कारण उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहें। ऐसा जातक उचित-अनुचित विविध ढंगों से धनार्जन करता है। परन्तु जीवन के पूर्वार्द्ध में व्यवसाय की स्थिति अस्थिर एवं डांवाडोल रहती है। कई बार परिवर्तन एवं खर्च करने पड़ते हैं। जातक 42 वर्ष की आयु के बाद विशेष युक्तियों द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में सफल होता है। ऐसे जातक को संतान आदि के विषय में भी विशेष चिन्ता होती है। जातक व्यवहार कुशल एवं अपना कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है। पिता द्वारा लाभान्वित होता है। परन्तु व्यवसाय की दृष्टि से चिन्तित रहता है। जातक की टांगों पर तिल या चोट आदि का निशान संभव है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 115

द्वादश भाव-में कुम्भ राशि पर केतु होने से जातक साहसी, पराक्रमी, भ्रमणशील एवं परिश्रमी होता है। जीवन के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य कुछ खराब रहता है, परन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ सुधार होता है। जातक द्वारा अत्याधिक व्यय के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विश्वस्त लोगों द्वारा धोखा प्राप्त होने से धन की हानि होती है। क्लिष्ट रोगों पर भी धन का विशेष व्यय होता है। जातक द्वारा व्यवसाय में अत्याधिक संघर्ष व कठिनाइयों से धनार्जन करने पर भी धन का संचय या बरकत नहीं हो पाती। जातक अपने पराक्रम एवं साहस से विपरीत एवं कठिन परिस्थितियों का सामना करने में सफल रहता है। केतु के कारण जातक की पिंडलियों या पांवों पर तिल या चोट आदि का चिन्ह होगा। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

मीन लग्न में कुछ मुख्य द्वि-ग्रही एवं त्रिग्रही आदि योग

मीन लग्न में सूर्य-गुरु, चन्द्र-गुरु, चन्द्र-मंगल, मंगल-गुरु एवं चन्द्र-बुध ग्रहों के योग विशेष प्रशस्त फल देने वाले होते हैं। अन्य ग्रह-योगों का सामान्य या मिश्रित फल होता है। सभी ग्रह योग यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो शुभ फल प्रदान करते हैं।

सूर्य-चन्द्र ⇒मीन लग्न में षष्ठेश व पंचमेश का योग जातक को व्यवसाय के सम्बन्ध में कुशलता प्रदान करता है। जातक लोहा, सोना, चांदी, रबड़, कैमिकल्ज़, कोयला, तैल आदि वस्तुओं के क्रय-विक्रय से विशेष लाभान्वित रहता है। परन्तु जातक को अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

सूर्य-मंगल ⇒धन व भाग्य के स्वामी मंगल व षष्ठेश सूर्य में योग सम्बन्ध होने से जातक अत्याधिक परिश्रमी, साहसी, पराक्रमी, स्वाभिमानी, कुछ तेज एवं क्रोधी स्वभाव का, अपने अधिकार एवं गौरव का प्रदर्शन करने वाला, भाग्यशाली, धन, भूमि-जायदाद एवं वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त होता है। कार्य-व्यवसाय में संघर्ष एवं विघ्न/बाधाओं का सामना भी रहता है।

सूर्य-बुध ⇒केन्द्र-त्रिकोण में यह योग हो, तो जातक को पैतृक मकान, उच्च-शिक्षा तथा सुन्दर व सुशील स्त्री का सुख देता है। विवाह के बाद विशेष भाग्योन्नति होती है। परन्तु सगे-संबंधियों सुख में कमी करता है। लग्न या द्वादश भाव में यह योग शिर में पीड़ा, नेत्र रोग एवं माता को कष्ट या मातृ सुख में कमी करता है। जबकि नवम भाव में माता-पिता एवं सम्पत्ति सुख देता है। देखें उदारहण कुंडली नं. 114

सूर्य-गुरु ⇒मीन लग्न में यह योग जातक को बुद्धिमान, धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव, उच्चशिक्षित एवं प्रतिष्ठित, सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से सम्बन्ध रखने वाला, उच्च पदाधिकारी अथवा उच्च स्तरीय व्यवसाय में संलग्न, पिता द्वारा लाभान्वित, जमीन-जायदाद, वाहन आदि सुविधाओं से मुक्त होता है। देखें उदारहण कुं. नं. 112

सूर्य-शुक्र ⇒सूर्य-शनि एवं सूर्य-राहु के योग मीन लग्न में शुभ फल नहीं देते हैं। धन, सम्पत्ति के सम्बन्ध में संघर्ष अधिक तथा व्यवसाय में भी बार-बार बाधाएं व विघ्न होते है। पारिवारिक जीवन की परेशानियों से घिरा होता है। आय कम तथा खर्च अधिक होता है। अधिक विस्तार के लिए योग फल सम्बन्धी अध्याय का अवलोकन करें।

चन्द्र-मंगल ⇒का योग होने से जातक बुद्धिमान, स्पष्टवादी, कई बार कटुवचनों का प्रयोग करने वाला, यदि केन्द्र त्रिकोण में योग बना हो, तो जातक उच्चशिक्षित, योजनाबद्ध तरीके से काम करने वाला, अनुसंधानात्मक प्रकृति, भाग्यशाली, जातक एक से अधिक साधनों से धनार्जन करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, उच्च प्रतिष्ठित, नए-नए मित्र बनाने में कुशल, मानसिक शक्ति प्रबल होती है। ऐसा जातक इंजीनियरिंग, इलैक्ट्रीसिटी, चिकित्सा, पुलिस, सेना, प्राध्यापन, प्रशिक्षण, कैमिकल्ज एवं तकनीकी कार्यों में सफल तथा संतान, विद्या आदि सुखों से युक्त होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 112

चन्द्र-बुध ⇒का योग केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक वार्तालाप एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल, व्यवहाल-कुशल, विघ्नों के बावजूद उच्च-विद्या, माता-पिता से विशेष सहायता प्राप्त, क्रय-विक्रय से लाभ अर्जित करने वाला, गुप्त युक्तियों का प्रयोग करने में कुशल होता है। यदि चन्द्र क्षीण हो या बुध अस्तगत हो, तो उच्च विद्या एवं व्यवसाय में अड़चनें रहती हैं तथा सुख में कमी होती है।

चन्द्र-गुरु ⇒मीन लग्न में यह योग विशेष प्रशस्त होता है। इस योग के प्रभाव से जातक उच्च शिक्षित, बुद्धिमान, विचारशील अपने कार्य क्षेत्र में उच्च-प्रतिष्ठित अथवा किसी पार्टी, संस्था या कम्पनी आदि का प्रमुख होता है। योजना बनाने में कुशल, धनवान, धर्म, ज्योतिष, आध्यात्म आदि की ओर विशेष रूचि रखने वाला होगा। मकर तथा बृश्चिक राशि में यह योग अपेक्षाकृत कम फलदायी होगा।

चन्द्र-शुक्र ⇒का योग हो, तो जातक उच्चाभिलाषी, शिक्षित, कामुक, विषायासक्त, खाने-पीने का शौकीन, सिनेमा-संगीत-कला आदि में रूचि रखने वाला, स्त्रियों की संगति में अधिक खुश रहने वाला, सुन्दर वस्त्रों, सुगन्धित वस्तुओं एवं मनोरंजन आदि कार्यों में अधिक व्यय करने वाला होता है तथा स्वयं भी स्त्रियों द्वारा लाभान्वित होता है। 1, 3, 5, 9, 11वें भावों से शुभ होता है। तृतीय स्थान में यह योग होने से बहनों का सुख अच्छा तथा भाई का सुख कम होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 112 (इस जातक की दो बहनें तथा भाई कोई नहीं है) पंचम भाव में यह योग कन्या संतति अधिक देता है।

चन्द्र-शनि, चन्द्र-राहु एवं चन्द्र-केतु के योग से जातक हस्तशिल्प, दस्तकारी, तकनीकी कार्यों में कुशलता देता है। जातक उच्च-शिक्षा में विघ्न/बाधाओं के बाद ही सफल होता है। जातक व्यवसाय में अत्यंत संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनाता है। जातक को गूढ़ विषयों ज्योतिष, मंत्र, तंत्र, आदि विषयों में भी विशेष रूचि होती है। परन्तु जातक अस्वस्थ शरीर, मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त तथा धन का खर्च अधिक होता है।

मंगल-बुध ⇒त्रिकोणेश व केन्द्रेश का सम्बन्ध यद्यपि राजयोग कारक होता है, परन्तु यह दोनों ग्रह परस्पर शत्रु होने से जातक को पारिवारिक सुख में कमी तथा धन, सम्पदा, वाहन एवं स्त्री आदि सम्बन्धी सुख अत्यंत संघर्ष व कठिनाइयों के पश्चात प्राप्त होते हैं।

मंगल-गुरु ⇒का योग मीन लग्न में जातक को उच्च-शिक्षित, मेधावी, विद्वान, धार्मिक आस्था युक्त, धर्म, ज्योतिष, योग आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, पिता, भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, परोपकारी एवं उदार हृदय, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, सम्पन्न एवं भाग्यवान होता है। यदि यह योग राहु से युक्त हो तो उपरोक्त सुखों की प्राप्ति में कुछ कमी होती है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 114

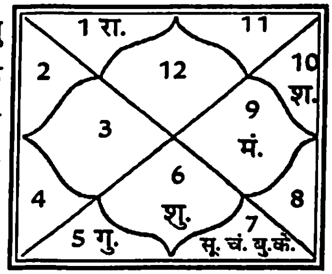
शेष अन्य योगों के सम्बन्ध में आगामी पृष्ठों पर दिए गए द्वि-त्री एवं चार व पंच ग्रह योगों के फल सम्बन्धी विवरण देखें।

पंडित पन्ना लाल ज्योतिषी

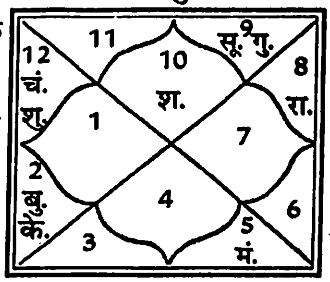
मीन लग्न-कुछ उल्लेखनीय उदाहरण कुण्डलियां

दिव्य आध्यात्मिक विभूति
स्वामी रामतीर्थ परमहंस

उदा. कुंडली नं.111
22 अक्तू. 1873 ई.
स्वाती (४) गुजरांवाला
भाग्य राहु वर्षादि १/९/२९



नवांश कुंडली



प्रस्तुत जन्म कुण्डली आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नत एवं दिव्य विभूति स्वामी रामतीर्थ परमहंस जी की है। इनका जन्म 22 अक्तू. 1873 ई. को मीन लग्न एवं मकर के नवांश में पाकिस्तान में मुरारी वाला गांव (गुजरांवाला) में हुआ था। जन्मकालीन स्वाती नक्षत्र एवं राहु की दशा १.९.२९ वर्ष मास आदि भोग्य थे। जन्म के 9 मास बाद ही इनती माता का देहावसान हो गया था। पिता जी की भी आर्थिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं थी। परंतु धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों से समृद्ध थे। स्वामी राम बाल्यकाल से ही बौद्धिक क्षमता एवं विद्या के क्षेत्र में श्रेष्ठ परंतु शरीर रूप से दुर्बल रहे थे। दसवीं क्लास तक सदा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण होकर अपने क्षेत्र में प्रथम रहते थे। दस वर्ष की आयु में इनका विवाह एक सुशील एवं धर्म परायण कन्या से हुआ। बाद में उसके उदर से दो लड़कों का जन्म हुआ। (1890 ई.) में लाहौर यूनिवर्सिटी F.A. में तथा साढ़े 19 वर्ष की आयु में ही एम.ए. की परीक्षा में यूनिवर्सिटी में प्रथम रहे तथा ..1896 ई... में मिशन कालेज लाहौर में गणित के प्रमुख प्रोफैसर के पद पर आसीन रहे। इन्हीं दिनों रामतीर्थ जी जगद्गुरु शंकराचार्य के प्रवचनों से प्रभावित होकर श्रीमद् भगवत् गीता, भागवत्, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, पुराण एवं वेदांत ग्रंथों की निरंतर गहन अध्ययन एवं चिन्तन करने लगे तथा फिर आत्म चिन्तन, मन्थन एवं प्रभु ध्यान में निमग्न रहने लगे। (1897 ई.) में गर्मियों की छुट्टियों में अध्यात्म चिन्तन के विचार से हरिद्वार, ऋषिकेश, तपोवन आदि तमोमय स्थानों पर तपस्वी साधु-महात्माओं के साथ सत्संग एवं एकान्त वास किया। वहीं तपोभूमि में भाव विह्वल होकर एक बार स्वा. रामतीर्थ ने स्वयं के शरीर को गंगा जी की उफनती धारा में बहा दिया, परंन्तु गंगा की तेज धारा ने इनके शरीर को तेज बहाव से हटाकर किनारे लाकर रख दिया। छुट्टियों से वापस लौटकर स्वा. रामतीर्थ और भी अधिक दान आदि धार्मिक कृत्यों में लग गए जो कुछ भी कमाते थे, उसका अधिकांश भाग साधु-महात्माओं की सेवा एवं तीर्थ यात्राओं में खर्च कर डालते थे। कुछ दिनों बाद अपनी स्त्री और दो बच्चों को छोड़कर जप-तप हेतु आधीरात्रि के समय उत्तरकाशी की ओर चल दिए। तदनन्तर संन्यास धारण करके अपनी भक्ति और ज्ञान की धाराओं को समस्त भारत में प्रवाहित करने लगे। उन्होंने श्री अमरनाथ, गंगोत्री, हरिद्वार, बदरीनारायण, केदारनाथ आदि तीर्थों की यात्राएं करके भारतवर्ष तथा अमेरिका, जापान आदि देशों में भी अपनी ओजस्वी वाणी एवं उपदेशों से लोगों के दिलों को पुनीत किया। 17 अक्तू. 1906 ई. को दीपावली के दिन श्री गंगा में ही समाधि लेकर 33 वर्ष की अल्पायु में ही ब्रह्मलीन हो गए। उनकी जन्म कुण्डली में कुछ प्रमुख ज्योतिष योग इस प्रकार से पाए जाते हैं।

(1) माता का कारक ग्रह क्षीण होकर अष्टम भाव में है तथा चंद्रमा से चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह शनि होने से जातक माता के सुख से वांचित रहा है। छटे भाव में लग्नेश (गुरु) होने से बाल्यकाल में दुर्बल एवं कृश शरीर था।

(2) जन्म कुण्डली में चतुर्थेश बुध एवं राशि स्वामी शुक्र दोनों में स्थान परिवर्तन योग बना हुआ है तथा बुध उदित अवस्था में है, जिसके कारण आर्थिक अभावों के बावजूद जातक उच्च विद्या प्राप्त करने में सफल हुआ।

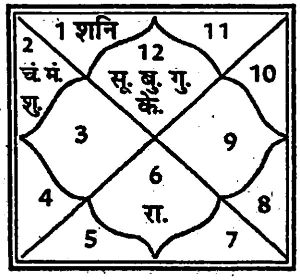
(3) कुण्डली में गुरु पंचम दृष्टि से मंगल को देख रहा है। नवांश में गुरु स्वराशिगत होने जातक गणित एवं उच्च शास्त्रीय, एवं आध्यात्मिक विद्या प्राप्त करने में सफल हुआ है। इससे जातक परोपकारी, दयालु एवं दानशील हुआ है।

(4) जन्म कुण्डली व नवांश कुं. दोनों में शनि स्वराशि (मकर) का होने से शनि वर्गोत्तम स्थिति में है। शनि दुख एवं अध्यात्म का कारक ग्रह होने से, इसके प्रभाव से जातक अध्यात्म एवं वेदांत आदि धर्म शास्त्रों में उच्च स्थिति को प्राप्त हुए।

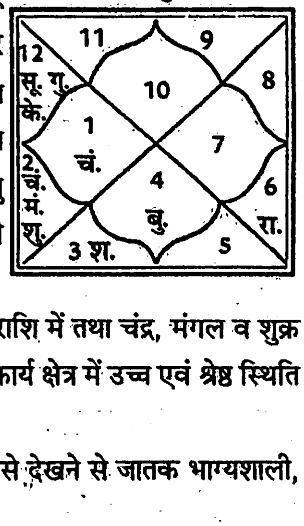
(5) द्वितीयेश मंगल दशमस्थ (केंद्र) भाव होकर शुभ गुरु द्वारा दृष्ट होने से जातक साधारण घर में जन्म होने पर भी उच्च प्रतिष्ठित होता है एवं विख्यात एवं धर्मोपदेशक होता है।

शिक्षा के क्षेत्र में सफल प्रिंसीपल व प्रमुख मैनेजर श्री अविनाश शर्मा

उदा. कुंडली नं. 112
12 अप्रैल, 1940 ई.
रोहिणी (३) गुरदासपुर



नवांश कुंडली



प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक उच्चशिक्षित, तीव्र बुद्धिमान एवं कुशल रिटायर्ड प्रिंसीपल साहब की है। आप आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा अंग्रेजी भाषा में एम.ए. व पी.एच.डी. करके राहु मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा सन् 1963 ई. में अल्पायु में ही Government College में प्रोफैसर बने। सन् 1967 ई. में एक सुशिक्षित, सुशील एवं प्राध्यापक युवती से विवाह हुआ, जिनसे 2 लड़कियां एवं लड़के का जन्म हुआ। सन् 1974 ई. में गुरु की महादशा में आप एक सुप्रतिष्ठित कालेज के प्रिंसीपल नियुक्त हुए तथा आप सन् 2001 ई. तक बतौर प्रिंसीपल ही रिटायर्ड हुए। आपकी सफल कुशल प्रबंधन क्षमता को देखते हुए सार्वदेशीय कालेज समिति Association में आप पंजाब के सभी कालेजों के प्रिंसीपलों के प्रैजिडैंट के रूप में सफलता से प्रतिनिधित्व करते रहे। सन् 2001 ई. में अवधि पूरी पर आप उच्च शिक्षा संस्थान से बतौर प्रिंसीपल ही रिटायर्ड हुए तथा सेवामुक्ति के पश्चात् वह एक लिमिटिड कम्पनी में जनरल मैनेजर के तौर पर पर सफलतापूर्वक कार्यशील हो रहे हैं। माता का देहांत उस समय हुआ, जबकि जातक मात्र लगभग अढ़ाई वर्ष का था तथा उस समय चन्द्र मध्ये केतु की अंतर्दशा चल रही थी। पिता जी का देहांत दीर्घायु में शनि मध्ये केतु के अंतर में 1994 ई. को लगभग 77 वर्ष की आयु में हुआ। जातक की दो बहिन, परंतु कोई भाई नहीं है। जातक की जन्म कुण्डली सम्बन्धी प्रमुख योग इस प्रकार से है:-

(1) जातक की जन्म कुण्डली तथा नवांश कुण्डली दोनों में सूर्य, बुध व गुरु, मीन राशि में तथा चंद्र, मंगल व शुक्र वृष राशि में होने से, ये सभी छः ग्रह वर्गोत्तम स्थिति एवं बलान्वित होने से जातक अपने कार्य क्षेत्र में उच्च एवं श्रेष्ठ स्थिति तक पहुंचा है।

(2) गुरु वर्गोत्तम होकर पंचम भाव को उच्च दृष्टि से तथा नवम भाव को मित्र दृष्टि से देखने से जातक भाग्यशाली, उच्च शिक्षित तथा अपने कार्य क्षेत्र में मुख्य उच्चपद पर कार्यरत रहा है।

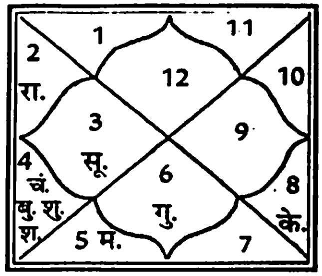
(3) पंचम एवं पंचमेश चन्द्र बलयुक्त होने से जातक उच्च विद्या प्राप्त, धन-सम्पदा एवं पुत्र, पुत्रियों के सुख से युक्त हैं।

(4) स्वराशिगत शुक्र का मंगल-चंद्र के योग होने से जातक को शिक्षा क्षेत्र में ही पढ़ाने वाली सुशिक्षित एवं कार्यशील पत्नी का सुख प्राप्त हुआ है।

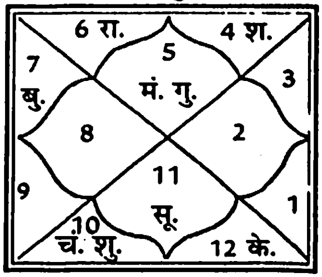
(5) धनेश मंगल की भाग्य स्थान एवं कर्म भाव पर शुभ दृष्टि होने से जातक भूमि, मकान, वाहन एवं व्यवसाय आदि सुख सुविधाओं के बारे भाग्यशाली हुआ है। अस्तु...

तकनीकि एवं कला क्षेत्र में सफल एक उच्च प्रतिष्ठित जातक

उदा. कुंडली नं. 113
1 जुलाई, 1946 ई.
आश्ले 2 चरण, लायलपुर



नवांश कुंडली



प्रस्तुत जन्म कुण्डली का जातक, 1 जुला. 1946 ई. मीन लग्न व सिंह के नवांश में उत्पन्न, आकर्षक एवं बुद्धिमान, परिश्रमी, हंसमुख, मिलनसार, व्यवहार कुशल, अभिनय, संगीत, कला, गायन एवं तकनीकी कार्यों में कुशल तथा धर्म, राजनीति, लेखन, ज्योतिष, तंत्र आदि विद्यायों एवं रुचि, धार्मिक एवं परोपकारी स्वभाव वाला है। इस जातक ने युवावस्था में अल्प संसाधनों से अपना कैरियर शुरू करके अपने परिश्रम वर्तमान काल में एक बृहद् लिमिटिड कम्पनी में जनरल मैनेजर के उच्च पद पर कार्यरत हैं। इनका विवाह सन् 1972 ई. में शुक्र की दशा में हुआ। विवाह के बाद इनके यहां दो बेटे और तीन बेटियां हुईं। 32 वर्ष की आयु तक जातक का जीवन व्यवसाय एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यंत संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों में से गुजारा तथा सर्विस के सम्बन्ध में बार-बार परिवर्तन एवं अस्थिरता के हालात का सामना रहा। परन्तु जातक अपनी मेहनत, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं ईश्वर कृपावश उन्नति करते-करते उच्च प्रतिष्ठित पद पर पहुंच चुका है। इनकी जन्म एवं नवांश कुंडली में ज्योतिष सम्बन्धी कुछ मुख्य ग्रह योग इस प्रकार से हैं :

(1) जन्म कुंडली में कर्क राशि एवं पंचम भाव पर चन्द्र, बुध, शुक्र व शनि चतुर्ग्रही योग होने से जातक उच्च कल्पना शक्ति, अभिनय, कला एवं प्रबन्धन क्षमता रखने वाला, निज परिश्रम द्वारा उन्नति करने वाला, बुद्धिमान, अपने कार्य क्षेत्र में श्रेष्ठ पद प्राप्त, सम्मानित व सम्पन्न तथा सुशील स्त्री व योग्य संतान सुखों से सुखी होता है।

(2) लग्नेश गुरु सप्तम भाव में पड़कर लग्न भाव को स्वगृही दृष्टि से लग्न भाव को देखने से जातक उच्च प्रतिष्ठित, धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव, गम्भीर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी हुआ है।

(3) जन्मकुंडली में धनेश व भाग्येश मंगल वर्गोत्तम स्थिति में होकर भाग्यस्थान को स्वगृही दृष्टि से देख रहा है जिससे जातक भूमि, मकान, परिवार, सम्मान एवं सवारी आदि सुविधाओं के सम्बन्ध में भाग्यशाली हुआ है। ऐसा जातक की वाक् शक्ति एवं भाषण शैली भी अच्छी होती है।

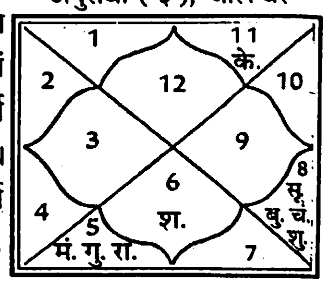
(4) शनि भी वर्गोत्तम स्थिति में होने से जातक को आध्यात्मिक क्षेत्र में भी विशेष रूचि है तथा शनि के कारण जातक मशीनरी व तकनीकी क्षेत्र में भी विशेष ज्ञान रखता है।

(5) जातक को सूर्य की दशा मार्च 1984 से मार्च 1990 तक रही तथा चन्द्र दशा मार्च 2000 ई. तक तदनन्तर वर्तमान में मंगल की दशा चल रही है। जातक को अधिकांश लाभ व उन्नति के अवसर सूर्य, चन्द्र व मंगल की अन्तर दशा में प्राप्त हुए।

✿जातक की जन्म कुंडली में कालसर्प योग होने से जातक को अत्याधिक संघर्षपूर्ण हालात का भी सामना रहा तथा शुभ ग्रहों के अनुरूप उत्कृष्ट लाभ नहीं मिल पाए।

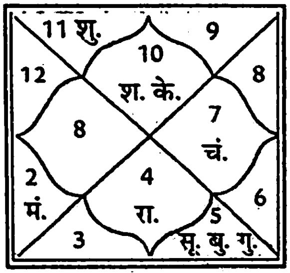
अल्पायु में ही उन्नत उद्योग को प्राप्त एक जातक

उदा. कुंडली नं. 114
20 नवंबर, 1979 ई.
अनुराधा (३), जालन्धर



प्रस्तुत जन्म कुंडली का जातक मध्यम कद एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी, अत्यन्त बुद्धिमान, परिश्रमी, हंसमुख, मिलनसार, मध्यम स्तरीय शिक्षित तथा अल्पायु में ही अपने पिता श्री के साथ हार्ड कोल (Hard Coal), कैमीकल्ज एवं फर्नेस आयल के उद्योग में संलग्न है। मीन लग्न एवं मकर के नवांश में उत्पन्न इस जातक की एक बड़ी बहन एवं एक छोटा भाई है। सन् 1997 ई. में 18 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ उपरोक्त कार्य व्यवसाय में प्रवेश किया। उन दिनों जातक को बुध मध्ये राहु की अन्तर्दशा चल रही थी। व्यवसाय की स्थिति भी कुछ अच्छी न थी। परन्तु 29 नवं. 1998 ई. में गुरु की अन्तदर्शा के प्रारम्भ में बेहतरी का दौर शुरू हुआ तथा जातक अपने पिता के साथ अथक परिश्रम,

नवांश कुंडली



कर्त्तव्य परायणता एवं सूझबूझ के द्वारा कोल ट्रेडिंग तथा कैमिकल्ज के उद्योग को निरंतर लाभ व उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहे। भूमि, वाहन एवं धन लाभ प्राप्त हुए। मार्च 2001 ई. से बुध मध्ये शनि की अन्तर्दशा शुरू हुई। इस उपदशा का प्रारम्भ शनि की लगभग दो वर्ष की ढैय्या व दृष्टि के कारण अत्यंत संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों में गुजरे। परन्तु फरवरी 2003 ई. के पश्चात् तैल आदि सम्बन्धी कार्य शामिल कर लिए जाने से व्यवसाय में अभूतपूर्व लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त हुए हैं। विवाह के उपरांत इस जातक के जीवन में और भी भाग्योन्नति एवं लाभ प्राप्ति के योग है। जातक की जन्म कुंडली में कुछ विशिष्ट ज्योतिष सम्बन्धी योग इस प्रकार से पाए जाते हैं :

(1) **गजकेसरी योग :** जातक की कुंडली में चन्द्रमा से गुरु दशम भावस्थ होने से गजकेसरी योग बनता है। इस योग के होने से जातक बुद्धिमान, सेवाभावी, लोकप्रिय, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, मधुरभाषी, धन-भूमि एवं वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न होता है परन्तु गुरु राहु युक्त होने से कार्य क्षेत्र में विघ्न/बाधाएं भी पड़ती हैं।

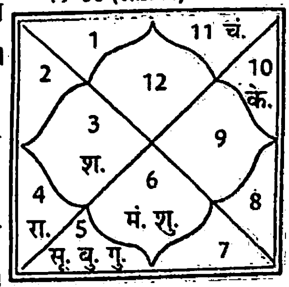
(2) **स्थान विपयर्य योग :** भाग्येश मंगल छटे मित्र सूर्य की राशि में तथा षष्ठेश सूर्य भाग्य स्थान (मंगल की राशि) बृश्चिक में होने से जातक पिता के सहयोग से भाग्यवश (विघ्नों के बावजूद) विशेष धनार्जन करने में सफल हुआ है।

(3) **चतुर्ग्रही योग :** भाग्य स्थान में सूर्य, चन्द्र, बुध व शुक्र-चार ग्रहों का योग होने से जातक छोटे एवं मध्यम कद वाला, आकर्षक व्यक्तित्व, प्रभावी वाकशक्ति तथा जातक धन सम्पदा आदि की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील है।

(4) जन्म एवं नवांश कुंडली दोनों में गुरु सिंह राशिगत होने से गुरु वर्गोत्तम स्थिति में है जिससे जातक धन-सम्पदा के सम्बन्ध में भाग्यशाली हुआ है।

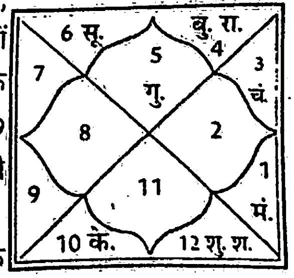
साधन सम्पन्न वकील होते हुए भी विवाह सुख से वंचित

उदा. कुंडली नं/ 115
3 सितं. 1944 ई. पू. भा. III चरण
19-36 (I.S.T.) श्रीनगर



ऊंचा कद, गौर वर्ण, प्रभावशाली, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी 3 सितम्बर 1944ई. को श्रीनगर में उत्पन्न हुए। यह एक प्रतिभाशाली एडवोकेट धन, भूमि, जायदाद, वाहन आदि साधनों से सम्पन्न है। वर्तमान में एक बहन तथा तीन भाइयों एवं माता के सुख से युक्त होने पर भी जुलाई 2003 ई. तक विवाह एवं स्त्री सुख से वंचित रहा है। वर्तमान काल में शुक्र मध्ये राहु की अन्तर्दशा चल रही है जोकि 26 सितम्बर 2003 ई. तक रहेगी। सताईस (27) वर्ष की आयु में जब इन्हें बुध की दशा एवं भुक्ति चल रही थी, उस समय प्रेम सम्बन्ध हुआ था, परन्तु किसी कारणवश वह सम्बन्ध परिपक्व (Mature) नहीं हो पाया। इसी भांति 30वें वर्ष भी प्रेमसम्बन्ध हुआ वह भी विवाह तक आते-आते बीच में ही टूट गया। तब बुध मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी। सामान्यत: जातक मिलनसार, हंसमुख, स्वस्थ, मधुरभाषी, कार्य कुशल, गुणी, सगे-सम्बन्धियों के व्यवहार से क्षुब्ध परन्तु माता के प्रति विशेष श्रद्धा, धर्मपरायण, बुद्धिमान, शालीन, सेहतमंद तथा परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने में सक्षम है। सरकारी क्षेत्रों के साथ जायदाद सम्बन्धी विवाद भी विचाराधीन है। माता जी का स्वास्थ्य प्राय: ठीक नहीं रहता है। पैतृक सम्पत्ति और व्यवसाय की दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी जातक की 59 वर्ष की आयु तक का जीवन अधिकांशत: संघर्षपूर्ण एवं कठिनाइयों में ही गुजरा है। इनकी कुंडली में कुछ उल्लेखनीय ग्रह योग इस प्रकार से पाए जाते हैं:

नवांश कुंडली



(1) **गजकेसरी योग :** चन्द्रमा से केन्द्रगत गुरु होने से यह योग बना है। इसके फलस्वरूप जातक उच्च-शिक्षित, भूमि, जायदाद, वाहन एवं परिवार आदि सुविधाओं से सम्पन्न होता है परन्तु प्रस्तुत

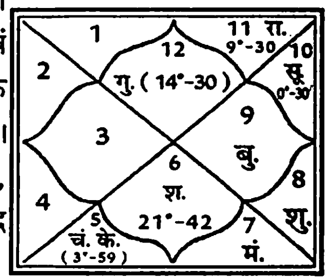
उदाहरण कुंडली में लग्नेश होकर छटे भाव में तथा अस्तगत होने से अत्यंत संघर्षपूर्ण तथा कठिनाइयों से भरा रहा है। व्यवसाय में भी अस्थिरता रही। केसरी योग का पूरा फल प्राप्त नहीं हुआ।

(2) सप्तम भाव में मारकेश मंगल का तथा नीच राशि शुक्र के साथ योग होने से विवाह सुख में कमी रही। इसके अतिरिक्त सप्तमेश बुध (निज स्त्री भाव से द्वादश होकर) छटे भाव में अस्त होकर दाम्पात्य सुख की हानि करता है।

(3) नवांश कुंडली में भी गुरु सिंह राशिस्थ होने से जातक परोपकारी, उदार हृदय, सुशिक्षित, धर्म परायण तथा आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान किया। अस्तु

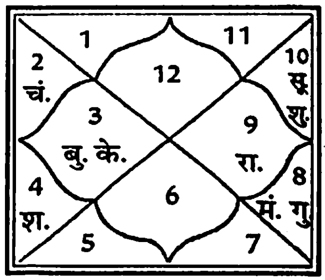
ज्योतिष व तंत्र के क्षेत्र में प्रसिद्ध ज्योतिषी

उदा. कुंडली नं. 116
15 जन., 1952 ई. मघा (2)
लग्न 11-27-37-56



15 जनवरी 1952 ई. में उत्पन्न एवं मीन लग्न तथा मीन नवांश व मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा होने वाले प्रस्तुत कुंडली के जातक एक प्रसिद्ध एवं विद्वान ज्योतिषी है। आप प्रभावशाली व्यक्तित्त्व, परिश्रमी, बुद्धिमान, मानवीय गुणों से युक्त, दूसरों के मनोभावों की पहचान करने में कुशल, दृढ़निश्चयी, स्वावलम्बी, अध्ययनशील प्रकृति, परोपकारी एवं दयालु स्वभाव के है। आपका व्यक्तित्व मीन लग्न का एक उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि जातक की नवांश कुंडली में भी मीन लग्न उदित होने से यह लग्न वर्गोत्तम स्थिति में है। जिससे साधारण स्तरीय शिक्षित होने पर भी जातक में सहृदयता, धार्मिकता, योग, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि गूढ़ विषयों के प्रति रूचि, परोपकारिता, सज्जनता और सेवाकारिता आदि गुणों का समावेश हो गया है।

नवांश कुंडली



जन्मकालीन गण्डमूल मघा नक्षत्र, केतु की दशा तदनन्तर अशुभ शुक्र की दशा होने से जातक के जीवन की प्रारम्भिक अवस्था अत्यंत संघर्षपूर्ण व कठिन परिस्थितियों में रही। भ्रातृ सुख में कमी, माता-पिता का अल्पायु में निधन, स्वास्थ्य की हानि तथा आर्थिक अभावों से जूझते हुए किसी कारखाने में तकनीकी हस्त शिल्प का कार्य करते रहे। 1976 ई. को 24 वर्ष की आयु में शुक्र दशा के अंत में विवाह हुआ जिसके फलस्वरूप दो लड़कों एवं एक कन्या का सुख प्राप्त हुआ। दिसं. 1982 से चन्द्र की दशा से जातक के मन में ज्योतिष ज्ञान/शास्त्र के प्रति विशेष प्रवृत्ति शुरू हो गई थी। अपनी लगन, मेहनत एवं सतत अभ्यास से इन्होंने ज्योतिष विद्या के क्षेत्र में विशेष कुशलता प्राप्त की तथा 1988 ई. से चन्द्र की ही दशा में इन्होंने सर्विस छोड़ कर निजी ज्योतिष कार्यालय प्रारम्भ किया जिसका संचालन वर्तमान काल में भी सफलतापूर्वक कर रहे हैं। आप ज्योतिष पत्रिकाओं में भी अनेक शोध पत्र लिखते रहते हैं तथा ज्योतिष सम्मेलनों में भी अनेक बार सम्मानित किए जा चुके है। इनकी जन्म कुंडली में ज्योतिष सम्बन्धी कुछ प्रमुख ग्रह योग इस प्रकार से पाए जाते हैं :

(1) जातक का जन्म एवं नवांश लग्न समान होने से मीन लग्न वर्गोत्तम स्थिति है जिससे मीन लग्न एवं लग्नेश गुरु सम्बन्धी शुभ गुणों का समावेश हुआ है।

(2) कुंडली में राशिस्वामी सूर्य भी वर्गोत्तम स्थिति में है। सूर्य व गुरु के शुभ प्रभाववश जातक ज्योतिष जैसी गूढ़, विद्या में पारंगत एवं प्रसिद्ध हो पाया है।

(3) कुंडली में पंचमेश चन्द्र, नवांश में उच्च राशिस्थ होने से जातक उच्च कल्पनाशक्ति, अध्ययनशील एवं मधुरभाषी तथा अच्छी संतान, भूमि, धन, वाहन आदि सुखों से समन्वित हुआ है।

(4) गंडमूल मघा नक्षत्र में उत्पन्न होने से माता-पिता के सुख में कमी हुई है।

(5) कुंडली में सुनफा योग।

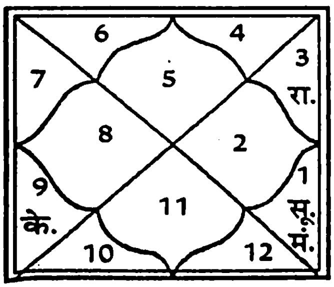
द्विग्रही योग/त्रिग्रही/चतुर्ग्रही/पंचग्रही आदि योगों का फल

किसी एक भाव/राशि में दो या दो से अधिक ग्रह हों, तो उस भाव सम्बन्धी शुभाशुभ फल में अन्तर आ जाता है, कई बार तो चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं। परन्तु द्विग्रही/त्रिग्रही आदि योग सभी लग्नों में एक समान फल प्रदान नहीं करते। प्रत्येक लग्न में भावस्थ एवं भावेश ग्रहों के कारकत्व सम्बन्धी फल में अन्तर पड़ सकता है। अतएव द्विग्रही/त्रिग्रही आदि योग सभी कुण्डलियों एवं भावों में एक जैसा प्रभाव नहीं करते। ज्योतिष तत्त्व फलित के प्रथम भाग में प्रत्येक लग्न फल से पूर्व दो या अधिक ग्रहों के विशेष योगायोग के फल का वर्णन किया गया है। यद्यपि सामान्य रूप से कुछ ग्रह योगों में कुछ समान फल भी मिलते हैं।

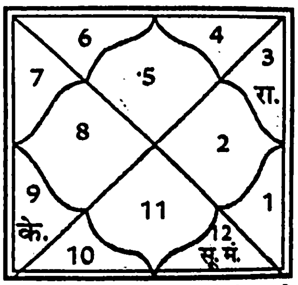
यह बात विशेष ध्यान रखने योग्य है कि शुभ ग्रहों का योग उत्तम फल देता है। शुभ एवं पाप ग्रहों के योग में जो उनमें से बलान्वित एवं योगकारक होगा, उसी की प्रकृति के अनुसार फल होगा। प्रायः बलवान ग्रह अन्य ग्रहों के प्रभाव को अपने में केन्द्रित कर लेता है। इसी भान्ति अस्तंगत, नीच अथवा वक्री ग्रहों के योगों के सम्बन्ध में भी फलादेश में अन्तर पड़ जाने की सम्भावना हो जाती है। वक्री, नीच एवं अस्त ग्रहों के योग जातक को मानसिक एवं शारीरिक कष्ट, धन हानि, गुप्त चिन्ता, शत्रु-भय एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा करते हैं। जबकि योगकारक एवं उदित ग्रहों के योग जातक को धन-लाभ, पदोन्नति, सुख-साधनों की प्राप्ति एवं सौभाग्य में वृद्धि करवाते हैं। शुभ ग्रहों का योग यदि शुभ भाव में होगा तो शुभ फल में वृद्धि करेगा।

अतएव यह बात विचारणीय है कि योगकारक ग्रह किस भाव में है, किन भावों के स्वामी हैं, किस भावेश (शुभ या अशुभ) ग्रह के दृष्ट हैं, एवं च योगकारी ग्रह किस नक्षत्र में हैं। उदाहरणार्थ निम्नलिखित कुण्डलियां स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत हैं-

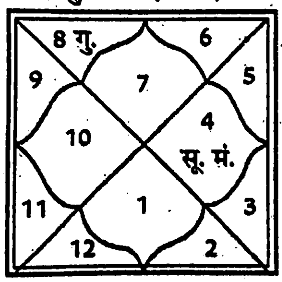
कुण्डली (201)



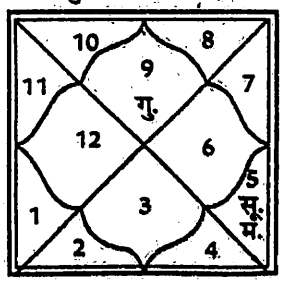
कुण्डली (202)



कुण्डली (203)



कुण्डली (204)



कुण्डली संख्या नं. 201 तथा कुं. नं. 202 में सूर्य लग्नेश एवं मंगल भाग्येश व चतुर्थेश इकट्ठे बैठे हैं। परन्तु कुं. नं. 201 में सूर्य-मंगल का योग नवम स्थान (त्रिकोण) में होने से अत्यन्त शुभ एवं भाग्यकारी होगा। जबकि कुं. नं. 202 में वही योग दु:स्थान (अष्टम) में होने से शुभफल में कमी हो जाएगी।

इसी भान्ति कुण्डली नं. 203 में सू.-मं. के योग पर गुरु की नवम दृष्टि पड़ने पर भी उतना शुभ फल नहीं करेगी जितना कि कुण्डली नं. 204 में, क्योंकि कुं. 204 में गुरु लग्नेश होकर ग्रह योग (सू.-मं.) को पुष्टि प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त यदि किसी कुण्डली में सूर्य, मंगल आदि योगकारक ग्रह स्वोच्च या स्वगृही स्थिति में हों, परन्तु नवांश आदि कुण्डली में भी उन्हीं ग्रहों की स्थिति स्वोच्च या स्वगृही हो, तो जातक को सम्बद्ध भाव सम्बन्धी अत्यन्त शुभ फल होंगे। यदि नवांश कुण्डली में नीच या शत्रु नवांश का है, तो जातक को वांछित शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।

इसके अतिरिक्त योगकारक ग्रह किस नक्षत्र में संचार कर रहे हैं, इसके बारे में भी विचार कर लिया जाए, तो फलादेश में और भी सूक्ष्मता आ जाएगी। जैसे, मान लो कुण्डली नं. 201 में मंगल भरणी नक्षत्र में तथा सूर्य अश्विनी नक्षत्र

में है, तो मंगल भाग्य एवं चतुर्थ भाव सम्बन्धी सुखों (भूमि, वाहनादि) के अतिरिक्त भरणी नक्षत्र के स्वामी, शुक्र (जो कुण्डली में छोटे भाई/बहिन एवं व्यवसाय का भी द्योतक है) ग्रह सम्बन्धी लाभ प्रदान करेगा। तथा सूर्य अश्विनी के स्वामी ग्रह (केतु) स्थित राशि स्वामी के कारकत्वादि का प्रभाव भी जातक को देगा।

इस भान्ति किसी कुण्डली में दो, तीन या अधिक ग्रहों के फल का विवेचन करने से जातक सम्बन्धी फलादेश अधिक सूक्ष्म एवं सटीक होगा।

उपरोक्त विभिन्न कारणों से अलग-अलग लग्न कुण्डलियों में प्रत्येक ग्रह योग भिन्न-भिन्न फल प्रकट करता है, इस कारण दो ग्रहों के योग या तीन ग्रहों या अधिक ग्रहों के योग सभी कुण्डलियों में एक जैसा फल करें, यह आवश्यक नहीं। आगे द्विग्रही योगों का फल वर्णन ग्रह सम्बन्धी सामान्य नियमों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। किसी कुण्डली में लग्नेश होकर सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह शुभ भावों में योगकारक हों, तो विशेष प्रभावी होते हैं।

द्वि-ग्रही (दो ग्रह) योगों का फल

विशेष-सूर्य अत्यन्त तेजस्वी ग्रह होने से सूर्य अपने सहयोगी ग्रहों के प्रभाव को प्रायः क्षीण कर देता है। सूर्य के योग में अन्य सभी ग्रह अपेक्षित फल प्रकट नहीं कर पाते। फल कथन से पूर्व इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य यदि पाप ग्रहों से युक्त हो, तो पिता को कष्टकारी होता है, तथा चन्द्रमा यदि पाप ग्रहों के साथ हो, तो माता के लिए कष्टकारी होता है। यदि सूर्य व चन्द्र शुभ ग्रहों के योग में हों, तो क्रमशः पिता और माता के लिए सुखदायक होते हैं।

सूर्य-चन्द्र-जन्म कुण्डली में सूर्य-चन्द्र का योग एक ही राशि में होने से जातक स्त्रियों के वशीभूत होने वाला, कामुक, क्रय-विक्रय आदि, कार्य व्यवसाय में कुशल, धनवान होता है। जातक लौह, ताम्रादि धातुओं, यन्त्र एवं रबड़, चमड़ा, कैमीकलज़, पत्थर, औषधि, अल्कोहल, कोयला, तैल आदि के क्रय-विक्रय से विशेष लाभान्वित हो सकता है। ऐसा जातक अपने कार्य (स्वार्थ) पूरा करने में कुशल, स्वाभिमानी, कामुक, नकली वस्तु बनाने में कुशल, विषयासक्त, गुप्त युक्तियों से धनोपार्जन करने वाला, कुछ लालची, आकर्षक व्यक्तित्व, कार्य कुशल, स्वाभिमानी और अपने गौरव को प्रदर्शित करने वाला होता है। उदाहरणार्थ देखें कुण्डली नं. 9 तथा 10 ज्योतिष तत्त्व (फलित) तथा कुं. नं. 114

पाषाण यन्त्र क्रय विक्रयेषु कूट क्रियायां हि विचक्षणः स्यात्।
कामी प्रकामी पुरुष सगर्वः सर्वौषिधीशेन रवौ समेते॥

यह योग ३, ५, ९ एवं १०वें भावों में अधिक प्रशस्त माना जाता है। २, ६, ८ या १२वें भाव में वांछित फल में कमी करके अशुभ फल भी प्रदान करता है। द्वादश भाव में यह योग होने से जातक क्रूर कर्म करने में पटु, अशिष्ट एवं कठोर प्रकृति, क्रोधी, आंखों में कष्ट एवं आर्थिक परेशानियां होती हैं। मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक व मीन लग्न में यह योग प्रशस्त होते हैं।

सूर्य-मंगल-सूर्य-मंगल एक ही राशि में हो, तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, अत्याधिक परिश्रमी, बौद्धिक किन्तु राजसिक प्रवृत्ति, साहसी, पराक्रमी, दूसरों पर अधिकार (दबाव) डालने वाला, कुछ स्वार्थी, स्वाभिमानी, झगड़ा करने में जल्दी तथा अपने बन्धुओं से प्रेम करने वाला होता है। ऐसा जातक विदेश में अधिक सफल होता है। सिंह लग्न में यह योग विशेष फलप्रद होता है। देखें कुं. संख्या नं. 47 (पृष्ठ 175) ज्यो. तत्त्व फलित भाग (1)

ऐसा जातक क्रोधी एवं हिंसक कार्यों में जल्दी प्रवृत्त होता है। यह योग १, ३,५, ९, १० एवं ११वें भावों में प्रशस्त तथा जातक को उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त भूमि, जायदाद, मकान, वाहनादि सुखों से युक्त एवं भाग्यशाली करता है। जबकि अन्य भावों में मिश्रित फल होते हैं। उदा. कुं. देखें नं. 48 (पृष्ठ 176) फलित ज्यो. तत्त्व भाग (1)

१, ४, ५, ७, ८, ९, १०, ११ मीन लग्नों में यह लग्न प्रशस्त तथा अन्यों में सामान्य फल होता है। देखें उदा.

कुं. नं. 109

सूर्य-बुध-सूर्य-बुध का योग बुधादित्य योग भी कहलाता है। इस योग में जातक प्रियभाषी, विद्वान, बुद्धिमान, अच्छा व्यक्तित्व, अच्छा वक्ता, राजा अर्थात् उच्च प्रतिष्ठित लोगों द्वारा आदर प्राप्त (राज मान्य), सेवा आदि कार्य (नौकरी आदि) से धनार्जन करने वाला, शिल्प, तकनीकि, गायन आदि कलाओं में कुशल तथा धर्म, ज्योतिष, योग आदि विभिन्न प्रकार की विद्याओं का जानकार हो, धार्मिक विचार युक्त तथा धन एवं सुख साधनों से युक्त होता है। परन्तु जातक पा० अनुसार ऐसे व्यक्ति की बुद्धि अस्थिर रहती है। यदि सूर्य-बुध नीच राशिस्थ हों, तो शुभ फलों में कमी होती है।

विद्या रूप बलन्विता ऽस्थिरमीतः सान्यान्विते पूषणिं॥

मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला व धनु लग्नों में यह योग प्रशस्त माना जाता है। देखें उदा. कुं. 2 पृष्ठ (70) ज्यो. तत्त्व फलित (1) तथा कुं. नं. 5, 11, 13 एवं नं. 41 (पृष्ठ 172) नं. 45 (पृ. 174) तथा कुं. नं. 59, 66, 72, 84, 86, 104, 108, 110, 96

सूर्य-गुरु-सूर्य-गुरु का योग हो, तो जातक धार्मिक कार्यों में श्रद्धावान्, दूसरों के कार्यों (सेवा आदि) में लगने वाला, मित्रों की सहायता से धन लाभ प्राप्त करने वाला, राज मन्त्री अर्थात् उच्च प्रतिष्ठित अधिकारी वर्ग से सम्पर्क रखने वाला, भूमि, जायदाद, धन, संतान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न, परोपकारी एवं चतुर बुद्धि वाला एवं विख्यात होता है।

पुरोहि तत्त्वे निपुणो नृपाणां मन्त्री च मित्राप्तधनः समृद्धः।
परोपकारी चतुरो दिनेशे वाचामधीशेन युते नरः स्यात्॥

ऐसे जातक को धर्म, योग, चिकित्सा, ज्योतिष आदि में भी रुचि होती है। मेष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धन, कुम्भ व मीन लग्न में यह ग्रह योग अच्छा फल (प्रशस्त) प्रकट करता है, जबकि अन्य लग्नों में यह ग्रह योग अच्छा फल (प्रशस्त) प्रकट करता है। जबकि अन्य लग्नों में सामान्य फल प्रदान करता है। यह योग लग्न या चतुर्थ में हो, तो जातक विद्वान, धनवान्, नीतिज्ञ, भृत्यादि सुखों से युक्त, प्रियभाषी एवं सदाचारी होता है। सप्तम में हो तो स्त्रियों के वशीभूत, धन/धान्य से सम्पन्न एवं पिता से वैमनस्य हो। दशम में यह योग हो, तो जातक कीर्तिमान एवं सुख साधनों से युक्त हो। अशुभ ग्रह दृष्टि हो, तो कर्ण योग होता है। सूर्य-गुरु का योग, यदि शनि से दृष्ट हो, तो जातक को मैडीकल क्षेत्र (डाक्टरी आदि) में अच्छी सफलता प्रदान करता है। देखें उदा. कुं. लग्ने।

सूर्य-शुक्र- का योग हो, तो जातक नाच, गायन, संगीत, सिनेमा, टैलीविजन आदि के शौक हों तथा इन्हीं के माध्यम से धनोपार्जन होने की संभावना हो, मित्रों एवं बन्धुओं के सुख से युक्त, अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण, स्त्री के सहयोग से धनादि का लाभ प्राप्त करने वाला, आंखों में कष्ट की सम्भावना, स्त्रियों के संग में खुश रहे, हुनर और दस्तकारी के कामों में कुशल हो। यह योग तृतीय, पंचम, नवम् या दशम् भावों में हो, तो जातक व्यवहार कुशल, उच्च प्रतिष्ठित, धन, सवारी आदि सुखों से युक्त, चतुर बुद्धि एवं विख्यात होता है। अन्य ग्रहों में यह योग इतना सफल नहीं रहता है। देखें कुं. नं. 75

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धन, मकर एवं कुम्भ लग्नों में सूर्य-शुक्र का योग विशेष प्रशस्त माना जाता है, जबकि अन्य लग्नों में साधारण फल रहता है। उदा. कुं. नं. 10 (पृष्ठ 74 फलित भाग 1), 102

सूर्य-शनि-कुण्डली में सूर्य-शनि का योग होने से जातक धातुओं (लोहा, ताम्बा, पीतल, सोना, चांदी) आदि के व्यापार में निपुण, स्वास्थ्य में कमी, अपने धर्म-कर्म में निपुण, अपने वंश के गुणों से युक्त, क्रय-विक्रय एवं व्यापारिक क्षेत्र में कुशल हो। जड़ी-बूटियों की पहचान करने में रुचि, स्त्री, पुत्र आदि सन्तान से चिन्तित परन्तु भूमि, वाहन आदि सुख साधनों एवं सम्पत्ति से युक्त हो। मतान्तर में ऐसे योग में उत्पन्न जातक को पिता, भाईयों एवं सन्तान पक्ष से चिन्ताएं बनी रहती हैं। सूर्य एवं शनि यदि नीच राशिस्थ होंगे, तो विशेष अशुभ फल प्रकट होंगे।

यह योग मेष, वृष, मिथुन, तुला, बृश्चिक, धनु व कुम्भ लग्नों में विशेष प्रशस्त माना जाता है। जबकि अन्य लग्नों में

सामान्य फल होता है। सिंह लग्न में यह योग संघर्षपूर्ण पारिवारिक परिस्थितियों का परिचायक है। उदाहरण स्वरूप देखें ज्यो. तत्त्व फलित भाग (1) उदा. कुं. नं. 39 (पृष्ठ 172) प्रस्तुत बालक 7 मास का था, जब इसके पिता की आकस्मिक मृत्यु हुई।

सूर्य-राहु-इस योग के प्रभाव से किसी का भला करने पर भी जातक को बुराई मिले, पिता को कष्ट या पितृ सुख में कमी हो, कार्य व्यवसाय में आय कम व उलझनें अधिक रहें। सरकारी क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना हो। 42वें वर्ष सन्तान को कष्ट का भय, भाग्योन्नति में विघ्न बाधाएं हों। सिरपीड़ा, आंखों को कष्ट या रोग भय हो। जातक का मन सांसारिक विषयों की ओर अधिक आकृष्ट होता है। निकट बन्धुओं के साथ मन-मुटाव एवं कलह रहे।

सूर्य-केतु-का योग हो तो जातक का पारिवारिक लोगों से विग्रह या कलह रहे अथवा किसी निकटस्थ के कलह कारण मन विक्षुब्ध रहे। धन हानि एवं आर्थिक उलझनें अधिक हों, सिर एवं चक्षुओं में पीड़ा हो, घरेलू एवं व्यवसायिक परेशानियों के कारण तनाव रहे। शत्रु एवं रोग भय हो। परन्तु तृतीय , पंचम, नवम एवं दशम भाव में यह योग शुभ होगा। चिकित्सा, धर्म, योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रुचि, सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित हों। देखें उदा. कुं. 87 (धनु जातक)

चंद्र-मंगल-का योग हो तो जातक बुद्धिमान, परिश्रमी, कुछ तीक्ष्ण स्वभाव अपने धर्म एवं नियमों का पालन करने वाला, साहसी एवं कुशल वक्ता, कैमीकल, चर्म, धातु, शिल्प आदि एवं तकनीकि कार्यों में कुशल, क्रय-विक्रय एवं व्यापार द्वारा अच्छा धनार्जन करने में सफल होता है। सर्विस में भी हो, तो एक से अधिक साधनों द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में कुशल होता है। यह योग तृतीय, पंचम, नवम, दशम एवं ग्यारहवें भावों में हो, तो अच्छा फलप्रद कहा गया है। दशम में चंद्र मंगल का योग होने से उच्चाधिकारी या सेनाध्यक्षकर्त्ता होता है। सारावली में प्रथम, चतुर्थ एवं सप्तम भावों में इसका फल अच्छा नहीं कहा। इसके अतिरिक्त यह योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में विशेष प्रशस्त माना जाता है। शेष अन्य लग्नों में साधारण फल। देखें कुं. नं. 71, 89.

चन्द्र-बुध-का योग हो, तो जातक मधुरभाषी, सुन्दर व्यक्तित्व, व्यवहार, कुशल बुद्धि, हंसमुख, स्त्रियों के प्रति विशेषत: आसक्त, संगीत साहित्य एवं काव्यादि रचनाओं में रुचि, धार्मिक प्रवृत्ति, लग्न भाव, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम भावों में यह योग हो तो जातक पराक्रमी, बुद्धिमान, भूमि, वाहन, स्त्री आदि सुखों से युक्त होगा। यदि दशम में यह योग हो तो जातक धनवान और विख्यात होता है। द्वादश में हो, तो संगीत, काव्य आदि कलाओं में कुशल होता है। अष्टम भाव में हो, तो माता-पिता के लिए अरिष्टकर होता है। वृष, मिथुन, कर्क कन्या, तुला, बृश्चिक, धन, मकर व मीन लग्न वालों के लिए इस योग का फल विशेष लाभप्रद रहता है, जबकि अन्य लग्न वालों को साधारण फल होता है। देखें कुं. नं. 62

चन्द्र-गुरु-का योग हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, अच्छे लोगों की संगति करने वाला, परोपकारी स्वभाव एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। अपने भाई-बन्धुओं का सम्मान करने वाला, भाई-बन्धुओं, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त, यदि शुभ एवं योगकारक ग्रह से दृष्ट हो तो जातक सुख-सांधनों से सम्पन्न हो। केन्द्र-त्रिकोण में यह योग जातक को सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला एवं स्त्री, पुत्र आदि सुखों से युक्त। चतुर्थ भाव में ऐश्वर्य एवं वैभव आदि सुखों से युक्त, सप्तम में विविध कलाओं में कुशल, पंचम में विनयशील, बुद्धिमान व विचारों को गुप्त रखने वाला एवं पारिवारिक सुखों से युक्त, नवम में भाग्यशाली, धार्मिक आस्था युक्त तथा दशम में व्यापारिक क्षेत्र में सफल होता है।

यह योग मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु एवं मीन लग्नों के शुभ भावों को विशेष प्रशस्त माना जाता है। चन्द्र-गुरु के सम्बन्ध से गज-केसरी नामक शुभ योग भी बनता है। देखें कुं. नं. 65, 79, 108.

चन्द्र-शुक्र-कुण्डली में चन्द्र-शुक्र का योग हो, तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उत्साहशील, सुन्दर वस्त्रों, पुष्पों, सुगन्धित (पर्फयूम आदि) वस्तुओं या दवाईयों आदि के कार्य से सम्बन्धित रहे, जातक क्रय-विक्रय (व्यापार) करने में समझदार, व्यवहार कुशल, ऐश्वर्य पसन्द-स्त्रियों में प्रीति एवं मनोरंजन आदि कार्यों में अधिक रूचि,

आवास, वाहन एवं स्त्री आदि तथा अभिनय, नृत्य आदि के क्षेत्र में सफलता दिलाता है। देखें कुं. नं. (67) ऐश्वर्य राय। यदि यह योग दशम भाव में हो, तो जातक विस्तृत/वैभवयुक्त एवं विख्यात होता है, उसके अधीन बहुत से कर्मचारी होते हैं। एकादश भाव में अल्प पुत्र एवं कन्या सन्तति अधिक देता है। छटे, आठवें एवं बाहरवें भाव में यह योग शुभ नहीं माना जाता है तथा मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर व मीन लग्नों में यह योग प्रशस्त होता है। अन्य लग्नों में साधारण फल होता है। यदि चन्द्र व शुक्र नीच राशिस्थ हों, तो जातक शराबादि नशों में भी रुचि रखे। देखें कुं. नं. 63.

चन्द्र-शनि-का योग हो, तो अत्यन्त मेहनती, गहन चिन्तनशील, दूरदर्शी, विभिन्न प्रकार के फुटकर कार्यों द्वारा धनोर्पजन करने वाला, शिल्पज्ञ (हुनरमन्द), अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, चतुर्थ भाव में योग हो, तो चौपाय, सवारी आदि का शौक हो। जातक जल, मोती, मणि, जवाहरात, चान्दी, सुवर्ण एवं जहाज आदि की अजीविका अथवा भूमि की खुदाई या उससे निकलने वाली या गूढ़ वस्तुओं से सम्बन्धित वृत्ति वाला होगा। देखें कुं. नं.106.

दशम भाव में शुभ योग हो, तो जातक विशिष्ट समुदाय का नेता (स्वामी) एवं विख्यात होता है। चन्द्र-शनि नीच राशिगत हो तो जातक स्वभाव का, स्वार्थी, शराब, स्त्री आदि ऐश परस्ती पर धन का अपव्यय करने वाला अथवा ज़मीन-जायदाद सम्बन्धी झगड़े या मुकद्दमों में धन की क्षति होती है। उदाहरणार्थ देखें कुं. नं. 27 पृष्ठ 124, फलित खण्ड भाग (1)। मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु व मीन लग्न में चन्द्र का योग प्राय: प्रशस्त होता है। देखें उदाहरण कुण्डली नं. 75, 81

चन्द्र-राहु-का योग होने से निकटस्थ बन्धुओं के व्यवहार के कारण मन अशान्त रहे, माता एवं स्त्री को कष्ट, भोजन विकार (खाने-पीने की गड़बड़ी) के कारण शरीर अस्वस्थ, धन की फिजूलखर्ची अधिक रहे। गुप्त चिन्ताएं एवं मानसिक तनाव के कारण शरीर कष्ट की सम्भावना। यदि इस योग पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो अशुभ फल कम होंगे।

चन्द्र-केतु-किसी बन्धु को कष्ट हो अथवा वैमनस्य पैदा हो, धन हानि, सहयोगियों के साथ गलतफहमी रहे, धन हानि, मन को परेशान करने वाली घटनाएं हों, तन्त्र, मन्त्र, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में विशेष रुचि हो। गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने वाला तथा अशान्त चित्त वाला होता है।

मंगल-बुध-का योग हो, तो जातक कुशलवक्ता, भूमि अथवा मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त, औषधि अथवा शिल्प एवं विविध धातुओं से मिश्रित वस्तुओं के व्यापार से धनी एवं लाभान्वित होने वाला ज्योतिष गणितादि में रुचि, सुन्दर शरीर सौष्ठव एवं स्त्रियों में विशेषत: आसक्त होने वाला होता है। ऐसा जातक कार्य/व्यवसाय में कूटनीति एवं युक्तियों का प्रयोग करने वाला अर्थात् सत्यासत्य वचनों द्वारा अपना काम निकलवाने वाला होता है। तैल, पैट्रोलियम पदार्थ, मोबिल आयल, घृतादि चिकनाईयुक्त पदार्थ, जड़ी-बूटियों आदि से औषधि निर्माण, वैद्य, हकीम, डाक्टर, कैमिस्ट, कैमीकल्स आदि के कार्यों से विशेष लाभान्वित होने के योग होंगे। केन्द्र-त्रिकोण में यह योग हो तो जातक अनेक मित्र-बन्धुओं आदि धन एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होता है परन्तु दोनों शत्रु ग्रह होने से जातक के जीवन में संघर्ष,तनाव एवं अशान्ति रहती है। देखें कुं. नं. 93

मंगल-गुरु-का योग हो, तो जातक मेधावी, बुद्धिमान, विद्वान, उत्साहशील, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, शिल्प और गणित, ज्योतिष, मंत्र एवं धर्मादि शास्त्रों में रुचि रखने वाला, शिल्पादि कामों में गुणी, परोपकारी, बोलने में चतुर, अग्रणी, भूमि, जायदाद, भाई-बन्धु, धन-सन्तान एवं सवारी आदि सुख-साधनों से सम्पन्न और प्रमुख व्यक्तित्व होता है। परन्तु अत्यन्त संघर्ष के बाद अपने कार्य क्षेत्र में सफल होता है। देखें कुं. नं. 70, 102, 76.

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञः श्रुतिज्ञो वाक्विशारदः॥
अश्वप्रियः प्रधानश्य जीव मंगल संगमे॥ **(मानसागरी)**

यह योग केन्द्र भावों में विशेष शुभफलप्रद होता है। जबकि षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में जातक अल्पधनी, रोगी एवं अल्पसुखी होता है। मं.-गु. का योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर एवं मीन लग्न में विशेष प्रशस्त माना जाता है। देखें उदा. कुं. नं. (76)।

मंगल-शुक्र-का योग हो, तो जातक ज्योतिष, गणित, तन्त्र आदि गूढ़ विषयों में रुचि रखने वाला, अपने कार्य की सिद्धि के लिए सत्यासत्य आदि युक्तियों का आश्रय लेने वाला, लोक व्यवहार में कुशल, मिलनसार, हंसमुख, विविध साधनों से धनार्जन करने वाला, क्रय-विक्रय एवं व्यापार आदि में कार्य कुशल, स्त्रियों से मित्रता करने में कुशल अथवा स्त्री के वशीभूत होकर अनैतिक कार्य भी कर सकता है। ऐश परस्त एवं मनोरंजन आदि कार्यों पर अपव्यय (वृथा खर्च) करने वाला, संगीत, कला, अभिनय आदि में कुशल होगा। यह योग लग्न, चतुर्थ एवं दशम भावों में विशेष फलप्रद होता है। इसके अतिरिक्त मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, बृश्चिक, मकर व कुम्भ लग्नों में यह योग प्रशस्त माना जाता है। भौमादि ग्रह लग्नेश होकर शुभ भावों में हो तो विशेष प्रभावी होते हैं। देखें कुं. नं. 59

मंगल-शनि- का योग हो, तो जातक मिथ्याचरण करने वाला, वाद-विवाद (बहस), झगड़े, मुकद्मे आदि के कार्यों में होशियार हो तथा कलह-क्लेश के कारण परेशान रहे, ज्योतिष तन्त्र, मन्त्र, जादू आदि के कार्यों में रुचि, क्लिष्ट, चौर प्रवृत्ति, प्रपंच आदि मिथ्या व्यवहार करने में कुशल, रहस्यमय स्वभाव, भाईयों से हानि परन्तु शत्रुओं पर प्रभावी हो, अपने स्वार्थ (फायदे) का विशेष ध्यान रखे, लौह, पत्थर, रबड़, कैमीकल, सोना, चांदी, रत्नों आदि के कामों से विशेष लाभ की सम्भावना हो, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, तुला, धन, मकर व कुम्भ लग्न में यह योग विशेष प्रशस्त होता है। प्रथम, चतुर्थ, सप्तम भावों में तो अशुभ होता है, परन्तु दशम भाव में जातक का उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क एवं उनसे लाभान्वित होने वाला तथा वाहन आदि सुख साधनों से संयुक्त होता है। कई बार किसी षड्यंत्र का भी शिकार हो जाता है। देखें कुं. नं. 68, 78.

मंगल-राहु-के योग के कारण जातक के अग्रज या आत्मीय जन के शरीर कष्ट के कारण मन परेशान रहे। जातक स्वयं आंखों, शिर एवं पित्त जनित रोगों के कारण रूग्ण रहे। बनते कार्यों में बार-बार विघ्न बाधाएं हों। आय सीमित तथा वृथा खर्च बहुत अधिक रहे। मंगल-राहु का योग प्रायः तृतीय, छठे, नवें, दशम एवं एकादश भावों में अपेक्षाकृत शुभ माना जाता है।

मंगल-केतु-के योग के कारण जातक को दुर्घटना आदि से चोट का भय, पत्थर, लोहा अथवा शस्त्र आदि से चोट/घाव आदि का भय हो, निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हों परन्तु आकस्मिक धन हानि की भी सम्भावना हो। स्त्री कष्ट, मानसिक तनाव एवं अपव्यय अधिक रहें। तन्त्र, मन्त्र/ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि रहे।

बुध-गुरू-के योग से जातक बुद्धिमान, विद्वान, अच्छा वक्ता, संगीत, नृत्य, शिल्प, कला, अभिनय आदि कलाओं का जानकार अथवा सिनेमा, टैलीविजन आदि कलाओं के द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है। यदि यह युति केन्द्र भावों (१, ४, ७ या दशम) में हो, तो जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, उच्चप्रतिष्ठित, भूमि, अच्छी पत्नी, वाहन एवं धन धान्य, प्रतिष्ठा आदि सुखों से सम्पन्न होता है। यह योग छठे, आठवें, दसवें एवं बाहरवें भावों में भी प्रशस्त माना जाता है। यह योग मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धन, कुम्भ व मीन लग्नों में विशेष शुभ माना जाता है।

बुध-शुक्र-का योग लग्न में हो, तो जातक सुन्दराकृति, बुद्धिमान, विवेकशील, शालीन एवं प्रियभाषी, कामुक, व्यवहार कुशल, उच्च प्रतिष्ठित, हुनरमन्द सम्मानित, प्रसिद्ध, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, गुणवान, अनेक लोगों (बहुतों) की सहायता करने वाला और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। प्रसन्नचित्त, हंसमुख, गायन, संगीत आदि का शौकीन, चतुर्थ भाव में यह योग होने से जातक मित्र-बन्धुओं तथा सवारी आदि सुखों से युक्त होता है। सप्तम भाव में होने से धन-धान्य, स्त्री सुख आदि ऐश्वर्यों से युक्त तथा दशम में होने से जातक नीतिवान, तीव्र बुद्धि, सामर्थ्यवान तथा सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। केंद्र-त्रिकोण में यह योग विशेष शुभ होता है। ऐसा जातक विलासप्रिय, नीतिवान, कला, अभिनय, एकाऊंट्स,

कानून, ज्योतिष आदि विषयों का भी जानकार होता है। यह योग वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर व कुम्भ लग्न वालों को शुभ फल देता है। देखें उदा कुं. नं. 71, 82, 94.

बुध-शनि-का योग हो, तो जातक शिल्प, कलाओं में कुशल परन्तु चंचल बुद्धि, बोलने में चतुर, चिन्तनशील, भ्रमणशील, दुर्वल शरीर, विभिन्न स्रोतों द्वारा आय के साधन प्राप्त करने वाला, वाद-विवाद करने वाला, मायो पर (चालाक) एवं व्यवसाय में धीरे-धीरे लाभ व उन्नति करने वाला होता है। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धन, मकर व कुम्भ लग्न में शुभ भावों में पड़ा हो, तो शुभ फल प्रदान करता है, जबकि अन्य लग्नों में इस योग का फल शुभाशुभ (मिश्रित) होता है। देखें उदा कुं. नं. 70.

बुध-राहु-यह योग कुण्डली में ३, ६, १० एवं ११वें भावों में घटित हो, तो जातक तीव्र बुद्धि, अकस्मात्-धन लाभ, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध, व्यापार या सर्विस में लाभ व उन्नति के योग बनते हैं। बुध-राहु का योग जातक को कार्य कुशल, व्यवहारशील, गणित, एकाऊंटस, वकालत, मैडीकल आदि क्षेत्रों में सफलता करवाता है। यह योग वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ व मीन लग्न में अच्छा फल प्रकट करता है। जबकि अन्य लग्नों में शरीर कष्ट, तनाव, गुप्त रोग आदि अशुभ फल है।

बुध-केतु-बुध-केतु यादि शुभ भावों में पड़ा हो तो यह योग जातक को अत्यन्त बुद्धिमान, उच्च विद्या, सम्मान व उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से सम्बन्ध व सम्पर्क करवाता है। यदि कुण्डली में ४, ५, ९ या १२वें भावों में यह योग बना हो तो प्रायः शुभ फल देता है। अन्य भावों में ये योग शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में अड़चनें आदि अशुभ फल प्रदान करता है। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में प्रायः शुभ फल प्रदान करता है।

गुरु-शुक्र-दोनों ग्रह एक साथ पड़े हों, तो जातक उच्च विद्या प्राप्त, बुद्धिमान, भूमि, आवास, वाहन आदि साधनों से युक्त, धर्म में आस्था रखने वाला परन्तु नीतिवान, सुन्दर स्त्री का पति, विवाह के पश्चात्, विशेष लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, विद्या से जीविका कमाने वाला, ज्योतिष, धर्म, नीति आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला एवं अनेक गुणों से सम्पन्न होता है। श्रेष्ठ एवं उच्च प्रतिष्ठित आत्मीयजनों एवं मित्रों से युक्त एवं साधन सम्पन्न होता है। यह योग केंद्रों एवं त्रिकोण (१, ५, ९) भावों में विशेष प्रशस्त मान जाता है। तथा यह ग्रह योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर व कुम्भ लग्न में विशेष प्रशस्त माना जाता है। देखें कुं. नं. 92, 106, 110

गुरु-शनि-किसी कुण्डली में गुरु-शनि का योग हो, तो जातक परिश्रमी, कीर्तिमान, यशस्वी, उच्च शिक्षित, चिन्तनशील, अध्यात्म, ज्योतिष, मन्त्र आदि गूढ़ शास्त्रों में रुचि रखने वाला, लोकप्रिय, भूमि, मकान एवं सवारी आदि सुख साधनों से युक्त, अनेक विद्याओं एवं कलाओं को मानने वाला गुणी व्यक्तित्व होता है। जातक में लेखन, ऐतिहासिक एवं गूढ़ विषयों का पाठ/पाठन की प्रवृत्ति/लग्न में हो तो जातक गुणवान होते हुए भी आलस्ययुक्त, मदिरा आदि व्यसनों से ग्रस्त, निष्ठुर व कुटिल नीतिज्ञ होता है। पृथुयशस् के अनुसार यह योग उपचय भावों (३, ६, १० व ११वें) भावों में होने से जातक उच्च प्रतिष्ठित, राजमान्य एवं धनाढ्य होता है। जबकि अनुपचय (१, २, ४, ५, ७, ८, ९ या 12वें) भावों में धन सम्पदादि के सम्बन्ध में कष्टकारी एवं अशुभ होता है। गुरु-शनि का योग मेष, मिथुन, कन्या, बृश्चिक, धनु, कुम्भ व मीन लग्नों में शुभस्थ हो, तो विशेष प्रशस्त होगा। परन्तु तुला लग्न में अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् सफलता मिलती है। देखें कुं. नं. 72, 83, 109.

गुरु-राहु-का योग हो, तो जातक उदासीन प्रवृत्ति का, निकट बन्धुओं से वैमनस्य एवं संताप रहे। मन में विभिन्न प्रकार की दुश्चिन्ताएं हों। प्रियजनों से दूर होने का दुख, धन हानि की चोरी आदि का भय, उदर विकार एवं गुप्त रोग एवं गुप्त शुत्रओं का भय हो, धन का अपव्यय अधिक रहे। अपने आत्मीयजन जन (माता-पिता) के शरीर कष्ट के कारण परेशानी हो। वृथा दौड़-धूप व धन खर्च भी अधिक रहे।

गुरु-केतु-का योग होने से अपने पारिवारिक जनों अर्थात् माता-पिता, भाई-बन्धु अथवा स्त्री व सन्तान को कष्ट,

सहयोगी कर्मचारियों के साथ विरोध रहने की सम्भावना, दुर्घटना आदि के कारण शरीर कष्ट एवं चोटादि का भय हो। अनावश्यक खर्चों की भी अधिकता रहे।

शुक्र-शनि-का योग हो, जो जातक चंचल किन्तु सूक्ष्म एवं कुशल बुद्धि, सुन्दराकृति, हस्त-शिल्प आदि कलाओं का जानकार, ड़िजाइनिंग, पत्थर के शिल्प कार्य (मूर्ति निर्माण, संगमरमर तराशी), नक्शा विशेषज्ञ (Architect), लिपिकारी, चित्रकारी आदि की वस्तुएं बनाने में कुशल, धन-धान्य, स्त्री भोग, वाहन आदि सुख के साधनों से समन्वित होता है। ऐसा जातक पुस्तकों के लेखनादि कार्यों में तथा लकड़ी चीरने, जौहरी, कारपेण्टरी के कार्यों में भी कुशल होता है तथा ऐसे जातक को लवण,कषाय एवं आम्ल-रसास्वादन में विशेष रुचि होती है। स्त्री तेजतरार होगी। यह योग होने से जातक कामुकवृत्ति तथा सुरा-सुन्दरी एवं विलासादि पर अधिक व्यय होता है। शुभ भावों में हो, तो मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, बृश्चिक, मकर व कुम्भ लग्न आदि यह योग केन्द्र-त्रिकोण में बना हो, तो शुभ फल प्रदान करता है।

शुक्र-राहु-का योग यदि उपचय स्थानों (३, ६, १० एवं ११वें) में विशेष वृष, मिथुन, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर व कुम्भ लग्नों में हो, तो जातक को इन ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में श्रेष्ठ लोगों की संगति, विदेशगमन, धन-धान्य, स्त्री प्राप्ति एवं पुत्रादि सन्तान की उत्पत्ति, वाहन सुखों आदि की प्राप्ति होती है। परन्तु राहु भुक्ति के अंतिम समय (Period) में मानसिक तनाव, शरीर पीड़ा एवं वृथा खर्च आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

शुक्र-केतु-का योग हो, तो जातक को धनार्जन में विघ्न बाधाएं हों, पर वृथा खर्च भी बहुत बढ़े। अपनी सेहत में विकार हो, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट हो, घरेलू परेशानियां भी बढ़े। पारिवारिक सुख में कमी हो।

सूर्य-चन्द्रादि ग्रह योगों के सम्बन्ध में विशेष

कुंडली में सूर्य आदि पाप ग्रहों युक्त या दृष्ट हो तो जातक के पिता को कष्ट या सुख में कमी एवं सरकारी क्षेत्रों से परेशानी होती है। यदि चन्द्र पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो माता को कष्ट या सुख में कमी व मानसिक तनाव व खर्च अधिक होते हैं। इसी भांति यदि सूर्य शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को पिता से लाभ व सुख में वृद्धि, सरकारी क्षेत्रों से लाभ तथा यदि चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो, तो माता एवं मातुल पक्ष से सुख-लाभ, स्त्री एवं धन सम्पदा के सुख होते हैं। यह नियम केवल सूर्य और चन्द्र पर ही लागू नहीं होता बल्कि अन्य ग्रहों पर भी लागू होता है। जैसे मंगल शुभ एवं मित्र ग्रहों से युक्त हो, तो जातक को भूमि, मकान, भाई, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति हो तथा यदि शनि आदि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो इन सुखों में कमी रहेगी। यदि बुध शुभ एवं मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को बुद्धि, विद्या, मामा आदि सुख तथा शिल्प कला, गणित, ज्योतिष आदि में कुशलता प्रदान करता है। यदि पाप ग्रहों से युक्त हो, तो इन सुखों में कमी करता है।

गुरु : यदि नीच या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को उच्च विद्या, बड़े भाई, पति एवं पुत्र संतति के सुख की हानि करता है। यदि शुभ ग्रह युक्त हो, तो उच्च विद्या, पति, संतान आदि सुखों में वृद्धि करता है।

शुक्रः यदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को धन-सम्पति, स्त्री-सुख, मित्र, संगीत-सौन्दर्य आदि सुखों की वृद्धि करता है तथा पाप-ग्रहों के योग से हानि करता है।

शनि : यदि शुभ एवं मित्र ग्रहों के योग में हो, तो जातक दीर्घायु, धैर्य, व्यापार या तैल, लोहा या तकनीकी कार्यों से अच्छा लाभ करवाता है। यदि शुभ ग्रहों के सम्बन्ध में हो, तो अपनी कारक वस्तुओं के सुख की हानि करवाता है।

सभी ग्रहों से सम्बन्धित वस्तुओं के सम्बन्ध में संक्षिप्त वर्णन आगामी पृष्ठों के पंचग्रही योग सम्बन्धी वर्णन में देखें अथवा ग्रहों के स्थिर कारक एवं भाव आदि सम्बन्धित विस्तृत विवरण ज्योतिष तत्व फलित प्रथम खंड में पढ़ें।

तीन ग्रहों के योगों का फल

सूर्य-चन्द्र-मंगल-तीनों ग्रह एक ही भाव में हों, तो जातक तीक्ष्ण बुद्धि, पराक्रमी, तामसिक प्रवृत्ति, शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाला, निज परिश्रम द्वारा धनार्जन करने वाला, दस्तकारी व हस्त शिल्प कला विशेषज्ञ, लौह, स्वर्ण, चांदी, पत्थर आदि से कला कृतियां बनाने में कुशल तथा तकनीकी कार्यों में कुशल होगा। ऐसा जातक शत्रुओं पर विजयी, स्वाभिमानी एवं कुछ कठोर प्रकृति का होगा। माता को कष्ट अथवा सुख में कमी रहे

सूर्य-चन्द्र-बुध-ग्रह एक ही भाव में होने से जातक विद्वान, उच्च विद्या प्राप्त, गुणवान, सम्मानित एवं प्रतिष्ठित, साधु-सन्तों एवं प्रभावशाली व उच्च प्रतिष्ठित लोगों की संगति करने वाला, प्रियभाषी एवं शिष्टवाणी का प्रयोग करने वाला, गुणवान, धन-धान्य, भूमि वाहन आदि सुखों से युक्त, धर्म, ज्योतिष, काव्य कलाओं में रुचि रखने वाला होता है। ऐसा जातक जो भी काम करे उसे पूरे दिल व दिमाग से करता है। देखें उदा. कुं. नं. 90.

सूर्य-चन्द्र-गुरु-तीनों ग्रह एक भाव में हों, तो जातक विद्वान, उच्च शिक्षा, परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, बुद्धिमान, बन्धुओं-बांधवों से आदर पाने वाला, देवताओं और ब्राह्मणों की सेवा में तत्पर, विद्वानों की संगति करने वाला, प्रत्येक कार्य को युक्तिपूर्वक एवं होशियारी से कराने में कुशल, व्यवहार कुशल एवं सर्विस आदि में विशेष लाभ उठाने वाला होगा। ऐसा जातक अपनी जन्मभूमि से अन्यत्र देश-विदेश आदि में अधिक सफल होता है।

सूर्य-चन्द्र-शुक्र-तीन ग्रहों का योग हो, तो जातक सुन्दर व्यक्तित्व वाला, व्यवहार कुशल, लोकप्रिय, कार्यों एवं व्यवसाय में अस्थिरता हो तथा गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने में कुशल हो, कामुक एवं विलासी प्रकृति, मदिरा, परस्त्री आदि व्यसनों के प्रति आसक्ति, दन्त रोग, उदर विकार, मधुमेह आदि गुप्त रोगों का भय हो। अल्प सन्तति अथवा सन्तान के बारे में चिन्तित हो। धन का अपव्यय (वृथा खर्च) अधिक हों।

सूर्य-चन्द्र व शनि-तीनों ग्रह एक ही राशि में हों, तो जातक कुटिल बुद्धि वाला, अपना कार्य सिद्ध करवाने के लिए झूठ-सच का आश्रय लेने वाला, रहस्यमय प्रकृति, दूसरों के मनोभावों को समझ लेने में कुशल, हाथी, घोड़े, गाय, भैंस आदि पशुओं की सेवा करने वाला एवं धातु (लोहा, पीतल, चान्दी, सोना आदि) के कार्य करने में कुशल, परस्त्री, तम्बाकू, शराब आदि मादक वस्तुओं के सेवन में प्रवृत्ति, व्यसनी। जातक व्यर्थ परिश्रम करने वाला तथा आर्थिक क्षेत्र में परेशान तथा माता-पिता एवं पारिवारिक जीवन में सुख की कमी होती है।

सूर्य-मंगल-बुध-यह तीनों ग्रह एक ही भाव में हों, तो जातक पराक्रमी, साहसी, लोक प्रसिद्ध, नीतिवान, उच्च प्रतिष्ठित किन्तु कभी निष्ठुर चित्तवृत्ति वाला, निर्लज्ज, जिद्दी, स्पष्टवादी (Bold), धन सम्पदा, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त परामर्श (सलाह) देने में कुशल होता है। जातक को ज्योतिष, धर्म, मन्त्र आदि शास्त्रों में भी विशेष रुचि होती है। यदि इस योग पर पाप दृष्टि हो, तो जातक वृथा तर्क-वितर्क या (वृथालाप) एवं निर्लज्जतापूर्वक तुच्छ कार्य भी कर सकता है। यदि गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। देखें कुं. नं. 51 ज्यो. तत्त्व (खण्ड 1) देखें उदा. कुं. नं. 60, 74, 91.

सूर्य-मंगल, गुरु-तीनों ग्रह एक ही राशि/भाव में हों, तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, प्रभावशाली व्यक्तित्व, भाग्यवान, तेजस्वी, कुलीन, प्रियभाषी, सत्यनिष्ठ, ईमानदार एवं कुछ तेज प्रकृति का होता है। कार्य-व्यवसाय को सुनियोजित ढंग से करने वाला, पैतृक सम्पदा से लाभान्वित तथा भूमि, जायदाद एवं वाहन, पुत्र, सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है। ऐसा जातक सेना में उच्च अफसर, मन्त्री आदि भी हो सकता है। यदि पाप दृष्ट हो, तो नेत्रों में कष्ट, सिर पीड़ा, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता व पितृ कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

सूर्य-मंगल-शुक्र-तीनों ग्रह एक राशि में हों, तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, विनम्र, प्रियभाषी, स्वकुल में श्रेष्ठ, धन सम्पदा, वाहन, सुन्दर स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक कामुक वृत्ति एवं विषयासक्त भी हो सकता है। ऐसे जातक को संगीत, अभिनय, सौन्दर्य के प्रति भी विशेष रुचि होती है। कई बार आवेश पूर्वक गलत निर्णय लेने पर हानि उठानी पड़े। सामान्यतः निज पराक्रम से उन्नति करता है।

सूर्य-मंगल-शनि-तीनों ग्रह एक ही राशि में हों, तो जातक अपने आत्मीय लोगों से विरोध तथा उनसे सहयोग न प्राप्त करने वाला अर्थात् उनके सुख से रहित, एकान्तप्रिय, हस्तशिल्प एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, अत्याधिक संघर्ष एवं परिश्रम से निर्वाहयोग्य धनार्जन करने वाला, निकट बन्धु भी परायों जैसे व्यवहार रखें; बिना वजह झगड़े रहें। दुर्घटना से चोट आदि का भय हो। सुख साधनों में कमी एवं अशान्त चित्त हो।

सूर्य-बुध-गुरु-तीनों ग्रहों का सम्बन्ध होने से जातक उच्च शिक्षित, विद्वान, बुद्धिमान, धर्म, ज्योतिष एवं साहित्य आदि शास्त्रों को मानने वाला अथवा उनमें विशेष रुचि रखने वाला, साहित्य, एकाऊंट्स, वकालत, कला, पठन-पाठन एवं लेखन कार्यों व भाषण कला में कुशल, धार्मिक प्रवृत्ति, गुणी, धन-सम्पदा एवं सन्तान एवं सुख-साधनों से सम्पन्न परन्तु नेत्रों में कष्टकारी होता है। देखें उदा. कुं. नं. 77, कुं. नं. 63, 85 (धर्मेन्द्र)

सूर्य-बुध-शुक्र-ये तीनों ग्रह एक राशि में हों, तो जातक बातचीत करने में कुशल, उच्च विद्या प्राप्त, स्वावलंम्बी, परिश्रमी एवं अपने पुरुषार्थ एवं परिश्रम द्वारा उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, साहित्यिक अभिरुचियों से युक्त, धर्म, ज्योतिष एवं साहित्य में रुचि रखने वाला तथा अपनी उच्च विद्या एवं कलात्मक गुणों के कारण धन लाभ करने वाला, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुखों से युक्त, विलास प्रिय, स्त्री चालाक व चुस्त होगी एवं कभी स्त्री के कारण संतप्त व परेशान होगा। यदि इस योग पर गुरु एवं चन्द्र की शुभ दृष्टि हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित प्राध्यापन के क्षेत्र में सफल होता है। देखें उदा. कुं. नं. 88, जातक मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर भी अधिक खर्च करता है। देखें कुं. नं. 78.

सूर्य-बुध-शनि-तीनों ग्रह एक भाव में हों, तो जातक को आत्मीय बन्धुओं के सुख में कमी होती है। अत्याधिक संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद आय के साधन बन पाते हैं। दुर्बल शरीर, निकट बन्धुओं के साथ मन-मुटाव एवं तनाव रहे। नीच लोगों के साथ संगति अधिक रहे। आय कम व खर्च अधिक रहें। व्यसनों आदि पर खर्च अधिक हो। विदेश जाने की भी सम्भावना हो। गुप्त चिन्ताएं तथा अशांति अधिक रहे। छोटी अवस्था में स्वस्थ एवं सुन्दर हो। 36 वर्ष की आयु के बाद स्वास्थ्य में विकार हों। ज्योतिष धर्म, योग आदि गूढ़ विषयों में रुचि रहे। देखें कुं. नं. 65, 80.

सूर्य-गुरु-शुक्र-का योग हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, उच्च प्रतिष्ठित, धार्मिक विचारों से युक्त, उदार हृदय, परोपकारी, योजनाबद्ध विधि से कार्य करने वाला, पराक्रमी तथा जातक निज-परिश्रम एवं पुरुषार्थ से धन लाभ व उन्नति करने वाला, पिता एवं सरकारी क्षेत्रों द्वारा विशेषतः लाभान्वित होता है। यदि यह योग षष्ठ, आठवें या 12वें (अशुभ) भावों में हो या शनि या राहु आदि ग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री को कष्ट अथवा जातक स्त्री के कारण परेशान एवं नेत्रों में कष्ट हो।

सूर्य-गुरु-शनि-तीनों ग्रह का योग होने से जातक निडर, आकर्षक व्यक्तित्व, गम्भीर, धर्म परायण, उच्चशिक्षित, परोपकारी, ब्राह्मणादि विद्वानों की सेवा में तत्पर, धातु, शिल्प एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, मित्रों, स्त्री, सन्तान (पुत्र सहित), मकान, सवारी, आदि सुखों से युक्त होगा, देखें उदा. कुं. नं. 62 परन्तु जातक को प्रत्येक क्षेत्र में विघ्नों का सामना रहता है। यह ग्रह योग मेष, मिथुन, सिंह, बृश्चिक, धन, कुम्भ व मीन लग्नों में शुभभावस्थ हो, तो अधिक अच्छा फल प्रदान करता है। देखें उदा. कुं. नं. 62

सूर्य-शुक्र-शनि-तीनों ग्रहों का योग होने से जातक चंचल किन्तु बुद्धिमान, शिल्प, कला, हुनर व तकनीकी कार्यों में कुशल, चित्रकारी एवं ड्राईंग इत्यादि में रुचि, ऐसा जातक कामुक वृत्ति तथा वह सौन्दर्य प्रसाधन, स्त्री, वाहन, मकान मनोरंजन एवं विलास आदि कार्यों पर अधिक व्यय करता है। त्रि-ग्रही योग वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर व कुम्भ लग्नों में विशेष फलदायक होता है। अशुभ भावों एवं अन्य लग्नों में यह योग जातक को अत्याधिक विलासप्रिय, दुराचारी, बन्धुओं के सुख में कमी, दाद-खुजली, कुष्ठ, मधुमेह आदि रोगों से कष्ट देता है।

चन्द्र-मंगल-बुध-त्रि-ग्रही का योग हो, तो जातक साहसी, कुशाग्र बुद्धि, कुछ तीक्ष्ण स्वभाव, वाक्चातुर्य में कुशल, लोक व्यवहार में भी कुशल, संगीत, कला एवं साहित्य में रुचि रखने वाला, ज्योतिष, वकालत, राजनीति, मन्त्रादि तथा हस्त-शिल्प हुनर, कैमीकल व तकनीकी कार्यों में सफल, स्वतन्त्र आचरण करने में उत्सुक, गुणी तथा अपने विशेष गुणों एवं विशिष्ट युक्तियों व साधनों द्वारा धनार्जन करने वाला होगा। यह योग मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक,

मकर, कुम्भ व मीन लग्नों में अच्छा फल देता है।

चंद्र-मंगल-गुरु-इन त्रिग्रहों का योग हो, तो जातक बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, सुन्दर मुखाकृति, साहसी, उत्साहशील, धर्म-परायण, परोपकारी, प्रसन्नवदन, मिलनसार, स्त्रियों में प्रिय, परस्त्री आसक्त, शिल्प कला, हुनर एवं तकनीकी कार्यों में कुशल, गुणवान तथा अपने गुणों द्वारा व्यवसाय में अच्छा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा जातक न्यायाधीश, प्राध्यापन, चिकित्सा, वकालत, सेना एवं उच्च सरकारी क्षेत्रों में सफल होता है। धर्म, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रुचि होती है।

चन्द्र-मंगल-शुक्र-जातक बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल, बुद्धि, व्यवहार कुशल, हंसमुख एवं भ्रमणशील प्रकृति का होता है। ऐसा जातक कामुक प्रवृत्ति, विलासप्रिय, परस्त्रियों के प्रति आसक्त रहने वाला अथवा स्त्रियों के वशीभूत होकर अनीतिपूर्ण आचरण भी कर सकता है। क्रय-विक्रय एवं व्यापार करने में कुशल तथा जातक संगीत, कला, अभिनय, गायन, नृत्य, फैशन, डिजाईनिंग, सौन्दर्य प्रसाधनों, कम्प्यूटर, टैलीविजन, फिल्मी क्षेत्रों एवं सौन्दर्य एवं स्त्रियों से सम्बन्धित कार्य/व्यवसाय में अधिक सफल होते हैं। तृतीय भाव में हो, तो भाई कम तथा बहिनों का सुख होता है। देखें कुं. नं. 112

चन्द्र मंगल-शनि-का योग हो तो जातक उदासीन एवं चिड़चिड़े स्वभाव का, परन्तु वाद-विवाद एवं तर्क-वितर्क करने में कुशल, वृथा विवादों में संलिप्त, अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए उचित/अनुचित का भी ध्यान न करे। ऐसा जातक हस्त कला निपुण तथा तकनीकि कार्यों में कुशल, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना रहे। पत्थर एवं धातुओं सम्बन्धी कार्यों में विशेष लाभ होने की सम्भावना हो, माता के सुख में कमी के योग।

चन्द्र-बुध एवं गुरु-एक साथ हों तो जातक व्यवहार-कुशल, वाक्पटु,प्रसन्नचित् धनी, कार्य कुशल, अपने निजपुरुषार्थ से धनवान्, मधुरभाषी, भाग्यवान्, विद्वान-बुद्धिमान, भूमि-वाहन आदि सुख साधनों से युक्त होता है। देखें कुं. नं. 87.

चन्द्र-बुध-शुक्र- एक राशि में हों तो जातक अनेक विद्याओं में निपुण, लोक व्यवहार में कुशल, अपने स्वार्थ के प्रति सतर्क रहने वाला तथा व्यवहार में नीति/अनीति का भी विचार न करने वाला, धन लोलुप होता है। कार्य व्यवसाय में भारी स्पर्धा भी उठानी पड़ती है। अभिनय, संगीत, कला एवं साहित्य में विशेष रुचि रखने वाला होता है।

चन्द्र-बुध-शनि-सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, दूरंदेशी, विनीत, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला, धन, भूमि, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है। ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं में भी रुचि रखे।

चन्द्र-गुरु-शुक्र- एक राशि में हों तो जातक भाग्यवान, तीव्र बुद्धिमान, धनी, उच्च प्रतिष्ठित, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, धर्म परायण अर्थात् धर्म कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला, धर्म, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रुचि रखने वाला होता है।

चन्द्र-गुरु-शनि- एक राशि में हो, तो जातक विद्यावान्, नेतृत्व करने में कुशल (नेता), व्यवहार कुशल, उच्चाधिकारी, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, ज्योतिष आदि विभिन्न शास्त्रों में रुचि रखने वाला, कार्य व्यवसाय में कुशल, अध्यापन, ज्योतिष, राजनीति, वकालत आदि व्यवसाय में विशेष सफल रहने वाला, धन, जायदाद, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

चन्द्र-शुक्र-शनि- तीनों एक ही राशि में इक्ट्ठे हों, तो जातक धर्मपरायण, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, अभिनय, संगीत, कला, राजनीति, ज्योतिषी, कलाकार, प्राध्यापन, सम्पादन, वकालत, बैंकिंग, ड्रैस डिजाईनिंग, लेखन-अध्यापन, शिल्प, कार्य, मूर्ति कला, चित्रकला, पेय पदार्थ, नक्शा निर्माण, श्रृंगार, सौन्दर्य, पार्लर आदि कार्यों में सफल होता है। देखें कुं. नं. 93.

मंगल-बुध-गुरु- तीनों ग्रहों का सम्बन्ध हो, तो जातक धार्मिक विचारों वाला, बुद्धिमान, धर्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला, महत्वाकांक्षी, परोपकारी स्वभाव, भूमि-जायदाद-वाहन, स्त्री आदि सुख सुविधाओं से युक्त, संगीत-गायन आदि कलाओं में रूचि, उच्च स्तरीय व्यवसाय करने में प्रयत्नशील रहता है। जातक बौद्धिक कार्यों में अधिक सफल रहता है।

मंगल-बुध-शुक्र-तीनों ग्रह एक राशि में हो, तो जातक दुर्बल एवं कृश शरीर युक्त, चंचल वृत्ति, अध्ययनशील, सुन्दर वक्ता, गुणवान, निज परिश्रम द्वारा धन, सम्पदा, सवारी आदि सुखों का लाभ एवं उन्नति करने वाला, क्रय-विक्रय करने में कुशल, परोपकारी, अपनी उन्नति के लिए सदैव उत्साहशील और अधिक बोलने वाला होता है, यद्यपि प्रत्येक स्थिति में संतुष्ट रहने का प्रयास करता है। देखें कुं. नं. 64.

मंगल-बुध-शनि-जातक अत्यंत परिश्रमी, मुंहफट एवं स्पष्टवादी, अपने स्वास्थ्य के प्रति चिन्तित, आंखों या गले एवं मुख में कष्ट, प्रतिनिधित्व का काम करने में कुशल, कुछ लापरवाह प्रकृति, अपने जन्म स्थल से अतिरिक्त स्थान (विदेश आदि) में सफल, व्यवसाय के सम्बन्ध में अत्यंत कठिन परिश्रम करने वाला, स्वर्ण, लोह, चांदी आदि हस्तशिल्प के कार्यों या रबड़, तैल, कैमिकल के कार्यों में विशेष सफल होता है।

मंगल-गुरु-शुक्र-जातक तीव्र बुद्धिमान, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, ऐश्वर्यवान, विलासप्रिय, उच्च प्रतिष्ठित मित्रों से युक्त, भाई, स्त्री, पुत्र संतति आदि सुखों से युक्त, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न, प्रसन्नवदन, मिलनसार, लोकप्रिय एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होता है।

मंगल-गुरु-शनि-विघ्न/बाधाओं के बावजूद उच्च विद्या प्राप्त, विद्वान, स्वास्थ्य के प्रति चिन्तित, जातक अध्यात्म, योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, परन्तु जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में विघ्न/बाधाओं के पश्चात् सफलता मिलती है। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहे। यदि यह योग केन्द्र या त्रिकोण भावों में हो, तो भी जातक को परेशानियों एवं संघर्ष के बाद भूमि, जायदाद-वाहन एवं संतान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। जीवन के अंत में दुखों के बाद जातक अध्यात्म की ओर प्रवृत्त होता है।

मंगल-शुक्र व शनि -जातक चतुर बुद्धि, व्यवहार कुशल, कामुक प्रवृत्ति परन्तु स्पष्टवादी, मिलनसार नए-नए मित्र बनाने में कुशल, परिस्थिति के अनुसार आचरण करने वाला, नीतिवान, अधिकांश समय एवं धन सिनेमा, संगीत, मनोरंजन एवं स्त्रीसंग में बिताने को इच्छुक, टैलीविजन, कम्प्यूटर्ज आदि का शौक, अपने जन्म स्थान से अतिरिक्त स्थान (विदेश आदि) पर भाग्योन्नति एवं लाभ प्राप्त करने वाला होता है। दाम्पत्य (विवाह) सुख भी परेशानियों एवं उलझनों के बाद प्राप्त होता है। पूर्वार्द्ध भाग अशांत एवं उलझनों से युक्त रहता है। स्त्री के साथ विचार वैषम्य का सम्भावना, जीवन के उत्तरार्ध भाग में जातक का रुझान अध्यात्मिकता की ओर बढ़ जाता है।

बुध-गुरु-शुक्र-तीन ग्रहों का योग हो, तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गायन, संगीत, कला, कामर्स एवं गणित के प्रति विशेष झुकाव हो। जातक बुद्धिमान, अच्छा वक्ता, अध्ययनशील, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, लेखन एवं पठन-पाठन का भी शौक, धर्म, योग, ज्योतिष, आदि गूढ़ विषयों की ओर भी रूचि, धार्मिक एवं उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ अधिक सम्पर्क हों।

बुध-गुरु-शनि- तीनों एक ही राशि में हो, तो जातक बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, विद्वान, भाग्यशाली, धार्मिक संस्कारों से युक्त, धर्म, अध्यात्म, ज्योतिष, योग आदि गूढ़ शास्त्रों में रूचि रखने वाला, विद्वान एवं उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ संगति रखने वाला, धैर्यवान, अड़चनों के बावजूद धन, भूमि, आवास एवं वाहन आदि सुख-साधनों से युक्त होता है।

बुध-शुक्र-शनि-एक ही राशि में हो, तो जातक प्रियभाषी, चतुरबुद्धि, व्यवहार-कुशल, कामुक, उच्च प्रतिष्ठित, भ्रमणशील-आय के सम्बन्ध में देश-विदेश की यात्राएं करने वाला, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, गुणी, तर्क-वितर्क करने में कुशल, अध्यापन, वकालत, सेल्जमैन, हस्त-शिल्प, तकनीकी कार्यों, प्रतिनिधि, चिकित्सा, ज्योतिष आदि व्यवसायों में सफल, गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में कुशल होता है। व्यवहार में कई बार उचित-अनुचित का भी ध्यान नहीं करता। धन-सम्पदा आदि सुविधाओं से सम्पन्न होता है। स्त्री, सुन्दर, सुशील व परिवार में सहयोग करने वाली होती है।

गुरु-शुक्र-शनि : एक ही राशि में हो, तो जातक उच्चशिक्षित, तीव्र बुद्धिमान, उच्च पद प्रतिष्ठित, परोपकारी, उदार हृदय, जमीन-जायदाद, धन-सम्पदा एवं वाहन आदि संसाधनों से युक्त, सुन्दर व सुशील स्त्री व संतान आदि सुखों से युक्त, स्वाभिमानी एवं श्रेष्ठ मित्रों से युक्त होता है। ऐसा जातक धर्म, अध्यात्म, योग, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विद्याओं में भी विशेष आस्था रखता है।

चार ग्रहों के योग का फल

(1) सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-चार ग्रह एक ही राशि में हो, तो जातक विद्वान, शिक्षित, चतुर बुद्धि, व्यवहार कुशल, उचित-अनुचित का ध्यान किए बिना कार्य/व्यवहार करने वाला, कामुक प्रवृत्ति, स्त्रियों के संग में प्रसन्न रहने वाला, अध्ययनशील, पठन-पाठन, चित्रकारिता, लेखन, शिल्प, दस्तकारी, ज्योतिष, गणित, कम्प्यूटर डिजाईनिंग, कैमीकल्ज, रबड़, पत्थर, अध्यापन, वकालत आदि के कार्यों में शीघ्र सफल होता है।

(2) सूर्य-चन्द्र-मंगल-गुरू- जातक उच्च शिक्षित, विद्वान, धर्म-परायण, सत्यप्रिय, स्पष्टवादी परन्तु कुछ तेज प्रकृति का होता है। जातक अपने कार्य में कुशल तथा प्रत्येक कार्य सुनियोजित एवं नीति के अनुसार करने वाला, धन, भूमि, जायदाद, वाहन एवं पैतृक सुख सम्पदा से सम्पन्न, तकनीकी कार्यों में कुशल, स्त्री एवं संतान सुख यथेष्ट होता है।

(3) सूर्य-चन्द्र-मंगल-शुक्र- जातक उच्च विद्या प्राप्त, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, स्वाभिमानी, विलासप्रिय एवं कामुक प्रवृत्ति, क्रय-विक्रय करने में कुशल, जातक संगीत, गायन, कला, फैशन आदि में विशेष रूचि रखने वाला, जातक कम्प्यूटर, टैलीविजन, सौन्दर्य प्रसाधन, वस्त्रों एवं स्त्रियों से संबंधित कार्यों में विशेष सफल, हस्त कला, दस्तकारी, शिल्प आदि कार्यों में भी कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति विलासप्रिय एवं स्त्रियों में विशेष आसक्ति रखता है।

(4) सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि- जातक अनेक गुणों से युक्त, तीव्र बुद्धिमान, विचित्र एवं रहस्यमय प्रकृति, धनवान, स्वर्णकार अथवा लोह, चांदी, पीतल, सुवर्ण आदि धातुओं के काम, पत्थर, रबड़, कैमिकल्ज, शिल्प कला, दस्तकारी, चर्म उद्योग, तैल, कृषि अनाज संबंधी आढ़त आदि के कामों में अधिक सफल हो, मंगल-शनि में से कोई ग्रह नीच या अस्तंगत हो, तो जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार, पारिवारिक सुख में कमी और स्त्री एवं धन सम्बन्धी परेशानियां अधिक होती है।

(5) सूर्य-चन्द्र-बुध-गुरू- एक ही राशि में हो तो जातक सूक्ष्म, बुद्धिमान, परिश्रमी, सुन्दर, श्वेत वर्ण एवं सुन्दर नेत्रों वाला, मधुरभाषी, चित्रकारी, डिजाईनिंग, कम्प्यूटर, प्राध्यापन, लेखन, पठन-पाठन, बैकिंग आदि के कार्यों में सफल, धर्म परायण-धर्म, ज्योतिष, योग आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला होता है।

(6) सूर्य-चन्द्र-बुध-शुक्र-सभी एक ही राशि में हो तो जातक सुन्दर व्यक्तित्व एवं मध्यम कद वाला, भ्रमण प्रिय, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ मैत्री रखने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल एवं वाक् शक्ति अच्छी होती है। सुन्दर एवं सुशील स्त्री, व्यवहार कुशल, विलासप्रिय, सौन्दर्य प्रिय, सिनेमा, संगीत आदि कार्यों पर व्यय अधिक करने वाला, पत्थर, कोयला, तैल, रबड़ आदि के कार्यों में विशेष सफल। देखें उदारहण कुंडली नं. 114

(7) सूर्य-चन्द्र-बुध-शनि-जातक भ्रमणप्रिय, एक से अधिक साधनों द्वारा धन अर्जन करने पर भी अधिक धन लाभ नहीं हो पाता, व्यर्थ दौड़ धूप व खर्च अधिक होते हैं। जातक को ज्योतिष, तंत्र आदि विषयों में भी रूचि रहे। भाई-बन्धुओं का सुख कम रहे। अत्याधिक संघर्ष व कठिनाइयों के बाद आय के साधन बनते हैं।

(8) सूर्य-चन्द्र-गुरु-शुक्र- एक राशि में हों, तो बुद्धिमान, विवेकशील, धर्मपरायण, परोपकारी स्वभाव, किसी सभा-सोसाइटी का प्रतिनिधित्व करने वाला, उच्च शिक्षित, धर्मनिष्ठ महात्माओं के साथ संगति रखने वाला, प्रत्येक कार्य को युक्तिपूर्ण ढंग से करने वाला, देश-विदेश में भ्रमण करने के अवसर प्राप्त करने वाला, सुन्दर-सुशील स्त्री व संतान आदि सुखों से युक्त होता है। गुरु या शुक्र ग्रह अस्त हो, तो इन सुखों में कमी होती है।

(9) सूर्य-चन्द्र-गुरू-शनि- एक ही भाव में हो तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति वाला, परोपकारी, भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, परन्तु उच्च शिक्षा एवं व्यवसाय में अत्याधिक संघर्ष एवं कठिनाइयों के पश्चात् धनार्जन करने वाला होता है। सुन्दर एवं सुशील स्त्री व सन्तान तथा भूमि, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। यदि गुरू या शनि अस्त हों, तो सुखों में कमी होती है।

(10) सूर्य-चन्द्र-शुक्र-शनि-चारों ग्रह एक भाव में हों, तो जातक अस्वस्थ या दुर्बल शरीर परन्तु लोकप्रिय तथा अपने अधिकारी एवं भाई बन्धुओं के अनुकूल आचरण वाला, कामुक एवं विलासी प्रकृति, व्यवसाय में भी गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने वाला, सुन्दर व सुशील स्त्री , सन्तान आदि सुखों से युक्त, कन्या सन्तति अधिक होती

है। जातक आवास, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, परन्तु व्यर्थ चिन्तनशील रहता है। धन का खर्च अधिक होता है।

(11) सूर्य-मंगल-बुध-गुरु- चारों ग्रह एक ही राशि में हों, तो जातक चतुर बुद्धि, निजी-व्यवसाय द्वारा अच्छा धनार्जन करने वाला, उच्च प्रतिष्ठित, धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव, धर्म, ज्योतिष, योग, तंत्र आदि विषयों में रूचि रखने वाला, भूमि, वाहन, सम्पदा, उच्च विद्या आदि सुख-सुविधाओं से युक्त तथा व्यवहार कुशल होता है। यदि मं.,बु., गुरु ग्रहों में से कोई अस्त हो, तो सुखों में कमी होती है। देखें उदा. कुं. नं. 107.

(12) सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र- एक ही राशि में हो तो जातक पराक्रमी व व्यवहार कुशल, कुशल वक्ता, संगीत, कला, साहित्य, गायन आदि कलाओं में रूचि रखने वाला, भूमि, जायदाद, सुन्दर एवं सुशील स्त्री, संतान आदि सुखों से समन्वित, नीति एवं परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करने में कुशल, अपने व्यवसाय में भी कुशलता से धन का अर्जन करने वाला होता है। कभी-कभी मुंहफट या स्पष्टवादिता के कारण हानि भी उठानी पड़ती है। देखें उदा. कुं. नं. 105

(13) सूर्य-मंगल-बुध-शनि- चार ग्रह एक राशि में होने से जातक साहसी, परिश्रमी, स्पष्टवादी एवं निष्ठुर प्रकृति का होता है। उच्च विद्या में विघ्नों के बाद सफलता मिलती है। कार्य व्यवसाय में भी अत्यंत संघर्ष व कठिनाइयों के बाद धनार्जन होता है। भूमि जायदाद, कैमिकल्ज, रबड़, पत्थर, तैल, अनाज, लौह, सोना आदि धातुओं के व्यवसाय से विशेष लाभान्वित होने की संभावना हो। मं.,बु या शनि अस्तंगत हो तो सुखों में तथा निकट बंधुओं से विरोध रहता है।

(14) सूर्य-मंगल-गुरु-शुक्र-सभी एक ही भाव में हो तो जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, तेजस्वी, पराक्रमी, बुद्धिमान, नीतिज्ञ एवं परिश्रमी होता है। ऐसा जातक उच्च व्यवसायिक विद्या में सफलता प्राप्त करने में कुशल होता है। जातक धन-सम्पदा, भूमि, जायदाद, सुन्दर व सुशील स्त्री व संतान आदि सुखों से युक्त एवं उच्च प्रतिष्ठित होता है। यदि मं., गु., शुक्र अस्त हों तो उपरोक्त सुखों में कमी होती है।

(15) सूर्य-मंगल-गुरु-शनि- एक ही राशि में हो, तो जातक उच्च प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली वाणी का प्रयोग करने वाला, विघ्न/बाधाओं के बाद उच्च विद्या की प्राप्ति, कार्य/व्यवसाय में भी संघर्ष व कठिनाइयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त हों। अध्यापन, चिकित्सा, वकालत आदि कामों में सफल। स्त्री एवं संतानसुख भी बाधाओं के बाद मिलता है। भौम, गुरु या शनि इनमें कोई ग्रह अस्त हो, तो उपयुक्त सुखों में कमी होती है।

(16) सूर्य-मंगल-शुक्र-शनि- एक ही राशि में हो, तो जातक कटुभाषी, भाई/बन्धुओं एवं मित्रों के सहयोग एवं सहायता में कमी, परन्तु जातक स्वयं परिश्रमी, स्वाभिमानी, मनमाना आचरण करने वाला, विलासप्रिय, कामुक प्रवृत्ति, संगीत, गायन एवं मदिरा आदि के सेवन में प्रवृत्ति, जातक तकनीकी एवं हस्तकला, कम्प्यूटर, कामर्स, बैकिंग आदि के कार्यों में सफल, संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करता है। यदि मं., शु. या शनि अस्तगत हों, तो सुखों में कमी तथा पारिवारिक लोगों के साथ विरोध होता है।

(17) सूर्य-बुध-गुरु व शुक्र- चारों ग्रह कुंडली में एक ही राशि में हो तो जातक तीव्र बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, उच्च पद प्राप्त, मुख्याधिकारी, लोकमान्य, नीतिज्ञ, भाई-बन्धुओं के सुख से युक्त, अध्ययनशील, भूमि, मकान, वाहन, स्त्री, संतान आदि सुखों से युक्त, अध्यात्म, योग, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विषयों में रूचि होती है। गुरु, शुक्रादि अस्त हों, तो जातक का जीवन संघर्षमय एवं कठिनाइयों से युक्त होता है।

(18) सूर्य-बुध-गुरु-शनि- जातक स्वाभिमानी, कुछ स्वार्थी, अपने ज्ञान को श्रेष्ठ समझने वाला, भाई-बन्धुओं के सहयोग में कमी, जातक को धर्म/शास्त्र, ज्योतिष, संगीत एवं साहित्य के प्रति विशेष रुझान, पठंन-पाठन, लेखन, सम्पादन, अध्यापन, कम्प्यूटर, डिजाइनिंग, कामर्स आदि के क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त होती है।

(19) सूर्य-बुध, शुक्र-शनि- जातक तीव्र बुद्धिमान, उच्च विद्या प्राप्त, व्यवहार कुशल, स्पष्टवादी, आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिभावान, परिश्रमी, निज परिश्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, संगीत, साहित्य, अध्यात्म, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विषयों में विशेष रूचि रखने वाला, धन-सम्पदा, सुन्दर एवं सुशील स्त्री व सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है। शुक्र या शनि अस्त हो, तो उपर्युक्त सुखों में कमी होती है।

(20) सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि- एक ही राशि में हो तो जातक उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध रखने

वाला, स्वयं भी उच्च पद प्राप्त अथवा उच्च स्तरीय व्यवसाय में संलग्न होता है। संगीत, गायन, कला एवं साहित्य की ओर विशेष रूचि हो, निकट भाई/बन्धुओं के सुख में कमी, विघ्न-बाधाओं के बाद उच्च-व्यवसायिक विद्या प्राप्त, सुशील एवं सुन्दर स्त्री, प्रिय सन्तान, धन-सम्पदा वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो। यदि गुरु, शुक्र अस्त हो, तो इन सुखों की प्राप्ति में अड़चनें होती हैं।

(21) चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु- का योग एक राशि पर हो, तो जातक अति बुद्धिमान, तकनीकी अथवा व्यवसायिक विद्या में उच्च शिक्षित, अध्यात्म, योग, ज्योतिष, तंत्र आदि विद्याओं में विशेष रूचि, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध, दस्तकारी, शिल्प आदि कलाओं में कुशल, भूमि-जायदाद, धन, वाहन, संतान आदि सुखों से युक्त, लोकप्रिय, वकालत, न्यायाधीश, प्राध्यापन, चिकित्सा, कम्प्यूटर आदि क्षेत्रों में सफल होता है।

(22) चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र- एक ही राशि में हों, तो जातक चंचल बुद्धि, व्यवहार कुशल, हंसमुख, भ्रमणशील, क्रय-विक्रय करने में कुशल, विभिन्न स्रोतों में धनार्जन करने वाला, संगीत, अभिनय, फैशन डिजाइनिंग, ब्यूटी पार्लर, टैलीविजन, वस्त्र डिजाइनिंग आदि के कार्यों में सफल, जातक विलासप्रिय एवं कामुक प्रवृत्ति, स्त्रियों की संगति में खुश रहने वाला, गणित, ज्योतिष, कामर्स, राजनीति, वकालत, प्रतिनिधि आदि क्षेत्रों में अधिक सफल होता है। यदि मं., शुक्र आदि अस्त हो तो संघर्ष अधिक रहेगा। इस योग पर गुरु की विशेष पंचम दृष्टि हो, तो मैडीकल के क्षेत्र में सफलता मिलती है। देखें उदा. कुं. नं. 69.

(23) चन्द्र-मंगल-बुध-शनि- जातक पराक्रमी, संघर्षशील, पराक्रमी, हस्तशिल्प एवं तकनीकी कार्यों में सफल, पत्थर, कोयला, जवाहरात, तैल, लौह आदि धातुओं के कार्य द्वारा विशेष लाभान्वित। व्यवसाय में भी अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना, जातक भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुख-साधनों से समन्वित, प्रत्येक कार्य में अड़चनों के बाद सफलता, जातक कैमिकल्ज, रबड़, चमड़ा, अनाज के कार्यों में भी सफल, ज्योतिष, तंत्र, धर्म आदि शास्त्रों में विशेष रूचि रहे।

(24) चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र- ग्रहों का योग एक ही राशि में हो, तो जातक पराक्रमी, स्वाभिमानी, धर्मात्मा, परोपकारी, स्वभाव, साहसी, उच्च शिक्षित, विद्वान, भूमि-जायदाद, वाहन, सुंदर एवं अनुकूल स्त्री आदि सुखों से युक्त, धर्म, ज्योतिष एवं संगीत का शौक, उच्च पद प्रतिष्ठित अथवा उच्चस्तरीय व्यवसाय में संलग्न, दूरंदेशी, नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल होता है। ऐसे जातक को अपनी उच्च विद्या एवं ज्ञान का कुछ अभिमान भी होता है।

(25) चन्द्र-मंगल-गुरु-शनि -एक ही राशि में हों, तो जातक अपने कर्त्तव्य के प्रति गम्भीर, ईमानदार, परिश्रमी, धैर्यवान, पुरुषार्थी, उच्च विद्या, विद्वान, धनवान, भूमि, आवास-वाहन एवं माता के सुखों से युक्त, उच्च पदासीन या निजी व्यवसाय द्वारा अच्छा धन अर्जित करने वाला, यद्यपि शनि के कारण व्यवसाय में संघर्ष व अड़चनें भी होती हैं। ऐसा जातक प्राध्यापन, वकालत, चिकित्सा, कम्प्यूटर, हस्तशिल्प व तकनीकी कार्यों में सफल होता है। गले एवं कानों में दोष की संभावना होती है।

(26) चन्द्र-मंगल-शुक्र-शनि- एक ही राशि में हों, तो जातक व्यवहार कुशल, भ्रमणशील, हंसमुख, चंचल स्वभाव, स्वच्छन्द प्रकृति, अपनी मनमानी करने वाला, तकनीकी कार्यों में कुशल, संगीत, गायन एवं साहित्य, कला आदि में रूझान, विवाह के बाद स्त्री की सहायता एवं सहयोग प्राप्त करने वाला, भाई-बन्धुओं का सहयोग कम प्राप्त हो। व्यवसाय में निज उद्यम द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

(27) चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र- जातक उच्च शिक्षित, विद्वान, धनवान, धर्म-परायण, गम्भीर विचारक, अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क रहने वाला, सुन्दर एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, भाई/बन्धुओं के सुख से युक्त, संगीत, साहित्य एवं गायन आदि मनोरंजक कार्यों में रूचि, धर्म-अध्यात्म, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी रूचि, मकान, वाहन, संतान आदि सुख साधनों से सम्पन्न होगा। यदि गुरु, शनि नीच आदि स्थिति में हो, तो उपरोक्त सुखों में कमी होती है।

(28) चन्द्र-बुध-गुरु-शनि- एक ही राशि में हो तो जातक पराक्रमी, तेजस्वी, गम्भीर प्रकृति, अपने कार्य

क्षेत्र में कुशल, वार्तालाप करने में कुशल, दूरंदेशी, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनाने में प्रवीण, अपने भाई-बन्धुओं से प्रेम करने वाला, धार्मिक विचार, कर्त्तव्य परायण, ज्योतिष, धर्म एवं पौराणिक साहित्य के प्रति विशेष रूचि, निज उद्यम एवं पुरुषार्थ द्वारा जीवन में उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, प्रतिनिधित्व करने में कुशल, राज-मंत्री तथा भूमि, जायदाद, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि पारिवारिक सुखों से युक्त होता है।

(29) चन्द्र-बुध-शुक्र-शनि- चतुर बुद्धि, वाक्पटु, लोक व्यवहार में कुशल, परिश्रमी, भाई-बन्धुओं में प्रिय, उच्चाकांक्षी, जीवन में निज परिश्रम से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, गुणवान, अपने कार्य सिद्धि के लिए उचित/अनुचित का विचार न करने वाला, राजसिक प्रवृत्ति, भूमि, जायदाद, सुशील स्त्री, संतान, वाहन आदि से युक्त, अभिनय, संगीत, कला एवं पौराणिक ज्योतिष व धार्मिक साहित्य में विशेष रूचि रखने वाला, नेतृत्व करने में कुशल, स्त्री वर्ग तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों द्वारा लाभान्वित होता है। ऐसा जातक तकनीकि कार्यों में कुशल होता है। देखें उदा. कुं. 113

(30) चन्द्र-गुरू-शुक्र-शनि- एक ही राशि में हो, तो जातक व्यवसायिक व तकनीकि विद्या क्षेत्र में सफल, बुद्धिमान, परिश्रमी, परोपकारी स्वभाव एवं अपने आश्रितों पर दया भाव रखने वाला, वार्तालाप करने में कुशल, कामुक प्रवृत्ति, विलास आदि कार्यों पर अधिक खर्च करने वाला तथा स्त्रियों के संग में प्रसन्न रहने वाला होता है।

(31) मंगल-बुध-गुरु-शुक्र- चारों एक ही राशि में होने से जातक विनयशील, परन्तु चतुर बुद्धि, लोकप्रिय, जातक व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष व गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने वाला, देश-विदेश में भ्रमण करने के अवसर प्राप्त करने वाला, भूमि, जायदाद, वाहन आदि सुविधाओं से युक्त, परन्तु स्त्री एवं संतान का सुख कुछ परेशानियों के बाद प्राप्त होता है। जातक योग, दर्शन, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विषयों में विशेष रूचि रखने वाला, परोपकारी स्वभाव, गायन, संगीत आदि कलाओं में भी रूझान, क्रय-विक्रय में भी कुशल होता है। प्राध्यापन, वकालत, बैंकिंग व राजनीति के क्षेत्र में भी विशेष सफल होता है।

(32) मंगल-बुध-गुरू-शनि- जब एक ही राशि में हो तो जातक आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, धैर्यवान, परिश्रमी, उच्चाभिलाषी, धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण, परोपकारी, एवं उदार हृदय, भाषणकला में निपुण, उच्च शिक्षित, तीव्र बुद्धिमान एवं परिस्थितियों के अनुसार आचरण करने में कुशल होता है। पारिवारिक सुख में कमी तथा व्यवसाय में भी संघर्ष व कठिनाइयों के बाद धनार्जन होता है। संतानोत्पत्ति के बाद विशेष भाग्योदय होता है।

(33) मंगल-बुध-शुक्र-शनि- जातक चंचल बुद्धि, उच्च-व्यवसायिक विद्या, अध्ययनशील, पराक्रमी, परिश्रमी, निज पराक्रम एवं बौद्धिक योग्यता से लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, स्वतन्त्र प्रकृति, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होता है। पारिवारिक सुख में कुछ कमी परन्तु स्त्री सुयोग्य, सुशील एवं हर क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। पुत्र कम तथा कन्या संतति अधिक होती है। जातक कामुक प्रवृत्ति वाला तथा विलास आदि कार्यों पर अधिक खर्च करने वाला होता है। कई बार धनार्जन में उचित/अनुचित का विचार भी कम रखता है। प्राध्यापन, वकालत, व्यापार एवं क्रय विक्रय के क्षेत्र में अधिक सफल होते हैं।

(34) मंगल-गुरू-शुक्र-शनि-जातक विवेकशील, कामातुर किन्तु धार्मिक, आस्थावान, स्वाभिमानी, विद्वान, कामातुर किन्तु श्रेष्ठवक्ता, परोपकारी स्वभाव, गम्भीर विचारक, धर्म, ज्योतिष, योग, चिकित्सा, तंत्र आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला, भाई-बहनों के सुख से युक्त, सिनेमा, संगीत, गायन, काम-वासना आदि कलाओं में रूचि, सुन्दर, सुशील व सुपठित स्त्री व अच्छी सन्तान के सुखों से युक्त, भूमि, मकान, वाहन एवं अन्य सुविधाओं से सम्पन्न होता है। देखें उदा. कुं. नं. 88.

(35) बुध-गुरू-शुक्र-शनि- चारों ग्रह एक ही राशि में हो, तो जातक तीव्र बुद्धिमान, धार्मिक विचारों वाला, संवेदनशील, तर्कशील, अध्यात्म, योग, दर्शन, ज्योतिष, चिकित्सा आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, माता-पिता का भक्त, उच्च व्यवसायिक विद्या की प्राप्ति, जातक अध्ययनशील, अध्यापन, वकालत, न्यायाधीश, राजनीति, अभिनय आदि के क्षेत्रों में सफल होता है। ऐसा जातक धन, भूमि, जायदाद, वाहन, सुन्दर, सुशील पत्नी एवं संतान आदि सुखों से युक्त होता है। जातक परोपकारी कार्यों में विशेष रूचि रखने वाला होता है। ऐसा जातक नौकरी की अपेक्षा निजी व्यवसाय में अधिक सफल होता है।

पंचग्रही एवं षड्ग्रही योग

कुंडली में प्रत्येक ग्रह अपनी भाव स्थिति, भावेशत्व तथा कारकत्व के अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करता है। दो/तीन या अधिक शुभ ग्रहों का योग यदि केन्द्र/त्रिकोण आदि शुभ भावों में हो, तो विशेष शुभफल प्रदान करते हैं। यदि २, ६, ८, १२वें आदि भावों में हों, तो शुभफल में कमी होती है। इसी भांति तीन/चार या अधिक ग्रहों के योग में जो ग्रह उदित आदि अवस्था में बली होंगे, उन्हीं ग्रहों की प्रकृति, कारकत्व एवं भावेश अनुसार ग्रह योग का फल प्रभावित होगा। इस सम्बन्ध में द्विग्रही योगों के आरम्भ में लिखा गया लेख भी अवश्य पढ़ लेना चाहिए।

प्राचीन ग्रन्थों में तीन/चार या अधिक ग्रहों के योगों के फल का निर्देश संकेत मात्र से दिया गया है। सामान्य नियमानुसार किसी कुण्डली में तीन/चार या पांच ग्रहों का योग बना हो, तो उनमें से यदि अधिकांश ग्रह शुभ एवं योगकारक हों, तो जातक को शुभफल अधिक घटित होंगे। यदि कुछ ग्रहों का योग निर्बल, पापग्रह युक्त या दृष्ट होगा, तो तत्-सम्बन्धी भाव के फल की हानि या कष्ट होगा। गत पृष्ठों पर चार ग्रहों के योगों का फल वर्णित किया गया है। पांच ग्रहों के फल का निर्णय करते समय उनमें जो भी पांचवा ग्रह होगा, वह अपनी प्रकृति, कारकत्व, राशिस्थ एवं भावेश अनुसार न्यूनाधिक फल करेगा। ग्रहों के नैसर्गिक एवं भाव कारकत्व के सम्बन्ध में हम ज्यो. तत्त्व फलित भाग-1 में विस्तार से लिख चुके हैं। यहां पर पाठकों की सुविधा के लिए संक्षेप में पुनः लिख रहे हैं।

सूर्य : आत्मा, पिता, आरोग्य, शारीरिक गठन, उच्चाधिकारी वर्ग, प्रशासन एवं सरकारी वर्ग, हृदय, मस्तिष्क एवं नेत्र सम्बन्धी रोग, आयु प्रमाण, सुवर्ण, ताम्र आदि धातुएं, गेहूं, अग्नि आदि

चन्द्र : माता, मन, धन, सम्पत्ति, स्त्री, मन की प्रसन्नता, कल्पना शक्ति, सौन्दर्य, चांदी, चावल आदि। क्षीण चन्द्र हानिकारक एवं कष्टकारी माना जाता है।

मंगलः पराक्रम, बल, भाई, भूमि, सेना, धैर्य, पुत्र संतति, दुर्घटना, रूधिर, शत्रु, रोग, क्रोध, ताम्रादि एवं तमोगुणि प्रभाव वाला।

बुधः विद्या, बुद्धि, वाणी, त्वचा, मामा एवं बंधु बाधव, गणित, ज्योतिष, शिल्पकला, क्रय-विक्रय, व्यापार, घृत, वनस्पति आदि।

गुरु : विवेकबुद्धि, आध्यात्मिक विद्या, शास्त्र ज्ञान, न्याय, धर्म, आस्था, उच्च विद्या, पति एवं पुत्र सुख, गुरु, बड़ा भाई, पितामह, ब्राह्मण, मंत्री, सत्वगुण, सुवर्ण, पीत वर्ण आदि।

शुक्र : स्त्री, सौन्दर्य, आकर्षण, धन-सम्पत्ति, व्यापार, कामेच्छा, वाहन एवं सांसारिक सुख, संगीत, अभिनय, कला, चान्दी, दुग्धादि पदार्थ।

शनि : आयु, रोग, मृत्यु तुल्य कष्ट, विपत्ति, धैर्य, परिश्रम, व्यापार सेवा, भृत्य वर्ग, तिल, तैल, लोहा आदि धातुएं।

राहु : गुप्त धन, सट्टा-लाटरी, शेयरों आदि से आकस्मिक धन प्राप्ति, आकस्मिक घटना, अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति, शत्रु भाव, गुप्त चिन्ता आदि।

केतु : गुप्त विद्या, मंत्र सिद्धि, कठिन कार्य, दुख, धूर्मवर्ण, तंत्र विद्या, चित्रित वस्त्र, कलह-क्लेश, तीर्थाटन, संघर्ष, कम्बल आदि।

उदाहरण के तौर यदि किसी कुंडली में सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र ग्रहों का पंच ग्रही योग बना हुआ है, तो इसके लिए (31) नं. का चारग्रही योग का फल देखें, तो उस फल में जातक को पिता से सुख एवं लाभ की प्राप्ति तथा सरकारी क्षेत्रों से भी लाभ प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ेंगी। इसी भांति अन्य ग्रहों के फल का निर्णय करें। आगे कुछ प्रमुख पंचग्रही योग लिख रहे हैं, जिनका विवरण प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। हमारे मतानुसार चार ग्रहों के फल में पांचवें ग्रह तथा तदनन्तर छटे ग्रह के कारकत्व फल को छोड़कर अन्तिम निर्णय करें। परन्तु चार, पांच एवं षड् ग्रही योगों में कई बार विशिष्ट फलों का भी समावेश हो जाता है।

प्रमुख पंचग्रही योग

✱सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु : जातक सामर्थ्यवान, युद्ध एवं वाद-विवाद में कुशल, स्त्री सुख में कमी, सदा उद्विग्न रहने वाला एवं अशांत मन का होता है।

✱सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र : इक्टठे हो, तो जातक को भाई-बन्धुओं के सुख में कमी, जातक दूसरों के कार्यों को करने में तत्पर, अपने धर्म के प्रति विशेष श्रद्धा न रखने वाला, कामातुर एवं राजसी वृत्ति का होता है।

✱सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि : एक ही राशि में हो, तो जातक, उच्चाभिलाषी, अत्याधिक संघर्ष करने पर भी अधिक धन का संचय न कर पाए, पारिवारिक सुख में कमी, स्त्री के साथ भी वैमनस्य रहे। जातक अपनी परिस्थितियों से असंतुष्ट एवं अशांत होता है।

✱सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र :जातक उच्च विद्या प्राप्त, अत्यंत बुद्धिमान, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, कामुक प्रवृत्ति, धार्मिक, पौराणिक, ज्योतिष, तंत्र आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला, स्त्रियों में प्रिय, योग दर्शन के साथ ही संगीत, सौन्दर्य, गायन आदि में भी विशेष रूचि रखने वाला होता है। खर्च अधिक हो।

✱सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि: जातक चतुर बुद्धि, कामातुर एवं विष्यासक्त, तकनीकी एवं हस्तशिल्प के कार्यों में कुशल, व्यवहार कुशल, संगीत, कला, गायन, अभिनय आदि कलाओं में रूचि, प्रेम और सौन्दर्य के प्रति विशेष आकर्षण, स्त्री सुशील एवं सुंदर होगी। मनोरंजन, विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होते हैं।

✱सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र : पांचों एक राशि में हो, तो जातक को माता-पिता के सुख में कमी अर्थात जातक स्वावलम्बी होता है। भाई-बन्धुओं का सहयोग कम मिलता है। परन्तु जातक स्वयं उच्च प्रतिष्ठित अधिकारी, राजमंत्री अथवा प्रसिद्ध व्यवसायी होता है। अनेक साधनों द्वारा धनार्जन करता है। नेत्रों को कष्ट होता है। देखें कुं. नं. 95.

✱सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शनि : जातक लम्बे कद वाला, अत्यंत साहसी, रहस्यवादी प्रकृति, अत्यंत बुद्धिमान, गुप्त युक्तियों से धनार्जन करने वाला, जातक धर्म, योग, अध्यात्मक, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विषयों में रूचि रखने वाला, व्यवसाय में अत्याधिक संघर्ष व कठिनाइयों के बाद आय के साधन बनते हैं।

✱सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र : जातक चतुर बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, अपने कुलवर्ग में श्रेष्ठ, विनोद प्रिय, भूमि, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से युक्त, कामुक प्रवृत्ति, संगीत, गायन एवं स्त्रियों के संग में रहने को उत्सुक, विभिन्न स्रोतों द्वारा धनार्जन करने में कुशल, आय के साथ-साथ खर्च भी अधिक होते हैं। मदिरा आदि मादक वस्तुओं के सेवन में रूचि होती है। देखें उदा. कुं. नं. 61.

✱सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि: जातक गम्भीर प्रकृति, बुद्धिमान, रहस्यमयपूर्ण प्रकृति, धर्म, योगशास्त्र, ज्योतिष, तंत्र आदि विद्याओं में रूचि रखने वाला, स्वास्थ्य में विकार, व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त संघर्ष व कठिनाइयों के बाद धनार्जन करने वाला होता है। गुप्त रूप से चिन्तित रहता है।

✱सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि : जातक भ्रमणशील, अस्थिर प्रकृति, भाई-बन्धुओं का सुख एवं सहयोग कम होता है। व्यवसाय में अस्थिरता एवं संघर्ष अधिक होता है। यद्यपि जातक गुप्त युक्तियों से निर्वाह योग्य आय के साधन प्राप्त करने में सफल रहता है। वायु जनित रोगों का भय तथा खर्च भी अधिक होते हैं।

✱सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि : एक राशि में हो, तो जातक उच्च शिक्षित, विद्वान, विवेकशील, गंभीर विचारों वाला, धार्मिक आस्थाओं से युक्त, ज्योतिष, योग, तंत्र आदि में रूचि रखने वाला, लौह, ताम्र आदि यंत्रों को बनाने वाला, रसायन विद्या का जानकार, भूमि, मकान, वाहन, सुन्दर-सुशील स्त्री व सुयोग्य संतान आदि के सुखों से सम्पन्न होता है।

✱सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनिः इस ग्रह का योग का जातक ऊपर लिखित योगानुसार उच्च शिक्षित, विद्वान, लोकप्रिय, परन्तु व्यवहार कुशल एवं व्यवसायिक बुद्धि वाला, अनेक गुणों से युक्त, प्राध्यापन, वकालत, कामर्स, राजनीति, कम्प्यूटर्ज एवं व्यापार के क्षेत्र में सफल होता है।

✱चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र : अत्यंत बुद्धिमान, उच्च विद्या, धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव, विद्वान व्यक्ति होता है। जातक अपनी बौद्धिक योग्यता एवं गुणों द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ व उन्नति प्राप्त करता है। भूमि, मकान, वाहन, सुन्दरस्थली एवं संतान आदि सुखों से युक्त होता है।

✱चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि : के योग से भी जातक उच्च विद्या प्राप्त करने वाला, परन्तु धर्म शास्त्रों के सम्बन्ध में कुछ भिन्न एवं स्वतंत्र विचार रखने वाला, गहन चिन्तनशील, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि विद्याओं में रूचि तथा अत्यन्त संघर्ष व कठिनता से आय के साधन बनाता है। अपव्यय भी बहुत होते है।

✱चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि : के योग से जातक धार्मिक विचारों वाला, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न बाधाएं, व्यवसाय में अस्थिरता एवं कठिनाइयों के बाद निर्वाह योग्य धनार्जन करने वाला, स्त्री एवं दाम्पत्य सुख में कमी परन्तु संतान सुख अच्छा हो। धन व्यय अत्याधिक रहे।

✱चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि पंचग्रहों का योग सम्बन्ध एक राशि में हो, वह जातक अत्यंत बुद्धिमान, सुपठित, उच्च पद प्रतिष्ठित, राजमंत्री, प्रमुख अध्यक्ष, अथवा उच्चस्तरीय व्यवसायी होता है। वह अपने गुणों एवं बौद्धिक योग्यता से भूमि, सम्पत्ति, वाहन, सुन्दर व सुशील पत्नी व सुयोग्य संतान आदि सुखों से समन्वित होता है।

✱मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि पांचों ग्रहों का सम्बन्ध एक राशि में हो, तो जातक अनेक गुणों से युक्त, उच्चशिक्षित, विद्वान, उच्च पद प्रतिष्ठित, प्रधानाध्यक्ष, प्राध्यापक, वकालत, न्यायाधीश सेना, पुलिस अध्यक्ष आदि के क्षेत्र में विशेष सफल होता है। ऐसा सुन्दर आवास, वाहन एवं स्त्री-संतान आदि सुखों से युक्त सम्मानित एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

विशेष-जैसा कि पूर्व पृष्ठों पर पहले लिख चुके हैं कि उपरोक्त ग्रह योगों के सम्बन्ध में अक्षरशः अर्थ ग्रहण नहीं करना चाहिए। बल्कि ग्रहों के कारकत्व, राशि स्थिति, केन्द्र त्रिकोणादि भावस्थिति, भावेश, भावकारक, नवांश स्थिति, उच्च नीचादि का सर्वांगीण विचार करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित होता है।

छः ग्रहों के योगों का फल

जन्म कुंडली में किसी एक भाव राशि पर छः ग्रहों का योग बहुत कम हो पाता है। क्योंकि अनेक वर्षों के बाद ही ग्रह-संसार की ऐसी स्थिति बन पाती है जिसमें छः, सात अथवा अष्ट ग्रही योग बनता है। फलित दृष्टि से हमारे अनुभव में यही आया है कि जिन जातकों की कुंडलियों में पांच, छः या सात आदि अधिक ग्रहों के योग मिलते हैं। उनके जीवन में प्रायः आश्चर्यजनक घटनाएं घटित होती रहती हैं। ध्यान रहे, हमारे प्राचीनचार्यों ने ग्रहयोगों से राहु-केतु-दोनों का समावेश नहीं किया है। कई बार पांच-छः-सात ग्रहयोगों के जातकों में असामान्य प्रतिभा भी देखने में मिलती है। प्राचीन प्रामाणिक ग्रंथों में पाए जाने वाले किंचित षडग्रही योग निम्नलिखित है :

1. **सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र** : ये छः ग्रह जब एक ही राशि में हो, तो जातक अत्यंत बुद्धिमान, भाग्यशाली, धर्म परायण, अपने कर्त्तव्यों का पालन करने वाला, उच्च शिक्षित, परोपकारी स्वभाव, व्यवसाय में अत्यंत संघर्ष के बाद धनार्जन के साधन बनते हैं। जातक स्त्री-पुत्र आदि पारिवारिक सुखों से युक्त, ऐसा जातक पर्वतीय आदि प्राकृतिक एवं तीर्थस्थलों पर जाने में विशेष श्रद्धा रखने वाला होता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि : जातक का परोपकारी स्वभाव, ऐसे जातक को दूसरों की भलाई करके

सुख एवं संतोष मिलता है। जातक अध्ययन शील, ईश्वर में आस्था रखने वाला, उदारहृदय, नए-नए लोगों के साथ मैत्री सम्बन्ध बनाने का इच्छुक, माता-पिता का भक्त, भाई-बंधुओं की सहायता करने का प्रयत्न करने वाला होता है। ऐसे जातक को देश-विदेश की यात्राएं करने के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि : जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, संगीत, गायन, अभिनय, कलादि में रूचि तथा व्यवहार कुशल, मिलनसार, हंसमुख, लोकप्रिय, वाद-विवाद एवं युद्ध आदि में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, भूमि, मकान, वाहन एवं स्त्री व संतान आदि सुखों से युक्त होता है। परन्तु ऐसा जातक सहज में किसी पर विश्वास नहीं करता है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि : ये सभी 6 ग्रह किसी एक राशि में हो तो जातक बुद्धिमान, भ्रमणशील, साहसी, पराक्रमी एवं अपने स्वार्थ का पक्का होता है। ऐसा जातक किसी भी विषय पर बहुत देर तक नहीं विचारता परन्तु शीघ्र ही निर्णय लेने के प्रयास करता है। कई बार आवेश, लोभ या क्रोधवश अपनी ही हानि कर बैठता है। 45 वर्ष की आयु के बाद गुप्त रोग की संभावना।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि : जातक भ्रमणशील, अस्थिर प्रकृत्ति, उच्च विद्या की प्राप्ति भी विघ्न बाधाओं के साथ हो, कार्य व्यवसाय में अस्थिरता, पारिवारिक एवं स्त्री का सुख भी सामान्य हो। ऐसे जातक का भाग्योदय अपने जन्म स्थल की अपेक्षा अन्यत्र विदेश आदि में अधिक हो। (40) वर्ष का आयु के बाद विशेष कार्य उन्नति एवं प्रतिष्ठित हो।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि : ये छः ग्रह इकट्ठे एक राशि में हो तो जातक उच्च शिक्षित, बुद्धिमान, विद्वान, तीर्थों तथा देश-विदेशों में यात्राएँ करने वाला, उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क रखने वाला, धर्म परायण, परोपकारी स्वभाव तथा भौतिक सुखों से सम्पन्न होता है। धर्म व ज्योतिष विषयों में रूचि होती है। किसी भी ग्रह के साथ मंगल-बुध का योग जातक को अच्छा वक्ता, चिकित्सा, मैडीकल, वैद्यक, हस्तशिल्प, तकनीकी क्षेत्र तथा धर्म, ज्योतिष आदि शास्त्रों में विशेष ज्ञान होने का सूचक है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि: इन छः ग्रहों का योग कुंडली में एक ही राशि में हो तो जातक विद्वान, बुद्धिमान, ईश्वरभक्त, धर्म परायण, उच्च पद प्रतिष्ठित एवं अपनी बौद्धिक योग्यता के बल एवं भाग्यवश धन सम्पदा, वाहन आदि सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, राज्य या सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित, सुन्दर एवं सुशील स्त्री व संतान आदि सुखों से समन्वित होता है। धर्म-योग, ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में भी विशेष रूचि होती है।

सात (7) ग्रहों के योग का फल

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि- इन सभी सात ग्रहों का योग संबंध किसी एक राशि में हो, तो वह व्यक्ति उच्च शिक्षित, उच्च प्रतिष्ठित, तीव्र बुद्धिमान, राजा के समान धन-सम्पदा, आवास, स्त्री-संतान, मकान, वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, गुणी एवं सामर्थ्यवान होता है। वह लोकप्रिय, उच्चस्तरीय व्यवसाय एवं राजनीति के क्षेत्र में भी सफल होता है।

****

फलित ज्योतिष में कुछ प्रसिद्ध योगों का वर्णन

निम्नलिखित योगों में राहु-केतु का समावेश नहीं किया जाता

(1) गोल योग- यदि सूर्यादि सभी ग्रह (राहु-केतु को छोड़ कर) एक ही भाव (राशि) में हों, तो गोल नामक योग होता है। इस योग के फलस्वरूप जातक चंचल बुद्धि, उच्च विद्या में विघ्न, नीति-अनीति का विचार न करने वाला, अपना लक्ष्य सिद्ध करने में कुशल, कठोर व हिंसक कार्यों में रुचि, गुप्त युक्तियों में प्रवीण होता है। ऐसा जातक गुप्तचर विभाग, पुलिस अथवा सेना के कार्यों में सफल होता है।

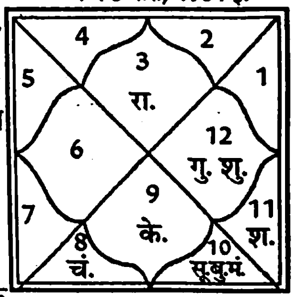
(2) युग योग- यदि जन्मकुंडली में (राहु-केतु को छोड़) सभी सात ग्रह दो भावों (2 राशियों) में ही स्थित हों, तो युग नामक योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का जीवन अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों से भरा होता है। ऐसा जातक चंचल स्वभाव वाला, मदिरा, तम्बाकू आदि व्यसनों में प्रवृत्त, धर्म कार्यों से विमुख तथा आर्थिक दृष्टि से परेशान रहने वाला होता है। सन्तान आदि का सुख भी कम ही मिलता है।

(3) शूल योग- किसी जातक की कुंडली में तीन भावों (राशियों) में (राहु-केतु को छोड़कर) ही सातों ग्रह होने से शूल योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक साहसी, दयालु, परोपकारी किन्तु कुछ क्रोधी, कठोर एवं तीक्ष्ण स्वभाव का किन्तु कभी आलसी स्वभाव वाला, राजकर्मचारी एवं आर्थिक चिन्ताओं अथवा धन सम्बन्धी कार्यों में व्यस्त रहने वाला होता है। ऐसा जातक विरोधी पक्ष के दिलों में कांटे की भांति चुभता रहता है। ऐसा जातक स्वाभिमानी, स्वार्थी, कई बार क्रोधाक्यि में बना बनाया काम बिगाड़ लेने वाला होता है।

(4) केदार योग- यदि कुंडली में चार भावों (राशियों) में ही सातों ग्रह (राहु-केतु को छोड़कर) पड़े हों तो केदार नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक/जातिका सत्यभाषी, परोपकारी, धनवान्, चंचल स्वभाव, ऐश्वर्यवान, उच्च प्रतिष्ठित, बन्धु-बान्धवों का हितकारी, कृषि आदि कार्यों में रुचि, बहुत जनों के लिए उपयोगी अथवा बहुजनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण करने वाला एवं सुख-साधनों से सम्पन्न होता है।

सुबाहुनामुपोज्याः कृषबिलाः सत्यवादिनः सुंखिताः।
केदारे सम्भूताश्चलस्वभावा धनैः युक्ताः॥ सा.व.॥

उदाहरण कुण्डली केदार योग
जन्म 8 फर., 1964 ई.



उदाहरण-प्रस्तुत जन्मकुंडली एक क्वालिफाइड मकै. इंजीनियर की है। यह जातक इंजीनियरिंग करने के पश्चात् उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए शुक्र मध्ये शनि की अन्तर्दशा में विदेश (कैनेडा) गया था। विवाह आदि के पश्चात् विदेश में ही सुंदर, सुशील स्त्री एवं अच्छी सर्विस में कार्यरत है। इसकी कुंडली में केदार योग पाया जाता है। अर्थात् सभी ग्रह चार राशियों में पड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त कुंडली में सप्तमेश व द्वादशेश शुक्र तथा राशि स्वामी चन्द्र व लाभेश मंगल उच्चस्थ हैं तथा शनि (भाग्येश) एवं कार्येश गुरु स्वराशिगत हैं।

(5) पाश योग-यदि पांच राशियों में ही सूर्यादि सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो पाश नामक योग होता है। यहां राहु केतु को नहीं गिनना है। इस योग वाला जातक गृहस्थी एवं व्यवसाय के सम्बन्धों में जकड़े रहने वाला, सदा अपने कार्यों में लीन (व्यस्त) रहने वाला, अधिक वार्तालाप (बातें) करने वाला, सेवादि कार्य करने में कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति गुप्तचर, पुलिस, सेना, व्यापारी, सरकारी नौकरी, अध्यापन आदि कार्यों में सफल होता है।

(6) दामिनी योग-यदि कुंडली में छः राशियों में सूर्यादि ग्रहों की स्थिति हो, तो जातक धार्मिक विचारों वाला, परोपकारी, स्वभाव, विद्वान, वाहन, भूमि आदि सुख-साधनों से युक्त, शीलवान, सुशील व धैर्यशील पत्नी से युक्त, धन-धान्य एवं सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है।

(7) वीणा योग- कुंडली में सूर्यादि (राहु-केतु को छोड़कर) सात राशियों (भावों) में स्थित हों, तो वीणा नामक योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक व्यवहार-कुशल, संगीत, कला, साहित्य एवं गूढ़ शास्त्रों व विद्याओं में रुचि रखने वाला, विभिन्न स्त्रोतों द्वारा धनार्जन करने वाला, सुशील स्त्री, कार्य-कुशल, भूमि-मकान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न होता है। राजनीति एवं विदेशी कार्यों के क्षेत्र में भी सफलता की सम्भावना है।

(8) रज्जु योग–कुंडली में यदि सभी ग्रह (राहु-केतु के अतिरिक्त) चर राशियों में स्थित हों तो यह योग होता है। इस योग वाला जातक भ्रमणशील अर्थात् घूमने-फिरने का शौकीन, सुन्दर व्यक्तित्व, धनोपार्जन के लिए देश-विदेश में जाकर लाभान्वित होने वाला तथा स्थान परिवर्तन से विशेष उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

(9) मूसल योग– कुंडली में यदि सभी ग्रह (राहु-केतु को छोड़कर) स्थिर राशियों में हों, तो मूसल नामक योग होता है। इसके फलस्वरूप जातक विद्वान, सुप्रसिद्ध, उच्च विद्या प्राप्त, सुप्रतिष्ठित, तेजस्वी, धन-सम्पदा, स्त्री, वाहन एवं सन्तान आदि सुखों से साधन-सम्पन्न व्यक्ति होता है। ऐसा जातक उच्च प्रतिष्ठित, शासनाधिकारी भी हो सकता है।

(10) नल योग– कुण्डली में सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों, तो जातक कम या अधिक अंगों वाला, उच्च विद्या प्राप्ति में विघ्न-बाधाएं परन्तु धन-सम्पदा आदि का अर्जन करने में कुशल होता है। ऐसा जातक ब्राह्मण, देवताओं एवं गुरु की भक्ति एवं सेवा करने वाला, धर्म-परायण, भाई-बन्धुओं का हितकारी तथा अपना कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है।

(11) वज्र योग– यदि कुंडली में सब शुभ ग्रह लग्न और सप्तम भाव में हों तथा चतुर्थ व दशम भावों में सब पाप ग्रह स्थित हों, तो वज्र योग होता है। ऐसा जातक अपनी प्रथम तथा अन्तिम अवस्था में सुन्दर शरीर, शूरवीर, सुख-साधनों एवं पारिवारिक सुखों से युक्त होता है परन्तु मध्यम अवस्था में अल्प सुख प्राप्त होता है। भाग्योदय अन्तिम अवस्था में ही होता है। ऐसे जातक पुलिस एवं सेना विभाग में विशेष सफल होते हैं।

(12) शकट योग–यदि कुण्डली में सभी ग्रह (राहु-केतु को छोड़कर) लग्न और सप्तम भावों में स्थित हों तो शकट योग होता है। इस योग के होने से जातक विशेष रोग के कारण दुखी, स्त्री के साथ मनमुटाव एवं वैमनस्य रहता है। ऐसा जातक वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न तथा अपना काम निकलवाने में कुशल होता है।

(13) अमल कीर्ति योग–यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से दशम भाव तक केवल शुभ ग्रह हों, तो अमल कीर्ति नामक योग होता है। इस योग वाला जातक धर्म-पारायण, परोपकारी, कार्य कुशल, अपने परिवार के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ, निज पुरुषार्थ से धन सम्पदा एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने वाला होता है।

रुचकादि पंच-महापुरुष योग

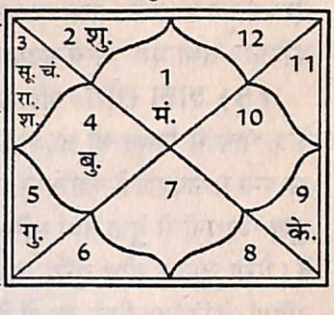
'पंच महापुरुष' योग के शीर्षक के अन्तर्गत रूचक आदि पांच शुभ योगों का वर्णन प्रायः सभी प्राचीन ज्योतिष ग्रंथों में मिलता है। इनका फल राजयोगों के समान शुभ माना जाता है। आधुनिक युग में इनके फलस्वरूप जातक राजा तो न सही, परन्तु राज तुल्य ऐश्वर्य, धन, सन्तति आदि सुखों को प्राप्त करता है। विशेषकर मंगल, बुध, गुरु आदि योगकारक ग्रहों की अपनी-अपनी दशा में अवश्य शुभ एवं श्रेष्ठ फल होते हैं।

यदि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि अपनी उच्च राशि या मूलत्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हों, तो क्रम से रूचक, भद्र, हंस, मालव्य और शशक नामक पंच-महापुरुष योग होता है। जातकाभरणम्, मानसारी, सारावली इत्यादि ग्रंथों का यही मत है परंतु मन्त्रेश्वर महाराज के मतानुसार यदि जन्म लग्न से केंद्र में स्वोच्च, स्वराशिस्थ, भौमादि, ग्रह न भी हों परंतु यदि चंद्र लग्न से उपरोक्त भौम आदि ग्रह केंद्रगत हों, तो भी रूचक आदि योगों का निर्माण होता है तथा धन-धान्य आदि शुभ फल घटित होते हैं–

लग्नेन्दोरपि योग पंचकमिदं साम्राज्य सिद्धिप्रदं॥
तेष्वेकादिषु भाग्यवान् नृपसमो राजा नृपेन्द्रोऽधिकः॥ (फ.दी.अध्याय.६॥ ४॥)

अर्थात् चन्द्र लग्न से केंद्र में उपर्युक्त पांच ग्रहों में कोई स्वराशि या उच्च राशि का होकर केन्द्र में हो, तो साम्राज्य और सिद्धि प्रदान करने वाला होता है। शुक्र, भौम, बुधादि ग्रह यदि सूर्य के साथ अस्तंगत हों, तो जातक को विशेष उत्तम फल न देकर अपनी दशा में केवल शुभ फल देते हैं।

उदाहरण कुं. रूचक योग



(1) रूचक योग- यदि मंगल कुंडली में उच्च राशि का या स्वराशि का होकर केंद्र में स्थित हो तो रूचक नामक योग होता है। ऐसे जातक का दीर्घ चेहरा हो, जातक अत्यन्त साहसी, गुणी, शूरवीर, कांति युक्त सुंदर, सुगठित शरीर, रक्त-गंदमी वर्ण, बलिष्ठ शत्रुओं पर विजय पाने वाला, कीर्तिवान, धनवान्, परिश्रमी और स्वाभिमानी स्वभाव का होता है।

दीर्घास्य स्वच्छ कान्ति बहुरुचिरबलः साहसावाप्त कार्य।
गर्विष्ठो रूचके प्रतीत गुणवान् सेनापतिः जित्वरः॥

ऐसा जातक अपने साहस, बल से कार्य सिद्धि करवाने वाला, कुछ तेज स्वभाव, गुरु एवं देवी-देवताओं का भक्त, ज्योतिष, मंत्र, धर्म आदि शास्त्रों में रुचि रखने वाला, धन, यश एवं सवारी आदि सुखों से युक्त तथा दीर्घायु होता है। देखें उदा. कुंडली नं. 73

उदाहरण कुंडली-प्रस्तुत जन्म कुंडली का जातक सुन्दर वर्ण, साहसी, आकर्षक व्यक्तित्व, भूमि-जायदाद, सुन्दर व सुशील स्त्री, सवारी, विपुल धन-सम्पदा, सन्तान आदि सुखों से सम्पन्न होता है। यह जातक प्रसिद्ध उद्योगपति, परोपकारी स्वभाव एवं धर्म-परायण भी है। अधिक जानकारी हेतु ज्योतिष तत्व (फलित) खंड प्रथम की कुंडली नं. 1 देख सकते हैं।

(2) भद्र योग-बुध यदि अपनी उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो भद्र नामक योग बनता है। ऐसा जातक तीव्र बुद्धिमान, प्रभावशाली, सुन्दर मुखाकृति, स्वच्छ रहन-सहन, मृदु एवं मधुरभाषी, दीर्घायु, संतुलित एवं सुगन्धित शरीर और सुन्दर नाक वाला, सात्त्विक एवं परोपकारी दानी स्वभाव, ज्योतिष, धर्म एवं योगादि शास्त्रों का जानकार, विद्वान, धैर्यवान, धर्मात्मा, शंख के समान वाणी, बौद्धिक कार्यों में विशेष कुशल, स्वतंत्र विचारक किन्तु अपने विचारों को गुप्त रखने वाला, यशस्वी एवं लोगों में आदर प्राप्त करने वाला, ऐसे जातक के हाथ एवं पावों में शंख, पक्षी, चक्र, ध्वजा, कमल आदि के चिन्ह भी होते हैं।

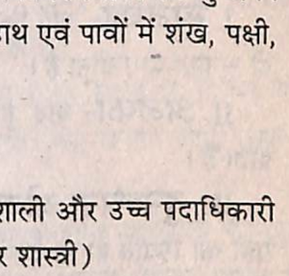
आयुष्मान् सकुशाग्र बुद्धिः अमलो विद्वज्ञनश्लाधितो।
भूपो भद्रकयोगजोऽति विभवश्चारस्थानं कोलाहलः॥

ऐसे जातक का सुन्दर मस्तक, लम्बी, गोल एवं पुष्ट बाहें, धन-सम्पदा से युक्त वैभवशाली और उच्च पदाधिकारी होता है। उदाहरण कुंडली हेतु देखें धनु लग्न के अन्तर्गत कुंडली नं. 86 (श्री लाल बहादुर शास्त्री)

(3) हंस योग-यदि गुरु उच्च राशि, स्वराशि या मूलत्रिकोण (धनु) राशि में लग्न से केन्द्र स्थानों में हो, तो हंस नामक योग होता है। ऐसा जातक लाल कमल के समान सुन्दर मुख वाला, ऊंची नाक, सुन्दर पैर, प्रसन्न चित्त, हंस के समान श्वेत वर्ण, लाल नखों से युक्त, कामुक, हंस के समान मृदु वाणी, गोलाकार सिर व मस्तक, शहद जैसे वर्ण की चक्षुओं जैसा, कामातुर एवं कफ प्रधान प्रकृति का होगा। उसके हाथ तथा पैरों में शंख, कमल, मछली, माला, रज्जु आदि के चिन्ह होते हैं। जातक दीर्घायु होता है। जातक गुणी, विद्वान, धर्म-शास्त्र परायण, उदार हृदय एवं परोपकारी होता है।

रक्तास्योन्नतनासिक सुचरो हंसः प्रसन्नोन्दियो।
गौरः पीनकपोल रक्तजो हंसस्वरः श्लेषमवान्॥

उदाहरण मालव्य योग



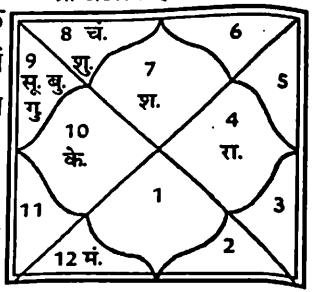
उसकी आयु 84 वर्ष की होती है। ऐसा जातक धर्म, योग, ज्योतिष, मंत्रादि शास्त्रों में रुचि रखने वाला होता है। देखें उदाहरण कुं.नं. 116

(4) मालव्य योग-यदि शुक्र उच्च राशि या स्वक्षेत्री होकर लग्न से केन्द्र भावों में हो, तो मालव्य योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक सुंदर शरीर एवं आकर्षक व्यक्तित्व, कुछ पतली कमर, ऊंची नाक, सुन्दर व आकर्षक नेत्र, गुणवान, तेजस्वी, पंडित, धनवान, स्त्री-पुत्र एवं वाहनादि सुखों से युक्त परंतु कामुक प्रवृत्ति का होता है। ऐसा जातक यशस्वी,

व्यवसाय में लाभ, संगीत, अभिनय, नृत्यादि कलाओं से लाभ एवं उन्नति करने वाला तथा सुख-साधनों से सम्पन्न एवं ऐश्वर्यवान होता है। ऐसा जातक/जातिका अपने कार्य क्षेत्र में प्रसिद्ध होता है। देखें उदाहरण कुंडली नं. 77 (ज्योतिष तत्त्व फलित) तथा एक अन्य उदाहरण।

(5) शश योग–यदि शनि उच्च राशि, स्वराशि अथवा मूलत्रिकोण, राशि का लग्न से केंद्र भाव में स्थित हो तो शश (या शशक) योग होता है। इस योग के प्रभाव से जातक अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व, उच्च प्रतिष्ठित, उच्च पदाधिकारी अथवा राजतुल्य सेवकों एवं सुख-साधनों से युक्त तथा भूमि-मकान, धन-सम्पदा, वाहनादि सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक तीव्र बुद्धि, माता एवं अतिथियों का आदर करने वाला, वन, पर्वत, समुद्र, नदियां आदि प्राकृतिक स्थलों में भ्रमणप्रिय तथा प्रेम करने वाला, छिन्द्रान्वेशी, लोहा, पीतल, सोना, चांदी आदि कार्यों से विशेष लाभ प्राप्त करने वाला, विनोदप्रिय एवं व्यंग्यात्मक वाणी का प्रयोग करने वाला होता है। ऐसा जातक धनवान एवं सुख साधनों से सम्पन्न तथा अपने कार्य क्षेत्र में उच्चस्थ एवं श्रेष्ठ होता है।

कुण्डली संख्या नं. 63
श्री अटल बिहारी वाजपेयी



शस्तः सर्वजनैः सुभृत्यबलवान् ग्रामाधिपो वा नृपो।
दुर्वृत्तः शश योगजोऽन्यवनिता वित्तान्वितः सौख्यवान्॥

देखें उदाहरण कुंडली नं. 63 (प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी)

सुनफा, अनफा एवं दुरूधरा योगों का फल

हित्वार्कं सुनफानफादुरुधराः स्वान्त्योभयस्थैः ग्रहैः॥

I. **सुनफा**- यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में चन्द्रमा से दूसरे स्थान में सूर्य को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो तो सुनफा योग होता है।

II. **अनफा**- यदि कुंडली ने चन्द्रमा से बारहवें भाव में सूर्य के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह स्थित हो तो अनफा योग होता है।

III. **दुरूधरा योग**- जन्म कुंडली में चन्द्रमा से दूसरे तथा बाहरवें दोनों ही भावों में सूर्य के अतिरिक्त भौमादि ग्रहों की स्थिति हो तो दुरूधरा नामक योग होता है। इसका फल आगामी पृष्ठों पर पढ़ें।

I. **सुनफा योग**- (सामान्य फल) जिसकी कुंडली में सुनफा योग होता है, वह जातक अपने परिश्रम, पराक्रम से धनोपार्जन करने वाला, वह राज़ तुल्य सुख-साधनों से युक्त, यशस्वी, बुद्धिमान, धर्म परायण, धनवान्, विविध सुखों से युक्त, यशस्वी तथा ख्यातिवान् होता है।

स्वयमधिकृत वित्तः पार्थिवस्तत्समो वा।
भवति हि सुनफायांधी धनख्यातिमांश्च॥

विभिन्न ग्रहों के योग से सुनफा योग–

(1) यदि चंद्र से द्वितीय स्थान में मंगल हो तो जातक कुछ तेज स्वभाव का परन्तु धैर्यवान्, पराक्रमी, धनी, निज पराक्रम से धनार्जन करने वाला होता है।

(2) चंद्र से दूसरे भाव में बुध हो, तो जातक धार्मिक विचारों वाला, सुंदराकृति, परोपरकारी, संगीत, साहित्य आदि कलाओं में कुशल एवं व्यवहार कुशल होता है।

(3) चंद्र से दूसरे गुरु हो, तो जातक बुद्धिमान, उच्च विद्या प्राप्त, धन-सम्पदा, सन्तान आदि अच्छे परवार से युक्त, राजा के समान यशस्वी एवं सम्पन्न होता है।

(4) यदि शुक्र चन्द्रमा से द्वितीय हो, तो जातक धन-धान्य, भूमि, सवारी एवं स्त्री आदि के सुखों से सम्पन्न तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध रखता है।

(5) यदि चन्द्र से दूसरे स्थान शनि सुनफा योग करे तो जातक सब कार्यों में निपुण, धनी, बुद्धिमान, नगर वासियों द्वारा सम्मानित, मन्त्रणा व कार्य प्रणाली को गुप्त रखने वाला एवं सूक्ष्म बुद्धिमान होता है।

II. **अनफा योग**-(सामान्य फल) की जन्म कुंडली वाला जातक स्वास्थ्यवान्, सुंदर वेषभूषा, सांसारिक सुखों से युक्त, गुणवान्, प्रियभाषी एवं उच्चपदाधिकार एवं धन-सम्पदा से युक्त होता है।

प्रभु रगदशरीरः शीलवान् व्यक्त कीर्ति।
विषय-सुख सुवेषो निर्वृतश्चान फायाम्॥

(1) चन्द्र से १२वें मंगल हो, तो जातक शीघ्र उत्तेजित एवं क्रोधित हो जाने वाला, धृष्ट, अपने शरीर, स्वास्थ्य एवं सौष्ठव का विशेष ध्यान रखने वाला, कुछ उग्र प्रकृति का व रण के लिए उत्सुक होता है।

(2) चन्द्र से १२वें बुध हो तो जातक जातक सुंदर शरीर, यशस्वी, बुद्धिमान, लेखन, पठन, संगीत आदि में रूचि, बोलने में कुशल, अच्छा वक्ता एवं लोकप्रिय होता है।

(3) यदि गुरु चन्द्रमा से १२वें भाव में हो, तो जातक धर्म-परायण, अत्यन्त बुद्धिमान, मेधावी, अच्छी स्मरण शक्ति, सात्त्विक गुणसम्पन्न, उच्च प्रतिष्ठित (मंत्री आदि) लोगों द्वारा सम्मानित, भूमि, मकान, धन आदि में सम्पन्न तथा शुभ कार्यों में संलग्न होता है।

(4) यदि चंद्र से बारहवें हो, तो जातक सुंदर मुख, बुद्धिमान, धन-सम्पदा, सवारी आदि सुखों से सम्पन्न, कामुक, विलास आदि कार्यों में अधिक खर्च करने वाला होता है।

(5) यदि अनफा योगकारक ग्रह शनि हो, तो जातक प्रभावशाली, लम्बी भुजाओं वाला, दूसरों के कहने को मान लेने वाला, गुणवान, धनवान्, वाहनादि सुखों से युक्त परंतु गृहस्थ जीवन में सुख की कमी होती है।

दुरूधरा योग-(सामान्य फल) जब चन्द्र से दूसरे तथा बारहवें स्थान दोनों में ग्रहों की स्थिति हो, तो यह योग होता है। इस योग के प्रभावस्वरूप जातक गुणी, धनी, पराक्रमी, भूमि, मकान, वाहन, भृत्य, स्त्री, सन्तान आदि सुखों से युक्त एवं राजतुल्य सुख-साधनों से सम्पन्न होता है।

(क) यदि मंगल तथा बुध की पारस्पारिक स्थितियों से दुरूधरा योग बनता हो तो जातक लोक व्यवसाय में निपुण, गुणवान, दयालु किन्तु कई बार लोभवश असत्य का आचारण करने वाला, कार्य-कुशल, धनवान्, साधन सम्पन्न एवं परस्त्री में आसक्त होता है।

(ख) मंगल और गुरु ग्रहों से दुरूधरा योग बनता हो, तो जातक निज उद्योग से धनी, वैभवशाली, शत्रुओं के कारण, परेशान, अनेक साधनों से धनार्जन करने वाला तथा अधिक यात्रा न करने वाला होता है।

(ग) यदि मंगल और शुक्र की स्थिति से दुरूधरा योग बनता हो जातक सुन्दर शरीर, प्रसन्न चित्त, कामुक, व्यायाम का शौकीन, अस्त्र-शस्त्र विद्या का जानकार, विवाद (झगड़े) में उत्साह दिखाने वाला, पत्नी सुंदर एवं सुशीला होती है।

(घ) यदि चन्द्र से द्वितीय एवं द्वादश भावों में मंगल शनि हों तो जातक विभिन्न स्रोतों से धर्नाजन करने वाला, कामी, व्यसनी, क्रोध युक्त, शत्रुओं से चिन्तित, चुगलखोर, स्त्रियों में आसक्त, अतृप्त एवं अशान्त मन वाला होता है परंतु तकनीकि कार्यों में कुशल होता है।

इस प्रकार अशुभ एवं क्रूर ग्रहों से आक्रान्त (घिरा हुआ) चन्द्रमा, अशुभ फल तथा सौम्य ग्रहों के बीच चन्द्र होने से ग्रहों **की प्रकृति** अनुसार धनादि शुभ फल प्रदान करते हैं।

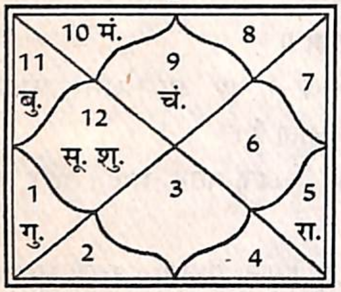
ध्यान रहे, जातक पारिजातानुसार सुनफा, अनफा, दुरूधरा, केमद्रुम, प्रव्रज्या आदि योगों के फल पाराशर आदि

मुनियों द्वारा सर्वसम्मत नहीं हैं। इनमें से कुछ जैन/यवनमतानुसारी हैं। देखें पृष्ठ 503 जा.पा.।

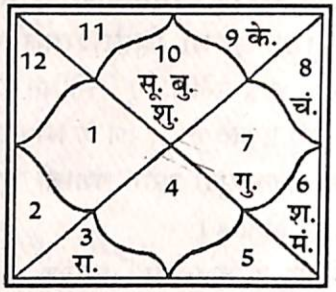
इसके अतिरिक्त सुनफा, अनफा आदि योगों के फल का निर्णय करते समय क्षीण, सबल आदि चन्द्रमा का भी ध्यान कर लेना चाहिए। चन्द्रमा यदि क्षीणबली हो, तो सुनफा आदि के जो फल कहे हैं, वोह कुछ ठीक नहीं बैठते। इसके अतिरिक्त सुनफा, दुरूधरा योगकारक ग्रह यदि कुंडली में नीच, अस्तादि स्थिति में हों तो भी वांछित फल नहीं देंगे।

उदाहरण कुण्डलियां सुनफा, अनफा एवं दुरूधरा योग

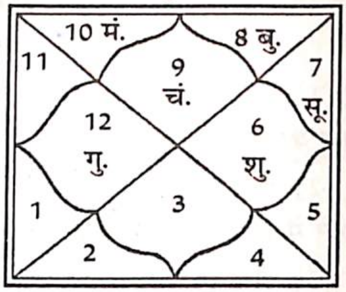
उदाहरण सुनफा योग



उदाहरण अनफा योग



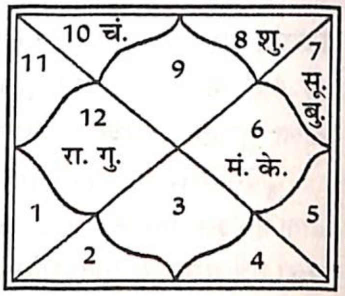
उदाहरण दुरूधरा योग



केमद्रुम योग

परिभाषा-(i) यदि किसी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से प्रथम, द्वितीय अथवा द्वादश (1, 2, 12वें) स्थानों में कोई ग्रह स्थित न हो, तो केमद्रुम नामक अशुभ योग होता है।

उदाहरण केमद्रुम योग



(ii) अथवा चन्द्र या लग्न से केन्द्र में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह न हो, तो केमद्रुम नामक अशुभ योग बनता है।

इस योग के फलस्वरूप जातक को विद्या, बुद्धि एवं सुखों में कमी रहती है। जातक वृथा बोलने वाला, धर्म विरुद्ध आचरण करने वाला, आर्थिक परेशानियां, पारिवारिक सुख में कमी, विदेश में विचरण करने वाला तथा सुख-शान्ति में कमी, वृथा भय अनुभव करने वाला, निन्दित कर्म में रत, परन्तु दीर्घायु होता है।

"केमद्रुमे भवति पुत्रकलत्र हीनो। देशान्तरे व्रजति दुखसमाभितप्तः।
ज्ञाति प्रमोद निरतो मुखरः कुचैलो नीचः सदाभक्त भीतियुतश्चिरायु॥" **(मा.सा.)**

केमद्रुम भंग योग-(i) यदि कुण्डली में चन्द्र केन्द्र में हो, अथवा किसी अन्य ग्रह से युक्त हो, तो केमद्रुम का अशुभ फल नहीं होता तथा जातक दीर्घायु होकर धन-धान्य से युक्त होता है।

(ii) यदि चन्द्र स्वराशि या स्वोच्च राशि में होकर शुभ अवस्था में हो अथवा मित्र ग्रह की राशि में होकर गुरु, शुक्र, बुध की दृष्टिगत हो, तो केमद्रुम योग का अशुभ फल नष्ट हो जाता है तथा जातक धन-पुत्रादि से सम्पन्न होता है।

(iii) जन्म लग्न में चन्द्रमा पर सब ग्रहों की दृष्टि हो, तो भी केमद्रुम योग भंग होकर शुभ फल होते हैं।

(iv) यदि कुण्डली में सभी ग्रह चारों केन्द्र स्थानों में हो, तो भी केमद्रुम के दुष्ट फल भंग होकर शुभ फल होते हैं।

कुण्डली में केमद्रुम योग बना हो, तो वह राजयोग को भी नष्ट कर देता है, अर्थात् राजयोग के फल को क्षीण कर देता है।

योगे केमद्रुमे प्राप्ते यस्मिन् कस्मिन्श्च जातके।
राजयोगा विनशयन्ति हरि दृष्ट्वा यथा द्विपाः॥ जा.पा.

गजकेसरी योग

परिभाषा-यदि किसी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से 1, 4, 7, 10 केन्द्र स्थान में गुरु हो, तो गजकेसरी योग निर्मित होता है।

यदि बुध या शुक्र नीच राशि में न होकर उदित अवस्था में चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखते हों, तो प्रबल **गजकेसरी** योग होता है।

केन्द्रस्थिते देवगुरौ मृगांकात् योगस्तदाहुः गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दु शशांके नीचास्त हीनैः गजकेसरी स्यात्॥

गजकेसरी योग के प्रभावस्वरूप जातक सेवाभावी, गुणवान्, तीव्र बुद्धिमान, मेधावी, विवेकशील, मधुर-लोकप्रिय, श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, भूमि, धन, आवास एवं वाहन आदि सुख साधनों से सम्पन्न, अपने कार्य-क्षेत्र में उच्च प्रतिष्ठित अथवा किसी पार्टी या संस्था का प्रमुख होता है। ऐसा जातक राजमान्य एवं सरकारी क्षेत्रों से भी लाभान्वित होता है।



गजकेसरि सज्जातः तेजस्वी धन-धान्यवान्।
मेधावी गुण-सम्पन्नो राजमान्यो करो भवेत्॥

उदाहरण कुण्डली गजकेसरी योग-

प्रस्तुत उदाहरण कुण्डली नं 106 में चन्द्र से गुरु, शुक्र के साथ सप्तम भाव में होने से धनेश व केन्द्र-त्रिकोणेश शुक्र का भी सम्बन्ध हो जाने से जातक धन-धान्य से सम्पन्न तथा उच्च प्रतिष्ठित हुआ है। विस्तार के लिए देखें गत पृष्ठों में उदाहरण कुं. नं. 106.

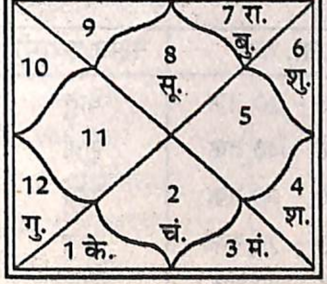
कला निधि योग

जब दूसरे भाव या पंचम भाव में गुरु स्थित हो, और बुध तथा शुक्र दोनों से युक्त अथवा दृष्ट हो, अथवा बुध शुक्र की राशि (2, 7) में अथवा बुध, गुरु, शुक्र के नवांश, राशि आदि में हो, तो कला निधि नाम का योग होता है। यथा

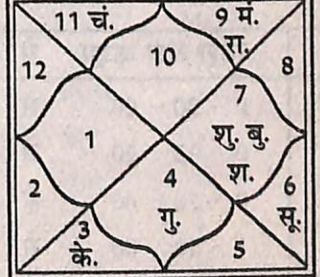
द्वितीये पंचमे जीवे बुध शुक्रयुतेक्षिते।
क्षेत्रे तयोर्वा सम्प्राप्ते, योगः स्यात् स कलानिधिः॥ जा.पा.

कलानिधि योग में उत्पन्न जातक/जातिका रूपवान्, कामी, अनेक कलाओं (अभिनय, नृत्य, गायन आदि) एवं सद्गुणों से युक्त, राजाओं (उच्च प्रतिष्ठित लोगों) द्वारा सम्मानित, राजा के समान हाथी, घोड़ों, सेना आदि अर्थात् सेवकों, भूमि, जायदाद, वाहनों एवं धन-धान्य से सम्पन्न एवं समृद्ध होता है। अधिकांश फिल्मी कलाकारों में यह योग पाया जाता है। उदाहरणार्थ अभिनेत्री रेखा की कुण्डली में देखें-

उदा. कला निधि (सुष्मिता)



उदा. कला निधि (रेखा)



मिस युनिवर्स सुष्मिता सेन की कुण्डली में **बुध, शुक्र की राशि** में तथा शुक्र बुध की राशि में होने से स्थान विपर्यय योग हुआ है। कला एवं सौन्दर्य का सम्मिलन हुआ है। चंद्र एवं गुरु भी उच्चस्थ होने से कला निधि योग को विशेष बल मिला है। अभिनेत्री रेखा की कुण्डली में भी बुध शुक्र के क्षेत्र में स्वोच्च शनि के साथ योगकारक विशेषतः कलानिधि योग बना है।

ग्रहों की विंशोत्तरी दशाओं का वर्णन

फलित ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों द्वारा अपना शुभशुभ फल प्रदान करने का समय ज्ञात करने के लिए **भारतीय दशा-पद्धति** का विशेष महत्त्व है। सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा एवं सूक्ष्म दशाकाल में फल देते हैं। भारतीय आचार्यों ने ग्रहों की अनेक प्रकार की दशाओं एवं अन्तर्दशाओं आदि का वर्णन किया है, जैसे विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा, अष्टोतरी दशा, काल दशा इत्यादि मुख्य हैं। परन्तु उत्तरी भारत में सर्वाधिक महत्त्व एवं मान्यता महर्षि पाराशर द्वारा प्रतिपादित विंशोत्तरी महादशाऽन्तर दशा पद्धति को दी जाती है। तदनन्तर योगिनी दशा एवं तदुपरान्त अष्टोतरी दशा को मान्यता प्रदान की जाती है। आचार्य वराहमिहिरानुसार जातक को जिस ग्रह की दशाऽन्तरदशा होती है, उस ग्रहावधि में उस ग्रह की छाया जातक पर रहती है। अग्नि (तेज), पृथ्वी, जल, आकाश और वायु- इन पांचों में से जो महाभूत जिस ग्रह से सम्बन्धित होता है, वह ग्रह अपनी दशा और अन्तर्दशा में उस महाभूत की कांति को प्राणी के शरीर एवं उसकी चेष्टाओं से प्रकट करता है। जैसे सूर्य एवं मंगल की दशा में जातक रूपवान, तेजवान एवं कान्तियुक्त हो जाता है। यदि अशुभ हो, तो जातक में क्रोधाधिक्य, पित्त प्रकोप, नेत्र पीड़ा या रक्त विकार होते हैं। यदि जातक को मधुर-अम्लादि मृष्ट रसों के प्रति रूचि, संगीत, गायन, कल्पना, काम एवं भोगासक्ति की प्रबलता हो, तो जातक पर चन्द्र एवं शुक्र कृत जल की छाया जानें। जब जातक के शरीर से उत्तम सुगन्धि (बुध नीचादि अशुभ हो, तो दुर्गन्धि) आती हो, तो बुध कृत पृथ्वी की छाया जानें। जब जातक की प्रवृत्ति धर्म-कर्म एवं परोपकार की ओर बढ़े एवं भक्ति संगीत की ओर रूचि हो और वाणी में भी मधुरता एवं गाम्भीर्य हो तो, गुरु कृत आकाश तत्त्व सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए। जो स्पर्श में कोमल हो, या वायु सम्बन्धी प्रकोप हो, तो आकाश सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए।

छाया शुभाशुभ फलानि निवेदयन्ती लक्ष्म्या मनुष्यपशु पक्षिषुलक्षणज्ञैः।
तेजो गुणान् बहिरपि प्रतिभासयन्ती, दीपप्रभा स्फटिकरत्न घटस्थितेव॥ वृहत्संहिता॥

"**विंशोत्तरी दशा**" का मुख्य आधार **चन्द्र स्पष्ट** एवं उससे सम्बन्धित **नक्षत्र** होते हैं। किसी जातक के जन्म समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है। उस नक्षत्र-चरण के अनुसार ही ग्रह दशा का निर्धारण किया जाता है। किसी व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र में होगा, उसी नक्षत्र के स्वामी ग्रह से विंशोत्तरी दशा का प्रारम्भ माना जाता है। चन्द्र स्पष्ट तथा नक्षत्रों के भयात्-भभोग (सर्वर्क्षं) द्वारा जन्म दशा के भोग्य वर्षों को जानने की सरल विधियां "**ज्योतिष तत्त्व-गणित खण्ड में तथा पंचाँग दिवाकर**" (**कृत पंडित पन्ना लाल ज्यो.**) में पढ़ सकते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए चन्द्र संचार से ग्रहों की **भोग्य दशा** वर्षों का विवरण संक्षिप्त रूप से आगामी पृष्ठों पर कर रहे हैं। गणित सहित इसका विस्तृत विवरण **ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)** में लिख चुके हैं।

चन्द्र स्पष्ट से नक्षत्रों एवं ग्रहों के भोग्य वर्ष

क्रम	नक्षत्र	राशि अंश कला	से	रा. अं. क. तक	नक्षत्र स्वामी	दशा वर्ष
1.	अश्विनी	0 - 00 - 00	से	0 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
2.	भरणी	0 - 13 - 20	से	0 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
3.	कृतिका	0 - 26 - 40	से	1 - 10 - 00 तक	सूर्य	6 वर्ष
4.	रोहिणी	1 - 10 - 00	से	1 - 23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
5.	मृगशिर	1 - 23 - 20	से	2 - 06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
6.	आर्द्रा	2 - 06 - 40	से	2 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
7.	पुनर्वसु	2 - 20 - 00	से	3 - 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष

क्रम	नक्षत्र	राशि अंश कला	से	रा. अं. क. तक	नक्षत्र स्वामी	दशा वर्ष
8.	पुष्य	3 - 03 - 20	से	3 - 16 - 40 तक	शनि	19 वर्ष
9.	आश्लेषा	3 - 16 - 40	से	4 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष
10.	मघा	4 - 00 - 00	से	4 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
11.	पूर्वाफाल्गुनी	4 - 13 - 20	से	4 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
12.	उत्तराफाल्गुनी	4 - 26 - 40	से	5 - 10 - 00 तक	सूर्य	6 वर्ष
13.	हस्त	5 - 10 - 00	से	5 - 23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
14.	चित्रा	5 - 23 - 20	से	6 - 06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
15.	स्वाती	6 - 06 - 40	से	6 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
16.	विशाखा	6 - 20 - 00	से	7 - 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
17.	अनुराधा	7 - 03 - 20	से	7 - 16 - 40 तक	शनि	19 वर्ष
18.	ज्येष्ठा	7 - 16 - 40	से	8 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष
19.	मूला	8 - 00 - 00	से	8 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
20.	पूर्वाषाढ़ा	8 - 13 - 20	से	8 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
21.	उत्तराषाढ़ा	8 - 26 - 40	से	9 - 10 - 00 तक	सूर्य	6 वर्ष
22.	श्रवण	9 - 10 - 00	से	9 - 23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
23.	धनिष्ठा	9 - 23 - 20	से	10 - 06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
24.	शतभिषा	10-06 - 40	से	10 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
25.	पूर्वाभाद्रपद	10-20 - 00	से	11 - 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
26.	उत्तराभाद्रपद	11-03 - 20	से	11 - 16 - 40 तक	शनि	19 वर्ष
27.	रेवती	11-16 - 40	से	0 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष

☼ प्रत्येक ग्रह के अन्तर्गत तीन-तीन नक्षत्रों का समावेश होता है। जो ग्रह जिन-जिन नक्षत्रों का स्वामी होता है। तदनुसार ही नक्षत्र के दशा वर्षों का निर्धारण होता है। **जैसे** – कृतिका, उत्तराफाल्गुनी एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों का स्वामी **सूर्य** ग्रह होने से, कृतिका आदि प्रत्येक नक्षत्र की दशा का मान सूर्य प्रदत्त छः (6) वर्ष होंगे। इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों की दशा के भोग्य वर्ष मान होंगे। आगे लिखी तालिका से स्पष्ट होगा –

जन्म नक्षत्र (Birth Nakshatra)	(क्रम)	नक्षत्र स्वामी ग्रह (Lord of Nakshatra)	भोग्य दशा वर्ष Duration of Period
कृतिका, उ. फाल्गुनी, उ. षा.	1.	सूर्य	6 वर्ष
रोहिणी, हस्त, श्रवण	2.	चन्द्र	10 वर्ष
मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा	3.	मंगल	7 वर्ष
आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा	4.	राहु	18 वर्ष
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद	5.	गुरु	16 वर्ष
पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद	6.	शनि	19 वर्ष
अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	7.	बुध	17 वर्ष
मघा, मूला, अश्विनी	8.	केतु	7 वर्ष
पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी	9.	शुक्र	20 वर्ष

विंशोत्तरी दशा पद्धति में ग्रहों की दशा का क्रम उपरोक्त तालिका में दर्शाए गए अनुक्रम के अनुसार ही किया जाता है, यथा-सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र। इसको कण्ठस्थ करने के लिए (आ चं भौ रा जी शबु केशु) का सूत्र याद कर सकते हैं, जैसे आ से तात्पर्य सूर्य, च से चन्द्र, भौ को भौम (मंगल), रा को राहु, जी को जीव (गुरु) समझें इत्यादि।जन्म समय किसी ग्रह की भुक्त-भोग्य दशा ज्ञात करने के लिए चन्द्र स्पष्ट पद्धति एवं नक्षत्र के भयात्-भभोग की प्रक्रिया ग्रहण की जाती है। दोनों विधियों द्वारा किसी ग्रह की भोग्य दशा लगभग समान आती है। दोनों प्रकार की प्रणालियों का सरल विवरण उदाहरण सहित हमारी पँचाग दिवाकर का ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में देख सकते हैं।

ग्रहों की अन्तर्दशा जानने की विधि

ग्रहों की अन्तर्दशा के भोग्य वर्ष, मास आदि जानने के लिए महादशा ग्रह के वर्षों को अन्तर्दशा ग्रह के वर्षों से गुणा करके जो संख्या मिले, उसे 120 से भाग देने पर अन्तर्दशा के **भोग्य वर्ष,** फिर शेष को 12 से गुणा करके पुनः 120 से भाग देने पर तथा शेष 30 से गुणा करके पुनः 120 से भाग देने पर हमें अन्तर्दशा के भोग्य दिन आदि प्राप्त होंगे। **उदाहरण स्वरूप** - यदि हमें शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के भोग्य वर्षादि जानने हैं, तो शनि की महादशा के 19 वर्ष को शुक्र दशा के 20 वर्ष से गुणा करने पर हमें 380 की संख्या मिली, इसको 120 से भाग देने पर 3 वर्ष तथा शेष 20 को 12 से गुणा करके प्राप्त संख्या 240 को पुनः 120 से भाग देने पर हमें 2 मास प्राप्त हुए। इस प्रकार शनि महादशा के मध्य शुक्रान्तर भोग्यदशा 3 वर्ष, 2 महीने होगी। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों की अन्तर्दशाएं जान सकते हैं। सूर्यादि सभी ग्रहों की अन्तर्दशाओं के भोग्य वर्ष, मासादि के चक्र आप **ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)** में तथा **पंचाँगदिवाकर** में अवलोकन कर सकते हैं।

ग्रहों की विंशोतरी महादशा के फलादेश के सम्बन्ध में उपरोक्त 'ज्योतिष तत्व' (गणित खण्ड) **पृष्ठ 210** से **पृष्ठ 213** तक का अध्ययन कर सकते हैं। सम्पादक

दशाऽन्तर्दशा के फलादेश सम्बन्धी विशेष नियम

(1) जो ग्रह उच्च राशिस्थ, मित्र राशि या वर्गोत्तम में हो या स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ५, ७, ९, १०) में स्थित हो, वह अपनी दशा या अन्तर्दशा काल में कार्यों में लाभ व उन्नति, आरोग्य सुख, अभीष्ट कार्यों में सफलता, भाग्योन्नति आदि सुख प्रदान करवाता है।

(2) जो ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, वक्री ग्रह एवं अस्तंगत हो, उसकी दशाऽन्तर्दशा में बनते कामों में अड़चनें, धन हानि, रोग एवं शत्रु भय, अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं। इसी भांति वक्री ग्रह की दशा में स्थान परिवर्तन, धन हानि एवं सुख में कमी होती है।

(3) पाप ग्रह की महादशा में अशुभ भावस्थ पाप ग्रह की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य हानि, शत्रु भय, धन का नुकसान, बन्धुओं से वैर, कलह-क्लेश, अड़चनें, मानसिक व शारीरिक कष्ट होते हैं।

(4) जिस ग्रह की महादशा हो, उससे छटे या आठवें या 12वें स्थान में स्थित ग्रहों की अन्तर्दशा हो, तो जातक को धन हानि, कार्य-व्यवसाय में बाधाएं, अत्यधिक संघर्ष एवं धन का खर्च, स्थानान्तरण एवं मानसिक तनाव, कलह व शरीर कष्ट होते हैं।

(5) शुभ ग्रह की महादशा के मध्य शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो, तो उसका फल उत्तम होगा। उसमें धन लाभ, आरोग्य सुख, अभिलषित कार्यों में सफलता, विद्या लाभ एवं स्त्री (पति) सुख व संतान आदि सुख प्राप्त होते हैं। महादशा स्वामी एवं अन्तर्दशा स्वामी दोनों बलान्वित हों, तो और भी अच्छा है।

(6) केन्द्र भावों को विष्णु स्थान और त्रिकोण भावों को लक्ष्मी स्थान भी कहा जाता है। केन्द्र त्रिकोण के स्वामी ग्रह यदि केन्द्र-त्रिकोण (1-4-5-7-9-10) भावों में ही आ जावें, तो विशेष शुभ फल देते हैं,इनकी दशाऽन्तर्दशा में विपुल

धन लाभ, धर्म-परायणता, विद्या, भूमि-जायदाद, विद्या एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा स्त्री-संतान सम्बन्धी पारिवारिक सुखों की उपलब्धि होती है।

(7) दु:स्थानों (6, 8 एवं 12वें) स्थानों में स्थित ग्रहों अथवा उनके स्वामी ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में धन हानि, रोग, शत्रु भय, धन का अत्यधिक खर्च, कठिनाईयाँ, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव एवं संघर्ष होते हैं।

(8) जो ग्रह शुभ एवं योगकारक ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा अस्त, वक्री एवं सन्धिगत न हो, तो उस ग्रह की दशाऽन्तर्दशा में धन लाभ, प्रिय बन्धुओं का सुख, भूमि, वाहन आदि का लाभ, विद्या एवं धर्म में रुचि तथा कार्यों में सफलता होती है।

(9) महादशा ग्रह का स्वामी एवं अन्तर्दशा ग्रह का स्वामी परस्पर मित्र क्षेत्री हों तथा कुण्डली में उनकी पारस्परिक स्थिति 6-8 या 12वीं न हो, तो उनकी दशाऽन्तर्दशा में ग्रह अपने भावेशत्व के अनुसार भूमि, जायदाद, धन, परिवार आदि का सुख प्रदान करेगा।

(10) जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, यदि अन्तर्दशा स्वामी ग्रह उसका शत्रु हो, या शत्रु राशि में स्थित हो, या छठे/आठवें में हो, या लग्नेश का शत्रु हो, तो ऐसी अन्तर्दशा में शत्रु भय, रोग भय, धन हानि, स्थान परिवर्तन, भाई-बन्धुओं से वैर-विरोध तथा बनते कार्यों में अड़चनें पड़ती हैं।

(11) शुभ ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो, उस अन्तर्दशा का पूर्वार्द्ध भाग सुखदायक और उत्तरार्द्ध भाग कष्टकारी होता है।

(12) शनि की दशा में चन्द्र का अन्तर अथवा चन्द्रमा की दशा में शनि का अन्तर काल प्राय: आर्थिक दृष्टि से कष्टकारी रहता है।

इसके अतिरिक्त यदि चन्द्रमा शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में हो, तो उसकी महादशा के मध्य यदि सप्तमेश की अन्तर्दशा हो, तो भी कष्टकारी होती है।

(13) शनि में मंगल अथवा मंगल में शनि की अन्तर्दशा संघर्षपूर्ण, रोग एवं शरीर कष्ट तथा आर्थिक दृष्टि से परेशानीकारक रहती है।

(14) शनि में सूर्य की दशा और सूर्य में शनि की अन्तर्दशा प्राय: जातक के स्वास्थ्य की दृष्टि से तथा उसके माता-पिता एवं अग्रजों के लिए कष्टकारी होती है।

(15) राहु और केतु की दशाऽन्तर्दशा प्राय: अशुभ फली होती है। यदि राहु ३, ६ या ११वें भाव में हों, तो अच्छा फल भी प्रकट होता है।

(16) जो ग्रह उच्च राशि से निकल कर नीच राशि की ओर जा रहा हो, उसकी दशा को **अवरोहिणी दशा** कहा जाता है। यह दशा अशुभ एवं कष्टकारी होती है। परन्तु यदि अवरोही ग्रह उच्च, मित्र या अपने नवांश में हो, तो वह दशा मिश्रित फल देने वाली होती है।

(17) जो ग्रह नीच से उच्च राशि की ओर अग्रसर हो, उसकी दशा को **आरोहिणी दशा** कहते हैं। इस अवधि में जातक को शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि ग्रह नीच या शत्रु राशि के नवांश में हो, तो शुभ फलों में कमी होती है।

(18) यदि कोई ग्रह अपनी उच्च राशि, मित्र राशि या स्वराशिगत हों, परन्तु वही ग्रह नीच या शत्रु नवांश में हो तो उस ग्रह की दशा पूर्वार्ध भाग में शुभ तथा उत्तरार्ध में मिश्रित फल देने वाली होगी।

(19) ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा के फल सम्बन्धी अन्तिम निर्णय करते समय उस समय के गोचर ग्रहों के प्रभाव पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए।

भावेश अनुसार विंशोत्तरी दशा का फल

1. **लग्नेश ग्रह की दशा में** उद्यम में वृद्धि, शारीरिक सुख, धन लाभ, भूमि, वाहन आदि सुख होते हैं, परन्तु धन का अपव्यय एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां भी देखी गई हैं।

2. **द्वितीयेश की दशा में** धन-आय के साधन बढ़ते हैं परन्तु यदि धनेश पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो वृथा खर्च एवं स्वास्थ्य के लिए अशुभ है।

3. **तृतीयेश की दशा में** संघर्ष एवं भ्रमण अधिक रहेगा। भाई-बन्धु एवं आत्मीय जनों के बारे परेशानियां व खर्च भी अधिक होते हैं।

4. **चतुर्थेश दशा में** भूमि, मकान, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, माता का सुख होता है। यदि अशुभ ग्रह युक्त हो, तो माता या पिता दोनों में से किसी एक को शरीर कष्ट का भय।

5. **पंचमेश की दशा में** विद्या की प्राप्ति, धन लाभ, संतान-सुख एवं सोची हुई योजनाओं में सफलता प्राप्त होती है। यदि अशुभ या पाप ग्रह युक्त हों, तो विघ्न एवं अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होती है।

6. **षष्ठेश की दशा में** रोग व शत्रुओं का भय, मातुल पक्ष को कष्ट, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं, शरीर कष्ट तथा खर्च अधिक होते हैं।

7. **सप्तमेश** पाप ग्रह हो, तो उसकी दशा में शरीर कष्ट, धन हानि, स्त्री को कष्ट, तनाव एवं व्यवसाय में बाधाएँ आती हैं। यदि शुभ ग्रह हों, तो मिश्रित फल होते हैं।

8. **अष्टमेश** (पाप ग्रह हो तो) उसकी दशा में परिवारिक बन्धुओं सम्बन्धी परेशानी, आर्थिक उलझनें, बनते कामों में विघ्न, एवं मृत्यु तुल्य कष्ट होते हैं। यदि शुभ ग्रह हों, तो कष्टों में कमी होती हैं।

9. **नवमेश की दशा में** परोपकार एवं धार्मिक भावना में वृद्धि, तीर्थ यात्रा, विद्या में उन्नति, भाग्यवश लाभ व उन्नति, कार्य-व्यवसाय में सफलता और श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं।

10. दश मेश की दशा में कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति, सरकारी क्षेत्रों से लाभ, परन्तु माता के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होगी।

11. **एकादशेश की दशा में** आय के स्रोतों में वृद्धि, तथा गत किए गए प्रयासों में सफलता होती है। विद्या, संतान के लिए शुभ है। यदि एकादशेश पाप ग्रह युक्त व दृष्ट हो, तो स्वयं जातक के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होती है।

12. **द्वादशेश की दशा में** गुप्त चिन्ताऐं, खर्च की अधिकता, वृथा भागदौड़ एवं धन हानि तथा बनते कामों में अड़चनें होती हैं।

दशाफल में प्रत्येक लग्नगत ग्रहों का शुभाशुभ

आगे मेषादि द्वादश लग्नों के अन्तर्गत ग्रह दशाओं के शुभाशुभत्व का विवरण दे रहे हैं। किसी लग्न में ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व का निर्देश सदा के लिए स्थायी नहीं समझना चाहिए। कुछ स्थितियों में किसी लग्न विशेष में शुभफल प्रदक लिखा ग्रह भी अपनी दशाऽन्तर्दशा में अशुभ फल देने लगता है। **उदाहरण स्वरूप** मेष लग्न में गुरु को (भाग्येश होने के कारण) शुभ फल देने वाला लिखा गया है। परन्तु जन्म कुण्डली में यदि गुरु नीच (मकर) राशि का होकर अस्त एवं वक्री होकर पड़ा हो अथवा शत्रु राशिं (२,६) का होकर राहु, शनि आदि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो गुरु अपनी दशाऽन्तर्दशा में जातक को उच्च विद्या एवं भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाऐं, बड़े आत्मीय लोगों के साथ विरोध, धन का अपव्यय एवं रोग आदि अशुभ फल भी होते हैं। इसी प्रकार अशुभ ग्रह भी कई बार स्थान, स्थिति एवं शुभ ग्रहों की दृष्टि के कारण शुभ एवं मिश्रित फल देने लगते हैं। आगे दशा फल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण देते हैं -

दशा फल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण

लग्न राशि	शुभ फल	अशुभ फल	मिश्रित फल
मेष	सूर्य, मंगल, गुरु	बुध, शुक्र	चन्द्र, शनि, राहु, केतु
वृष	सूर्य, बुध, शुक्र शनि	मंगल, केतु	चन्द्र, राहु, गुरु
मिथुन	चंद्र, बुध, शुक्र	मंगल, केतु	सूर्य, गुरु, शनि, राहु
कर्क	चन्द्र, मंगल	बुध, शनि, राहु	सूर्य, केतु, गुरु, शुक्र
सिंह	सूर्य, मंगल	शनि, शुक्र, राहु	चन्द्र, बुध, गुरु, केतु
कन्या	बुध, शुक्र	मंगल, सूर्य, केतु	चन्द्र, शनि, गुरु, राहु
तुला	बुध, शुक्र, शनि	सूर्य, राहु, गुरु	चंद्र, मंगल, केतु
बृश्चिक	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध, शनि, राहु	मंगल, शुक्र, केतु
धनु	सूर्य, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि, राहु	बुध, चन्द्र, केतु
मकर	बुध, शुक्र, शनि	चन्द्र, गुरु	सूर्य, मंगल, राहु, केतु
कुम्भ	मंगल, शुक्र, शनि	चन्द्र, केतु	सूर्य, बुध, गुरु, राहु
मीन	चन्द्र, मंगल, गुरु	सूर्य, शुक्र, राहु	बुध, शनि, केतु

सूर्य की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

सूर्य में सूर्य का अन्तर — कुण्डली में उच्च, स्वराशि या मित्र राशि का होकर १, ३, ६, ९, १० या ११वें भाव में हो, तो जातक के उद्यम एवं पराक्रम में वृद्धि, स्वास्थ्य का लाभ, पिता एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से लाभ, मान-सम्मान एवं पदोन्नति हो, व्यवसाय में धन लाभ के अवसर, विदेश गमन तथा सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होती है। यदि सूर्य शत्रु, नीचादि राशिगत होकर २, ७, ८ या १२वें भाव में हो तो उपरोक्त सुखों में कमी, भाई-बन्धुओं से कलह-क्लेश एवं असहयोग, स्वास्थ्य हानि, आर्थिक एवं परिवारिक परेशानियां, नेत्र विकार तथा क्रोध व उत्तेजना अधिक रहे। यदि सूर्य शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो, तो मिश्रित फल रहेंगे। इन दिनों सूर्य उपासना एवं सूर्य सम्बन्धी दान करना शुभ होगा।

सूर्य में चन्द्रान्तर – कुण्डली में चन्द्र उच्च, स्वराशि, मित्र राशि होकर केन्द्र-त्रिकोणादि शुभ भावों में हो, तो जातक को इस दशा में मन को प्रसन्नता देने वाले समाचार प्राप्त होंगे। धन प्राप्ति के साधनों में वृद्धि, माता एवं स्त्री से सुख, सन्तान सुख तथा कुछ महत्त्वपूर्ण लोगों के साथ मैत्री सम्बन्ध बनेंगे। इस अवधि में सुन्दर वस्त्र, स्त्री आभूषण, वाहन, धन सम्पत्ति आदि सुखों की प्राप्ति तथा परिवारिक जनों का सहयोग भी मिलेगा। विदेश यात्रा एवं धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है। यदि चन्द्र नीच या शत्रुराशिगत होकर अशुभ भावस्थ हो कर क्षीण बली, क्रूर ग्रह युक्त अथवा सूर्य से षडाष्टक स्थिति में हो, तो जातक को शारीरिक एवं मानसिक परेशानी, असुखद यात्रा, गृह कलह, परिवारिक चिन्ता, तनाव, आय कम तथा खर्च अधिक हों। माता या स्त्री सम्बन्धी कष्ट, नेत्र विकार, सिर पीड़ा, वात, कफ आदि सम्बन्धी रोगों का भय हो।

सूर्य में मंगल का अन्तर – मंगल स्वराशि, उच्चादि स्थिति में हो तो जातक के पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, भूमि लाभ, मकान, पुत्र-सन्तति, गृह में मंगल एवं वाहनादि सुखों में वृद्धि होती है। इस अवधि में भाई-बन्धुओं एवं मित्रों का सहयोग, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य में लाभ, सरकारी क्षेत्रों से लाभ एवं सफलता मिलती है। सन्तान सम्बन्धी प्रसन्नता एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। यदि सूर्य से मंगल छटे, आठवें या १२वें स्थान में हो, अथवा नीच, वक्री या शत्रु राशिगत होकर शनि आदि अशुभ ग्रह से युक्त हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से विरोध, धन हानि, रक्त विकार एवं चोटादि का भय, सन्तान कष्ट, किसी प्रिय-बन्धु से तकरार एवं परिवार एवं धन सम्बन्धी चिन्ताएं होती हैं।

सूर्य में राहु का अन्तर – सूर्य व राहु के मध्य स्वाभाविक शत्रुता होती है। परन्तु यदि कुण्डली में सूर्य व राहु के मध्य ३, ६, १०, ११वां सम्बन्ध बनता हो, तो जातक को विघ्नों एवं संघर्ष के बाद धन लाभ, भाग्योन्नति हो, जातक का मन सांसारिक विषयों की ओर अधिक आकृष्ट होता है। जातक को व्यवसाय में दौड़धूप एवं कठिनाईयों के बाद धनार्जन होता है। यदि सूर्य से राहु (कुण्डली में) १, ४, ५, ६, ७, ८ या १२वें स्थान पर हो, तो धन-हानि, स्त्री-पुत्र या अन्य आत्मीय जनों को कष्ट, नेत्र विकार, सिर पीड़ा, मन्दाग्नि, वायु प्रकोप आदि अशुभ फल होते हैं।

सूर्य में गुरु का अन्तर – गुरु उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ५, ७, ९, १०) में हो, तो जातक को उच्च विद्या में सफलता, भाई-बन्धुओं का सुख एवं सहयोग प्राप्त हो, उच्च पद-प्रतिष्ठा, विवाह, संतान एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति, धन सम्पदा एवं पुत्र सुख के योग हों, स्त्री की कुण्डली में पति सुख प्राप्ति के योग। गुरु की भुक्ति में धर्म-कर्म एवं परोपकार में प्रवृत्ति तथा ज्योतिष एवं पौराणिक साहित्य में भी रुचि बढ़ती है तथा गुणों में वृद्धि, श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क होते हैं। सूर्य से गुरु ६, ८, १२वें भाव में हो, नीच राशिस्थ हो या पाप ग्रहों से युक्त हो तो जातक को शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, धन हानि, राज भय, विद्या में रुकावटें, उदर विकार, धन का अपव्यय एवं बनते कामों में अड़चनें, परिवारिक कलह, स्त्री (पति) एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता होती है।

सूर्य मध्ये शनि का अन्तर – कुण्डली में शनि उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा अवधि में शत्रु नाश, व्यवसाय में धन लाभ विवाह एवं सन्तान सुख तथा क्रय-विक्रय में वृद्धि तथा आय के स्रोतों में गुप्त युक्तियों द्वारा बढ़ौत्तरी होती है। महादशा स्वामी सूर्य से शनि यदि ६, ८ या १२वें स्थान पर हो, नीच या पापग्रह युक्त हो, तो जातक को गुप्त शत्रु भय, संकट, बन्धु वियोग, पिता व अग्रजों पर कष्ट, धन हानि, पाप कर्मों में रुचि, बनते कामों में बाधाएं, उच्च विद्या में बाधाएं, शरीर कष्ट, काफ, वायु प्रकोप, दान्तों व कानों में पीड़ा एवं मानसिक तनाव बढ़ जाते हैं।

सूर्य मध्ये बुधान्तर – कुण्डली में बुध उच्च राशि या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो बुध की अन्तरदशा में विद्या में सफलता एवं उन्नति, व्यवसाय में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे, विवाह एवं सन्तान सुख, आय के स्रोतों में वृद्धि, ज्योतिष, गणित, कम्पयूटर्स, तंत्र आदि बौद्धिक कार्यों में रुचि बढ़े।

बुध ६, ८, १२वें भाव अस्त, वक्री आदि स्थिति में हो तो जातक को शरीर कष्ट, व्यवसाय एवं मन में अस्थिरता, सिर पीड़ा, तनाव, वात, पित्त, कफ़ एवं चर्म रोगों का भय होता है।

सूर्य मध्ये केतु का अन्तर – केतु स्वगृही (बृश्चिक, धनु व मीन) राशि का होकर सूर्य से ३, ६, १० या ११वें भाव में हो तो जातक को निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहते हैं। परन्तु आय के साधनों में अनिश्चितता बनी रहती है। आवेशपूर्वक किए गए कार्यों में रुकावटें पैदा होंगी। यदि सूर्य से केतु की स्थिति ६, ८ या १२वें भाव में हो, तो जातक को देश-प्रदेश में भ्रमण करना पड़े एवं भागदौड़ अधिक हो, व्यवसायिक क्षेत्रों द्वारा आय में कमी, परन्तु खर्च बहुत हो, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं आत्मीय जनों को कष्ट, पारिवारिक कलह, स्थानान्तरण एवं शारीरिक कष्ट, नेत्र एवं सिर दर्द व अन्य क्लिष्ट रोगों का भय होता है।

सूर्य मध्ये शुक्र का अन्तर – शुक्र उच्चस्थ, मित्र क्षेत्री हो एवं केन्द्र-त्रिकोण भावों में स्थित हो तो जातक शुक्र की अन्तर्दशा में स्त्री सुख, मकान, वस्त्र, आभूषण एवं वाहनादि भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। उच्चस्तरीय लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। संगीत, गायन, कला आदि क्षेत्रों में रूचि होगी। काम एवं भोगवृत्ति बढ़ेगी। आय के साथ खर्च भी अधिक होंगे। यदि शुक्र कुण्डली में छटे, आठवें या १२वें भाव में नीच या शुभ राशिगत हो, तो जातक को धन हानि अथवा वस्त्रों, मनोरंजन कार्यों एवं स्त्रियों तथा विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक हो, नीच लोगों के साथ संगति अधिक होगी। व्यवसाय आदि पर व्यय अधिक, गुप्त रोग होने की आशंका रहे। स्त्री एवं संतान सम्बन्धी चिन्ता हो।

चन्द्रमा की महादशा में चन्द्रादि ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

चन्द्र मध्ये चन्द्रान्तर – चन्द्र स्वराशि का या उच्च राशिस्थ हो, या केन्द्र-त्रिकोण में मित्र राशि होकर शुभ ग्रह से

युक्त हो, तो जातक का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा, धन लाभ, गृह में विवाह या कन्या सन्तति का सुख, माता व स्त्री सुख की प्राप्ति, गीत-संगीत एवं ललित कलाओं में रूचि, विद्या में सफलता, बहन-भाई एवं मित्रों के साथ प्रेम बढ़ें, वाहनादि सुखों एवं मनोरंजन के साधन बढ़ें, विदेश यात्रा की भी सम्भावना हो। चन्द्र नीच राशिस्थ या पाप युक्त होकर छटे या ८वें भाव में हो, तो माता को कष्ट, धन हानि, स्थान परिवर्तन, कुटुम्ब में विरोध, तनाव तथा बनते कामों में विघ्न होते हैं। इस दशा में चन्द्र का दान व पाठादि करना शुभ होगा।

चन्द्र मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल उच्च या स्वक्षेत्री या केन्द्र-त्रिकोण में मित्र राशि में हो, तो जातक को अपने कार्य क्षेत्र में लाभ एवं सफलता, भाई-बन्धुओं एवं मित्रों का सुख, भूमि-जायदाद, मकान, सन्तान एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि आदि शुभ फल होते हैं। यदि चन्द्र से मंगल छठे, आठवें या द्वादश में पाप युक्त या दृष्ट हो, तो पारिवारिक क्लेश, धन हानि, शत्रुओं एवं विरोधयों के कारण परेशानी, दुर्घटना से चोटादि का भय, रक्त-विकार, स्त्री एवं सन्तान को कष्ट, प्रिय-बन्धुओं से तनाव, अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

चन्द्र मध्ये राहु की अन्तर दशा – चन्द्र व राहु में परस्पर नैसर्गिक शत्रुता है। यदि कुण्डली में राहु शत्रु राशि (कर्क, सिंह, बृश्चिक आदि) में हो, या राहु चन्द्र से १, ६, ७, ८, ९ या १२वें स्थान में हो, तो जातक को शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, व्यवसाय में धन की हानि, भाई-बन्धुओं से विरोध एवं वैमनस्य, शत्रु भय, आय के साधनों में अड़चनें तथा खर्च अधिक रहें, बनते कामों में भी विघ्न हों, खान-पान में गड़बड़ी के कारण शरीर कष्ट एवं मन को दुख देने वाली घटना हो, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानी तथा माता को कष्ट, अवांछित स्थान पर स्थानान्तर होने की सम्भावना होती है। यदि राहु शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो अथवा चन्द्र से ३, ६, १०, ११वें स्थान पर हो, तो राहु की अन्तर्दशा में धन लाभ एवं कोई बिगड़ा हुआ काम सिद्ध होना एवं विदेश गमन आदि शुभ फल होते हैं।

चन्द्र मध्ये गुरु का अन्तर – कुण्डली में गुरु केन्द्र-त्रिकोण में हो एवं उच्च या स्वराशि में हो, तो गुरु की अन्तर्दशा में उच्च विद्या में सफलता, बिगड़े कामों में सुधार, व्यवसाय में धन लाभ या पदोन्नति, धर्म एवं परोपकार में रूचि, विदेश यात्रा, मित्रों एवं भाई-बन्धुओं से समागम, भूमि-जायदाद, वाहनादि सुख-साधनों में वृद्धि, विवाह, सन्तान आदि सुख प्राप्ति, पुत्र लाभ की सम्भावना होती है। यदि गुरु नीच, अस्त, शत्रु क्षेत्री एवं चन्द्र से ६, ८, १२वें हो, तो जातक को धन एवं परिवार सम्बन्धी चिन्ता, आय कम तथा खर्च की अधिकता, स्थान च्युति, दुख एवं कलह, उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएं एवं शरीर कष्ट होता है।

चन्द्र मध्ये शनि का अन्तर – उच्च, स्वराशि या मित्र ग्रहों से युक्त शनि, केन्द्र-त्रिकोण एवं ११वें में हों, तो शनि के अन्तर में जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, आध्यात्म, ज्योतिष, तंत्र आदि गूढ़ विद्याओं की ओर रूचि, भूमि, धन, जायदाद, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती हैं। यदि चन्द्र से शनि १, ६, ८ या १२वें भावों में स्थित हो या शनि नीच, शत्रु राशि, अस्तंगत या वक्री स्थिति में हो, तो इस दशा काल में जातक की स्त्री, सन्तान कष्ट एवं स्वयं को भी शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, धन हानि, निकट बन्धुओं के साथ कलह-क्लेश, कार्यों में असफलता, चर्म एवं क्लिष्ट रोग एवं आर्थिक परेशानियां होने की सम्भावनाएं होती हैं।

चन्द्र मध्ये बुध का अन्तर – बुध केन्द्र-त्रिकोण एवं ११वें स्थान में उच्चस्थ या स्वराशिगत हो, तो इस दशा में जातक को उच्च विद्या की प्राप्ति, कम्पयूटर एवं तकनीकी क्षेत्र में सफलता, स्वास्थ्य लाभ, धन प्राप्ति, पदोन्नति, व्यवसाय में धन लाभ, आय के साधनों में वृद्धि, ज्योतिष, गणित एवं नवीन विद्या में रूचि, विदेश यात्रा, उच्च प्रतिष्ठित, नए मित्रों के साथ सम्पर्क, स्त्री एवं सन्तान सुख आदि शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि बुध चन्द्र से ६, ८ या १२वें स्थान पर नीच राशिगत हो, तो बनते कामों में विघ्न तथा जातक को विविध प्रकार से कष्ट, धन हानि एवं अपव्यय, स्त्री एवं सन्तान को कष्ट, बनते कामों में अड़चनें तथा रक्त विकार, त्वचा रोग एवं वात-पित्त, कफ़ादि के विकार से रोग हों।

चन्द्र मध्ये केतु का अन्तर – यदि चन्द्र से केतु केन्द्र, लाभ या त्रिकोण में हो तो जातक को इस अवधि में नवीन कार्य की ओर रूचि, अत्यंत संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति, स्त्री, सन्तान, विदेश यात्रा आदि शुभ फल होते

हैं। यदि केतु पाप ग्रह युक्त, दृष्ट या चन्द्र से ६, ८, १२वें स्थान में हो, तो बनते कामों में विघ्न, धन हानि, गुप्त परेशानी, तनाव तथा निकट बन्धुओं के साथ वैमनस्य पैदा होता है।

चन्द्र मध्ये शुक्रान्तर – कुण्डली में शुक्र-चन्द्र से केन्द्र-त्रिकोण एवं लाभ (११वें) स्थान उच्च या स्वक्षेत्री हो, तो जातक इस दशा में उच्च विद्या, धन लाभ, सुन्दर एवं सुशील स्त्री, एवं सन्तान सुख, भूमि, मकान, सुन्दर वस्त्र, वाहनादि सुख-सुविधाओं का लाभ, संगीत, सौन्दर्य एवं काम-कला आदि के प्रति आकर्षण तथा उपभोग्य वस्तुओं पर खर्च की अधिकता रहती है। यदि शुक्र नीच-शत्रु राशिगत, अस्तंगत या पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो अथवा चन्द्र से ६, ८ या १२वें स्थान पर अशुभ राशिस्थ हो, तो जातक को भूमि, धन, मकान, स्त्री आदि के कारण कष्ट होता है। घरेलू परिस्थितियों से परेशानी, धन हानि एवं वृथा खर्चों की अधिकता, स्वास्थ्य में विकार, उदर एवं मूत्रकृच्छ सम्बन्धी रोगों का भय होता है।

चन्द्र मध्ये सूर्य का अन्तर – सूर्य उच्च या स्वराशिगत हो या केन्द्र-त्रिकोण, लाभ एवं ११वें स्थान में हो, तो जातक को सरकारी क्षेत्रों से मान-सम्मान, शत्रु नाश, धन लाभ व पदोन्नति, पारिवारिक सुख, माता-पिता से सुख व सहयोग, भूमि, सम्पदा व स्वास्थ्य का लाभ एवं सन्तान सुख मिलता है तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बढ़ते हैं। यदि सूर्य चन्द्र से 6, 8 या 12वें स्थान होकर नीचादि राशि में अशुभ हो, तो जातक को शत्रु भय, नेत्र पीड़ा, ज्वर आदि के कारण शरीर कष्ट, धन हानि तथा बनतें कामों में विघ्न उत्पन्न होते हैं।

मंगल की महादशा में अन्य सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

मंगल मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल उच्च या स्वक्षेत्री हो एवं केन्द्र-त्रिकोण में स्थित होकर मित्र (शुभ) ग्रह से युक्त हो, तो इस दशा में व्यवसाय के क्षेत्र में उत्साह एवं कार्य कुशलता बढ़ेगी। स्वास्थ्य में भी सुधार, भाई-बन्धुओं का सुख तथा भूमि-जायदाद, धन, पुत्र-सन्तति एवं वाहनादि सुख प्राप्त होंगे। शत्रुओं पर विजय तथा विद्या में सफलता एवं धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि मंगल नीच राशि (कर्क) अस्तंगत या शत्रु राशिगत होकर 6, 8 या 12वें हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से विरोध, स्वभाव में क्रोध एवं उत्तेजना, उच्च-विद्या एवं अन्य कार्यों में विघ्न-बाधाएं, धन हानि, कलह-क्लेश, तनाव, दुर्घटना से चोटादि या रक्त विकार होने का भय होता है।

मंगल मध्ये राहु का अन्तर – यदि मंगल शुभस्थ है तथा राहु उच्च, स्वराशि हो या शुभ ग्रह से युत या दृष्ट केन्द्र-त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10 एवं 11वें) भाव में हो, तो इस दशा काल में उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेल-जोल, व्यवसाय में सफलता, अकस्मात् धन लाभ एवं भूमि, वाहन, स्त्री व संतानादि सुख, विदेश यात्रा के योग आदि बनते हैं। यदि राहु अन्य पाप ग्रह युक्त हो तथा 6, 8 एवं 12वें स्थान में हो, तो पारिवारिक सदस्यों के साथ मनमुटाव, धन हानि, सरकारी क्षेत्रों से परेशानी, कार्यों में बाधाएं, अपव्यय, वृथा दौड़धूप, तनाव एवं वात, पित्तादि के कारण रोग और शरीर कष्ट होते हैं।

मंगल मध्ये गुरु का अन्तर – यदि मंगल शुभस्थ है तथा गुरु भी मित्र, स्वराशि या उच्चादि स्थिति में है, तो जातक को इस अवधि में परोपकार एवं धर्मादि कार्यें में रूचि, स्वास्थ्य में सुधार, यश प्राप्ति, विद्या में सफलता, श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध, धन सम्पदा, भूमि, आवास, वाहन, विवाह सुख एवं पुत्र सन्तति आदि सुखों की प्राप्ति होती है। यदि गुरु 6, 8 या 12वें स्थान में हो, नीच-अस्तंगत या पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो, तो परिवार में भाई-बन्धुओं के साथ वैर-विरोध, आर्थिक परेशानियां, बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, दाम्पत्य जीवन में कलह-क्लेश, पेट विकार, शरीर कष्ट अथवा उच्च विद्या में अड़चनें होती हैं।

मंगल मध्ये शनि का अन्तर – कुण्डली में मंगल व शनि दोनों की परस्पर 1, 4, 6, 8 एवं 12वीं स्थिति हो अथवा मंगल या शनि वक्री, अस्त आदि हों, तो धन हानि, पारिवारिक सदस्यों व मित्रों के साथ मतभेद एवं विरोध रहे, कार्य-व्यवसाय में संघर्ष व कठिनाईयां अधिक रहें, आय की अपेक्षा खर्च भी अधिक हों, स्वास्थ्य हानि, चोटादि का भय तथा बनते कामों में विघ्न पैदा हों। यदि मंगल-शनि स्वक्षेत्री, उच्चादि स्थिति होकर केन्द्र-त्रिकोण में हों, तो जातक को व्यवसाय में संघर्ष के बावजूद धन लाभ, गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करने में सफल होता है। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क तथा भूमि, वाहन, सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

मंगल मध्ये बुध का अन्तर – कुण्डली में मंगल एवं बुध दोनों ग्रहों की स्थान एवं भाव स्थिति शुभ हो, तो जातक की उच्च तकनीकी एवं व्यवसायिक विद्या प्राप्ति में रूचि एवं सफलता, नए-नए मित्रों के साथ सम्पर्क बढ़े. भाई-बन्धु एवं कन्या सन्तति का सुख प्राप्त हो, व्यवासय में भी धन लाभ के अवसर प्राप्त हों, धर्म-कर्म में रूचि हो, व्यवहार कुशलता एवं बौद्धिक क्षमता में वृद्धि हो। यदि बुध नीच, अस्तंगत अथवा 6, 8, या 12वें भाव में हो, तो जातक की स्त्री को कष्ट, धन हानि, भाई-बन्धुओं एवं मित्रों के साथ मतान्तर, सन्तान कष्ट, उच्च विद्या में विघ्न पैदा हों, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव एवं वात, कफ़, त्वचा (चर्म) आदि रोगों का भय होता है।

मंगल मध्ये केतु का अन्तर – मंगल एवं केतु केन्द्र या त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हों, तो अकस्मात् धन लाभ, उच्च विद्या प्राप्ति में रूचि, भूमि, मकान, वाहन एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, विदेश गमन, सन्तान आदि सुख, तंत्र, मंत्र, ज्योतिष आदि विषयों तथा नवीन कार्यारम्भ करने में रूचि होती है। यदि केतु मंगल से 6, 8 या 12 होकर पाप युक्त या पाप दृष्ट हो, तो जातक को चोटादि, दुर्घटना से शरीर कष्ट, पित्तादि के कारण ज्वरादि रोग, धन हानि, पारिवारिक कलह-क्लेश से अशान्ति का भय होता है।

मंगल मध्ये शुक्रान्तर – शुक्र केन्द्र-त्रिकोण में स्वराशि, उच्च राशि या लग्नेश युक्त आदि शुभ स्थिति में हो, तो जातक को व्यवसाय में धन लाभ, स्त्री एवं सन्तान सुख, भूमि, वाहन आदि सुख-साधनों की प्राप्ति, नए-नए मित्रों से सम्पर्क हो, गीत-संगीत, साहित्य आदि कलाओं में रूचि, विदेश यात्राओं से लाभ, कामुक एवं विलासिता की वस्तुओं पर धन का व्यय अधिक रहे, दाम्पत्य सुख में वृद्धि तथा कामासक्ति भी बढ़ती है। यदि महादशा मंगल से शुक्र छटे, आठवें या बाहरवें स्थान पर हो अथवा शुक्र नीच राशि या अस्तंगत हो तो जातक को स्त्री, भूमि-कुटुम्ब-सवारी आदि के सम्बन्ध में परेशानी, धन हानि, वृथा यात्रा में धन का अपव्यय, शरीर कष्ट, गुप्त चिन्ता और जातक का मन व्यसन एवं कामवासनाओं की ओर अधिक प्रवृत्त हो। जातक को मन्दाग्नि, रक्त, पित्तादि दोष, मधुमेह, प्रमेह आदि रोग होने का भय रहेगा।

मंगल मध्ये सूर्य का अन्तर – सूर्य यदि उच्च, स्वराशि का होकर मंगल से केन्द्र-त्रिकोण स्थान में शुभ हो तो इस दशाकाल में उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मुलाकात एवं भाई-बन्धुओं का सुख होता है। धन सम्पदा, भूमि-जायदाद, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, पिता एवं भाईयों का सहयोग एवं संतान सुख, व्यवसाय में लाभ एवं उन्नति के अवसर मिलते हैं। यदि मंगल से सूर्य छटे, आठवें, बाहरवें स्थान में पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट अथवा नीचादि स्थिति में हो तो जातक को धन हानि, पिता एवं भाई-बन्धुओं के सम्बन्ध में परेशानी, रक्तपित्तादि दोष के कारण रोग, नेत्रों को कष्ट तथा बनते कामों में रूकावटें होती हैं।

मंगल मध्ये चन्द्र का अन्तर – कुण्डली में यदि चन्द्रमा उच्च, स्वराशि या शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो अथवा केन्द्र त्रिकोण में शुभ हो, तो जातक को धन प्राप्ति के साधन बढ़ते हैं। भूमि-मकान एवं वाहनादि सुखों में भी वृद्धि होती है। माता-पिता का सुख भी मिलता है। विवाह का योग बने। यदि विवाहित हो तो स्त्री-संतान आदि के सम्बन्ध में शुभ समाचार मिले। स्वास्थ्य लाभ, बिगड़े कामों में सुधार तथा गृह में किसी मंगल कार्य की सम्भावना होती है। यदि चन्द्रमा नीच, शत्रु राशि या क्षीण बली हो, तो माता को कष्ट, स्त्री एवं संतान सम्बन्धी कष्ट एवं परेशानियां, व्यवसाय में अत्यधिक परिश्रम करने पर भी आय एवं लाभ में कमी, घरेलू कलह-क्लेश तथा खर्च की अधिकता रहे। मानसिक तनाव एवं चिन्ताएं भी रहे। वात, पित्त, कफ़ादि रोगों के कारण शरीर कष्ट हो।

राहु की महादशा में राहु आदि अन्तर्दशाओं का फल

विशेष : ज्योतिष आचार्यों के अनुसार राहु की दशा में सामान्यत: आदि में दुख, मध्य में सुख और यश तथा अन्त में स्थान हानि एवं गुरु, पुत्र आदि को कष्टदायक सिद्ध होती है। राहु, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या एवं कुम्भ राशि का हो, तो अपनी दशा में उच्च-प्रतिष्ठा, सम्मान, शासन लाभ एवं व्यवसाय में लाभ व उन्नति प्रदान करता है।

राहु मध्ये राहु का अन्तर - राहु 3, 6 एवं 11वें भाव में शुभ राशिस्थ एवं शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो अपनी

दशा में उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि, प्रशासन में उच्च पद की प्राप्ति, राजनीति में सफलता, शेयरों, लाटरी अथवा वकालत में अकस्मात् लाभ की सम्भावना एवं पुत्र-सन्तति का लाभ देता है। यदि राहु मेष, सिंह आदि पुरुष राशियों में स्थित होकर 1, 4, 7, 8, 9 एवं 12वें भावों में पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो, तो शरीर कष्ट, बन्धुओं से वियोग, धन हानि, फाईनैंस की कमी या आर्थिक परेशानियां, बनते कामों में विघ्न तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष एवं दौड़धूप अधिक रहती है। दशा में शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, गुप्त चिन्ताएं एवं अपव्यय बढ़ जाते हैं।

राहु मध्ये गुरु का अन्तर – गुरु कुण्डली में उच्च राशि या स्वग्रही होकर केन्द्र या त्रिकोण एवं 11वें में स्थित हों, तो गुरु की अन्तर्दशा में धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि, श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क, उच्च विद्या में सफलता, शत्रु नाश, राज्य सम्मान, धन लाभ, भूमि, वाहन, विवाह एवं पुत्र संतान आदि शुभ फल होते हैं। परोपकार की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। यदि गुरु नीच, शत्रु राशि या अस्तंगत होकर 6, 8, 12वें भाव में हो, तो उच्च विद्या में विघ्न-बाधाएं, स्वास्थ्य की हानि, शरीर कष्ट, पीलिया रोग, तनाव, धन हानि, बड़े बुज़ुर्गों या अग्रजनों के साथ मतान्तर, आर्थिक उलझनें, बनते कामों में बाधाएँ तथा स्त्री व संतान सम्बन्धी परेशानियों का सामना होता है।

राहु मध्ये शनि का अन्तर – कुण्डली में शनि यदि उच्च, स्वराशि में होकर केन्द्र या त्रिकोण एवं लाभ स्थान में हो तो इस दशाकाल में भूमि, जायदाद एवं वाहन सम्बन्धी सुख-साधनों में वृद्धि, व्यवसाय में गुप्त युक्तियों द्वारा धनार्जन करता है। जातक लोहे, तेल, पैट्रोल एवं शेयर-सट्टा आदि के व्यवसाय से विशेष अधिक धन लाभ प्राप्त कर लेता है। परन्तु मानसिक तनाव एवं असंतोष की भावना रहती है। शनि यदि नीच या शत्रुक्षेत्री होकर 2, 6, 7, 8, 12वें स्थान में हो, तो जातक के किसी आत्मीयजन, पिता, माता, स्त्री, संतानादि को मृत्यु तुल्य कष्ट, धन एवं स्वास्थ्य हानि तथा अनेक प्रकार के कष्टों का भी सामना होता है।

राहु मध्ये बुध का अन्तर – बुध यदि कुण्डली में उच्च, स्वक्षेत्री होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को उच्च तकनीकी विद्या की प्राप्ति, पदोन्नति, नए मित्रों के साथ सम्बन्ध, स्त्री एवं संतान सुख, व्यवसाय में बुद्धि-कौशल द्वारा धन लाभ होता है। किसी नवीन कार्य की योजना भी बन सकती है। यदि बुध राहु से 6-8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक को धन हानि, पारिवारिक कलह-क्लेश, आर्थिक संकट तथा मानसिक व शरीरिक कष्ट होते हैं। जातक को वात, कफ़, पित्तादि रोग तथा त्वचा (चर्म), रक्त विकारादि रोग होते हैं।

राहु मध्ये केतु का अन्तर – इस अन्तर्दशा में प्रायः अशुभ फल होते हैं। जातक को ज्वर, नेत्र रोग, शत्रु भय, सिर में पीड़ा एवं शरीर कष्ट, जातक के निकट-बन्धुओं एवं मित्रों से कलह व धन हानि एवं ऋण लेने की सम्भावना हो। यदि केतु शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को शेयरों, लाटरी या व्यवसाय से लाभ, किसी नवीन कार्य की योजना बनती है। स्थानान्तरण से लाभ मिलता है।

राहु मध्ये शुक्र का अन्तर – शुक्र केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव में शुभ राशिगत हो, तो जातक उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से लाभ व उन्नति के योग, व्यवसाय में धन लाभ एवं प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मैत्री भाव बढ़ेगा। भूमि, वाहन, प्रिय-बन्धु एवं स्त्री एवं विवाह सम्बन्धी सुखों में वृद्धि होगी। प्रेम प्रसंग बढ़ेंगे। विवाहित होने की स्थिति में संतान सुख के योग परन्तु शुक्र यदि नीच या शत्रु राशि अथवा पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो किसी प्रिय-बन्धु से कलह, स्त्री को कष्ट, धन हानि, पेट सम्बन्धी गुप्त रोगों की सम्भावना होती है। किसी से धोखा मिलने की सम्भावना भी रहेगी।

राहु मध्ये सूर्य का अन्तर – सूर्य अगर उच्च, स्वक्षेत्री होकर 5, 9, 11वें भाव में हो, तो जातक व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् उच्च-प्रतिष्ठा, धन-धान्य का लाभ प्राप्त करता है। इस अवधि में उसे सरकारी क्षेत्रों में लाभ, प्रतिष्ठा एवं विदेश यात्रा से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं। यदि राहु से सूर्य 6, 8 ,12वें भाव होकर नीच राशिगत हो, तो जातक का पारिवारिक सदस्यों से कलह-क्लेश, सरकारी क्षेत्रों से भय, स्त्री-पुत्र को कष्ट, स्थान परिवर्तन, शरीर कष्ट एवं ज्वरादि अशुभ फल घटित होते हैं।

राहु मध्ये चन्द्र का अन्तर – चन्द्रमा उच्च, स्वराशि आदि बलान्वित होकर केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव में हो, तो मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, विद्या में सफलता, धन लाभ, स्त्री-संतान एवं वाहनादि सुखों की वृद्धि आदि शुभ फल

होते हैं। यदि चन्द्रमा नीच, शत्रुादि राशि में होकर राहु से 1, 6, 8, 12वें भाव में अशुभ ग्रह युक्त हो, तो अकस्मात् धन हानि, माता को कष्ट, घरेलू कलह-क्लेश, नेत्र एवं शिर में पीड़ा, मानसिक तनाव, वात, कफ़ आदि रोगों के कारण शरीर को कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

राहु मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल यदि शुभ राशि, उच्च एवं स्वराशि का केन्द्र-त्रिकोण या 11वें भाव में हो, तो उसकी अन्तर्दशा में भूमि, जायदाद एवं पुत्र सन्तति, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, उद्यम में वृद्धि, धन लाभ, स्वास्थ्य में सुधार, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। यदि मंगल पाप युक्त होकर राहु से 4, 6, 8 एवं 12वें स्थान में हो, तो जातक को गृह सुख में कमी, भाई-बन्धुओं से विवाद, स्त्री व संतान कष्ट, धन हानि, रक्त विकार तथा दुर्घटना से चोटादि का भय होता है।

गुरु की महादशा में गुरु आदि अन्तर्दशाओं का फल

गुरु में गुरु का अन्तर – गुरु उच्च और स्वक्षेत्री होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ५, ९) भावों में हो, तो इस अन्तर्दशा में जातक की परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति होती है। योग, दर्शन, ज्योतिष आदि ग्रंथों में भी रूचि बढ़ती है। उच्च विद्या में सफलता, धन लाभ, विवाहादि उत्सव, पुत्र एवं सन्तान सुख, वाहन एवं भूमि, आवास आदि सुखों की प्राप्ति होती है। सौभाग्य की वृद्धि तथा महात्माओं आदि श्रेष्ठ जनों के साथ संयोग होता है। यदि गुरु नीच या पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, तो आर्थिक उलझनें, कौटुम्बिक सदस्यों के साथ मनमुटाव एवं क्लेश, उच्च विद्या में बाधाएं, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, उदर विकार एवं शरीर कष्ट की सम्भावना होती है।

गुरु में शनि का अन्तर – शनि यदि उच्च, स्वराशिस्थ हो या केन्द्र-त्रिकोण व 11वें भाव में स्थित हो, तो इस दशा में जातक का उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, धन-धान्य, भूमि, कृषि, मकान, वाहनादि सुख-साधनों की प्राप्ति, पश्चिम दिशा में यात्रा, लोहे, तेल, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त हों। शनि नीच, अस्त या शत्रु भावों हो, या गुरु से 6, 8 एवं 12वें भाव में हो, तो पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानी, नीच लोगों के साथ संगति, व्यसनों आदि में प्रवृत्ति हो, धन का खर्च बहुत अधिक एवं गुप्त चिन्ताऐं रहें, आंखों में रोग, शरीर कष्ट एवं आर्थिक संकट आदि अशुभ फल होते हैं।

गुरु में बुध का अन्तर – बुध उच्च या स्वराशि होकर केन्द्र-त्रिकोण या 11वें भाव में हो, तो इस दशा में जातक के मैत्री क्षेत्र में विस्तार, उच्च व्यवसायिक विद्या में सफलता, पदोन्नति, धन लाभ, स्त्री एवं सन्तान सुख, व्यवसाय में क्रय-विक्रय द्वारा लाभ, किसी नवीन विद्या, ज्योतिष, धर्म, योग, तंत्र आदि विषयों में रूचि एवं आय के साधनों में वृद्धि होती है। यदि बुध अस्तंगत या नीचस्थ होकर गुरु से 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो धन हानि, मदिरा आदि व्यसनों में प्रवृत्ति, किसी नज़दीकी भाई-बन्धु के व्यवहार से दुख, वात-पित्त, कफ़ आदि त्रिदोषों के कारण शरीर कष्ट का भय होता है।

गुरु मध्ये केतु का अन्तर – कुण्डली में केतु पाप युक्त होकर गुरु से 6, 8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक के परिवारिक सदस्यों – स्त्री, पुत्रों, माता-पिता आदि को कष्ट अथवा उनके सुख में कमी हो, गृह में कलह-क्लेश, धन हानि, दुर्घटना से चोटादि का भय, स्वास्थ्य की हानि तथा मन में असन्तोष व दुख बढ़ते हैं। यदि केतु शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो, तो किसी नवीन कार्य में रूचि, भाई-बन्धुओं का सुख, स्थान परिवर्तन तथा निर्वाह योग्य धन के साधन बनते हैं।

गुरु मध्ये शुक्र का अन्तर – कुण्डली में शुक्र स्वराशि या उच्चस्थ होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को उच्च शिक्षा में सफलता, कार्य-व्यवसाय में धन लाभ एवं उन्नति के अवसर, उच्चपदस्थ अधिकारियों से लाभ, रहन-सहन के स्तर में सुधार, स्त्री, सन्तान सम्बन्धी सुख, संगीत, कला एवं साहित्य में रूचि, कामासक्ति एवं विलासिता आदि के कार्यों पर खर्च की अधिकता, भूमि, वाहन एवं अन्य सुख-साधनों में वृद्धि हो तथा धार्मिक कार्यों में भी रूचि बढ़े। यद्यपि कार्य-व्यवसाय में संघर्ष भी अधिक बढ़े। यदि शुक्र नीच, अस्त या गुरु से 6, 8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक की मदिरा एवं अन्य व्यवसनों में प्रवृत्ति हो, शरीर कष्ट, आर्थिक परेशानियां तथा स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट एवं चिन्ताएँ तथा वृथा धन के अपव्यय तथा उदर-विकार व गुप्त रोगों की सम्भावना होती है।

गुरु मध्ये सूर्य का अन्तर – सूर्य स्वक्षेत्री या उच्च होकर केन्द्र-त्रिकोण, 11वें भाव में हो, तो इस अन्तर्दशा में जातक को उच्च विद्या में सफलता, मान-सम्मान, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि, आरोग्य, सरकारी क्षेत्रों से लाभ, व्यवसाय में धन लाभ, भूमि, जायदाद, वाहनादि सुख एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। पिता से सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है। सूर्य यदि गुरु से 6, 8 या 12वें स्थान में हो, या राहु आदि पाप ग्रह युक्त हो, तो जातक का प्रिय-बन्धु से वियोग अथवा सुख में कमी, नेत्र या सिर पीड़ा, ज्वर, वृथा खर्च व शरीर कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

गुरु मध्ये चन्द्रान्तर – उच्चादि स्थिति में शुभ चन्द्रमा केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव में हो, तो इस दशा में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, विद्या में उन्नति एवं व्यवसाय में धन प्राप्ति, स्त्री एवं सन्तान सुख तथा सवारी आदि के सुख प्राप्त होते हैं। मित्रों एवं पारिवारिक सदस्यों का सुख एवं सहयोग मिलता है। यदि चन्द्र लग्नेश या गुरु से 6, 8 या 12वें स्थान में हो या पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट, नीचादि स्थिति में हो, तो जातक के निकट बन्धुओं के साथ तकरार, मिथ्याबोध, माता को कष्ट, धन हानि, मानसिक तनाव तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होती हैं।

गुरु मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण भाव में स्थित होने से जातक के उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि, उच्च विद्या में सफलता, भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों से लाभ, नवीन कार्यों द्वारा धन व यश लाभ, तीर्थ यात्रा, परोपकार आदि धार्मिक कार्यों में रूचि होती है। भाई-बन्धुओं एवं मित्रों के साथ समागम होता है। यदि गुरु से मंगल 6, 8, 12वें भाव में हो, या पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से मतान्तर, किसी से विवाद होने का भय, पिता-माता या स्त्री एवं सन्तान को कष्ट, धन हानि, स्वयं जातक का स्वास्थ्य भी ठीक न हो, ज्वर एवं शिर पीड़ा तथा आंखों में कष्ट का भय हो।

गुरु मध्ये राहु का अन्तर – राहु उच्च या स्वक्षेत्री होकर ३, ६ या ११वें भाव में हो, तो जातक को उच्च विद्या का लाभ, किसी तकनीकी क्षेत्र में विशेष कुशलता, भूमि, वाहन आदि का लाभ, विदेश आदि दूर देश गमन से लाभ, शेयर, लाटरी आदि से अकस्मात् धन लाभ की सम्भावना होती है। गुरू से राहु यदि १, ४, ६, ८ या १२वें भाव में अशुभ हो, तो घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियां, माता-पिता या किसी आत्मीय या गुरूजन को कष्ट हो, धन हानि एवं अपव्यय, चित्त-व्याकुलता, वृथा दौड़धूप, दुःस्वप्न, शरीर कष्ट तथा अल्प लाभ, किसी से धोखा आदि अशुभ फल होते हैं।

शनि की महादशा में शनि आदि अन्तर्दशाओं के फल

शनि मध्ये शनि का अन्तर – शनि उच्च या स्वराशि एवं केन्द्र-त्रिकोण व ११वें भाव में हो, तो शनि की अन्तर्दशा में जातक को उच्च पद की प्राप्ति, पारिवारिक सुख, कृषि, तेल, लोहादि के क्रय-विक्रय से धन लाभ, विदेशी भाषा एवं सभ्यता की ओर झुकाव, स्त्री एवं सन्तान सुख, आध्यात्म, मंत्र-तंत्र आदि विद्याओं की ओर रूचि, जायदाद एवं सवारी आदि सुख व उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क होते हैं। यदि शनि नीच या पाप युक्त होकर 1, 5, 7, 8, या 12वें भाव में हो, तो शरीर कष्ट, बन्धुओं से क्लेश, धन का अपव्यय तथा बनते कामों में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

शनि मध्ये बुध का अन्तर – बुध केन्द्र-त्रिकोण में शुभस्थ हो, तो इस दशा काल में उच्च विद्या में सफलता, कम्पयूटर, शिल्प या किसी अन्य तकनीकी विद्या के क्षेत्र में सफल, बौद्धिक कार्यों में रूचि, पदोन्नति, स्त्री एवं सन्तान एवं पारिवारिक सुखों में वृद्धि, ज्योतिष, आध्यात्म आदि विद्या में रूचि, नए-नए प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्पर्क, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा कार्य-व्यवसाय में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। बुध महादशेश (शनि) से ६, ८ या १२वें भाव में हो, तो किसी निकटस्थ बन्धु या मित्र द्वारा विश्वासघात हो, पारिवारिक परेशानियां, बनते कार्यों में विघ्न, वात, पित्त, कफ़ादि के कारण शरीर कष्ट, त्वचा, रोगादि का भय।

शनि मध्ये केतु का अन्तर – शनि व केतु शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर केतु शुभ भावों (3, 5, 9, 11) में हो, तो जातक को शेयर, लाटरी आदि कार्यों से अकस्मात् धन लाभ, नवीन कार्य करने में रूचि, स्थानान्तरण या विदेशादि यात्रा से लाभ, इस दशा में जातक रहस्यपूर्ण एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग भी करता है। यदि शनि व केतु में 1, 4,

7, 8 व 12वें का परस्पर सम्बन्ध हो, तो जातक का नीच एवं दुष्ट लोगों के साथ कलह, बुरे स्वप्न, अज्ञात भय, धन हानि, वात-पित्त के कारण शरीर में विकार, पारिवारिक सदस्यों के साथ विवाद, सर्प भय, ज्वर आदि अशुभ बातें घटित होती हैं।

शनि मध्ये शुक्र का अन्तर – शुक्र यदि उच्च या स्वराशि का केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा में रत्न, आभूषण, स्त्री-संतान एवं वाहनादि के सुख प्राप्त हो। क्रय-विक्रय द्वारा धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। जातक की किसी नवीन कार्य करने में रूचि, कामासक्ति, संगीत कला, साहित्य आदि एवं पेय पदार्थों पर खर्च होगा। यदि शुक्र शनि से या लग्न से 1, 4, 6, 8 या 12वें, नीच, शत्रु राशि या अस्तंगत हो, तो स्त्री कष्ट, स्थान परिवर्तन, धन हानि, कन्या सन्तति का जन्म, अपव्यय, ज्वर, पीड़ा, आदि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये सूर्य का अन्तर – सूर्य यदि उच्च या स्वराशि का, शनि से केन्द्र-त्रिकोण स्थानादि में हो, तो जातक के उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि, संतान सुख, पिता, आत्मीयजनों एवं भाई-बन्धुओं से सहयोग तथा लाभ प्राप्त हो। पुत्र प्राप्ति के योग, परिवर्तन एवं पदोन्नति के योग बनते हैं। यदि सूर्य लग्न या शनि से 1, 6, 8 या 12वें भाव में नीचस्थ हो, तो जातक को स्थान हानि, घरेलू कलह-क्लेश, प्रियजन से वियोग, वृथा खर्च, नेत्र रोग, तनाव, शरीर कष्ट, दौड़धूप आदि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये चन्द्र का अन्तर – चन्द्रमा यदि स्वराशि या उच्च राशिस्थ शुभ ग्रह गुरु से दृष्ट होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा में सौभाग्य में वृद्धि, माता-पिता का सुख, धन लाभ के अवसर, स्त्री एवं संतान सुख होता है। परन्तु यदि चन्द्रमा पाप ग्रह से युत या दृष्ट होकर क्षीण बली हो, तो माता-पिता सम्बन्धी कष्ट, शारीरिक एवं मानसिक तनाव, धन हानि, असन्तोष, वात, कफ़ादि रोगों के कारण कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल स्वराशि, उच्च राशि, केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें हो, तो इस अन्तर्दशा में भूमि, मकान, वाहनादि की प्राप्ति, धातु, लोहे, तेल, रबड़ आदि से सम्बन्धित व्यवसाय में लाभ परन्तु प्रत्येक कार्य अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के पश्चात् ही सफल हो पाता है। यदि मंगल नीच, शत्रु अथवा अस्तंगत, वक्री हो, तो अवांछित स्थान में परिवर्तन, अग्नि एवं शत्रु से भय, वात और रक्त-विकार से रोग, नज़दीकी बन्धुओं से झगड़ा, शत्रुओं में वृद्धि, अपव्ययादि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये राहु का अन्तर – राहु यदि अशुभ भावस्थ हो तो इस अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, निकट बन्धुओं एवं मित्रों से कलह-क्लेश, धन हानि, स्थान परिवर्तन, किसी प्रिय-बन्धु से वियोग एवं बनते कामों में बाधाएँ, गुप्त रोग का भय,ऋण लेने की नौबत तथा नीचजनों के साथ संगति एवं व्यसन आदि में रूचि बनती है। यदि राहु स्वराशि या उच्चक्षेत्री हो, तो धन लाभ, वाहनादि सुखों की प्राप्ति अथवा विदेश आदि यात्राओं में सफलता मिलती है।

शनि मध्ये गुरु का अन्तर – यदि गुरु स्वराशि, उच्च राशि में शुभ ग्रहों से युक्त होकर केन्द्र त्रिकोण एवं 11वें स्थान में शुभस्थ हो, तो सोची हुई कामनाओं में सफलता, कुछ नवीन कार्यों के करने की जिज्ञासा बने। उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, धन लाभ, भूमि, कृषि, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति, पश्चिमोत्तर दिशा में यात्रा, लौहादि धातुओं, पत्थर, लकड़ी आदि से सम्बन्धित व्यापार से अच्छा लाभ हो। स्त्री व संतान सुख की प्राप्ति, धर्म एवं परोपकार की भावना में वृद्धि होती है। यदि गुरु अस्तंगत, नीच या पाप ग्रह से युत होकर 6, 8,12वें स्थान में हो, तो धन सम्पदा की हानि, बनते कार्यों में विघ्न, भाई-बन्धुओं से विरोध, शरीर कष्ट एवं संतान सम्बन्धी चिन्ता होगी।

बुध की महादशा में बुधादि अन्तर्दशाओं का फल

बुध में बुध का अन्तर – बुध स्वराशि, उच्चादि होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो बुध की अन्तर्दशा में उच्च विद्या में सफलता, पदोन्नति, प्रिय मित्र से मुलाकात, स्त्री व संतान सुख, धन लाभ, नवीन विद्या एवं नए कार्य में रूचि, ज्योतिष, मंत्र, तन्त्र एवं परोपकार, धर्मादि कार्यों में प्रवृत्ति होती है। बुध नीच राशि या पाप ग्रह युत होकर 6, 8, या 12वें स्थान में हो, तो अकस्मात् धन हानि, स्त्री, सन्तान के सम्बन्ध में कष्ट, किसी निकट बन्धु के कारण दुख, वात-पित्त, क़फ़ आदि के कारण त्वचा रोग एवं शरीर कष्ट, वृथा खर्च आदि अशुभ फल होते हैं।

बुध मध्ये केतु का अन्तर – केतु शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो इस दशा में अत्यन्त संघर्ष के बाद धन लाभ प्राप्ति, उच्च विद्या में सफल, सर्विस या व्यवसाय द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। जातक गुप्त युक्तियों द्वारा शेयरों, लाटरी, क्रय-विक्रय द्वारा लाभ प्राप्त करने में सफल होता है। किसी नवीन कार्य में रूचि, नए-नए मित्रों के साथ सम्बन्ध बनते हैं। यदि केतु बुध से 6, 8, या 12वें भाव में हो, पाप ग्रह से युक्त हो, तो जातक को आय कम तथा खर्च अधिक रहे, परिवार में कलह-क्लेश, धन हानि, ऋण लेने की सम्भावना, सवारी आदि से दुर्घटना या चोटादि का भय तथा बनते कार्यों में विघ्न पैदा हों।

बुध मध्ये शुक्र का अन्तर – कुण्डली में शुक्र शुभस्थ हो, तो उच्च विद्या में सफलता, कम्पयूटर, सिनेमा, संगीत, कला आदि के क्षेत्रों में विशेष रूचि बढ़े, व्यवसाय (या क्रय-विक्रय) से धन लाभ, सौभाग्य एवं सौन्दर्यानुभूति अधिक रहे, स्त्री एवं सन्तान (कन्या सन्तति) का सुख हो, सुन्दर वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधन, सुन्दर आवास एवं वाहनादि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति, दक्षिणोतर दिशा में जाने से लाभ रहे। बुध से शुक्र की स्थिति 6, 8, या 12वें-स्थान में हो या शुक्र नीच एवं अस्तंगत हो, तो लाभ कम खर्च अधिक, स्त्री को कष्ट अथवा सुख में कमी, किसी प्रिय-बन्धु से विरोध, विलासादि कार्यों पर खर्च की अधिकता आदि अशुभ फल होते हैं।

बुध मध्ये सूर्य का अन्तर – सूर्य उच्च, स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव में हो, तो जातक पराक्रमी, उद्यमी, भूमि, जायदाद से धन लाभ प्राप्त करने वाला, पिता एवं भाई-बन्धुओं के सुखों से युक्त, उच्च-प्रतिष्ठित एवं सौभाग्यवान, मकान एवं सवारी आदि वाहनों के सुखों से युक्त, धर्म-कार्यों एवं परोपकारी कार्यों में रूचि, परन्तु यदि सूर्य महादशा स्वामी से 6, 8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक को व्यवसाय में धन हानि, शिर पीड़ा, नेत्र एवं पित्तजन्य रोग एवं भाई-बन्धुओं एवं मित्रों के साथ वैमनस्य होता है।

बुध मध्ये चन्द्रान्तर – चन्द्र स्वराशि, उच्चस्थ या शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को उच्च तकनीकी विद्या में लाभ, माता का सुख, विविध साधनों द्वारा धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त हो। स्त्री एवं कन्या संतान सुख, सवारी आदि सुखों की भी प्राप्ति हो। व्यवसाय अथवा नौकरी में लाभ व उन्नति के अवसर मिलें। चन्द्रमा यदि क्षीण होकर बुध से 6, 8, 12वें हो, तो धन हानि, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, माता को कष्ट, निकट बन्धुओं से मनमुटाव, कफ़, पित्तादि के कारण शरीर कष्ट, नेत्र विकार, त्वचा रोग, मस्तिष्क एवं कण्ठ में पीड़ा तथा मन में अशान्ति होती है।

बुध मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल उच्च, स्वराशि एवं शुभ ग्रहों से युत होने पर इस उपदशा में भूमि, धन, मकान, मान-सम्मान, विद्या लाभ, संतान, स्वास्थ्य एवं धन लाभ, उद्यम व पुरुषार्थ से लाभ, भाई-बहिनों एवं मित्रों से सुख होता है। यदि नीच, अस्त या वक्री हो, तो गृह में कलह-क्लेश, संतान कष्ट, शत्रु भय, अनावश्यक खर्च में वृद्धि, मानसिक तनाव, दुर्घटना से चोटादि का भय होता है।

बुध मध्ये राहु का अन्तर – राहु उच्च राशि या 3, 6, 10, 11वें स्थान पर हो, तो व्यवसाय में उन्नति, शेयर, लाटरी आदि से अकस्मात् लाभ, प्रिय बन्धु से सुख, समाज में मान-प्रतिष्ठा व सम्मान, सवारी सुख, विदेश में लाभ और कीर्ति प्राप्त होती है। राहु यदि नीच राशि या बुध से अशुभ स्थानों पर हो, तो शरीर कष्ट, धन हानि, बुद्धि में विक्षिप्तता, प्रिय बन्धु से वियोग, नीच लोगों द्वारा बनते कार्यों में अड़चनें, ऋण तथा गुप्त रोगों की सम्भावना होती है। नेत्र, मस्तिष्क, उदर एवं त्वचा (चर्म) सम्बन्धी विचित्र रोगों का भी भय होता है।

बुध मध्ये गुरु का अन्तर – गुरू उच्च, स्वराशि या शुभ ग्रहों से युत होकर केन्द्र-त्रिकोण आदि में हो, तो विद्या में सफलता, धन लाभ, श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ सम्पर्क, धर्म एवं परोपकार में प्रवृत्ति, ज्योतिष, मंत्रादि विषयों में भी रूचि होती है। यदि गुरु 6, 8, 12वें होकर नीच अथवा पाप ग्रह युक्त हो, तो मानसिक तनाव, आत्मीयजनों के साथ विरोध एवं अपमान, बनते कार्यों में विघ्न, धन हानि तथा परिस्थितियों के प्रति असंतोष बढ़ता है। वात, कफ़ादि से पेट विकार एवं कर्ण पीड़ा होती है।

बुध मध्ये शनि का अन्तर – शनि यदि उच्च एवं स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, धर्म एवं आध्यात्म विद्या की तरफ प्रवृत्ति, विदेश यात्रा, धन, वाहन एवं पारिवारिक सुखों

में वृद्धि, व्यवसाय में क्रय-विक्रय द्वारा लाभ की स्थिति बनती है। यदि शनि नीच, शत्रु या वक्री तथा अशुभ भावस्थ हो, तो अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, आर्थिक परेशानी, भाई-बन्धुओं एवं परिवार के सम्बन्ध में परेशानी, बनते कार्यों में रूकावटें, पारिवारिक कलह-क्लेश, वात, कफ़ एवं चर्म, गुप्त रोग और क्लिष्ट रोग एवं शत्रु भय आदि अशुभ फल होते हैं।

केतु की महादशा में केतु आदि ग्रहों की अन्तर्दशाएँ

केतु मध्ये केतु का अन्तर – केतु यदि शुभ ग्रह से युक्त होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को भूमि, धन, मकान एवं स्त्री व सन्तान आदि से सुख, नवीन कार्य में रूचि, शेयर, लाटरी या व्यवसाय में अकस्मात् धन लाभ एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है। यदि केतु नीच या पाप ग्रह से युक्त होकर २, ४, ६, ८ या १२वें स्थान में हो, तो जातक के सुख में कमी, दुर्घटना या शास्त्राघात से चोटादि का भय, निकट बन्धुओं एवं मित्रों से विरोध, अप्रिय भाषा, धन हानि, पित्त प्रकोप, ज्वर आदि का भय एवं पारिवारिक कलह-क्लेश की सम्भावना होती है।

केतु मध्ये शुक्र का अन्तर – शुक्र स्वराशि, उच्च हो या केन्द्र-त्रिकोण व 11वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो, तो धन लाभ, सौभाग्य में वृद्धि, स्त्री व सन्तान सुख तथा वाहन आदि सांसारिक सुखों की प्राप्ति। दशा के उत्तरार्द्ध में कामुक एवं विलासप्रिय वस्तुओं पर व्यय अधिक होगा। कन्या सन्तति की सम्भावना, स्त्री का सहयोग लाभदायक होगा। यदि शुक्र नीच या पाप युक्त होकर ६, ८ या १२वें भाव में हो, तो स्त्री से वैमनस्य या सुख में कमी हो, धन हानि, बनते कामों में अड़चनें पड़ें, शिर पीड़ा एवं आंखों में कष्ट हो।

केतु मध्ये सूर्य का अन्तर – सूर्य यदि उच्च या स्वराशिगत हो, तो दशा के प्रारम्भ में सरकारी क्षेत्रों से लाभ, मान-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, विदेश गमन, धन लाभ तथा पिता से सुख एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क होते हैं। यदि सूर्य नीच या पाप ग्रह युक्त होकर 6, 8, या 12वें स्थान में हो, तो जातक का पारिवारिक लोगों से विरोध, किसी आत्मीय जन से वियोग, शिर पीड़ा, नेत्र रोग, धन का अपव्यय एवं हानि, पित्त, कफ़ रोग आदि अशुभ फल होते हैं। परन्तु विदेश जाने से लाभ होने के योग होते हैं।

केतु मध्ये चन्द्र का अन्तर – चन्द्र उच्च का या स्वराशि का हो, तो उच्च विद्या में लाभ, व्यवसाय में संघर्ष के बाद धन लाभ, स्त्री सुख एवं कन्या सन्तति का सुख, उद्योग में सफलता, संगीत, साहित्य एवं कला की ओर रूचि तथा मनोरंजन के साधन बढ़ते हैं। यदि चन्द्र नीच या क्षीण होकर 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो जातक को परिवार, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी चिंता, धन का खर्च अधिक, गुप्त रोग, वात, कफ़ आदि रोगों के कारण चिन्ता तथा निकट-बन्धुओं से परेशानी व तनाव रहे।

केतु मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल उच्च, स्वराशि या केन्द्र-त्रिकोण व 11वें हो, तो जातक के पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि, विद्या में सफलता, भूमि, जायदाद, पुत्र सन्तति एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति, धन लाभ, मित्रों, भाई-बन्धुओं का सुख व शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। विदेश गमन की भी सम्भावना होती है। यदि मंगल केतु से 2, 6, 8 या 12वें स्थान में हो, तो व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ, धन हानि, गृह-कलह, प्रिय-बन्धुओं से तनाव, स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना, दुर्घटना से चोट या ज्वरादि का भय होता है।

केतु मध्ये राहु का अन्तर – राहु उच्च, स्वराशि या मित्र क्षेत्री हो, तो इस दशा में धन-धान्य का लाभ, वाहनादि सुख-सुविधाओं में वृद्धि, नौकरी में तरक्की, शेयर, लाटरी आदि में अकस्मात् लाभ एवं विदेशादि यात्रा से लाभ की सम्भावना होती है। यदि राहु 2, 7, 8 या 12वें भाव में पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो व्यवसाय या नौकरी में गड़बड़ी, धन हानि, मन को दुख देने वाली घटनाएँ घटित हों, पारिवारिक जनों के साथ कलह-क्लेश, बनते कामों में बाधाएँ, स्वास्थ्य हानि, शिर पीड़ा व नेत्र कष्ट, आय कम व खर्च अधिक होते हैं।

केतु मध्ये गुरु का अन्तर – गुरु केन्द्र त्रिकोण व 11वें भाव में स्वराशि या उच्च दोनों हो, तो जातक की धर्म एवं परोपकारी कार्यों में प्रवृत्ति, विद्या में सफलता, धन लाभ, सवारी, भूमि, जायदाद, पुत्र सन्तति एवं विदेश यात्रा

के अवसर प्राप्त होते हैं। भाई-बन्धुओं एवं उच्चाधिकारियों से सम्बन्ध होते हैं। गुरु नीच, अस्तंगत होकर केतु से 6, 8 या 12वें भाव में हो, तो उच्च शिक्षा में विघ्न, परिवारिक सदस्यों से मन-मुटाव, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानी, स्वयं का भी स्वास्थ्य ठीक न रहे तथा धन सम्बन्धी उलझनों का सामना रहता है।

केतु मध्ये शनि का अन्तर – शनि उच्च, स्वराशि होकर केतु से 3, 6 या 11वें भाव में स्थित हो, तो जातक को सोची हुई योजनाओं में सफलता, कृषि, रबड़, लोह पुर्जे आदि के कार्यों में लाभ व सफलता, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनते हैं। विदेश गमन से लाभ आदि फल होते हैं। यदि केतु से शनि 1, 4, 8 या 12वें स्थान में हो, तो जातक के शरीर में कष्ट, सुख में कमी, कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ता अथवा पारिवारिक कलह, धन हानि, बनते कामों में अड़चनें, चित्त में व्याकुलता, गुप्त एवं क्लिष्ट रोगों के कारण परेशानी व खर्च की अधिकता रहे।

केतु मध्ये बुध का अन्तर – बुध स्वराशि या उच्चराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा काल में जातक को बन्धु-मित्रों आदि से मिलाप, उच्च विद्या में सफलता अथवा सर्विस में पदोन्नति या व्यवसाय में धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त हों। धर्म-कर्म या विदेश यात्रा एवं बौद्धिक कार्यों की ओर रूचि बढ़े। यदि बुध नीच, अस्त या केतु से 6, 8 या 12वें हों, तो जातक का बन्धुओं के साथ मतान्तर हो, किसी व्यक्ति द्वारा धोखा मिलने की सम्भावना, स्थान परिवर्तन के संकेत, वात, कफ़, पित्तादि के कारण शरीर कष्ट के योग होते हैं।

शुक्र की महादशा में शुक्रादि अन्तर्दशाओं के फल

शुक्र मध्ये शुक्रान्तर – शुक्र स्वराशि या उच्चस्थ होकर केन्द्र-त्रिकोण भावों में स्थित हो, तो जातक-जातिका को रत्नाभूषण, सुन्दर वस्त्र, वाहन एवं धन सम्पदा, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी सुखों की प्राप्ति होती है। सुन्दर आवास तथा जातक की प्रवृति संगीत, गायन, कलादि, कामवासना एवं विलासादि कार्यों की ओर बढ़े। अकस्मात् धन प्राप्ति के साधनों तथा भाई-बन्धुओं एवं मित्रों के साथ सम्बन्धों में बेहतरी रहे। शुक्र यदि नीच, अस्तंगत या पाप ग्रह युक्त होकर 6, 8, 12वें स्थान में हो, तो स्त्री सम्पदा के सम्बन्ध में परेशानी अथवा विरोध रहे। धन हानि, स्त्री कष्ट एवं गुप्त रोगों की आशंका होती है।

शुक्र मध्ये सूर्यान्तर – यदि सूर्य उच्च या स्वराशि का हो अथवा शुक्र से केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो प्रशासन तथा माता-पिता एवं भाई से सुख एवं लाभ, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, धन लाभ, सरकारी क्षेत्रों एवं उच्च स्तरीय लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे। सूर्य यदि पापग्रह से युत, नीचादि स्थिति में अथवा 6, 8, 12वें भाव में हो, तो धनहानि, घरेलू कलह, प्रियजन से वियोग, सरकारी क्षेत्रों से परेशानियां, शिर पीड़ा एवं नेत्र रोग आदि अशुभ फल होते हैं।

शुक्र मध्ये चन्द्रान्तर – चन्द्र उच्च या स्वराशि का होकर शुभ भावस्थ हो, तो उस दशा में विद्या में सफलता, मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति, स्त्री का सुख, धन लाभ, पुत्री की प्राप्ति, संगीत, गायन, सौंदर्य प्रसाधनों, स्त्री प्रसंग एवं देश-विदेश में भ्रमण के अवसर भी प्राप्त होते हैं। परन्तु मानसिक तनाव भी रहता है। यदि चन्द्रमा नीच, पापयुक्त या शुक्र से 6, 8, 12वें भाव में हो, तो घरेलू कलह, स्त्री कष्ट, सिर में पीड़ा, धन हानि, मानसिक तनाव, नेत्र विकार, वात, कफादि रोगों के कारण शरीर कष्ट आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

शुक्र मध्ये मंगल का अन्तर – मंगल उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो भूमि, जायदाद, पुत्र सन्तति, धन लाभ, वाहन प्राप्ति, उद्यम एवं पराक्रम में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य लाभ तथा प्रिय-बन्धुओं से मेल-मिलाप एवं प्रेम-प्रसंग आदि सुखों की प्राप्ति होती है। यदि शुक्र से मंगल की स्थिति 6, 8, 12वें स्थान में हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से तनाव, कलह-क्लेश, स्त्री कष्ट, वाणी में कठोरता, मदिरापान एवं अन्य व्यसन तथा राग-विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होते हैं। मंगल अशुभ होने की स्थिति में शरीर कष्ट एवं दुर्घटना से चोटादि का भय रहे।

शुक्र मध्ये राहु का अन्तर – राहु १, ३, ५; ६, ९, १०, ११वें भाव में स्वराशि आदि शुभ राशिगत हो, तो इस दशा में अभीष्ट कार्यों में सिद्धि, व्यवसाय में धन लाभ, स्त्री एवं सन्तान सुख, सवारी आदि सुख-साधनों में वृद्धि, शेयर,

लाटरी आदि गुप्त युक्तियों से भी लाभ, स्थानान्तरण या विदेश यात्रा की सम्भावना हो। यदि राहु शुक्र से 7, 8 या 12वें भाव में पाप ग्रह से युक्त हो, तो बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव, किसी बन्धु से वियोग, शरीर कष्ट, धन हानि, ऋण रोग, व शत्रु भय होता है।

शुक्र मध्ये गुरु का अन्तर – गुरु उच्च या स्वराशि का हो एवं केन्द्र-त्रिकोण में स्थित हो, तो जातक की धर्म-कर्म एवं परोपकारी कार्यों में प्रवृत्ति बढ़े, माता-पिता एवं श्रेष्ठ व प्रिय-बन्धुओं का सहयोग मिले, उच्च विद्या, भूमि, मकान, स्त्री एवं पुत्र सन्तति का सुख प्राप्त हो, धन आय के साधनों में वृद्धि व सौभाग्यादि शुभ फल होते हैं। गुरु 6, 8 या 12वें भाव में नीचादि हो, तो मानसिक व शरीर कष्ट, आत्मीय भाई-बन्धुओं से मतभेद, स्त्री व संतान के कारण परेशानी, उच्च विद्या में विघ्न, पेट विकार, धन एवं परिवार सम्बन्धी उलझनों का सामना होता है।

शुक्र मध्ये शनि का अन्तर – शनि उच्च एवं स्वराशिस्थ होकर शुभ भावस्थ हो, तो जातक को भूमि धन, वाहन एवं स्त्री, संतान आदि पारिवारिक सुखों में वृद्धि होती है। धर्म, ज्योतिष, तंत्र आदि में रूचि हो, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के सम्बन्ध हो, व्यवसाय में भी धन लाभ के अवसर प्राप्त हों। शनि यदि नीच, अस्त, शत्रु आदि राशि का होकर 6, 8, 12वें भाव में हो, तो शरीर कष्ट, स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, निकट-बन्धुओं के साथ कलह, कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, आय कम तथा खर्च अधिक रहें, आर्थिक परेशानियां, क्लिष्ट रोग से शरीर कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

शुक्र मध्ये बुध का अन्तर – बुध उच्च, स्वराशि हो कर केन्द्र-त्रिकोण में, शुभ ग्रह युक्त हो, तो जातक को उच्च विद्या में सफलता, किसी नए विषय जैसे संगीत, साहित्य, कला, शिल्प, कम्पयूटर, ज्योतिष, धर्मादि विषयों में जानकारी की वृद्धि, व्यवसाय में क्रय-विक्रय से लाभ, स्त्री व सन्तान सुख, नए-नए मित्रों के साथ सम्बन्ध होते हैं। यदि बुध शुक्र से 6, 8 या 12वें भाव में नीच, अस्तादि हो, तो जातक का परिवार जनों से झगड़ा, धन की फिज़ूलखर्ची बहुत हो, स्त्री-सन्तान आदि के बारे परेशानी, वात, कफ़ आदि के कारण रक्त विकार एवं कष्ट हो।

शुक्र मध्ये केतु का अन्तर – केतु स्वराशि, उच्च आदि स्थिति में होकर 3, 6, 9 या 11वें हो, तो मान-सम्मान में वृद्धि, गुप्त युक्तियों से धन लाभ, किसी नवीन कार्य में रूचि एवं देश-प्रदेश की यात्रा का प्रसंग बने। यदि केतु शुक्र से 6, 8 या 12वें स्थान से अशुभ राशिगत हो, तो परिवार में कलह, वियोग, शत्रु द्वारा भय, धन हानि, दुर्घटना से चोटादि का भय अथवा पित्तादि के कारण रोगादि की सम्भावना हो। केतु का उचित उपाय करने से लाभ रहे।

योगिनी दशाओं का फल

भारतीय फलित ज्योतिष में अनेक प्रकार की दशाओं और उनके फलों का वर्णन मिलता है। विंशोत्तरी दशा पद्धति के पश्चात् उत्तर-पश्चिमी भारत में योगिनी दशा का प्रणयन अवश्य किया जाता है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर इत्यादि प्रदेशों में योगिनी दशाओं का विशेष प्रचलन है।

योगिनी दशा के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हम अपने ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं। पाठकों की सुविधा के लिए संक्षेप में पुनः जानकारी देते हैं।

योगिनी दशा में मंगल आदि दशाओं का कुल मान 36 वर्ष का होता हे। 36 वर्ष के पश्चात् उनकी पुनः आवृत्ति होती है। इन आठ दशाओं के क्रमशः ये नाम हैं -

1. **मंगला**, 2. **पिंगला**, 3. **धान्या**, 4. **भ्रामरी**, 5. **भद्रिका**, 6. **उल्का**, 7. **सिद्धा**, और 8. **संकटा**। इनकी क्रम संख्या अनुसार ही इनकी वर्ष संख्या निर्धारित की गई है, जिनका कुल जोड़ 36 वर्ष आता है। 1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7+ 8 = कुल 36 वर्ष। मंगला, पिंगला आदि दशाएं अपना नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा जानने की विधि - विंशोत्तरी दशा की भांति ही योगिनी दशा का आधार 27 नक्षत्र हैं। यथा अश्विनी नक्षत्र से प्रारम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में 3 जोड़ करके, कुल जमा को 8 द्वारा भाग देने से यदि 1 शेष बचे तो मंगला, 2 शेष बचें तो पिंगला, 3 बचें तो धान्या इत्यादि क्रमानुसार दशा जानें, यदि शेष शून्य (0) बचे तो आठवीं अर्थात् संकटा दशा जानें।

प्रत्येक दशा का स्वामी ग्रह भी अलग-अलग ग्रह होता है। किस नक्षत्र के अन्तर्गत मंगला, पिंगला आदि कौन सी दशा आती है तथा उस दशा का स्वामी कौन सा ग्रह है। यह सब आगामी तालिका (चक्र) से जान सकते हैं -

जन्म नक्षात्रानुसार योगिनी दशा चक्र

दशा नाम	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
दशा वर्ष क्रम	1	2	3	4	5	6	7	8
दशा स्वामी	चंद्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	रा. | के
जन्म नक्षत्र	आर्द्रा चित्रा श्रवण	पुर्न स्वाती धनिष्ठा	पुष्य विशाखा शतभिषा	अश्ले. अनु. पू.भा. अश्वि.	मघा ज्येष्ठा उभा. भरणी	पूफा. मूला रेवती कृतिका	उफा. पूषा. रोहिणी	हस्त उषा. मृग.

जन्म नक्षत्र से योगिनी दशा का भोग्य काल जानना

विंशोत्तरी दशा पद्धति के समान ही योगिनी दशा में जन्म कालीन नक्षत्र का भयात (नक्षत्र का बीता हुआ काल) तथा भभोग (कुल मान) - दोनों को पलात्मक में बना लें। फिर पलात्मक भयात् को योगिनी की जन्म दशा वर्षों से गुणा करके, प्राप्त संख्या को पलात्मक भभोग के द्वारा भाग देने से योगिनी दशा के भुक्त वर्ष, मास आदि निकल आएँगे। इस प्राप्त वर्ष, मासादि को जन्म दशा के कुल वर्षों में से घटा देने से हमें जन्म कालीन भोग्य दशा के वर्ष, मास आदि प्राप्त हो जाएंगे।

उदाहरण - **मान लो, 20 अक्तूबर, सन् 2000 ई., शुक्रवार की अर्द्धरात्रि 1 बजकर 30 मिंट (ईष्ट ४७/१३) पर जन्मे किसी बालक की योगिनी दशा निकालनी है। जन्म समयानुसार पुष्य नक्षत्र का भयात् ३०**

घड़ी १० पल तथा भभोग ६६ घड़ी ४५ पल होंगे। ऊपर लिखी तालिका अनुसार धान्या दशा प्रारंभ होगी। अब पलात्मक भयात् को दशा वर्ष 3 से गुणा करने पर 5430 पल प्राप्त हुए। इसको पुष्य नक्षत्र के भभोग 4005 से भाग देने पर हमें भुक्त दशा 1 वर्ष 4 मास, 8 दिन प्राप्त हुए।

इसको धान्या दशा के कुल मान 3 वर्ष में से घटा देने पर हमें भोग्य धान्या दशा के 1 वर्ष 07 मास तथा 22 दिन प्राप्त हुए। इसको जन्म तारीख, मास, वर्ष आदि में जमा करने पर धान्य दशा 12 जून, 2002 तक समाप्त होगी। इसके आगे क्रमानुसार भ्रामरी (4 वर्ष), भद्रिका (5 वर्ष) इत्यादि जमा करते जाने से आगामी वर्षों का भोग्य दशा काल प्राप्त हो जाएगा।

योगिनी दशा में अन्तर्दशा निकालने की विधि - अन्तर्दशा सम्बन्धी चक्र ज्योतिष तत्त्व गणित-खण्ड में उदाहरण सहित पढ़ सकते हैं।

(1) मंगला दशा (1 वर्ष) - (ज्ञानानन्दकरी दशा भवति सा ज्ञेया सदा मंगला) - मंगला दशा में मंगल कार्यों का उदय होता है। विद्या में सफलता, जातक की प्रवृत्ति धार्मिक कार्यों, ब्राह्मणो एवं ईश्वर भक्ति एवं परोपकार के कार्यों में बढ़ती है। स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होता है। गृह में किसी मंगल कार्य का उत्सव होने की भी सम्भावना होती है। जातक की प्रवृत्ति सत्कार्यों की ओर अधिक रहती है।

(2) पिंगला दशा (2 वर्ष) - इस दशा में शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, घरेलू कलह-क्लेश, धन हानि, बनते कामों में विघ्न-बाधाऐं, कार्यो में विफलता, नीच लोगों से कुसंगति, व्याकुलता, गुप्त चिन्ता, अस्वस्थता आदि अशुभ फल होते हैं। पिंगला दशा प्रारम्भ में कुछ सुखकारक परन्तु उत्तरार्द्ध में कष्टकारी मानी जाती है। जातक का अधिकांश समय सोच-विचार में व्यतीत होता है। मित्र भी शत्रुओं जैसा व्यवहार करते हैं। आय कम तथा खर्च अधिक होते हैं।

(3) धान्य दशा फल (3 वर्ष) - इस दशा में जातक को धन-धान्य एवं सुख के साधनों में वृद्धि होती है। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं। स्त्री एवं सन्तान की ओर से खुशी प्राप्त होती है। विद्या लाभ, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। जातक का धन तीर्थ यात्रा, धर्म एवं परोपकारी कार्यों में भी व्यय होता है। सरकारी क्षेत्रों से भी सम्मान एवं लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं।

(४) भ्रामरी दशा (४ वर्ष) - स्त्री, संतान अथवा परिवार की तरफ से परेशानी, कलह-कलेश का भय, अधिकांश समय भ्रमण (घूमने फिरने) में व्यतीत हो, कई प्रकार के कार्यों में व्यस्तता रहे, परन्तु स्थिरता न हो, आय कम तथा खर्च अधिक रहें, स्वास्थ्य भी ठीक न रहे, चित्त में व्याकुलता रहे, शत्रु भय, शरीर कष्ट तथा किसी ऋण लेने की भी सम्भावना हो सकती है। इस दशा काल में दौड़धूप व खर्च अधिक होते हैं।

(5) भद्रिका दशा (5 वर्ष) - इस दशा काल में जातक के पुण्यों का उदय और धर्म-कर्म की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। साथ ही धन-धान्य की वृद्धि तथा जातक के गुणों का प्रकाश बढ़ता है। उच्च विद्या में सफलता, व्यवसाय में लाभ व उन्नति, गृह में कोई मंगल कार्य हो, विप्रादि श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क, सुन्दर एवं सुशील स्त्री का सुख, वाहन एवं भूमि आदि सुखों की प्राप्ति होती है। कामुक एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। दशा के अन्तिम भाग में व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष व कठिनाईयों का सामना होता है।

(6) उल्का दशा (6 वर्ष) - इस दशा में जातक का निकटस्थ सम्बन्धियों एवं मित्रों से मतभेद एवं विरोध रहे, कोई बना बनाया काम बिगड़े, अत्यधिक संघर्ष करने पर भी आय कम व खर्चों की अधिकता रहे। स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानियां, क्रोध एवं तनाव अधिक हो। दुर्घटना से चोटादि का भय, शरीर कष्ट, बुद्धि में विभ्रम, व्याधि एवं शत्रु भय, हृदय, उदर, कान, दांतों, पैरों एवं नेत्रों में पीड़ा तथा व्यसनों आदि के कारण कष्ट आदि अशुभ फल प्रकट होते हैं।

(7) सिद्धा दशा (7 वर्ष) - उच्च विद्या में सफलता, सोचे हुए (अभीष्ट) कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, जातक की धार्मिक कृत्यों (परोपकार आदि) की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि विद्याओं की ओर रूचि, भूमि-जायदाद, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों में वृद्धि तथा उच्चपदासीन (प्रतिष्ठित)

शेष पृष्ठ 260 पर देखें।

दशवर्गों में द्वादशांश का फलादेश विचार

('ज्योतिष तत्त्व' - फलित के प्रथम खण्ड के पृष्ठ 238 का शेष भाग)

द्वादशांश फल विचार - द्वादशांश कुण्डली से जातक के माता-पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। जातक के माता-पिता की आयु, उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति, माता-पिता से प्राप्त सुख का ज्ञान द्वादशांश कुण्डली के विवेचन से मिल जाता है।

द्वादशांशेश का जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में फल प्रथम खण्ड में लिख चुके हैं -

द्वादशांश लग्नेश एवं ग्रह स्थिति फल

(1) सूर्य यदि द्वादशांश लग्नेश हो तो जातक का अस्थिर मन, बहुत उग्र और उतावला होता है। यदि सूर्य द्वादशांश कुण्डली में अपनी ही राशि में हो तो जातक का तीक्ष्ण स्वभाव, अत्यधिक परिश्रमी, सामान्य बुद्धि, वह बाहर से तेज़, परन्तु मन से डरा या भयभीत सा रहता है।

(2) चन्द्रमा यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में चन्द्र की राशि कर्क हो तो जातक विद्वान, चंचल, भाई-बन्धुओं एवं परिवार की पालना (पोषक) करने वाला होता है। सदाचारी, अपने कुल में श्रेष्ठ, धार्मिक निष्ठा से युक्त होता है। सदाचारी, अपने कुल में श्रेष्ठ, धार्मिक निष्ठा से युक्त होता है। चन्द्रमा भी उसमें हो तो जातक शुभ लक्षणों वाले पुत्र का पिता, धन-सम्पदा, वाहनों से युक्त विनीत प्रकृति वाला होगा। मंगल, हो तो जातक भाई-बन्धुओं से युक्त, उदार होता है। बुध हो, तो जातक विनम्र, बातचीत करने में कुशल, देश-विदेश की यात्राएँ करने वाला होता है।

(3) मंगल यदि द्वादशांश लग्नेश हो तो जातक उग्र स्वभाव का, झगड़ालू, रक्त व चर्म रोग से पीड़ित होता है। मंगल की राशि (द्वादशांश लग्न में 1 या 8) में सूर्य स्थित हो तो जातक पाप कर्मों की ओर प्रवृत्त, भोगी हो सकता है। चंद्रमा हो, तो धर्म परायण, सुशील, मंगल हो तो सुन्दर किन्तु, पापी, कुव्यसनी, परनिन्दक, बुध हो, तो रोग ग्रस्त, बहुत परिश्रमी, महिलाओं से दुर्व्यवहार करता है। गुरु हो तो जातक दुष्ट, रोग पीड़ित तथा दुराचारी, शुक्र हो तो जातक विदेश में जाने का इच्छुक, जुआरी, अविवेकी, बल-पौरुष सम्पन्न तथा स्त्रियों को प्रिय होता है। शनि मंगल के द्वादशांश में हो, तो जातक कुटिल, आलसी, पित्त विकार जन्य रोग से ग्रस्त, डरपोक होता है।

(4) बुध यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में मिथुन अथवा कन्या राशि हो, सूर्य उसमें स्थित हो, तो जातक को माता-पिता की स्नेह, छाया का सुख एवं सहयोग प्राप्त होता है, जातक सत्यनिष्ठ व आतिथ्य प्रेमी होता है। चंद्र हो, तो जातक सौम्य स्वभाव का, तकनीकी ज्ञान सम्पन्न, प्रतिष्ठित, यशस्वी, सेवा सत्कार करने वाला व सुखी होता है। मंगल हो, तो जातक उद्यमशील, धनी, बहुमूल्य वस्त्र व आभूषणों से युक्त, सरकार की ओर से पीड़ित, धैर्यशाली व सुन्दर पत्नी वाला होता है। बुध हो, तो ज्योतिष, आध्यात्म में रुचि रखने वाला, विद्वान, विविध कलाओं में दक्ष व शत्रुओं पर प्रभावी होता। गुरु हो, तो प्रतिष्ठित, सर्वगुण सम्पन्न तथा पुत्र, भाई-बन्धुओं का स्नेह प्राप्त। शुक्र हो, तो जातक सुन्दर आकर्षक, भोग-विलास में तत्पर, खर्चीले स्वभाव का तथा पिता से विचार-वैमनस्य रहेगा। शनि हो, तो जातक प्रतिभाशाली, समयानुसार व्यवहार करने वाला, विनम्र होता है।

(5) गुरु यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में धनु या मीन राशि हो, सूर्य उस में स्थित हो, तो जातक स्त्रियों में प्रिय, संगीत प्रिय, विनयशील, धनाढ्य, धार्मिक विचारों से युक्त होता है। चंद्रमा हो, तो जातक सौम्य, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व, वाहनादि भौतिक सुखों से युक्त होता है। मंगल गुरु के द्वादशांश में हो, तो जातक बुद्धिमान, तर्क-वितर्क करने वाला, स्वतन्त्रता प्रिय, धनी, पिता से सहायता प्राप्त करने वाला व पैतृक धन से सुखी होगा, बुध हो, तो जातक प्रतिष्ठित, माता-पिता, भाई-बन्धुओं का सहयोग एवं स्नेह प्राप्त करने वाला, गुरु अपने ही द्वादशांश में होकर लग्न भाव में हो, तो जातक स्वस्थ शरीर युक्त, सौम्य एवं धार्मिक स्वभाव, परिवार या किसी संस्था/आफिस का मुखिया होता है। शुक्र

हो, तो जातक प्रतिष्ठित, पुत्रवान,धनवान, धार्मिक तथा सभी प्रकार के भौतिक सुखों को भोगने वाला होगा। शनि हो, तो जातक संकोचशील, विनम्र, मान-सम्मान प्राप्त प्रतिष्ठित, माता-पिता, भाई-बन्धुओं का सुख प्राप्त करने वाला होगा।

(6) शुक्र यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में वृष या तुला राशि हो, **सूर्य उसमें स्थित हो**, तो जातक शूरवीर, किसी विशेष कला में निपुण तथा यशस्वी होता है। **चंद्रमा हो**, तो धन, वैभव, स्त्री तथा भौतिक सुख प्राप्त करने वाला व विनम्र होगा। **मंगल हो**, तो जातक सुन्दर, शत्रुजित, परिश्रमी, महिलाओं का प्रिय होता है। **बुध हो**, तो जातक का सौम्य स्वभाव, धार्मिक, ज्योतिष तथा पठन-पाठन का शौकीन होता है। **गुरु हो**, तो जातक प्रभावशाली वक्ता, विद्वान, धर्मिक, संगीत प्रेमी, परिवार या संस्था का मुखी होता है। **शुक्र हो**, तो जातक संगीत-कला प्रेमी, समाज में प्रतिष्ठित, सौन्दर्य प्रेमी तथा रतिकुशल होता है। **शनि हो**, तो जातक खाने-पीने का शौकीन, वाहन,भूमि तथा सुन्दर, सुशील पत्नी/पति का सुख प्राप्त होता है।

(7) शनि यदि द्वादशांश लग्नेश हो अर्थात् द्वादशांश लग्न में मकर या कुम्भ राशि हो, **सूर्य उसमें स्थित हो**, तो जातक दुर्बल, डरपोक, कमज़ोर यौन सामर्थ्य वाला, चिड़चिड़ेपन वाला होता है। **चन्द्रमा हो**, तो जातक सत्यनिष्ठ, धनी किन्तु थोड़ा आलसी, उसके शौक बहुत कम होते हैं, भाई-बहन, बंन्धु, बहुधा उसकी अपेक्षा या त्याग करते हैं। **मंगल हो**, तो निकट भाई-बन्धुओं से झगड़ा/विवाद, जातक झगड़ालू, चंचल तथा अधिक बोलने वाला होता है। **बुध हो**, तो जातक अपव्ययी, आर्थिक स्थिति मध्यम, अनेक रोगों से युक्त होकर बहुत कष्ट पाता है। **गुरु हो**, तो जातक अश्लील, बहुत कष्ट पाने वाला होता है। **शुक्र हो**, तो जातक जन्म स्थान से दूर रहने वाला, दुर्बल शरीर व रोगों से पीड़ित होता है। **शनि हो**, तो जातक स्थिर बुद्धि, प्रतिष्ठित, मुखिया, दुराचारी भी हो सकता है।

माता-पिता की आयु व स्वास्थ्य

द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि या उच्चस्थ होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख मिलता है। पिता दीर्घजीवी और सामान्य स्वास्थ्य को बनाए रखने वाला होता है। परन्तु यदि द्वादशांशेश नीच, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में हो अथवा त्रिक् भाव (6, 8, 12) में हो, तो जातक को पिता का अल्प सुख होकर है अथवा पिता को शरीर कष्ट रहता है।

इसी भांति यदि द्वादशांश पति स्त्री ग्रह हो तथा शुभ एवं स्वराशि, मित्र राशि या उच्च में स्थित होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो माता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यदि वही स्त्री ग्रह द्वादशांश कुण्डली में पाप युक्त या पाप दृष्टिगत होकर 6, 8 या 12वें भावों में हो, तो माता का सुख होता है अथवा माता को शरीर कष्ट रहता है।

यदि द्वादशांश लग्नेश पुरुष ग्रह हो, परन्तु वह मित्र राशि, स्वराशि या उच्च राशि में केन्द्र-त्रिकोण में बैठा हो और वह राशि स्त्री राशि हो, तो मिश्रित परिणाम मिलते हैं। अर्थात् जातक का पिता दीर्घजीवी तो हो सकता है, परन्तु उसका स्वास्थ्य खराब रह सकता है।

☆ द्वादशांशेश छठे भाव में माता-पिता को रोगी, अष्टम में हो, तो अपमृत्यु का भय तथा 12वें भाव में हो, तो धन हानि एवं अपव्यय होता है।

☆ द्वादशांश स्वामी तथा जातक के लग्न स्वामी में मैत्री हो, तो माता-पिता से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। यदि लग्नेश व द्वादशांश स्वामी शत्रु क्षेत्री हो, तो परस्पर वैमनस्य रहता है।

त्रिशांश कुण्डली निर्माण एवं फल विचार

एक राशि का तीसवां भाग त्रिशांश कहलाता है। (त्रिंश + अंश = त्रिंशांश)। त्रिशांश कुण्डली बनाने के लिए अन्य वर्ग कुण्डलियों के निर्माण की विधि से अलग विधि अपनाई गई है।

इस कुण्डली में त्रिशांशों का स्वामित्व, प्रकाश स्रोतों सूर्य और चंद्र में नहीं बांटा जाता। इसे केवल पांच तारा ग्रहों मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि को ही सौंप जाता है। किसी ग्रह को कितने त्रिंशांशों पर अधिकार होगा और यह

अधिकार किस क्रम से होगा, इसका निर्धारण भी सम और विषम राशियों में अलग-अलग किया जाता है। त्रिशांश में प्रत्येक राशि में 5-5 खण्ड होते हैं।

विषम राशियों में – मेष, मिथुन, सिंह आदि में 1 से 5 अंश तक, प्रथम खण्ड का स्वामी **मंगल**, 6 से 10 अंश तक द्वितीय खण्ड का **शनि**, 11 से 18 अंश तक के खण्ड का **गुरु**, 19 से 15 तक **बुध**, 26 से 30 अंश तक पंचम खण्ड का स्वामी **शुक्र** होता है। अर्थात् विषम राशि में स्थित कोई ग्रह 16 से 30 अंश के बीच होगा तो वह ग्रह शुक्र के त्रिशांश में माना जाएगा।

सम राशियों में – वृष, कर्क, कन्या, बृश्चिक, मकर व मीन में 5 अंश तक **शुक्र** का, दूसरा 6 से 12 अंश तक बुध का, तीसरा (13 से 20°) तक गुरु का, चौथा (21 से 25) अंश तक शनि का और पांचवा 26 से 30 अंश तक मंगल का त्रिशांश होता है।

	विषम राशि का त्रिशांश चक्र							सम राशि का त्रिशांश चक्र							
अंश	स्वामी	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुंभ	अंश	स्वामी	वृष	कर्क	कन्या	बृश्चि.	मकर	मीन
1 से 5 अंश	मंगल	1 मं.	1 मं.	1 मं.	1 मं.	1 मं.	1 मं.	1 से 5	शुक्र	2 शुक्र	2 शु.	2 शु.	2 शु.	2 शु.	2 शु.
6 से 10 अंश	शनि	11 श.	11 श.	11 श.	11 श.	11 श.	11 श.	6 से 12	बुध	6 बु.	6 बु.	6 बु.	6 बु.	6 बु.	6 बु.
11 से 18	गुरु	9 गु.	9 गु.	9 गु.	9 गु.	9 गु.	9 गु.	13 से 20	गुरु	12 गु.	12 गु.	12 गु.	12 गु.	12 गु.	12 गु.
19 से 25	बुध	3 बु.	3 बु.	3 बु.	3 बु.	3 बु.	3 बु.	21 से 25	शनि	10 श.	10 श.	10 श.	10 श.	10 श.	10 श.
26 से 30	शुक्र	7 शु.	7 शु.	7 शु.	7 शु.	7 शु.	7 शु.	26 से 30	मंग.	8 मं.	8 मं.	8 मं.	8 मं.	8 मं.	8 मं.

ध्यान रहे – ऊपर लिखे विषम एवं सम दोनों प्रकार के त्रिशांश चक्रों में किसी भी राश्यंशों के भाग में सूर्य व चन्द्रमा को कोई स्वामित्व प्रदान नहीं किया गया है।

त्रिशांश चक्रों द्वारा उदाहरण कुण्डली के लिए आप ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)का अध्ययन कर सकते हैं।

त्रिशांश कुण्डली द्वारा फल विचार

(1) त्रिशांश कुण्डली से जातक के जीवन में होने वाले मानसिक एवं शारीरिक कष्टों, संघर्षों, कठिनाईयों, लाभ-हानि एवं अन्य सम्भावित दुखों व परेशानियों का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त जातक सम्बन्धी चारित्रिक विशेषताओं, गुण-दोषों आदि का भी पता चलता है। त्रिशांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह गुरु, बुध अथवा शुक्र हो, तो जातक अपने परिवार तथा अन्य लोगों के साथ अनुकूल आचरण एवं सद्व्यवहार करने वाला, परोपकार एवं शुभ कार्य करने वाला, अच्छी वाणी बोलने वाला होता है। इसके विपरीत यदि त्रिशांश पति ग्रह शनि, मंगल आदि हो, तो जातक क्रोधी स्वभाव का, कटु वाणी बोलने वाला होता है तथा लोगों के साथ उसका व्यवहार भी अशिष्टता से भरा हुआ एवं विपरीत आचरण वाला होता है।

(2) त्रिशांश लग्न का स्वामी, यदि शुभ ग्रह होकर अपनी उच्च या स्वराशि अथवा मित्र क्षेत्री हो, तथा किसी पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो, तो जातक-जातिका स्वस्थ, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। इसके विपरीत यदि त्रिशांश स्वामी ग्रह अशुभ हो, या नीच एवं शत्रु राशिगत होकर पापाक्रान्त हो, तो जातक-जातिका रुग्ण शरीर एवं अनाकर्षक व्यक्तित्व वाला, क्रोधी एवं चिड़चिड़ा स्वभाव, परिवार वालों के साथ मामूली बातों पर विवाद रहे तथा उसकी मृत्यु लम्बी बीमारी के बाद कष्टपूर्ण होती है।

(3) त्रिशांश पति ग्रह कुण्डली में छटे भाव में शत्रु नीचादि राशि में हो, तो ग्रह राशि अनुसार रोग आदि से कष्ट , धन सम्बन्धी परेशानी, ऋण के कारण चिन्ता हो। त्रिशांश पति अष्टम में हो, तो सरकारी विभाग द्वारा दण्ड या परेशानी हो तथा द्वादश भाव में हो, तो जातक को दौड़-धूप एवं कष्टों का सामना अधिक रहता है। आय कम तथा खर्च भी अधिक होते हैं।

(4) त्रिशांश पति शदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो, तो जातक को भूमि, जायदाद, मकान, सुन्दर एवं सुशील स्त्री एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती है।

(5) त्रिशांश कुण्डली में अधिक ग्रह उच्च, स्वराशि या मित्र क्षेत्री हों, तो अथवा शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, ता

जातक साहसी, स्वावलम्बी, धन-सम्पदा, परिवार एवं वाहनादि सुखों से युक्त, धार्मिक, उच्च-प्रतिष्ठित एवं पराक्रमी होता है। यदि अधिक ग्रह नीच, शत्रु राशि आदि में हो, तो जातक को धन-सम्पदा आदि सुखों में कमी तथा व्यवसाय में भी साधनों की कमी तथा संघर्ष व कठिनाईयां अधिक होती हैं।

(6) मानसागरी के अनुसार त्रिशांश कुण्डली फल-कथन करते समय सत्त्वगुणी, रजोगुणी एवं तमोगुणी ग्रहों में जो अधिक बली हो, उसी के अनुसार फल कहना चाहिए, परन्तु उस फल-कथन में जातक की जाति, देश एवं कुलाचार आदि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

सत्त्वं रजस्तमो वा त्रिशांशे यस्य भास्करस्तादृक्।
बलिनः सदृशी मूर्ति बुद्ध्वा वा जातिकुलदेशान्॥ (मानसागरी)

(7) सूर्य, गुरु व चन्द्रमा **सत्त्वगुणी** ग्रह हैं। बुध-शुक्र **रजोगुणी** तथा शनि-मंगल **तमोगुणी ग्रह** है। ये सभी ग्रह अपने गुण स्वभावानुसार (आत्मसदृश) फल प्रदान करते हैं।

(क) त्रिशांश कुण्डली में सत्त्वगुणी ग्रह (सूर्य, चंद्र, गुरु) बली हों, अथवा लग्न में उनका बाहुल्य हो, एवं उच्च राशि या मित्र राशि हो कर केन्द्र-त्रिकोण या लाभ स्थान में हों, तो जातक सत्यवक्ता, परोपकारी, दयालु, धर्म-परायण, ब्राह्मण-देवताओं का भक्त, संतोषी, सरल हृदय, क्षमाशील, एवं सद्व्यवहार करने वाला होता है।

(ख) त्रिशांश में रजोगुणी ग्रह (बुध, शुक्र) अधिक प्रभावी (बली) हों, तो जातक भावुक, संगीत, गायन एवं ललित कलाओं में विशेष रूचि रखने वाला, व्यवहार कुशल, धन-सम्पदा, वाहन एवं स्त्री व सन्तान आदि सुखों से युक्त, उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क रखने वाला, क्रय-विक्रय करने में कुशल, अपनी स्त्री एवं परिवार से विशेष प्रेम रखने वाला तथा लोक व्यवहार में कुशल होता है।

(ग) त्रिशांश कुण्डली में यदि **तमोगुणी** ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतु) ग्रहों का प्रभाव अधिक हो, तो जातक क्रोधी, आलसी, अधिक सोने वाला, असत्यवादी, लोभी, षड्यन्त्र आदि कार्यों में कुशल, मदिरा, माँस एवं तामसिक भोजन करने वाला, स्वार्थी, अपने कार्य की सिद्धि के लिए नीति-अनीति का विचार न करने वाला होता है।

(घ) **मिश्रित प्रभाव** - कई बार जन्म कुण्डली एवं त्रिशांश आदि कुण्डलियों में लग्न एवं लग्नेश पर सत्त्व, रजस एवं तमोगुणी सभी प्रकार के ग्रहों का न्यूनाधिक प्रभाव होता है जिससे जातक के स्वभाव में अच्छे व बुरे सभी गुणों का मिश्रण पाया जाता है। ऐसी परिस्थिति में यदि जातक को पारिवारिक व सामाजिक परिवेश से अच्छे संस्कार मिले हों तथा स्वयं भी सुशिक्षित हो, तो ईश्वर कृपावश उसमें अच्छे गुणों का उद्रेक होता है तथा उसे ईश्वर, भक्ति, ज्ञान, सात्विक धन, सुन्दर व सुशील स्त्री आदि अच्छे फल प्राप्त होते हैं। अन्यथा यदा-कदा अशुभ फल भी होते हैं।

(8) आचार्य वराहमिहिर ने अपने ही त्रिशांश में स्थित ग्रहों का फल शनि के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रहों का शुभ ही माना है, जैसे -

(क) मंगल यदि अपने ही त्रिशांश में हो, तो जातक उत्साहशील, साहसी, पराक्रमी, उद्यमी एवं आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी, शत्रुओं पर सफलता पाने वाला होता है। जातक निज उद्योग द्वारा धनार्जन करने वाला, भूमि, वाहन, आवास, स्वास्थ्य एवं सुन्दर व सुशील स्त्री (पति), व सन्तान आदि सुखों से युक्त होता है।

(ख) यदि शनि अपने ही त्रिशांश में हो, तो जातक भूमि, मकान, वाहन, धन-सम्पदा आदि सुख-साधनों से तो युक्त होता है। परन्तु पारिवारिक एवं वैवाहिक सुखों में कमी होती है। ऐसा जातक कामुक तथा सवारी आदि से भ्रमण का शौकीन होता है। जातक का स्वास्थ्य भी खराब रहता है।

(ग) गुरु अपने ही त्रिशांश का हो, तो जातक धर्म-परायण, परोपकारी स्वभाव, बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिष्ठित एवं उच्चशिक्षित होता है। जातक धन-सम्पदा से युक्त, स्त्री, पुत्र, सवारी एवं पारिवारिक सुखों से युक्त, भाग्यशाली होता है।

(घ) यदि बुध अपने ही त्रिशांश में स्थित हो, तो जातक बुद्धिमान, तर्क-वितर्क करने में कुशल, कुशलवक्ता, हस्त शिल्प आदि तकनीकी कार्यों में निपुण, कला प्रेमी, क्रय-विक्रय एवं उद्योग आदि कार्य करने में कुशल होता है। व्यवसाय

में भी गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

(ङ) यदि शुक्र अपने त्रिशांश का हो, तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्त्व का स्वामी, धन-सम्पदा, सुन्दर एवं सुशील स्त्री एवं वाहन आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होता है। ऐसा जातक कामुक प्रवृत्ति, स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला, संगीत, गायन, सौन्दर्य एवं ललित कलाओं की ओर विशेष रूचि रखने वाला होता है।

मंगल आदि ग्रहों का अन्य ग्रहों के त्रिशांश का फल

(क) मंगल, शनि के त्रिशांश में हो, तो जातक कामुक, विलासाप्रिय, परस्त्री लोलुप, अपनी परिस्थितियों से असन्तुष्ट तथा अत्यन्त संघर्ष के बाद जीवन में उन्नति करता है।

(ख) मंगल गुरु के त्रिशांश में हो, तो जातक धार्मिक आस्थाओं से युक्त, परोपकारी एवं दयालु स्वभाव, उच्च विद्या प्राप्त एवं विद्वान होता हे। जातक अध्यापन, मंत्री, परामर्श देने वाला, पुरोहित, न्यायाधीश आदि के कार्यों में सफल होता है।

(ग) मंगल बुध के त्रिशांश में हो, तो जातक व्यवहार-कुशल, भाई-बन्धुओं एवं मित्रों का सहायक स्त्री, सन्तान, धन आदि सुखों से युक्त होता है।

(घ) मंगल शुक्र के त्रिशांश में हो, तो जातक कामुक एवं विलास प्रिय, गीत-संगीत, वस्त्र, आभूषण एवं स्त्रियों की संगति करने को उत्सुक होता है। खान-पान एवं भोग-विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक करता है। अभिनय, नृत्य, गायन, संगीत, चित्रकारी में रुचि, एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होता है।

षड्वर्ग सम्बन्धी विस्तृत फलादेश हेतु हमारे कार्यालय से फलित सम्बन्धी आगामी पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

सम्पादक - पं. पन्ना लाल।

पृष्ठ 255 का शेष भाग

योगिनी दशाओं के फल विचार

लोगों से सम्बन्ध बढ़ते हैं। विवाह एवं गृहस्थ सुख और सौभाग्य में वृद्धि तथा व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं। दशा के अन्त में पारिवारिक उलझनों के कारण कुछ कठिनाईयां व चिन्ताएं होती हैं।

(8) संकटा दशा (8 वर्ष) - में भाई-बन्धुओं या पारिवारिक सदस्यों के साथ विरोध एवं मन-मुटाव पैदा हो। शरीर कष्ट एवं शत्रु भय, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएं, अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ प्राप्त न हो, किसी विश्वस्त मित्र द्वारा धोखा दिए जाने की सम्भावना एवं धन हानि, स्त्री एवं सन्तान आदि के कारण तनाव व गुप्त चिन्ता, व्यवसाय में अस्थिरता, भ्रमणशीलता व खर्च अधिक हो, परदेश (विदेश आदि) में जाने की उत्कट इच्छा (अभिलाषा) बनी रहती है। इस दशावधि में उत्साह एवं पराक्रम में कमी, मानसिक व शरीरिक कष्ट, वात-पित्त एवं कफ़ादि में विकार के कारण रोग भय, अपव्यय, विघ्न भय आदि अशुभ फल होते हैं। संकटा दशा का पूर्वार्ध भाग राहु से तथा उत्तरार्द्ध भाग केतु से प्रभावित रहता है।

उपरोक्त पिंगला, उल्का, संकटा आदि क्रूर एवं अशुभ दशा के फल प्रकट हो रहें हों, तो जातक को उस दशा स्वामी ग्रह से सम्बन्धित ग्रह का जाप, पूजा एवं दानादि करके ग्रह शान्ति करवा लेनी चाहिए।

योगिनी दशा में अन्तर्दशाओं का फल विचार

योगिनी अन्तर्दशाओं में जब मंगला आदि शुभ दशाओं के अन्तर में धान्या, भद्रिका आदि शुभ योगिनी की ही अन्तर्दशा चलती है, तो अपने ग्रह स्वामी के गुणों के अनुसार शुभ फलों में वृद्धि होती है। यदि दोनों योगिनी अन्तर्दशाऐं अशुभ फलप्रदा होंगी, तो अशुभ फलों की मात्रा में वृद्धि होगी। यदि मुख्य योगिनी शुभ फली एवं उपदशा अशुभफली हो, तो मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

नोट - विंशोत्तरी, योगिनी आदि सभी प्रकार की दशाओं के फल का विचार करते समय उस समय की '**पंचाँग दिवाकर**' में दी गई ग्रहों की गोचर स्थिति एवं उसके प्रभाव को भी ध्यान में अवश्य रखना चाहिए। इससे ग्रह फलकथन में अधिक सूक्ष्मता होगी। पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

ज्योतिष शास्त्र और रोग विचार

प्राचीन काल में भारत सभ्यता और संस्कृति के क्षेत्र में अत्यन्त समृद्ध एवं विकसित देश था। प्राचीन ऋषियों ने अपने दिव्य ज्ञान और योगजन्य शक्ति से ग्रहों और नक्षत्रों के सम्बन्ध में बहुत कुछ जान लिया था। वे अपने दिव्य चक्षुओं से ग्रह और नक्षत्रों से राशि, नक्षत्र, तारा समूह, सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रहों की गति, स्थिति और संचार आदि को देखकर योगादि के बल से अपने शरीरगत चेष्टाओं से तुलना कर मनुष्य जीवन के बाह्य क्रिया-क्लापों तथा आन्तरिक मनः प्रवृत्तियों, गुण-स्वभावों तथा उनके द्वारा होने वाले शुभाशुभ फलों का निरूपण करते रहे। ज्योतिष का अगाध ज्ञान उन्हें वैदिक काल में ही था, परन्तु उसकी अभिव्यक्ति विभिन्न शाखाओं और साहित्य के रूप में क्रमशः क्षणः क्षणः कालान्तर में हुई। सहस्रों वर्ष पूर्व जब सामान्य मनुष्य ने अत्याधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों की कल्पना भी नहीं की थी, तभी दिव्य दृष्टि प्राप्त हमारे ऋषियों ने **''या ब्रह्माण्डे सा पिण्डे''** के सार्वभौमिक सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए ब्रह्माण्ड और पिण्ड में नर और नारायण में तथा पुरुष और प्रकृति के मध्य तादात्म्य होने का महासूत्र संसार को मिला। इन्हीं महासूत्रों के द्वारा हमारे पूर्व ऋषियों ने अपने दिव्य ज्ञान चक्षुओं के द्वारा समस्त ग्रह-नक्षत्रों की रश्मियों का प्राणियों पर पड़ने वाले प्रभाव का सूक्ष्म निरीक्षण किया। ज्योतिष शास्त्र में सत्ताईस (27) नक्षत्रों, द्वादश राशियों, नवग्रहों आदि के द्वारा अनिष्ट रोगों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कालपुरुष के विभिन्न अंगों को नियन्त्रित और निर्देशित करने वाली राशियों, नक्षत्रों, ग्रहों आदि की स्थितियों के आधार पर हम किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। किसी जातक की जन्मपत्री में स्थित राशि, नक्षत्र, ग्रह आदि शरीर के किसी न किसी अंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस ग्रह, नक्षत्र आदि का अशुभ प्रभाव होता है, उससे सम्बन्धित शरीरांग पर रोग का प्रभाव रह सकता है। इस सम्बन्ध में चन्द्रमा के अंशादि एवं जन्म नक्षत्र के आधार पर निकाली गई विंशोत्तरी, योगिनी आदि दशाऽन्तर दशा तथा गोचर ग्रहों की वर्तमान कालिक ग्रह स्थिति का अध्ययन महत्त्वपूर्ण रहता है।

ग्रह नक्षत्र मानवीय सुख-दुख, लाभ-हानि, उन्नति-अवनति, मान-अपमान, रोग, कष्ट, सम्पत्ति-विपत्ति आदि के कारण नहीं होते, बल्कि सूचक होते हैं—**''फलानि ग्रह संचारेण सूच्यन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना॥''**

मनुष्य ने जो भी शुभाशुभ कर्म पूर्व जन्मों में किए होते है, जन्मकुण्डली में ग्रह, उन्हीं कर्मों एवं उनकी प्रवृत्तियों के अनुसार राशियों एवं भावों की विभिन्न स्थितियों में बैठकर भविष्य फल की सूचना देते हैं।

मनुष्यों के अधिकांश रोग पाप कर्म के फलस्वरूप ही होते हैं—

''जन्मान्तर कृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते। तत् शान्तिरोषधैदानं, जपं होमं कृतादिभिः॥''

चरक संहिता एवं धर्म शास्त्रों के अनुसार भी मनुष्य तथा उसके माता-पिता द्वारा इस जन्म में एवं पूर्वजन्मों में किए पाप कर्म अथवा अज्ञानतावश की गई असावधानियां ही व्याधि रूप में प्रकट होती हैं—

''धी, धृति, स्मृति विभृष्टः कर्म यत्ऽशुभम्। प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोष प्रकोपणम्॥''

इन सब प्रकार के रोगों की शान्ति जप, तप, उचित औषधि, यज्ञ, दान एवं शुभ कर्मों के द्वारा करनी चाहिए॥

नक्षत्र और रोग विचार

प्राचीन भारतीय ज्योतिष नक्षत्र पद्धति पर ही आधारित था। भारतीय ज्योतिर्विदों का नक्षत्र ज्ञान उत्कृष्ट कोटि का था। रामायण काल एवं महाभारत काल में भी ग्रह नक्षत्रों का मानव जीवन पर प्रभाव के अनेकत्र प्रसंग मिलते हैं। जैसे रामायण में श्री राम के बनवास जाने से पूर्व दशरथ ने कहा था ''कि अंगारक (मंगल) मेरे नक्षत्र को पीड़ित कर रहा है।'' महाभारत में भी श्री कृष्ण जब कर्ण के साथ भेंट करने जाते हैं, तब कर्ण ने ग्रह स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि ''शनि रोहिणी नक्षत्र में स्थित मंगल को पीड़ित कर रहा है॥''

यजुर्वेद की **तैत्तिरीय** संहिता में 27 नक्षत्रों की सूची का वर्णन मिलता है। यह सूची कृतिका नक्षत्र में प्रारम्भ होती है। कालान्तर में अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ हुई। चन्द्रमा को 27 नक्षत्रों एवं पृथ्वी का परिभ्रमण करने में 27.3 दिन लगते हैं, अर्थात् एक दिन में लगभग एक नक्षत्र को पार कर लेता है। मेष राशि अश्विनी नक्षत्र के 0° अंश से आरम्भ होती है।

प्राचीन वैदिक काल से ही नक्षत्रों और भारतीय जीवन पद्धति का अभिन्न सम्बन्ध रहा है। मुहूर्त्त ज्योतिष अधिकांशतः नक्षत्रों पर ही आधारित है। मनुष्य जीवन को स्वस्थ, सुव्यवस्थित एवं उन्नत बनाने के उद्देश्य से प्राचीन आर्ष ऋषियों द्वारा जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित नक्षत्रों पर आधारित विभिन्न मुहूर्त्तों का आश्रय लेने का निर्देश दिया गया है। गर्भाधान से लेकर नामकरण, मुण्डन, विवाह, अन्त्येष्टि आदि सभी षोडश (16) संस्कारों तथा जीवन के अन्य सभी महत्त्वपूर्ण कार्य क्षेत्रों में नक्षत्रों एवं तदुपरि मुहूर्त्तों का समावेश अपरिहार्य रूप में स्वीकारा गया है। हमारे ऋषियों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भूमि क्रय-विक्रय, गृह निर्माण, गृह प्रवेश, यात्रा, बीजवपन, विपणि या व्यापारारम्भ, यात्रा, जन्मदिन, विद्यारम्भ, गुरु धारण करना, पाठ, जप, मन्त्रदीक्षा, यज्ञ-हवन आदि धार्मिक अनुष्ठान, देव-प्रतिष्ठा, वशीकरण, उच्चाटन, औषध सेवन आदि सभी क्षेत्रों में नक्षत्राधारित शुभ मुहूर्त्तों को ग्रहण करने के लिए विशेष बल दिया है। प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने काल पुरूष में एक महाकाल पुरुष की कल्पना की है। जिसके विभिन्न अंगों में 27 नक्षत्रों एवं 12 राशियों की कल्पना की गई है। जन्मकालीन किसी जातक का जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र जब जन्म समय अथवा वर्तमान कालीन गोचरवश किसी पापी ग्रह से आक्रान्त, दृष्ट या विद्ध होता है, तो तत्सम्बन्धी शरीर के अंग में रोग या पीड़ित होता है। यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो नक्षत्र अधीष्ठित शरीर का वह भाग पुष्ट होता है। **काल पुरुष** में नक्षत्रों का क्रम कृतिका से किया जाता है।

शरीर के विभिन्न अंगों पर नक्षत्रों की स्थिति

(1) **कृतिका**—सिर में, (2) **रोहिणी**—मस्तक में, (3) **मृगशिरा**—दोनों भौहों में, (4) **आर्द्रा**—आंखों में, (5) **पुनर्वसु**—नाक में, (6) **पुष्य**—मुख (चेहरे) में, (7) **आश्लेषा**—कानों में, (8) **मघा**—होठों एवं ठोडी में, (9) **पूर्वाफाल्गुनी**—दाहिने हाथ में, (10) **उत्तरा फाल्गुनी**—बाएँ हाथ में, (11) **हस्त**—अंगुलियों में, (12) **चित्रा**—गर्दन में, (13) **स्वाती**—छाती में, (14) **विशाखा**—हृदय में, (15) **अनुराधा**—उदर में, (16) **ज्येष्ठा**—अमाशय में, (17) **मूला**—कुक्षि (कोख) में, (18) **पूर्वाषाढ़ा**—पीठ में, (19) **उत्तराषाढ़ा**—रीढ़ में, (20) **श्रवण**—कमर में, (21) **धनिष्ठा**—गुदा में, (22) **शतभिषा**—दाहिनी जांघ में, (23) **पूर्वाभाद्रपद**—बाई जांघ में, (24) **उत्तराभाद्रपद**—पिंडलियों में, (25) **रेवती**—टखनों में, (26) **अश्विनी**—पैरों का ऊपरी भाग, (27) **भरणी**—पैरों के तलवों में वास होने की कल्पना की गई है।

ज्योतिष एवं मुहूर्त्त शास्त्र में **अभिजित** नामक 28वें नक्षत्र को भी सम्मिलित किया जाता है, इसकी गणना का क्रम उत्तराषाढ़ा की 15 घड़ियां और श्रवण की प्रारम्भिक 4 घड़ियाँ लेकर करते हैं। मुहूर्त्तादि कार्यों में इसे अति शुभ माना जाता है। परन्तु अभिजित नक्षत्र क्रान्ति वृत्त (Ecliptic) से बाहिर पड़ने के कारण चन्द्र भ्रमण के मार्ग में पड़ने वाले 27 नक्षत्रों में इसकी गिनती नहीं की जाती। 27 नक्षत्रों में जन्म का फल हम अपने ज्योतिष तत्त्व गणित खण्ड (पृष्ठ 57 से पृष्ठ 72 तक) में लिख चुके हैं, यहाँ नक्षत्रों से सम्बन्धित मुख्य रोगों का ही वर्णन किया जाता है—

27 नक्षत्रों से सम्बन्धित विशेष रोग

(1) **अश्विनी**—मेष राशि एवं केतु का यह नक्षत्र यदि पाप ग्रह से पीड़ित या दृष्ट हो, तो जातक ज्वर, अनिद्रा, वायु पीड़ा, फोड़े-फुँसी, जलन, सिर या पाँव पर चोट, बुद्धिभ्रम, अर्द्ध विक्षिप्तता, निम्न एवं उच्चरक्तचाप या शरीर के किसी भाग में तीव्र पीड़ा होने की सम्भावना होती है। यह गण्डमूलक नक्षत्र होने से पूज्य होता है। इसके देवता अश्विनी कुमार है। उपाय हेतु औषध सेवन के साथ अपामार्ग के पौधे की जड़ को लाल वस्त्र के टुकड़े में लपेटकर भुजा में बांधना चाहिए।

(2) **भरणी**—(नक्षत्र स्वामी शुक्र, राशि मेष) यदि इस नक्षत्र का स्वामी पाप ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक मदिरा आदि व्यसनों से ग्रस्त, तीव्र ज्वर प्रकोप, माथे एवं पांव पर चोट का भय, नज़ला, जुकाम, कफ, खाँसी, शक्तिहीनता, अति कामुकता एवं काम जन्य गुप्त रोग, पेट विकार/नेत्र आदि रोगों का भय होता है। इस नक्षत्र का देवता यम है। औषधोपचार के साथ आँवले वृक्ष की पूजा तथा अगस्त्य पौधे की जड़ लाल वस्त्र में लपेटकर भुजा में बांधें।

(3) ***(i)* कृतिका**—(प्रथम चरण, राशि मेष, नक्षत्र स्वा. सूर्य) यह नक्षत्र पीड़ित होने पर सिर में चक्कर, अनिद्रा, शरीर में जलन, हृदय रोग, घुटनों में दर्द, गठिया, तीव्र-ज्वर, सिर में चोट, नेत्र रोग (Eye Sight), फोड़ा-फुँसी, चेचक, शस्त्राघात या दुर्घटना, उच्चरक्तचाप आदि का भय होता है। इसका देवता अग्नि है।

***(ii)* कृतिका**—(अंतिम 3 चरण, राशि वृष, नक्षत्र स्वामी सूर्य) जन्म समय यह नक्षत्र पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो **जातक** मुख-चेहरा, गर्दन, कण्ठनली टांसिल, निचला जबड़ा, अनिंद्रा रोग, हृदय में कष्ट, विषम एवं तीव्र ज्वर, दाँत दर्द, मसूड़ों की सूजन, नेत्र रोग, फोड़ा-फुँसी, उच्च-रक्त चाप आदि रोगों की सम्भावना होती है। कपास के पौधे की जड़ भुजा में बांधने से लाभ होता है।

(4) **रोहिणी**—(नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा, राशि स्वामी शुक्र)—इस नक्षत्र का अधिपति देवता ब्रह्मा है। यह नक्षत्र पापपीड़ित होने से ज्वर, सिर दर्द, प्रलाप, गले में खराबी, छाती या पाँव में दर्द, कुक्षिशूल, काम जन्य गुप्त रोग, सर्दी-जुकाम, नाक बहना, शरीर अंगों में सूजन, मस्तक में चोट आदि का भय, स्त्रियों में अनियमित मासिक धर्म की सम्भावना होती है। औषधोपचार के साथ जामुन वृक्ष की पूजा करनी चाहिए। अपामार्ग की जड़ भुजा में बांधने से लाभ होता है।

(5) ***(i)* मृगशिर**—(प्रथम 2 चरण के नक्षत्र में राशि स्वा. शुक्र, नक्षत्र स्वामी मंगल) यह नक्षत्र पापाक्रान्त होने से मुख पर मुहाँसे, कण्ठपीड़ा, टांसिल, खांसी, डिफ्थेरिया, मलावरोध (कब्ज़), नजला-जुकाम, नेत्र-कष्ट, मलेरिया, गुप्त रोग आदि की सम्भावना होती है। इसका देवता चन्द्रमा है। श्री सत्यनारायण का व्रत रखना लाभदायक होता है।

***(ii)* मृगशिर**—(अन्तिम 2 चरण) नक्षत्र स्वामी मंगल, राशि (मिथुन) स्वामी बुध है। जन्मकालीन अशुभ ग्रहों से पीड़ित होने से वात-पित्त-कफ़ (त्रिदोष) सम्बन्धी दोष, रक्तचाप, गुप्त-रोग, वायु विकार, खांसी, नज़ला, जुकाम आदि खुजली आदि त्वचा रोग, मलेरिया आदि ज्वर रोगों की सम्भावना रहती है। दवाई के साथ मन्त्रपूर्वक जयंती घास लाल कपड़े में लपेट कर भुजा में बांधें।

(6) **आर्द्रा**—मिथुन राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी बुध तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के देवता रूद्र (शिव) हैं। यह नक्षत्र पाप ग्रहों से पीड़ित होने से जातक तीव्र ज्वर, नजला-जुकाम, खांसी आदि वात/पित्त एवं कफ विकार, अनिद्रा, सिर में चक्कर, गले एवं कान में कष्ट एवं पीड़ा, शुष्क खांसी, नेत्र कष्ट, मतिभ्रम, कर्ण रोग, डिफ्थेरिया, पेट में वायु विकार आदि की सम्भावना होती है। प्रति सोमवार शिव-पूजन तथा पीपल की जड़ दोहरी करके मन्त्रपूर्वक भुजा में बाँधना शुभ है।

(7) ***(i)* पुनर्वसु**—(प्रथम 3 चरणों, मिथुन राशि स्वामी बुध तथा नक्षत्र स्वामी गुरू है। आदित्य देवता हैं। जन्मकालीन पापाक्रान्त होने से कान, नाक, गले, श्वास सम्बन्धी रोग, गुर्दे व पेट-विकार, सिर पीड़ा, पेट-गैस, तीव्र ज्वर आदि दवाई के साथ श्वेत पुष्प वाले आक की जड़ को रविपुष्य योग में दाईं भुजा में बांधे।

(*ii*) **पुनर्वसु**—(चतुर्थ चरण कर्क राशि स्वामी चन्द्रमा तथा नक्षत्र स्वामी गुरू है। इसके अन्तर्गत फेफड़े, छाती का ऊपरी भाग, पेट का ऊपरी भाग, गुर्दे, वक्ष स्थल एवं स्तन सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है। गाय को चारा, चापाती, गुड़ आदि से सेवा करना तथा गोमूत्र का सेवन करना, कष्टों से छुटकारा पाने में लाभप्रद होगा।

(8) **पुष्य**—(राशि (कर्क) स्वामी चन्द्र नक्षत्र स्वामी शनि है तथा बृहस्पति देवता है। यदि यह नक्षत्र या नक्षत्र स्वामी पाप ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक श्वास रोग, अल्सर, गैसट्रिक, पत्थरी, मन्दाग्नि, तीव्र ज्वर, पीलिया, शुष्क खांसी, तपेदिक, कैंसर, विटामिन सी की कमी, राजयक्ष्मा, एक्ज़ीमा, पायरिया आदि रोगों की सम्भावना होती है। औषधि सेवन के अतिरिक्त पीपल वृक्ष की पूजा तथा कुश की जड़ का दाईं भुजा में मन्त्रपूर्वक बांधना तथा ब्राह्मणों को दान देना कल्याणकारी होता है।

(9) **आश्लेषां**—कर्क राशि के अन्तर्गत राशि स्वामी चन्द्रमा एवं नक्षत्र स्वामी बुध है। यह गण्डमूलक नक्षत्र है। प्रथम चरण में शुभ, परन्तु 2, 3 एवं 4 चरण पर बालक माता-पिता के लिए कष्टकारी होता है। जन्म समय यह नक्षत्र पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो पेट एवं वायु विकार, लिवर एवं पाचन प्रक्रिया सम्बन्धी रोग, पीलिया, पत्थरी, दन्त रोग, कफ, कोल्ड, एलर्जी, हिस्टीरिया एवं विषैली वस्तुओं एवं जन्तुओं से हानि तथा विटामिन बी की कमी होने का भय रहता है। इसका देवता नाग है। पटोल की जड़ को बाजू में बाँधना शुभ है, नाग चंपा वृक्ष की पूजा करना शुभ है।

(10) **मघा**—सिंह राशि अन्तर्गत स्वामी सूर्य तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इसके अर्यमा नामक पितर देवता हैं। जन्म समय मघा नक्षत्र अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक अर्धांग पीड़ा, शिर-पीड़ा, वात विकार, हृदय की धड़कन में वृद्धि, उच्च रक्तचाप, भोजन का विषाक्त (विकार) हो जाना, गुर्दे में विकार, मानसिक विकृति, पीठ दर्द, शीत जन्य रोग एवं पितृ दोष के कारण होने वाले मानसिक व शारीरिक विकार होने की सम्भावनाएँ होती हैं। यह भी गण्डमूल नक्षत्र है। प्रथम एवं द्वितीय चरण होने से माता-पिता को कष्ट एवं परेशानी होती है। उपाय स्वरूप, वट वृक्ष की पूजा करना, श्राद्ध-तर्पण, दान तथा भृंगराज पौधे की जड़ दाईं बाजू में मंत्रपूर्वक बांधना कल्याणकारी होगा।

(11) **पूर्वाफाल्गुनी**—सिंह राशि अन्तर्गत स्वामी सूर्य तथा नक्षत्र स्वामी शुक्र है। जन्म कुण्डली में यह नक्षत्र पीड़ित होने से हृदय में विकार, सिर दर्द, नेत्र रोग, मानसिक व शारीरिक कष्ट, ज्वर, खांसी, पसली में पीड़ा, स्त्री या विपरीत योनि द्वारा पीड़ित, गर्भपात या सन्तान कष्ट, नाड़ी रोग, रक्तचाप, रक्तक्षीणता, पारम्परिक (Chronic) रोग आदि होने की सम्भावनाएँ होती हैं। इसका देवता भग है। दवाई के साथ-साथ भगवती देवी एवं पलाश वृक्ष की पूजा तथा पलाश के पौधे की जड़ मन्त्रपूर्वक बाजू में बांधना व दान करना कल्याणप्रद होता है।

(12) **उत्तराफाल्गुनी**—(प्रथम चरण) सिंह राशि होने से स्वामी सूर्य तथा नक्षत्र स्वामी भी सूर्य है। जन्मकालीन यह नक्षत्र पापाक्रान्त होने से सिर में दर्द, दुर्घटना से चोट भय, मियादी बुखार, पीठ दर्द, उच्च रक्तचाप, मानसिक उन्माद, अति क्रोध एवं उत्तेजना, हृदय पीड़ा, पेट विकार आदि। देवता अर्यमा (सूर्य का पुजारी)। श्वेतार्क की जड़ भुजा में बांधना (मन्त्रपूर्वक) तथा यथाशक्ति दान करना कल्याणकारी होता है।

(*ii*) **उत्तराफाल्गुनी**—(अंतिम 3 चरण) राशि स्वामी (कन्या) बुध तथा नक्षत्र स्वामी सूर्य है। जन्म समय पापाक्रान्त होने पर जातक को उदर विकार, यकृत (Liver) में विकृति, वात-पित्त विकार, पित्त-ज्वर, गर्दन में सूजन, पीठ में दर्द, रक्तचाप, त्वचा रोग, मन्दाग्नि, नेत्र विकार आदि रोगों का भय होता है। इसका देवता भी अर्यमा देव है। यदि जातक रोगग्रस्त हो, तो उसे श्वेता आँक की जड़ दाहिनी भुजा में मन्त्रपूर्वक बाँधनी चाहिए। शनि व मंगल के दिन जब उक्त नक्षत्र हो, तो उस दिन बाँधना लाभदायक होगा।

(13) **हस्त**—(कन्या राशि अन्तर्गत) राशि स्वामी बुध, नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा। जन्मकालीन यह नक्षत्र अशुभ होने से डायरिया, अफारा, पेट दर्द या वायु विकार, पाचन प्रक्रिया में विकार, आँतों में दर्द, त्वचा रोग, विटामिन बी की कमी, मियादी बुखार, अतिसार, शक्तिहीनता हाथों एवं बाजुओं में कमज़ोरी, हिस्टीरिया, पत्थरी, मधुमेह एवं पेशाब जन्य रोग, किडनी में दोष, फेफड़ों एवं श्वास प्रक्रिया में कष्ट एवं मानसिक तनाव आदि। इसका देवता सूर्य है। कष्ट निवारण हेतु औषधि उपचार के अतिरिक्त आँक या जावित्री की जड़ भुजा में बाँधे तथा अरिष्टक वृक्ष (रीठा) की पूजा करे तथा इसके बीज मन्त्र का 7 हज़ार की संख्या में पाठ करना कल्याणकारी होता है।

(14) (*i*) **चित्रा** (प्रथम 2 चरण, राशि कन्या, स्वामी बुध), नक्षत्र स्वामी मंगल है। इसके अधिपति विश्वकर्मा हैं। यदि यह नक्षत्र पाप ग्रहों से प्रभावित हो तो जातक तीव्र पीड़ा, अल्सर, पित्त प्रकृति, शीघ्र क्रोधी होने का स्वभाव, मन्दाग्नी, कृमि रोग, उदर विकार, गर्भाशय विकार (स्त्री), मस्तिष्क ज्वर, किडनी विकार, पत्थरी, पेशाबजन्य, मधुमेह आदि विचित्र रोग व्याधियों से ग्रस्त होने का भय होता है। पीड़ित व्यक्ति को असगन्ध पौधे की जड़ को भुजा में मन्त्रपूर्वक धारण करना चाहिए तथा बीजमन्त्र का 10 हज़ार की संख्या में जप करें।

(*ii*) **चित्रा** (अंतिम 2 चरण) तुला राशि गते स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी मंगल है। सिर दर्द, अति कामुकता, गुर्दे में पत्थरी, किडनी का मूत्राशय सम्बन्धी रोग, प्रमेह, मेरूदण्ड, मधुमेह, बहुमूत्र सम्बन्धी रोग, मस्तिष्क ज्वर, गालब्लेडर एवं किडनी सम्बन्धी दोष एवं क्लिष्ट होतु औषध सेवन के साथ-साथ अश्वगन्धा नामक पौधे की जड़ को दाईं भुजा में मन्त्रपूर्वक धारण करे तथा बीजमन्त्र का 10,000 की संख्या में जाप करें। इस नक्षत्र के भी विश्वकर्मा देवता हैं।

(15) **स्वाती**—(तुला राशिगते स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी राहु) जन्म समय यह नक्षत्र पापाक्रान्त हो, तो जातक को प्रमेह, बहुमूत्र, मधुमेह, किडनी (गुर्दों) में विकार, खुजली, कोढ़-एग्ज़िमा, चर्म (त्वचा) सम्बन्धी, छाती सम्बन्धी रोग, पीठ दर्द, गर्भाशय (Uteurs) सम्बन्धी दोष, अफारा, गठिया, हर्निया, अनूर्जता (Allergy) सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है। इसका देवता पवन है। स्वाती नक्षत्र सम्बन्धी अरिष्ट निवारण हेतु औषध के अलावा जावित्री की जड़ भुजा के मूल में बाँधे तथा गाय एवं ब्राह्मण को दान, भोजन आदि तथा ''**ॐ वायो ये ते सहस्रिणो......**'' इत्यादि मन्त्र की 10 हज़ार की संख्या में जप तथा दशमांश संख्या में हवन करें।

(16) (*i*) विशाखा (प्रथम 3 चरण तक राशि तुला, रा. स्वा. शुक्र नक्षत्र स्वामी गुरू है जबकि देवता इन्द्राग्नि है। यदि नक्षत्र स्वामी पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो जातक को मूत्राशय सम्बन्धी रोग जैसे—मधुमेह, बहुमूत्र, किडनी (गुर्दे) में त्रुटि, त्वचा रोग, उच्चरक्तचाप अथवा निम्न रक्तचाप, हिस्टीरया, शरीर पीड़ा, हृदय एवं मस्तिष्क सम्बन्धी रोग आदि होने का भय होता है। रोग शान्ति के लिए गुंजामूल की जड़ भुजा में मन्त्र पढ़ते हुए धारण करनी चाहिए, साथ में "ॐ इन्द्राग्नि आगत" इत्यादि का 10 हज़ार की संख्या में विधिवत् जप करना चाहिए।

(*ii*) विशाखा (चतुर्थ चरण में **बृश्चिक राशि** एवं राशि स्वामी मंगल तथा नक्षत्र स्वामी गुरू ही है। यदि पापाक्रान्त हो, तो इसको भी जातक को गर्भाशय एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, हर्निया, मस्तिष्क ज्वर, गुर्दे की पत्थरी, मधुमेह, उच्च-रक्तचाप, श्वेत-प्रदर, बहुमूत्रता, पौरूष ग्रन्थी वृद्धि शुक्राणुओं की न्यूनता, हृदय सम्बन्धी एवं गुप्त व क्लिष्ट रोगों का भय होता है। रोग शान्ति के लिए गुलाब की जड़ भुजा में बाँधना तथा इन्द्राग्नि देवता की प्रसन्नता के लिए दस हज़ार की संख्या में मन्त्र जप करना या किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना कल्याणप्रद होता है।

(17) अनुराधा—राशि बृश्चिक तत् स्वामी मंगल तथा नक्षत्र स्वामी शनि तथा अधिपति देव मित्र अर्थात् सूर्य हैं। यदि यह नक्षत्र पापाक्रान्त हो, तो जातक/जातिका को रक्तहीनता, पेट विकार, वायुप्रकोप, गर्भाशयशूल सम्बन्धी, अनियमित मासिक धर्म, तीव्र बुखार, सिर दर्द, कोष्टबद्धता, गठिया, वात-पित्त जनित अधिक देर तक चलने वाले रोग, दुर्घटना से चोट, घाव आदि, कुछ व्याकुल, क्रोधी एवं जिद्दी स्वभाव होता है। दोष निवारण हेतु औषधि सेवन के साथ-साथ गुलाब की जड़ को चौरस करके अपनी भुजा में बांधे एवं मौलसिरी वृक्ष की पूजा करे तथा "**ॐ नमो मित्रस्य, वरूणस्य** ...." मन्त्र की दस हज़ार की संख्या में जाप करने से अरिष्ट का निवारण होता है।

(18) ज्येष्ठा—बृश्चिक राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी मंगल तथा नक्षत्र स्वामी बुध तथा इन्द्र देवता है। यह गण्डमूलक नक्षत्र है। तीसरे, चौथे चरण में माता-पिता एवं अपने स्वास्थ्य के लिए अरिष्टकर होता है। यदि पाप ग्रहों से आक्रान्त हो, तो जातक/जातिका को वात-पित्त रोगों का प्रकोप, चित्त में व्याकुलता, गुप्तांग सम्बन्धी गुप्त रोग, आंतों का विकार, वात-पित्त आदि दोषों से उत्पन्न रोग, उदर विकार, अतिकामुकता एवं आसक्ति, कन्धों में दर्द, रक्त-विकार, दाद, खुजली, कुष्ट एवं त्वचा सम्बन्धी रोग, बवासीर, गर्भाशय सम्बन्धी विकार होने की सम्भावना होती है। अरिष्ट निवारण हेतु औषध के अलावा अपामार्ग की जड़ को मन्त्रपूर्वक बाजू में धारण करें, तथा इन्द्र के बीज मन्त्र का 10 हज़ार की संख्या में जाप करें।

(19) मूला—धनु राशि के अन्तर्गत राशि स्वामी गुरू तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। देवता **नैऽरति** है। यदि जन्म समय पापाक्रान्त हो तो जातक/जातिका को निम्न या उच्च रक्तचाप, कोख, कमर या घुटनों में दर्द, गठिया, पेट गैस विकार, मुख रोग, मानसिक तनाव, क्रोध एवं उत्तेजना, चर्म रोग, फोड़ा, फुँसी, शिर पीड़ा, गर्भपात, **कब्ज** से उत्पन्न रोग, हिस्टीरिया, मिरगी, कर्ण रोग, स्थूलता आदि रोगों का भय होता है। गण्डमूल होने से नक्षत्र का प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण माता-पिता एवं धन आदि के लिए अशुभ होता है। अरिष्ट निवारण हेतु मन्दार की जड़ को शुभ मुहूर्त्त में बाजू में बाँधकर वैदिक मन्त्र "**ॐ मातेव पुत्रं** ...." मन्त्र का 7 हज़ार की संख्या में जाप स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण से करवाएँ।

(20) पूर्वाषाढ़ा—यह नक्षत्र धनु राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी गुरू है तथा नक्षत्र स्वामी शुक्र है। इसका देवता जल है अशुभ एवं पाप ग्रस्त होने से जातक/जातिका को रीढ़ की हड्डी सम्बन्धी, मूत्राशय सम्बन्धी, मधुमेह, पथरी, वात-कफ-श्लेष्म एवं धातु क्षीणता, पेट गैस, शारीरिक चर्बी, नितम्ब, जांघ, पाचन प्रक्रिया लीवर (Liver) एवं अन्य गुप्त रोगों के होने की आशंका रहती है। रोगारिष्ट निवारण हेतु वरूण देवता की पूजा, श्वेत चन्दन का उपयोग तथा कपास की जड़ चन्दन के छींटे लगाकर मन्त्रपूर्वक बाजू में धारण करें तथा 7 हज़ार की संख्या में पू.षा. के बीजमन्त्र का पाठ स्वयं या सुयोग्य ब्राह्मण से करवाएँ।

(21) (*i*) उत्तराषाढ़ा—(प्रथम चरण) धनु राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी गुरु तथा नक्षत्र स्वामी सूर्य है। विश्व देव-देवता है। नक्षत्र पापग्रह से पीड़ित होने से जातक को नेत्र रोग, चर्म रोग, सिर दर्द, हृदय-रोग, मन्दाग्नि, व्याकुलता, अतिसार, उदर एवं मेरूदण्ड, उच्च रक्तचाप, पक्षाघात, टाईफाईड, पेट गैस, गठिया आदि रोगों का भय रहता है। रोगी की बाजू में गुरू या रविवार को मन्दार की जड़ तथा कमल पुष्प बांधना कल्याणकारी होता है।

(*ii*) उत्तराषाढ़ा—(2, 3, 4 चरण) इसके अन्तर्गत राशि मकर होने से राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी सूर्य है। जन्म समय पापाक्रान्त होने से तीव्र ज्वर, वात एवं पित्त विकार, सिर पीड़ा, पाचन प्रक्रिया में दोष, पक्षाघात, उच्च या निम्न रक्तचात, श्वास रोग, एक्जीमा, कुष्ठ आदि चर्मरोग, हड्डियों के जोड़ों में पीड़ा, नेत्र रोग, स्नायु दुर्बलता, हृदय दुर्बलता या मानसिक कुण्ठा एवं मेरूदण्ड सम्बन्धी रोगों का भय होता है। अरिष्ट निवारण के लिए जातक को कपास की जड़, कमल की जड़ के पुष्प पति के साथ रविवार के दिन बाजू में मन्त्रपूर्वक बांधने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त पंचांग दिवाकर में लिखे बीज मन्त्र "**ॐ विश्वेदेवाः श्रृणुतेमं**........." का 10 हज़ार की संख्या में जप करवाना कल्याणकारी होता है।

(22) श्रवण—मकर राशि के अन्तर्गत आने से राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा है तथा देवता भगवान् विष्णु हैं। नक्षत्र (राशि) पापग्रहों से पीड़ित हो तो जातक/जातिका की कमर में पीड़ा, मन्दाग्नि, स्नायु दौर्बल्य, पथरी, अधिक श्रम से मानसिक थकान, पीलिया, एलर्जी जन्य त्वचा रोग, पाचनशक्ति में कमी, नेत्र कष्ट, अनिद्रा, उन्माद, कैल्शियम की कमी, रक्त विकार, वात-कफ एवं वातशूल, मेरूदण्ड तथा पेट सम्बन्धी क्लिष्ट रोगों की सम्भावना होती है। अरिष्ट निवारण हेतु वातावरण में गुग्गुल की धूप दें तथा अपामार्ग की जड़ को चौहरी करके बाजू में मन्त्रपूर्वक बाँधना चाहिए तथा स्वयं या योग्य ब्राह्मण द्वारा भगवान् विष्णु का जपनीय मन्त्र "**ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः**............" का दस हज़ार जप करवाना कल्याणकारी होगा।

(23) (*i*) धनिष्ठा—(प्रथम 2 चरण) मकर राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी शनि एवं नक्षत्र स्वामी मंगल है तथा देवता वसु है। जन्म नक्षत्र (राशि) पापाक्रान्त हो, तो जातक को हृदय रोग, वात-कफ-पित्तादि के रोग, जोड़ों की पीड़ा, शुष्क खाँसी, बलग़म, पेट विकार, दाँत दर्द, पित्त ज्वर, नेत्र रोग, दाद-खुजली आदि चर्म रोग, स्नायु-दौर्बल्य, उदर-विकार, चिड़चिड़ापन, मिरगी, मानसिक दुर्बलता, नौकरों से कष्ट, दुर्घटना आदि से चोट, पिशाच पीड़ा, उच्च-निम्न रक्तचाप, पीलिया, पथरी, गुप्त रोग आदि होने की स्भावना होती है।

(*ii*) धनिष्ठा—(अंतिम 2 चरण) भी कुम्भ राशि एवं स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी मंगल ही होने से ऊपर लिखे रोगों की सम्भावनाएँ होती है। यद्यपि चारों चरणों में राशि स्वामी तथा नक्षत्र स्वामी एक समान हैं। परन्तु कुम्भ राशि में उच्च रक्त चाप, एलर्जी, श्वास, घुटनों, एड़ी, हृदय, लिवर, अमाशय व गुप्त रोग सम्बन्धी रोगों की भी सम्भावना होती है। अरिष्ट निवारण हेतु भृंगराज की जड़ को बाजू में धारण करना तथा पीपल की पूजा एवं यथाशक्ति दान जप करना शुभ होता है। मन्त्र "**ॐ वसोः पवित्रमसि..........**" मन्त्र पंचांग दिवाकर में देखें।

(24) शतभिषा—(कुम्भ) राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। देवता वरूण हैं। नक्षत्र पाप ग्रहों से पीड़ित होने से जातक को अनिद्रा, रक्त चाप, वायु प्रकोप, पीलिया, पथरी, जोड़ों में दर्द, छाती में दर्द, हृदया में कष्ट, रोग, दुर्घटना से चोटादि का भय, श्वास रोग, स्नायु दुर्बलता, एग्जीमा-खाज आदि चर्म रोग, पक्षाघात, शिर एवं नेत्र कष्ट आदि रोगों की सम्भावनाएं होती हैं। सर्वारिष्ट निवारण हेतु कमल पुष्प के नाल की डंडी को नीले वस्त्र में लपेटकर बाजू में मन्त्रपूर्वक बांधें तथा "**ॐ वरूणस्योत्तम्भन......**" वैदिक मन्त्र का 10 हज़ार संख्या में जप तथा इससे दशांश जप हवन करना चाहिए तथा वरूण देव की प्रसन्नता हेतु कमल-पुष्प, कर्पूर, धूप-दीपादि से वरूण देव की पूजा व ब्राह्मणों को यथा शक्ति दान करना चाहिए।

(25) (*i*) पूर्वाभाद्रपद—(प्रथम तीन चरण) कुम्भ राशि के अन्तर्गत होने से राशि स्वामी शनि तथा नक्षत्र स्वामी गुरु है। अजैकपाद देवता है।

(*ii*) पूर्वाभाद्रपद के अन्तिम चरण की राशि मीन होने से राशि स्वामी गुरू तथा नक्षत्र स्वामी भी गुरू ही है। यह नक्षत्र पाप ग्रहों से पीड़ित होने से जातक/जातिका को मस्तिष्क एवं नेत्र पीड़ा, हृदय की अनियमित गति, या हृदय का फैलाव, निम्न रक्त चाप, घुटनों एवं पाँव की सूजन, वायु एवं कफ सम्बन्धी रोग, शारीरिक स्थूलता, पेट-गैस, कर्ण रोग, स्नायु दुर्बलता, मानसिक दबाव, पत्थरी, पीलिया या जिगर (Liver) में खराबी, हृदयाघात, मूर्छा, हिस्टीरिया व अन्य पेचीदा रोगों की सम्भावना रहती है। अरिष्ट निवारण के लिए चाँदी की कटोरियों में घी, तिल या छाया पात्र का दान करने तथा भृंगराज की जड़ बाजू में मन्त्रपूर्वक बाँधना तथा नक्षत्र के वैदिक मन्त्र का 10 हज़ार की संख्या में स्वयं या ब्राह्मण द्वारा पाठ करवाना शुभप्रद होता है।

(26) उत्तराभाद्रपद—(राशि मीन) राशि स्वामी ग्रह गुरू तथा नक्षत्र स्वामी शनि है। इसके देवता अहिर्बुध्न्य हैं। यह नक्षत्र पाप ग्रहों से आक्रान्त होने से जातक/जातिका अतिसार रोग, नाक, कान-आँखों सम्बन्धी कष्ट, कब्ज, वात एवं कफ जन्य रोग, हर्निया, पेट-गैस, स्नायु ज्वर, दन्त क्षय, पाण्डु रोग, दुर्बलता, पत्थरी, पीलिया, मन्दाग्नि, हाथ-पाँव सुन्न होना या पसीना आना एवं देर तक चलने वाले रोग, चर्म रोग, अव्यवस्थित रक्तचाप, मेरू दण्ड एवं हृदय सम्बन्धी रोगों की आशंका होती है। अरिष्ट निवारण हेतु अश्वत्थ या पीपल की जड़ को गंगाजल छिड़ककर मन्त्रपूर्वक दाएँ बाजू में गुरूवार को धारण करें तथा "**ॐ शिवो नामासि....**" वैदिक मन्त्र का जप 10 हज़ार की संख्या में करवाने से लाभ होता है।

(27) रेवती—(राशि मीन) राशि स्वामी गुरू तथा नक्षत्र स्वामी बुध है। इसका स्वामी देव पूषा है। रेवती गण्डमूल नक्षत्र है। इसका चतुर्थ चरण **माता-पिता** को अरिष्टकारी माना जाता है। जन्म में पापाक्रान्त होने से जातक/जातिका को मन्दाग्नि, बुद्धि विभ्रम, नींद्रा-कम्पन, वात-पित्त-कफादि त्रिदोष से उत्पन्न विकार, कुष्ट-खुजली आदि चर्म रोग, खाँसी, कर्ण शूलादि कफज रोग, पेट-गैस, उदर-विकार, आँख, कान एवं नासिका सम्बन्धी व्याधि, पाँवों में सूजन-पीड़ा आदि, मादक वस्तुओं (मद्यपान आदि) तथा **औधियों से** उत्पन्न रोग, चित्त-व्याकुलता, आम्लपित्त, एलर्जी, कब्ज, अनिद्रा आदि रोगों की सम्भावना होती है। अरिष्ट निवारण के लिए पीपल की जड़ तिहरी करके दाई बाजू में शुभ मुहूर्त्त कालीन गंगाजल छिड़ककर मन्त्रपूर्वक बांधे एवं भगवान् शंकर की पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र, धूप-दीपादि से पूजा करके "**ॐ नमः शिवायः**" का अष्टोतरशत जप करें। "**ॐ नमः शम्भवाय च मयोद्भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च॥**" तदुपरान्त किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा दान-सत्कारपूर्वक 7 हज़ार की संख्या में रेवती के वैदिक मन्त्र का जाप करवाना कल्याणकारी होगा।

उपरोक्त 27 नक्षत्रों से सम्बन्धित अरिष्ट-निवारण एवं शान्ति स्थापन हेतु जपनीय मन्त्र, पूजन विधि एवं सामग्री विवरण सहित आप पंचाँग दिवाकर संवत् 2061 के अन्तिम पृष्ठों में देख सकते हैं।

औषध सेवन करने का मुहूर्त्त

किसी क्लिष्ट रोग के निवारण हेतु शास्त्रकारों ने जहाँ उपयोगी मन्त्र, जप-पाठ, पूजा एवं उपयुक्त दान आदि करने के निर्देश दिए हैं, वहीं क्लिष्ट रोगों की शान्ति के लिए किसी नवीन औषधि का सेवन करने के लिए विशेष शुभ मुहूर्त्तों को ग्रहण करने के आदेश दिए हैं—

मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार लघु, मृदु, चर एवं मूल नक्षत्रकालीन औषधि सेवन का प्रारम्भ करना प्रशस्त होता है। तदनुसार अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित, कालीन सोमवार को, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा नक्षत्र शुक्रवार को तथा स्वाती, पुर्न., श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषा सोमवार को पड़े तो विशेष प्रशस्त हैं। इसके अतिरिक्त उपरोक्त नक्षत्रों में रिक्ता (4, 9, 14) तिथियां, अमावस एवं रविवार भी पड़े तो भी शुभ माना गया है।

ध्यान रहे, जन्म नक्षत्र में नवीन औषध को सेवन करने का निषेध कहा गया है।

द्वादश भावों, राशियों एवं नवग्रहों से रोग विचार

रोग विचार की दृष्टि से भावों का विशेष महत्त्व है क्योंकि भावगत होकर ही विभिन्न राशियों एवं ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते हैं। इन लग्न आदि द्वादश भावों द्वारा ही मनुष्य जीवन से सम्बन्धित प्राय: सभी विषयों के बारे में माना जा सकता है। जन्म कुण्डली का कोई भी भाव अशुभ राशि एवं पाप ग्रह से दूषित होने पर जातक के शरीरांग में ग्रह राशि से सम्बन्धित वैसे ही रोग को प्रकट करने लगता है। कौन-सा भाव किस प्रकार के रोगों की अभिव्यक्ति करता है ? उसका विचार निम्नानुसार करना चाहिए—

प्रथम भाव लग्न—शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, मस्तिष्क रोग, सिर दर्द, मानसिक रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, मुहाँसे, उन्माद, रक्ताघात, मिर्गी आदि, इस भाव का कारक सूर्य है।

द्वितीय भाव—मुख रोग, नेत्र रोग, कर्ण रोग, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुख, पक्षाघात, डिप्थीरिया, फोड़ा, फुँसी, मद्य-पान, दाहिनी आँख, वाक्शक्ति, वाणी, स्वर आदि इस भाव का कारक गुरु है।

तृतीय भाव—धैर्य, सामर्थ्य, बल, दाहिना कान, भुजाएँ, श्वांस की नली, फेफड़े, खाँसी, दमा आदि श्वास रोग, पराक्रम, मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजु एवं कन्धे में पीड़ा या जकड़न, नकसीर, ब्रोंकाईटिस, एलर्जी, गले की खराबी, यात्रा में कष्ट, दुर्घटना आदि। इसका कारक मंगल है।

चतुर्थ भाव—छाती, हृदय एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, उदर एवं पाचन सम्बन्धी रोग, गैस विकार, जलोदर, कैंसर, वातरोग, माता को कष्ट आदि, इस भाव का कारक चन्द्र व बुध हैं।

पंचम भाव—पित्त रोग, जिगर एवं गुर्दे के रोग, जठराग्नि, पीलिया, हृदय सम्बन्धी रोग, नेत्र रोग, कमर में पीड़ा, ज्वर, बुद्धि, स्मरण शक्ति का ह्रास आदि, दिल की धड़कन कम या अधिक होना, उदर, गर्भाशय एवं मूत्राशय सम्बन्धी रोगों का विचार। इस भाव का कारक गुरु है।

षष्ठ भाव—यह भाव तो रोग का ही स्थान है। इस भाव से विशेष तौर पर रोग का विचार करते हैं। इस भाव से नाभि, पेट, कमर एवं अंतड़ियों (आंतों) सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त आदि दाँत, अमाशय सम्बन्धी, अपेंडिक्स, पथरी, हर्निया आदि इस भाव के मंगल व शनि कारक हैं।

सप्तम भाव—इस भाव से वस्ति, गुर्दे, मूत्राशय सम्बन्धी रोग, कमर-दर्द, प्रमेह, मधुमेह, प्रदर, पथरी, गर्भाशय, बवासीर, स्पाण्डलाइटिस, रीढ़ की हड्डी का दर्द, काम एवं सैक्स एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी एवं गुप्त रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक शुक्र है।

अष्टम भाव—आयु, मृत्यु, मृत्यु का कारण, वीर्य विकार, बवासीर, पथरी, हर्निया, मधुमेह, रक्त दोष, गुर्दे सम्बन्धी, वायु विकार, विचित्र पेचीदा रोग, गुदा, अण्डकोश, जननेन्द्रिय एवं गुप्तांग, दुर्घटना एवं चोट आदि स्त्रियों के मासिक धर्म की अनियमितता गर्भाशय एवं यौन रोगों आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

नवम भाव—लिवर एवं रक्त विकार, कमर एवं उसके आस-पास अंगों से सम्बन्धित रोग, गठिया, साइरिका, दुर्घटना, चोट, घाव, पक्षाघात, मज्जा एवं स्त्रियों के मासिक धर्म, पीठ, पेट एवं मेरूदण्ड से सम्बन्धित रोग, शुभाशुभ स्वप्न, गुप्त चिन्ता एवं अधिक यात्रा से उत्पन्न थकान, मन की शान्ति, सन्तोष आदि। इस भाव के कारक सूर्य व गुरू हैं।

दशम भाव—इस भाव से गठिया, एग्जिमा, त्वचा रोग, घुटनों, पीठ एवं जोड़ों के दर्द, मिर्गी, बाईं जांघ, दाँतों, हड्डियों सम्बन्धी एवं वायु सम्बन्धी रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव के सूर्य, बुध, गुरू व शनि कारक हैं।

एकादश भाव—इस भाव से रक्त संचालन प्रक्रिया, श्वास-प्रक्रिया, नसों, जोड़ों में दर्द आदि, शीत विकार, हृदय रोग, स्नायु तन्त्र, गला, कान, बायां हाथ, पिंडलियों-पाँव (विशेषकर दाहिना) आदि में चोट, शीत लगना, ठण्ड आदि का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक भी गुरू ही है।

द्वादश भाव—इस भाव से मानसिक एवं नेत्र रोग, कर्ण पीड़ा, शक्तिहीनता (कमज़ोरी), पीलिया, अनूर्जता (Allergy), बायां कान, दोनों पैर, काम जन्य एवं स्त्री (पत्नी) सम्बन्धी रोग, पक्षाघात, एड़ी में चोट आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

मेषादि द्वादश राशियों से रोग विचार

द्वादश भावों की भान्ति द्वादश राशियों एवं नवग्रहों के द्वारा भी अरिष्ट रोगों का निर्णय किया जाता है। जैसे—मेष राशि से सिर व मस्तिष्क रचना, वृष से नेत्र, जिह्वा, मुख, कण्ठ आदि में रोग का विचार किया जाता है। शरीर में किसी भी रोग का निदान करने के लिए नक्षत्र भाव, राशियों व ग्रहों से सम्बन्धित शरीरांगों एवं रोगों की जानकारी आवश्यक है। स्पष्टीकरण के लिए भाव एवं राशियों से सम्बन्धित शरीर अंग तथा रोगों का विवरण आगे दिया जाता है—

भावों एवं राशियों से सम्बन्धित शरीरांग एवं रोग

भाव	राशि	तत्त्व	शरीरांग	सम्भावित रोग
लग्न (प्रथम)	मेष	अग्नि	मस्तक, सिर, दिमाग, ऊपरी जबड़ा, मस्तिष्क संरचना, शिर सहित मुखाकार, पिटयूटरीग्लैण्ड।	मस्तिष्क रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, उन्माद, मुहांसे, मिर्गी, रक्ताघात, रक्तविकार, सिर दर्द, टाईफायड, पित्त की गर्मी आदि।
द्वितीय	वृष	पृथ्वी	नेत्र, कान, नाक, गाल, होंठ, दाँत, मुख, जिह्वा कण्ठ, थायराईड, निचला जबड़ा वाणी, ग्रासनली (Food-Pipe)।	नेत्र, मुख, कर्ण, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुखविकार, डिप्थीरिया, फोड़ा, फुँसी, फुँसी, दाहिनी आँख, वाक्शक्ति, मद्य-पान।
तृतीय	मिथुन	वायु	कन्धे, भुजाएँ, कोहनी, हथेली, ऊपरी पसली, कान, फेफड़े, कण्ठ, ग्रीवा, हाथ, बाजू, श्वास नली, कोशिकाएं।	मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजु एवं कन्धों में पीड़ा, नकसीर, एलर्जी, सामर्थ्य खांसी, दमा आदि श्वास रोग, गले की खराबी, यात्रा में दुर्घटना, चोटादि।
चतुर्थ	कर्क	जल	फेफड़े, हृदय, नीचे की पसली, छाती, वक्षस्थल, स्तन, पेट, पाचन प्रक्रिया मानसिक शान्ति।	छाती एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, पाचनशक्ति, गैस विकार, कैंसर, हिस्टीरिया, जलोदर, वात रोग आदि।
पंचम	सिंह	अग्नि	लिवर, तिल्ली, हृदय, पीठ, कोख, कमर, रक्त, जिगर, मेरूदण्ड, पीठ।	पित्त, जिगर एवं गुर्दे के रोग, नेत्रों, कमर, ज्वर, हृदय, बुद्धि विक्षिप्तता, स्मरणशक्ति, दिल की धड़कन, मूत्राशय, गर्भाशय पीलिया व लिवर सम्बन्धी।
षष्ठ	कन्या	पृथ्वी	कमर, आँतें (आंतड़ियां) नाभि चक्र, वस्ति, पेट पैर, अमाशय, पैनक्रिया, पाचन प्रक्रिया।	नाभि चक्र, पेट, कमर एवं आंतों सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त, मरोड़, पथरी, हर्निया, मधुमेह, दुर्घटना से चोट आदि अपैंडिक्स।
सप्तम	तुला	वायु	अण्डाशय, डिम्ब ग्रंथी गर्भाशय का ऊपर भाग वस्ति (पेडू), कटि।	पेडू, गुर्दे एवं मूत्राशय सम्बन्धी रोग, कमर दर्द, पथरी, गर्भाशय, रीढ़ की हड्डी, काम, सैक्स सम्बन्धी गुप्त रोग।
अष्टम	बृश्चिक	जल	जननेन्द्रिय, गुदा, अण्डकोष, भ्रूण, लिंग, योनि, गर्भाशय, प्रोस्टेट।	मृत्यु का कारण, बवासीर, हर्निया, पत्थरी, रक्तदोष, मधुमेह, गुर्दे सम्बन्धी, वायु-विकार, गुप्तांग सम्बन्धी पेचीदा यौन रोग, मासिक धर्म एवं गर्भाशय हिस्टीरिया सम्बन्धी स्त्री रोग, दुर्घटना आदि।
नवम	धनु	अग्नि	जांघ, नितम्ब, कमर, लिवर, रीढ़ की हड्डी, घुटनें।	रक्त विकार, कमर एवं लिवर सम्बन्धी, गठिया, दुर्घटना से चोट आदि ; मेरूदण्ड सम्बन्धी शुभाशुभ स्वप्न, अधिक श्रम से थकान, ऋतु विकार, गठिया, एग्जीमा आदि।
दशम	मकर	पृथ्वी	दोनों घुटने, टांगें, हड्डियाँ, जोड़, बाल, नाखून, बाह्य त्वचा।	त्वचा रोग, घुटनों, पीठ एवं जोड़ों के दर्द, मिर्गी, बाईं जांघ दाँत एवं हड्डियों सम्बन्धी, वायु विकार आदि।
एकादश	कुम्भ	वायु	नसों, जोड़ों, श्वास, रक्त, संचालन, दोनों पिण्डलियों, कान, घुटने, एड़ीयां।	रक्त संचालन, श्वास, प्रक्रिया, नसों, जोड़ों में दर्द, शीत-विकार, हृदय रोग, स्नायु, तन्त्र, गला, बायां हाथ, पिंडलियों में दर्द, शीत, वात-कफादि प्रकोप।
द्वादश	मीन	जल	दोनों पैर, टखने, पाँव के तलवे, पैरों की अँगुलियाँ, नसें, दाँत आदि।	नेत्र रोग, कर्ण-पीड़ा, कमजोरी, पीलिया, अनूर्जता (एलर्जी), बायां कान, दोनों पैर, काम जन्य एवं स्त्री सम्बन्धी कष्ट/रोग पक्षाघात, एड़ी में चोट आदि।

उपरोक्त राशियों में जो राशि शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होती है, वह अंग पुष्ट तथा स्वस्थ होता है, जो राशि पाप ग्रहों से युक्त, पीड़ित, दृष्ट हो, वह अंग क्षीण एवं रोग युक्त होने की सम्भावना होती है।

ग्रहों एवं राशियों के तत्त्वानुसार रोगों की पहचान

द्वादश राशियों एवं **नवग्रहों** में कुछ अग्नि तत्त्व, कुछ वायु तत्त्व आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन तत्त्वों की प्रकृति के आधार पर रोगों की पहचान सरलता से हो सकती है, जैसे—

(क) अग्नि तत्त्व—मेष, सिंह व धनु अग्नि तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं तथा **सूर्य एवं मंगल** ग्रह भी अग्नि तत्त्व प्रमुख ग्रह हैं। यदि जन्म कुण्डली में अग्नि तत्त्व वाली राशि एवं सूर्यादि ग्रह स्वगृही, उच्चादि ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हों, तो जातक का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा, आत्मिक बल, ओज एवं क्रियात्मक शक्ति तीव्र एवं अच्छी होती है। व्याधि एवं अस्वस्थता थोड़े काल की, परन्तु तीव्र हो सकती है। यदि मेषादि अग्नि तत्त्व की राशियां तथा सूर्य, मंगल, नीच, शत्रु आदि ग्रहों, राशि से युक्त या पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो जातक के निम्न रोगों से पीड़ित होने की सम्भावना होती है, जैसे—मस्तिष्क रोग, उच्चरक्तचाप, नेत्र विकार, अस्थि एवं चर्म रोग तीव्र ज्वर, अग्नि, शस्त्र, विषादि से कष्ट, माईग्रेन, मेरूदण्ड, अनिद्रा, तीव्र सिर दर्द, उदर एवं पीठ विकार, बवासीर, हृदय रोग, पित्तजनित रोग, अतिसार, चित्त व्याकुलता, नासूर, फोड़ा, घाव, जलन, पक्षाघात, शस्त्राघात, मुहाँसे, जननोन्द्रियाँ आदि गुप्त अंग।

(ख) पृथ्वी तत्त्व—वृष, कन्या व मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं, तथा बुध ग्रह भी पृथ्वी तत्त्व के अन्तर्गत आता है। यदि कुण्डली में पृथ्वी तत्त्व वाली राशि एवं पृथ्वी तत्त्व ग्रह बुध शुभ भाव में एवं उच्च मित्रादि राशि में हों, तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, कार्य-कुशल, अध्ययनशील, सतर्क, प्रभावशाली वाणी, तार्किक, उच्चशिक्षित, स्वस्थ एवं तीव्र स्मरणशक्ति एवं कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है। यदि उपरोक्त वृषादि पृथ्वी तत्त्व की राशि पाप ग्रहों से पीड़ित हो, एवं बुध नीच, शत्रु आदि राशिगत हो, तो जातक की निम्नलिखित रोगों में से राश्यनुसार रोग होने की सम्भावना होती है, यथा—

मस्तिष्क विकार, स्मरण शक्ति का ह्रास, हकलाहट, पक्षाघात, सूंघने, वाणी, सुनने एवं बोलने की शक्ति का ह्रास, दौरे पड़ना, त्वचा, नाखून, कश, नाड़ी एवं हड्डियों के रोग, नेत्र रोग, कण्ठ रोग, त्वचा, खुजली या कुष्ठ रोग, मन्दाग्नि, मानसिक भ्रान्ति, नाड़ी एवं स्नायुतन्त्र की दुर्बलता, पीलिया, वात-पित-कफ त्रिदोष से उत्पन्न रोग, दुःस्वप्न, भ्रान्ति (वहम), सोच एवं वाणी में दुर्बलता आदि।

(ग) वायु तत्त्व—मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि—ये वायु तत्त्व की राशियाँ हैं, तथा शनि ग्रह भी वायु तत्त्व प्रधान है। यदि कुण्डली में वायु तत्त्व प्रधान राशियां शनि-शुक्र आदि मित्र ग्रह युक्त एवं शनि भी स्वगृही, उच्चादि शुभ अवस्था में हों, तो जातक उत्साहशील, स्वाभिमानी, उच्च-प्रतिष्ठित, राजनीतिज्ञ, चुस्त एवं स्वस्थ-चित्त एवं पुष्ट शरीर का होता है। यदि वायु तत्त्वीय राशियाँ सूर्य, मंगल आदि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट अथवा उनकी दशाऽन्तरदशा हो, तो जातक को निम्नलिखित रोग होने की आशंका होती है—वायु और कफ जन्य रोग, अत्यधिक श्रम के कारण कमज़ोरी, ब्लडप्रैशर, कठिन उदर शूल, स्पांडलाइटिस, सन्निपात, पत्थरी, लकवा आदि, पोलियो, पक्षाघात, वातशूल, मानसिक दुर्बलता, पत्नी एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट, पेड़, पत्थर या शस्त्र आदि से चोट, कैंसर, मधुमेह, हाथ, पाँव एवं टांगों की दुर्बलता, प्रेत, पिशाच आदि जटिल मानसिक व कायिक रोग **तथा प्राण** वायु, अपान वायु आदि को संकेत करते हैं।

(घ) जल तत्त्व—कर्क, बृश्चिक एवं मीन-ये जल तत्त्व की राशियां हैं तथा चन्द्र व शुक्र भी जल तत्त्वीय ग्रह हैं। यदि उक्त राशियाँ चन्द्र-गुरु आदि ग्रहों के प्रभाव शुभस्थ हों तथा चन्द्र-शुक्र ग्रह स्वगृही, उच्च-मित्र आदि राशियों में हों तो जातक तीव्र बुद्धिमान, दूसरे मनोभावों को समझने में कुशल, धार्मिक एवं परोपकारी, देश-विदेशों की यात्राएँ करने वाला, स्वस्थ अंगों एवं पुष्ट शरीर का होगा।

यदि जलीय तत्त्व की राशियां तथा ग्रह शत्रु, नीच आदि ग्रहों से पीड़ित हों तो जातक को उनकी दशाऽन्तर दशा एवं गोचरवश नीचे लिखे रोग होने की सम्भावनाएँ होती हैं—

नेत्र रोग, कफ, शीत (ठण्ड), उदर रोग, श्वास रोग, पागलपन, उन्माद, मानसिक रोग, हिस्टीरिया, जननेन्द्रिय, गर्भाशय, मासिक धर्म सम्बन्धी स्त्रियों के रोग, डायरिया, हैज़ा, ड्राप्सी, रक्त, त्वचा, मज्जा, वीर्य एवं मूत्राशय सम्बन्धी, अतिसार, मन्दाग्नि, कफ एवं वायु रोग, प्रमेह, मधुमेह, पत्थरी, धातु-विकार, शीत ज्वर, अनिद्रा, नाड़ी दौर्बल्य, मूत्र विकार, पाण्डु रोग (पीलिया), काम-जन्य गुप्त रोग आदि।

(ङ) आकाश तत्त्व से सम्बन्धित—यदि कुण्डली में गुरु स्वराशि, उच्चादि अवस्था में हो, तो जातक का शरीर स्थूल, पुष्ट एवं स्वस्थ होता है। यदि नीच राशिस्थ या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को नीचे लिखे रोगों की सम्भावना होती है—

कफज रोग, मूर्छा, अंतड़ियों का ज्वर, लिवर अर्थात् यकृत् सम्बन्धी पीलिया आदि रोग, अपचन, रक्त कैंसर, उदर, वायु, गठिया, नाभिचक्र में दोष, कर्ण रोग, गुल्म (पेट का फोड़ा), टाईफाईड, हर्निया, शारीरिक स्थूलता या दुर्बलता, पेट-गैस, देव या ब्राह्मणों के शाप से कष्ट आदि।

(च) राहु के कारण होने वाले रोग—कुटिल मति, असत्य में रूचि, कुतर्क, हृदय में रोग, कमज़ोरी, वातज पीड़ा, कृमि रोग, पैर में चोट, दिल की जलन, कुष्ट, पाँव में चोट, पीड़ा आदि, स्त्री, सन्तान आदि सम्बन्धी परेशानी, सर्प और प्रेत आदि के कारण कष्ट-भय, अरूचि, उचाटता, जोड़ों एवं वायु सम्बन्धी रोग।

(छ) केतु के कारण होने वाले रोग—चर्म रोग, श्वेत कुष्ट, विष विकार, जलोदर, गर्भाशय सम्बन्धी, फोड़े, फुँसी, चेचक, विषादि के कारण उत्पन्न रोग, दुर्घटना से चोट आदि प्रेत-पिशाच आदि जनित रोग-कष्ट, पित्त जनित रोग तथा पुरुषों एवं स्त्रियों के गुप्त पेचीदा रोगों का विचार किया जाता है।

राहु व केतु दोनों के अनिष्ट प्रभावस्वरूप कई बार ऐसे पेचीदा एवं रहस्यात्मक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका निदान कुशल डॉक्टरों द्वारा भी नहीं हो पाता है।

जन्म कुण्डली से रोग विचार

जन्म कुण्डली में किसी भी भाव से सम्बन्धित रोग कष्ट आदि जानने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक होता है, जैसे—(1) भाव में अशुभ ग्रहों को बैठना (2) भावेश ग्रह का त्रिकादि (6, 8, 12वें) भावों में बैठना (3) भावेश का शत्रु एवं पापी ग्रहों से युक्त होना (4) भावेश का पापी ग्रहों से वीक्षित होना (5) भाव का अशुभ (शत्रु नीच आदि) ग्रहों से देखा जाना (6) भाव सम्बन्धी कारक ग्रह की शुभाशुभ स्थिति (7) जातक की वर्तमान कालीन दशा-अन्तर्दशा का विचार तथा (8) गोचर ग्रहों का शुभाशुभ विचार।

ऊपरलिखित सभी तत्त्व भाव सम्बन्धी फल को प्रभावित करते हैं। भावों तथा भावेश सम्बन्धी ग्रहों की स्थिति जितनी अधिक खराब होगी, उतना ही उस भाव सम्बन्धी कष्ट होगा।

सामान्यतः लग्नेश ग्रह चाहे स्वयं शुभ ग्रह हो, या पाप ग्रह हो, वह जहाँ बैठ जाता है, उस स्थान की वृद्धि ही करता है। लग्नेश जिस भाव के स्वामी के साथ बैठा हो, उस भाव स्वामी के फल को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त कुण्डली में सूर्य व चन्द्रादि के बलाबल का भी विचार करना चाहिए। चन्द्रमा मस्तिष्क पर प्रभाव करता है, **लग्न शरीर का द्योतक** है और **सूर्य आत्मा का।** यदि कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा बली हों और शत्रु ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हों, **तो उस जातक का स्वास्थ्य अच्छा** रहता है। भारतीय आयुर्वेद की यह प्रबल मान्यता है कि शारीरिक रोगों का मस्तिष्क की स्थिति के साथ गहरा सम्बन्ध है। इसी कारण प्राचीन काल से ही हमारे ज्योतिष शास्त्र में अरिष्ट आदि के सम्बन्ध में चन्द्रमा की स्थिति एवं बलाबल पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है।

(1) यदि लग्नेश और षष्ठेश एक ही राशि में हों और उनके साथ सूर्य भी हो, तो जातक को षष्ठेश एवं सूर्य की दशाऽन्तर्दशा में तीव्र ज्वर, नेत्र रोग, स्त्री व संतान कष्ट, अग्नि पीड़ा आदि कष्टों की सम्भावना होती है।

(2) लग्नेश, षष्ठेश और चन्द्रमा एक ही राशि में इकट्ठे हों, तो जातक को हैज़ा, शीत- प्रकोप, मानसिक कष्ट एवं जल-वायु से सम्बन्धित रोगों एवं अनिद्रा, मन्दाग्नि, चित्त व्याकुलता आदि रोगों का भय होता है।

(3) यदि कुण्डली में लग्नेश, षष्ठेश व मंगल एक ही भाव में इकट्ठे हों, तो जातक को इन ग्रहों की दशा में दुर्घटना या शस्त्राघात से विस्फोट आदि से चोट, पीड़ा, फोड़े एवं आप्रेशनादि, ज्वर आदि रोगों की सम्भावना होती है।

(4) यदि लग्नेश व षष्ठेश के साथ बुध भी एक ही राशि में स्थित हों, तो जातक को वात-पित्त जनित रोग, अरूचि, उदर विकार, दुर्बलता, वाणी विकार, पत्थरी, वमन, डकार, मन्दाग्नि, खुजली, दाद आदि त्वचा रोग, मति-भ्रम आदि विचित्र रोगों की सम्भावना होती है।

(5) यदि लग्नेश, षष्ठेश के साथ गुरु स्वगृही, उच्चादि राशि में हों, तो जातक का शरीर प्रायः स्वस्थ होता है। परन्तु यदि गुरु व लग्नेश नीच, शत्रु आदि राशि में हो, तो जातक को कफ, कान, नाक, गला, लिवर, पीलिया, पत्थरी आदि रोगों का भय होता है।

(6) यदि लग्नेश, षष्ठेश व शुक्र एक साथ किसी अशुभ राशि में हों, तो जातक, प्रमेह, मधुमेह, गुप्त रोग, धातु क्षय सम्बन्धी रोग तथा स्त्री को भी शरीर कष्ट की सम्भावना होती है।

(7) यदि लग्नेश, षष्ठेश—दोनों शनि के साथ एक ही भाव में हों, तो जातक को दुर्बलता, वातज अर्थात् वायु प्रकोप, अपचन, श्वास रोग, हड्डियों, दाँतों एवं नेत्र सम्बन्धी रोगों का भय होता है।

(8) लग्नेश, षष्ठेश व राहु तीनों एक ही राशि में हों, तो हृदय में दुर्बलता, मानसिक, तनाव, सिर में पीड़ा, वायु प्रकोप, सर्प, प्रेत एवं चोरी आदि का भय होता है।

(9) लग्नेश, षष्ठेश व केतु तीनों एक ही भाव में हों, तो जातक को फोड़ा, फुँसी, चेचक सम्बन्धी, त्वचा रोग, विष प्रकोप तथा स्त्रियों को आप्रेशन, गर्भाशय, मासिक धर्म सम्बन्धी विकारों की सम्भावनाएँ होती हैं।

(10) यदि षष्ठ भाव या षष्ठेश के साथ बुध व शुक्र का सम्बन्ध हों, तो जातक को आहार व्यवहार में असंयम के कारण रोग होता है।

यदि षष्ठेश भौमादि पाप ग्रह के साथ लग्न में हों, तो जातक को दुर्घटना या चोटादि से व्रण या आप्रेशन होता है। यदि शनि हों, तो अपचन एवं वायु-विकार होता है।

नोट—विविध रोगों सम्बन्धी विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों एवं शास्त्र सम्मत उपायों के साथ हमारे शीघ्र प्रकाशित होने वाली फलित और रोग सम्बन्धी आगामी पुस्तक की प्रतीक्षा करें। पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी, गणितकर्ता पंचाँग दिवाकर॥

मंगलीक योग सदा अनिष्टकारी नहीं

वर्तमान काल में ज्योतिष शास्त्र के प्रति लोगों की रूचि एवं विश्वास तो बढ़ रहा है, किन्तु इस प्रत्यक्ष शास्त्र के वास्तविक उपयोग की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। सामान्यत: ज्योतिषी भाई विवाह-योग्य वर कन्या के वर्ण, वश्य, तारा, राशिमैत्री, भकूट आदि अष्टकूट पर आधारित गुण मिलान के उपरान्त दोनों (वर-कन्या) की कुण्डलियों में **मंगलीक**-योग की ओर विशेष ध्यान देते हैं। मंगलीक दोष का विचार करने के लिए अर्वाचीन पुस्तक **मुहूर्त्त संग्रह दर्पण** का निम्नलिखित श्लोक आधार माना जाता है—

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय वरः कन्या विनाशकृत्॥

अर्थात् लड़के या लड़की की जन्म कुण्डली में मंगल 1, 4, 7, 8 या 12वें भाव में हो, तो कन्या पति के लिए तथा यदि यही योग पति की कुण्डली में हो, तो वह पत्नी के लिए विनाशकारी अर्थात् अनिष्टकर होता है। इस प्रकार के एकांगी मंगलीक दोष के प्रतिकार हेतु यह वचन भी मिलते हैं कि यदि वर और कन्या दोनों का मंगल समान हो या कोई अन्य पापग्रह मंगल के समान उसी भाव में स्थित हो, तो उस स्थिति में विवाह शुभ होता है। दोनों की दीर्घायु तथा पुत्र आदि सन्तान सुखों में वृद्धि करने वाला होता है—

भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रवर्धनः॥ ज्यो. तत्त्व.

कुछ ग्रन्थकारों ने चन्द्रमा एवं शुक्र से भी मंगलीक दोष का विचार करने का आग्रह किया है, क्योकि चन्द्रमा मन का कारक तथा शुक्र स्त्री कारक ग्रह माना गया है। फलित ग्रन्थों में अनेक स्थलों में चन्द्र एवं शुक्र से भी 1, 4, 7, 8 इत्यादि स्थानों पर मंगल की स्थिति अशुभ मानी है। यथा—

चन्द्रात् चतुर्थेभे भौमो जन्म काले यदा भवेत्। सुखभंगो दरिद्रः स्यात्पुंसः स्त्री म्रियते ध्रुवम्॥ मा. सा.

अर्थात् चन्द्र से चतुर्थ भाव में मंगल होने से जातक सुख हीन, दरिद्र और स्त्री की आयु पति की अपेक्षा कम होती है।

इसी भान्ति चन्द्र से सप्तम मंगल हो, तो उस मनुष्य की स्त्री दु:शीला, कटुस्वभाव की एवं अप्रियवादिनी होती है—

चन्द्रात्सप्तमे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। कुशीला स्त्री भवेत् तस्य सदा चऽप्रियवादिनी॥ मा. सा.

"श्री मंत्रेश्वरकृत फलदीपिका" अनुसार भी चन्द्र व शुक्र से सप्तम भाव में मंगल एवं शनि हों, तो स्त्री व पुत्र की हानि होती है।

"भौमाऽर्क्यस्ते भृगुजशशिनो दारहीनोऽसुतो वा।" फलदीपिका

मंगलीक दोष के सम्बन्ध में यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि प्राचीन संहिता व जातक ग्रन्थों तथा मुहूर्त्त ग्रन्थों में वर-कन्या की कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान विशेष कर मंगलीक दोष की भयोत्पादक भ्रामक स्थिति के बारे वर्णन नहीं मिलता है। आजकल अधिकांश ज्योतिषी भाई लड़के-लड़की के नक्षत्रों पर आधारित गुण-मिलान के उपरान्त स्थूल रूप से निर्मित जन्म कुण्डलियों के मिलान का निर्णय **मंगलीक योग** के आधार पर ही करते हैं। मंगलीक दोष सम्बन्धी अल्प ज्ञान एवं गलत धारणाओं के कारण ही बहुत से सुयोग्य लड़कियों व लड़कों का परस्पर विवाह नहीं हो पाता अथवा कई बार बहुत विलम्ब से बेमेल विवाह हो जाता है। कई बार तथाकथित मंगलीक दोष के दोषारोपण के फलस्वरूप लड़के या लड़की के माता-पिता को जातक की वास्तविक जन्म पत्रिका या जन्म समय आदि को छिपाने का प्रयास करते भी पाया गया है।

मंगलीक दोष के शुभाशुभ प्रभाव का निर्णय करते समय मिलान सम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को भी ध्यान में रखना चाहिए। जैसे मंगलीक दोष सम्बन्धी शास्त्रोक्त परिहार वाक्य, गुणों की अल्पता या बहुलता, सप्तम, द्वितीय (कुटुम्ब), एवं अष्टम भावों में (मंगल के अतिरिक्त) अन्य शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि आदि का विचार इन्हीं भावों के भावेश तथा विवाह-सुख कारक चन्द्र, शुक्र एवं गुरु आदि ग्रहों की स्थिति, नवांश एवं चलित कुण्डली तथा अष्टक वर्ग में मंगल की शुभाशुभ स्थिति तथा दशाऽन्तर्दशा का आकलन करने के बाद ही मंगल या मंगलीक दोष सम्बन्धी अन्तिम निर्णय करना चाहिए। किसी जातक/जातिका की कुण्डली के लग्न, व्यय, चतुर्थ, और सप्तम स्थान में पाप ग्रह हों, तो स्त्री पति के लिए अनिष्टकारी तथा पति स्त्री के लिए अनिष्टकारी माना जाता है—

लग्नेपापा व्यये पापाः पाताले च सप्तमे तथा। भार्या भर्तृविनाशाय भर्ता भार्यां विनाशयेत्॥

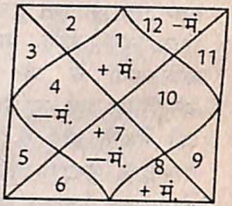
इस प्रकार केवल मंगल को ही नहीं, अपितु अन्य क्रूर एवं पाप ग्रहों (शनि, राहु, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्र आदि) को भी न्यून या अधिक रूपेण वैवाहिक जीवन में बाधक माना गया है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुण्डली में मंगल यदि नीच, अस्त या शनि से दृष्ट, या भावेश आदि के कारण अशुभ हो, तो वह जातक का उग्र स्वभाव, झगड़ालू, उतावला, स्त्री के साथ कटु सम्बन्ध, भाई-बन्धुओं से विरोध, रोगी, मिथ्याभिमानी, असन्तुष्ट, क्रोधी, दुराग्रही एवं आर्थिक दृष्टि से परेशान होता है। यह दुर्घटना, चोट आदि का भी कारक है। परन्तु यदि कुण्डली में **मंगल शुभस्थ** हो, तो जातक उत्साहशील, धैर्यवान, पराक्रमी, भाई-बन्धुओं के सुखों से युक्त, धन, भूमि-जायदाद, स्त्री एवं पुत्र-सन्तान आदि सुख एवं उच्च पद प्राप्ति आदि प्रतिष्ठाओं को देता है। कुछ राशियों में तो मंगल वैसे भी शुभ माना जाता है, जैसे **मेष, बृश्चिक, मकर, सिंह, धनु** और **मीन**॥ इसके अतिरिक्त कुण्डली में मंगल की केन्द्र-त्रिकोण की स्थिति होने से भी शुभ एवं योगकारक माना जाता है। यथा—

"सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफल प्रदाः॥" पाराशर

मेष, कर्क, सिंह, धनु एवं मीन आदि लग्नों में भावेश के कारण ही मंगल को शुभ एवं योग कारक माना जाता है। ध्यान रहे, सभी लग्नों एवं राशियों में मंगल का एक जैसा प्रभाव नहीं होता है।

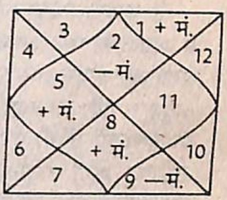
मेषादि द्वादश लग्न और मंगलीक दोष



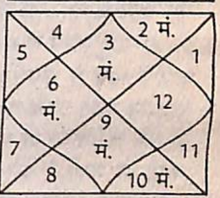
1. **मेष लग्न** में, लग्न भाव में तथा बृश्चिक राशि में शुभ प्रभाव करता है, जबकि चतुर्थ (कर्क), सप्तम (तुला) एवं द्वादश (मीन) राशियों में वैवाहिक दृष्टि से अशुभ किन्तु व्यवसायिक दृष्टि से अच्छा फल करता है। लग्न भाव में मेष राशिस्थ मंगल होने से जातक स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व, भूमि, पुत्र, वाहन आदि सुखों से युक्त एवं सुप्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। मेष लग्न में केन्द्रगत मंगल **रूचक योगकारक** होता है तथा यहाँ पर मंगल की स्थिति मंगलीक दोष का परिहार भी मानी जाती है—

अजे लग्ने, व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे। द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौम दोष न विद्यते॥

अर्थात् मेषस्थ मंगल लग्न में, बृश्चिकस्थ चतुर्थ, मकर का सातवें, कर्कराशि का आठवें एवं धनु का 12वें भाव में हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

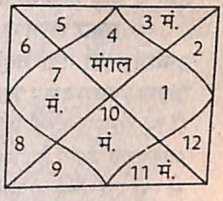


2. **वृष लग्न** में प्रथम भाव में भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। सप्तम भाव पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से वैवाहिक जीवन भी सामान्यत: ठीक रहेगा, यद्यपि स्वयं को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी हो सकती है। इसी भान्ति चतुर्थ, सप्तम एवं द्वादश भावों में मंगल की सप्तम भाव पर स्वगृही दृष्टि एवं स्थिति होने से मंगलीक योग होने पर भी सामान्यत: दाम्पत्य सुख मिलता रहेगा, परन्तु मंगल द्वादशेश भी होने के कारण वैवाहिक सम्बन्धों में स्वाभाविक माधुर्य का अभाव होगा। यदि सप्तम भाव पर गुरु-शुक्र आदि की दृष्टि होगी, तो प्रेम-सम्बन्ध अच्छे होंगे।



3. **मिथुन लग्न** में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में मंगल जातक की संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का द्योतक है जातक को अपने तथा स्त्री के सम्बन्धों में वैमनस्य, तनाव, रोग एवं परेशानियाँ रहती हैं। परिवारिक एवं घरेलू सुखों में कमी होती है। यदि सप्तम भाव पर गुरू आदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो वैवाहिक सुखों में वृद्धि होती है।

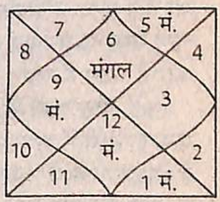
4. **कर्क लग्न** में मंगल केन्द्र-त्रिकोण का स्वामी होने से भूमि, वाहन, व्यवसाय एवं सन्तान आदि के सम्बन्ध में शुभफल प्रदान करता है। यदि लग्न भाव में हो, तो स्वास्थ्य एवं शिक्षा के सम्बन्ध में अस्थिरता एवं कुछ कमी करता है किन्तु सप्तम भाव पर उच्च दृष्टि होने से वैवाहिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। चतुर्थ भाव में भी भूमि-जायदाद के सम्बन्ध में कुछ रुकावटें परन्तु सप्तम् एवं दशम् भाव पर क्रमश: उच्च एवं स्वगृही दृष्टि होने से दाम्पत्य सुख में वृद्धि तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ व उन्नतिकारक होता है। सप्तम भाव में मंगल स्वोच्च स्थिति में होने से विवाह के पश्चात् विशेष लाभ एवं उन्नति प्रदायक होता है। द्वादश भाव में मंगल होने से उसकी सप्तम् भाव पर उच्च दृष्टि होने से द्वादश भाव की स्थिति भी अशुभ नहीं कही जा सकती। यहाँ पर सप्तमेश शनि की भी स्थिति शुभ हो तो कर्क लग्न में द्वादश भाव स्थित मंगल शुभ फलप्रद होगा। परन्तु अष्टम भाव में मंगल शत्रु राशिगत होने से शुभफल प्रद नहीं होगा। ध्यान रहे, सप्तम भाव में मकर राशि के मंगल को कुछ विद्वानों ने परिहारस्वरूप भी ग्रहण किया है। गुरु आदि शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो, तो विवाह सम्बन्ध ठीक रहते हैं।



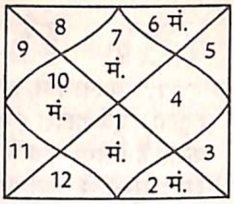


5. **सिंह लग्न** की कुण्डली में मंगल केन्द्र-त्रिकोण (सुखेश एवं भाग्येश) होने से अत्यन्त शुभ एवं योगकारी ग्रह होता है। परन्तु लग्न चतुर्थ एवं द्वादश भावों में बैठकर सप्तम् भावस्थ कुम्भ राशि को शत्रु भाव से देखने से विवाह सम्बन्धी सुखों में कुछ कमी करता है। अष्टम् भाव में स्थित होने पर भी परिवारिक सुखों में कमी तथा भाग्य उन्नति के सम्बन्ध में विशेष संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का संकेत करता हैं। यदि सप्तम् या अष्टम् भाव या सप्तमेश ग्रह मंगल के साथ शनि आदि पाप ग्रहों से भी युक्त या दृष्ट हो, तो वैवाहिक जीवन में वैमनस्य एवं कटुता की मात्रा और भी अधिक बढ़ जाती है। परन्तु यदि सप्तम् भाव एवं सप्तमेश ग्रह पर गुरु आदि शुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो, राशिमैत्री भी हो, तो पति-पत्नी के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध अच्छे रहते हैं।

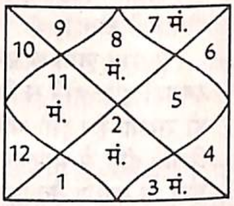
6. **कन्या लग्न** की कुण्डली में मंगल त्रिषडायपति (3 और अष्टम भावों का स्वामी) होने से अशुभकारी होता है। लग्न भाव में शत्रु राशिगत हो, तो मंगलीक होने की स्थिति में जातक क्रोधी, उग्र स्वभाव तथा वैवाहिक सुख में भी विघ्नकारक होता है। चतुर्थ भाव एवं सप्तम भाव पर मित्र दृष्टि तथा अष्टम पर स्वगृही दृष्टि होने से जातक भूमि, मकान, वाहन आदि सुखों से युक्त किन्तु दाम्पत्य सुख सामान्य होता है। चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में जातक को अत्यन्त संघर्ष एवं विघ्नों के बाद भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। वैवाहिक सुख भी कठिनाईयों एवं परेशानियों के साथ प्राप्त होते हैं। यदि मंगल के साथ गुरु या शुक्रादि का शुभ योग या दृष्टि हो, तो वर-कन्या को दाम्पत्य सुख में वृद्धि होती है।



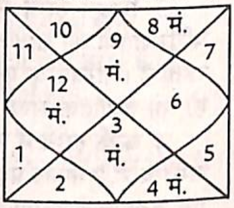
7. **तुला लग्न** में मंगल केन्द्रपति एवं द्वितीयेश होकर यदि प्रथम भाव में मंगलीक हो, तो चतुर्थ भाव को उच्चदृष्टि से तथा सप्तम भाव को स्वगृही दृष्टि से देखने से जातक को विवाह के पश्चात् भूमि, जायदाद, वाहनादि सुखों की प्राप्ति तथा लाभ व उन्नति प्राप्त होगी। परन्तु स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे, उदर विकार आदि की सम्भावना होगी। चतुर्थ भाव में तो मंगल



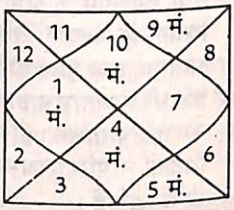
उच्च राशि का होकर सप्तम भाव को स्वगृही दृष्टि से देखने से वैवाहिक सुख में वृद्धिकारक होगा, परन्तु दशम भाव को नीच दृष्टि से देखने से व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष संघर्ष का सामना होता है। सप्तम भाव में मंगल स्वगृही राशि (मेष) का होने से दाम्पत्य जीवन में तो सुख का वृद्धिकारक होगा, परन्तु व्यवसाय में कठिनाईयों के बाद सफलता होगी। यहाँ से धन स्थान पर मंगल की स्वगृही दृष्टि विवाहोपरान्त कौटुम्बिक एवं आर्थिक साधनों में वृद्धिकारक होगी। अष्टम भाव में शुक्र की राशि (वृष) पर मंगलीक की स्थिति होने से स्त्री अथवा पति की तरफ से चिन्ताजनक परिस्थिति पैदा होने की सम्भावना बन सकती है। द्वादश भाव में मंगल की सप्तम भाव पर स्वगृही दृष्टि दाम्पत्य जीवन में वृद्धिकारक होगी परन्तु शत्रु राशिगत होने से विघ्नों के पश्चात् वैवाहिक सुख प्राप्त होंगे। ध्यान रहे, तुला लग्न में मंगल मार्केश ग्रह होने के कारण कई बार कष्टकारी हालात पैदा कर देता है।



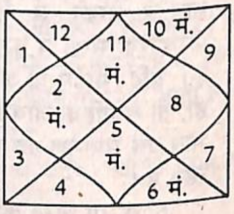
8. **बृश्चिक लग्न** में मंगल लग्नेश व षष्ठेश होने से मिश्रित प्रभाव करेगा। प्रथम भाव में मंगलीक होने से जातक साहसी, आकर्षक, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उच्चाभिलाषी, स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। परन्तु वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण रहने की सम्भावना रहती है। चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में मंगल अनुकूल राशि का न होने से जातक को कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। विवाह के सम्बन्धों में भी परिस्थितियाँ अनुकूल न होंगी। यदि कुण्डली में शुक्र की स्थिति शुभ हो एवं स्व-राशिगत होगी तो अनुकूल दाम्पत्य सुखों की प्राप्ति होगी। बृश्चिक लग्न के सम्बन्ध में जातक/जातिकाओं की जन्म कुण्डलियों में परस्पर राशि मैत्री, गुण मिलान तथा मंगलीक के अतिरिक्त अन्य तत्त्वों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।



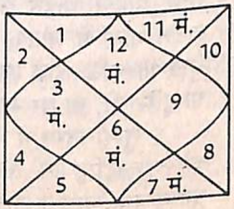
9. **धनु लग्न** में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश होने के कारण मिश्रित प्रभाव करता है। लग्न, चतुर्थ एवं सप्तम भाव में मंगलीक योग होने पर भी जातक साहसी, पराक्रमी, स्वाभिमानी, अच्छी बुरी बात की पहचान रखने वाला एवं बौद्धिक कार्यों में कुशल होता है। परन्तु सप्तम भाव पर शत्रु दृष्टि एवं स्थिति होने से स्त्री को कष्ट या सुख में कमी होती है। अष्टम भाव में मंगल नीच राशि का होने से उसके नीचत्व में कमी हो जाती है परन्तु उच्च विद्या एवं पूर्ण सन्तान सुख में विघ्नकारक होता है। यद्यपि कुटुम्ब भाव को उच्च दृष्टि से देखने से विघ्नों के बावजूद जातक परिवारिक सुख एवं भौतिक लाभ व उन्नति को प्राप्त कर लेता है। अष्टम में कर्क राशिस्थ भौम दोष का परिहार भी माना जाता है। द्वादश भाव में भौम की स्थिति वैवाहिक सुख में विलम्ब या दाम्पत्य सुख में कमी करता है। धनु लगन में बुध एवं शुक्र की स्थिति शुभ हो, तो विवाह सुख में वृद्धि होती है।



10. **मकर लग्न** में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होकर मंगलीक दोषकारक बनता है। लग्न भाव में मंगल उच्चराशि का तथा चतुर्थ भाव में स्व-राशिगत होकर सप्तम भाव में स्थित कर्क राशि को नीच दृष्टि से देखेगा। फलस्वरूप जातक स्वस्थ, शारीरिक सौन्दर्य तथा भूमि-जायदाद, मकान-वाहन आदि सुख साधनों से तो सम्पन्न होगा परन्तु यदि मिलान ठीक न हुआ हो तो वैवाहिक एवं दाम्पत्य सुख में कमी होने की सम्भावना बनती है। सप्तम भाव में मंगल नीचराशिस्थ होने से तथा द्वादशभाव में सप्तम पर नीच दृष्टि पड़ने से स्त्री एवं पत्नी के साथ वैमनस्य एवं टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यदि सप्तम एवं द्वादश आदि भावों पर गुरु व चन्द्र की स्थिति एवं दृष्टि पड़ रही हो तो वैवाहिक सुखों में वृद्धि होती है। मकर लग्न में मंगल योग के साथ-साथ सप्तमेश चन्द्र की शुभ-अशुभ स्थिति एवं बलाबल का आकलन भी आवश्य कर लेना चाहिए। ध्यान रहे, मकर लग्न में द्वादश भाव में धनु राशि के मंगल को परिहारस्वरूप विशेष अशुभ फलप्रद नहीं माना जाता।



11. **कुम्भ लग्न** में मंगल तीसरे एवं दशम भाव का स्वामी होकर मंगलीक योग कारक बनता है। लग्न भाव का मंगल जातक को कुछ तेज स्वभाव का, साहसी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व देता है। जातक भूमि-मकान-वाहन आदि सुखों से सम्पन्न है। परन्तु प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भावों में मंगल स्थित होने से जातक को अत्यन्त संघर्ष एवं कठिन परिस्थितियों का सामना होता है। परिवारिक एवं दाम्पत्य सुख में भी कमी होती है। परन्तु यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में शुक्र एवं गुरु की स्थिति अच्छी हो, तो परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। द्वादश भाव में मंगल उच्च (मकर) राशि का होकर सप्तम भाव को मैत्री दृष्टि से देखता है जिससे अन्य भावों की अपेक्षा द्वादश भाव का मंगल वैवाहिक दृष्टि से कुछ शुभ कहा जा सकता है। कुम्भ लग्न सप्तमेश सूर्य एवं लग्नेश शनि के मध्य नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण मिलान सम्बन्धी (मंगलीक योग के अतिरिक्त) अन्य तत्त्वों को भी ध्यान में रखना युक्ति-संगत होगा।



12. **मीन लग्न** में मंगल धनेश एवं भाग्येश होने के कारण विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यदि जन्मकुण्डली में शुभस्थ हो तो जातक को विवाह के पश्चात् विशेष धन लाभ एवं भाग्योन्नति प्रदान करता है। प्रथम भाव में मंगल होने से जातक साहसी, पराक्रमी, महत्वाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति का होता है। यहां से सप्तम भाव पर मंगल की शत्रु दृष्टि होने से स्त्री एवं पत्नी के साथ तनाव एवं मतान्तर की स्थिति होने की सम्भावना होती है। यदि स्त्री की कुण्डली में भी मंगल दोष हो तो परस्पर दाम्पत्य सुख अच्छा होता है। चतुर्थ एवं सप्तम भाव में मंगल होने से जातक व्यवसायिक दृष्टि से तो समृद्ध होता है परन्तु

परिवारिक सुखों में कमी रहती है। अष्टम भाव में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी एवं विवाह सुख में कमी करता है। परन्तु ऐसा जातक व्यवसाय में धनार्जन करने में कुशल होता है। सप्तम भाव पर यदि बुध-चन्द्र आदि शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति हो तो विवाह आदि सुखों में वृद्धि होती है। द्वादश भाव में मंगल होने से जातक चंचलबुद्धि, कामात्तुर, परिश्रमी, भ्रमणशील, व्यवहार में नीति-अनीति का कम विचार रखने वाला होगा। परन्तु यदि राशि एवं गुणमिलान ठीक न हुआ हो तो सप्तम भाव पर मंगल की शत्रु दृष्टि के फलस्वरूप दाम्पत्य सुख में कटुता एवं वैमनस्य होने की सम्भावना होती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रत्येक लग्न में मंगल एवं मंगलीक योग का एक जैसा प्रभाव नहीं होता और न ही मंगल सदैव अनिष्टकारी प्रभाव ही करता है। सम्भवत: इसी कारण विभिन्न निबन्धकारों एवं ज्योतिषाचार्यों ने मंगलीक दोष के दुष्प्रभाव को अत्यधिक प्रबल न मानते हुए अनेक परिहार वाक्य मिलते हैं। जिनका सविस्तार वर्णन हमारे पंचांगदिवाकर (जालन्धर) में देख सकते हैं। यहाँ हम पाठकों के लाभ हेतु मंगलीक दोष को क्षीण करने वाले कुछ मुख्य परिहार वाक्य लिख रहे हैं।

(1) शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाशकृत्॥ –फलितसंग्रह

अर्थात्—यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुम्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौम दोष नहीं होता।

(2) अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे। द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ –मु. परिजात

अर्थात्—मेष राशि का मंगल लग्न में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल बाहरवें भाव में हो, तो मंगल दोष नहीं होता। 'मुहूर्त्त दीपक' अनुसार

(3) न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा। न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥

अर्थात्—यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरू द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

(4) केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥–मु. चिन्तामणि

अर्थात्—केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा 3, 6, 11वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

(5) गुरू (सप्तम भाव को छोड़कर) केन्द्र (1, 4, 10) एवं त्रिकोण (5, 9) में हो तथा सूर्य 11वें और लग्न तथा चन्द्रमा वर्गोत्तम में हो तो सम्पूर्ण दोषों का नाश माना जाता है।

केन्द्रेकोणे जीव आये रवौ वा लग्नेचन्द्रे वाऽपि वर्गोत्तमे वा।
सर्वेदोषा नाशमायन्ति चन्द्रे लाभे तद्वद् मुहूर्त्तांश दोषाः॥–मुहूर्त चिन्तामणि

(6) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, 27 गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष नहीं रहता।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥ –मुहूर्त्त दीपक

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल भावस्थिति पर आधारित मंगल या मंगलीक दोष पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों जैसे मंगल के साथ अन्य ग्रहों का योग, सप्तमेश आदि, भावेश ग्रह की स्थिति, सप्तम भाव पर अन्य शुभ-अशुभ ग्रहों की दृष्टि तथा विवाह सुखकारक गुरू-शुक्र-चन्द्र आदि तथा नवांश कुण्डली में भी उक्त ग्रहों की स्थिति का सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करनी चाहिए। इसके साथ ही चलित-कुण्डली की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

(1) चलित भाव कुण्डली–जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में मंगल सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(2) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(3) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(4) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का पूर्ण सुख नहीं होता— **दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते–तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभ चान्यथा॥**

(5) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नितान्त आवश्यक है।

(6) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (27 या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

स्त्री जातक विचार

(विवाह, सन्तान आदि सम्बन्धी विशेष योग)

गत पृष्ठों में पुरुषों के लग्न से जिन फलों का वर्णन किया गया है, उसी भान्ति स्त्री की कुण्डली में भी फल जानने चाहिएं। आजकल परिवर्तित परिस्थितियों में लड़कियां भी पुरुषों के समान उच्च विद्या प्राप्त करके लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उच्च पद की नौकरी अथवा व्यवसाय करते हुए अपने परिवार एवं समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस प्रकार परिवारिक एवं आर्थिक, दोनों क्षेत्रों में अपना उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभा रही हैं। इसलिए स्त्री सम्बन्धित ज्योतिष के अनेक प्राचीन योगों को आधुनिक सन्दर्भ में विश्लेषण करके वर्णित करने की विशेष आवश्यकता है। आगे स्त्री जातक सम्बन्धी कुछ विशेष योग दिए जाते हैं। ध्यान रहे, स्त्रियों सम्बन्धी फलादेश जन्म लग्न के अतिरिक्त चन्द्रमा को भी लग्न मानकर करना चाहिए।

(1) यदि स्त्री को कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा समराशि में हों, तो स्त्री पतिव्रता, सुन्दर, सुशील, चरित्रवान्, गुणवती एवं रूपवती होती है। यदि समराशिस्थ लग्न व चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो स्त्री अनेक गुणों से युक्त तथा सुवर्ण आभूषण, अलंकारों, भूमि एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होती है-

प्रकृतिस्था लग्नेन्द्वोः समभे सच्छोलरुपाढया।
भूषण गुणैरूपेता, शुभवीक्षितयोश्च युवतिः स्यात्॥ सारावली॥

(2) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा विषम राशि में हों, तो स्त्री पुरुष की आकृति के समान मुखाकृति वाली एवं पुरुषों जैसे कठोर स्वभाव से युक्त एवं स्वाभिमानी परन्तु परेशानियों से घिरी रहने वाली होगी। यदि विषम राशिस्थ लग्न व चन्द्र पाप (क्रूर) ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो स्त्री कुटिल बुद्धि की, पति से उग्र (क्रोधपूर्ण) व्यवहार करने वाली, नियन्त्रण में न रहने वाली, पर पुरुष में चेष्टा रखने वाली एवं द्वेष करने वाली होती है।

(3) यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हो तथा वह शुभ ग्रह से युक्त व उन्हें शुभ ग्रह देखते हों, तो स्त्री मिश्रित (शुभाशुभ) गुणों वाली, पुरुष-स्त्री मिश्रित आकृति, स्थिति, चाल और मिश्रित बुद्धि वाली होती है।

(4) लग्न व चन्द्रमा में से जो अधिक बली हो, उससे स्त्रियों की देह का शुभाशुभ फल का विचार करे। सप्तम भाव से पति के सुख एवं सौभाग्य का, अष्टम से पति की मृत्यु का तथा पंचम भाव से सन्तति का विचार करें-

वैधव्यं निधने चिन्त्यं शरीरं जन्मलग्नतः।
सप्तमे पतिसौभाग्यं पंचमे प्रसवस्तथा॥ सारावली॥

(5) यदि 1, 4, 5, 7 एवं 12वें भावों में शुभ ग्रह हों, वह स्त्री अपने पति के वश में रहती है तथा उसका पति भी उसके वश में रहता है।

6. वैधव्य योग-(क) जिस स्त्री की कुण्डली में सप्तमेश अष्टम स्थान में बैठा हो, और अष्टमेश सप्तम स्थान में बैठा हो, और वे पापग्रह से युक्त या दृष्ट हों, तो स्त्री को वैधव्य योग होता है।

(ख) जब सप्तमेश तथा अष्टमेश छठे या बारहवें भावों में पापग्रह के साथ बैठा हो, तो स्त्री को वैधव्य अथवा पति सुख में कमी होती है।

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः। पापेक्षणयुताद् वाला वैधव्यं लभते ध्रुवम्॥
सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितो। तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः॥

(ग) लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम अथवा अष्टम स्थान में पापग्रह होने से स्त्री को वैधव्य होने की सम्भावना होती है।

(घ) यदि दो पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री काम से पीड़ित, विधवा और कुल का क्षय करने वाली होती है।

(ङ) यदि तीन पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री कुलटा तथा परपुरुष गामिनी एवं पति की घातिनी होती है।

(च) सप्तम स्थान में राहु नित्य अरिष्ट करके स्त्री की हानि करता है।

(छ) लग्न से अष्टम क्रूर ग्रह, नीच, शत्रु या पापवर्गों में हो, तो पति की आयु के लिए अरिष्टकर होता है-

क्रूर व्योमचरः स्त्रीणामष्टमस्थो विलग्नतः। नीचारिपाप वर्गेषु पत्युः मृत्यु करः स्मृतः।

इसके अतिरिक्त 8वें एवं 12वें स्थानों पर पापयुक्त मंगल हो, लग्न में राहु हो, तो भी वैधव्य की सम्भावना होती है। यदि लग्न में सूर्य, मंगल अथवा शनि हो, तो भी दुर्भाग्य युक्त होती है-

व्ययाष्टगे कुजे क्रूरयुते राहौ विलग्नगे। रण्डाथ लग्नगे सूर्ये वा भौमे वा दुर्भगाशनौ।

(झ) चन्द्रमा से सप्तम एवं अष्टम स्थान में पापग्रह हों, अथवा कन्या अमावस्या के दिन उत्पन्न हुई हो, तो पति के सुख में कमी रहती है। यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा पापग्रहों के मध्य में हो, तो भी पति सुख में कमी होती है।

7. यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह अथवा सप्तमेश हो, तो वैधव्य दोष, सन्तानहीन सम्बन्धी एवं विषकन्या सम्बन्धी दोषों का नाश हो जाता है।

लग्नात् विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च।
द्यूनस्थितो हान्ति अनपत्यदोषं वैधव्य दोषं च विषांगनाख्यम्॥

8. किसी जातिका के गुरु नवम, पंचम या केन्द्र में स्थित हो एवं उच्चादि स्थिति में हों, तो जातिका शील से युक्त, (सुशील), साध्वी, सुपुत्र आदि सुखों से युक्त, पति को सुख देने वाली, गुणवती और निश्चय ही दोनों कुलों का यश बढ़ाने वाली होती हैं।

वाचस्पतौ नवमपंचम केन्द्र संस्थे तुंगादिके भवति शीलसमन्विता च।
साध्वी सुपुत्र जननी सुखिनी गुणढयां नूनं कुल द्वययशस्कारिणी भवेत्सा॥ जा.पा.

9. यदि कुण्डली में शुभ ग्रह लग्न को देखते हों, तो स्त्री शिल्प, कला, संगीत आदि कलाओं की जानकार, शुद्ध चित्त वाली, स्त्रियोचित लज्जावती, रमणीय मूर्ति, पुत्रवती, पति की प्रिया, धन-वाहन आदि सुखों से युक्ता, पति के प्रति समर्पित तथा शुभ लक्षणों से युक्त होती है।

यदि सप्तम भाव में शुभ राशि, शुभ ग्रहों का योग, शुभ ग्रह की दृष्टि एवं शुभ ग्रह का नवांश हो, तो उस स्त्री को आकर्षक व्यक्तित्व वाला, यश, विद्या, धन-सम्पदा आदि से युक्त, उच्चप्रतिष्ठित पति मिलता है। यदि इसका उलटा हो, अर्थात् सप्तम भाव मध्य पर अशुभ राशि, अशुभ नवांश हो, तो कुत्सित शरीर वाला, चालाक परन्तु साधनहीन पति मिलता है।

11. किसी स्त्री की कुण्डली के सप्तम भाव में सूर्य सिंह राशि में हो अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ही सिंह का नवांश हो, तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, कामुक परन्तु क्रोधी होता है।

12. यदि सप्तम भाव में कर्क राशि का चन्द्रमा हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी कर्क नवांश हो, तो उस जातिका का पति कामुक परन्तु मृदु स्वभाव का होता है।

13. सप्तम भाव में मंगल मेष या बृश्चिक राशि का हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ग्रह का नवांश हो, तो पति पत्नी को प्यार करने वाला, विलास प्रिय, क्रोधी एवं चरित्रहीन होता है।

14. यदि वुध सप्तम भाव में मिथुन या कन्या राशिगत हो, अथवा सप्तमभाव सम्बन्धी बुध का नवांश हो, तो ऐसी कन्या को सुन्दर, विद्वान, धनी एवं योग्य पति मिलता है।

15. यदि गुरु सप्तम भाव में धनु या मीन राशिगत हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी गुरु का नवांश हो, तो ऐसी कन्या का पति उच्च विद्या प्राप्त, प्रतिष्ठित, विद्वान एवं गुणवान् होता है।

16. यदि शुक्र वृष या तुला राशिगत सप्तम भाव में अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी शुक्र का नवांश हो, तो ऐसी कन्या का पति सुन्दर व्यक्तित्व, रोमांटिक, संगीत, अभिनय आदि कलाओं का शौकीन होता है।

17. यदि शनि सप्तम भाव में मकर या कुम्भ राशिगत हो अथवा नवांश कुण्डली में सप्तम भाव से सम्बन्धित ग्रह की राशि हो, तो ऐसी कन्या का पति अधिक आयु का दिखने वाला, चिन्तनशील एवं सदा परेशानियों से घिरे रहने वाला होता है।

18. विवाह में विलम्ब योग-

(क) द्वितीय (कुटुम्ब) भाव तथा सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह पड़े हों, तो कन्या के विवाह में विलम्ब एवं विघ्न होते हैं।

(ख) सप्तमेश अष्टम में हो एवं अष्टमेश सप्तम में होकर दोनों में राशि परिवर्तन हो, तो भी विवाह कार्य में अनावश्यक विलम्ब होते हैं।

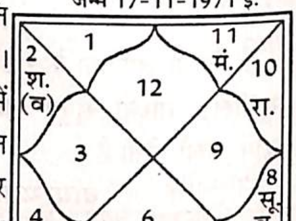
(ग) चन्द्रमा या राहु सप्तम भाव में हो तथा सप्तमेश ग्रह शुक्र का सम्बन्ध दुःस्थानों (6, 8, 12वें) में हो, तो विवाह में विलम्ब होता है।

(घ) सप्तम, अष्टम एवं द्वितीय भावों में पापग्रह पड़ें हों तथा अष्टमेश पंचम भाव में हो, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब होते हैं।

(ङ) सप्तमेश एवं चन्द्र दोनों पापग्रह से युक्त तथा पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब अथवा कमी रहती है। देखें उदाहरण कुण्डली संख्या नं. 103, इसी पुस्तक में।

(च) सप्तम भाव पर भौम आदि पाप ग्रह की दृष्टि हो, सप्तमेश एवं लग्नेश पर शनि की क्रूर दृष्टि हो तथा पंचम भाव भी दूषित हो, तो विवाह में विशेष विलम्ब होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका अमावस तिथि को मीन लग्न में उत्पन्न हुई है। कुण्डली में सप्तम भाव पर मंगल की अशुभ दृष्टि है तथा सप्तमेश बुध एवं सूर्य, गुरु आदि पर भी शनि की वक्री दृष्टि पड़ रही है। पंचम भाव में केतु तथा उस पर पुनः शनि की क्रूर दृष्टि और पंचमेश चन्द्र का अष्टम भाव में होना इत्यादि कारणों से 32 वर्ष की आयु तक भी कन्या का विवाह नहीं हो पाया है। इसके अतिरिक्त (क्षीण चन्द्र) अमावस तिथि में उत्पन्न कन्या के विवाह सुख में विलम्ब या विघ्न होते पाए गए हैं।

उदाहरण कुण्डली
जन्म 17-11-1971 ई.



(छ) विवाह एवं सन्तान कारक ग्रह अकेला सप्तम भाव में हो तथा उस पर मंगल, शनि आदि ग्रहों की अशुभ दृष्टि पड़ती हो, तो भी जातिका का विवाह विलम्ब से होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका का विवाह 34 वर्ष की आयु में हुआ, उस समय इसको चन्द्र मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी।

उदाहरण कुण्डली
जन्म 29-11-1963 दिल्ली



19. सन्तान योग-

(क) स्त्री की कुण्डली में उपचय स्थान (3, 6, 10 एवं 11वें) में गोचरवश बलवान् चन्द्र व मंगल आ जावे अथवा स्वराशि या स्वनवांश में आने पर उस मास एवं उस दिन में स्त्री को गर्भ स्थिति होनी सम्भव होती है।

(ख) पंचम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो उस स्त्री को पुत्र सन्तान अधिक होती है।

(ग) पंचम भाव में चन्द्र, शुक्र या शनि हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(घ) पंचम में जितने ग्रह हों और इस स्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उतनी संख्या में सन्तान संख्या जाननी चाहिए। पुरुष ग्रहों के योग और दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों के योग और दृष्टि से कन्या सन्तति की संख्या का अनुमान करना चाहिए।

(ङ) सूर्य, गुरु, मंगल तथा पंचमेश ग्रह-ये चारों पुरुष राशि के नवांश में हों अथवा कुण्डली में पुरुष ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो पुत्रों की संख्या अधिक होती है।

(च) पंचम में स्त्री ग्रह हों अथवा पंचमेश स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, नवम में भी शुक्र हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(छ) पंचम, अष्टम या 12वें भावों में पापग्रह हों, तो सन्तान सुख में कमी होती है। *लग्न में चन्द्र-गुरु का योग हो

तथा सातवें भाव में शनि या मंगल हो तो सन्तान अभाव का योग होता है।

* सातवें भाव में बुध-शुक्र, चतुर्थ भाव में पाप ग्रह और पंचम भाव में अकेला गुरु हो, तो सन्तान प्रतिबन्धक योग होता है।

* लग्नेश, पंचमेश और नवमेश-ये तीनों ग्रह शुभग्रह से युक्त होकर 6, 8, 12वें भाव में पड़े हों, तो विलम्ब से सन्तान होती है।

* पंचमेश, पंचमेश द्वारा ग्रहीत राशि का स्वामी, पंचमेश द्वारा अधिष्ठित नवांश राशि का स्वामी अथवा गुरु स्थित राशि के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में पुत्र सन्तान प्राप्ति के योग होते हैं।

नोट- और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए विवाह एवं सन्तान सम्बन्धी हमारी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली ''सुत भाव प्रकाश'' फलित नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

सन्तान सुख में बाधाकारक अनिष्ट ग्रह

20. (क) सूर्य पंचम भाव में नीच (तुला) राशि का होकर पड़ा हो, तथा नवांश कुण्डली में सूर्य शनि की राशि में
होकर पाप पीड़ित हो, अथवा सूर्य अष्टम भाव में, शनि पंचम में तथा पंचमेश राहु से युक्त हो, अथवा गुरु सिंह राशि में
हो, पंचम भाव में पाप ग्रह हों तथा पंचमेश सूर्य के साथ हो, तो पितृ श्राप दोष के कारण सन्तान सुख में कमी होती है।

(ख) सूर्य, गुरु एवं पंचमेश राहु, शनि, केतु आदि पाप ग्रहों से युक्त या आक्रान्त हों, तो भी पितृ दोष के कारण सन्तानाभाव या सुख में कमी होती है।

(ग) पंचमेश, पंचम या नवम भाव में चन्द्रमा राहु, शनि या मंगल आदि पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मातृ श्राप के कारण सन्तान प्रतिबन्धक योग होता है।

(घ) निष्कर्षतः-सन्तान बाधाकारक **सूर्य हो**, तो भगवान् शंकर और गरुड़ के क्रोध के कारण अथवा पितरों के श्राप का फल है। यदि सन्तान में प्रतिबन्धक **चन्द्रमा है**, तो माता या किसी अन्य स्त्री के चित्त को दुख पहुंचाने के कारण या भगवती का शाप या (अनादर) सन्तान सुख में बाधाकारक होता है-

द्रोहात् शंभु सुपर्णयो हि सुतः शापात् पितृणां रवेः,
इन्दोःमातृ सुवासिनी भगवती कोपात् मनोदोषतः। फलदीपिका॥

यदि मंगल सन्तान बाधक हो, तो ग्राम देवता, भगवान् कार्तिकेय स्वामी की अवज्ञा करने से अथवा भाई बन्धुओं के श्राप से या शत्रुओं के दुष्ट व्यवहार से सन्तान सम्बन्धी कष्ट होता है।

यदि बुध सन्तान सुख में बाधक हो, तो बिल्ली को मारने, मछलियों या किसी अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने या छोटे बालक, बालिका के श्राप से या भगवान विष्णु के कोप से सन्तान कष्ट होता है। यदि कुण्डली में गुरु (बृहस्पति) सन्तान सुख में बाधाकारक हो, तो यह समझना चाहिए कि जातक ने पिछले जन्म अपने कुल गुरु या कुल पुरोहित से द्रोह किया है या पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को काटा है।

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र के कारण सन्तान सुख में बाधा हो, तो उस व्यक्ति ने किसी फूलों वाले वृक्षों को कटवाया है, या गाय के प्रति कोई पाप किया है, अथवा किसी साध्वी स्त्री के श्राप से ऐसा हुआ है। ऐसी स्थिति में प्रायः यक्षिणी का श्राप समझना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में सन्तान भाव शनि के कारण दूषित हुआ है, तो समझिए कि जातक/जातिका ने पीपल के पेड़ कटवाए हैं और यमराज, प्रेत, पिशाच आदि के श्राप से सन्तान कष्ट हुआ है।

यदि पंचम में राहु हो, या वह पंचमेश को दूषित करता हो, और उसके कारण सन्तान सुख में बाधा हो रही हो, तो सर्प के शाप का प्रभाव समझें। यदि केतु के कारण सन्तान सुख में कमी हो, तो उसमें हेतु ब्राह्मण का शाप समझना चाहिए।

जिस ग्रह के कारण सन्तान सुख में कमी आती हो, उस ग्रह सम्बन्धी जप, दान एवं सम्बन्धित दोष का प्रतिकार करना चाहिए। जैसे सूर्य सन्तान सुख में बाधक हो, तो अपने पित्तरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से शीघ्र प्रकाशित होने वाली ''अनिष्ट ग्रह और उपाय'' सम्बन्धी पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

ज्योतिष तत्त्व

फलित खण्ड (भाग द्वितीय)

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से पंचाँग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री (उर्दू,हिन्दी व पंजाबी) तथा अन्य ज्योतिष सम्बन्धी प्रकाशनों को प्रकाशित होते हुए सं० २०५९ में १२७ वर्ष हो जाएंगे। इस दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो विश्व व्यापी ख्याति प्राप्त हुई है, वह सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं। यह सब ईश्वरीय कृपा तथा प्रात: स्मरणीय पूज्य पितामह स्वर्गीय पं० देवी दयालु ज्यो. (लाहौर), पं० मोहन लाल एवं स्व. पिता पं० चूनी लाल ज्योतिषाचार्य प्रभृति पूर्वजों के शुभाशीषों और विद्वान पाठकों की सद्भावनाओं एवं प्रेरणाओं का ही प्रतिफल है, कि हम ज्योतिष की पावन ज्ञानधारा को शताब्दी से भी अधिक वर्षों पर्यन्त लोक कल्याणार्थ प्रवाहित करने में सफल हो सके हैं। 'ज्योतिष तत्त्व' उसी ज्ञान श्रृंखला की एक और अखण्ड कड़ी है। फलित ग्रन्थ के प्रथम भाग में ज्योतिष सम्बन्धी परमावश्यक महत्त्वपूर्ण आलेखों के साथ -साथ मेष से कन्या लग्न तक, प्रत्येक लग्न की विविध उदाहरणों सहित विस्तृत व्याख्या दी चुकी है। 'ज्योतिष तत्त्व' फलित खण्ड के द्वितीय भाग में तुला से मीन लग्नों की विस्तृत व्याख्या के अन्तर्गत प्रत्येक लग्न में जातक की चारित्रिक विशेषताएँ, शिक्षा और कैरियर, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, वैवाहिक सुख, उपयुक्त जीवन साथी का चुनाव, स्त्री जातिका सम्बन्धी फल विचार, रोग एवं स्वास्थ्य तथा उपयोगी उपायों का विशद वर्णन दिया गया है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष सम्बन्धी अन्य उपयोगी विषयों का भी समावेश किया गया है। यथा -

ज्योतिष तत्त्व (फलित) भाग दो की कुछ प्रमुख विशेषताएँ

- कुण्डली में दो, तीन एवं अधिक ग्रहों का फलादेश
- ज्योतिष सम्बन्धी विशेष योगों का विवरण।
- ज्योतिष द्वारा क्लिष्ट रोगों का निदान।
- द्वादशांश आदि सप्तवर्गी चक्रों सम्बन्धी फलादेश का शेष भाग।
- मंगलीक दोष - एक विश्लेषण।
- स्त्री जातिका सम्बन्धी विस्तृत फलादेश विचार
- वर-कन्या मिलान सम्बन्धी व्यापक दृष्टिकोण
- विंशोतरी दशाऽन्तरदशाओं तथा योगिनी दशाओं के फलादेश सम्बन्धी विस्तृत व्याख्या... इत्यादि अनेक नवीन एवं उपयोगी विषयों का समावेश पाएँगे। अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवा लेवें।

मुख्य वितरक: जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
(पंजाब)-144008.

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी *एम. ए.*
गणितकर्त्ता: पंचाँग दिवाकरम्, जालन्धर
फोन-(0181) 57959

मूल्य : 250/-